## বিবিধার্থ-সমুহ

RATE

পুরাব্তেতিহান-পু।ণিবিদ্যা-শিলু শাহিত্য

তৃতীয় পৰ

वासिक-मिनन-मटक मून्ति।

क्रिकांचा ।

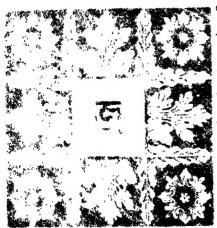
शक्तक ३१५७।

# বিবিধার্থ-সঙ্

अवारुएक विकास आनिविना नियल-माविका नि-एमा कर मानिक श्रे ।

गकान ३११९, देव्छ ।

## व्य उपभात उदश्हि।



सार 🕫 मस्ति।

उराइक धारात बामता स्त्रकृत्वत अनुकीर्तम ठाँशता अवनीमश्रामत मुद्रवाहा-सर्भ मा विके मन क करियाकि। ये कूल त्मोत वा त्माम वश्टलत वरेया कोरकाक मायो क मबब-मायोर वा नाएक मात्र प्राष्ट्रांन मरह, कथा काण्य बराय नरह: कालोडे निकित प्रार्थना श्रुकाम या কলত ভাহাতে যে সকল জুবদবিখ্যাত কিছি- বিশামিত-কর্ত্ক প্রেষিত হইয় भाषान कियाहितन, उंशिक्षित यत्नावर्गन कियुक्तान-क्षिक

श्राष्ट्रां वः मगारवद्गरे मूग यत्री क्राणीकेल विक् विश्वासकारत जावृत्व थारक, अवश्रीखाविक करणे-शमीराह अनामार- मध्यक अल्ड नियम मध्यमान **एड एक भारत। य**णिक विविधारणह छेड- भिड्यक १८०० भागानिस्मित कहानि काला महिल রোত্র উন্নতিতে ততাপি ১৪বল-প্রায়ত-বিষয়ক-পূপ ক্রান্তি चामता मानादिद शित देखिहारमह चक्रास-स्थादक क्षा ियद्धत चार्टका- अने भारत डेज् न करिएक क्षेत्र विकास अन्यान वात्व बाद्य वि इहे- वार्ष हो। कर्ड-, स्य वि विश्व वार्ष विक তেছি। পত্র প্রা- বি॰শতি বার নিক্ততি হওনের বিশ্বভাল পরে तर्छ अञापम था- ताला-निरंख शुक्रवा । गर्व अभवन चात्रव का भा दिए का मा अवस्थान प्राचीन वाक- कवेंगा नारणद वृद्धि व नारणद वृद्धि व नारणद वृद्धि व नारणद विकास छ्यानोहार भारकामा आध ६३४. अका-मकस (क्म-पादक मिका क्या अमूक उत्तरि , व्यत्न- काम वर्षात मूनियंग-अजाय | कूर्यात आएकार करेश के किया अवस्था प्राम् বিশ্বত বিক্ষিত করিতে ক্তোদ্যম হইয়া- ভারে অভিনঃ কর্মেন। এই বৃহতী ক্রিক্টি किला में। व्यवना नक्या उपकार क्**यूर-शास्त्र भावित अ**वि को का वा श्रामक **श्रामक हो वार्य के कि हो है प्र** जे शर्वक निर्माणाहा सूनि-स्विमिटा कुलाब 

व्यननस्य श्राज्यानर व्हेन, भरः ্বন্রেলপ্ ইক্টেব প্রারায়মান অ-। एकि-अनाम-श्रुवक कर्शित पूर्वा-क इस् निरम्बन कजिस्सम्। अप-মন্ত্ৰ মাজ কৰিবা**মাত্ৰ জীবলিক্ও**-राह्य भाग प्रश्निक्षाहो अक शेह स्न-লৈ তাহান নাম প্রমার, এবং তিনি ्रेल्फ्रिनी डाक्स आव हरेतान । বতানিগের প্রার্থনায় বুল্লাও আপন ়ংলে প্ৰত্ত হল। **তা**ছাত ক্ত দ্বী-ল প্ৰান্তকণ্ঠ ৬ শছা ও বেৰহন্ত ৪০৪ : লাগের লাম চালুক্ বা দো-💮 👉 বি-পার্শ তাঁহার কাজন। ্তা ভাৰ**দাংশহইতে ঘনুধা**ৱী কদা-ত উভানে ফারে। দানব-দমনে তা-रिका प्रदेश किन अयुक रम "शिक्ष ১৯১৮ - বেশ্যজুল-**ম্ফলী তাহার** 

ত ত ত্রাধ উৎপাদন করেন।

ত ত ত ও ও গাংগ-চক্র-গদা-পাদ্য
তার তথ্য করিছে উনির চ ভইয়াছিল।

তার তার করিছে বান্ধারী

ত তার বিভাগার করেন চরু উন্ন চাত্র
লোক বার পাদর সংগ্রেছান্য শানের

তারে

ত এটি আৰু প্ৰত্যান সভূতির দানব- পৃথা-পা হুই ট্রান্সভূতিন নত হুইরান হুইতে প্ কুইটে অভিনত দানবগণ উপিত পূপ্র হা কুটে আশাপ্রণ গালনমাত।

কুটি আশাপ্রণ নামান্টা কুটি দিগের হুই নাই।

অধিষ্ঠাত্রী দেবীর। দৈত।শোণিত-পান-পূর্ক আনি-ষ্টের নিরাকরণ করিলেন।

এই গণেপর সভাসতা-বিষয়ে বাকা বার করা বিকল, পরন্থ ইহাতে স্পত্ত প্রকাশ পাইতেছে যে গ্রেকালে উক্ত-নামধারী বাক্তি-চতু হুঁই শর্দ্দম-পূর্বক ক্রিন্দ্র্যমের উন্নতি নাধন করিলা ছিলেন। ভারতবতে ইর্ন্নিলের বাংলা ক্রিন্নে নামে বিখ্যাত আছে, এবং শাল্ডতে লানেক লা জন্য-শেল্প জন্ম-গুহুণ করিয়াজেন; বিশেশভুগ্ন করিয়াজন আদিম রাজণ্ডিমানবারী নগরী; তাহা নর্মালা-নদাভটে গোলালা মন্তিনা নামে অদ্যাপি বর্ত্তমান আছে। ভ্রাভিত্ত করেন ভ্রাভিত্ত

এই বংশের অজয়পাল নাম। এক বাহিআজ্মির্নগরে আপন রাজপাট প্রাপ্ন কর্ব ক
তথায় তারাগড় নামক এক দ্যানিনান করে।
তিনি চোহান রাজাদিগের মধ্যে অতি প্রসাদ,
এবং তাহার সমকালান বাহিনা তাহাকে সঞ্জন
বর্লী রাজ্য নামে বিখাতে করিয়াছিল: এবং
তাহার রাজ্য-কালের নিরূপন নাই; এবং সাক্ষান
বংশের বিবরণও ক্রমান্তরে প্রচরিত নাই। ধ্রণিত
আছে, তাহার পরলোক-হওনের কিয়্ডেন্টার দিবের
প্রান্তিন ক্রমান্তর রাজ্যতা
হইতে আগমন কর্ব আজ্মিরের রাজ্যতা
হইতে আগমন কর্ব আজ্মিরের রাজ্যতা
হর্ম। তাহার এক জ্বার গ্রে চতুরিং লাভি
পুপ্র হয়, এবং চাহাদিগের সস্তানে আজ্মির
দেশ রাজ্যুলে সমাকার্ণ ব্যা রাজ্য দ্লারায়

<sup>\*</sup> ওৎকালে বজুবিবাছরূপ ক্লাচার রাজ ুত্রনিগের মধ্যে প্রচার । ছয় নাই।

এব॰ তুম্ল-সম্বামে ভাষাকে বধ করিয়া তদীয় হৈ, মোহিল, নভানা, বাদেরিয়া, ভৌতেচা, স্তা जभर्य प्रात्र পूळ लांहे, पूर्णत প्राहोत्राभित्र इकेटक्टे उन्हर हय। জীড়া করিতে > যবনাদপের নিষ্ঠুর সরাঘাতে বি- মাণিকেরে উত্তরভিন্তরিরা আজমিরে অব-हुन भारति करह ना।

ভূদের চতুদ্দিগে শুক্ষ লবণ ভদনুকাপ হইয়া রছি-তদপভূংদে অধুনা "লাম্ভর" নাম বিখ্যাত **प्रतिक मृ**र्खि अम्याणि विद्राक्षमान आहि।

व्यवस्थाय यवनिष्ठारक शहास कहिया वाक्षित् "यव्षित्रा" नात्म विश्वास क्रेब्रान

ঠাছারই বংশজাত; ভাঁছার রাজ্য-সময়ে মুসল্ । উদ্ধার করেন। তাঁহার অপান্যের রাজ্য-সময়ে মুসল্ । উদ্ধার করেন। তাঁহার অপান্যের রাজ্য-সময়ে মানেরা আফুমির দেশ প্রথম আক্রমণ করে, আনেক স্থানে ব্লাজা-স্থাপন করিয়াছিল। কিচি. রাক্ত। আপন হস্তণত করিয়াছিল: এই যুদ্ধ- রিয়া, বাগ্রেচ। প্রভৃতি চোহান বংশ তাহা-

নষ্ট হয়। লোট চোহান-বংশনর শতান্ত প্রিয়পাত্র খানপূর্বক বছকালাব্ধি যবন-দন্দন পাব্দ ছিল। ভাষার বিনাশে কলেই যৎপরোনাত্তি থাকিয়া ক্তিয়ধ্য প্রতিপালন করিয়াছিলেন। বিষয় প্রাত্তাতাকে চিত্তমারণায়-করণাভিপ্রায়ে পরস্ত তাঁহাদিগের বিশেষ বিশ্বণে কারক্ষেণ ्रभवाजा-भरक्षा जना कविद्यारहः व्यापत (महे वाजक रिवाध इस शाठिकवृत्त्वत श्रीहिक वर्षाक इन्हेरवन्द्र জর্ম। পাছে ঘুড়বুর **ধা**রণ করিত বলিয়া ভদবধি। না, অভএব ভদীয় এজাদশ-পুল্য-পারভাগে। (বিলুণ?) দেবের প্ঞা: াবিলল্লেল **" ধর্ম-**भगाद्वारघट पाद्यन छोड़ांत छुछ। मानिक/तांश | शक्त गाम दिशाक हितन, अव आश्रम प्रान-এরতের প্রভান করেন। তথায় শাক্**নরা দেবা সমপ্**ণ-পূর্বক গজননাধিপতি মচম্নকৈ আক্ষিত্ ্রেভাঞা করিয়া ভাঁড়াকে নিভয়-প্রদান-পূর্বক। হইতে দুয়াকর। করেন। ভাঙার সমকালে ভরি-ভাদেশ করিলেন; "এই স্থানের চতুদিনি। য়ানা ও শতক্তে নদীর মধ্যবভি জর্ম্য বচরাজের যে পর্যান্ত অদ্য অশ্বারোহণে পরিভূমণ করিতে পুঞ গোগা নামক এক জন চোহালের অধীনে শার্তিকে, কন্তাক্ত তোমাকে রাজ্য করিতে প্রদান । ছিল । সমরনৈপুণে। তিনি বার্তিক চোড়ান-বংকো বিশিষ্ট পরস্তু প্রথমন, ভুমণকালে আপন অভিভীয়ক্তেপ খ্যাত ছিলেন এবং তাঁছার রাজ্ কাপ করিতে ারম্ভ করিয়া কিয়দূর-ভুমণান ভর অদ্যাপি বভ্যান আছে। ক্থিত আছে, অপুঞ্ক পশ্চাতে অবলোকন করিয়া দেখেন প্রদক্ষিণীকৃত প্রযুক্ত তিনি দৃংখিত হইয়া দেবীর আরাধনঃ সমস্ত ভূমি শুকুরণ চাদরের ন্যায় কোন পদার্থে। করিয়াছিলেন, এবং দেবা-প্রত্যাদেশে পুঞ্জুদ चार्ड इरेशाट्य। शत राक्त इरेन. अक र्व्य पूरेंकि यर श्राश्च इन। त्रश्कत-शाशात अक जो स अक अभिनी वर्डमान हिन, जग्रास्य वे यव क्ष्ह्रास ग्राष्ट्र। **वह कुरमत नाम "माकछ**ती कुम", बदः मित्वन बहे जावना ठाँकात विषय इहेज : कत-শেবে তাহা উভয়কে বিভাগ করিয়া ছিলেন। चारह। वे कुरम्द्र मधारम्य अक कृषु मिनारत वे यव-माहारका जीहात शक्षकातिहमा शब कत्व, ও অधिनीगर्ভ्छ এक मादक প্রসূত इक्ष মাণিক/রায় কিয়ৎকাল অরণে/ বাস করত সেই শাবক যথাকালে হয়-শেষ্ট্রপে গণ

गालि बाज्यश्विकार्य गाया सम्हण्य म्हास- : কাল-পর্যান্ত বংনছিদকে পরাভূত করিয়ারা আ । शाक्टिलन: किंद्र प्रवटनाट्य दविवाद नदसी দেস ঘৰনর জানতম্দের বিপক্ষে যুদ্ধ শরিতে ২ চরারিংশ পুঙ, বঙি ভাতৃপুঞ্জ প্রাণার্থ म्या मक नामरकीला-नम्नत्य-शृह्दक नकरल वीत-। প্রাপ্ত ভ্রম। 🎃 মির্বংশ বীরশ্রেকর মদ্গতির 'म हाराण्यमाञ्चर प्रकाशि ठीवाह नाः-दिक कुम्म स्ट्रीट्स थारक।

ामन्तर ४ २०४६ ३०७७ व्यवि ३५०० व्यव छ चाङ्भित-स्मरण हाका कतिसाहिर्देन<sup>। ।</sup> ह ममकारन विन्त्-होजनग्दर्ग नकरलके छा-নের আধিপত। খীকার করিত। তাঁহাও জেলেল লভিত্**মূলব্যাপার** কইয়াছিল। "মিন্ ্ৰিল ্ভেলোট বংশায় তেজস্বা (বৈশ্ৰু) ः चे १६१३ चानुहरू चशुभ**द्ध रूभ ; मम**् रहोन्त्रो लुडिछाड **मर**छाड्**क्ट्रेट पानिया** চরন তথাশ করিবেন। পোরা**নির ভুরা**র, প্রি লে বিশ্ব **মিয়াভাধিপতি মহেশও** अभूता किन : पाना श्रावत महिल द्राका कत-कड़िल्ला । १४ न्ह्राङ कत्रायाटक छेलाइ ड শাসুর ই ৪২ **ও মুলতানক্টতে কর** হটব খদত্র ৮ ভট্টাকুল, রাজাজা লন ক্রিলেক 🔭 কল্ড অন্ভলবাবার ात र/भोत मकरवार रिनवर्गरहा रेनस्र-या श्रीतशीयक वर्डाक्ति, के नीवमध-বিবরণও নাম্ত পাশ্যাল লতে, পরস্ত ः প্रयुक्त अवस्त छोको अस्ति। एस मध्य जिनामय क्यों इतेश क्य शालित सारन ं अल्ले कराम: अल्बेन-फरम क्<sub>रि</sub>र्गण रमह नव्य ' नात्म वर्डमान आह्न।

🕝 ক্থিত আছে বিদল ছেব কোন ন্ময়ে স্থৰ্ম-ালে ভাহার প্রচার আছে। এই সপরিবার পেগি। ত্যাস-পূর্বক ধ্বন-ধর্ম পুছণ করিয়াছিলেন; এবং তথপরে ধর্মভাগি জন্য পাপের প্রায়শ্চিত্ত**ও** করিয়াছিলেন; কিন্তু ভগরে এবং ভাঁচার মৃত্ বিষয়ক বিবরণ অনেক অজীক গণ্ডে আকৃত क्हेशाह, जाकाक्ट्रेट सटकाषात कता अथना मूक्ठिन।

> িবিদলের পুঞ শুনুরাজ। তিনি পিতাচ্টতে व्यक्ति-शामा अवा शामा शामा के क्रिक অধুনা হানিদ নামে বিখ্যাত। তাহার অন্তি मूर्ड शिक्षकमा अस्मरण काश्म वर्णाय वाका त्रवधीत वाग कतिराजन। जे त्राक्तवरत्रत एए। বিশেষ স্থাতা ছিল, ও উভয়েই সংব্য ১০৮০ অকে যবন-কর্ত্ক আক্রান্ত হইয়াছিলেন এণ্ডীর যুদ্ধে পরাত্ত হট্যা "শাকা" নামক দহানত ব্যা-शात माधन करतन, यथार निक शर् भननाम्य कद्रक मलितिवादत विकादताक्रम कदत्रमा जे मङ्ग-চিতাহইতে সূরতী নামা ভাহার এক কন্যামার तकः) शाहेशाहिल। यानुताकः ध्वरश्रहेटक शला-মনের উদ্যোগে ছিলেন, কিন্তু তাঁহার পূঞ্জ ইঞ্চ পাল স্বদেশে শত্রুর আসমনের অপেক্ষা না করিয়া ৰয়ণ শত্ৰবিপক্ষে জগুনর হনঃ ও পণিত্র তাহাদের সহিত তাঁহার এক তুমুল সঙ্গুম হয়। তা**ছাতে তিনি स**स्टि यदम मिनास्क्रक वि-नर्ध कतिहलनः किन्नु ययनाज्ञायात्क जिम्निष्ट स्वाः মৃতপ্রায় হইয়া পড়িলেন। ঐ **হানের**ু বিকটে মুরভী এক বটবিটপেরমূ<u>লে উপবিষ্ঠা থাকিয়</u>ং মৃত্যুর প্রভাগোয় ছিলেন, কারণ পথ-শাস্তিতে e श्रमाভाবে डाँश्रप्त ध्रमानञ् छेशव्यि श्रामः ছিল, জीवनीभाइ क्लिश्व हिन मा। अस्य मसाह চোহান্দ্রণর অধিষ্ঠাতী শাশাপুরণ্ডিবী বট-व्करहेटक विनिर्शक। इस्सा सुब्रह्मोत अकाषा

হাকে কহিলেন; "ভয় নাই, চোহান-কর্ক কট ক্রমাণত চাবি বলনঃ থাকিছা চিকিছনা কাণে সেট ধারপুক্ষাকে রক্ষা কর "। সুরভী দে वीत बाड्याय के हात हत्वाम् उपाता देहें भारत हाह्या व जालन कहतन, बद किनि चनिताकः ষারাইংগাছিলেন, ভানিমিত্র ভাঁহার **অপতে**৴রা হর-यः न नात्म विभाग हरेशास्त्र ।

## গলিবরের ভুমণ ব্ভান্ত। প্ৰম ভাগ। लिनिशर्षे (मत्य गाञी।

खन्य प्राप्ताय ।

গুৰুকারের ও তৎপরিবারের পরিচয়: দেশভুমাণে তা-ঃ র এখন প্রস্থাতঃ ভলভত্ত হলীয়া লাছারে কাছারেজর নাশ : আত্ম প্রাণরক্ষাণ ভাষার সম্ভরত : লেলিপট দেশের । পণতে লাগিলা ভাষার প্রাণে দিনে ও ভগতে তি করেদ कतिया जाराटक जै (भटन भगरा घाउरात रियटन)

টিংহেম্সায়র দেশে আমার পিত। বাস করিতেন। তিনি তথাকার অতি সামান্য ব্যক্তি। তাঁহার পাঁচ পুঞ হয়, তথাধে আমি তৃতীয়া আমার চতুদ্ন বৎসর বয়ঃক্রম হইলে পিত। আমাকে কেম্ব্রিজ-নগরের ইমানিউয়ল কালেজে বিদ্যাভ্যানার্থ পা-ঠাইয়া দেন। সেথানে স্থানি তিন ৰৎসর থা-কিয়া রীতিমত বিদ্যাভ্যাস করিয়াছিলাম। যৎ-কিঞ্ছিৎ অৰ্থ যাহা পাইতাম তাহা অত্যাপ্প, সুভরাং ভদ্যারা আমার নির্বাহ হওয়া অভি কঠিন इहेश्राहित; कति कि? क्यांशाशास्त्राचार अयुक विद्यालय शक्किमान-पूर्वक क्रिम्न (विद्यासक क्रिकाय शक्य शह्या लक्ष्म-म्हा

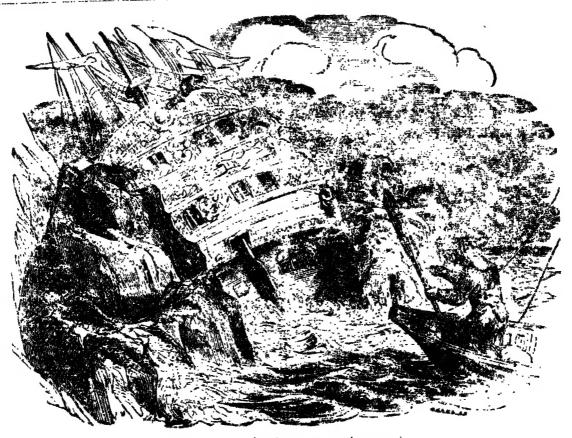
হতেল্ন, ও তাহার বিবরণ শুবণ করণামন্তর তা- বিশুন নগরের এক জন বিজ চিভিৎসকের নি-ভোষার পিতৃ-শালু নিপাতিত হইয়াছে; এই বিদ্যা শিখিতে লাগিলাম। পিতা মানাহ চিছ্ कर्षा नाठे। इंदा किटकम । त्यामि उन् त. पूमनका-बिमिटलब डिशायाणि मानिक-विना ७ गणि ७-वि-ভথ অভি প্রকৃত্তিত করিলেক। ঐ ইউপাল হরবতী দ্যার কোন ২ অংশ শিক্ষা সরিবার জন্যে বায় क्रिकाम; जथन প्रायुक्ते मरण १ क्रेक स्य वेशारक কথন না কখন আমার ভাগ্য ফিরিবেক।

বেটিদের নিকটহইতে আনি পিতার নিকট প্রত্যাগমন করিলে পর তিনি ও আমার পিতৃব্য লান মহাশয় এবং জনাবে। কুটুর আমাকে চা-बिश्व है।का दिलन, अतः कश्यिन, यपि का**बि** लिएजन नगरत थाकि, जांचा इकेटल आमांत्र प्रिन-ৰার জন্য বংসরে ২ চিনশত টাকা প্রেরণ করি-(त्ना कराकान्नास जे नगरत याबि पूरे वरमह माठ मान थाकिया जामात नीर्च याजात डेलयुक हिक्टिना जन्म बन्म कतिशाहिनाम।

লিডন্ চইতে প্রত্যাগমনেঃ কিছ্কাল পরে আ-मात हिरेजवा रंगकक (विजिन् महामन्न हेवाहीम् (शास्त्रम् नामक कर जन जाशांजि कारश्रमंत्र मि-কট আমাকে চিকিৎদকের পদে নিযুক্ত করিয়া बिह्नुन। **जाहाद महिल ख्याशंक मार्ट्स किम** বংসর দুই একবার লিবেণ্ট দেশে ও অস্যান্য द्वारन राजाशांक करियाहिनाम। जथाश्हेरक कि রিয়া আদিয়া লণ্ডন্নগরে চিকিৎনা ব্যবসাহে দিনপাত করিতে মনস্থ করিলাম; তাহাতে কেটিয় महामग्रं चामारक यर्थं डेटनाई पितनम, इ আমাকে দিয়া চিকিৎসা করাইতে কয়েক জ রোগিকে অনুরোধ করিলেন। ওল্ডজুরী-না স্থানে একট। কুদু বাটী ছিল, তাহারি उ **डाड़ा महेनाम, बदः जानन व्यवद्या** 

ছইয়া ছ্য় বংগরের জনে। ভারতবর্ষে ও পশ্চিম-ইভিয়া প্রণালে ভুমণ করিয়াছিলাম: ভাছাতে - শব্দে ধানরও কিঞি**ৎ কৃদি হয়। তথায় ন**র্বা ভত্তেত্র প্তক পাইবরে **বস্তাবন। ছিল, তা-** । ক্ষানার সাবকাশ কাল আ**নন্দে বাপন হইত। ভীরে** ं উঠিলে ভত্তর লোকনিমের রীতি চরিত্র আহার র সভাব কারী বিজ্ञ **ও মান্সিক ভাব এবং ভাষ**্ শৈপিতে নিয়ন্ত চইডাম; বে সকল কথা আমার मतन कहन इक्टन बनाति ज्ञाम यरशासांख भू भी कहेंगा था कि ।

গলীস্থ এড্মপ্ত বটন নামক এক ব/জির মেঠী কায় কিঞ্ছিৎ উত্ম কল কলিল। এন্টিলোপ্ बामी দ্বিতীয়া কনাকে বিবাহ করিলাম. ও চা- জাহাজের কাপ্তেন উইলিয়ম প্রিচার্ড মাহেব ভং-श्रात त्योजू क हाति महमू हो का अशा शावश शिन। कात्न मिक्न ममूर्षु याहेट हितनः, जिनि आसारक দুই বৎসর পারে আমার ঐ হিতকারী শিক্ষকের এক শুভ কর্মের ভার দিয়া আ**পনার সমভিব**া-মৃত্যু হয়। তাহার বিয়োগে, সহায় অতি অত্প হারী করিলেন। ইং ১৯৯৯ সালের ৪টা মে মানে इंडेल, जुल्हा आमात नावेशारात अखिताखत आमता विष्टेल इंडेट जाशाक नरेशा याजा कति, ছাস ছইয়া কেন হইতে লাগিল; ফলতঃ অধিকাংশ। ও প্রথমানস্থায় আমাদের মথেষ্ট লাভও ২ইতে ব্যাবান্ধানের স্থিত জুলা ব্যবসায়ে সপজু হওয়। লাগিল। পরস্ত আমাদের সমুদ্ে ভুমণ বিষয়ের আমার মনপ্রীতিকর হইত না। এই হেতু আমি সবিস্তার বণনে পাঠকগণের শুম ও বিরক্তি জন্মান আপন স্থ্রী ও অন্যান্য **ষ্জনের সহিত প**র্যমূল্য কোন ক্রমেই উচিত হয় ন: কেবল তাঁহাদিগকে कित्या भूगवीत नमुम्याखाय मनम कत्र अभू- এই माख कानाईएनई गएवं इडेएड भारत, य জ্ঞান দুট জাহাজে চিকিৎসকের পদে নিযুক্ত আমাদের ৰঙানহটতে ভারতক্ষে যাইবার ন্নতে প্রথিমবের এক প্রচণ্ডতর বাত্র আনিয়া আমাদি-গকে জাহাজ গুদ্ধ ব্যান্ডিমান্ ভূমি নামক দ্বীপে উद्देश**ि**ध्यपिक **वहेता (कवितः अ**वसामश्रतिक নিরীক্ষণ করিয়। দেখিলান যে খানরা পৃথীর নি েয়েছ প্রায়েক । অর্থানীন গুন্ধ লইয়া পাঠ করত। রক্ত্তইতে ৩০ অংশ ২ কলা দকিলে ব্রিয়াছি। मूटेर्न्य नगरम ज्यशांतिग्र शतिभूम ७ कमर्य। वश्व আহার ক্রিয়া আমাদের ভাদশ জন নাবিক মরিয়া গেল; স্বশিষ্ট লোক **অতি দূৰল অবস্থা** রাহল। अभक ममरा मरवध्व मारनत वहें जातिरथ नाविरक-রা জাহাজের অর্ছারজ্জু অস্তরে **জনশ**গু পর্বত দে-थिত পाইन; किन्नु ७६नमाय वाफ् अ ठामुण प्रवन এই কএক আবার শেষটা শুভ্যাত্রা হয় নাই, ছিল, যে ভদ্পিতে কোন কল হইল মান স্বামাদি-ভাষাতে আমি অতিশয় শিরক হইয়া ত্রীপুঞ্জ গকেপোতের সহিত ভাষার উপার প্রাকৃত্ত হইল, প্রভৃতি পরিজনের সহিত গৃতে অবভান,করিতেই এবং পতনমাত্তেই জাহাজের তল ক্ষুট হইয়া মনত্র করিয়াছিলাম। নাবিকগণের চিকিৎসা করিন। গেল। আমরা 👂 জন, নাবিক একত্র ছইয়া জা-ার প্রত্যাশায় আমি ওল্ডজুরী ইইতে আগন হাজহইতে সমুদ্ধু পোতাবতরণের ভরি খানি না-🌞 । উঠাইয়া ফেটর্নামক গলাতে ও তথাহইতে। মাহ্যা ভদারোহণ পূর্বক ও ঐ লাহা**ল ও মনা**সরি नामक द्वारन लहेश। (नेलाम; शब्द रम नकल इहें एक मूट्ड याहेवाब अन्। मायू र में एक वासि उ वहन-स्थाना मदर्ग किन वर्गत काल लागिलामा आवाह मनमानुमादत स्थाय एय माटफ धा थाकिए । ति विषया भूबील- हाति (काम के करण वाहिया विश्वाहिताम, के



(রাল্যর প্রয়ু- শর্মানত প্রায়ন করিকেছে 🕕

শার আহিবার কমত। রহিল না, কারণ বায়ুর সাহাযে: ও বহু দূর অগুন্তু । হইতে লাগি-এক মাত্র উপায়, এবং আধ্বণ্টা কাল তদ-वलश्राम थाकिए ना थाकिए छेउद्गिम् १३ए७ হঠাৎ এক প্রবল ঝাপ্টা আসিয়া নৌকাথানি জলসাৎ করিলেক। তদনস্তর নৌকাস্থ সঞ্চিগণ ও পৌতহইতে যাহারা পর্বতে উঠিয়াছিল, এবং যাহারা ঐ ভথ পোতে ছিল ভাছাদের কাহার कि बहेना रहेन किष्टुरे विनिष्ट भारत ना; किल्ल ৰিশ্চয় বোধ হইতেছে ভাহাদিণের কাহারই প্রাণ - রকা হয় নাই। আমি কেবল আমার বিষয়ই कहिएक नाति। मोकाहुम्क हरेश श्रुवयनः मस्तु-त्रम आवनवम कितिएक स्ट्रेस, अवर भाउर ७ किए आबि प्रचिट्टिस शाहे । अहर

कतिए इरेशाष्ट्रिन, जाराष्ट्र आह माहित रेसता शाहिलार, किन्न कान रस नारे : अवस्मध्य কিঃ এতদবছায় বমুদের ভরজে নিভর করা যখন নিরতিশা পরিশুনে মৃত প্রায় ইইলাম, তথনি বোধ হইল যেন তল স্পূৰ্ণ করিয়াছি: ज्दकारन वार्ष्यं व नायन दहेशाहिन। ज्द्यात বমুদ্রে ঢালু এতাদৃশ অপ্স যে আমি তার পাইবার পূরে প্রায় অর্দ্ধ ক্রোশ গমন করিয়া-ছিলাম। অনুভব হয় তীর প্রাণ্ডির সময় রাজি कहै वन्छ। इन्हें शाकित्वक। कन्छत এक लाग **क्लाना ज्ञान शमन कतिलाम.** किन्नु काशाता वार्हे। या यमारित कान विक् छ पृष्टिकावत क्रेस 🐗 কলতঃ তৎকালে আমি এতাদ্শ পরিশান্ত কি যে হয়ত দে লকল ক্ষামার নয়ন পথে বর্ত্তমী

निम् व्यक्यन कविट नामिनः अ उपाय कान ফিট্রিয় প্রেলাম ধে আমার **উভয় হস্ত পাদ**্ ভজল বাহা রহিয়াছে। তক্তপর আমি আরো। ाव विविध्य या वामात वार्म्म वहहेट उक-্ৰ প্ৰান্ত শ্বারেও হা**নেক অশক্ত বন্ধন** র্লির্বা কেশ করিতে আমার ক্ষমতা ছিল,ভাছাতে কেবল चागाह नहत्निप्रहर्त शोङ। वृषि इहेट कांभित। (मरकद्व ) क्रिक्टिक किर्मारक केरिक केरिक किन ; কিন্তু ভদরত্বাই আকাশ ব্যক্তি আমার আর किछ्डे वृद्धिः भाष्ट्र शहल मा।

ক্ষণৈকের মধ্যে বোধ চইল যেন কতকগুলিন সভাব প্রাণী আমার বাম পাদে লড়িতেছে; পরে ক্রমে ২ তাহার পাশার বক্ষ দেকে আইলে ্জামি যথাশক্তি নীচে নিরীক্ষণ করিয়া দেখিলাম रंग मीटर्च आह्र इह-बन्नुलो-পরিমাণ धनुदीव-খারী কভকগুলিন মন্ব্যাকার প্রাণী তথায় ভূমন 'हिट्छ **ए**। **ऐजिम** ६४ (दांच ६३त, ८० **स्टा**नत् ६ क ले क्ष मनुष्य कर कम चगुगामी अ-ंख्डित शन्हार २ याक्टिक्ट्रा अहे अकन

मिতाন্ত ক্লান্ত, ভাষাত্র আবার গ্রীয়কাল, তৃতী- পল্ল হইয়া উলৈংৰরে চীৎকার করিলাম। তচ্ছ-হুতঃ পোত ভা প কর্ম সময়ে আর্দ্ধ বোচল বুাণ্ডি বিশে ভাহার। সকলে ভারে ইভস্তভঃ পলায়ন মদ পাল করিয়াছিলাম, এলারৰ আমাকে অঘোর কিবিলঃ এবং পারে শুনিয়াছিলাম ভাছাদের কংয়ক জন আমার শরীতের দুই পার্শ্ব দিয়া যালের উপরি শয়ন করিবামাত্র এমন সৃষ্ঠি নিদু । ভূমিতে লাকাইয়া পড়াতে অভাস্ত বেদনা পা-উপত্তি তইল যে আমার জীবনকালের মধ্যে ইয়াছিল। মাহা হউক, তাহারা অবিকলেই কি-আর তাদৃশ নিদু৷ ইইয়াছে কি না তাহা শারণ রিয়াংআইল, এবং তল্পধ্যে এক এন বির্তিশয় হয় মা। গণনায় বোধ হয় নয় ৰণ্টা নিদ্ভি সাহসপূৰ্বক আমার মুখেন প্রতি দৃষ্টিপতে ক-हिनाम. (कमना निमुख्क कार्त प्रकाठ हरें- विशा विव्यवकाशक ভारत रूप के खानमशूर्वक ম্বাছিল। আত:পার **উঠিতে চেষ্টা করিয়া দেখি** উ**ত্তলিত নয়নে বধীর-**কর উচ্চৈভারে চীৎকার লড়িলার সমর্থ নাই, ও অতি কটে পাশ্ করত "হেকিনা দিগল্" এই নাত্র শক্ত স্পষ্ট-कार उक्तारवर्कतिन। अभवाभारतवा अक्षेत्र দৃদ্নবৈপ বা কইয়াছে, এবং আমার দীর্ঘকেশও বিরেষার করিতে লাগিল; কিন্তু ভাত্রে কি ক-तिन पारा वासि किहुरे **कासिट भातिनाय म**। আমি তথন-পর্যান্তও ভূমিতে পড়িয়াছিলান পাঠকেরা অনায়াসেই অনুমান করিতে পারিবেন: অবশেষে মুক্ত হইবার চেষ্ঠা করিলে ২ ভাগ্য-ক্রমে সেই সকল বন্ধনরজ্জু ছিড়িতে আমার नामर्थ इहेन, अवर या लदन क्रमूर महु मून নিতে প্রেথিত করিয়া আমার বাম হস্ত ভাহার স্হিত্র বন্ধন করিয়া রাথিয়াছিল, সে স্কল উৎপাটন করিয়া ঐ হস্ত আপন মুখের দিকে व्यानम्ब পूर्वक अकाहा (य काल व्यानादक नः ধিয়াছিল, তাহা ক্লানিতে পারিলাস, এবং ওৎ-कर्त्र वनशूर्वक छानाछानि छ महोत्र छानना করাতে অভিশয় বেদনা ৰোধ দইল: কিন্তু সে সকল দড়িতে আমার বামদিগের কেশ মাচ कतिया ज्याप वाधा हिन, जाना श्रृतिया शास कामि उथमहे काबून पूरे मार्थ नाफिएल ना-बिञ्चा हिलासः। किन्नु वे ध्यानी विश्वदक विविधन शूर्व ভाहाता शूनवीत नानाहरू नातिन। छा-ালার দর্শনে আমি অভ্যন্ত বিসায়া- হাতে ভাহাতের পূর্বক চীক্ষার ও গেলে ক্রীয়ান

हिन। अ भक्ष छक्ष इहेटन शह स्थना भिन, य क्रांशास्त्र अक क्रम डेटेफ्श्चरत "क्ष्माः कारनक्" এই শব্দ করিতেছে। ভৎপরে গৃহ্তৈতিকের মধ্যে আ-পন বাম হাতে যেন শত ২ সূচী ফুটাইতেছে বোধ করিয়া দেখিলাম, যে সূচিকাপ্রমাণ প্রায় এক শত বাণ আমার ঐ ছত্তে বিদ্য রহিয়াছে: ইছা ব্যত্তিত ভাষাল্ল বোমের মত আরো কতকগুলিন মুখ্য আকাশেও উৎক্ষিপ্ত এরিয়াছিল। প্রমান হয় ভাচারও ক্ষেকগুলা আমার গাত্রে পড়িয়া থাকি-থেক, কিন্তু ভাছাতে আমি জক্ষেপ্ত করি নাই। কএকটা আমার মুখে পড়িতে আইলে আমি বাম হাত দিয়া তাহা ঢাকিয়া রাখিয়াছিল ম। এখন এট বান-বৰ্ষণ শেষ হইল, তথন আমি দুংখ ও যা-क्रमाञ्च भाकातां एक नाभिनाम, अव॰ शुनर्वाह वा-হল চড়োইতে চেঠা করাতে ভাহারা পূর্বাপেকায় শ্বিক শর-বৃষ্টি করিছে লাগিল। তথ্যবৈ কএক জন ত্রিশূল লইয়া আমার আশে পালে বিধিবার **ंडोग्न हिन, किन्न क्यानक्या भागात गाम्न (न** <sup>দিল</sup> **মহিষ-চন্দনিন্দিত একটা কুত্তি থা**কায় ভাহা ভাষার। বিধিতে পারে নাই। আমি তথন পর্যান্ত श्चित १३३ थाका वृश्चित कार्या विटवहना करिशा,या-वद इशिंब न इश्र जावद मिहें जारव थाकिए उहें हे क्हू क **रहेलाय,** (क्लन) यन इ क्रियाहिलाय (य ब्राजिकात्ल আমার বাম হস্ত মুক্ত থাকলে আমি আপনাকে অ-नाशास्त्रहे मुक्कवन्त्रन कहित। ভाहामिशक प्रिथिशः আমার এমত হংপ্রতায় চইয়াছিল, যে যালা দিগকৈ আমি তখন দেখিলাম, তাহাদের মত যদি ति शारनत नकरन रूप, ७ (नरे नकरन यपि अक अकाख रममामल माजिया वामात विकंटन वाहरम णाक्। इस्टेंग्ड व्यामि अकाकीहे (महे मक्टना ममान ক্ইতে পারিব,কিন্তু খামার ভাগ্যে তাহার বিপরীত कम ब्राधियादिन। यासारक क्षित्र प्राकिट्ड (म्थिया

**डाहांडा वान-निरक्षण क**तिएंड कांख हरेंच सरहें; किंड शास्त्रांन श्रीनंत्रा कानिए शाहिनाय (य हा-हाता जारगरक अकल इन्शरिक। शाम कार्यान मर्ब আমার দক্ষিণ কর্ণের নিকটে ক্রমাণ্ড প্রায়ঃ এল वन्हें। ठेक र निक छिन्दि लाहेनाम, काहा है दिवि इंडेन (म् अहाता (भाग कर्य किति डाइ: (मह-ৰূপ জন-দশায় থাকিয়া আমি মথাশক্তি কিছু দূর পর্যান্ত করাইয়। দেখিলাম, দে ভাছার ভূনি-ছাড়া এক হস্ত উচ্চ এক মঞ্চ গ্রন্থত করিয়ারাখি-য়াছে। ভাষাতে ভাষাদের চারি জন লোক ধরিছে भारत, अभन अपूर्णात केठियांत क्रमा पूरे हिन शामा কাষ্টের সোণানও লাগান আছে। পরে ভাহাদের अक कन वृक्ष वर्शक (भेटे संदर्भ में। छाटेश किछु व-জ্বা করিতে লাগিল, কিন্তু আমি ভাহার এক বণ্ড বুঝিতে পারিলাম না। বক্তার তিমটি বর্ণ-মাত্র आयात मद्राप कारहा (नहें श्रेषान वर्गक, आर्थन বজুতা করণের পূর্বে "লেফো, দেহল, সম্" এই বাক্য তিন বার উট্চেঃমরে কহিয়াছিল। পরে তাহারা তৎকালের ও পূর্বকার কথা গুলিন আমার নিকট পুনঞ্জ করিয়া ব্যাখ্যা করিয়াছিল। এই শেষোক বাকা শ্বণমাত্র ভাহাদের ৫০ জন বোক তৎক্ষণাৎ আমার মন্তকের ব্যাদিগের বন্ধন কা-টিয়া দিল, ভাহাতে আমি দাক্ষণ পাথে কৈরিয়া নেই বক্সার আকার প্রকার দেখিতে সমথ ছইলামা (वाध क्वेल म सक्षावयुक्त ए भावे सक्षक निक्य मह-**চর অন্য তিন জনহুইতে ছার্ঘাকার। ক্লাহ্**তেদর এ । জনকে ঐ প্রধানের পরিক্দের ভূমিপভিত-প্রান্ত-ভাগ ধরিয়া পাকিতে দেখিয়া বেশ্ব হুইল সে ভাহার বড় মনিষ্ঠ, তাহার দৈহিক দার্ঘতা পরিমাণ আ-भात भरामा अमूमीहरेट किछू वड़। चनत प्रे केशात पूरे नार्ष व्यवस्थातत नाय माण्यासानि वका रहेला में उर् चिनिय चर्था । अक्षा

হস্ত উত্তোলন ও স্থাদিকে দৃষ্টিপাত করত যেন **छडेका चिक् थाकेतात केव्हा कामाहेतात कमा**ं বারস্বার খালন অস্থলী মুখে দিয়া অকর্ত্তর অবৈ-या श्रेकारन तिलक इन्टि शाहिनाम ना।

পেরে জানিতে পারিলাম তাহারা প্রধান কর্তাকে ক্ষএকখানা সিভি আনার পাখে লাগাইতে আ-দেশ করিলে ভা**হারা ভাহা করিল। পরে ভদ্**যরা আ্মান্ন উপরি প্রায়ঃ এক শত জন উঠিয়া আমার। शास्त्र ३८७ (मथिएन भाइलाम) क्यकेंग भाज নামাবিধ পাওমাণদৈ পরিপূর্ণ ছিল, কিন্তু সে

তে হয় সে তাহা সমুদায় করিতে লাগিল; তা- | হারা **যথাশক্তি শীঘু**২ আ**মার মুখে** আহার शाटि जामात म्मारेहे প্রতাতি হইল ধ্য म कथन | यागाहेट बागिन, किन्न जाटि वृक्षिनाम चा-ভয়-প্রদর্শন কথন কিছু অঞ্চাকার কথন আ থেদ বার আকার ও কুধার প্রাদুর্ভাব-দর্শনে তাহাদের ও দয়া প্রকাশ করিতেছে। আমিও তখন বাম । নিতান্ত বিকার হইয়াছিল। অনন্তর আমি ইঞ্জিত-ছারা পানেচ্ছা ব্যক্ত করিলে পর ভাহারা আমার ভাঁছাকে নাজা মানিভেছি, এমনি ভাবে অধী- আছারের আতিশ্যা দর্শনে এৎকিঞ্জিৎ পানীয়ে নের নায়ে গুটিকত কথা কছিয়াছিলাম। একে কুছু হইবেক না বিবেচনা করিয়া সাবধান-পূর্বক व्याशि कार्डाकं ছाডिবाর এक यण्डे। পূর্ব অবধি । একটা सम्পূর্ণ कृषु পিঁপা सांश्राङ्गेश व्यामित। কিছু মাত্র আহার করি নাই, ভাহাতে আবার ় পরে তাহার ঢাকনি খুলিয়া আমার হাতের কাছে স্ভাবপরবশ্য সুসরাং ফুধার শুদ্ধ প্রায় ও বিকল ্রাথিলে তত্তস্থ জল আমি এক নিঃশ্বাসেই অন্ রানে পান করিয়া শেষ করিলাম। কারণ পে পাত্রে আধ বতল পানীয় দুব্যহইতে অধিক ্ধরিতে পারিত না। ক্যাস্বাদনে যেন বগঞ্জিদেশের হরগে: আমার ইঞ্জি ভালমতে বুঝিয়াছিল অপকৃষ্ট মদিরা এমনি বোধ হইল, কিন্তু তদপে-ক্ষাম কিছু খাদুতর। দিতাগুলার জানিলে তাহাও ছরণো বলিয়া ডাকিড) **লে মাচাহইতে নামিয়া। সেই কাপে** পান করিয়া পুনর্বার অধিক প্রাথনার रेक्टिक कतिवास। किन्छ 'ठाशामित वे मुना चाद কিছু মাত্র ছিল না। আমার এতাদৃশ অভুত ব্যা-পার নয়নগোচর করিয়া ভাষাতা জয়প্রতি করক স্থের দিকে ালিয়া আদিতে লাগিল। তাহা- আমার বুকের উপরি প্রেবণ **শহে**কিল। দিগল দের এজে: আমান বিশ্যে প্রথম দংবাদ পাইবা- : বারশ্বারণ বলিয়া নৃত্য করিতে লানিল। ভাছারা মাত্র রাজপানীচইতে কএকটি ছোট ২ চুপড়ি আমাকে সঙ্কেতদার। এ দুহ পিঁপ। দুরে ছুড়িয়া বিওলে প্রিপুণ করিয়া **আমার জন্যে পাঠা- কৈলিতে কহিল, কিন্তু ইভিপূর্বে পরো**রেক্ हेश निशाष्ट्रिलन, आश्रमन मलीन तम नकत छा- वित्याला " अहे दोकाहा नकल लाह्यहै নীচে নামিতে সতক হইয়াছিল। ভাহার। শুন্ত পথে ঐ দুইটা পাত্র ফেলিতে দেখিয়া এক-সকল কোন পাশ্র মাংস ভাছা আমি আস্থাদম | কালে " হেকিমা ভেরল্" বলিয়া উতৈঃস্বরে চীৎ-करिया किष्ट्रे इंडर्डिट्स्य करिएक शादिलाम ना। कात्र करिएक नाशिला याहाता कामात्र स्वीदित উপস্থিত সমুদায় সামগ্রা দুই তিন গ্রানেই নিঃশেষ উপর দিয়া যাতায়াত করিতেছিল, 🗷 আয়-६२ल; अक २ वादत जामि जिम চाति है। कतिया खित मर्था किन, छाहारमत 8-14- क्मरक पत्रिया ेत्रक शिथ श्राम कतिएक वाशिलाम, म ज्ञिएक किवान किवान कमा जाराह भिष्ठ थात्र वस्तूरकत्र हिरोधिकत् मणः जा- वात्रवात शहतारुका मिर्ड वासिकाः किन्न महन्

পারিত তত নহে, অধিকন্তু সন্মান করণাভিপ্রায়ে ভাছাদের প্রতি আমি অধীনতার ভাবও প্রকাশ कतिहाहिनाम, इंशाटि म्ख्ताः चामारक वे कण्या-नाइडेट बहिड इटेट इटेन। चार्ता दिव्हमः 'क्तिश। (पथिलाम (य जान्। इप्तत्र এ क्रांश नमारताह ও ব্যায়াস-পূর্ব আমার আতিথ্য করণে আ-मारक जाहारमत निक्र वाधाइ हरेए हरा। म यात्रा इंडेक वे नकल कृषु माननाकी सामात मृटेकक इ.उ-यूक-श्रकाश-(म् व्यवत्वाकन कर्ति-বামাত্র যে বিনা হৃৎকম্পে অকুতোভয়ে তাহাতে আরেছেণ-পূর্বক গমনাগমন করিয়া বীরতা প্র-काम कित्रशिक्त. उपमित भागात उरकालीन ি খায়ের আর ইয়ন্তা ছিল না।

রা. না. বি.

ভন্লুকের কুঠিভে লবণ-পুস্তুত-করণের ইখিনি

📆 🚵 💱 विधार्यंत ध्रयम ७ विछीय शर्व ्रैं: न्।ल, व्याकिय, दिनमाहि अठ**रम** लोह বি প্রধান ২ বাণিক্য দুব্য প্রস্তুত-কর-গুলিক্ত্রুল নের বিবরণ প্রকটিত করা গিয়াছে; এই পর্বে লবণ, সোরা, চিনি, লাক্ষা প্রভৃতি অপরাপর কএক পদাথের উৎপাদন-বিষয়ক সত্ত্ ক্ষেপ-বিবরণ লিপিবন্ধ করিতে সক্ষণ করিয়া উপন্থিত খণ্ডে লবণ প্রস্তুত করণের প্রথা নিজ-পণ করিতেছি।

अवरवक्क व्यविद्धाः है द्वास बास्त्र वृक्ष्यत्व। जानम হত্তে রাখিয়াছেন; ভাঁহাদিণের অনুমতি ভিন্ন কেছ ঐ পদার্থ প্রস্তুত করিলে তৎক্ষণাৎ দে রাজ-

ভাবিয়া দেখিলাম, বে ভাছারা আমাকে যে প্রস্তুত হুইয়া থাকে, তৎসমুদার কোম্পানি ক্রয় কুশে কেলিয়াছে, তাহা তাহারা যত করিতে করিয়া লন, ও তৎপরে অপ্ট বা তত্যোধিক-**ও৭ মূল্যে তাহা প্রজাদিগের** ব্যবহারাথে বিক্রয় करतन। बरे अकरठिया वानिष्ठा वार्यिक ० कार्षि **টাকা কোম্পানির ল**জ ছেইছা পাকে, এবং তথ-कार्या-नम्भाषमार्थ जाँशाहा तिश्व-वाय नङ्कारस वर्ष-मध्याक कायानिय मध्याणित अ मानन कुर्म-চারা নিযুক্ত করিয়াছেন, এবং তাভাদের সুশা-সনার্থে স্থানে২ নিয়ামক কর্বগও নিযুক্ত আছে। বন্ধ-দেশে যে সকল লবণ-প্রস্তুতের কার্য্যালয় আ**ছে,** তাহার নিয়ামক নাধ্বেরা কলিকান্তায় স্বস্থিতি করেন: এবং ভাহাদিগের বৈঠক "সাল্ট-বোর্ড " নামে বিখ্যাত। ঐ বোর্ডের অধানস্ক্রমস্ত कॉर्यानर्य अक नियरम कर्य मन्यास इहेसा बारक. जारात अरक्त विवत्रभ नक्ताहरू विवत्रभ कान्द्र रुप्त, पाठवर প्र<del>छार-म</del>ह्हाल-कन्नशास्त्रिकारम् व-ভূলে কেবল ভম্লুকের কৃঠিতে যে প্রকারে **লব**ণ-अख छ-कहन कार्या नम्ला वर्षा थाएक, जाहात है ৰৰ্ণন করিব।

> ভম্লুক নগর কলিকাকাহইতে ২২ জোশ 🕬 खरत काशनाताहा मनी उटि छि छ। शृक्कारन आका मन्याम ও दाविका-विवस्त्र मून्मद्रकारण विथा। ছিলঃ অধুনা সে খ্যাতি লুপ্ত প্রায় ছইয়াছে, कितन माम माञ्च कात्मिष्ट कार्ड। भव्न नद्व नहत्व अहे नगत नामाना नरह। हेहार य कृष्ठि चाह्न, लाहाहहेटल প्रान्ति वरमत २१४० सक्त त्याम नवन श्रञ्ज, ७वा काम्यानित २० नक होता नांक, इरेशा बादक।

जम्बूटकत ममत्रकूठीत अधीरन भाविष्ठि कार्या नम् निष्ठं चार्ह, उपित्नव उम्लुङ, रेमनाका कतामूण, वाश्वकांबार ७० वृम्तकः बाद्ध पश्चमीत्र एक। क्षणत वक्टपटम (य नकव वक्ष कार्य/। जन्न नकक कार्य नहरू विकास

তাহার প্রয়েক আড্জ বথোপযুক্ত ক্রুছ কার্যা- । "হাতর দ; তাহা সর্বাপেকাষ বৃহৎ, এবং তা-बार्स विভক्ত আছে। कूनू कार्य। नास : एका "। এই সকল কার্যালয়ে দারোগা, মোহরর, স্থা-দল্দার, জেলাদার প্রভৃতি ভিম ২ নামবিশিষ্ট অনেক কর্মকর্ত্রা নিযুক্ত আছে; ভাছারা কার্বিক আড়জে কত লাণ প্রস্তুত করা কর্ত্র্য ভাচার প্রিমাণ নিচিত্র করিয়া দেন। সেই পরিমাণের ৰাম "ভায়দাদ্"। ঐ তায়দাদানুসারে প্রত্যেক হুমার কল্করেকেরা আপন্য হুমার সম্ভর্গত अद्यादिशक ভाकाइंश (क कड शतियात लवन প্রস্তুত কভিবে, ও কি প্রকারে মূল্য লইবেক ভালা নিজারিত করে, ও তদিবরণ এক ২ ছাপা কাগজে লিখিয়া দেয়। এই নির্দারণ-ক্রিয়ার নাম ণ্যোদ্পেত্র. শ ওয়ে কাণজে ভাছা বিথিত **হয়** ভাষার নাম "হাত্তিঠা," ও **যে সকল ব**্যক্তিরা এক্পুজারে মৌদাপত্র স্থির করিয়া হাত্তিঠা প্রাপ্ত হয় তাহার। ' মলজা " নামে প্রাত। লব ৭-প্রস্তুতীকরণ জাবের **অভ্যান্য লাভ, সু**ভরা**ং কেবল** এই কার্যো কেইট দিন্পাত করিতে পারে না, মল-का-माडिए नद्व श्रञ्ज कहा वाली क क्यिकार्या <u> क्रियाशस्त्र हेलाइ बर्जन करद, लक्ष्यु वे छेड्य</u> कत्यं ७ ठाशांत्र पार्डिम्। मूद्र रुप्त ना, जकतारे िल्ल अवश्य ও बाकास महिल्

्र **७ म्ब्रुटक्त ब्रवश** एउटा आश्रीतथी, **इन्हो, टिक-**हाथानी, त्रायथानी, প्रकृति कस्त्रक नमोत्र करन ্রাষ্ট্রত হয়, সূত্রাং লবণ-প্রস্তুত করণের কার্য্যা-ा वक्त वे नरीठा विधिष्ठ चारह। यतकोङ्गा ''शाभयुक 'दान-निषिष्ठ-क्त्रन भूवंक आहा हाजि

হাতে লবণের মৃত্তিকা প্রস্তুত হয়; বিভায়াণশের नाम "जूति" कर्षां कक्ष: जववाक कन हा-থিবার জ্ন্য ভাষা আবন্যক; ভূরীয়াণশের নাম "माना" वर्षाय नवन शैक्तिक पान: हजूर्य সাস অব্ধিব্ৰার প্রারম্ভ প্রারম্ভ লবন প্রস্তু তীক্রণ। ও ভূঁরি ঘর ও অর্থাৎ লবণ পাক করিবার ৃ। এই कार्य। नियुक्त थारक। काकिक-मारमत धातरस्र । चल्म-एज्डेरस्त्रं नमांद्रेत माम अधाराफ्ति तो ज्यन मगारकत (मान्छे-(नारफ्त) नारकरवता कान् "मनकः" वहे कल अक २ थालाफित निमिट्ड पूहे তিন বিষা ভূমির প্রয়োজন হইয়া থাকে।

> शृर्द्धे छेक क्रेग्नाष्ट्र, थालाष्ट्रित श्रमानारम-হইতে চাতর বৃহ্ৎ; ভদর্থে এক বিষা বা ভঙ্গে-ধিক স্থান আবেশাক হয়। মলজারা তাহা অভি भावशास्य लिकात करत. स्थाइहेट क अक व्यक्त वे পরিমিত মৃতিকা অলব করিছা জালাব মধ্যে ২ ও চতুদিলৈ বাঁধ দিয়া ভাষা ভিন মাংশ 🕞 ভাগ করে। তৎপরে ঐ ক্ষেত্রত্তর ধনন করিয়া তদুপরি মই দিয়া দুমি চৌরস করা যায়। ঐ (ठोत्रम-कता ভृश्यि ৮।>० पित्रम (दोरम् अफ कतित्व) ভাছার উপরিভাগের মৃত্তিকা, ইউক-প্রাচারে লোনা नागित य अकात हुन करण उक्तरन, एन बहेश। यात्र। हुनं अञ्चल क्षेत्र कपूर्णात भी ए इस कन মনুষ্য ইতত্তঃ ভুষণ করিয়া ভভাবৎ উত্তম-क्रांभ मिति के करत, ७ उरशात अक नशाह लामा ओर्फ् एक म्हेरल ने हुन श्रृत्रधाना में-हिशा अकल कता यात्र। कहारनम क्रान्त हिंहम निक थाकिल व तोरमुत माकाना क्रेटन मनन-মৃত্তিক। উত্তমক্ষে উৎপন্ন হয়। অপর বন্যার জলে চাতর খৌত হইলে তথা কার্ত্তিক বা মগু-शंत्रव भारत चन्छ। वर्षात्र वा कालानान चपवा

<sup>ি</sup> বিভাগ করে। ভাষার প্রথমাপনের নাম। , \* পঞ্জিবার ভাষার নাম । চাধ্য করে।

পত্তির হানি জন্মে। পৌষ ও মাষ মাসে জোয়া-রের জলে জুরি-নামক কুণ্ড-সকল পরিপূর্ণ না হুইলেও লবণ প্রস্তুত কার্যের হানি সম্ভাবনা।

खुति निर्मानार्थ हातिकारी। ভूगि चारमान ।

खे ভूमिट को इस गड़ी अक कुछ थनन कराइ
खक लामानामाना हाना काना कान नमीत महित्र
मन्धूक कितान कुति शिक्ष इस्ता। किरोतन नमीत महित्र
मिनम जेक नाना मिया नमीत ननगम्र कुति
शिवम जेक नाना मिया नमीत ननगम्र कुति
शिवम जेक नाना मिया नमीत ननगम्र कुति
शिवम केत्र नाना मिया नमीत ननगम्र कुति
शिवम केत्र नाना मिया नमीत ननगम्र किरा ननग
शिक्ष केत्र नाय मग्द्र वे सन क्रमा करत। वर्षा
कारम जृति वृधित करन शिक्षन-शूर्वक कुति शितिकार्तिक-मार्ग मिक्ष किरा मिक्षन-शूर्वक कुति शितिकार्ति कर्ति, किरा निर्मा नाम्मिन ज्ञा छात्र। श्रीम करा ननग-शिक्ष कर्ति-कार्य हा किरा शिवम श्रीम किरा निर्मा कर्ति। नमीत नाम्मिन नार्य हिन्दिन कर्ति। स्थान क्रम हिन्दिन कर्ति। स्थान क्रम हिन्दिन कर्ति। स्थान हिन्दिन कर्ति। स्थान हिन्दिन कर्ति। स्थान हिन्दिन कर्ति। स्थान हिन्दिन स्थान।

চাতর জোয়ারের জনে শিক্ত করিয়া থনন ও রৌদুে শুক্ষ করণের নাম "সাজন"। কার্ত্তিক মাসে তজপে চাতর প্রস্তুত করিলে ক্রনাগত তিন মাস তাছাতে লবন-মৃত্তিকা জিমিতে পারে, তৎপরে মা-যের শেষে বা ফাল্ডণের প্রারম্ভে তাছা পুনঃ জো-য়ারের জলে শিক্ত করিয়া খনন না করিলে ও তদ্-পরি ভক্ষ ও মাদার ক্ষকর্মন। মৃত্তিকা না ছড়াইয়া দিলে তাছাতে লবন-মৃত্তিকা উত্তমক্ষপে জন্মে না।

থালাড়ির তৃতীয়ান্তের নাম মাদা; তরিমানিথে মলজারা ঘাদশ হস্ত পরিধি, ও ৪॥ হস্ত উচ্চ এক মৃৎস্থা প্রস্তুত করত তদুপরি ১॥ হস্ত গভীর ও ৫ হস্ত পরিমিত মালসাবয়ব এক গর্ত থনিত করিয়া মৃত্তিকা, ভন্ম, বালুকাদিঘারা তাহার তল সৃদ্দ ও জলের অভেদ্য করে। তদমন্তর তাহার তলে "কুঁড়ি" নামক একটি মৃৎপাত্র স্থানন করত এক বংশ-মল ঘারা তাহার সহিত্ত স্থান করিছক बक श्रकां कालांत्र मः राग कित्र प्राप्त के के कालांत्र नाम "नाम", बदः काशांक व्याप्त के के किता काम किता कार्य कार्या विकास कार्य कार्य विकास कार्य कार कार्य का

চাতরে লবণ-মৃত্তিকা প্রস্তুত ছইলেই মলজার। পূর্বোক্ত কুডির উপর বংশ নির্মিত এক খানি ছাকনি ও চন্পরি কিঞ্চিৎ খড় রাখিয়া এ মৃত্তিকায় মালার গর্ভ পরিপূণ করত পাদ্যার। তাছা উত্তৰকপে চাপিয়া দেৱ, ও জুরিইইতে ৮० तनम नवन-सन उन्तरि छानिए थाक। बे জল লবণ মৃত্তিকা খোত করিয়া ক্রমশং বংশনল-षाता नारम व्यक्तिश लिक्न एत । किन्न उदम् मात्र <mark>कत सर्व-मृ</mark>जिकाक्ष्टे **ल्यक् इत्र ना**ः ৮० क्लम क्टलंत ७०।७२ क्लममाञ नारि चा-সিয়া পড়ে, অবশিষ্ট জল উ মৃত্তিকার সহিত न॰लभ थारक। नार्ष कल-लक् इहिन्ह **क्हेरल** मनकोता वे नवन-कन वक श्यक कनाम सहैया রাখে, এবং মাদার থেতি মৃত্তিকা চাতরে নিজেপ করণাভিপ্রায়ে স্থানাস্তর করত মাদায় **নৃতন লবক** শ্তিকা দিয়া তাহা ছাঁকিতে প্রবৃত্ত হয়ঃ

লবণ জাল দিবার মরের নাম তুন্রি মর ; জাছা
চাতরের সন্নিকটেই নিন্নিত হয়। তাহার দৈর্মা
পরিমাণ ২৫।২৯ হত, এবং প্রস্ত ৭ বা ৮ হত্ত। মলজামাত্রেই এ মর উত্তর দক্ষিণে দীর্ঘ, এবং তাহার
দক্ষিণ ভাগাপেকায়ে উত্তর ভাগ অধিক উচ্চ করিয়া নির্মাণ করে; তৎকারণ এই যে দক্ষিণ ভাগা
তাহাদিগের আবাসস্থান, তাহা অধিক উচ্চ করিবার প্রয়োজন নাই, কিন্তু উত্তর-ভাগে লবণজালের উনুন নির্মাণ করিতে হয়; তজ্জাত-প্রশ্ননির্মানের নিমিত্ত গৃহ উচ্চ না করিলে অন্নার্মা
অবিহিতি করা কঠিন হইয়া উঠে। উক্ত
মৃত্তিকামার। নির্মিত হয়; তাহা ভিন হত্ত

ভেড় সের। ভংমমুদায় কর্দমে প্রোথিত করিয়া উন্নের উপর ভাগিত করিলে যে অবয়ব হয় ভাচ, নার্মে প্রদর্শিত হইল; মলম্পারা ভাহাকে শ্রাটেল, এবং যে মৃথপিণ্ডের উপর তাহা স্থা-

উন্নে ঋথি প্রজালিত করিলে VV কর্ম গুদ্ চুইয়া তত্ত্ব সমস্ত V.77 কুঁড়ি-পাত্তের এক পিণ্ড হইয়া  $A \wedge A \wedge A$ উঠে। ठाति भीठ वा इत्र यन्छ। काल ভाषाएं नारमह लवंग-हत शांक लिंदिल पूरे (बाए) AAAAAAAAबर्ग श्रेष्ठल हया वे त्याड़ी

छन्त्वत भारतं साभिज थारक, अवः छाहाहते ए যে জল নিঃসূত হয়, তালা ঝোড়ার নিমুন্থ তৃণের : এক পাও দিতে লবে পঞ্জে "।। উপর পড়িয়া লবণের স্ল-পিণ্ডলপে পরিণত लवशास्त्रकाष्ट्र जाहा विद्याय निर्माल: किन्नु वल-দীর। তাহা কোম্পানিকে না দিয়া অনায়ানে গোপনে অন্যকে বিক্রয় করিতে পারে বলিয়া পাছ। লবৰ প্ৰস্তুত করণের নিষেধ আছে।

লবন-পাক-কর্নের পরিভ্যো "পোক্তান্"। নামক হোল্পানির এক জন কর্মকারক আ-শিয়া এ লবণোপরি এক হাই মুদার চিচ্চ करतः वे मून्ति माम ''कामन", बदः ठाहा-क्केटल के मृमुक्तात नाम छेट**ात क्वे**यादि।

स्वन मृद्धि इहेरन शत मनक्रीत लाखारत करू। क्रिका चारकमः ত) স্থাপত হয়; তথার এল দেবারাত্র प्रिट्ड पार्किया शास: **४क व्हेटन शा** 

শত বা দুই শত পঁচিশটি মিশুরি কুন্দকোর। গোলা-ঘরের ভুন্পেরি ভুপাকারে রাখা যায়। ছোট ২ মৃৎপাত্র স্থাপিত করিতে হয়; ঐ পাত্রের দশ বার দিবস লবণ গোলা-ঘরে রাখিয়া পরে নাম "ক্ডি", ও ভাধার প্রভাকটার অ্যতন ভাষ্য গোলা**হইতে বাহি**র করত গোলার ছার-নিকটে স্থূপ করিয়া **রাথিতে হয়। ঐ** স্থূ**ণের** नाम "वाष्ट्रित कोष्ट्र"; ১०१४० फिवन जे काँड़ि **एक इट्टेल श**त (काम्श्रीनित '' (भो क्लान-भारत्रां '' नामक कर्मानाही छाङ्। मललीत निक्षे क्रेटिंड পিত করে, তাহা "ঝাঁটচক্র" শব্দে কছে। তোলিত করিয়া লয়, এবং যে পরিমাণে লবণ প্রাপ্ত তাহা মলজীর হাতচিঠায় লিখিয়া দেয়া लवन-जूल-कद्रन-नगरत जलकाडी (क्याल) जनव-রত এক বিশেষ পদ উচ্চারণ করিয়া **থাকে,** তাকা ্এত্বে উদ্ভ করিলে গোধ হয় কেহ্ট্ বিরক্ত ् इहेटरन ना। उर्लम् यथा,

> " दामरभाभारत शक्षुरज् । মাল দিকে হবে পঞ্জে।; জবিদ চলে। ভইয়ারে।

পোজান-ঘারোগা-কণ্ট লবন ভোলিত চই-হয়। এ লবন-পিণ্ডের নাম ও গাছা-লবন্ধ: অন্য লেই তাত্ কোন্দানির পদার্থ হইল। তীছারা जे वादन धार्मभातायनभूदत कानमून कांद्रण कार् প্রাদিগের গোলা পূর্ণ করেন; ও আবকাশমতে তাহা লবণনিক্তেভানিগ্ৰেক আপনাদিগের নিন্দি**ট**ন শূল্য বিক্রয় করিয়া গতেকর। শলক্ষীরা কো-न्यानित निकाम लयानत मृता वाष्ट्रक त्याम स्थान দুই ঝোড়া লবণ পোত্তান ১ইলে আদলদার, করা ৮০ বা ৮০ করিয়া প্রাপ্ত হইয়া বাছে; भारत रकाम्भानि को नवन **५०/>१। क**तिया वि-क्य करतनः मुख्ताः क्या विकासित मृत्र क्याः कर्लाम् । तद्र रचलम । अ व्यम् । नमस्य चार्या वस् ্ডিভ ভাঁহারা মোন করা অপ্পতঃ ২াচ টাকা

### হতির বিবরণ।

मिड्याक विविधार्थ-नस्ट्र्स्ट वनाक्सी

२२ विविधार्थ-नस्ट्र्स्ट्रियात श्री विविधार्थ र निर्मादकः

अस्त्रियात स्त्रियात स्त्रिया स्त्रियात स्त्रियात स्त्रियात स्त्रिया स

ইদানী ওনের সর্ব প্রকার ভূচর পশু অপেক্ষা হস্তী
অতি বৃহদাক্তিমান্ জন্ত; ইহার গভার-পাংশুলবণ-বিশিপ্ত-শরীরের উচ্চতা প্রায়ঃ ৮ হস্ত; এবং
ইচার ভার প্রায় ৮৮ মোন পরিমিত হইয়া থাকে।
এই গুরুতর-ভার-ধারণ-নিমিত্ত হস্তির স্তম্ভুলা
সুদ্দ পদ্চ চুইয় সমাক উপ্যুক্ত; পদ্চ চুইয়ের
অগুভাগ পণ্ড নথবিশিষ্ট।

হতির কলদেশ অত্যন্ত চুব: সুতরাং অন্যান্য জন্তুর ন্যায় ভাহারা মন্তক সঞ্চালন করিতে পারে লা ভাহার মন্তক ও দশনদন্ত যে প্রকার বৃহৎ, ভাহাতে কলের চুম্বতাই আবশ্যক। কিন্তু পর-মেশ্বর ঐ দোবাপনয়নার্থে ছন্তিকে এক সুদীর্ঘ দান্ত প্রদান করিয়াছেন: মনুয্যের পক্ষে হন্ত ছাদৃশ উপকারী, ছন্তির পক্ষে শুগুও ভজ্ঞপ। লই প্রত্যের অগুভাগ এমত আশ্চর্যকাপে নির্মিত, যে ভংগতকারে হন্তা কি অভ্যন্ত গুক কি অভি সুক্ষা পদার্থ অনায়ানে প্রভীতি করি-তে পারে।

करीत मुद्रश्वित উৎকর্য উত্তমকাশে প্রতীত करेत्राद्यः किन्न ठारात कृपुः क्रकृष्ट्र এक প্রকার वियम्भ বলিলেই ক্য়; পরস্ত ভাষাতেও বিশ্ব-মুগ্রার আশ্চর্য,জ্ঞান প্রকাশ পাইতেকে। আধা-রাম্বেবনে গ্রহন-কানলে প্রবেশ করিলে কি জানি কোন প্রকার কন্টক অথবা কাট ভাষার চফুতে প্রকিষ্ঠ ক্ষা ব্যাঘাত অন্তায়, এই আশকা নি-শার্থারে পর্যেশ্বর ক্রিকে এক আশ্চর্য ক্রি-

শিষ্ট কুষু চক্ষু প্রদান করিয়াছেন ইয়া পেনে মতে ভাহার পকে হামিজনক নহে।

এই চতুপাদের শরীরস্থ সভাবনিদ্ধা শন্ত চাহার সুদ্দ দন্তক্য; এই ভয়ানক শন্তের নালাবে।
সে কুদুবুক্ষ সকলকে উদ্ধালিত করিয়া কেলে।
এতদ্যারা একবার মাত্র আঘাত করিলে শিংক্
ব্যাঘু গণ্ডারাদি ভাষণ-জন্তুও বিনপ্ত হুইয়া যায়।
হস্তীর চর্বণ দন্তপূনি শত্রক গাঠান্ত ভাগ হয়
না; এবং পরে উন্ধালিত হুইলে পুনর্বার নৃতন
দন্ত উথিত হয়।

হস্তিনী বিংশতি মাস এবং অন্তাদশ দিন একতি
মাত্র করভকে গভেধারণ করে। এ করভের ক্র্যাকালীন উচ্চতা প্রায় ২ হস্ত। সে মুখের দ্বার।
স্তন্যপান করিয়া থাকে। তিন বর্ষ পরে ভাষার
দশন উৎপন্ন হয়, এবং ত্রিংশদ্বর্ষ বয়ন্ত হইয়ে
সে পূর্ণাবয়র হইয়া উঠে। যদিও যথার্থনার্থনী
হস্তার পরমায়-কাল নির্নাচ হয় নাই, তথাপি
ত্রিংশদ্ধিক শতব্য বয়ক হন্তাও দৃষ্ট হইয়াছে।

ছস্তী-সকল সদা সুদেপ্রিয়, এবং সম্ভারণ কার্য্যে অতিশয় তৎপর।

এই জন্তর তিন প্রকার ভিন্ন ভিন্ন বর। এক প্রকার আছাদসূচক: তাহা শৃপ্ত উচ্চ করিয়া ত্রীর ন্যায় শব্দ করিলেই জানা যায়। অন্য প্রকার অভাব প্রকাশক; তাহা মুখক্ত অনুদান্ত বরেই প্রতীত করিয়া দেয়। অপর এক প্রকার কোধজাপক: তাহা কওদেশেৎপন্ন ভীষ্ণ শব্দ-দারা অভিব্যক্ত করিয়া থাকে।

हेश वर्ष मृत्यत विषय विषय विषय करेत ता अहे श्रेकाध कर मन्द्रमात कथीन हता। कि श्रेकीन कानाविध छात्र छत्यीं सं नृश्वित्रमा अवस् कान्यमा धनवान वाक्षित्रा क्षि-शृद्ध चादताहर किति ह महान कार्यक क्षेत्रा चाक्षिका। विश्व मृत्य



(क्ट्रास्त्र सम्भान-धर्मः

খভাবমাত্র এবিষয়ের কেবল অনুকূল হুইয়াছে भागम कतिरम हेशोता श्वकीय तक्करकत मन्भान पुर्व कतिर हि মাজাকারী ধ্ইয়া শীঘুই রক্ষককে সুহ করে; এবং তাহার বিশেষ ২ সক্ষেত এবং বিশেষ ২ ব্যগুভার সহিত ভাচ। পালন করে। মনুম্যদিপকে र्हेश थारक। भिका पिटन बाद उर्घावेस ६ वक् করণ প্রতৃতি দানা প্রফার কার্যোও ভাচাকে ভৎ-পর দেখা যায়। ভাহাকে চলোইবার নিমিত্ত কদাচিৎ অন্ধুশদন্ত ব্যবহার কল্পিতে হয়।

अत्नरक दिरवहन। कडिशास्त्रम, त्य एस स्थाहे-কের কর্ম এক হতিদার। সম্পন্ন হয়; কিন্তু णहात भौनाम समधिक यणु कता अदः वह পরিষিক্ত আহার প্রদান করা অভ্যাবল্যক। ভা-কাকে প্ৰভাৰ ১ মোন ভখুল এবং আ•ুলোন शानोश भिए इस्

रखीत माननिक श्रन-नकत पाकि भाष्क्र स्था अविवटः यत्तरक यामक श्रकात डेराइद्वर विक्रा-

(इन ; एथा**(४) व्याम**ता रिक्स पूरेणि व्याक्तर्या विवस

अकरा लाको अरम्हान काम मनाव मृत्रवाद ইচ্ছা করিয়া ঝকীক ডিয়েড্স হস্তীর উপর আ-শব্দ ব্ৰিয়া থাকে। হস্তিপের আজ্ঞা–সকল কদা– রোচন করিয়াছিলেন; একটি অপ্রশাহ দক্ষা िष कर्तिक क्रेटिन क्या यात्र—हस्ती किं जीहारिक भ्रमन क्रिटिन हरेत्राहित। जो शक्रीका কতিপয় পাঁড়াৰ্জ ব্যক্তি পরিক্ত ৰাষু ও সূর্যোট পৃষ্ঠ-দেশে গুৰুৰ করিবার নিমিত্ত সে উপৰিষ্ট রশিয় সেবনাথ শল্পাৰ ছিল। ভাষাতের ক্ষমুচ-ताता वर्ष्ट जम मंत्रियुक मर्वायदेक विक्रिकेट सम्बद्धाः भंगायम कतिया। संगात मारे अपूर्वन र कि कि गरक रुखिशक काहा सक्ता कहिएक हैका कहिशो হতির প্রতি অস্থাবাত করিছে আমেল করি-लाम। एकी किश्रमुद्र शबर्म कवित्रा स्त्रांनित्त्र नि-ठास मगोलक एकेटन चात वक लाग्यात क भयन क्रिलिक मा। रुखिन द्या छाराटक मुन्ध नुमध व्याचार क्षिए वाशिका नवार करिएन, " रेगा কণ্দেশে আখাত কর্"। ভজ্ঞা করিবের মুখ্র-भीव क्छो अने विहामुद्र क क्रिक्ट वसूर क्रिक जानदश में कियान प्रतिया। शदा मनन द्राहित (मक, क्षेत्र कारादात गाराहाओं (क्षर भारता

मा, उथम एक्षावाता चाकि मात्रशास अरक अरक जक्करकरे सामास्त्रीक रुतिया लाय श्रीतकाह कतिल। अहे महा-छाड छेशांक मानवाकात-विभिष्ठे निष्यं प्रकारक काला वहन क्रिवात कछ অনুপযুক্ত!

বক্ষাৰ আখ্যানহারা হস্তির কৃতভতে ওপ **প্রকাশি হইভেছে।** 

া কোন এক ভদু লোক একদা হস্তীপৃষ্ঠে আরো-হণ-পূর্বক মৃগানুসর এক্তমে গমন করিয়াছিলেন; 🚃র্ণ্য-মধ্যে এক সিংহকে মাব্লিবার উপক্রম-সময়ে 🖰

रेनव चार्माक्ष ज्य इड्ड्रेश इठाए इस्डिण्डहहेटड ज्मिज्ञ गाजिज रहेवामान्यभीश्रकाता जयक्रवाद वाकाख श्रेतन । किन्न श्रीह क्षका (१४) (सं निकरेक् अक्षि उस माथा उधक्तगांव उद्या-ৰারা ধারণপূর্বক সমত করিয়া বলপূর্বক এ মু-কার ভাবে কিংহের প্রোপরি স্থাপিত করিব, य फर्नुभाषा मिः करक व्यालम आव क <del>विकास</del> পরিভাগে করিতে হইল। এই বলাপার বিমৃত্ हिट्ड मुम्बब्रक्राल श्रेडील इंहेटन्ता।



(क्बोर्ड क्रिक्कोस निष्द्रहे सन्मवहेटक सनुस्थात है क्का t).

मामहा त्य माछत महत्कमा विगत्न ध्रकामा मछक मृत्वत, ाका, जबर मुद्धी; जाहारमत राशांत्रिक्षक अव विश्ववर्ग बाँक्या राज्य किया- शक्ति बादका, शक्ति आका आवारकात अविश्व

क्षिनाम, क्षित्राम, तुक, निष्टम ध्रकृषि विश्वत प्रकार, वरः नामून के के मृशुक्त ৰেলে ভাষা উৎপত্ন হয়। তথ্যতাত আন্ত্রিকা ভাষাদের আকৃত্তিও অংশকান্ত্র কিঞ্ছিৎ বৃত্ত त्मरम अक श्रकात एकी पारतः शाविकवृद्धता भाकतिम त्मरमह त्वारकत मर्ज भाव करिया कर त्मा कारकारिय के वे प्रतामा वाकारका श्रीम नाइक विविधायका त्य त्यात क

वन প্रकाक कतिशास्त्र ।

-

### কৃকি জাতির বিবরণ।

কি নামক অসভ্য জা। তর দাদ দ দেশীয় খনেক লোকেই শ্রুত আ-ছেন: ভাছারা চউগাুমের পূর্বোত্তর দেশীয় অনেক লোকেই শ্রুত আ-मिक्ष अमेरिक नीम करता विश्व रुप्त, कूकिती পূর্বাঞ্চলার মনুষ্য-মধ্যে অতীক বর্বর। তাঁহারা অপরাপর পার্বভা লোকের দ্যায় থর্কার, চুট্ঠি, विक्रि, अ शिक्षी, अदः शृई-एमीय वनामा (ताकवर गठमानिक), कृनुहक् **७ वर्जुब-नम्**न মুখবিশিঃ।

कृकिएए मरसा अक छेशाश्चान প्रहानिष्ठ चारह, যে এক পিতার পত্নীষয়ের মধ্যে কনিষ্ঠার গর্ভে তাহাদের উৎপত্তি, এবং জ্যেষ্টার গর্ভে মমজা-বিবরণ অসম্ভব বোধ হয় নাঃ

भिक्ति इहेरत उपाप गर्दाता उपारका कृष-गकन धामारणत निक्रिकेट कत गुरुन, ७ विशेषकारम ও মৃত্তিকা-ভূপ কেপণ করিয়া ভাচার পলা- যোদাদিগের উপর কর্ত্ব করা রাজার অধিকার; শ্বম-সুবিধা করিয়া দেয়। বদিও পশুর নিকট- কিন্তু প্রত্যেক শ্রেণীর অধিপতি, কি দক্ষি কি ছটতে এবলগুকার বৃদ্ধির কার্য প্রতীকা করা যায় বিগুত্, সকল সময়েই আগনার আফ্রান্তরণ मा, उथानि किस्यकाल-पूर्व शिक्रल पार्क्व वाद्य श्रविक किस्टि भारतन। विश्व काकतिका (मरण जुमन कतिहा दैनाद्वाक दिन- नामामा हाक्कनरमह माद्र नाहक निर्देश প্রজারা মানানীত-পূর্বক উপযুক্ত ব্যক্তিকে অধি-পতিত্বপদে বরণ করে ৷

ভীর, ধনুঃ, পরিষ, দাত্র, প্রভৃতি অন্ত্র কুকি-प्तत वावकार्याः अवः शरशः (शशाः ) **ठर्जनिविक** কলকও ভাহার। ব্যবহার করিয়া **থাকে। ভাহার।** কি নামক অসভা জাতির নাম এত- পর্বত্যধ্যে অতীব দুর্গম তানে বর্গতি করে: সেই ভান পাড়। নাত্য উক্ত হত। প্রত্যেক পাড়ায় অনুচন পঞ্জাত, ত্রাপি বা বিষষ্ঠু ব্যক্তাধিকে-त्र वनिक चाह्य। भाषा-न्वनदक भवाक विहा-পদ-করণ-মানতা তাহলা জাহা সুনিবিভ বংশ-षाता পातिरविधेक करतः जात षातरमाम मिलक्ष প্রহরিতা করিয়া থাকে। এই নকল বিষয় এবং ভারাদের পর্নশালা-নির্মাণের নিয়ম-দৃষ্টে বোধ হয় যে তাহারা কদাপি নির্ভন্ন দিশ্যিক্ত চিত্তে कालयागन कदिएक भारत मः,

क्किंद्र। कराशि मण्ड युष कर्द्र भा ; श्रजू छ ब्राबिकारन निः भक् अन्त्रात्र बाब्रा अबुनन-निक्रि चित्र जन्म हरा। बहे कालिनरप्तत समका-मृष्टि बकाल निवा आकृत्य हाहारिम**रक चा**त्रमण करता । असी হইলে শত্রপক্ষের ছিন্ন-মন্তক-সুকল লইয়া ভাৰারা कृषिता बचारणः मृत्रशामक, ७ युगूरमु, कार्यम-পूर्वक जागम र भाषा महता श्रामिक इन्न, करूर नाना चठछ (मृतिहर्ड विस्क चाह्नः । अवः निव्य का किएक व स्वानिक करें प्राप्ति । ख्याणि जकरमहे द्रासिवाल्यात निक्षे च्यी- प्रजिलालन करा मजुलात किन्तु है इस्त्रा मही मका बोकांत्र करते। त्राकात। क्रमाचरक (बाकरम्य) क्रमामस्यकः । अवस्थानिक व्यक्ति वावर रकान छेलड कर्ड करतन, का समान-हिल्लाकल अक बोहर शकाम कहिए वा लाल, कायर नवायह-কুমবৰ উত্তরীয় বৰ পরিধান, ও কেল সমুদায়কে ভাতৰ হয় না 💛 💛 💛 💛 💛 🕬

कर्ति म मस्टर्कत भूरतास्थाय रक्षम, करतमा हा भूर्यमारम व्याप्ति समानि स्थापनियम विकास

চৌর্যবৃদ্ধি যে প্রকার প্রশংসনীয় ছিল, ইছানি-গের মধ্যেও তজ্ঞপ; ইছারা তক্ষর-ক্রিয়ায় খুড হুইলেই অবমানিত হয়, এবং ছাত দুব্য অধি-কারিকে প্রতিদান করিতে বাধ্য হয়।

কৃতিদের বৈরনিঘাতন প্রবৃত্তি অতি চমংকরে।
ব্যাঘুদ্বারা যদি কোন ব্যক্তি নিহত হয়, তবে
ভাহার জ্ঞাতিরা যাবৎ সেই ব্যাঘুকে বা তদভাবে অনৈতক শার্দ্দলকে বিনাশপূর্বক প্রতিবাশৈদিগকে ভোজ দিতে না পারে, তাবৎ অবজ্ঞাত
থাকে। অপর কেহ একটা বৃক্ষহইতে পতিত হইলে
সেই বৃক্ষকে থণ্ড ২ না করিয়া ক্ষান্ত হয় না।

পূর্বোক্ত বিবরণ শ্বনে অনুমান হয়, যে বৃঝি ভাহারা কেবল মৃগয়া মাত্র করিয়া জীবন যাপন করে; ফলতঃ তাহা নহে। কৃষিকর্ম ও পশুপালনাদি কর্মও তাহাদের মধ্যে প্রচলিত আছে; পাইস্ক তৎতাবৎ ক্রিয়া অতি অসভ্য ভাবে নিভার হয়।

উদ্বাহ জিয়ায় কৃকিদের বিশেষ প্রথা এই যে বরকর্ত্তা কন্যকেতার নিকট স্বকীয় পুত্রের সা-হস, সন্থামপ্রিয়তা, এব॰ চোর্যটনপুণ্যের পরি-চয় দেয়।

কোন কুকির মৃত্যু হইলে তাহার জ্ঞাতিরা এক অভূত ব্যবহার করে। বৎসরের যে কোন দিবসে মৃত্যু হউক না কেন, মহাবিষুব সঙ্জা-স্তির পূর্বদিবস-পর্যান্ত মৃতব্যক্তির সৎকার হয় মা। তাহারা ঐ শব বেশ্বহইতে কিয়ন্ত্রবর্তি এক মন্দোপরি রক্ষা করে, এবং পরিবারের কেহ মা কেছ প্রদিশিশ তাহার নিকট বসিয়া থাকে। মনস্তর বৈশাধের সঙ্কান্তি-দিবস উপস্থিত হইলে সমস্ত জ্ঞাতি কুটুর একত্রিত হওত রেই মৃত ব্য-ক্রিকে চিতারোহিত করিয়া দ্বাং করে; পরে একত্রে ভোজনে রক্ত হয়। বটু।ম্ সাহেব স্বকীয়-ভূমণ-সময়ে উত্তর-অ্যারিকার আদিম প্রজাদিগের মধ্যে এই মাপ ব্যবহার দর্শন করিয়াছিলেন। পরস্পার অতি দূরবৃত্তি
এই দুই অসভ্য জাতির উদুশী ব্যহ্হার-সম্ভ্যা
অতি আশ্চর্যা বলিতে হইবে।

কুলিদের প্রলোকে বিশ্বাস আছে। তাহাদের
মতে ইশ্বরের অনুগুহোৎপাদন কিচ্তেই তত্ত
হয় না, যত শত্র-বিনাশদারা সম্ভবে। ইশ্বরকে তাহারা সর্বসুষ্টা এবং সর্বাধিপতি বলিয়া
বিবেচনা করে, এবং তাঁহাকে "খোজান প্তিআক" নামে ব্যক্ত করে। যীন্সাক্ নামে অপেকাকৃত অপ্প ক্ষমতাবিশিপ্ত অপর এক দেবতা
আছেন; তিনি ইশ্বর ও কুকিদিণে মধ্যমন্ত্রকাপ।
মনুশ্য যত অসভ্য হয়, ততই ইশ্বর বিষয়ে অস্পাই
অনুভব রাথে। কুকিরা প্তাআ ক্র-প্রতিত্তি
গবয় পশু বলিদান দেয়; আর যাম্সাক্কে হার
প্রমণ করে। কুকিরিণ প্রত্যক্ষ পাড়ায় দীম্সাক্রে এক জ্বন্য প্রতিমূর্ত্তি থাকে; তাহামের
ক্রিরা পূজা করে।

রঙ্গানিয়া এবং অরঙ্গাবাদবাদী রাঙ্গালিদিপতে কৃকিরা অহ্যন্ত উত্ত্যক্ত করে; কেবল মন্তক এবং লবন গুহুন করা মাত্র ভাষাদের উদ্দেশ্যঃ

কৃতি-ভাষার কতিপয় শক এই; মাপা (মন্বা)
নুনাও (মানবা), মাপানাউঠি (বালক), মুনাউঠি (বালিকা), কা (শিতা), নু (মাহা), চোপুই (ভ্ৰাতা), চানু (ভগিনী), কু (পিতানহ),
কি (পিতামহা)।

३ चाचिन, ३११६।

#### **উৎস ও नमोत्र** विवदन।

ক্রিক্রিটিটি জুল মুদ্রী জলের আকেল। সূর্য্য-কির্থে ঐ জল हु भर्ते । मुक्का महिला स्टेस्ट स्ट्रिकाट स्ट्रेस खड़-ब्रोटक उदाकिशिल इसः ७ उधास किर १-পৃথিতী ও দুলোর পর্বার মধ্রতার হাদ-ব্রাদ্দারে কোয়াস শিশির হিমানী বা বৃধিরপে পৃথিব্যপার বর্ষিত হট্যা প্রাক্ষে এ বসিত বারির কিয়দণশ মৃত্তিক। মধ্যে তাহাইট্টে কয়েন পঙ্কি নিমে উদ্ভ করিলাম। প্রনিষ্ট হউক্সাল্ডার ও অপরাপণ নদীরপে পরিণত किया अभियोग्त कन्वजी ७ श्रामोत वारमाभयूका करत।, उडेकः डारः शूर्वं कविया **धारक।** 

তর্ল পলার্থের এক প্রধান ধ্যা, এই যে ভাষার , সম্ভান সংখ্যা প্রকে, ক্যাপি তাহার কোন অংশ উচ্চ, ও অপরাধ্য নিমু হ্রানা: কোন কার্থ বশতঃ সমোচতার \*শনি শ্রীকে তথক্তারে ঐ জল আন্দোলিত ইইয়া সমো-क्का तक्षात करिए करहा अहे काह--वश्वत **উक्त शा**रसव কোন ছিদু বা ফাটালে বৃদ্ধির জল প্রবিষ্ট হউলে এ ছিদু কংব কোন ভিদুমার। শাহি বেচে উথাকপ্ত হইতে থাকে। .के कालाष्ट्रक पूर्व माम 'डे**८म'' दा "(काग्रा**र्व) ". এবং পৃথিবার অনেক স্থানে তাহা বর্ত্তনান আছে। धन्युट वर्गराष्ट्र (य मम्बु-वन ও क्यान र स्थान मुखिका লেদ করিয়া উ**-সর্বেপ উ**২ফ্লি**স্ত চরীয়া ছাকে**: অপর ইয়াত ভিত্তান্ত হ**ইয়াছে, যে প্**থিবা**র অন্তর্ভা**টো স্বভাব-বিদ্ধান্ত আছে, দেই হ্লে ফ্টুড করিয়া দিলে তানা সম-্বাং প্রমাণত উথক্ষিপ্ত ২ট্রতে থাকে, দৃষ্টি-জলজাত উৎ-দেও ন্যায় কদাপি ভাষার বেগের লাদ রুদ্ধি বা মধ্যে १। বিলাম হয় না এই উৎসের নাম "গাল্পটালাৎস" क्रम (अस जाहार कावसरहर माना (अस हराह धारक । কোন, স্থানে পাটা প্রকৃত উৎসের (কোয়ারার) নাপা দক্ত হয়: কোমাও তালা কুন্তরূপে পরিণত আছে; তথায় চাল্য উৎজেপণ প্রত্যক্ষ কয় না, অধ্য তাহা যে অক্ত উৎস বটে, ভাষার প্রমাণ এটা যে রৌদ্ধেরা কৃষ্টিতে তাহার বিশেষ হাস-বৃদ্ধি হর না। অপর উর্থায়মন-मनार कान ६ है असर जन क्राजन राह्नक लोहापि.

भनार्थ झर्म कविया उश्भावार्यविभिक्के **७ उ**त्वेश हरेता উঠে। দীতাকুণ নামে বিশ্বাভ একদেশীয় উফোণ্ড-সকল अकारत উদ্ভ १३१, बाहेम्बस पोल्म अङ श्रकात কএকটা অভ্যান্তব্য উৎস আছে। তাহার জল এভাদ্য উষ্ণ যে ভত্রতা লোকেরা তাহাতে অনায়ানে মাণ্য পুরুষ্ট্র কাল পাকিয়া পরে বায়ুর ক্রমে এবং পাক ক'র্ডা লায়। উক্ত দেশে ঐ উৎস-সকল "গ্রহসর" নামে বিখ্যাত। তত্ত্বাধিনা পত্তিকায় ঐ উৎসৈকের मूहात विवादन श्रहातिष बाह्य : शाहकमित्रात मूनजार्य

িতথার স্তিকানত দেইটান প্রিটেটিড **এক বৃহৎ কুঞ্** হয়। তে কল ভূমিলাও হয়, চদ্বারা মৃতিকা লিজ খা: "আছে। মথন স্থিয় খাকে, তথন ভাষার জল বিলক্ষণ " छेक्ष ७ कोरिहत नगाह नियांन अवश् नर्वामा जनीम नाका আলাস আছে বংসাদির খনন করিলে ঐ জল উৎক্ষিপ্ত। ও অল্ল অল্ল বৃদ্বৃদ্ উচ্চ। কুভের বেইটন ন্যুলায়িক "১০০ হস্ত, কিছ বাজার কল লাগিক গভার নছে। ধর্মন "পরিপূর্ন বাকে, তথনও **ও ছাতের অ**দ্যে**কা অধিক** "কল আকে না; তাতার মধ্যভলে ন্যুনাধিক **৫৪ হস্ত** "গভার একটা কুপ আছে, ভাছার ব্যান প্রায়ঃ ৬ শ্রু, "কিন্তু মৃত্তে নিকটি ক্রাম প্রশাস্ত হটীয়া কুঞ্জের সহিত্ত মি-''লিত সময়াছে।

"মধ্যে মধ্যে <del>আয়েয়ে গিরির যেরণ</del> ভগ্নাৎপাত হ<sub>ং</sub> কা কাটালের তল দিয়া তাকা নিনু **স্থানে আলিয়া তথা-় "সেই রূপ এই প্রবল পুসুবন " হউত্তেও** অক্ষাত উসং সল " । वाक्यामि श्रव्य (बर्ग निर्माठ व्हेसा श्रास्त्र) श्रद्धाः ্ঘন হল কামানের শকের ন্যায় মোরতর গভার গঞ্জী " এবণ করা যা; , তৎক্ষণাখ ভাষ্ঠিকল্ল উপস্থিত হয়, পর-"कर्षाङ दूरकृत कम উत्तरहा इह धनम**हरण कृ**ष्टि कारकः "অবশেষ কা ও বাফানি সহসা উপিতে হটয়া<sub>্</sub>চ**তু-**" मिर्टिक विकिन्ध प्रदेश शक्ता (महे ममह बाका "अड উর্ভেডিটে বি প্রায়ঃ আটি কেনুৰ্ ছইতে দৃষ্টি করা <sup>6</sup> যায় বারম্বার এইরপ **ডল ও বালা নিগত হটবার** "পর একটা প্রকাশ কল-প্রবাহ প্রভূত-বাঞা-রাশিতে "পরিবেটিত হর্ম। অভার উর্জ্যামী হয়। এই প্রবা-"হের জলীয় ভাগ চতুনিকে স্ফেশকে এ ক্লপ আরুত খাকে, যে তাহার অধিকাপশ দৃষ্টিগোলের হুর না ্ল সময়কার অভ্যন্ত সং পোর দৃকি করিলে বিশ্বস্থাপন "হংতে হয়। ভূরি ভূরি আলা-রাণি উপযাপরি ছুণিত

क र किएड ज्यादशासामार मिल्म क्लियर महास ए अनुसूत्र ? ं गुरंजरीय के शहां भड़ बैटड सोसंब के क्यांतिसी साथ कार्य के स्वाहित THE ROLL WEST CHAICAL STATES THE RESIDENCE OF THE PROPERTY OF

\*প্রদর্শন করে। উহার অপেক্ষায় সুদৃশা আশ্চর্যা "ব্যাপার আর কি আছে? কুণ্ড ছইতে জল নিগত **\* इंडेनाइ मप्रदेश सामा श्रकात वर्ष धात्र करतः, क**र्यस<sup>ा</sup> "कंशन উৎकृष्ण नीलतर्ग, कथन कशन উष्ण्वल रतिष बर्ग, \*\*এবং অধিক দূর উত্থিত ছইলে তার শেত বর্ণ শোল। ্লায়। উন্নাম-প্ৰাগ্-সমূদায় নানা ভাগে বিভক্ত 🕈 🛊 ইয়া নহসূ সহসূ পরম শোলাকর উপু বন জলগারা 🕆 🏁 🛰 পদ্ম হয়। তথ্যস্যে কভক ধারা চিক দর্শ ভাবে "ভাবে পতিত হট্যা অপুর শোভা প্রকাশ করে। "ইহার অপেক্ষায় রমণীয় ন্যাপার আর কি আছে? 🕊 দক্ষ জল-পারার এ প্রকার প্রথার বেগ, যে তাহার 🍍 🖥 हिंशा भूक्तंत्र वित्र थाति ।

্ৰী কুন্তের উদ্ধান্ত পাত স্থাপন করে। ইচ্চেউট । তিনিধযুক এক সুপাত্যপ্রসাম দেভিতে পাইবেন। সাণ্য পাক হয়, শার কাম আবশাক করে না<sup>ৰ গ</sup>। িষে দকল উৎদে প্রভূত জল নির্গত হয়, ভাছা ভরপে পরিণত থাকা সম্ভবে না; কণ্ডো-हैं प्रवाहित रहेश थारक। अहे प्रकार मूहे जिन वा ভ্রেভাধিক পার্শতা সো্ডঃ একত চিলিত হইয়া নদার के करतः; भत्र क्र तकता हिश्य-करन सभी भून इस ना। লের অধিকাপণ দুবীভূত পার্বতা বরুফ হইডেটা লর হয়। অপর বৃতিজলও তৎপুরণের পোষক ; क्लाजः नही-गठन शृथिवीत नहींमा सक्रम ; मानाना मि ना नगरत्त्र भग्रद्धगामी द्वा श्रकार्य राज्य मान নোবশাক জল দূরে জপনয়ন করে; নাঞ্সফলও সেই \* कळारवाधिनी शक्रिको, ३२१३ णक ७३ शृक्षेत्र

্টিছ্টতে হউতে উথিত হট্যা গগণ মণ্ডল আচ্চাদিত রূপে পৃথিবী পরিষ্কার রাশ্বিতে নিয়েকিত আচে। মপ্র ক্রিকরে, তাহার মধ্যবর্ত্তি **উর্বামি জল-প্রবাহ-ল**কনা সামান্য পরঃপ্রণালীতে কেবল অপরিস্কার অনাসশ্যক কল 🎆 কল্লিড ছইতে হইতে ফেনাকার হইয়া চতুদি(কে বিকার্ণ) বহির্গত হয়; ভটিনী নিস্পুরোজনীয় পদার্থ লইয়। যায়, 🎇 হয়, এবং সেই জলের কিয়দংশ বাক্ষা হটয়া অবশিষ্ট 🖯 অগচ জাবসাত্তের জাবনোপার লকলের গৃহদ্ভরে আন্নয়ন 🌁 সম্দার ভাগ ফেন-রপে পতিত ছবয়া অপুর্নে-ফেন-বর্ষণ ্ করে; তাপিকস্থ নদী-সকলকে পৃথিবীর স্বভাবসিদ্ধ রাজ-পৰ বলিশেও বলা যায়, তাছাৰারা মনুষ্যেরা অনায়ালে দূর-দেশে গমনাগমন ও বাণিক্য করিতে সক্ষম হয়।

त्य द्वारन वे उर्थमत প्रात्य कार्कि नमीत उर-পত্তিভান। তথাহউত্তে নদী-সকল পক্তের নিমু দিগে। অনুগামী হয়; এই প্রযুক্তই নদীর অপরাতিধান "নিয়ুরা"। ঐ বামন-সময়ে ভাতারা প্রিমধ্যে অপ্রাপর নদী বা সোতের \* সাইত মিজিত চট্টা সদৰ্ধি কোন ৰাগার বা অন্য নলী বা ছুদে নিপাটিত না **ছয়, তদৰখি**। প্রীপ্তি হয়, আরে কতক্রলে ধারা সুন্দ্র রূপ বক্র ক্রমশঃ বৃদ্ধিশলি হইতে থাকে; এই কারণ নদার মঙ্গম-ছাম সর্বাপেক্ষার মূল্ ও তথাহইতে উৎপত্তাভিম্যে য**ত অগু**-वखी इछरा याग् उठरे मझीर्ग (बाध इछ।

পালতহ্টতে অণ্ডর্ণ সময়ে নগী গাদৃশা ৰেগালতী **"উপরি প্ররুর নিক্ষেপ করিলে, মগ্ন না হটিয়া জলের। থাকে, দরল ভূমিতে তাদ্শ থাকে না। ভাপর ঐ হার-**"তেজে অন্তেক দৃদ্ৰ উৰ্জ্যামী হয়। কিয়ৎকাৰ এইক্লপ ্তরণ-সময়ে স্থান-বিশেষে পৰ্বতের চাল্প্যুক্ত কোনাই <sup>#</sup> জলা-পারা নিগাত হটয়া পারে নিবৃত্ত হয়, তথান শে জলা- । নদী হাঠাৎ অতি উলচ চটতে নিমেু পাতিত জ্রা, **ঐ পান্তনের** "কুও একেবারে শ্রন্থ হট্যা যায়, পরে আবার জল নাম "প্রসূত্রণ" জল প্রপাত ' বা বেরণা"; ভাছা শেক খিতে অভি আশ্চয়া নুমণীয়: কিন্তু অধুনা এই ব্লে ি'ঐ কুভের জল এমন তথ্ন যে পার্থবিত্তি লোকে তম্বনির অবকাশ নানী; অভ্নব ভ্রুষ্যায়ে ভারুষায়ে তাহাতে মাণ্স পাক করিয়া থায়। তাহারা একটা পাঠকরণকে অনুরোধ করি ১৭৭৭ শকের ভত্তবো**ধিনী** 🥍 পাতে শীতল জল পুরিয়া তাহাতে মাণ্স রাথে, পরে। প্রিকার ৩১ পুতে অবদোকন করেন। ভথার তাহার।

> ্নদী-সকলের উৎপত্তি স্থান আত উক্ত তথাস্ইতে তা-হার। স্মিকট্র নিমুদ্ধান দিয়। গমন করে, সুতর পে কোন नार्क्षकिमिश्वदत्तत्र प्रभाजातम् मूर्वे छेषम् छितिन जास्रोतम् जन भे भक्तं कर छेल्य भाष मिरा धनाहिल इत्या बाटक, তথা এক ছালের উৎপর নদীষয় বিপরীভাভিনুধ হয়। পর্ত্তত বৃহৎ ছটলে ভাছার চতুর্নিগাই বৃহত্ত মদী প্রবাহিত হট্যা খাকে। अ समी-मकहनत उपभाव सामित्र মধ্যে যে ব্যৱধান খাকে তাহার প্রত্যেকদিক তদিক্ষ নদীর "জলকর-ভূমি" নামে গ্রাভা

নদীমাততাই উচ্চ স্থানে উৎপদ্হইয়া সাধার বা

<sup>\*</sup> পूर्वाशानुमादत (व मकल बन्धातमिक कल्टमाकः अक महत्त्व धकुः चारणकात्र व्यक्षिक मृत कुराव करता, आधारितात वाह 🗱

হ্দের অভিমুখে গমন করে: কিন্তু দকলেই দাগর পর্যান্ত किन्ने हरिष्ठ भारत नाः भधिमस्या खना नहीत गरिष्ठ মিলিত ছউয়া যায় ! যে সকল নদী আপেন গ্রুম্য সাগর রা হুদ প্রায়র রামন করে, ভাহার: "প্রধানা" বা "मात्रकाः व या मकल नमी वे श्रभानाव भएई व्यक्तिया मिপ्रिक इर्. काशारा कारात "अधीना" रा "नमी-राहिंग।" नारम बगाउ।

গ্ৰুল হিমালটো উৎপন্ন চট্রা সম্দু পর্যাব বিস্ত্ এপ্রয়ুক্ত ভাহ। প্রধান নদী নামে আছে; বমুনা, সে।ন, গঞ্ক চম্মতি প্রভাত নদীসকল গ্রমায় নিপাতত হয়, मुख्या हाराहा शकात व्यक्षीना। वे व्यक्षीना नमी-मकन काल पामरवात कल प्रकानः ममीरक ममभव करत् अहे ्डावृ लाएक जाज्ञामिश्रास्य "कत्रश्चमाशिमी मनी " गएक्छ वन्त वृतिहा भारक। वे कह्ममाहिमी ও श्रधाना नही-मकल एवं इसि मिरा जुमन करत, उरममुनाएरक ये श्रभामा तमीत "शुरमन" भरक जायान कति। उक श्रामरन श्रीत्राहर हर कल राजिल रहा. उरमञ्जास अ ध्रुपाना नमी-भारा अभारत नीज रहेशा थारक: मूटता अनू अ काला-মুখারে তাহার বেগ ও গভারতার অনাথা হয়; বদাকা-লে বদাঁতে যে পরিমাণে জল থাকা সন্ধাননা, অন্য সময়ে डाधा इहेटह शाद्ध ना। ये जल-वृक्तिर अशद अव बहुक अलिता প्रकृष क्य उँ६भन क्या, स्टी जल नमीटक নিপাঁৱত জাইবা ভাছার অংগতন ও বেগের বৃদ্ধি কংর। 🖟 কোনত গুৰুকার লেখেন, যে নদীর উৎপত্তি কান যত ডাক, হামার আয়তনও তদনুদারে অধিক হয়; একথা जनग्रदम् भट्टा १८८५ । अमीन कर्यमास्त्रिमीसरम्ब मह्याः, ५ এদেশের সম্ভার, ও তথাকার বৃষ্ঠির প্রাচুর্য্য, ও বায়ু ও भृष्टिकात भाकतामुङाभृतारत काराज्य वृक्ति इयः, धा स्वरण्ड भाडका च्या कार्मु शास्त्र, ए नाष्ट्र वाका-भूनं शास्क, यशाकात भवाक-भवन अठि डेक, मधास शहूत वृष्टि নিপতিত হয় ও অনেক সভাবেদির উন্দ আছে, ভথা-कात नमी कानगरशकांत वृहद इहेरिक हें हा बानाया-দেই সমূরে ৷ দক্ষিণ শান্তিকার পরেও-মকল আহি উক্ষ্ उधाकात जूजि कर्षा है. अ मक्ता जरम जार्म धारक, ও বায় প্রচুর বান্দে। পরিপুর্ব, কথায় অনেক সভাবলিছ উৎস আছে, ও সর্বাদা প্রভূত্ত্তি নিপতিত হইয়া থাকে, অপর তথাকার নদী-সক্ষের পাদতভূপ্তি দিছুত, এই অন্ সানু মহারদী এক ধারে সমুদ্রে নিপত্তিত হরা।

अयुक्त सटमात्म या अकात तृहर नमी छेर्याच हर्नेग्राहा, जाम्य नमी श्थितीत आत कुलाशि मृश्वे इस ना। है छै-রোপ-এও অতি কুনু, ভাচাতে বুহরদীর স্থান নাই। আ-করিকা তমুমকভূমিতে পরিপুর্ন, ও আসিয়ার মধ্যভাগে অতি বৃহৎ পর্বত ও স্থানে ২ বৃহদৃহৎ সুদ ধাকাতে, 🤋 তথাকার বায়ূ তাদৃশ আদু না ছওয়াতে, তভংখাজেণ अठाउ दृश्चमी **श्रेतात महावना ना**है।

প্রত-শিথরছইতে নিপতন-সময়ে নদ্যম্ যে কো প্রাপ্ত হয়, সমভ্মিতে আইলেও ভাহার শেষ হয় না 🖟 স্টে বেগের সাহায়ে নদী-সকল বহু দুর পাঠান্ত অনা-তালে পরিভুষণ করিতা থাকে। মার্কিন দেশীয় আমাজন্ নামুট মহানদী দে গর্জ দিয়া গ্রেম করে, ভাছার ১৮,০০০ इन् मोध एंगिएड अक वक्षण माज मान् ब्यास्ट्रः श्रीनिष त्रशरको जीव नमीत धः (काम मीर्क्शा) इस्त्रमाज मन्।

কোন ২ নদী প্ৰতিয়াধ্য নিমে কোমল-মৃদ্ভিকা-বিশিক্ট অতি-দৃঢ় পর্বাচন ও প্রাপ্ত হউলে ঐ গিরির নিমুভারের কোমল মৃত্তিকা ভৌত করিয়া তৎস্থান দিয়া প্রবাহিত ইয়। अहे व्याक्तरी ग्रान्तन अह**रमगीर श्राहीन प्रमुखादा वाळा**ड ছিলেন না, তাঁচারা ইছাকে "অন্তঃসলিগ্রাহিনী " শন্মে আখ্যান করিজেন, কথিত আছে, সরস্বতী-নদীর কোন স্থান এই প্রকার গঞ্ভাবে প্রবাহিত হয়, কিছু আমরা কার্ন ভাছে। গ্রীস্মের শেষে প্রথর-ভগন-ভাপে গর্বতের । ভাছার বিশেষ বিবর্গ জাত নছি। ইউরোপ-**বঙে নি**দেশ্ लक् लिडेंग् श्वारमंत्र प्रशास्त्री स्वाद काव नमी डेंक् প্রকারে অন্তঃসলিল বাহিত শ্রীয়া থাকে : অপর কোন ২ कारन वाम्कात आहुका शाकितमत नमें। आहर वाशकाक इडेया धारक: गग्नाधारमञ्जलक मिक्**डे कन्छ नमी उधि**सरग्रज धक मुक्तास स्न।

> নদার বিশেষ বণনের নিমিত্ত ভূগোলবেতারা ভাষার গতি বিন অপলে বিভাগ করেন; প্রথম পার্ক্ত্যাপ্য; ভাছা শৈশভটে নেঞ্চিতা, ও সর্ফ্রাপেক্ষায় নেগঠতীঃ দিতীয়, মধ্যাৎশ; ভাহার বেগী মধ্যম, গম্য-ড্নে ধ্মভূমি, এবং ধারা বর্পান্তর ন্যায় বক্র। তৃতীক্ষ, বন্ধ্যাশেশ, ভাষার বেগ অভান্ত লখু নদার গঞা হান কোমল মৃত্তিকাবিশিকী গওয়াতে नमी नकन थे भारन श्लाह वरु शाहात्र विकास प्रतिया, जि.कानमध्य-जूमि उपनम करता, नत्र मक्न नमीर अहे श्रकारत बरुधाता नरह, हैनेनकि मित्रा रम नमा সমূদ্ৰ সভাম কৰে, তাহা বছ ক্ষিয়া হয় নাগ আমাৰ

তিকোণমগুল ভূমির বিবরণ পুর্বেই উক্ত ইইয়াছে, পরত্ত তথায় তাহার অবস্থা-ভেলে নাম-ভেলের উল্লেখ, হর নাই। এক নদীয়া অপার নদীতে পতন সময়ে যে তিকোণ মণ্ডল উৎপার হয়, তাহার নাম "নাদেয় তিকোণমণ্ডল": যে মণ্ডল হুদের পার্যে উৎপার হয়, তাহার নাম 'ক্দীয় তিকোণমণ্ডল," ও যে মণ্ডল সমুদু ভটে উৎপার হয়, ভাহার নাম "সামৃত্রিক ভিন্নোগমণ্ডল।"

নদী-স্কলের গতি সর্ল নহে; যে ভূমি দিয়া বাহিত হয়, ভালাও দৃঢ়ভানুসারে ভাহা সর্পগতির নাায় বক হয়। ঐ গক্তভায় নদীর বেগের হুমেডা জন্মায়; ভাহা না থাকিলে অংব্যাবধি শেব-প্যায় সর্ল নদীতে জন্মেনুতের বৈগের এভানুল বৃদ্ধি হইড যে ভাহাতে সমস্ত ধ্বংশ হইড। গঙ্গা প্রান্থ বিধি শেষপর্যাস্ত গুজু হইলে, বোধ হয়, ভালার জল ১ ঘণ্টায় দুই শত কোশ স্থান ভূমণ করিড। নদীর কক্ষেত্র ঐ বেগের লাঘ্য হইয়া সর্ল ভূমিতে কুরালি দুশ ভিন কোশের অধিক হয় না। অপার এই বক্ষভায় নদীর দৈখা বৃদ্ধি করিয়া এক নদীধার। অনেক স্থান সিক্ত করিবার উপায় করে।

## উড्छोग्नमान मः मा

स्वार्थ स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्य

বৃহৎ। ভাছার উভয় পার্ম্বের ডানা এমৎ লয়। চৌड़ा (य जनवन**शत्म (म ज**नाशात्म ३ डिडि-তে সক্ষম হয়। ঐ ডানাতে যে সে কেবল উভি-তেই পারে তাহা মহে; তদ্যারা জলেতেও নির্হত-শয়-বেগ-সহকারে ভাহার৷ সাঁভার দিতে পারে: বন্দূকের প্রলি যত দুর উঠিয়া পাকে তত দুর शर्भाञ्च <u>करे मध्मा कत हाज़िय़ा करणामास्य छे-</u> ঠিতে সম্প্রয়, ও ভাষাতে শুল্ভ হইলে একবার জলেপড়িয়া সম্ভরণ দিয়া শ্রান্তি দূর করত, পুন-र्वात्र अञ्चत्रोरक উত্তান হয়। **ড**ল্ফিন্ नामक अक काठीয় वृहपाकाয় সমুদু मध्मा इहाटक थाइ-বার জন্য অভ্যন্ত ভেভবেগে ইহার পশ্চাৎ ২ তাড়াভাড়ি করিয়া থাকে; কিন্তু ইহা কেবল এই পক্ষবলৈ তাহার করালগুলে না পড়িয়া আত্ম প্রাণ রক্ষা করে। উপরিভাগে উড্ডান হইবার সম: য়ে কথন ২ বৃহৎ পক্ষিতে ভাড়া দেয়, ভা**ড়া চ্ইলে** তাহারা তৎক্ষণাৎ জল মধ্যে সম্তরণ দিতে প্রবৃত্ত रयः। এই काडीरयत मर्मात প्रधान वानमान ভূমধ্যস্থ সাগর, পরস্তু গুীয়াকালে অন্যান্য সমু-(पु अ वेहा कथन २ पृष्टिर शावत हम्।

### কৌতুক কণা।

গণকের মাহায্য।

\*\*\*

ক্রিন্দাহ কোন গণককে জিজা
গিলেন, "আমার অন্তকালের কত

গ্রেম্প্র দিন বজি আছে"? সে কহিল, "দশ
বজ্পর"। তথ্পুলনে বাদশাহ নিরতিশয় ভাবিত ও তদুপলকে পাড়িত হইলা শথাগেত হইল
লোন। এক জন সূবুজি অমাতা এই দুদৈবের সমুদ্র
পায় করণাভিপ্রায়ে ও গণককে বাদশাহ-নাম্য
ধানে ডাকিয়া জিজাসিলেন; "ভোমার জীবনের
আর কত কাল অবশিষ্ট আছেশে? সে মুন্দা করি-

क्षा डेखर कतिन; "विमः छ वध्मत"। ताक्रमजी তৎক্ষণাৎ তলবার্থারা তাছার মন্তক্তেশ্য করিয়া कहिरल्य, "महाद्राक, देशात भवनात देखर्ग (पर्यू-म "। वाम मारु जाशाटक अञ्च हरेया जैसीरतत वू-बिको शत्वत श्रमामा कतिएक नामितन बर् विध शन्दकत वाद्या व्याचा कविष्ठ का छ श्रेतन। পার্যল ছউলেও ফল আছে।

এক দিন এক দুরাত্মা পাদশাহ একাকী আলন नगतकहरू वाहित इहेशा अक व्यक्तिरक शाह-ভন্ত বসিয়া থাকিতে দেখিয়া তাহাকে জিজা-मिटन्न: " अ तारकात ताका कि अकात, पुताका कि मुविष्ठातक "? मि उँखत कतिन : " निर्वाजनश पुराक्ता "; वाक्नांक् **किकानितनः "व्याना**रक किनिन् ११ (त कहिन; भना । राप्त्रभाष्ट् कहि-क्देश किकाशिव: "वाशिव वाशांक खारनग"? भाजभार् कहित्वन; धना ११। तम कहिन; धंचानि । লমুক সভলাগরের পুঞ। প্রত্যেক মানে আমি ভিন দিন করিয়া পাপল ছইয়া থাকি, আজি ঐ তিন দিনের এক দিন । ইছা ভানিয়া বাদ-नाष्ट्रकेषः कान यमस्य बद्धारम् अवान विदित्तम।

प्रमुख्यात अवर्गार्थक धन कि जुकारत याद्र शहा ।

এক ব্যক্তি প্রভাত হয় খানি কটি ক্রয় করিত। একদা কোন ফার্কর তাহ কে জিল্ডাবিল, " তুমি প্রতি দিন চ্য় থানি কছিয়া এটা কেন ক্রয় कद्र ११ रम छेड्ड कहिल, भं अक श्रामि मयएकू हवन कतिया थाकि, भारत अक थानि गुर्थ निरक्षण कलि, पुरे चामि পূর্বের ধার শোষ, ও অপর দুই থানি धांत (मेर्ड "। कित जे वारकात नाव वृत्तिएक मा পারিয়া ব্যক্তকাশে কহিতে কহিলে, সে কহিল; "এক থানি ভিক্কৃককে দান তরি, এক আপনি ধাই, शूक्षरक अमान कति ?! हेरा क्षमित्रा कवित्र राज्य করত নিৰুত্তর হইল।

সরাইহইতে রাজভবনের প্রভেদ কি 🚈

এক জন সন্ন্যাসী তাতার দেশে ভূমণ করিছে ২ বালু বপরে উপস্থিত চইয়া সরাইতুমে এক রা-कात श्रानारम श्रातम कितनः ए इञ्चलः करेनक **चरताकन क**िंसा **बाङात मर**खायागात **श्रविधे** इरेल. जंतर ७था महामूलाताना जनरतम्ब पूर्वक বিশান করিতে লাগিল। ইতিমধ্যে রক্ষকেরা তা-হাকে দেখিতে পাইয়া জিজাসিল, "তুমি এখানে कि जना वानिशाष्ट्रण। नज्ञाना करिन, "वानि करे চটিতে রাত্রিধাপন করেতে মনস্থ করিয়াছি"। চৌ-कीमारतता क्लावशूर्वक जाहारक कहिल, " व कही नत्, द्राष्ट्रचन "। अन्य नगर्य द्राष्ट्रां (नश्नान লেম, প্রামি এ দেশের রাজা । এ ব্যক্তি ভীত । দিয়া যান; ডিনি ভাষাকে দেখিয়া সহাস্থবদনে किकानितन, "महामिन् जुमि ७ डाक्टरन কি সরাই ইহা বুঝিতে পার না"? সম্প্রানী निद्दिष्टि, "महाताक, पूरे अकृषि श्रम् कहिएक বাসনা করি, অনুমতি করিতে আক্তা ৰ্উক্"। वाकाका शाय रहेश जनस्त जिल्हामिन, "महा-রাজ, যথন এ বাটী নির্মিত হয়, তথন ইহাতে क वान कतिशाहिल"? ताका कशिका, "का-माड शूर्वशृक्रायद्वा ११। शस्त्र त्नः किस्कानिक, " त्नार्यः व्य वान कत्रियाहिन?" द्वाद्य कहिर्द्यन, "ज्यानात शिका"। मद्यामी क्रिकामिन, " अकरन एक नाम-कतिराठ्य ? ? ब्राक्षा किंदिन ल भावि। ल व्यवस्त বে ভিজানিক, "পরে কে কান কুরিবেক স্পর্কাল करितन, अव्यासात उद्याधिकात्री । वर्षानी कर्नि, "महाताखः। (य प्रत्न नमस्त्रे ६ अक दनाक नाम करत, जरः चमूकारम साहारक जक व्यक्ति मार्जिय वान कतिरवक, काहारक मार्क उस मुमा मूरे थानि लिखा माठाटक अविभिन्ने पुरे पालि मूर्वे , बाग्र मा; नहारेरे विगटक महा ११

# विविधार्थ-मञ्जूर,

তার্পার

প্রারুত্তেভিহাস-প্রাণিবিদ্যা-শিশ্প-সাহিত্যাদি-দ্যোতক মাসিক পত্র 🗀



## भारती ङाजित विवत्।

राणिष कित्राणी-मगरत भा-ইর্মা-জাভায় শভ শত ব্যক্তি ि नर्दरा पृष्ठे इश, किन्न छाहारम्ब अभागामा लोकिक हो उ दावहाइ बदः धरमंत्र विवेत्र अउद्यामीम अञ्चल अन्तर ताहक द्वाहोन धर्म-गृष्ट मः क्रिकेत अनुसूत्र काराम

व्यवगं वाष्ट्रन। शाहीनकात्न हिन्सू ६ भा-রণী জাতির পরস্পর অতি নৈকটা সম্ব ছিল; कांन कान मःकृष्ठ गुद्धकात भातमा-रहमात्क चार्यावरडंत चल्रवंडी बनिन्ना भग कित्रारम्मः **७ शा**तमीरमत मर्थ्य अवड करमक कार्यक्र चारह, याहात निहल आहोत देवितक बढका व्यत्नकार्टन नमणा श्रकाक इत्र । जास्तिरश्र রচিত, অতএব উক্ত বিবরণ অনেকের পক্ষে মনঃ-প্রসাদক বোধ হইতে পারে, সন্দেহ নাই।

পারস্য দেশ এই জাতির নিবার-ভূমি। অতি
প্রাচীন-কালাবধি মুসলমান-ধর্মের প্রারম্ভ-পর্যস্ত
তাহারা বিখ্যাত ও মান্য, অগুগণ্য কপে তদেশে
বাস করিয়াছিল; শেষোক্ত সময়ে তথায় মুসলমান-ধর্ম প্রচারিত হইলে শুকাবান পার্নীরা লদেশ-ত্যাগপূর্বক ভারতবর্যে আগমন করেন; অধুনা ভারতবর্যের পশ্চিমাঞ্চলে জনেক
পারসীর অবস্থিতি আছে। তাহারা বহুকাল এই
উফ দেশে থাকিয়াও আপনাদের বাভাবিক
সূত্রতা ব পরাক্রমশালিতাহইতে বিক্রিয় হ্র
নাই। ননের বির্যা, বৃদ্ধিমত্তা, এবং উদ্যম্পীগতা-বিষয়েও তাহারা কাহার পশ্চান্তর্তী নহে।
বাণিল্য তাহাদের সাধারণ-বৃত্তি; তৎসহকারে তা
হারা বিপুল অর্থ সম্পত্রি সঞ্জয় করিয়া থাকে।

পারসার। মে সকল নিকেতনে বাস করে,

হাতা হাতি হালান্ত, ও শ্বারিছ্ড; গৃহের তল
বেশে জ্ঞা, পুল, পুলু, ভূতা, সকলেই অব্যহিত

হালে শরন করে। কিন্তু তাহাদের প্রমোদালয়
হাকল নুদ্দা ও সুসক্ষীভূত হইয়া থাকে। ঐ

সমস্ত মন্তালিকাতে হাহায়া বর্ত্তমান ইউরোপীয়
প্রথান্ত্রম পান ভোজন করিয়া থাকে। পজ্ঞা,

মুগ্রাকারী শশু, কুলু, ও শশক ব্যত্তী প্রায়ঃ

সর্বপ্রকার জন্তর মান্স তাহাদের থাদা; কিন্তু

তাহায়া ভিত্ত-ধর্মাবল্যী লোকদের সহিত আ
হার করে না

পারসাদের বস্তান ক্রেম গুৰুণ করিলে নামকরণৰাপ একটি জিয়ার অনুষ্ঠান করিতে ক্য়।
নাত বর্ষ বয়সের পর, এবং ত্রিমামাধিক চতুর্দশ বংশরের মধ্যে পারসী বালক "কন্তি"। যদ্যোপবাত) ধারণ করে; ঐ উপার্বাত ৭২ গাছি তিই কেশে নির্মিত হয়। উপনয়নের সময়ে তাহার।
"বদা" নামক একটি পবিত্র অক্সক্রিণীও ধারণ
করিয়া থাকে; এবং এই সকল পবিত্র পাদাথকে
কদাপি পরিত্যাগ করা অনুচিত জ্ঞান করে;
কেবল জীণ হইলে পরিবর্ত করিবার বিধি
আছে।

পারসীদিগের বোধে বিবাহ অতি মহৎ कर्यः; शूर्वि जोशं जम्माद क्वनार्थ कान-বিচারের অপেকা ছিল না! কিন্তু অধুনা বো-স্বাই অঞ্চলের পারসীরা হিন্দু-সন্দক্তর প্রাম-मानूनाइ विवादकत अञ्चित किंद्र करतः। भातमो यांबद्धः। यक्तमानदम्द्र कन्णिमिशदक मह्धमिशे कतिएक भारत, किन्तु यक्षमारनद्वा याक्षकरमत कूमा-রীগণের পাণিগুত্ন করিতে পারে না। এফনে বোষাই প্রদেশত পারনীর। এ নিয়মতে আ-গুছে করিয়া হাক্কদিগকে কন্য দান করে न। वद्द-विवाद छाहास्त्र नाट्य विश्वितिकः কিন্ত বাল্য-বিবাহ প্রচলিত আছে। ভাছারা क्निमूमिशत्क व्यम्कतन कतिया পूर्धामरभत्र छेवाइ-कारन वरून शतिमार्व वर्ष वर्य करता शांत्रमी जीता व्यविनिष्यकारण चस्त्रश्रूत्रष्ट्रेट महिष्यांना याणात्राण कहिया शास्त्र।

भारमीरमद्र विद्युष्टमामुनाद्ध कृत्मद्राभाग अक छेल्डम कर्म: अदः कनवान कृत्म-(ऋप कृत्रा कर्ल्ब) नरह। अहे निमिष्ठ कृत्रकत वा छेम्रानभारत्वत्र कार्या छाहाद्वा कमाभि श्रवृष्ठ हम्न ना।

शास्त्र भगार्थंत मध्य वित्मवनार्थ जाहाता व्यक्षित व्यक्ति कतिया थारक। स्मान्तिःशमार्थ निताकात शतस्वासत्तत व्यक्ति श्रिक्तिश्र वित्ता विर्वाहित हर, मुख्ताः मूर्य, हम्, गृह, बेक्स मकन्ति नंगामस्वाद्य। मूर्यात हेनत वास्त शह-नोता छ। हात हर शांत कतिया वास्त ।

পারসারা অঝি-চয়ন করিয়া সন্দির নধ্যে রক্ষা करतः; क्विक लायनवाता त्वरं चित्रकान ल-র্যান্ত প্রজ্ঞানিত থাকে। ভারতবর্ষে দুই প্রকার অথি चाटकः; बद्दाम् ७ चाहितान्। छमञ्जूत्र, त्नोनति, এবং বোম্বাই এই তিন স্থাদে বহুাম্-অথি-রক্ষার মন্দির আছে: আদিরান্ অথি উক্ত প্রদেশে অন্যা-ना चरनक द्वारन दाणिक चाहि। भातनीरमत विवा-श्रामि महर क्रियाकना श- जकन अधिमन्मित मर्थ। সম্পন্ন হয়। ক্রিয়াকলাপ-অনুধান-কালে তাহার। "হোম" (সোম?) অর্থাৎ পারস্য দেশজাত লতা-বিশেষের রসকে অতি পবিত্র জানিয়া ব্যব-হার করিয়া থাকে। গোমূত্রও তাহাদের বিবেচ-নায় শুদ্ধ পদার্থ, এই প্রযুক্ত তাহারা আদৌ পো-মত্রে গাত্র ধৌত করত পরে গুদ্ধ জলে সান করে। তাহারা উপায়ান্তর সত্ত্বে জলে বা অথিতে কদাপি অশুদ্ধ দুব্য ক্ষেপ করে না, এবং পারতপক্ষে অফি-নিরাণে প্রবৃত্ত হর না।

পারসীদের শাজে পুরোহিতকে অর্থ-দাব্যারা প্রায়শ্চিত্ত করিবার বিধান আছে; কিন্তু উপ-বাস করা পারসী-ধর্মের অঙ্গ নহে।

পারনাদের মধ্যে বাজকেরা একটি পৃথক জাতি;
তাহারা পারম্পারাক্রমে বাজকতা-কর্মে নিযুক্ত
থাকে। বাহারা ক্তিশাজ-ব্যবসায়ী, তাহাদের
উপাধি "দন্তর্"; স্বার বাহারা পোরহিত্য-কর্ম
করিয়া থাকে তাহাদের নাম "মোবেদ্"। তাহাদের কোম নির্দিষ্ট বেতন নাই; কর্মানুসারে
দক্ষিণা প্রাপ্ত হয়। এক্ষণে মোবেদেরা ব্যবসাদকত্ক স্বজ্ঞাত হইয়া দরিদু হইয়া পড়িয়াছে;
তরিমিত্ত সনেককে বৈব্রিক কার্মে প্রবৃত্ত হইতে
হইয়াছে।

भारतका नामक शुरु भारतीयत धर्मभूखकः। वे भुष्ट नश्कृष्ठ मृतीय क्षान्य प्रानाम विशिष्ट अवः चि आहोन विवश कथि इहेशारह। পারসীরা কছেন, গুষ্তাম্পা নামক রাজার সময়ে মহাত্মা অর্ত্য্ৎ দৈবানুগুহে তাহা প্রচার করি-श्राहित्वन; किन्न हेमानीन्तरानद्र कान भूद्रावृत्ता-नुमकाशो পश्चिष्ठ चनुमान करतन, य शांतम।-দেশীয় আদাযির বাবেগান, নামক রাজার সময়ে জেন্দাবেস্ত৷ গুদ্ধ কোন ভিন্ন ব্যক্তি কর্তৃক নঙ্কলিত **रुहेशाहिल। भा**तनीपिरणंत्र मर्ज अखावि **गुइ** পূৰ্বে বিংশতি কাঞ্চে বিভক্ত ছিল; তক্মধ্যে অধুনা विकास मामक अविधि माज मन्त्री कां धार रुअया याया (सम्भारिक, समर्क विम्लातिम् ইজিসু৷ এবং ঋদাবেস্তা নামক অপরাপর কাণ্ডের কিঞ্চিৎ হ অংশও প্রাপ্তব্য আছে। এই গুস্থ ব্যতীত বন্দেছেষ্ নামক পুত্তকেও পারসীরা বিশ্বাস রাথে। ঐ গুন্থচয়ে ধর্মের আদিভূত कंडकश्रीनन मंडा वाका चवना निवक चार्छः কিন্তু অবশিষ্ট ভাগ মনঃকণ্পিত নানাপ্রকার উপাখ্যানে পরিপূর্ণ। সেই সকল কাম্পেনিক বিষ-য়ের বিবরণ বাহুলা করিছে আমাদের অভিনাচি नाहः; जुल७३ वक्तवा अहे य शांत्रनीता मकल ७ व्यमञ्चलत প्रावर्शक चन्नल बक्रि एरवला उ बक्रि দৈত্যের অভিত্র ত্রীকারী করে; ডাছাদের নাম अर्मज्र बरः अष्ट्रिमान्। अर्मज्रम् जगरण्यं मृजम अ कीविं रिशंत ज्थे विधान करतमः चित्रमान् नित्रकत তাহার বিক্ষ চেষ্টার প্রবৃত্ত থাকে। ওর্মজ্ জী-ৰদিগের রক্ষার্থ " করোহর্" (দিক্পাল) সকলের मृष्टि कविवाद्यमः अधिमान् उविकटसः " विव 🤲 (रेमका) भगरक केर भागन कतिशास्त्र। आविश्वर्यक्र विच निमिष्ठ करतास्त्र-गक्त रामक राष्ट्रकार वक्षक माध्याचे विदेश क्ष्मण कर्णका सर्वेक्ष षम्कृत हरेवा अम्बार्गाटक वर्षानाय अधिवार क्षा त्राम, समहपर, अनः सक्षमः श्राम्

মহান্তাদিগকে পৃথিবীতে প্রেরণ করেন; তাঁহাক্তা যাহা উপদেশ করিয়া যান, তাহাই পারদীদের ধর্মবিষয়ক শাস্তা ওর্মজদকে সকল মহলালয়
জানিয়া উপাসনা করা; মন, বাক্য, ও কর্মকে
পরিশুদ্দ রাখা; দিকপাল ও অপরাপর শেষ্ঠ
পদার্থকে অচনা করা; প্রত্যেক পারদীর অবশ্য
কৃত্রত কর্মা

জেলাবেস্তায় কয়োমের্ম নামা এক ব্যক্তি মনুষ্যবংশের আদিপুরুষ বলিয়া উক্ত হইয়াছেন; এবং
বিশেহেষ গুম্থে সপ্রকাথারী অভ্যোনের পরামর্শে
মানব-বংশের জনক জননার বিপথ গমন, ও এক
জলপাবনের বিষয় অভিহিত হইয়াছে।

পারনাদিগের মতে ছাদশ নৌরমানে বৎসর, ও তিন সহসু বৎসরে এক যুগ হয়।

কোন কাক্তি মৃত হইলে পাছে কোন দৈত্য व्यासिया जालाव संतोतरक चाक्रमन करत, अहे আলক্ষ:-নিমরেণার্থ পারসীরা মৃত ব্যক্তির নিকট ঈশ্বর স্থাত্র পাঠ করে, ও তাহার চতুর্দিকে ক্রর সকলকে পরিবেষ্টিত করিয়া রাথে। সৃভ শহার প্রোথিত বা দথ্য করা হয় না; শাশান ভূমিতে অনাবভক্তে রক্ষিত হয়। যদি তাহার म्किन इक्षु अवस्वक भृभुषाता गृही इस, उत्व ভাষা অতি শুভ চিহ্ন: মৃত্যুর দিবস-চতুষ্টয়-পরে "সরিওয়" নামক দুত মনুযোর আত্মাকে ्दित्नवामण नामक कर्शीय (मञु मिया लड्या यात्रः তথায় রয়নেরষ্ৎ নামক দূত জাবাঝার কার্য্য-সকলের পরিমাণ করে: পুণেরে ভাগ অধিক হইলে স্বর্গনারস্থ কুকুর ভাহাকে প্রভিরোধ করে না: পাপাত্মা ব্যক্তিকে নরক কূপে নিপঞ্জিত হুইটেড হয়। নরকের যদ্রণ অভি ভয়ালক; কিন্ত ভাল নিত/স্থায়ী নতে। ওনজদ মুগ-পরি-ब्रुल-पात्री धमाठ अक नमञ् ध्रितन कतिर्वन,

यथन चड्रियान चएल-गर धर्मभाष প्रवृक्त इहैरन, यथन পৃথিবী इहैरिक छन्न, (भाक, पूर्ण, खनमीक इहैरिन, अदः উপদ্বিक পৃথিবীই আন্দেশুর্ণ বর্গ-থামের বরূপ ধারণ করিবে।

গলিবরের ভূমণ-বৃত্তাস্ত।
(২৫ বাণের ১১ পরছারে ক্রমারত)

आक्षास्त्रास्त्र स्ट्रिक्ट अस्त्र यथम छोहात्रा प्रिथित, य जामि अ बात किष्ट्रे थाहेट ठाहि ना, उथन 黑黑黑黑 ठाराप्तत्र मत्या क्षयान वक कन डेळ-পদস্ব্যক্তি ৰন্থানহইতে আমার নিকটে আ-সিয়া উপস্থিত হইল। সে ছাদশ জন পারিষদ সমভিব/হারে লইয়া আমার দক্ষিণ পাদ বহিয়া একথানি মুথের দিকে অগুসারী হইয়া এক-থানি রাজদত্ত তল্লামান্তিত ক্ষমতা-পত্ৰ আ-মার চকুর নিকটে ধরিয়া রাগসূচক ব্যতীত অপরাপর হাবভাব জাপক অহভেম্বার সহিত প্রায়ঃ অর্জ দণ্ড কাল কিছু বলিতে লাগিল। ভাবে বোধ হইল, যে প্রকৃত প্রস্তাবে কোন প্রতিজ্ঞা করিতেছে; বার ২ সম্পুথের দিগে অজুলীয়ারা निर्फ्य क्रिएंड माणिल भन्न कानिएंड भानि-नाम, या उथाक्रेएं अक्लामरकाण मृतः तस्य-धानोत क्रिक्ट निर्फाण कतिएक हिन, बे क्रिन त ताला তথায় আমাকে नहेश्रा याहेटच निजास मनमकति-য়াছিল। আপাতভঃ **আনি বাক্যবার। কিছু কৰি**-তে লাগিলাম, किन्ত किन्हें कन मर्गिये मा। शरत আমি দেই মুক্ত হস্ত থালি দিয়া, ভাষাক্র শন্তক স্পর্শ-পুরংসর ভাষ। আপন শিরে ও শরীরে প্রশাস क्रवे महरू क्षाता क्षेत्राहरू व**चनक्र** क्षा क्षातिहा मिए श्रीर्थमा कतिप्राहिनाम। (काथ क्रेक्ट्रिक्ट्रेक्ट्रिक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रिक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रिक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रिक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रिक्ट्रेक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रेक्ट्रिक्ट्रेक्ट्रिक्ट्रेक्ट्रिक्ट्रेक्ट्रिक्ट्रेक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रेक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रेक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रिक्ट्रेक्ट्रिक्ट् মার ননোগত অভিপ্রেম্ব বিশিষ্ট শুকারেই রাজার वरग्रम ररेगारिक, दक्तना (व व्यक्तन निर्मा

भारतन बाद्रा अनिवास व्यवचार्कि, अवः चक्रान হন্ত ধরিয়া এখনি ভাব প্রকাশ করিল, যেন সে जामारक चनमारे चनक करिया नरेमा यारे-বেক। যাহা হউক সে আরো কয়েক ইঞ্জিত-षात्रा व्यामारक कानाइन, य ज्यां रातन यर्थ है খাদ্য ও পেয় এবং বিশেষ অতিথিসৎকার পাইতে পারিবে। সমনস্তর আমি পুনর্বার সেই वक्षन एक्टरनंत উদ্যম করিয়াছিলাম, কিন্তু আ-मात मृत्य ও इन्छ शानानित्व जाहारनत्र वान-বেধনের বেদনা বোধ ও ভূরি ২ বাণ তথদ পর্যান্ত ভাষাতে বিদ্ধ হইয়া থাকিতে, এবং তা-मृशं देवति मध्याति वृष्टि इंवेटच (मथिया, मह्हज-षाता "वाभारक नहेशा यरथव्हा कत्रह्" अहे कथा তাহাদিগকে জানাইলাম। ইহাতে ঐ হ্রগো **খ**স-জিগণে পরিবৃত হইয়া সভ/তা-পূর্বক **পর্মানন্দে** প্রস্থান করিল। ক্ষণকাল বিলম্বে প্রনিতে পাই-লাম, যে তাহারা সর্বসাধারণে "পেপলাম সে-লান " এই শব্দ ভূয়োভূষঃ পুনৰুক্তি এবং আমার উভয় পার্শের বন্ধন কিঞ্চিৎ শিথিল করিয়া এক প্রকার স্গন্ধি অনুলেপন লইয়। আমার গাত্রে মর্দন করিতেছে, ভাছাতে অবি-लखरे जामात गाउँ रहे ए तरे मकल् बान-यून-বেদনা এক কালে দূর हुইয়া গেল। একে তা-হাদের খাদ্য ও প্রেয় বস্তুর ভোজন ও পানে एएकानीम कामात बर्शातानां उ बाहा ताथ स्हेन्नाहिन, जाहादक चारात जाम्म विस्तानभाष ভাৰার আরি আরিশ্বা বোধ ক্ওয়াতে আৰি অবিক্ষেই নিদ্যুভিত্ত হইয়া পড়িলামা পরে জানা (शव, जामि जाए वन्छ। मिनुके हिलाम; जान्तराह वा कि ? अमनश्र इरेफ शाद्ध, त्व रंग्ने ब्राक्ताकात टकान देवश्य कामाह लामादब रहातिक लामोदब किन् षानक जैनस्थत माजा विनादेश विका पाकित्वक।

এতাদৃশ দৃঢ় প্ৰতিজ্ঞা অতি সাহসিক 👁 चार्शिश विलिए इइटियक, श्रेडीड इइटिड्इ, य তৎকালে ইউরোপে কোন রাজপুঞ্জ আমার जूना हरें जिलातन मारे। ति याश हरेक अ वर्ष वर्षमाँ ও वर्षात्मात कार्या कता इन्द्राहिन বোধ হয়, কেননা ঐ সকল লোকেরা আমাকে নিদাবভায় শেল ও বাণদারা বিদ্ধারয়া শা-রিয়া কেলিতে চেষ্টা করিয়াছিল, ভদেষ্টনের বে-मना প্रथमण्डः উপলব্ধি इहेरामाज बामात निम्ना ভঙ্গও इरेग्नाहिन; অধিকন্ত ভাষাতে আশার ক্রোধ ও বল ৩০ বৃদ্ধি করিতে পারিত, বে यानि उपवन्यत्न यमाशास्त्रहे (मह नकत वस्त एमन कतिए পात्रिजाम, कारा रहेट्स जाहात्रा কোন ক্রমেই আর আমার মনিও করিতে পা-तिष्ठ मा, সুতताः **चामात म्या शाहे**वात छाहा-দের আর কোন আশা থাকিত না।

बहे नक्न लाक भिन्छ विष्णात्र निकास भात-वर्भी, बदः मुश्रीतम भिका-क्षात्र ममुद्धित स्थ-नाम क्षणाद्य भिष्णाति नाट्य वर्भादानास्ति वृश्यम । बहे बाजात कृष श्रक्ति सात्रीर भागवे वृश्यम । बहे बाजात कृष श्रक्ति सात्रीर भागवे

নানাবিধ শকটাকার যন্ত্র প্রস্তুত করা আছে। এই क्राका नर्दमा भाव প्रजृति वम मस्या वज् २ नः गा-মের হোগ্য পোত নির্মাণ করান, তন্মধ্যে কোন ২ খালা উদ্ধৃতখন্য নয় কৃট বা ছয় হাত লম্বাঙ इरेश थात्क, श्रञ्ज इरेल (न नकल ने यञ्ज निशा সমৃদু পর্যান্ত ৩া৪ শত গজ ভূমি টানিয়া আনা यात्रा वे वर्म यञ्ज निर्माण कतिवात नमरह ६०० भार সূত্রধর এবং কারিকর লাগিয়াছিল। ভাষা কেবল এক কাষ্ট্রময় অবয়ব ভিন্ন আর কিছু মাত্র নহে, ভূমি ছাড়া তিন ইঞ্চ অবধি প্ৰায় উদ্বে সাত কৃট बन्धः । दिखादा हाति कूषे, बारिः मणि हात्कत উপরে চলে। ঐ যন্ত্র উপস্থিতি হইবামাত্র তাতা-(प्रत महा क्वांगहल धूमि श्रामात कर्वकृहत প्रविष्ठे । হইল. কোথ ২য় তাহা আমার তথায় গৌছিবার চারি হণ্টা পরে সাসিতে **ভারত্ত হইয়া থাকিবেক**। আফিড পড়িয়াছিলাম, তাহা আমার সমান ২ ত্তানে আনাত হইয়া ত্তাপিত হইল,কিন্তু আমাকে ভিযিক্ত এক ব্যক্তি আপন হত্তের শূলাকের ধা-জুলিয়া এ যানে রাখা ভাছাদের পক্ষে বিজ্ঞাভীয়া कठिन दर्शालात इहेशा छेठिल। अक २ कृष्टे समा मिरत, नामिकाश जून मिरल यमन व्याध इस, असन चामो क्रम (लाक এই कार्य) माधिट श्रुखुङ े उमिन (वाद इंडग्रांट चामाक इंगिर्ड इंड्न, esal সূত্লির মত শক্ত রজ্জুতে বজিশা- তৎশক শুবণে তা**ছার। কে কোথার পলার**ন কৃতি হাক বাঁখিয়া কারিকরকে দিয়া আমার গলা । করিল ভাষার কিছুই স্থির করিছে পারিশা। এত কলে টানা বাধিয়া অবিশাতে ভিন মণ্টা পরি-नमछ विषय ভाষার। পরে আমাকে জানাইয়া-ছিল: ইতিপূর্বে আমাকে সেই পেয় দুব্য পাম "कहिएक मिनात कालीन लाहाएक कि कि मिनास-

(कनना वाथ रुग्न. जाराट जायाटक वक्षम कतिन वात नमस्य मृथ्यं कतिया तक्ष्यक्षिकिता धमस्रत प्राय नार्च ठज्डेन जन्नी उक, अक शरमन भाउ डाक्षकीय (बाठेक चानिका जे **नक्छि: याक्ष**ना পূর্বক রাজধানীর অভিনুথে আশাকে টানিয়া नहें या शिला भूर्य है वला निशास्त्र, औ दान ह-हैं एक ब्राह्मधानी अक शाम क्लामा शब मूह ।

আমরা রাজধানীর অভিমুখে চলিতে আরম্ভ করিবার ৪ চারি ঘণ্টা পরে এক মত্যন্ত হাব্য জনক আকন্দিক ঘটনায় আমার নিদ্যু ভঙ্গ হয়। यह कालोन ब्राजधानोट उँखीर्ग इरे, उथन मिन्छा-বস্থায় আমাকে কেমন দেখায় এই কৃতৃহল দেখি-বার জন্য ভজ্ঞপাকারের দুই ভিন জন যুবক লোক আসিয়া ঐ শক্ট বস্ত্র দাঁড় করাইয়া ভাছাতে বহিয়া উঠিতে এবং জনে ২ আমার মুখের দিকে চলিয়া আসিত্রে লাগিল। ভন্মধ্যে রক্ষক পদা-রাল অগুভাগ আমার নানিকারজুে প্রবিষ্ট করিয়া হাত পাদ শরীর বিশিষ্ট্রিপে বাঁধাইল। পরে হঠাৎ জাগরিত হ**ইবার কারণ আমি তিন সম্ভাহ** নয় শাত বলবান লোক ঐদভি ধরিয়া আমাকে পরে জানিতে পারিলাম া ক্রামর মন্ত্র বিদ্যা টাশিতে নিযুক্ হইয়া ইতস্তঃ অনেক ২ কপি- বার কিছু অবশিষ্ট ধার্কিতে ২ আবরা তথাহইতে श्वाभ. এवर ब्रांकिकारण वास्त्रक पूरे भारत भार শুনে কিলা করিয়া আমাকে সেই যাব্রে তুলিয়া লভ রক্ষক আর্থেক লোক ছাতে মনালা এ অপ-मद्दत उथाय मामाद्य वाधिया किलिल। अ दार्घ रूट्ड धमुदीन गरेका नाइक कि का निवित्र काषामुख यारे, अहे कृत्य को किएक कारिका। भंत पिन প्राप्तः कार्यः नृत्यं । क्षेत्रः क्षेत्रः । क्षेत्रा शूनवीत छनिए भाषाक कतिमास । अभेदत्र क्रांब नक कान देवध निश्चिक कात्रशानिशा धाकिरवृक्त, जिलाक्षरेष अधार विषा धव मूर्का क्रिक किन्दार्श হইতে দুই প্রহর অতীত হইল। তত্ত্তা সমুটি সভাগণে পরিবৃত হইষা আমাদিগকৈ দেখিতে বাহিরে আইলোন, কিন্তু আমার শরীরে আরো-হণ করিয়া পাছে তাঁহার দৈহিক কোন শান্তির ব্যাঘাত ক্ষমে একারণ তাঁহার প্রধান ২ কর্ম-চারিরা ব্যস্ত হইতে লাগিল।

বেথানে আমাকে বছিবার শকট যন্ত্র স্থাতি রহিল, তথায় একটা প্রাচীন মন্দির ছিল রাজ্যের সর্বাপেকায় সেই টা অতি বৃহৎ; কয়েক বৎসর পূষে তথায় একটা আকশ্যক হত্যা হওয়তে তাহা অপবিত্র কপে গণ্য হইয়াছিল। প্রজাবর্গের আগুহানুসারে ইহা এক অশুদ্ধ পদার্থের নিদর্শন স্থল যক্ষেপে পরিগণিত; সূত্রাং তথাহইতে অলক্ষার ও বহু মূল্য দুব্য সামগ্য স্থানান্তর নাত হইয়াছিল, কেবল সেই মন্দিরটি মাত্র সামান্য ব্যবহারেই নিযুক্ত ছিল।

কল্পনা খির হইয়াছিল। ইহার উত্তরদিকের প্রথাল ছার হাাত হাত উচ্চ, ও প্রস্থ পরিমাণে প্রায়

মাত ছাত, ভাহা দিয়া আমি অনায়ালে সক্ষৃতিত

হইয়া প্রবেশিতে পারিতাম। ছারের দুই পাখে
ভূমি ছাড়া ছয় অজুলি উদ্বে দুই ক্ষুদু গবাকের
বামদিকের গবাক দিয়া প্রায় শতাবধি সূক্ষ হ
ক্ষুদু শৃত্থলে আমার বাম পাদ বাঁথিয়া ৩৬ টা
ভালা বন্ধ করিয়া রাখিয়াছিল। এই মন্দিরের বিপরীত দিগে প্রথান রাজপথের পার্ধে
১২।১৩ হাত দুরে এক উচ্চ গুরুল ছিল, অন্ততঃ
ভাহার উচ্চতা প্রায় ৩০ ছক্ত হইবেক। দৃষ্টিগোচর হয় মাই, কিন্তু পারে উনিতে পাইলাক, ভ্রতা
সম্ভিত্যালের লাইছা আনাক্ষেক প্রথান করিবার
মানকে ক্রিকারে লাইছা আনাক্ষেক স্থান করিবার
মানকে ক্রিকারে লাইছা আনাক্ষেক প্রথান করিবারিক

तिन। এত प्राची ज्ञामां छे प्रचारत वार्ग मृत्वमां प्राचमां वाश्रुण नहकारत (महे नगत निवानो अक लक्ष श्रुणा प्रामारक प्रिथित मान-तिहे वाहिरत प्रामिशाहिन। विस्मयणः नार्था-मेण नहकारत प्रामारक तक्षा कितवात क्षमा (वाद हम प्राम्भ मेण महनु त्माक नियुक्त हहें सा थाकि-रिक, अवः छेराता मांभाम महत्याण प्रामात (महित छेपित प्रारताह्म कित्रण: किन्न प्रितिक्त जाहाहिगरक अलाम्म मत्रम याजना मारम वित्रण कित्रवांत्र मानस्म (सायमा वाहित हहें शाहिन।

কর্মকারের। আমাকে তাদৃশ বন্ধন চ্ছেদনে
আসমর্থ বৃঝিয়া ত্রায় সে সকল রজ্জু কাটিয়া
কেলিল। তাহাতে তথন আমি এতাদৃশ বিষয় ও
অসুস্তাবে গাজোপান করিয়াছিলাম, যে জন্মাবিছিয়ে আমার তেমনটি আর কথন হয় নাই।
গাজোপান প্রঃনর আমাকে বেড়াইতে দেখিয়া
উপস্তিত প্রজাবর্গের যে রূপ কোলাহল ও চমৎকার বোধ হইয়াছিল, তাহা বচনাতীত। বে
শৃত্থেলে আমার বাম পাদ বন্ধ ছিল, তাহা প্রায়
চারি হাত লম্বা সূতরাং তাহাতে যে আমি
অর্জিন্দাকারে অগু পশ্চাৎ গমনাগমন করিতে
পারিতাম এমৎ মহে, কিল্লু সঙ্কুচিত হইয়া অনায়ানে মন্দার মধ্যে প্রবেশ ও তাহার মধ্যে বিস্তৃত
শরীরে শয়ন করিতেও সমর্থ হইয়াছিলাম।

हेन्डि अथमावराम् नमाथ। 📑 द्वा. मा. वि.

## मनीज-गर्य।



উৎপন্ন ধুনি। অপর যে ধুনিবার। বস্তু নির্দেশিত, বা কোন জিয়া বা অন্তর্ভাবাদি অর্থ বিজ্ঞাত হয়, তাহার নাম সুকৃতি; শাজে ঐ সুকৃতি ধুনিকে বর্ণাত্মক ধুনি বা ভাষা শকে বিধান করে।

অকৃতি ধুনি ষরের ও কালের অনিয়মে উৎপন্ন

হইলে "নার্থ" হয়, ও ষর ও কালের বিশেষ নিয়মে শব্দিত হইলে গীতবাদ্যাদিরতাপ পরিণত হইয়া সম্রাত উৎপন্ন করে। ঐ সুষরবিশিপ্ত অকৃতি
ধুনিতে মনোরঞ্জন হয় বলিয়া সন্রাত লাছে তাহাকে
"লার্থ" শব্দে কহে। "দুম্ তানা নানা দেরে না"

এই কয়েকটি শব্দ এক-ষরে অনিয়মিতকাল-ব্যবধানে ক্রমশঃ দু—ম্—তা—না—না ইত্যাদি রূপে উচ্চারণ করিলে কোন সন্রাত-রসের

ইদ্য় হয় না; পরস্ত ষর ও কাল নিয়মের সাহাযেয় তাহাই উত্তম সন্রাত হইতে পারে। অতএব ষর ও কাল নিয়মই গীতের মূল, তিজির
গীত সন্তবে না।

কণ্ঠহুতে যে ২ বর নির্গত হয় তাহার লক্ষণ বিবেচনা করিলে তাহাকে সাত প্রকারে বিভাগ করা যাইতে পারে। গাত-প্রসঙ্গে যে বর আয়াস ব্যতাত অযতে নির্গত হয় প্রাধান্যার্থে তাহাকে "প্রথম বর", এবং তদপভুংদে "সূর" ও কদাপি "প্রথম " শব্দে বলা যায়। ময়য় বা গর্দ্ধতের সহিত ঐ বরের তুলনা হইয়া থাকে। ইহা "য়ড়্জ" নামেও বিখ্যাত আছে। তদনন্তর বিতীয় বর; তাহা ব্য-ধ্নির তুল্য প্রযুক্ত "ঝ্রত্ত" নামে বিখ্যাত। ভেড বা চাতক রবের সহিতও তাহার তুলনা হইয়া থাকে। তৃত্তার নাম "গা-কার" তাহা ধেনু বা অলার ধ্নি নম্ন। চতুর্থের নাম "গা-কার" তাহা ধেনু বা অলার ধ্নি নম্ন। চতুর্থের নাম "য়াম্ম্ন"; এবং কোকিল বা জ্লোক বর তাহার তুলনা ছাল। ত্র্পত্তার ক্র্ননা স্থান। ত্রাক্ষা বিশ্যাতার ক্র্ননা স্থান। ত্রাক্ষা বিশ্যাতার ক্র্ননা স্থান। ত্রাক্ষা বিশ্বাতার ক্রেননা স্থান। ত্রাক্ষা বিশ্বাতার ক্রেননা স্থান। ত্রাক্ষা বিশ্বাতার ক্রেননা স্থান। ত্রাক্ষা বিশ্বাতার ক্রেননা স্থান। ত্রাক্ষার ক্র্ননা ক্রেননা স্থান। ত্রাক্ষার ক্রেননা ক্রেননা স্থান। ত্রাক্ষার ক্রেননা ক্রেননা ক্রেননা স্থান। ত্রাক্ষার ক্রেননা ক্রেননা স্থান। ত্রাক্ষার ক্রেননা ক্রেননা ক্রেননা স্থান। ত্রাক্ষার ক্রেননা ক্রিননা ক্রিননা ক্রেননা ক্রিননা ক্রেননা ক্রেননা

"পঞ্চম"। যা ষর অবা-মনের তুলা, এবং 'বৈবত' লামে বিখ্যাত। নপ্তম কুঞ্র-খুনি সদৃশ, ও "নিষাদ" নামে খ্যাত। এই নপ্ত হরের নমষ্টি নাম "বরগুমে"। কথিত আছে যে নজীত-শাস্ত্র-বিশারদ সোমেশ্বর নামা কোন প-শুত উক্ত সপ্তমরের নিয়ম নিরূপণ করেন।

गछी-अ नानूनानिक मास्य बहे इत्रशाम बिखनो क्ठ हत्र, उपाया '' यण्ड श्राम '', ''मधाम श्राम '' बदः ''गासात ग्राम ''। मन्द्या बे नमस्य जिन श्राम छेकातन किंदिल शादत ना। खोलादकत कर्फ मधाम अगासात श्राम, अश्रक्षयत कर्फ यण्ड अ मधाम श्राम छेकातिल हहेग्रा थादक। बहे चत-श्रामत मुद्राथादर्थ वीना वा मिलात यद्धत चालाहना खातमाक। म्याच यद्धत मद्ध म्याचाका थादक, जाहात मधास विधाल धात्मत्र मलाका थादक, जाहात मधास मधा थानिहहेदल मधा-श्रामत गुर्श चत्र ध्राम ह्या स्तर ह्या थानिएल हहेग्रा थादक।

करे लड़ा-जिस्ता (य १ छाटन निक्क रुप्र छा-राज मध्य जि छाटन ज्ञले श्री पा वासिया धूनि किति छिल्लिक ज्ञल-स्त क्रिकोठ ज्ञन्य स्त्र छे० लग्न रुरेटन, रेहा ज्ञानमार ज्ञाहित। के ज्ञले स्त्र हे० लग्न स्त्र ज्ञाना स्त्र क्रिका रुप्य क्रिका क्रिका क्रिका हिंदी स्त्र क्रिका स्त्र क्रिका स्त्र क्रिका स्त्र क्रिका स्त्र क्रिका स्त्र क्रिका स्त्र हिंदी स्त्र क्रिका क्र क्रिका क्र क्रिका क्रिका क्रिका क्रिका क्रिका क्रिका क्रिका क्रिका क्रिका

ক্ষিত গায়ক ভিন্ন অনের অনায়াদে বোধগম (ক্রপ কর) অন্বেশ্যক।

चह-शास्त्र व्यावाशास य जात्म अक सार्द् বিরাম ধ্রীয়া তথপর ফারের আরিভ হয়, তাছার ব্রের আরোহ অবরোছে যে ব্রে রাগনিপার হয় তাহাকেও মুচ্ছনা শব্দে কহে। সপ্ত-ছরে 🖹 নৃঞ্জনা সপ্তবার হুইয়া থাকে, ও তিন গুমে ाहाह मध्यम **अक्रिक्गांठ निक्रिफ ए**स है।

ভারতবর্ধীয় পশ্তিকমাত্রেই রূপক-প্রিয়; বি- : শেষতঃ বে দকল আচারোরা ধর্মগুত্বও ভূরি ২ क्षणक-उन्हाम भहिशूनं क्षिप्ताएम, जाहाता य प्रामान्नाम-मर्गाठ-भाषात महीत्र क्रिका क्रिका-काद निक्षिक कतिरदन, इंशाल वाक्तर्य कि? সেই বর্ণনা সকল অভ্যন্ত মনৈছের; ভদ্যারা; এতদেশীয় জনগণেও মনঃ এতদৃশ মুখ্য আছে, य जारांत यायाचा चयुना जनगरनत मरन श्रकः টিত করাই কঠিন। পূর্বেই উক্ত হইয়াছে, শ্বর-

্ লাভাগান্ধ নাম স্থা,

क (बानकी, सक्षा, जनस्वकी, बदार की, ज्ञानकी, क्रक्तिका, ऋषुत्र। र रक्षाराः राज्यत्त्राः প्रभाविता, भाक्षां, भाक्षानी, त्रही, व्रह्माः সলাপন্য, সালোপনী, লেটা, ওবর্ড রোটিনী, র্মেয়া, কোল 424 B#

र्ग भूक्तासिरशत मात्र गर्थ , "

ষড়ম প্রামের মুক্তনা কলিকা, মধামা, চিকা, রোহিনী, মঙলকা, प्तिनिही, यभ्यत्यः यत्राय तुष्ट्यत् युक्तन्त भक्षयः, य**श्मती, यून्**न मंद्रा, एका, कशा, कशायही, छादुः। बाक्षात बुद्धात सुक्षता ह्योपूरी, ्रीकी, रेशकरी, खन्त्री, भूता, नामावडी, हिलाला ।

पूरे \* जो निकाशिक इया अहे हाविश्मिक व्यथीन | नकन शूक्यकाश ७ छनीय व्यक्ति-नकन जीकाश चरतत नमष्टित नाम "অভি "। কদাপি ইহা- বিভিত হয়। অপর সেই জাপুক্ষদিলের অপ-मिशंदक " कार्त-बह " मादम् कहा यात्र। शूम- एकाइ निर्माण चारहः काहात्र। "ताम ग नारम ভেদে এই শ্রুতির নিয়ম অন্যথা হইয়া থাকে। বিখ্যাত। বড্ছের পুঞ ভৈরব রাগ, ঋষভের मध्यम-भुष्य शक्षास्त्र स्व क्षि देशवराज्य शुक्ष मानत्वोम, शासारतञ्ज भूक हिस्मान, मध्य-অধীন হয়: পরস্ত তাহার বিশেষ লক্ষণ সুশি- । মের পুত্র দীপক রাগ, পথ্যমের পুত্র মেঘ রাগ, এবং ধৈবতের পুঞ জ্রিরাগ, কেবল নিষাদ ষ্টানে না। অতএব, তদ্বিষয়ের বিবরণে কাল- নিঃসন্তান। অপর ঐ রাগ-সকলের জীপুঞাদি পরিবারের প্রচুর বর্ণন আছে। ফলতঃ, যে সকল সঙ্গীত এক ধর্মাক্রান্ত ও এক প্রধান শ্বর-মণ্ডলীর অনুযায়ী তাহারা সেই প্রবাদের পরিবার নামে नात मृत्यना (कान २ नक्षी ठ-नाजानू मारत मृष्ट्रमा विथा छ इयः ७ शत्रणात ममधर्म छात देनकि।।-नू गारत जो, शूख, शूखवधू, महत्रते अङ्गि नात्म নিদিউ হয়। এই সমবর্মতা, অর্থাং কোন্হ রাগ কাহার সহিত কোন্হ লক্ষণে জুলা তাহা, নিরপণ করা মত্যম্ভ কঠিন, এবং স্থানেক রাগ সন্থলে ভয়িৰপণ কেবল কম্পনা মাত্ৰ; সুভরাং अविषयः नकन गुष्टकात्त्रतं मण् क्षेत्रा रुक्टेट भारत না। অঙ্ক-বিদ্যা-প্রণেকা শুভঙ্কর ভ্রু রাগের ছত্রিশ রাগিণী নির্দেশ করিরাছেন; কিন্তু হন্-মান্-ভরতাদি অপর প্রাচীন-গুস্কারেরা ভাগার খন্যথায় কোন রাগে**র পাচ ছা,** কোন রাগের **ছয়, কোন রাগের সপ্ত বা অষ্ট জা বর্ণন করেন।** সোমেশ্র ভৈরবরাগের পাঁচ জা নির্দেশ করি<sup>্</sup> য়াছেন, অথচ কুৱাপি ভাষার সাত জীরও উক্তি च्यारहः। चलत् वे खोहिरभन्न मार्यद्व व निक्यत्र नाहै। टेड्डवी चिडिश्रनिका द्राणिनी; चरनक शुक्कारतत মতে ও নাম বু/ৎপত্তিতে ইহা ক্রাইই ভৈরবের जी राक चार्छ; चथर गुहाउत-मरक हैश मानकोत्मत को वनिया वर्षिक स्हैबाटका चन-त्रानंत क्रांग क्रांगिनी ७ चन्त्रागापित विवरत वर ৰূপ অস্থিয়তা দৃষ্ট হয়।

ভাগ করেন। প্রথম, ষে সকল রাগের আলাপনে সমত खरतत উচ্চারণ হয়, ভাছাদিগের নাম গ্ সম্পূর্ণ রাগ; দ্বিতীয়, যে সকল রাগের আ-লাপনে ছয় খানি বর উচ্চারিত হয়, তাহার নাম "ষাজ্ব"; তৃতীয়, ও যে সকল রাগে পঞ্ছর ধুনিত হয়. তাইার নাম "ওড়ব"। এই রাগ-সমূহের প্রান ও আলাপনের কাল নিদিষ্ট আছে, কিন্তু প্রস্তাব-বাহুর। হইবার ভয়ে এই স্থলে তাহার উল্লেখ করিতে স্পৃহা হইতেছে না।

मझोरञ्ज मृत एउ ७व॰ कार्लंड नियम। उत्पर्धः च दइ इल विवद्ग छे छ इहेन, धहे कर। काल লিয়মের লক্ষ্ণ বক্তব্য। ভানাদেরে ইত্যাদি প্রদত্ত मृक्षेरिक श्रम्भिक इड्याह्म, य काल नियम ना थाकित्न कराणि मझीठ त्रामत छेत्नुक इइट्ड পারে শাঃ বর শ্রুতি মুচ্ছনার আলাপন অতি দুচাৰু ৰূপে হইলেও সন্ধীত রুদের সার্থকতার নিমিত্ত কাল-নিয়মের অত্যন্ত প্রয়োজন রাথে। বড়ক ঋষভ গান্ধার মধ্যমাদির প্রত্যেকের উচ্চা-রণে তুল্য কাল আবশ্যক; তদন্যথায় রসের হানি হয়। এই কাল নিয়মের নাম "তাল"। ঐ তালের মর্ম এই যে নৃত্য-সম্বন্ধে পাদ বি-(कण, वामा-अयरका नक (वान) अ शोज-मश्रक्त বাক্য, নিদিষ্ট-কালে নিদিষ্ট-নঙ্খ্যায় প্রয়োজিত **रुरेदक। এक मूर्ड्ड यम्प्रील हा**बिंहि वाक्र উচ্চারিত হয়, তৎপর মুহুর্ত্তেও মেই চারিটি বা তদিভিগ বা তদৰ্কে অথবা ভচ্চতূৰ্থাংশ বাৰু উচ্চারিত হওয়া আবশ্যক; কদাপি ভয়িয়মের - जमाथा हरेतारे जातात हानि रशा बाहा व शोरजत णामिनाम नाम "लग्न"; बनः (य क्रांटन विज्ञाम क्या यात्र कांकात्र माम "माम"। अहे मान पूरे शकात, भीरकत बर्धा । या वाक ताबा बात,

গুন্থকারের। এই রাগ-সকলকে তিন বর্গে বি- তাছার নাম "অন্তর্গত মান" বা "সম"; ও পদ সম্পূর্ণ হইলে যে বিরাম হয়. ভাচার নাম "পূর্ণ মান"।

পূর্বকালে ভারতবর্ষীয় সঞ্চীতবেতারা স্বর-নকল অনায়াসে লিপিবন্ধ করিয়া রাখিতেন; কিন্তু ইদা-নীস্তনের গায়কেরা সন্ধাত বিদ্যার সাধন না করি-या (करन चन्न-गांधन करतन, अहे प्रायुक्त (म विमात अदकवादा लाश इइयाद । अहे कदा কাগজে সুর লিখিবার উল্লেখ করিলেও উপছা-সাম্পদ হইতে হয়; অথচ ইউরো**প খণ্ডে** নর্ব-দাই এক দেশের নূতন স্বর-বিন্যা**স** (সুর) **লিপি**÷ বন্ধ হুইয়া অন্য দেশে প্রেরিড ছুইভেছে; এবং ঐ লিপি-দৃষ্টে স্বর-সাধন করিলে কোন মতে আদিন গায়কের স্বর হইতে পৃথক্ হয় न।। এতদেশে বিদ্যার পুনরাবিভাবে ভরস। করি এই লপ্ত বিদ্যারও উদ্ধার হইবেক।

## शुप्तत विवत्र १

স্থান । ব্যাস । ।

ত্রুল । ব্যাস । ।

ত্রুল বি প্রকারে নদী ও কুও রুপে

পরিণত হয়, তাহার বিবরণ পূর্বেই উক্ত

হইয়াছে। ঐ উৎস-ভলসমত উ পরিণত হয়, তাহার বিবরণ পুর্বেই উক্ত ्रिक्षा करें वृहर हरेल " दुन" नाटम विश्वां हरू। নেট হুদ চারি প্রকার; প্রথম যাহার জল লোভো-রূপে বহির্গত না হয়, ও যাহাতে সুোভো-জল নিপ-ভিত নাহয়। দিতীয়, যাহাহইতে দ্যোভঃ উৎপন্ন হল। তৃতীয়, যে হুদ সোতঃ উৎপাদন করে, ও সোতো-জল প্রাপ্ত হয়। চতুর্গ, ষাহতে অনাত্রের সোুভো-জল আ-বিয়া নিপতিত হয়, অখচ তাহাহইতে কোন বোলঃ নিগত হয় না।

প্ৰথম প্ৰকার যুদ বৃহৎ কুও মাত্ৰ; কোন প্ৰশ্ৰাইতন निम्-इात उर्ग जन महरोठ रहेलाई ठाराव उर्गाव हर । के उरमाजन निर्म काम शहिन्द का कर कर ल लाएक गुळे रह, अरू काराई क्रिकेट सकार জল নেপ্রত্যাল-নদী দিয়া লাখলাদিক মহাসমূদে অপ- চরণ করিয়া খাকে। मुठ हरा। व्यक्तिमा-धरश्रद छेखवाशनम् देवकान कृष्ट an 公安(图)

চহুত প্রকাঃ হদ জাহি আন্দর্যা, তাহাতে প্রকাল হ ন্দার জল ভার্নির পাছে, অথচ তাত্তিত নিগত কোন लिए धारक रह मह साह सातान अवस काञ्चीय हर এল প্রকার কুলের এক দ্**টোন্ত কুল : কর, উরোল**, বলগ্ প্রভাব করেকটা প্রকাপ্ত নদীয় ইবে প্রভুত জল জালিয়। নিগত কাঞ্য় হুদে নিপতিত হতীতেছে, এবপ ঐ ভুদহতীতে ৬০ছার নিবমনের একান পথে নাই, অথচ ভদ্ধারা ঐ চুদের এন্ত্রত তার মা ১ইটা সর্প জ্মশ্য ভাষার মুাস্ট ক্রান্ত্র তেওঁ আশ্রা সংপোচরর কারণ নির্পাণার্থে ৪ ১,০০ ৮ ১ ৪ চন্দ্র হারু করিবাছেন। আমাদের বোধে प्रकार कर १८ १ ८ ए पुष्टिस कहिन: केन्द्रातीर सम्मानि**उ**् 化氯酚 经收益额 医肾经验 医侧侧

কাঞ্চিত ত পাছৰে ক্ষেত্ৰ কৰা লবগান্ত, এবল তা-ষ্ট্র জার আন্দ্রনাম সংক্রোপ্তরার করে। মু**র্টি বনীতেতে** ा करमुक्तार , त्या हा रकाम कराल महरमुद्ध अक खालन ভিলা: ফলালা পুলগ্যার ও কাস্কার জুবের **মধ্যবর্গী জুমি** ভাগেনিফ এল একং বলগান্য কৈয়ুক ভাগেত মু**্তিকাপ্তম**র राधा देवशव वर्गग्राञ्च । उनुवन्नाम्यान भूत्य बाह्यान ও আর্থা বুধ ওক্সাল্ড কের চিলিক থাকিল। মহা-মায়ন্ত্রের ভারত রূপে পারিবাধিক জিল।

্ত্তনন্ত্ৰীয়ৰ এম কোন্ত সমাল **সন্ত এইয়া পুন** ए स्वयन्त्र अस्यः धार्यः, तृष्टिम अयः वजेनात् ध्राम গ্ৰন্থ কিলু বল্ভাল-বাহিৰোকও কলাম **গ্ৰেম্থপাদক** লালত উৎযোৱা লাক্ষর-বশ্তঃ গ্রেছর লোপোপাত্তি মন্ত্রা-ানা, নালিরেয়া দেখের সাকিনিট্র জুল এই প্রকারে উৎ**নের** দিঠু ডুটেন মালা স্থায় লল ∤

পেৰিছ বুদ নিৰাত সময়েও অত্যম আ**ন্দেলিত হয়।** करिनर-१५ १९४१ लयछ-श्रमत अही श्रकात ब्राह्म । देशक কারে। অস্যাপত নিশ্চিত হর নাই। রোধ হয় ভ্রতে रेपर वागुरी अर्थ शास्त्रांतन डेशिक्ड करता।

আগত কোন লোক ভাষ্টে নিপতিত হইলে তৃতীয় ছিতত্ত্বেন্তার। অনুমান করিয়াছেন যে বোৰম্ভিকাৰৎ প্রকার কুদ প্রস্তুত্ব কর্মানরিকার এব্যুকার এক প্রকার লঘুম্ভিকাথও ভটহইতে বিক্ষির হইয়া অতি বুর্ব ভুল জানক আলে: ভালাতে অনেক নদী স্থালাপরি ভাসিয়া থাকে। প্রসিয়া-দেশে গর্ভ-ছ্দে এক আসিল নিপ্তিত তমু, এর ও অন্তেত্ত তৎসমুদায়ের বাহ্যমান দ্বীপ আছে, যাহাতে অনায়াদে শতাধিক পেনু

#### বায়ুর বি্বরণ।

খিনীর চত্দিরে ৪০ জ্যোতিধী কোশ 🌮 👺 অন্তর পর্যান্ত সক্রতে বাযুতে পরিপূর্ণ: ঐ 🏂 বাহ্র গতিতে জগতির অনেক ইন্ট সা-🎖 🎉 🗚 🎉 श्रिक रहेगा थात्म। (यत्म डेराटक "भावक" अर्थाच পरिज्ञकारो भरम निधान करत, काहन मूर्धस्त्रभ क्ल्प्स्त मृतो कत्रगार्थ बार्डे एक प्रांव छेनात।

যে নিয়মে তরল পদাথের গাতি নিজার ছইয়া থাকে সায়ুত দেই নিয়মের অধীন; ফলতঃ বায় এক প্রকার তরল পদার্থ, সুতরাম সত্ত প্রকারের তাহাদের ধর্ম ইহাতে বর্তমান আছে; এই মাত্র বিশেষ যে তর্ত্ত পদার্পের অন্তরাকর্মণ অপেকাকৃত দৃঢ় বলিয়া ভাছা অনারাদে স্ফীত হল না; বাচুর অন্তরাক্ষণ শক্তি অত্যন্ত লগু এই প্রযুক্ত বায়ু আনায়াদেই ফুটিত হইতে

भूत्मने देक रुनेशांक नतन भगार्थत अरु भूतान পর্ম এট যে ভাঙ্রে কলত সমোক্ত থাকে, কদাপি ভাষার কোন অংশ <del>উচ্চ ও অপরাংশ নিমু হয়</del> नाः (काम कात्रवानगटः महमाष्ट्रजात शानि शहेला ए५-ऋगार वे अमार्थ आत्मानित ध्रेया महमाकता-त्रकात (ठकी करत ।

অপ্র এক নিয়ম এই দে বস্তু মাত্রেই উষ্ণতায় স্ট্রান্ড এরণ পাতে পদ্ধৃতিত হয়; **ভূল ভান্ন সকল পদার্থ** এট নিয়মের অধীন; কেহট ইহাহচতে ৰতল নহে भोककारन एवं स्मोह-अंख किंक श्रेक हम् बीर्च श्राटक श्रीरम् टारा अक रहरहेल्ड किथिए अधिक मीर्च र्मः অপর তাহ্য অগ্নিতে উৎতপ্ত করিলে তদপেক্ষার আরও দীঘ হয়। বৰ্ণ ব্ৰুত প্ৰস্তুৱাদি অপার সকল পদাৰ্থত এই প্রকার। দৃঢ় পদার্থাপেক্ষায় তরল পদার্থ উক্তরায় कंषिक वृक्ष रहः; वाष्ट्र ठहन शरार्थः मधा नर्काटनकाह ক্ষামিক সূক্ষ্য সূত্রাপ ভাষা প্রাক্ষে অভ্যন্ত সভান্ত ব্যঞ্জন

বাহু ৰতাৰতঃ সক্তি বিহুতাৰে থাকে, পরস্ত কোন
এক প্রদেশে স্ক্রোভাপ অসিক হউলে, মান্টবানল না অন্য
কোন কারণে বাযু উত্তও হউলে, পুর্কোক্ত বিভাক নিয়েনানুসারে তাই। তৎক্ষণাৎ স্ক্রীত ও অন্য কায়ুর অপেক্ষ্পা
লয় হয়। এই লয়ু বায়ুর ধর্ম উর্দ্ধে গমন; এবং ঐ বায়ু
যথন উর্দ্ধে গমন করিতে থাকে তৎকালে প্রথমাক্ত
নিয়মপুযুক্ত তাহার অপর দিক্ষ্ শীতল স্কুল বায়ু তৎক্ষ্পারিতাক্ত-স্থান প্রণার্থে তদিলে ধাবমান হয়; তথা
এই দুই নিয়মপুযুক্তই বির বায়ু সঞ্চালিত হইয়া থাকে;
মন্দ-বায়ু, খুর্লিবায়ু, কড় পুত্তি সকলই ঐ কারণহইতে
উৎপন্ন হয়।

যে বাসু প্রতিষ্টায় মর্জ-ক্রোশ-মাত্র সুমণ করে তাহা প্রায়ঃ সহসা আমাদিনের বোধনমা হয় না; যে বায়ু িছটায় ২ না ২।।০ ক্রোশ স্থান সুমণ করে তাহা "মন্দ-বায়ু" নামে থাাত। চতুরসু একংস্তম্বানে তাহা যে বেনে আহত হয়, এক চটাকের যে ভার তাহা তদর্কে হলবৈ। প্রতি ঘটায় যে বায়ু ৫। ৭ ক্রোশ সুমণ করে তাহাকে "তেজো-নায়ু" শব্দে কহা মার; তাহা বিশেষ তেজোবস্ত হলল প্রতি ঘটায় ১০ । ১৫ ক্রোশ স্থান অগ্রামন করে। তাহার বেনের পরিমাণ প্রতিচত্রসু হস্তে ৩। ৪ সের হইবেক। সামানা কড় প্রতিষ্টায় ২৫। ৩০ ক্রোশ স্থান স্থান করে, এবং তাহার বেনের পরিমাণ ১০। ১২ সের; পরস্ত সকল আড় সমবেনে হয় না, এই প্রযুক্ত তৎসমুন্ধে কোন লালধারণ নিয়ম নিরপণ করা আসাধা। যাহা উক্ত হইল তাহা সামানা কড় পক্তেও মূল অনুমান মাত্র।

পৃথিবীর সুনেক ও কুমেক কেন্দ্র অত্যন্ত শীতল, তথাছইতে যত নিরক্ষ-বৃত্তের নিকট অগ্লুসর হওয়া যায় তত গ্রীয়োর বৃদ্ধি হয়, এই কারণ বশতঃ দুই কেন্দুহইতে নিরক্ষ-বৃত্তাভিমুখে নিয়ত দুই বায়ু-প্রবাহ আলিতেছে; কদাপি-তাহার নিরুত্তি নাই। অপর নিরক্ষ-বৃত্তের নিকটহইতে যে উত্তপ্ত বায়ু উর্ছে গমন করে তাহা কিয়দুর উল্লে উচিলে তথাকার শীতল বায়ুর সংগ্লুপে শীতল হইয়া কেন্দুহইতে আগত নায়ুর হান প্রপার্থে কেন্দুহইতে আগত নায়ুর হান প্রপার্থে কেন্দুহইতে নিরক্ষ-বৃত্তাভিমুখে আলিক্ষের বারুপ্রবাহ কেন্দুহইতে নিরক্ষ-বৃত্তাভিমুখে আলিক্ষের, কারাপ্রবাহ কেন্দুহইতে নিরক্ষ-বৃত্তাভিমুখে আলিক্ষের, কারাপ্রবাহ কেন্দুহইতে নিরক্ষ-বৃত্তাভিমুখে আলিক্ষের, কারাপ্রবাহ কেন্দুহইতে নিরক্ষ-বৃত্তাভিমুখে আলিক্ষের স্থানিক্ষের, কারাপ্রবাহ কিন্দুহটার বারুপ্রবাহ কার্দুহটার কিন্দুহ

वशांशि निवृष्टि मारे, अरे श्रवृक्त जोशांक "निवृत वाहू " भारत कहा गाउँ एक भारत । अहे निग्रंड-वाग्रंड व्यास । মুমের কেন্দুহইতে আইলে ভাহার স্বাভাবিক গতি দক্ষি-ণাভিমুথ, ও যে প্রবাহ কুমেল-কেন্দ্রইন্ডে আইনে ভাচরে গতি উত্তরাভিমূশ; কিন্তু প্রত্যক্ষ ভাষা প্রতীত হয় না; তদনাধায় ঐ বায়ু ইশান কোণ ও অমি কোণছউতে আসিয়া থাকে; তাহার কারণ এই, পৃথিবী নিয়ত পুর্ব্ধাভিদ্ধে অভান্ত-ভয়ানত-বেগে প্রতি-ছণ্টায় এক মহসু-জ্যোতিষী-জোশ-ব্যাপ্ত স্থান ভূমণ করে; বায়ু অপ-ৰ্যাপ্ত কড় হুইলেও এক ঘণ্টায় শত বা এক শত পঁটিশ কোশের অধিক স্থান ভুমণ করিতে পারে না; অভএব উন্তর বা দক্ষিণ দিণ্ছইতে কড় আদিলেও পৃথিবীসমূত্ৰে ভাছার গতি ঋজু থাকিতে পারে না, এবং নিরক্ষ-বৃত্তের নিক্টছ মনুষাকে নৈট কড় ইশান বা আঘি কোণহইতে আগত বোধ হয়। পুরেলিক নিয়ত-বাষুর বেগ কড়ের বেগছউতে ভানেক লমু; সুত্রাণ তাহা ঈশান ও অমি কোণাগত হইয়া থাকে। এই বায়ুতে জাহাজ গমনাগমনের বিশেষ সাহায্য হয় বলিয়া নাবিকেরা ইহাকে "বাণিজ্ঞা-बायु-" नत्य करर।

সূর্য্যোত্তাপে কল অপেক্রায় স্থল অধিক উত্তও হয়, অতএব পৃথিবীর যে অংশে অধিক বুল আছে ভাহ। জলাধিকা অ°শহইতে অধিক **উ**ফা থাকে। **দিভীর**-প্রকরণে উক্ত হইয়াছে নিরক্ত-বৃত্তের দক্ষিণাপেক্ষায় উত্তর-দিগে অধিক স্থল আছে। এই প্রযুক্ত নিরক্ত-বৃত্তস্থ হান অত্যন্ত উফ না হইয়া তাহার সাত **অংশ উত্ত**-রে, অভান্ত উফতা প্রভাক্ষ হয়। এই স্থানের উভয় পার্খে প্রারঃ পাঁচ অংশ স্থানের বায়ু উভপ্ত হইরা खेर्चनमन करत, अव॰ जे **ब्रा**स् शूर्वनार्श शूर्व्याक वान ণিল্য-বারু প্রবাহিত হয়; কিন্তু পৃথিনীর গতিতে ভাছার পতির বক্তা ঘটিয়া, ঐ স্থানে তাহা প্রত্যক হয় না। নিরক বৃত্তের উপরে দাশ অংশহইতে ২৫ অংশ প্র র্ঘান্ত পৃথ্যার উত্তর-ভাগের বাণিক্স-বার্ প্রবাত হয়; 🦸 দক্ষিণ-ভাগের বাণিজ্য-বারু নিরক্ষ-বৃত্তের ক্রব্রের বিভার অংশহইতে দক্ষিণে ২৩ অংশ পর্যান্ত কালে প্রয়ান रत्र। यह पूरे वात्-प्रस्तान प्रधादि द्वारन वाद छई-शमन करत, किंद्र शृधिकोत् शक्तिकरहे चादा समस्तारम क्षानुष्ठ रह नाः सर्वना शाग्रः निर्मात स्वाः प्रशः प्रशः वर कारन जवाब वक बहेशा बाटक। और श्रमुक नावि- কহে ৷

পৃথিবীর সর্ভ্রত গদ্যাপি গ্রাময় হইত তাহা হইলে বাণিজ্য-বায়ুও সঞ্জ সমান বোধ হটত; কিছু ভুভাগের **উक्का ଓ भक्र**रहत २०४१ श्रुयुक्त **होता** छुड़ार्स समुद्रु ভারত-সমুদ্রের উত্তর, পশ্চিম ও পুর্বভাগ ভ্মিদার। বেকিড, বিশেষতঃ মহাপ্রাচীরস্বরূপ হিমালয়পর্কতে তাহার অধিকাণ্য আরুত; উত্তরভাগের বাণিল্য-বায় ঐ প্রাচীর শন্তুন করিয়া আদিতে পারে না: সুতরাপ ভারত-সমূদ্রে ঐ বাণিছারানূর প্রচার নাই; তথার তৎপরিবর্তে অপর একপ্রকার বায়ু বঙ্গিয়া থাকে; ভাষা প্রথম ছয় মানু अधिरकागहरूप ७ अभव इत्र मान वात्रकानहरूप अ বাত হয় বলিয়। "মৌসুমি বায়ু" নামে খ্যাত। কার্তিক ভাৰ্ষি চৈত্ৰ-পৰ্য্যন্ত "আঘেন্ত-ৰামূ" ও বৈশাৰ অব্ধি আখিন পৰ্যায় "বায়বা বায়ু " বহিয়া থাকে। সমূদ্রে এই বাষু অনুভূত হ্ণীবাৰ পূর্বেট্ ইহার ভূভাণে প্রচার भयः अर्थे अपूक्त कारभग्न (श्रीमृत्र जातम् **व्हेवात जानक** भृत्य कान्यन-भारमहे जामता भनशानिन महाश कतिया ্ণি প্রামাক মৌসুম আরম্ভ হুইবার সময় বিপক্ষাগত বায়ুপ্রবাহের ৮ চননে প্রায়ঃ অভান্ত অভ বৃত্তি ভূফান ৯টবা থাকে: নির্গু-রু**ভের দ্কি**ণে দশ অপশ পার্যান্ত भोग्नि-रावृ गाँउकाल वायुरकापश्हेर**उ उ शीरक् धरि**-কোণকীকে প্রয়ত কয়।

উত্তৰ-বাণিজ্য-বাংব হৈ মণ্ডল নিৰ্দিষ্ট হটল তাহার-ি সিধ্যুপ্ৰদেশ নিজ্ঞ চাইতে প্ৰবাহ হয়, এ প্ৰযুক্ত আৰুতা তাবং খুনে "নৈকত বায়ুর মঞ্ল"; ও দক্ষিণ-বাণিজ্ঞা-বায়ু-মণ্ডলের দক্ষিনে বায়ু লক্ষদা বায়ুকোণেছইতে প্র-वीत केत विविद्या "वीयका-वार्युक अक्षत " नाट्स विश्वास्त्र।

বাদ্দরন্ধে যাহা উক্ত হইল তাহা বাষ্ক সাধারণ নিয়া ্বৰৰ মহাৰদ্ধে ইছা প্ৰতাক হয়; পৰ্জত, মঞ্-क्मि दन, छेलठाका, नगड़ामिड वाशा वा माहारण हान-ল ১৯৪ টছার **অনেক অনাথা চট্টা থাকে; কিছ** া ছলে ভাহার বর্ণন লেখা বারালা। আরেব দেশের সিমুম নামক প্রাণ-সম্ভাতক উত্তপ্ত বায়ুর বিবরণ বিবি**ধার্থের** विकोश भरत छैक रहेशारण; वे तभ वाशू वाताल वानू-কামর মক্ত ভূমিতেও উৎপদ্ধ ভ্রায়। প্রাকে।

ৰমূৰুতটে দিবাভাগে বায়ু নিয়ত ৰমূদুৰ্টতে ভূমা**ভি**-

কের। ইহাকে "নিজাড ও অবির-বায়ু-মওল" পবে । মুথে ও রাত্তিতে ভূমিছইতে সমুদ্রাতিমূথে বহিরা থাকে। **बर्ड श्रक्तरपत्र अ शर्याष्ठ योशात्रा मरनारयागशूर्वक** পাঠ করিয়াছেন তাঁহারা এই ঘটনার কারণ অনা-য়ালে বুৰিতে পারিবেন। দূর্য্যোদয় অবধি জল অলৈ-কার ভূমি শীঘু উরপ্ত হইতে থাকে, সুতরা ভূমির হয় না, কেবল ম্থানমৃদ্রের গতে তাহার প্রচার আছে। বায়ু তপ্ত হইয়া উর্ছে উটতে থাকে; ও সমুদ্রের বারু আকর্ষণ করিয়া ভূভাগে আনয়ন করে। ব্রন্থনীতে জল অপেকার ভূমি শাষু শীতদ হয়, তথা দিবসের বিপরীভে রাত্রিতে ভ্তাবের বায়ু সমুদ্রাভিমুখে যাইতে থাকে। এই বালু প্রবাহময়ের নাম "সমুদ্রালু" ও "ভূমিবারু"। ইহা কেবল সমূদুভট সন্নিকটেই অনুভূত হয়।

> যে কারণ প্রযুক্ত কোন কুল পদার্জোপরি লোটা-यांठ कृतिरल वे लाके कृत शर्नार्वहरू প্रजावर्जन करत, वावृत महे काइएगड़ स्थीन; अडे श्रवृक्त वावृ-প্রবাহ পর্যন্ত বা প্রাচীরাদি কোন পদার্থে আহত হইলে मार्थ भाग विकास करा करा का ती है। किरा ভুমণ করিতে খাকে তাহাংইতে অন্য দিগে যায়। বিপ-ক্ষাভিনুধ দুই বাষ্পুবাহ পরবুর আছত হইলেও এই घरेना महत्व, अन् जाहात्त श्राग्रः शृनिवासुत्र छेरशास्त्र করে। কোন এক স্থান হচাৎ ৰাষ্-শূনা ছইলে ডৎ-স্থান-পুরণার্পে চতুর্নিগছইতে যে বায়ু ধাবমান হয়, তা-হাতেও খুনিবায়ু উৎপন্ন হয়। মূনিবায়্র উৎপাদনাপে আকাশমণ্ডলে বিদ্যুৎসম্বন্ধীয় অন্যান্য করেণও থাকিতে পারে; কিন্তু তাহা অদ্যাপি উভাবিত হয় নাই। এই ঘূর্নি बाग्नु बाज्ञु शतिनत रुप्तिमा "धुनिधान" बाप्न विश्वां एष्ट्रा "কুটে '' বা "ভূত'' নামেও ইহা প্ৰসিদ্ধ আছে। এতকেশীয় नामाना (नाटक हेरा ब्रून कविटन भविषय-वज-शतिवर्जनव বিধি দিয়া থাকে। সে যাহা হউক জলে যে প্রকারে আবি-खंत वा कलकू ह अस्य, वाशूरा लागे ज्ञारण चूर्निवासू जाना। প্রবশবায়-সঞ্লন-সময়ে অনাতৃত স্থানে ধূলিরাশি ও উদ্ধ भक्षामि महेशः मुद्राकात्त्र आकात्म **प्रेशान कतित्व अहै** বায়ুকে অনেকে (দনিয়াছেন। গ্রীক্সকালে পঞ্চাব-বেশে वर अकारत धृणियए आतः अठार वहेता शास्त्र।

अहे चूर्निवाय चूर्नन कड़िल्ड र क्रमालि खेल्ड कमालि वा অগ্রে গমন করে। ইতার পূর্বশ্রেরজের। পরিবর অধিক र्देश्य शाहर वर्श-शन्दे महत्वः, अद्या क्यांडा कर्नक विवाहकतर बहैमाल बहिन बाटक। श्रहात देवबक अक्स विवासितान, अक व्यञ्जात्त्वन विवात अक क्षेत्रकर ক্ষেত্র-প্রদারিত-কতকগুলি বন্ধ লইয়া নহনুষিক হন্তাতরে নিক্ষেপ করে। বিলাতে ক্রয়তন্ নামক স্থান
এই বাযুকর্তৃক একদা এক হান্যজনক ব্যাপার ঘটয়াছিল; তথায় এক বিস্তীন্ ক্ষেত্রে এক জন রজক
অনেক বন্ধ শ্রম্থ-করিবার নিমিত্তে প্রদারিত করিয়া দিয়াছিল, এমত সময়ে এক খুনিকায়ু আসিয়া ঐ সমস্ভ বন্ধ
উল্লোলন করত ক্ষেত্র-নিকটম্ এক গিরিজার চূড়ায়
বেনিত করিয়া দিলেক।

সামান্যতঃ এই বায়ুর বেগ অত্যন্ত গরিষ্ঠ বােধ হয় না; পরন্ত ইহার ক্ষমতা কোনমতে সামান্য নহে। পশ্চিম ইপ্রিদ্ধ দেশে এই বায়ু একং সময়ে এমত ভয়ানক হয়, মে তাহার মনন করিতে হইলেও শরীরে লোনাঞ্চ হইয়া উচে। কথিত আছে, যে এই বায়ু নগরোপরি দিয়া ভুমণ-করিবার সময়ে যে দিগ্ দিয়া প্রনাত হয়, সেই সারীর সমস্ত ইউকে কাঠাদি নির্মিত অউলিকা সমূলে উৎপাটন করিয়া শতাধিক হস্ত প্রশন্ত ও বলাকাশ দার্ঘ সমভূম এক বল্ম নির্মাণ করিয়া দিয়া যায়। এই আধ্যান-শ্রবণানন্তর ঘূর্ণবায়ু-কর্তৃক পুরু-রিগার ঘট-উৎপাটন-বিষয়ক এতদ্দেশে যে গল্প প্রচার আছে ভাহা নিজান্ত অসম্ভব বােধ হয় না। এই বায়ু-সহকারে বয়ুজা-দাপে দুর্গের বপ্রহইতে অনেকবার প্র-কাণ্ড ২ কামান উড়িয়া গিয়াছে।

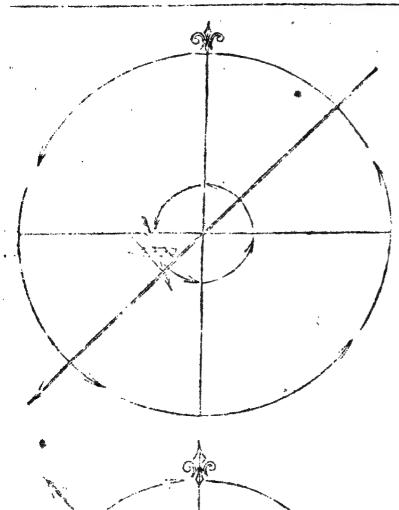
বাদালা ১১৪৪ অবদ এই প্রকার ঘূর্নিবায়ু ধাপা ধেলিয়াঘাটাইউতে আরম্ভ ইয়া দক্ষিণ-দেশস্থ বেণিয়া-পুকুর পর্যন্ত প্রায়ঃ আট কোশ পথ প্রস্কে অর্ধ-পোয়ার মধ্যে ঘর দার রক্ষ প্রভৃতি যে কোন বস্তু ছিল, তৎতাবতের নমূলে উন্মূলন ও ধ্বং-স করিয়াছিল। অংকর্তৃক প্রিন্সেপ্ নাহেকের লবণের কুটিইউতে কয়েকটা বিংশতাধিক মন ভারি লৌহ-কটাই উড়িয়া গিয়াছিল, এবং ইউক নির্মিত প্রকাপ্ত স্তুয়া ভ্রমা দুই তিন শত স্ভাবধি দুরে নিক্ষিপ্ত হইয়াছিল।

এই ঘূর্ণিবায়র মণ্ডল শতাধিক-ক্রোশ পরিসরবান হই—লে প্রকৃত "কড়" নামে বিখ্যাত হয়; কলতঃ কড় মা-ক্রেই ঘূর্ণিবায়, কদাপি কোন কড় তীরের ন্যায় অজু তাবে এক দিয়ে গমন করে না; সকলেই ঘূর্ণন করিতে ২ অগ্র-সর হয়; তৎসময়ে যে কিছু পদার্থ তল্পথ্যে পড়ে তাহারও গতি ঐ কড়ের নায় ঘটে। মূর্ণনের মঞ্জু ভারে বড় হইতে পারে; কিছু সকল কড়ের মূল্যকি ঐ

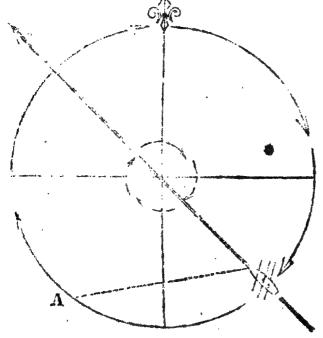
প্রকার হয়। এই প্রযুক্ত ইহার ধর্মজ্ঞাপক নাম রা-থিতে হইলে ইহাকে "বাভাৰত্ত" বলা যাইতে পায়ে। शांठकवृत्मत प्रांत चा**ल छेपत्र**ं रहेर्ड शांत, ता अहे **अफ़ অद्विराप्त (य मिर्स्स हैक्ट्र) रनहें मिर्स्स इहें एक शा**रहें, কিন্তু ভাহা ভুম মাত্র; চন্দু-নূর্বোর গতি যে প্রকার ब्रिज निराम निकास रहा, वाएउ मारे श्राकात वार्यक्षनीह निह-মের অধীন; কদাপি ভাহার অন্যথা হয় না। নিরক্ত্র-ৰের উত্তরের তাবৎ কড় পূর্বহেইতে উত্তর ও পশ্চিম দিয়া মূর্ণন করিতে ২ উত্তরাভিম্থে অগুসর হয়, ও নিরক্ষ-ৰুম্বের দক্ষিণে যে সকল কড় হয় তাহা পশ্চিমহইতে উত্তর ও পূর্মে দিয়া ঘূর্ণন করিতে ২ দক্ষিণে প্রস্থান করত; কোন ২ অড় এই প্রকারে কিন্দুর অগুনানন করত মণ্ডলা-কারে প্রত্যাবর্ত্তন করে; কিন্তু এ প্রগান্ত যত কড় দৃষ্ট হইয়াছে, তাহার কোনটায় ইহার অনামত অনুভূত হয় নাই। অপর পৃতে যে চিত্রদর মৃদ্রিত হইল, তাহাতে এই গতির বিষয় ব্লষ্ট বোগ হইবেক। শর-সকলের অগুভাগ যে দিনে ৰায়ুর গতি দেই দিনে কল্পিত হইয়াছে।

এই নিয়ম জ্ঞাত থাকিলে নাবিকদিণের পক্ষে অত্যন্ত উপকার দর্শে; তদ্মারা তাহারা অনায়ানে বৃত্তইতে পলায়ন করত পোত ও আদ্ম-রক্ষা করিতে পারে। অনেক নাবিক এই বিদ্যার লাহায়ো কড়ে জলমথ না হইয়া বহুদিবল-নাধ্য পথ অতি অল্প দিনের মধ্যে ভুমণ করিয়াছেন। অবিতর্কেরা অনায়ানেই কহিরা থাকে, বাড় কি প্রকারে ভুমণ করে তাহার জ্ঞানে কল কি? কিন্তু বড়ের সমরে সমূদ্র-মধ্যে তাহারা পোতর্ থাকিলে এ প্রশ্নের সমূদ্র বাণিভ্যার্থে ন্যুনাধিক ২০,০০০ জাহাজ দিবারাত্রি সমূদ্রে-ভুমণ করিতেছে; ভাহার প্রভাকে গড়ে ৫০ জন মনুষ্যা আহি; যে বিদ্যায় তাহাদের রক্ষার উপায় চেক্টা করে তাহা যে মহোপকারি ও শিথিবার যোগ্য ভাহা পাঠ-কর্ষা অবশ্যই শ্বীকার করিবেন।

রথ চক্রের ঘূর্ণন-সময়ে তাহার পরিধি অত্যন্ত বেথে ঘূর্ণন করে, তজ্ঞপ ক্রতগতি তাহার নাজিতে দৃষ্ট হয় না; কণতঃ নাভির মধ্যভাগ ছির থাকে। বায়ুর ফুর্ণন-সময়ে তবিপরিত ঘটনা প্রভাক হয়; ক্রতমন্তলের পরিধি মে বেথে ঘূর্ণন করে, তাহার মধ্যভাগে তল-পেক্ষার গুরুতর বেগ বেখে হয়। এই প্রযুক্ত করের সমরে হানে অনুমধ্যের মধ্যভাগ আলিয়া উপাত্তিত



পৃথিবীর উত্তর এওছ ফড়ের গতি। বারু পূর্ব-इडेटर উखर ও পশ্চিম দিয়া वूर्गन कहिएडएছ।



প্ৰিবার एकिन খণ্ডছ কড়ের ঘটি। নার্ পশ্চিমহউতে উত্তর ও পুর্ব্ধ দিয়া বুর্ণন করিছেছে।

্রত তথার **ভরত্তর উ**পদূর ঘটে; তদনত্তর সভ্য**ওলে**র

বাভাবর্গের ব্যান নর্বার ন্যান হয় না। পশ্চিম-ইঞ্জিন্ শেষভাগ আইলে; श्रश्रप्त य मिन्द्रहेर्ड बाधू आहेरम श्राप्तरम नाम गठ क्यांनिः मकः गठ व्याक्रियी व्यान चारात विभवीत निग्रहेर्ट बाबू श्रवाच २०। 🖟 🔑 शार्व निवृत्ति रहेवार । क्रांबर नेपूर्व हार्व नेप् ব্যাস সর্ক্রা ঘটে। চীন সমূদ্রে এই র্যাস সন্ধার্ণ হইয়া। ১ শত বা ১॥০ শত কোশ হয়।

বাতাবর্ত্তের গতি বিবয়েও অদ্বিতা আছে। তাহা প্রতি ষটায় ৭ অবধি ৫০ জ্যোতিয়া ক্রোশ স্থান ভুমণ করিতে পারে।

বড় ভূড়ানে প্রবাহিত হইলে পর্বত বৃক্ষ বাটীপ্রাচারাদি ছারা অবরোদিত, নিপ্থে গত ও ত্বরায় নিস্তেকঃ
হয়; সমুদ্রে তজপে কোন বাধা না থাকাতে, অনায়াদে
বছ দ্ব পর্যায় ভূমণ করে; এবং তথায় আপেন ধর্মা
ও লক্ষণ উত্তনরূপে প্রচারিত করিয়া থাকে। এই প্রযুক্ত
বাড়ের পর্মা-নিজপণার্থে নাবিকেরা মাদৃশ অবকাশ প্রাপ্ত
হয়, ভ্লন্থ মনুনোর তাদৃশ সম্ববে না; অধিকন্ত এ
বিনরের পরিজ্ঞান নাবিকদিনের যাদৃশ প্রয়োজনীয় ছলছদিনের তাদৃশ নহে, সূতরাং উক্ত বিদ্যান্ধনে উভয়ে
সমোৎসাহদা না হওয়াতে উভরে তুলা পারদর্শী হইতে
পারে না। রেডফিল্ড, রাড, পিভিংটন্ এবং মরি
সাহেবেরা এ বিনয়ের প্রধান আচার্যা, ইহাদিনের পুর্বের্ব কেই বাতাবত্বের পর্ম নিক্রপণে কৃতকার্যা হরেন নাই।

শমুদ্রের যে ভাগ দিয়া বাভারর প্রবাহিত হয়, তথা-কার জল উথিত হট্টা অন্যত্রাপেকায় ২০/২৫/৫০ হাত কদাপি তদ্বিও বা তিন গুণ উচ্চ হট্টা কচের সহিত ভুমণ করে; এট উথিত বারির নাম "বাভারত্র-কলোল"। জাহাজের পক্ষে টহা অভান্ত অনিটকর। ৩০ দালের কড়ে অনেক জাহাজ এই কলোলে আরো-হণ করিয়া সমৃদু ভাগে করত গলা লাগর-দ্বাপের মধ্যন্ত্র বৃহ্ণাণ্ডে উপভিত হট্টাভিল।

ইহার চহুদ্নিগে যে তরসায়িত জলের সোতঃ উৎপন্ন হয়, তাহাকে "বাতাবর্ত্ত-সোতঃ" শব্দে কহি। নাবিক-দিগের পক্ষে তাহার স্বভাব জ্ঞাত থাকা অভান্ত আবশ্যক; পরস্তু এম্বলে তাহার বাহুলা বর্ণন করা অভিদক্ষেয় নহে।

ৰাভাবত্ত্ব সময়ে সূত্মতঃ মেঘ-গ্ৰন্থ বিদ্যুৎ-বিকাশ ও প্রাচুর বারিবর্ধণ হট্য়া থাকে, ইহাতে বোধ হয় বি-দ্যুতের সহিত বাভাবত্ত্বে কোন বিশেষ সমৃদ্ধ থাকিবে।

পৃথিবীর সর্বাতই বাতাকর্ত হইয়া থাকে; কিন্তু বঙ্গোপদাগর, মরিচ-ছাপের নিকটছ ভারত-সম্মু, চানসম্মু, এবং কারিবি-সম্মু ইহা যে প্রকার বেগবিশিষ্ট হয়, অনাত ভত্তেপ হয় না; এই প্রযুক্ত উক্ত কর ছানকে ছ্গোলবেছারা "বাতাবর্ত্ত মণ্ডল" নামে বিধান করেব।

যে খূর্নিবায়্তে ধূলিথকে উৎপন্ন হয়, তাহা সম্দুদু প্রবা-হিত হইলে উর্চ্ছে জলাকর্ষণ করত জল-মুদ্ধ উৎপন্ন করে। ১১৯ সঙ্গাক ভত্তবোধিনী পত্রিকার এতদিবয়ের একটি দুচারু পুদ্ধারু পুক্তিত আছে, পাচকদিগের দ্যোচরার্থে নিমেু মৃদ্ধিত কতিপয় পতিক তাহাহইতে উদ্ধৃত করিলাম।

"নমুদ্রের যে স্থানে জলসূত্য উৎপন্ন হয়, তাহার উপ"রিভাগে মেব থাকে। প্রথমে প্রবল ঘূর্ণিবায় উপস্থিত
"হট্রা তথাকার জল অত্যন্ত আন্দোলিত হয়, এবং
"দারি পাখের তরঙ্গ সমুদায় সেই স্থানের মন্য ভাগে
"ক্ষাত বেগে আগমন করিতে থাকে। প্রভাত জল ও
"জলীয় বাল্ল অনিলয়ে রাশীকৃত হইয়া উঠে, এবং
"বাল্লময় একটা ভাগাকার দ্রম্ম উৎপন্ন হট্যা উন্নিকে
"উথিত হয়, এবং মেঘ হট্তেও ঐ রপ্তার একটা
"উপ্ত অবতীর্ন ইট্যা তাহার সহিত সংযুক্ত হয়। বে
"হানে উভয় ভাগের সংগোগ হয়, সে স্থানের বিস্তার
"২।০ ক্ট মাত্র। শ্রণ ক্রাগিয়াছে যথকালে জলস্ক্য
"উৎপন্ন হয়, তথন এক প্রকার গ্রার শব্দ শ্রুত হইতে
"থাকে।

"नतन जनमू ममान मीयं नरहः अक अकडातु रेम्छा ''ন্যুনাধিক ১৭৫০ হাত পর্যান্ত হইয়া থাকে 🖰 উহার "পার্টেশ যেমন ছোরাল দেখার, মব্যভাগ সেরপ নছে। " ইংতে বোধ হয়, উহ। শ্না-গর্ত্ত অর্থাৎ ফাঁপা। (এই " সৃষ্ট) সতত এক স্থানেই স্থির খাকে এমত নহে; যে দিকে " বারু বহে, বেই নিকে চলিয়া যায়; কিন্তু বায়ু না বহিলেও "ইতসূতঃ চলিতে দেখা যায়। **সতত এরপ ঘটনাও ঘটিয়া** "খাকে, যে উর্জ ও অধোভাগের বেন সমান না থাকাতে, "ক্রেম ক্রম খেলিয়া পড়ে এবং ছিল্ল ভিন্ন ইইয়া যায় া "তাহাতে যে বাল রাশি থাকে, তাহা বিক্ষিপ্ত হইয়া "বাবুর দহিত মিলিত হয়, অথবা দিম্দুর উপর বৃষ্টি " হইরা পড়ে। ছলমুম্ব কভদণ খাকে ভাইণর নিশ্চয় "নাই। কোন কোন ট। উৎপন্ন হইবার অবাবহিত "পরকণেই অন্তহিত হয়, কোন কোন টা প্রায়ঃ এক ঘণ্টা "कान भर्यात नके इस ना। आवात क्लान कान है। "উৎপন্ন হইয়া কিঞ্ছিংকাল দৃষ্টিগোচর থাকে, পারে " আপনিই ডিরোহিত হয়, এবং পুনর্মার আবির্ভ হয়। "এইরপ তাহার বারম্বার আবিভাব ও তিরোভার দে-" থিতে পাওয়া যায়।

#### উৎकल (म्रामात्र विवत्र।।

※※※※※ ह (म्हार्य मिक्स डिंदकन मामक वक कुला ननो. अवर शूर्व नमृषु अवर सञ्चल। उथा-कात वायु अभक करवा (य श्रायः जल्मवानी माख्य क्ष. भून, ও कम्भद्धाः त्र साधः कान না কোন রোগে আক্রান্ত থাটে। ইহার পশ্চি-ফা<sup>ক্</sup>শ পর্যতে বেপ্তিত; কেবল মধ্যন্ত মোগল বন্দি নামক দেশ জনাকীণঃ উৎকল দেশের ভূমি কুত্রাপি বালুকাময়; এবং কোন ২ স্থানে। রাচ্ দেশের ন্যায় এক প্রকার হ্রিদ্যুভ কঠিন मृक्तिका विभिष्ठे। अञ्चातनत প্रखतवाता य एचा-জন পাত্র দকল প্রস্তুত হয়, তাহা সাধারণ লো-কের সুবিদিত আছে: এক প্রকার প্রস্তর-**र**हेट <sup>©</sup> (नोह उंद**नम हहे** श्रा थारक। तोह वाजी उ অন্য কোন খাতু উৎকল দেশে জন্মে না; লোক প্রবাদ আছে যে পূর্বে সুবর্ণরেখা নদীতে বালুকা-বং সুন্ধলি প্ৰাপ্ত হুইত। যদিও এখানে অনেকা- निव निव निव निव है। ज्यानि स नकन সর্বদাই প্রায় পরিশুক থাকে; তত্ত্বত্ কভিপর প্রধানা ২ নদার নাম এই :- সুবর্বেথা, বৈতর্গী, ব্ৰাহ্মণী, ৰজানদী, কুশভদু, দয়া, ভাগাৰী, চি-खारशन, काँगवींम, काँगाहै।

বঙ্গদেশ-সাধারণ নানাবিধ শান্য এথানে উৎপান হয় বটে, কিন্তু উর্বরতা বিষয়ে ইহা কদাপি বঞ্জ-দেশের তুলা নহে। এখানকার ইতর জন্তু সকলও বহু দেশের সদৃশ; কেবল কুচিলাথারী নামক একটি বিশেষ পাক্ষর বিষয় শারণ হইতেছে; এই পাক্ষির ভাব প্রায় বাজ পাক্ষির নাার; কেবল ইহার চঞ্ছয় সরল। উৎ- কলেরা কহে যে কুচিলাখারীর মাংস আছার করিলে বাতরোগের শান্তি হয়। প্রভাবলেথক কর্তৃক ইছার মাংস অভাবহাত হইরাছে; কিন্তু ভাহা কোন মতে সুখাদু বোধ হয় মাই।

উড়িলা দেলের মধ্যে তিনটি প্রধান নগর
আছে; বালেশর, কটক, এবং জগলাপ পুরী।
বালেশর কলিকাভাহইতে প্রায় १० জোলা অন্তর:
তথায় ৮।২ সহসু মনুষ্য বসতি করে। তত্ততা
বিণিকেরা বদেশ নির্মিত অন্বপোত সহকারে
কলিকাভায় বাণিজা করিয়া থাকে। নৈকটাপ্রসুক্ত
পূর্বে এই স্থান ইউরোপায়িদিগের প্রসিদ্ধ বাবিজ্ঞা ব্রুক্তিশ্রেণ এত নিকট, যে পর্বভোৎপর
দাবানল অনেকবার প্রস্তাবলেশক কর্ক দৃষ্ট
হইয়াছে, সমুদুও তথাহইতে কিছু অন্তর নহে;
সুতরাং বাঙ্গালিদের পক্ষে বালেশর অস্বাস্থাকর
স্থান বলা যায়না।

रात्वधन्नहरें करें द्वां १२ काम मून;
हें श्रिं उिष्णात नाक्षानी हिन। करें किन्न
छें छ भार्च निमाञ्क, मध्यात प्रखन निविश्व कामक भृताकन क्षातिका मृद्ध ह्य। करेंकिन क्ष्मान गृह मध्या नृताधिक २,००० वरः
काक मध्या प्राप्त १०,०००। वश्यास नात्वाणी
नामक किन प्राणीन पूर्व कारणः छांश काम
हिन्मू नाक्षा कर्क निर्मिष्ठ हरें सहिन। सूमनमाम
नाक्षापत हिरूबन्ध कमस्तमून नामक कर्षि
वाणी मृष्ट हमः छांश किन मूनमा छेंगात्मा
सथा वर्खाः छथान नवाव मूना छेंगात्मा
सक्षा वर्खाः छथान नवाव मूना छेंगात्मा
सहस्म छकी थीन ममान कारणः

জগন্নাথ পুরী বা পুক্ষোন্তমক্ষেত্র কলিকাতা-হইতে প্রায় ১৫৫ ক্রোশ পথ অন্তর। তথাকার গৃহ বঙ্গা ন্যুনাধিক ৫৯৫ বাস্ত ভূবি মারেই নিক্ষর; কারণ নিবাসী মাত্রেই জগরাথ দেবের কোন না কোন প্রকার সেবক। এখনে অনেক মঠ ও সরোবর দৃষ্ট হয়; সরোবরের মধ্যে চন্দন, ইন্দুদ্যুম, এবং মার্কপ্রেমর প্রভৃতি কতিপরই অতি প্রসিদ্ধ; কিন্তু যাত্রাগণের পুনঃ পুনঃ সানা-দিঘারা তত্তাবতের জল অতি কদর্য্য হইয়া গিয়াছে। পূর্বে ক্ষেত্রে গমন করা কউজনক ছিল; কিন্তু ১৭০২ শকে কলিকাতান্থ রাজা সুথময় রায় বল্ম নির্মাণার্থ ১,৫০,০০০ টাকা প্রদান করিয়া সেই দৃঃখ দূর করিয়াছেন।

উপরোক্ত তিনটি প্রধান নগর ব্যতীত উড়ি-ব্যাদেশে যাজপুর, নোরো, ভদুক, কন্দ্রাপাড়ী শ্রভৃতি • কতিপয় বৃহদ্ গুমি আছে।

উৎকল দেশে জাতিভেদ্ বন্ধ দেশের ন্যায়। কেবল কণ্ডু, পাইন, গোখা প্রভৃতি নূতন নাম ধারী কতিপয় নীচ বর্ণ মাত্র অতিরিক্ত। তথাকার খণ্ডাইতের। আপনাদিগকে ক্ষত্রিয় সন্তান বলিয়া পরিচয় দেয়। হলিয়া-ব্যাক্ষণেরা ব্যাক্ষণের অবশ্য কন্তব্য কর্ম পরিত্যাগ করিয়া কৃষি কার্য্য অব-লম্বন করিয়াছে।

এই দেশে সর্বপ্তদ্ধ প্রায় ১২,৯৬,৩০০ লোক বসতি করে। তালাদের চরিত্র আপাততঃ এক প্র-কার বিদিতই আছে। তালারা নির্বীর্য্য, বৃদ্ধিলীন, এবং ধৃতঃ স্বদেশে কোন বিশ্বস্ত উচ্চ পদ পায় না, ভিন্ন দেশীয় লোকদিগ ভারাই সেই সকল পদ গৃথীত হয়। হিন্দুদের মধ্যে এমত অপরিকৃত জাতি অতি অপ্সই দেখা যায়; তালাদের গৃহ মধ্যে এক অসহ্য ন্যকারজনক দুর্গন্ধ স্বভাবতই উৎপন্ন হয়। তথাকার জালো- কেরা কি কাপ বিকাপ অলফার প্রিয় তাহা বক্ষ্যমাণ আখ্যান দ্বারা প্রতীত হইতেছে।

কোন আত্মীয়ের মুখে শুনিয়াছি, তিনি একদা কোন প্রয়োজনানুরোধে কন্দ্রাপাড়ী গুন্নে এক উড়িয়ার আলয়ে কিয়দিবস অবস্থিতি করিয়া-ছিলেন; এক দিন অন্তঃপুর মধ্যে জন্দন ধ্নি আকর্ণন পূর্বক জিজ্ঞানিয়া প্রতীত হইলেন যে তাছাদের দুইটা বধু আছে; তল্মধ্যে কনিষ্ঠা ৭ দের পরিমিত পিত্তল নির্মিত হস্তাভরণ প্রাপ্ত হই-য়াছে, জ্যেষ্ঠার ভাগ্যে এক পোয়া নুগ্ন হইবাতে সে অভিমান প্রকাশ করিতেছে। ৫।৬ মাস পরে পুনর্বার তথায় আনিয়া তিনি তথনও সেই জ্যেষ্ঠা বধুকে ভল্লিমিত রোদন করিতে শুনিয়া-ছিলেন। এই গণ্পা অবিশাস করিবার কোন কারণ দেখিনা।

তিৎকল ভাষা ও বন্মালা সংকৃত হইতে উৎপান্ধ; কিন্তু বাঙ্গলার নারে ভাহাতে অদ্যে বতার
শব্দ পাওয়া ষায়। উৎকলদের উচ্চারণ বাঙ্গিয়া
লেথনা সহকারে লিখিয়া থাকে: সূতরাং আকর
সকলের সর্বাবয়বই সমানকাপে সূজ্য হয়। এই
ভাষায় কাওহাকবিরা এবং কতিপায় বংশাবলী
পুত্তক বাতীত দেশমূলক গুদ্ধ অতি অলপই
আছে। গলাভক্তিতরজিনী প্রভৃতি কতকগুলীন
পুত্তক সংকৃতহইতে অনুবাধিত হইয়াছে।

উৎকলের বিবরণ আমরা এই স্থলেই শেষ করিতেছি। সময়ান্তর এই দেশের ইতিহাস ও তীর্থ স্থান সকলের বর্ণনা করিতে ফুতু করা যা-ইতে পারে।

<sup>\*</sup> পুরীর নিকট সভাবাদী নামে একটি গুমে আছে; তাতা ভারতবর্ষের মানচিত্রে জনবধানতা প্রসূক্ত সাত্রাড়ী নামে লি-থিত ভ্রতাছে।



#### काउना घरमा।

গ্রন্থ বিচারার্থে ভোজন-সময়-ব্যহীত কদালি ম-(बारयात्र नः कतारक कवियरम् चक्क काहि: मुख्याः शरत य ठिख सूम्रिक इडेल, डाहात काडला-धृड-कत्रवार्थ कुँड़ा ও बाइका डेखस, कि विनर्भार्थ श्रेष्ठाव वाङ्ग्र करा का का स्थि-जाजा, कि भाग भिन्न, कि समाद हा छ। 😘 🔆 মতে বিবেচনা শিদ্ধ নছে। কাতলা শেরঃ, ও সক দুখে কেঁচো, কি পিঠালি, কি খুডাক্ত मध्या क ना कारमन? जाहात वृह्द मखक, मयुपात छात्र वाणि जिल्ला कि निर्माण किताल স্বাদ্দেহ, কুড়া প্রিয়তা, তড়াগ-নিমে নি- কান্ত থাকিতে হইল। কেহং কহিতে পারেল, वार्त द्वा के कार्म विषय चावान-वृक्षविष्ठा "करव के इवि मृत्रिक कतिवात चावनाक कि "? मकराबड़े विभिन्न चार्छ, चार्ज्य जमार्थात् उंशिमिशक अहे शक्ति माम चात्र कताहरतह छम्-काल-एक्श व्यवभारे व्यक्षंत्र चीकांत्र कतिएक खत इकेटन। विविधार्यक्र शाठेक-मधनी-मर्ध्य किंद्रा-क्हेर्द ; विस्मिष वह शांक्रिमाञ्च कामता अनियाहि- थीं कात्तरक कारहन, वाहामिरगत मरसाय कता का লাম, "এক যতির এক দিকে চার ও অপর অংশতে তানিষ্ট নহে। অপর উপরে-মৃদ্তিকাত-मिरक अक भागल " अहे विलिया कान भाषिक मर- लाइ (कवी-महामारम्हा विविधारणी मूला विरम्धना मायादित नक्न कतियात्कन, बर्ने उपविध मर्मा- कतित्व खानिए भातित्वन, श्रक्तावि क विद्याद नि-খৃত-করণভিপ্রায়ে ভূমেও আমরা তড়াগের নিক- মিত্ত তাহাদের নিকি পরবার অধিক বার ক্রীক্র छेवर्डी ६ वह नाहे, ६ ताहित काठनात स्थान ७ मा; अ मूरमा कि के कि कि स्थार्थ इरेटबर्ड हैं

# কায়িক-সৌন্দর্য্য-বিষয়ে জাতিভেদে মত-ভেদ।

🐉 🎎 🎎 वीन यो वन। जनना हाई सोन्म र्या ह ्रिं (मुंशाधात, अहे कथा विनात विश्व 🖺 হয় পাঠকবৃন্দের কেহই আমাদি-ক্রিক্তৃত্ত্ত্ত্ত্ব গের বিপক্ষ হইবেন না; অথচ তা-খাঁতে আমরা যে নিতাস্ত বিপক্ষ্টান থাকিব এমত নতে। উত্তরামরিকা-থণ্ডের প্রাচীন জাতি-विरम्दार ममात्थ अ कथा विलाल भनाराम हूरि-কাষাত পাইবার পূর্ণ সম্ভাবনা আছে; সুতরাং ষে ছলে আবার-বিষয়ে এতাদৃশ সৃষ্কট, সে ভলে और-अजारकत नम्रत्य वामान्तित मर-अकारम स्वारमरकत निव विवासी हरेएक हेरेरन, रेहाएक কোন সন্দেহ নাই; অতএব আমরা এই প্রস্তাবে শকীয় অভিপ্রায় স্বায়-ব্যব্হারার্থে রাথিয়া যথা-वकाम किवल चार्नात गड मक्क्लन कतिव । वर्खकः 🌉 ব্রিষয়ে মীমাংসা করিবার আবেশ্যক নাই, পরের किथाय जानिता यर्थहै।

বদনের সাকৃতি জপ্তাকার হইলেই অনেক সভ্য সৈতির মনঃ প্রদন্ধ হয়, কিন্তু চীন-দেশীয়েরা তা-াকে 'ঘোড়ানুখী' কহিয়া থর্ব বদনের প্রশংশা রে, ও একিন জাতীয়েরা ঐ ভাবের বিস্তার মিন মাহলাকার-গোল-বদন-বিহীনাকে সুন্দ-মধ্যে গণ্য করে না।

द्वाहीन-शीन-एमोश महाकित होमत हैम्मुनीत कैन-नम्दर "न्याकिनी" मद्य होहात नग्रदनत कैन-मा कित्रप्राह्न; किन्न होन-कावाग्न छेन्न भारा चनुताम कित्रण हहेता त्याकिनीत পतिवदर्ज क्रिजाकिनी तिल्छ हम्न, नट्ह होम्दत्र किट्डत होनि हहेनात महातमा,—कात्र होन-एमोग्निन-लीत महन्य कुनु चिक्नहे विस्मव श्रमश्मनीय; स्व

ইন্দুধনুর্বৎ বা ভুমরাবলিবৎ ফুল যুগল-জ্র এতদেশে অনেকের চিত্তচকোর নংহরণ করি-রাছে, কিন্তু তিন-শত্ত-বৎসর-পূর্বে ইটালি-দেশে ভজপ জবিশিষ্টা কেহ লোকের সমাদরণীয়া হই-বার বাঞ্চা করিলে সোন্নাঘারা জ্র উৎপাটন করি-তে বাধ্যা হইতেন। তৎকালে প্রায়ঃ অদৃশ্য রে-থাবৎ সৃক্ষা জ্রই তথাকার মনোহারি ছিল।

शांकिन नःकृठ कित्रा "विश्वाष्ठ" ও "विक्र(माष्ठ" उथा "मूका-म्ख" ও "कून्य-म्रास्त्रत्र"
महिमा वर्गत गम्म्मिस इहेर्टिन; हेमानीस्त्रनीय विनामविक्रीमिरगत मिनि-मिस कुम्यन गक्षक निविद्यक्रिकांश अ मस दिल्ल काँहारम्ब मरन मोन्यार्थ्यत्र कि वर्गमांक हहेक? जावन-रमभीया मन्याद्या नोन्न अर्थां जावा हहेक? जावन-रमभीया मन्याद्या नोन्न अर्थां व्याप्ता मर्वमा ज्याद्य होनिया (नानाहेक कर्वनः) उथां वाद्या मस्त्र मर्यन क्रिक कृम्याद्या क्रिक श्राम्य-(मित्रा-बील-विहातिनीप्तित त्रीकि; अ याल्या-(मित्रा) विन-विहातिनीया जालन र मस मुक्य-मिस्रक क्रिक क्रिक क्रिका क्रिका।

\* कथिक चाट्स, य यथ्भद्धा नांति मुक्त दद्रान-

हार्बिनोडा प्रायक्ष नामार्विशेना (वाद इयः। जामा-मिर्गित **भूर्वभूक्रस्यत। स्था भा**तिमतः स्थक **एक्**त्र ন্যায় বক্র নাসিকার প্রিয় ছিলেন, কিয় এই ক্ষানে এ দেশে দে ভাবের ভাবুক দুস্পাপ্য।

কোন প্রকার ললাই অনেকের প্রিয় তাহা ন্তির করা কঠিন; গোল, চেপ্টা, উচ্চ, নিমু, বৃহৎ, শুৰু, প্রশান্ত, শুপ্রশান্ত, নকল প্রকার ললাটেরই অনুরাগী বর্মান আছে। মন্টেন্ বা**হেব লে**-থেন তাঁছার সময়ে কুনিস-দেশীয়া বনিতার। উচ্চ ললাটের প্রাপ্তার্থে শিরংগুরভোগের কেশ উৎপা-চন করিতেন: বিলাতেও এ প্রকার ললাট ফনে-কের প্রিয়: কিন্তু বন্ধ-দেশে " উচ্-কণালী শশক ক্ষত্যন্ত কট*িল মধ্যে গণ্য হইয়াছে*। মেক্সিকো-(मन्याप्त) विवासिनीहः नामादिव-टेडवापि-एगवन-ঘারা যাহাতে ললাটে জ্ব-পর্যান্ত কেশ জন্মে এমত চেটার নিম্নত তথপরা। অবাগি জাতীয়েরা र्इष-राभान-प्राधित निमिन्ड वानाकार्त मञ्ज দাবনকরত ললাট বিশ্তাকার বৃহৎ করে। মা-র্কিন-দেশের অপর এক জাতি চেপ্টা কলা-লের লোভে কুদু বালিকাদিগের মন্তকোপরি কা ফলক (তন্তা) বান্ধিয়া অভাষ্ট-সাধনের উদ্-वाश क्या

वाजात्मानिक क्ष-दूष्ठन व्यथूना कनिकाकात्र

 নাসিকা বিহানে বার্থ হয়, কিন্তু কাকরি প্রিয়, এবং পূর্বে কবিদিগেরও মনোহারী ছিল; জ্ঞারা এবন্সাকার বক্তাকে তিরক্ষার-ভাজন জ্ঞান কিন্তু পল্লাগ্রামের বেড়া-বিউমি ও পেটে-পাড়ন करतम। जाहारमञ् त्वारथ खडाविषक मानिका अनाशारम् आर्थिएक शतास कतिर शारत। अशत কদর্য উচ্চ, ভাষাকে দাবন করিয়া যত নিমু শুতুকান্তিমতীদিগের রক্ত, কটা, ও পিছল কেশের कहा यात्र, क उन्ने मोन्यरात वृष्ति नस्टरा এই साहाका इन्द्रेशन-थास्त नमस महाकविता श्रिम প্রযুক্ত, আমাদিগের ধাত্রীরা যে প্রয়তের নালিকা পূর্ণ-চিত্তে মুক্ত-কঠে গান করিয়া পাকেন। বে-টিপিয়া "টিকাল" করিতে চেষ্টা করে, ভাহারা ্কুয়ানা-জ্ঞারা কেশের সূক্ষ সূঁটি বানাইয়া মস্ত-ভদনুরূপ যতে ত্রাণেন্দ্রিয়ের উচ্চতার ভাস করি- কৈর চারি-দিগে দোলায়মান রাখে, এবং বোধ তে ভাগুছিত থাকে। নূতন জিলও ভাপের মনো- করে নায়কের মনোমোছনার্থে ঐ সুটি অব্যর্থ বুকারে। নাটালের অন্ধনারা মহিয-মেদাদিভারা দনত্ত-কেশের এক বৃহৎ পিশু বানাইয়া মন্তক অবৃত রাথে; ঐ পিণ্ড প্রস্তুত করা বহু কাল-नाधाः, किन्न अकरात श्रान्त व्हेल मृत्रा-भर्यान তাহার শোভার শেয হয় না।

মিলোছাপের যুবতারা স্তুল পদ উত্তম জ্ঞান करतम, ७ উৎসব-मित् मुन्मतीत वे विस्थय-लक्ष्य-প্রাপ্তির নিমিত্ত সাধ্যানুসারে যাক্ত মোজ। প্রাপ্ত हन, ७९ ममुन्य- खादा भाराचद्रन करतन । विलाख *ఆ दम्र-(मर्ट्स क्वांचे भर श्रमस्त्र, बदः वीम-रम्भी-*য়েরা সর্বাত্যসূত্তি এ বাক্যের প্রমাণ-সাধ-नार्थ जोमिशक भोगक-शामुका श्राप्तन कत्राहिता जाहारमत भारक भार इस **अब्दुर्शन अधिक मीर्च** हरेट (मशुना।

শরীরের অপর অঙ্গ-প্রত্যন্ত বিষয়েও এই প্রকার অনেক মত আছে, কিন্তু স্থানাভাব-প্রযুক্ত অধুনা তাহার আ**ন্দোলনে ক্লান্ত হইভে হইল।** 

অনুরাধাপুরের ইতিহাস।

अअअअअअ क्षेत्र क्षेत्र न्वाधाण्य शृह्काल नकाचीरणक का अधानी हिन। विकय-त्राक स्थकारन भि××× शरत (विक्रमाणिक) जरदरशरत्न ৮88 वर्षत्र शूर्द)

व्यनुताथ। नारम जनीय करेनक शायम कर्ज्क खे नगत । স্থাপিত হয়৷ মহাবংশে লিখিত আছে, যে তাহা প্রথমতঃ কদম্বা-নদী-ভারস্থ একটি পল্লাগ্রামমাত্র ছিল। এক-শত-বর্ষ-পূর্বে তাহার কিছুই প্রদিদ্ধি অন্তঃপাতি হয়। ছিল না। তৎপর পাণ্ডুকাভয় নামক এক ব/জি-দ্বারা তাহার সমৃদ্ধি হইয়াছিল। বিক্রমাদিত। রাজপাট ভাপন করেন। তিনি অনুরাধাপুরকে ভাগ চতুষ্টয়ে বিভক্ত করিয়া প্রত্যেক-ভাগে এক২ 📗 জন তত্ত্বাবধারক নিযুক্ত করিয়াছিলেন; তৎ-তর-দিগে এক পৃথক গুথম বাস করিত। অনু- মিত ভূমি ভাছার অন্তর্নতী ছিল। প্রতাতি কইতেছে।

যথাস্থানে নিহিত করিলেন।" এতদ্যারা থোব **इहेट उट्ट म उरकारन महा**विहात नगरतत विह-র্ভুত ছিল; কিন্তু উত্তর-কালে তাহা নগরের

वाखिवक, विक्रमानिष्ठात २०० वर्गत शूर्वक्षण ৩৫০ বৎসর পর পর্যন্ত, অনুরাধাপুরের অবস্থা चर्मत ७৮১ वर्मत शूर्व जिनि वे छात्न वक्कात विक উड्डून हिन। जारकानिक मह्जी मह्जी অউালিকার ভথাবশেষ-সকল দেখিলে বিস্ময়া-निष्ठ हरेट हरा। ले প्राচीन नगरतत श्राচीत, যাহা ১১৬ দংবংদরে গুথিত হয়, তাহার অবশিষ্ট কালে চপ্তাল জাতীয় ৫০০ ব্যক্তি পথপরিকারক, ! চিহ্নু দেখিয়া নগরের বিস্তৃত আয়তন প্রতীত २००० धहती, २०० भववाहक, ७ २०० भागानतकक हरेट शाता धाठोरतत शतिमान प्रशूर्किक নিযুক্ত ছিল; এই চপ্তালেরা নগরের পশ্চিমো-।৮ ক্রেশি; সূতরাং ১২৮ চতুর্যু ক্রোশ পরি-

রাধাপুর ঐ সময়ে যে প্রকার উন্নতি প্রাও: মহাসেন নামক এক অভিরচিত্ত রাজার সময়ে क्ट्याहिल, ठाका এই বিবরণ-ছারা বিলক্ষণ এই নগরের দৌভাগা-ভঞ্জের উপক্রম ছইল। তিনি বিজ্ঞাদিতে র তিনশত বর্ষেরও পরে -তিন্দ-নামক রাজার রাজত্ব কালে এই নগ- বর্ত্তমান ছিলেন। প্রথমতঃ বৌদ্ধ ধর্মের বিষ্ঠ্য রের সেষ্টিব সর্ভোভাবে বৃদ্ধি হয়; সংবৎ আর- মতানুগামা হইয়া তিনি অনেক বৃহৎ বৃহৎ আট্রা-জের ২৫১ বৎসর পূর্বে তিনি বুদ্ধদেবপ্রিয় পবি- লিকা ভগ করেন: কিন্তু উত্তরকালে তাঁছার মন্ত ত্র বটবৃক্ষ, গঙ্গাতীরহইতে লঙ্কাদ্বীপে আনয়ন পরিবর্ত্ত হইবাতে ভথা অউালিকা-সকল পুন-করিয়া অনুরাধাপুরের সমাপস্থ মহাবিহারে স্থা- বার নির্মাণ করিতে সচেষ্ট হইয়াছিলেন। সং-পিত করেন; তাহার প্রসঙ্গে অনুরাধাপুরের বং ষষ্ঠশতাব্দীতে ইহার সৌভাগ্যোমতির প্রতি किथिए विवत् विवृष्ठ আছে। देनः इल-शूत्रा- चात्र वाषाण किश्राहिल। अहे मगर्म चनू-বৃত্তবেতারা লেখেন, "যখন বঅ সকল ছায়াবৃত রাধাপুরস্থ রাজবংশের সহিত মলয়বার লোকদের হইল, তথন মহারাজা (ভিন্স) প্রণাম করিতে যুদ্ধ হইতে লাগিল; চতুর্বিংশতি-বর্ষ-পর্যান্ত করিতে উত্তর ছার দিয়া দেই পর্ম শোভাকর যুদ্ধ শেষ হয় লাই; ইহার মধ্যে প্রস্তাবিত নগর मगात প্रविष्ठ इरेलन। ७० णत नमाताइ-পूर्वक कथन ताकवः भात व्यक्षिन, कथन वा व्यक्तिमन-क्षिनचात्र मित्रा विक्षिण ब्हेशा महामारशा- कातिरात इख्याण क्रेण। हेशारण जाना य वि-क्ष्यारम প্रবেশ করিলেন; ও চারি জন বৌদ্ধ ভিন্ন হুইয়া বাইবে, তাহা কদাপি আক্রম बाहा छाबाह প्रकिष्ठा कहिरलमः अवः किमि या- नरह। ৮२৫ मःवदमद्भ हास्रवःरमङ्ग अक कारम फ्या क्य बाकक्याद्वत गर्ड वे वर्षेत्रक माथा विमुवाधार्यत्व राविकाश कद्वन। वाम्येयका

कोटि अक क्रम जिल्ह्स-प्रमोग्न ताका जाहात **পুনক্ষা**রাথে চেষ্টা করিয়া কৃতকার্য্য হরেন নাই।

অনুরাধাপুরে যে সকল পুরাতন অউালিকার ভগ্নাবনের পতিত আছে, তাহা দেখিয়া লঙ্কা-দ্বাপের প্রাচীন উন্নতাবস্থা কেহই অ্স্বাকার করি-তে পারেন না। থুকরময়া, লোবামহাপয়া, জৈত-वनहायदा প্রভৃতি প্রকাপ্ত হর্মা-সকল পথিকের মন-অবশ্যই আক্ষণ করে। বিক্রমাদিতে।র ২৫১ বংসর-পূর্বে তিম্স নৃপতি থুফরময়া অউা-লিকা নিৰ্মাণ করাইয়া ছিলেন: তথায় গৌত্ম (मरवह करे। छि (आधिक थाकिवाह अवाम আছে। তা**হার নিকটে যে** সফল চিত্রিত প্রস্তর-ময় ওল্প ও বৃষ ও সিংছের মূর্তি দৃষ্ট হয়, তাহার সংখ্যা করা কেশকর। কয়েকটি বন্ধ প্রকাশিত চ্ইয়াছে; পারি বা লণ্ডনের অতি প্রদারিত পথ ও ভাষার ত্লা হয় **কি না সন্দেহ। বোবামহাপর**। নামুঁ৷ বাটিকা অভি বৃহৎ; তাহা জতগামিন নাম্ভ রাজাকত্ক সংবৎমারক্রের ১৪ বৎসর-পূর্বে গুথিত হয়। এই বেশ্ম এক শত চতুরন্ হন্ত পরিমিত স্থানে স্থিত ছিল; ইহার উচ্চতা এক-শত-হত্ত; এবং ১১০০ প্রস্তরময় স্তন্ত ইছার মুলাধার। অটালিকার মধ্যস্থলে এক হ**স্তিদন্ত**-সুযোর ও অপর-ভাগে টোপ্য-নির্মিত চন্দ্রের এতিমূভি, এবং উভাভাগে মৃক্তা-থচিত অনেক মক্ষর মূত্রি ছার। অপূর্ব-মোভা সম্পাদিত ছিল। अहे क्रिकानिकानिकास सहायः मार्थ किथि व चारह, ठीन (मनोरा (वोक ठीर्थयादीस्मा शक्य) দারা তাকা সপ্রমাণ ক্ইয়াছে।

# ু পুশোভরাষ্টক।

প্রশৃ। আছাদ কি? উত্তর। জীবনের মধু, অলু-পাৰে ভাহা ৰাভ্য ও আনন্দজনক হয়; কিন্তু বহু-পানে গাত্রদাহ উৎপন্ন করে।

२। मरञ्जाय कि? मृत्थ (पर-यांबात मरहोयिवः किन्न जनाशास्त्र প्राप्ता विद्या लाक हेराक ममादत करत ना।

৩। স্থ কি? প্রজাপতি-বিশেষ; পৃথিবী-ৰূপ-উদ্যানস্থ-সকলেই বালক-বৎতাহার পশ্চাদ্-ধাবমান হয়: কিন্তু তাহার চঞ্চলতা ও বছ-বিষয়-পুস্পে ভূমণ-প্রিয়তা-প্রযুক্ত কেছই তা-হাকে আয়ত্ত করিতে পারে না।

ह। ভाগ্য कि? व्यवित्विको त्रम्भी, त्य जारात অত্যস্ত উপাসনাকারীকে পরিত্যাগ করিয়া ভাহার গুণানভিদ্ধের নিকট উপয়াচিকা হইয়া मহ্বাস करत्।

e। পরিহাস कि ? मम्/-रिटमधः शक्षत द/रा তৎপান করিলে অভ্যন্ত মনঃপ্রনাদকর ও হাম্য জনক, নিজ্-ব/য়ে আনীত হইলে ভিক্ত ও অসহ্য (वाध इस्।

७। विठांत कि? मनूरयात एकाय ७० मिकाशास्त्र বিনিমিত সিংহাদন, তাহার এক-ভাগে স্বর্ণ-রচিত। তুলা যত্র। ইহলোকে ধনী ও পরাজনীয়া ইংবার প্রকৃত ঢক চুরি করিয়া আনক মেকি চালাইয়া थारक।

> १। उज्ञ छोल्हा कि? मूर्चर्य आया नावधारन कमारताव्य कतित्व इंडे निष इहैरंड शास, किंड পড়িবার ভয় অনেক।

৮। वानगाक ? वाक्नान-वित्नव, जाहादक पूर्वकिया नातिमानि-कान वातक छाका मूर्तिक क्हेब्रा (स**न्य ठलम क्**ब्रा

# विविधार्थ-मञ्जूर,

ারুদ্ধেতিহাস-প্রাণিবিদ্যা-শিশ্প-সাহিত্যাদি-দ্যোতক মাসিক পত্ত।



द्राह्मिलाम्द्रात श्राह्मित्र

# রোহিলাদিণের ইতিহাস।

क्षेत्रक गन्नाकोत्र पित्राधिगिरगत न्वामाद्वता नकरमहे बाधोन-एहे-

धारात कतिएक नाइनाचिक इन माहे क्यानि कनका ध्याक करहे निहाशिशिकितिका यथार्थ वशीक्त हित्सन मा । तत्रः अक्ष्युटकरे जाशनाविद्यात क्ष्य-णात वाधिका कालनाटर्य लागमा रिप्टराह्म भारता न्त्राहर बाह जनावन कहिशाहिएसन, अवः अक्षानामान व्यवस्था कहिएकन, व बाधानुजाद वरित बरमदने ने अधियात जाविक वात्रवात छविमदक बन वितरक कि कतिएक मा। वसकः সুবাদারদিগের রাজবিল্যুন্থই মোগল-রাজ্যের উৎসাদন ছটবার এক প্রথানকারণ। রোহিলা-দিগের ইতিহাস এবিষয়ের এক দৃষ্টান্ত তল।

উক্ত জাতায়েরা আফগান বা পাঠান বংশ-জাত: ভারত্বর্যের বায়ুকোণ্ড **ছিন্দুকুশ-**গোর প্রভৃতি পর্তবাদী পাঠান-বংশই তাহাদের আ-কর: গত্র-নাধিপতি মহমুদ পাদশাহের লোকা ह्यु-इंडरनत शत फेकु भागान-वन्नीरस्ता भूनः २ ভারতব্য আক্রমণ করিয়াছিল, এবং অবশেষে তড়োতীয় শাহাবৃদিন্নামা এক ব্যক্তি দিলীর রাজান হাদনে আরোহণ করে। তৎপরে ক্রমান খবে প্রায়ঃ চারি শত ২ৎসর কাল পাঠানের: ভা-व्यटराय हाल्य कि बिद्या हिला। २०४२ ने १९८१ ति । গল-জাতার বাবর শাহ পাঠানদিগের হস্তহ্টতে ভারভাষ **অপাত্রণ করেন। তদবধি দিলারাজ্য** সোলল্ফিলের হস্তগত হয়: কেবল মধ্যে একবার পাটান-জাতীয় মেচেনাদ-ফরাদ-শের শাহ ছমা-গ্ৰুম পাদশাতের নিকটত্ইতে দিল্লীর রাজমুকুট প্র-ভাপাছর মারিয়া লইয়াছিলেন, কিন্তু তাহা অপ্র-ক্লে-ম্পেটে তালার ক্তত্ততে অপাস্ত হয়। ঐ কাল অব্ধি পাঠানেরা ভারতবর্ষে সম্পূর্ণক্রে যা-র্থানতা নাজ্যে করিতে পারে নাই। পরস্তু ভাহারা नवमा श्रीवार्यत बरवा भना हिन, बदः छातठ-নবের অনেক-তানে স্বাদারি বা কৃদু ২ রাজ্য স্থাপন ব্যাহার । ঐ সকলের মধ্যে **নর্ব-শে-**যে রোহিলখণ্ড রাজ্য ভাপিত হয়। পূর্বে ঐ श्राप्तरभाव नाम कृषारम्ब हिना जाहात दिजि ক্ষযোধ্যার পশ্চিম, গজানদীর পূর্ব এবং কুনায়ুম পৰ্বতের দক্ষিণ। এই নীমান্তৰ্গত ভূমি ত্রিকোণা-कांत्र, बदः श्रवृत्त-भागामानिनोः; ए। छाएक साता-माराम, (राह्मी, हांमशृह, खेन! अकृषि कातन ব্হয়গর আছে।

মোগল সমুট্দিগের ভথদশার যে সকল বিদেশীয় যবদেরা ধনলাল্যায় ভারতব্যে সমা-গত হয়, তমাধ্যে অনেক ৰুছি বা কহিল জা-তায় পাঠান ছিল; কুটাহের প্রদেশে তাহাদের শাস হওয়াতে ক্রমশঃ ঐ প্রদেশের নাম পরিবর্জ হইয়া রোহিলখণ্ড-শব্দে প্রচারিত হয়। এই সকল কহি বা রোছিলা পাঠানদিগের মধ্যে শাহ-আ-लम् अवः हारमम था नामा पृष्टे जुाका ১१२२ मः-বৎসরে কুটাকের প্রদেশে আসিয়া বসতি করে। जाहाता नामाना वाजि हिन, अ नामाना करम দিনপাত করিত। হোদেনের তিন পুঞা, জুঞ্জি থাঁ। পুঞ্চ প্রদিদ্ধ হইয়াছিল। শাহআলমের দুই পুঞ্ मायुम श्रा अवः **तहमः श्रा। अह** छे छ रसह मर्दा त्रक्रयः वानिका-दावनायः नियुक्त रूनः अनात्रूम কতকগুলি সমর্থিয় সহ্চর সমুহ করিয়া দিল্লা-থিপতির অনাত্তার (উজিরের) বৈন্য-মথ্যে পরিগ%, হ হইয়। মহারাষ্ট্রায়দিগের বিক্থে যুদ্ধ याका करतन, अवः अ यूर्क जाशन वीर्या अ नमत-कूमल ठात चातक उँ ६ क्ष अमान अम्मन करतम, ७०१ शृतकात-चक्ल उकित्तत निक्षेष्ट्र वृमा-छेन् প্रদেশটি প্রাপ্ত হব। তদনস্তর তিনি কুমাযুদ প্রদেশীয় রাজার দেশপতি-পদে বৃত নাকিয়া প্রচুর-সম্পত্তি সঞ্চয় করিয়াছিলেন। তাঁহার দুই পুঞ, (मांइयार, এবং আলীমোহयार। उत्प्राधारा-যুদ ক্ৰিষ্ঠকে অভাস্ত প্ৰিয় মানিভেন, ও ভাতাকে যুদ্ধ-বিগুছাদি-বিশাপারে উত্তম-শিক্ষা দিয়াছি-লেন। তাঁহার মৃত্যুর পর **আলামোহঅদ পিত্**-म्हेरिकान्गात्त चलन-नम्बिन/श्राहात यूष-याखात्र প্রবৃত্ত হন।

७९कारण व्याक्रम० छेता थे। नामा अक व/िङ (बाह्यामावाम-शास्त्रणाह को जमाही-लाइ

विक हिन; त्र यानीत्याक्ष्यपत्क व्याशम-देतन।-मध्या नियुक्त कतिया निकाधीन इ कौन धरन-শের কর সন্তুহ করিতে তাহাকে প্রেরণ করিয়া-ছিল, এবং তাহার কর্ম-কুশলভায় নম্ভ ইইয়া किश्रक्तिन-शरत फिल्लीत शामभारक्त निक्षेक्ट्रेटच কোন পরগণার তহশীলদারী-কর্মের এক সনন্দ-পত্র আনাইয়া তাহাকে দেয়া এই ঘটনার অপ্প দিনানস্তর আড্মৎউল্লা থা কর্মচুতে হয়; ইত্য-वकारम कालीरमाङ्ग्रम ब्राज्ञकब-श्रमारन विबच ষ্ট্য়া নেই অথে স্বজাতীয়-দৈন্য-নামস্ত-ন<u>স্</u>তে প্রবৃত্ত হট্য়াছিল; মধ্যেৎ পাদশাহের সভাস্থ প্র-धान २ कर्मवाति मिर्लित मूर्थ छे ९ रका व न मधूमा-त्व कृष्टि करत नाहे; कनकः मिल्लीश्वत जरकारन এমত নির্বাহ্য হইয়াছিলেন, এবং তাঁছার সভা-নদেরাও এতাদৃশ দুক্ষিয়াবিত ছইয়াছিল, যে ताकविद्यादिता ७ ७० दिका हमाशास्य भनाशास्य নিজ্তি পাইত। আলীমোহখদ এ অবস্থা খঞ্জাত ছিল না; বরং তদুপরি নিভর করিয়া সে দিল্ল/খি-প্তির প্মির বক্ষি," অর্থাৎ দৈন্যদিগের বেতন-मांचा अम्र ६ जेम्यून्क नामा करेन एक अिन-ধির দহিত যুদ্ধ করিয়া তাহার সমস্ত ভূমি সম্পত্তি ও কামান-প্রভৃতি যুদ্ধ-সজ্জা অপহরণ कतिशा वहें शाहित। अग्रद छेन्गुल्क अहे वार्डा পাদশাদের কর্ণগোচর করিয়া বিচার প্রার্থনার बूषि करत मारे, किन्न श्रधान मञ्जी कमककीन् আলীমোহমদের পক হইয়া তাহার সমস্ত চেষ্টা ৰাপ্ত করিয়াছিল। কিয়ৎকাল পরে, প্রদেশের বৈয়দ্উদীন্ নামা এক অস রাজ-বিদ্যোহী অনিদারের প্রাণ-বিনাশ করাতে অপছত गमछ প্रদেশের জায়গিরি-गगम-পত্র ও সন্মান-मृहक পूत्रकात তिनि चानींत्र मारम श्रमान कतान। हामिनिर्दारित अधार्म शूरकात मृत्हे जनरमह চমৎক্ত इहेन; এব॰ পাঠান মাত্রেই ঐ উৎনাহপূর্ণ-সেনানায়কের অধীনে যুদ্ধ করিতে আগুহাবিত হইল। আলীমোহসদও অধিষ্ঠ-ভূনি-সকল
বিভাগ করিয়া দিয়া ও অর্থাদি-প্রদান-প্রলোভনে
আপন-বদে আনিতে কোনমতে তুটি করিলেক না।

**बर्ट मगर्य चलत बक घटेना इस, जाहार**ङ তাহার সমাগকপে দৌভাগ্য-বৃদ্ধি হইয়াছিল: उद्यान्य बहे, त्यातामावाम-श्राप्तरमत विश्वमः म রাজমন্ত্রির নিজ-বিষয়ের মধ্যে গণ্য ছিল; তাহার কর-সন্তুহ-করণার্থে তিনি হারানন্দ নামা জানৈ-ককে কতকগুলি সেনা-সমভিব্যাহারে প্রেরণ করি-शाहित्वन। त्र वाकि स्मातानावारन व्यानिवामाव আলিমোহমদের সহিত আপন প্রভুর অবিকারের নীমা বিষয়ক বিবাদ উপস্থিত করিয়া যুজে পরাস্ত ও গুণ্ডহন্তার হত্তে হত-প্রাণ হয়। প্রধান মন্ত্রী কমকদীন্ এই বার্ত্তা শুনিয়া মহাবল-পরা-জান্ত-সেনা-সমভিব্যাহারে আপন পুঞ্জ মীর-মন্ত্র পাঠাইয়াছিলেন; কিন্তু সুচতুর আলী-মোহমদ তাহার পুলের সহিত আপন কন্যার বিবাহ দিয়া অনায়াদে আপদ্হইতে মুক্ত হইয়া-ছিল; অধিকন্ত রাজমন্ত্রির সহিত বৈবাহিক-স**ৰ্**জ্ঞ সংস্থাপন করিয়া আপন-ক্ষতা স**ম**্ক্রিজ-मठो कतिरलक।

बहे प्रकारत (माननिर्गत इन्डइहेट ममन्ड ज्ञा-हिनथल-एम व्यक्ति करिया व्यानी स्माहबार बप्रकि-वामी कुमायूम-एमाधिशिवत विकास मन्द्रामार्थ व्यवधातन करतम। बे ताका व्यक्ति मिर्टीयं व मान्त-बन्धव हिस्तमः पूर्वान्ड त्राहिनापिरमत व्याक्तमान व्यक्ति को इहेता बरम्भ-शक्तिकामान-श्रद्धक शक्तात्रम-शत इहेस्तमः। वैश्वात स्माशिवत वर्षे विक्त রোহিলাদিগকে দমন করিতে অক্সম হইয়া অব-শেষে আপন প্রভার দৃষ্টান্তানুগামী হইল। আলী-মোহম্মদ অবাধে কুমায়ুল-প্রদেশ-লুগুন-পূর্বক প্রচুর সম্পত্তি নঞ্চয় করত হরাজ্যে প্রভাগমন-সময়ে কুমায়ুনাধিপতির সহিত সন্ধি করিয়া বা-যিক ভিন লক্ষ টাকা কর নির্দার্থ্য করিয়া আইসেন।

অতঃপর কিয়দিনের নিমিত্ত আলীর এক ভয়ানিক বিপদ্ ঘটিয়াছিল। অযোধ্যার নবাব সক্
নর-জন্ন রোছিলখণ্ডের নিকটন্ত অর্ণান্তইতে
কিঞ্জিৎ শাল-কান্ত আন্য়নের নিমিত্ত কএক
জন লোক পাঠাইয়াছিলেন; ভাছারা প্রভুর
আজ্ঞা প্রতিপালনার্থে অর্ণো আনিবামাত্র আন্
লীমোহম্মদের সহিত তুমুল বিভাদ উপন্তিত হইয়া
সর্ব্ধ হত হয়। অযোধ্যাধিপতি এই অপমানে
অভাত্ত এই হইয়া তৎক্ষণাৎ পাদনাহের আশুয়
প্রাথমদে মন্ত হইয়া কৌশলচেন্তার জুটি করান্তে, দিল্লার পাদশাহ্ সনৈন্য আলিয়া তাঁন
হাকে পরাত্ত ও বন্দী করিয়া আপন রাজপাটে
লইয়া যান।

অলী দিল্লী-নগরে কিয়দিন বাদ করিতে ২

একদা তাঁহার অনুচরবর্গ কএক সহসু রোছিলা
আতাঁয় বাজি রাজভারে আদিয়া আলাদোহমদের
মুক্তির নিমিত অত্যত্ত গোলযোগ উপত্তিত করিলেক: তৎকালে পাদশাহের নৈন্য-সকল বিদেশে প্রেরিত হইয়াছিল; বিশেষতঃ কাবুলাথিপতি আহমদ্শাহ আব্দালা ভাতরবর্ষ আক্রমণ করিতে আসিবেন, এই জনরব হওয়াতে
পাদশাহের সৈন্যের প্রায়ঃ অনেকেই পঞ্জাবদেশে
উপস্থিত ছিল; কেই দিল্লী-নগরে বর্তমান ছিল
না; অতএব বহুসঙ্গাক সমরপ্রিয় রোহিলাদিগকে রাজভারে দেখিয়া অমাত্যবর্গ সকলেই আ-

গুহাতিশয়ে আলীমেহায়দকে মুক্ত করিয়া দিতে পাদশাহকে পরামর্শ দিতে লাগিলেম। রাজাও বর্ত্তমান শক্ষটহইতে মুক্তির কোন সূলভ উপায় না পাইয়া ভাহাতে সঞ্চত হইতে বাধ্য হইলেম; কিন্তু রাজবিদ্যোহা আলীমোহমদকে পুনরায় রো-হিলপত্তে না পাঠাইয়া সরহিন্দ-দেশের কর সন্তু-হার্থে প্রেরণ করিলেন।

আলী সরহিন্দ-দেশে অতি অণ্প দিন মাত্র ছিলেন। তদেশে তাঁহার যাত্রা করিবার সম-য়েই আহমদ্শাহ-আবদালি ভারতবর্ষে আগমন করেন; ও তহিহুদ্ধে সমরসভ্জায়রাজমন্ত্রা ও সৈন্য সামস্ত নকলের বাগুলা থাকাতে তিনি অনায়ামে সরহিন্দের সমস্ত কর সঙ্গুহু করত তৎসহ মদেশে প্রস্থান করিতে সক্ষম হইলেন। অপর ঐ অর্থে তিনি অনেক সৈন্য ও যুদ্ধসভ্জা সন্তুহু করিয়া তৎসাহাযে। রোহিল্পপ্রের নিকটন্ত নকল ভূম্য-থিকারিদিগের সম্পত্তি অপহরণ করিয়া উৎকৃষ্ট ধনাত্য হইয়া উঠিলেন।

দিল্ল/থিপতি মোহত্মদ-শাহের মন্ত্রী কষর
উদীন আহ্মদ্শাহ্-আব্নালির লহ্ডি মুজে
নিহত হইয়াছিলেন, ও তৎশোকে মোহত্মদ্ শাহও বরায় পরলোক যাত্রা করেন। এই অবকাশে আলীমোহত্মদ্ নির্বিদ্ধে রোহিলথওে প্রদভাপিত হইয়া প্রতিবাদী হিন্দু-রাজন/বর্গকে
দেশচুত্র করত ভাহাদিগের অধিকার আপন
নহচরহিগকে প্রদান করিলেন; প্রজাপালনের
ও কর-সন্তুহের বিহিত নিয়ম নিজারিত করিলেন; অমাত্য-বজু-বাজ্বদিগের মজ্লার্থে র্থাবিহিত নিজর তুমি ও বার্ষিক কিছু ২ অবথারিত করিরা দিলেন; কল্তঃ গর্ভ-প্রকারে
আপন ক্ষতাব্দির তেইার নিযুক্ত ছিলেন।
অপর আপনার লোকাক্স-সলবের পরাভ্রানিত্র

অপত্যের৷ পৈত্রিক স্বন্তু লইয়া বিবাদ বিসংবাদ 🕫 করে এ নিমিত্র তিনি আপন পিতৃব্য রহমৎ थाँकि প्विमित्तित "शक्तिक" व्यर्थाय तक्कत, এবং পিতৃব/পুত্র ভুণ্ডিখাঁকে সেনাধ/ক পদে नियुक्त कतित्वन, ও जन्याना अधान चका-তীয় ব্যক্তিবর্গকে ষথাযোগ্য রাজকার্যো নি-युक्त कतिया निरलन। এই नकन ও এবন্পুকার মধ্যে রোছিলখণ্ডদশ অতি মান্য ও গৌর-বান্ধিত হুইয়া উঠিল; এবং রোহিলাদিগের नाम ভाরভবর্যের সর্বত্তে অধ্যা হইল; সকলে গণ্ড, অতএব হাফিজ রহমৎ খাঁ ষয়ং বা- সাহায্য করিতে প্রবৃত্ত হইল। তিনি রোহিলথণ্ড-রাজ্যের প্রথান অংশ আ-পন অধীনে রাথিয়া অবশিষ্ট ভ্রাতৃপুঞ্জিনিকে বিভাগ করিয়া দিলেন; পরস্তু ভাছাতেও বি-বাদের শেষ হয় নাই; মধ্যে ২ গৃহ বিচ্ছেদ ও পরস্পার যুদ্ধও পুনঃ ২ বটিত। অধিকন্ত অযো-स्थात नवाव जुका उत्काना ७ महाता होय ताका-রাও তাহাদিগের বিকলে অজ ধারণ করিতে कृष्टि करतम मारे; किंख शांकिक त्रस्मरणत नमत देमणूर्वा अकरमरे शहाख्याना हिरमन।

मर मुझा डिट्मोमाटक 8. लक होका भातिएका-यिक निटंड चीकृठ इहेग्रा ठाँहात नाहाय। लहे-য়াছিলেন; কিন্তু পরে অভীষ্ট সিদ্ধ হইলে আপন প্রতি-শ্রুতি রক্ষায় অবছেল। করেন। সুজাউদ্দৌল। এই প্রকারে বঞ্চিত হওয়াতে অত্যন্ত ৰুট হই-ग्नाहित्नन, किञ्ज अग्नः ताहिना**मिर** गत विकास अञ्ज ধারণ করিতে ক্ষমতাভাব জানিয়া শুরু থাকেন। অন্যান্য অনেক সল্লিয়ম সংস্থাপনে অপ্প দিন- পরস্ত দে ঘটনা তাঁহার মনহইতে বিস্মৃত হয় नाइ: ১৮२৮ मःवर्गत इंग्लाकिप्रित निरुष्ठ তাঁহার এক সন্ধি হয়; সুজ। ইত্যবকাশে ইং-রাজ্দিগকে ৪০ লক্ষ টাকা প্রকার ও যে তন্নাম শ্বনমাত্রেই কম্পিত কলেবর হইত। কিন্তু পর্যান্ত যুদ্ধ উপস্থিত থাকিবেক তৎকাল পর্যান্ত এই প্রকৃষ্ট রাজ্য সংস্থান করত আলী বহুকাল মাসিক ২॥ লক্ষ টাক। দিতে স্বাকৃত হুইয়া রো-তাহা সম্ভোগ করিতে পারেন নাই। ১৮০৫ নং- ছিলাদিগের দমনার্থ সাহায্য প্রার্থনা করিলেন। বৎসরে তাহার মৃত্যু হয়। ভৎকালে তাঁহার তৎকালে ইংরাজেরা ধন লোভে অভ্যন্ত মুখা ছয় পুঞা বর্ত্তমান ছিল। তাহারা সকলেই অপো- ছিল অতএব অনায়ানে কএক দল সৈন্য দিয়া

लक्षिरात नारम ताककार्या मन्नापन कतिए । अहे नक्तानुनारत मःवर ১৮-७० हे ताक अ লাগিলেন। তৎকার্য্যেও তিনি বিশেষ পারদর্শী অযোধ্যার দৈন্য মহাসমারোহে রোহিলথত্তে ছিলেন; কিন্তু কলহপ্রিয় রোহিলারা তাঁহার যাত্রা করিল; হাফিজ রহমৎও ভাহাদিগের বি-কর্ত্যু সম্ভুষ্ট না হইয়া সর্বদা বিবাদ বিসংবাদ : ক্রে সাধ্যানুসারে সৈন্য-সামস্ত প্রস্তুত করিয়া উপস্থিত করিতঃ এই প্রযুক্ত কিয়ৎকাল পরে কুটারনগরে তাহাদিগের প্রত্যক্ষা করিতে লাঝি-লেন। অবশেষে ২• সে আপ্রেল দিবসে উ্ভয় সৈ-त्यात नाकाष हरेल; अवः উভয়েই नमत नाधान बूर्षि कतित्वक ना, किन्न टेपवार शाकिक श्रावित আঘাতে নিপতিত হইলেন; এবং তদ্প্তে তা-হার বৈন্যদল হতাশ হইয়া পলায়নপর হইল।

আলামোহমদের ত্তীয় পুঞ ফৈজুলা খাঁ এই ্ यूर्व डेशिइड इिलम, बरः, माधानुमाद्ध मञ् नःशात जुषि कात्रम मारे; किन्न शाकिरसात अकाम रेगम। स्मिद्ध अकल द्वाधिए अम्यक इतेहा अव-ः अकरा महाताक्षेत्रित्रित्रात समनार्थ हाकिस तर्-। (भारत शताक्षम क्रूड शतिवात ७ मण्यूडि वहेशा

রাও সকলে ঐ স্থানে আসিয়া প্রায় ৫০,০০০ ব্যক্তি তুষ্টির জন্য উল্লেখিত করিতে চ্ইল। যথা, **अ**क्ब हरेन।

এদিকে মিলিত ইংরাজ ও অযোধ্যার সৈ-नात्रव चाउराञ्च निष्याकः शूर्वक ताहिनापिशतक রোহিলখণ্ড**হইতে** উৎসন্ন করত **লালড**ং আক্র-মণ করিলেক, ও তথায় উভয় শতু প্রায় দুই মাণ কাল পরস্পার সমুখন্ত থাকে। পর্যাব-দানে কৈজুলার অবশিষ্ট নগদ টাকা ও মণি যুক্তাদির অন্ধেক লইয়া অ্যোধ্যার নবাব ामश्र अम्पात नवावी श्रम ७ बामम नक ाका वार्षिक चारमाशयुक्त ভूमि अनामशृदिक ্রাহার সহিত সন্ধ্রি করেন: কিন্তু তাহার সম-ভবণালারি প্রায় বিংশতি সহসু রোহিলাকে পরিবারে রো**হিলখণ্ড হইতে দূরী করণ করেন**। मविध ভाরতবর্ষে রোহিলাদিগের উৎসয় হয়, বং আলামোহকার কর্তৃক স্থাপিত রাজ্যের। সমুদায় রাজক কাল সঙ্খ্যা .. ৩১৭৩ বৎসর। কেবারে লোপ হয়। রামপুর প্রদেশে কৈজুলার শার জনৈক নবাব অদ্যাপি বভ্যান আছেন, ख ठाँगांब देननामार्सान किन्नु माज नाहै।

#### उंधियात ताकावनी।

🕬 👯 তথ্য প্রতির বিবরণ করা গিয়াছে, কৰে তদেশের রাজ্যশাসনাদি-বিষয়ক ইতি-रमत विस्मय लिया यावेरक हा। उरकालत रेजिरान लिथाकता कार्न किन्नु-র প্রারম্ভাবধি বিক্রমাদিতে।র রাজ্যাবসান

कूमाछेन् शर्वरणाशिक्ष वालायः नामक नगरतत मूर्गि शर्याख छात्रखवरर्य खमाचरत्र ५० जन हाका ताकर्ष व्यवञ्चान कत्रित्वन। (य नकल त्राहिलात्रा चरम- कत्रिया शियाष्ट्रन। जाहारमत्र नारभारत्वथ कत्रा अ-শের- স্বাধীনতা রক্ষার আশা রাখিত, তাহা- স্থলে অপ্রস্তুতাভিধান হইলেও পাঠকগণের পরি-

4.1%				•		*
যুধিষ্ঠির দে	₹,	• •	• •	• •	38	বৎসর
পরিক্ষীৎ দে	ব,	• •	• •		969	• •
জনমেজয় দে	ৰ,	• •	• •	• •	७३७	• •
সম্বর-বা-শ্ব	इत (म	ব,	• •		87•	4 =
গৌতম দেব,	,		. •	• •	જી જ	•
महोन्द्र (ए व,						
অন্তি দেব,	• •	• •	• •	••	2-08	• •
দেবক-বা অ	শোৰ	ह (म	₹.,	• •	<b>&gt;</b> 4.	4 *
वजुनाथ,			• •	• •	209	• •
শরশঙ্থ,	• •				>>@	е и
ङ्∘म,	• •	• •	• •	• •	१११	• •
ভোজ,	••			• •	>> ?	••
বিক্রমাদিত	,			. ,	300	
						-

রাজচরিত্র নামক উৎকল গুদ্ধের মতে এই রাজবর্গের শেযোক্ত বিজ্ঞানিত্য লোকান্তর গমন কালে এক পুঞ রাখিয়া যাম। তাছার নাম কর্ম-জিৎ বা ক্ৰমাদিত্য। ইনি কিয়ৎকাল উড়িৰ্যাদেশ শাসন করত, গ্রিমান পৃঞ্বোত্তম জগলাপ দেবের फ्लानक क्षेत्रा १७ भ**्कि शहरताक बाद्धा करतन।** क्य कतिशाहित्वन। देशास्त्र बाक्य भावन कारन যবনেরা আদিরা আক্রমণ করিয়াছিল ; একারণ देशरम्ब नाम विधान উল্লেখ করিছে एरेक्, चन्न-রাপরের নাম প্রয়োজনাভার প্রমুক্ত বাক্ত করবে जनावना कर उपुराक्तावनित्र वास्त्रिय हासाह

নাম শোভন দেব। তিনি ৩১৮ সংবৎসরে উডু ताक निःशामन अधिकांत करतन। जे वर्गक कान वः लाफिय क हिरलन. जाहाद किहू है देह यं। नाई। किश्वपञ्जी चाह्य जांहात ताजाकात्न यव तन-ता **अजुरम्म जाक्रम्य क**ित्रशिक्तः। जित्रम्य **यह** तकुवाङ नामक **এक क्षन উ**দাসीन वा यवन উৎ-কলদেশাক্রমণের অভিসন্ধিতে বহুসঙ্খ্যক-দেনা मञ्जूर-পूर्वक व्याननीय रुखाय नम्हिनाहात्व লইয়া অৰ্বযানে আৱোহণ করাইয়া জগন্নাথ দে-বের ক্ষেত্রের কিয়দূর অন্তরে সমৃদুত্ট-সমীপবর্ত্তি-স্থানে নম্বর করিয়া অবকাশ প্রতীক্ষা করিতে লা-গিল। ঐ সকল হাতি ঘোড়ার বিষ্ঠা ও তৃণাদি ভূরি ২ প্রবাহিত হইয়া তটাগত হইতে দশন করিবামাত্র কতিপয় নগর নিবাসি লোক তৎ-ক্ষণাৎ ভত্তত্ব নরপতি সমিধানে অনিয়ত কালে छेलञ्चान शृर्वक अविनास अहे नमार्यमन कहिल; "মহারাজ, অনুমান হয়, আপনার রাজ্য আক্র-मन कत्रनाजिनारम कान विशव गरेननामाम ख निक्षेष्ठ इरेशाष्ट्र, मान्य नारे "। अरे पूर्वाखा कर्नभथनामिनी इरेनामाब ज्भान चित्राव जीउ हरेश श्रिमन्द्रिहरेख एन्वापिएनव श्रीमञ्ज्ञशङ्गाय परवत भीमृर्खि नानाविध वस्मूना चनत्रज्ञाल-कात ७ जामु शिवनमञ्जू भूटकाभरयाति भावािम সহিত এক বস্তাব্ত শকটে আরোপণ করাইয়া তৎসমভিব্যাহারে শোণপুর-গোপলা নামক মগ-রে প্রক্রম বেশে প্রকান করিলেন। এ স্থান काँकात तारक/त शन्तिम नीमाव। अम्टिक अ यवन क्रमेष क्रेया अवः ब्राकाटक एक्षिटक मा भाक्या नमस्मित-मध्रत मूर्थन कत्रक क्यांस महा डेलमुव উপস্থিত করিল। আক্রামকগণের অভ্যানার শ্বন क्रिया ब्राका लारे अपूर्वि मृत्कि गरश (थ्रा-विक कतिका करूनाति अस नके क्क द्वालान कतिका

রাখিলেন, এবং सग्नः मृत्रवर्खि निविष् ञत्ना-सर्था शनायम कविया शिलान।

যবন দল ভত্তাবভের কিছুমাত্র অনুসন্ধান না পাইয়া তত্ত্বত্য প্ৰজাবৰ্গকে জিজ্ঞানিবাতে সমৃদু তীরবাসী কতিপয় ইতর জাতীয় লোক, যে পথ দিয়া গেলে তাঁছার উদ্দেশ পাওয়া যায় তাহা कानाहेश दिल। त्रक्तवाङ् अञापृत्र भागास्त्र অপ্রকাশে নমুদ্রে প্রতি নিভান্ত রাগাল হইয়া ভয় প্रদর্শন জন্য নিজ দৈন্য সামস্তকে ইহার জল তাড়না করিতে আজ্ঞা প্রদান করিল। সমুদূ এতাদৃশ ঘোরতর যবনাক্রমণ ব্যাপার ময়নগো-চর করিয়া তৎস্থানহইতে প্রায় এক ক্রোশ দুরে পলায়ন করিল, অবোধ যবনেরাও ক্রোধভরে তাহার প্রতি জতবেগে ধাবমান হইতে লাগিল। व्यनस्त डेलान जरक्याना मक्त महारवात शंडीत নিনাদ ভয়ানক পয়োরাশি প্রবাহবু/হ-সমস্কি-ব্যাহারে পুনর্বার প্রত্যাবৃত্ত হইলে তাহার করাল গ্রাদে দেই মহতা দেনার অধিকাংশ পতিত रहेन, अवः महाविख्ठ रिन नमूनाम अक कारक জলপাবিত হইয়া গেল। বন্য খুদার বরোকে পৰ্বত পৰ্যান্ত অগুসর হইয়া ৰবাহিত বালুকার তত্তাবৎস্থান বালুকাময় করিয়া গেল। ঐ সম্ (धरे नाम्प्रिक कालत शिक्कि जाति किल्का-करमत ज्षि रहा अथारन ताका अनि विनर्षर জঙ্গল মধ্যে প্রাণ হারাইলেন। অনন্তর তাহার পুত हेन्द्रुप्तव अक्रिनिःशामनाधिकाः इहेटन का-क्रमांकता जारात थान मः रात्र कतिया किनिन। जनविध क्रमाग्रज ১८७ वर्गद्र शर्याञ्च यवन वर्ग **७७ हाका मामन करत। शरत ००० मकार्यः** जे मानत्नद्र भर्य। वस्त्रम् इत्र।

वरे भण्या भारते. त्याच इत हात मख्या या विश्रुवाचीभारतेल स्थान सम्बद्धाः मद ঞ্চলত্ব যবন প্রীলিবার কোন সম্ভাবনা ছিল না।

এক্ষণে আমরা তত্রস্ত বর্ত্তমান কেশরা বংশের বিবরণ করিতে প্রবৃত্ত হইলাম। ৫২৯ সংবৎসরে ले वः स्था निः शानभाषिता ११-शृर्वक हा छ।-भा-ज्ञात थातन हा वह जमशाविद उपाकात ইতিহাস আমরা যথার্থ বলিয়া গণ্য করিতে পারি, उदश्दंत ताजनः नार्यालत हे जिहान अख्त। त যাছা হউক, অভিনব রাজ বংশের আদিপুরুষের নাম য্যাতিকেশরা। তিনি অতিশয় যুদ্ধবিদ্যা-বিশারদ ও নিরতিশয় সাহসিক ছিলেন, কিন্তু কিনি কে বা কোন স্থান হইতে আদিয়াছিলেন, বিণ্দোর অনুসন্ধানের উদ্যোগ করিছে লাগি-তাহার কিছুমাত্র আয়াদের জ্ঞানভূমিতে সমা- লেন। যবনদিগের আক্রমণকালীন প্রীচইতে গত হয় নাই। তিনি যবন হস্তহইতে এ রাজ্য নানা ভানে যাহারা পলায়ন করিয়াছিল, রতু-মুক্ত করিয়া সাধীন করেন, ও যবনেরা তথাচ্ট্তে পুর নামক দেশে তাহাদের কংশীয় অনেককে निक (मर्ट्स भनायन करते। यथाञ्चिकभती याकशूत (मर्था शिक्षा**हिन। यश**ाया ताका (नर्हे नकन লগায়ে আপল রাজধানী সংস্থাপন ও তথায় নৌর পূজক কংশের সহিত কি ৰূপে পূর্বৎ সমা-লামে প্রসিদ্ধ অতি রমণীয় চতুর্দারবিশিষ্ট এক রোকে জগন্ধাথ দেবের পূঞ্জা কার্য্য সমাধা ছইতে প্রাদাদ কিয়া দুর্গবঁৎ সুরক্ষিত স্থান নির্মাণ করি- পারে, তলিষয়ে পরামর্শ স্থির করিয়া আর একটি ঘাছিলের ভাষারি রাজ্যশাসম কালে এমান্ অভিনব এমুর্ত্তি নির্মাণ করা যুক্তি সিদ্ধ বোধে জগলাথ দেবের খ্রীমৃত্তির পুনক্ষার ও তৎপুজার : তাহাদিগকে আদেশ করিলে, তাহারা নিবিড়ারণ্য পুনঃ সংস্থাপন হয়। গণ্প আছে, মনে ২ কোন মনৌকিক ভাব উদ্ভুত হইলে রাজা য্যাভিকেশরী 📜 ষয়ং পুৰুষোত্তমকৈতে গমন পূৰ্বক তৎস্থান নিবাসি ব্রাজাণদিগের প্রমুখাৎ সার্জ শত বং-নরভেরিত তৎকাল প্রচলিত পুরুষ পরম্পরাগত জগন্নাথ দেবের খ্রীমূর্ত্তির অদর্শন ব্যাপার প্রবাদ শুরণগোচর করিয়া শোণপুর-গোপলির গছন বন দর্শন করিতে মনস্থ করিলেন। রক্ত বাহার আজ্মণাবধি এতাবৎ কাল পর্যান্ত ঐ স্থানের

সম্বন্ধে ইহা ক্লিপ্ড হইয়া থাকিবেক; কারণ রক্ষিত ছিল, তাহা কাহারো নেত্রপথে পতিত শোভন দেবের রাজ্যকালে সমুদু দিয়া পশ্চিমা- ছিয় নাই। রাজা যযাতিকেশরী অভ্তকপে সেই বনোদেশে উপস্থিত হইয়া ইতন্ততঃ অন্তে-যণ করিতে ২ যে স্থলে প্রামৃত্তি মৃত্তিকাগতা रुरेश मूत्रकिल हित्तन, (महे छन (प्रशिष्ट পाई-লেন। দৃষ্টিমাত্র তিনি পেই বট বৃক্ষ ক্ষেদন করি-য়া কেলিলেন; এবং তন্মূলস্থল খনন করিতে ২ এক পাধাণময় পাত্তে অন্যান্য মুভির সহিত প্রিমজ্জগন্নাথদেবের প্রামৃত্তি দেখিতে পাইলেন, কিন্তু কালসহকারে ভাহার অবয়ব সকল চুর্প্রায় **रहेशाहित। नम**नल्ज बाका ययाजिकमत्रो स्महे দেবের দেবক বা পরিচারক পূজক ব্রাহ্মণদিগের मर्थ। প্রবিষ্ট হইয়া প্রতিমা নির্মাণার্থ শাজোক গুণশালি দাঞ্চ অংক্ষেপ করিতে লাগিল। পরে তাरा প্রাপ্ত रूरेया द्राका यया ठिक्तमहीत निकटि উপনীত করিল। রাজাও ধর্মানুগত বাগুতা नक्कारत मूहाक शक्तिकरम (नहे नमानीक माक-খণ্ড ও পুরাতন জার্ণ প্রতিমাবয়ক সকল পরিক্র ও नानानकारत नमनक्ठ क्रिया मेर्गनमारतारक পুরो প্রবেশ করাইলেন। ভাঁচার আদেহশুলারাভন मन्मिरतत अमूना अविका आत बगि मुख्न कान श्राप्त मृत्रिका मार्था के निमृत्रि छछ। मिना निर्मिक क्रेस। उरकारम स्वापन किस्तिक

সাগরোর্মি-সমানীত বালুকাসমূহে পরিপুরিত ও
আচ্ছন্ন-প্রায় ছিল। পরে অনুক্রমে চারিটি মূর্ত্তি
নির্মিত হইয়া ঐ বর্ত্তমান রাজশাসনের ত্রয়োদশ বৎসীরে পুনর্বার সিংহাসনে সমারোপিত
হয়। তৎকালে উপস্থিত দেশদেশান্তরীয় লোকের
জয় শব্দ নমঃশব্দোচ্চারণ পূর্বক সমারোহের
আর ইয়ন্তা ছিল না।

জগন্নাথ দেবের দেবার জন্য রাজা যযাতিকেশরী অনেকানেক সেবক ও পূজক নিযুক্ত করিয়া তাহাদের হত্তে শ্রীমন্দিরের নিত্য নৈমিত্রিক
ব্যয়োপযুক্ত বৃত্তি বিধানার্থ পূর্রার চতুর্দিক্স
যাবতায় গামাদি জগন্নাথ-দেবের দেবত্ব প্রকারে নিক্ষর ও শাসনপত্রাকাট করিয়া সমপ্র
করিলেন। এতাদৃশ চিরক্ষরণীয় সময়ে আপামর
নাধারণ সকলেই রাজাকে "বিভীয়-ইন্দুদুস্মু"
উপাধি প্রদান করিল।

রাজ্যাবসান প্রাক্তালে রাজা যযাতিকেশরী ভুবনেশ্বরে এক মন্দির প্রস্তুত করিতে আরক্ষ করেন, এব॰ ৫৬৭ সংবৎসরে পরলোক যাত্র। করেন।

তৎপরে সুর্যাকেশরা ও অনস্তকেশর নিশমক তাঁহার দুই জন পূঞ্জ তাহার উত্তরাধিকারা তৎসিংহাসনের অধিকার প্রাপ্ত হইরা দীর্ঘকাল রাজ্য করেন। উভয়ের রাজ্যকালসঙ্খ্যা ৯৭ বৎসর।
তাহাদের রাজ্য কালীন শেষোক্ত অনস্তকেশরার আরকপূর্ব ভূবনেশ্বরত্ব মন্দিরের শিষ্ট সম্পাদ্দনাম্যোগ ব্যতীত আর কিছুই অন্তুত ব্যাপার বোধে উল্লেখিতব্য নাই। ৬৭৩ সংবৎসত্তে ইহার সিংহাসন ললাটেশ্বকেশরীতে বর্ত্তে। লিজরাজ ভূরনেশ্বরোপাধিক প্রীমুম্বহাদেবের মহামন্দির দির্মাণ সম্পূর্ণ করাতে ভাহার ভূবনব্যাপিনা বিশ্বাতীর কীর্ত্তি হইয়াছিল। এ নির্মাণ কার্য্য

শালিবাহনাদের ৫৮৮ বংশরে স্সম্পন্ন হয়।
ঐ রাজা তথায় এক মহা বিস্তুত রাজধানী
সংস্থাপন করেন। ইছার পর ৪৫৫ বংশর কাল
মধ্যে ক্রমাগত কেশরী বংশোন্ডব ৩২ জন
রাজা রাজত্ব করেন; তাঁহারা কেহই বিশেষ বিথাত ছিলেন না।

কৈশরীবংশের ধুংসোপাখ্যান নানা জনে নানা-প্রকার কহিয়া থাকে। রাজচরিত্রে লেথে, যে এই বংশের অভিম রাজা নিরপত্য হইয়া লো-कान्छत भगन करत्न। देनव श्रेन्डगारमरम वामुरनव वनপতि नामक এक वाङ्गि, कर्नाष्टीयञ्जरेनकरक আনয়ন করিয়া রাজ্যে অভিষেক করেন। বংশা-বলি পুম্বের লিপি এই, "যে রাজার সহিত বাসু-দেব বনপতি নামক ক্ষমতাপন্ন এক জন ব্ৰাহ্ম-ণের বিবাদ উপস্থিত হইবাতে রাজা ঐ ব্রাহ্মণকে পদচ্যত করিয়া নিক্ষাসন করেন। ইহাতে ব্রাহ্মণ ক্রোধভরে কর্ণাট দেশে যাত্রা করিয়া বিশে-যানুসন্ধান পূৰ্বক চূরন্ধ বা চোরগল্প নামক এক ব্যক্তিকে উড়িষ্যা আক্রমণ করাইতে আনয়ন করে "৷ সে ১০৫৪ শকাব্দের ১৩ই আশ্বিন শুক্র– বারে কটক পরাজয় করিয়া তথাকার রাজত্ব হস্তগত করে। পরস্ত রাজা চুর**ন্ধ দেবের বিংহাসনা**-ধিরোহণের দিনাবধারণ বিষয়ে উভয় লিপিরই একবাক্যতা আছে। ইহারি বংশ গঙ্গাবংশ বা গান্ধবংশ নামে খ্যাত। ক্রমাগত চারিশত বৎসর তাহার। ঐ স্থানে রাজ্যশাসন করিয়াছিল। লোকে करह, উক্ত রাজাই মগুলপাঞ্জি নামক জগন্নাথ দে-বের জীমন্দিরসংক্রান্ত কোন গুদ্ধ লিখিয়াছেন, **बदः श्रेनामा एवरपवीत उभागना जाम कर्नु** 

<sup>\*</sup> মন্দিরের বারোপরি নিদ্দ লিখিও লোকে শক নিণ্ডি আছে গঞ্জাই।সুমিতে জাতে শক্ষকে কীর্তিমানদঃ। প্রাসাদমকরোপুঞ্জা ললাটেন্দুন্চ কেশ্বী।।

কোন বিশেষ২ দেবীর উপাসনাপর ছিলেন। ভাহার
নাম ও গুন এবং রাজনাসনের উৎকার্ত্রন প্রার
একাংশে চূরজনৈ নামক এক সরোবরে অদ্যাপি
সংরক্ষিত আছে। লোক প্রবাদ এই, "যে শরলমর
ও কটক চৌদারে যে প্রাসাদ ও দুর্গ আছে তদুভর
ইহারি নির্মিত"।

১২০৭ **मःतरमात** छो**हात शूध गाम्न**यतं (मव शक्षांवर्षि शामावती शयान्त्र विख्व बाष्ट्रात পৈত্রিক অধিকার প্রাপ্ত হন। ভৎপরে আর দুই क्षम डाक्क करतन, जाकारमंत्र नामामित जेलाध করা আবশ্যক নাই। অন্তর গান্ধর শাপ্তবান অন-ভাষা ১২ ৩০ বংবং বিংহাদন অধিকার করে-म। मृतम्ष्ठे ब्लास छ । कर्क वक द्का वस इ उत्तार । ভংপাপক্ষালণার্থক প্রায়শ্চিত্তস্বরূপ সনেক দেবা-লয় নির্মাণ পর্বক তন্মধ্যে নালা দেবতার প্রতি-মূর্তি প্রতিয়াপিত হয়। কিম্বনন্তা আছে এ রাজা ৪০ টা প্রয়েশ্বময় মন্দির, ১০ সেতু, ৪০ কুপ, এবং ১৫০ ঘাট নির্মাণ করিয়াছিলেন। বিশেষতঃ ৪৫০ ন্চন গ্রাম প্রস্তুত করিয়া তাহাতে কেবল বা-ক্ষান কংলাপন করিয়াছিলেন। এত্ত্যতীত বহু-रक्ष्यक, नामान्य भट्ट कट्ट, कांग्रे नता-ষ্ঠ্যন্দিরাদি ছারা সুশোভিত করেন। ক্তগ্ন-লাথ দেবের বর্তমান মন্দির তাঁহার আক্রায় ১১১२ मकारक शदम इन्म वाज्ञ (शर्या नामा अक ব্যক্তি নিমাণ করে । এই কার্য্যে তাঁহার প্রায় कार्षि मुमु काय इहेशाहिल। अहे नमाशहे जिनि অপর ১৫ জন ব্রুজন ও ১৫ জন শুদু সেবক বা পরিচারক খ্রীদেবের দেবাকাষ্ট্রে নিযুক্ত করিয়া

িউক্ত শক মান্দর মধ্যে ইন্যাত্র প্রশাহত পোলিত ভাতে নিগাত আক্রেড ত্রোক স্থাঃ

> প্রাণ্ডের রাজ অভ্যুক্ত রাপ নিক্তনায়কে। প্রাণাদ - করেয়ানাসান্সজ্ভীয়েন ধার্যা।

ব্যয় বাহুলা করেন; এবং তদানীং নিতাবেবায় নানা ভাতীয় ভোগ ও নময়েহ যাত্রা এবং মহোৎসব করিবার নৃতন সৃষ্টি হয়। এই প্রবল বংশাভিমানা বভ্রমান খুর্দারাজ ব্যবহৃত মুর্দাদি পূর্বে
অনক্ষভীমরাজ কর্তৃকই সৃষ্ট হয়, তাহাতে এই লেখা
আছে, "বার প্রাগজপতি গৌড়েশ্বর নবকোটি
"কণাটোৎকলবর্যোশ্বরাধিরাই ভূতভেরবদেব
"সাধুশাসনোৎ-করণ-রাবতরাই জতুলবলপরা"ক্রমসক্ষামসহসুবাহু ক্ষত্রিয়কুলধ্র্যকেতু"।

আধুনিক উৎকল দেশীয় বাজিদিগের, সাবস্ত, মহারাজ, বরজেরা, পৎসহনি, বড় পণ্ডা প্রভৃতি যে দকল উপাধি শুনা যায় তাহা উক্ত রাজার রাজহ কলৌন দন্ত।

অনসভানের পুঞ রাজেশর দেব। তিনি ৩৫ বংসর রাজের করিলে পর ১২৯২ নংবংসরে রাজা নৃদিংছ দেব তাঁছার অবিকার প্রাপ্ত হন। ইহার উপাধি লম্বরা। ইহাকে অতি বিখ্যাত রাজা বলিয়া উড়িয়া ইতিহাসে বর্ণনা করিয়াছে।

মেজর পুরাট স্তেব স্থানত বাজালার ইতিহাস পুরে লেখেন, যে "এই রাজার রাজহ
কালীন ১২৯৯ সংবংসরে বহুদেশীয় মুসলমান
রাজা কতৃক উভিষ্যার আক্রমণ হয়"; কিন্তু এ
ঘটনার বিষয়ে ওড়ু দেশীয় কোন পুরে কিছু
মাত্র উল্লেখ নাই।

ভান্পাধিক শেষ রাজা সস্তানাসত্ত্ব স্থাতরাধিকারী স্বরূপ সূর্য্যবংশীয় রাজপুঞ্জ কুলোডব
কপিলশন্ত্র নামক এক বালককে দত্তক করিয়া
যান ৷ ভাহার খ্যাভিতে কপিলেন্দুদেবোপাধি
হয়। ১৫০৭ নংবৎসরে তিনি রাজি সিংহাসনে আবাঢ় হন ৷ সেতুবন্ধ রামেশ্বর পর্যান্ত তিনি
পরাজয় করেন ৷ ভাঁহার উত্তরাধিকারির নাম
পুক্ষোত্তম দেব ৷ তিনি কঞ্জিবিরাম প্রদেশের
রাজার কন্যা পদ্যাবভাকে বিবাহ করেন ৷ ভাহার
গভে প্রভাপজনমনি বা প্রতাপকদুদেব নামে এক
তন্য জন্যে ৷ পঞ্চবিংশতি বংসর রাজ্য করিয়া
১৫৫৯ নংবৎসরে পুক্ষোত্তম দেবের লোকান্তর
প্রোপ্তি হইলে প্রতাপকদু সৈতৃক সিংহাসনে আ-

এই ভূপতি মহাপ্রভু চৈতন্য দেবের প্রিয়পাত্র ছিলেন ৷ ১৫৮০ বৎসর পরে তিনি ২১ বৎসর রাজত্ব করিয়া ৩২ পুঞ রাথিয়া পরলোক যাত্র। করেন। সর্জ্যেষ্ট পুত্র পৈতৃক রাজ্য ৫ বৎসর শাসন করিয়া গোবিন্দ বিদ্যাধর নামক এক জন প্রবল প্রতাণশালী মন্ত্রীকর্তৃক হত হয়েন। অনন্তর দ্বি-তীয় পুঞা উত্তরাধিকার করে। দেও অন্য ৩০ জন জাতার বহিত মধু-প্রাচন্দু নামক মন্ত্রিপুঞ্রের इस्ड विनष्टे इया जदशात ज मखी : eb > म॰वद-নামে বিথাত হয়। ইহার সময়ে মুকুন্দ-ছরিচনদন ও জনার্দ্দন বিদ্যাধর নামক দুই জন খ্যাত্যাপন্ন वर्णक रुरेग्नाहिल। जनत्मस्य अरे जानिम वर्णकरे **এই দেশে ब्रिशेन इय्र। অञ्चिम वर्रक्ति यम्रिश बयूर** এদেশের রাজা হইতে পারে নাই তথাপি তৎপুঞ্ পৌআদিরা পরে রাজা হইয়াছিল। রাজা গোবি-ব্দদের আপন রাজত্বের সন্তম বৎসরে দশাশ্বমেধের बाट्टे आन भविजान करतन। उरभरत समार्पन

বিদ্যাধর মন্ত্রির কৌশলে প্রভাগতক্রনের রাজদিংহাদন প্রাপ্ত হন। তিনি বড় দুরা আ ছিলেন।
ক্রপ্তবর্ষ রাজ্য করিয়া হঠাৎ মৃত্যুগুনে পতিত
হন। এ রাজার কোন উত্তরাধিকারী না থাকায়
নরসিংহজেনানামা এক ব্যক্তি নিরতিশয় সাহলাবলম্বনে তাহার শুন্য দিংহাদনে অধিকার হইলেন। ইহার রাজ্যাবদানে মুক্ল-হরিচন্দন তৈলিক্ত মুকুন্দদের নামে প্রাদিক হইয়া ১৯০৯ বংবৎসরে তাহার সিংহাদন আরোহণ করে। দেশায় ইতিহাদ লেখনেরা কহেন 'বে ইহার বাহন ও ক্ষমতা বিজ্যাহায় ছিল ''।

টিকেন্থলর নাহেব নিজ গুল্পে লেখেন; "মু-কুন্দদেব উড়িব্যার শেষ স্বাধীন রাজা। তিনি অতি সুশাল ও শান্ত স্বভাব ছিলেন এবং তাহার চারি শত ভোগ্যা স্ত্রী ছিল"। বস্করাজ্যের শা-সনকর্ত্তা শোলেমান গুড়ান নামক আফ্গান্ ताज। व्यम-था रेमनामायस्य मः गुरुशृईक উড़िका দেশ আক্রমণ করিকে আসেন। তদুপলকে ভত্ততা রাজা এক দৃঢ় দুগু নির্মাণ করিয়া আত্ম পরিত্রাণে সুনিত্ত হয়েন। পরে বন্ধদেশীয় নেনাপতি কালাপাছাড় আনিয়া উড়িষ্যা পরা-জয় ও 🖺 मृर्ভि वहेशा नमूत्रु निक्कण क्रिशा **ष्यानक छेलपुर कात । এই বিষয়ে ইতিহাস লে-**থকেরা অনেক অনেক প্রকার কছেন তাহা পাঠক-वर्ग्यत्र अविषिठ नरह वाङ्ना ज्या विविधार्थ প্রকাশ করিলাম না। পুরীবংশাবলীতে লিখিত আছে, রাজা কোন কার্য্য বশতঃ থুদায় ব্যস্ত থা-कनः नगरः नहना चाक्नान् रमना कठेकताङ्कः चाक्रमावार्थ चशुनत रुहेश चा निशा श्रामाधिल (গৰণর) গোপীসাবস্ত সিহ্লারকে পরাজয় ও ভত্তত্য প্রাদাদধনাগারাদি লু্থন করিতে আরম্ভ করিলে, ताका मूक्साप्त ७९ममागत आखि ज्यार्ट्ट

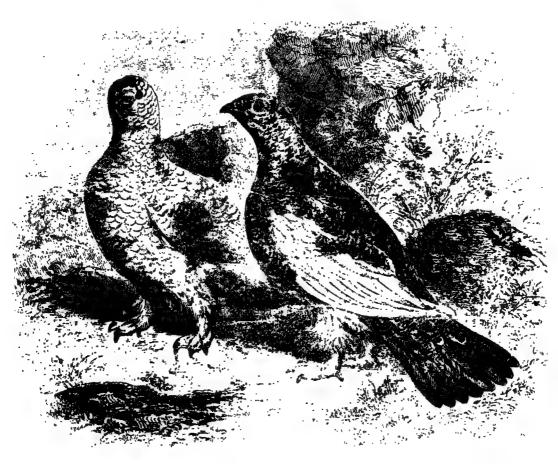
পলায়ন করিয়া অনতিবিলম্বে দিল্লীখরের রাজ্য মধ্যে গিয়া প্রাণ পরিভ্যাগ করিলেন। ওৎকল ইতিহাস লেথকেরা কহে, "যে এই রাজার মরশাস্তে মোসলমানেরা এই প্রকারে উড়িষ্যা রাজ্য
প্রাপ্ত তৎপর অধুনা তাহার বর্ণনা করাই
প্রাপ্ত তইলে পর তদীয় সেনাপতি রাজা মানসিংহ সমামান বাহুল্য; ব্যাঘু-বরাহাদির মৃগয়া-উত ম্তর্জার জে। ৪ পুঞ্

লামে বিখ্যাত হইয়া যবনদিগের অধীনতা শ্বী-কার করিয়া ১৮৫০ সংবৎসর পর্য্যন্ত রাজ্য করি-য়াছিল। তাহাদিগের কোন বিশেষ পৌরব ছিল না, অভএব কেবল তাছাদের নাম ও রাজ্যা-রখের বয় নিমে লেখা যাইতেছে।

₹			•	,	
डाम्प्रम् (पद		• •		<b>ন</b> ংবং	১৯৩১
भूकाद्वा <b>्म (भर</b>			• •	**	1996
লয়নিংছ দেব	B c ft	* *		,,	791-8
গঙ্গাধ্র দেব	• •			99	2422
स्कृत्य (प्रव				"	2686
দুৱ≀সি হ দেব	• •		• •	99	<b>&gt;92 2</b>
ুক্ত বা হরক্ষ দে	7			99	398b
भागोनाथ (५व				93	1902
ब्रामहसू (हर.	• •	5 4		-99	3948
বীরকিশোর দেব	• •	* *	• •	,,	2922
मृदर्शनःइ (मद		• •		59	2F85
मूक्ना (मव	• •		• •	>>	37-48

# हार्यिगान् शकी।

উক্ত মান্ত্রবর দলায়ী বিদ্যাধরের পুঞ বলাই- বিষয়ক-প্রস্তাবে তাহার যথাবিহিত উল্লেখ হই-রাওকে রামচন্দু দেব উপাধি দিয়া উড়িষ্যার রাছে। অপিচ এতদেশে তাহারা যে সকল জীব রাজাস হাসনে উপবেশন করান। তিনিই পুন-ুমুগয়া করিয়া থাকে,ভজ্ঞপ কোন জীব ভাহাদিগের ৰ্বার নিম্কাটে জগল্লাথ দেবের এমুন্থি মির্মাণ- 'স্বদেশে নাই। ব্যামু-বরাহাদির পরিবত্তে তথায় গুর্বক যথাশক্তে প্রতিষ্ঠাদিপূর্বক মন্দিরত নিংহা- হরিণ ও থেকশ্গাল-প্রভৃতি পশূপরি নিভর করি-লনে আরোপণ করান । কেহ্ ২ কহে রামচন্দু তে হয়। অপর সেই হরিণ-শৃগালও সুপ্রাণ্ড নহে; ্ত্রনেককে সূর্য্যাদয় অবধি সূর্য্যান্ত পর্যান্ত পরিশুম বে বাছ। হউক তাঁহারই বংশ খুর্দার রাজা করিয়া একটি থেঁকশৃগাল মারিয়া গৃহে প্রত্যা-গমন করাও দুর্ঘট হয়; হরিণ-শিকার-বিষয়ে ততোধিক পরিশুম। এই প্রযুক্ত বিলাভীয় ধন-বান ব্যক্তিরা আপন ২ অধিকার মধ্যে কতক ভূমি অর্ণাক্পে রাখিয়া তাহাতে বহুন ছ্থাক হ্রিণ প্রতিপালন করিয়া রাখেন, ও স্বেহ্নামত তা-্হাই শিকার করেন। পরস্তু সামান্যতঃ এ প্রকার निकाह क्नांग्रास প्राणा नरह, मुख्दाः व्यथ-काः म टाकित शक्त शक्ति-मृगंशा कताई अक माज গতি, ও उपर्थ ভিত্তির, বটের, বক, কাদাথোঁচা প্রভৃতি বিবিধ সুথাদ্য পক্ষীও বিলাতে অসায়াস-প্রাপ্য আছে। অপরপৃষ্টে যে পক্ষার প্রতি মূর্ত্তি মুদুত হইল, তাহা তিত্তির-জাতিজাত; পরস্ত তি-ব্রির অপেক্ষায় অত্যস্ত সুষাদু। তাহার অবয়বও অতি সুন্দর। তাহার পরিমাণ পুত্ত্ইতে চঞ্-शर्याष्ठ ३८ वृक्त मोर्च; **उद्याद्य शृ**क्ट ८ वृक्त। তাহার বর্ণ সর্বদা সম থাকে না; গুমিরকালে তাহার ্দেহ পাতাজ-ইপ্তকৰৎ রক্তবর্ণ, ও তদুপরি কৃষ্ণ-বর্ণের অসম রেখা থাকে, কিন্তু শীভকালে তৎ পরিবর্তে সমস্ত দেহ শুকুবর্ণ বোধ হয়। পুরি



টাহিগান পক্ষী।

नग्रताशित्र उक् शानक-हीन ७ উड्जून-इङ-বর্ণ-বিশিষ্ট। জ্রী টার্মিগানের বর্ণ পুংপক্ষিত্ইতে। অধিক পাতাক্ত ও কিকা বোধ হয়।

ৰভাৰতঃ টামিগান্ পক্ষিরা পার্বত্য-স্থানে বাস করিতে প্রিয়; কিন্তু নিকটে জলা বা শস্য-ক্ষেত্র প্রাপ্ত হইলে ভাহাই শেরঃ বোধ করে, मारिएगत्र काकनीएक भून कतिया ताएथ।

हार्मिशान् विकता जीश्वरव अकरत वान करत। क्षी **क्रीमिंगाम् टेक्ज मारम** ३३।३३० वा २० कि व्यस अनव कन्नक मानावधि की शूक्य फेडरम छन्-

কালে কেবল পক্ষোপরি কিঞ্চিৎ শুকুবর্ণ থাকে! । ভাড়কাক শিশু-টামিগানের বিশেষ শত্রু, কিছ স্বভাৰতঃ ভীত হইলেও অত্যন্ত বাৎসল্য ভাৰ-পুযুক্ত বৃদ্ধ টার্মিগানেরা অপত্য রক্ষার্থে শত্রু-দিগের সহিত যুদ্ধ করিতে তুটি করে না। কথিত बाह्य, 🗥 र सन्यर डाइमिर्गत नीर एत निक्षे আইলে টামিগান পকা ভথ-পক্ষ বা থঞ্জের ন্যায় হইয়া তাহার সমূথে আদিয়া পড়ে, ও ও তৎসান প্রাতঃকালে তথা অপরাক্তে আপ-িনে ব্যক্তি তাহাকে ধরিবার নিমিত্তে অগুসর इहेरल उथाइहेरड लम्फ मिया झानांखरत পएए; এবং পুনঃ ২ এই প্রকার ভণ্ডতা করত তা-शास्त्र वाशन नोष्ट्रेष्ठ विश्व पूर्व म्रेश গিয়া উভ্ভীয়মান হইয়া ৰন্থানে প্ৰভাগেৰন शति का मित्रा भगका छेर शासम करता अक श्रकात करता निर्मन-वामा-निर्वाणी वा शाईका केरिय

গণেরা মনুষ্যকে দৈবাৎ দেখিলে ভীত হয় না; কিন্তু যে ২ স্থানে মনুষ্ঠেরা টার্মিগান শিকার করিতে সর্বদা যাতায়াত করে, তথাকার পক্ষিরা অত্যন্ত ভীত, এবং মনুষ্য দেখিবামাত্র বহু-मृति श्रञ्जान करत, वर्षना कवन-मस्या नुकारिक হয়; এই প্রযুক্ত কুরুরের সাহায্য-ভিন্ন ঐ পক্ষী-দিগকে শিকার করা কঠিন। প্রস্তাবিত-পঞ্চির। मर्बनारे मूचापू, भत्रतु व्याचिन-माम्ति श्रात्रस्त তাহার বাদুতার বিশেষ উৎকর্ষ জ্ঞান, তজ্জন/ डे-बारकता ले नगरश गरा-नगरतार-পूर्वक छा-মিগান-শিকারে যাত্রা করিয়া থাকেন। কথিত আছে. কোন বিশেষ কর্মানুরোধে ইংরাজদিণের মহাসভা পার্লিয়ামেণ্টের বৈঠক ভাদু-মানে শেয না হট্যা আশ্বিন-পর্যান্ত ক্রমাগত হইলে অনেক সভোরা সভায় উপস্থিত থাকিয়া দেশের হিতা-হিত নিচার ও সদুপায় করা অপেকা টার্মিগান্-मृशः (मुझः मानिया उपर्थ अलीगुारम अञ्चन कर्त्व ।

#### ভারতচন্দু রায়।

বা বাণিত কাব্যের বিচার বিশেষ

রার প্রণীত কাব্যের বিচার বিশেষ

রার প্রণীত কাব্যের বিচার বিশেষ

কাত দুল্ল ব্যাপার। রায়-ওণাকরের প্রতি লোকেরের যে প্রকার অনুরাগ ও শুদ্ধা, তাঁহার প্রতি
প্রতিবাদ প্রকাশ করিলে লেখকের প্রতি লোকে

নহজেই বিপক্ষ হইবেন; এবং তাঁহার যশোবর্ণন কালীন বিচারকর্ত্তার অভ্যন্ত নাবধান ও

দতক হওয়া বিধেয়। ব্রুমান কাল ক্ষিক্লের
প্রতি অনুকুল না হইয়া বর্প্ণ কাব্যের বিচারের

সময় এক প্রকার বলিলেও বলা যাইতে পারে,

অতএব এ সময়ে এতদিবয়ে লেখনী ধারণ করা-তে লোক-সকল অবশ্যই ইহাতে নয়নাস্তঃপাত করিতে পারেন।

এ দেশের কবিদিপের জীবন-চরিত প্রাপ্ত হওয়া অতি কঠিন, অতএব রায় গুণাকরের বি-শেষ বৃত্তান্ত আমরা লিখিতে পারিলাম না। তাঁহার পৌল প্রীযুক্ত তারকনাপ রায় মহাশয় অধুনা মূলাজোড়-গামে বাস করিতেছেন, তাঁহার সহিত অম্বদাদির আলাপ থাকিলেও রায় গুণাকরের জীবনের কোন ২ অংশ বর্ণন করিতে পারিতাম। একানে কেবল তাঁহার সকরক্মলাক্তি-বচন-রচনার প্রমান ও যথাক্রতে কিম্বন্তী অনুযায়ী এ বিষয়ে কিঞ্চিন্মাত্র লিখিতে সক্ষণ্ণ করিতেছি।

ভূরিশিট পরগণায় ভারতচন্দু রায়ের নিবাস ছিল; তাহা বদ্ধমানের পশ্চিম অনুমান বিং-শতি ক্রোশ অন্তর হইবে। তাঁহার পিতার নাম নরেন্দুচন্দু রায়; লোক সমাজে তিনি রাজা নরেন্দু রায় নামে প্রসিদ্ধ ছিলেন। তাঁহার কৌলিক উপাধি মুখ্যোপাধ্যায়; ইছা রায় গুণাকর স্বপ্রণিত-গুম্বে স্পষ্টই পরিচয় দি-য়াছেন,

"ভূরিশিটে মহাকায়, ভূপতি নরেন্দ্র রায়, মুখটি বিখ্যাত দেশে দেশে। ভারত তনয় ভার, অশ্বস্কৃমকল সার, কহে কৃষ্ণচন্দ্রের আদেশে।।"

মুর্নিদাবাদের নবাব আলিবর্দির সময়ে রাজা নরেন্দু রার বর্তমান ছিলেন। তিনি বার্ষিক তিন লক্ষ-মুদুা রাজৰ প্রাপ্ত হইতেন; এসময়ের চলমা-নুসারে বোধ হয় ভাহা নব লক্ষ হইতে পারিত। রায় গুণাকর এই অতুল ঐশর্যের অধিকারী হইয়াও ভাহা ভোগ করিতে পারেন নাই। কীন্তিচন্দুরায় বল-প্রকাশ-পূর্বক তাঁহাকে রাজ্য-চুত করেন, এবং ভল্লিমিন্তেই তিনি মহারাজা কৃষ্ণচন্দু রায়ের আশুয়ে বাস করিয়াছিলেন। নবদ্বীপাধিপতির রাজ্যের প্রতিও কীর্তিচন্দু রায়ের বিলক্ষণ দৃষ্টি ছিল, কিন্তু চতুর চুড়ামণি কৃষ্ণচন্দু আশ্বীয়তা-পূর্বক তাঁহার করাল-গ্রাস-হইতে রাজ্যাধিকার রক্ষা করিয়াছিলেন।

এ রূপ কিম্বদন্তী আছে, যে বিষমামি \*
রোগে তিনি পরলোক প্রাপ্ত হয়েন। মহারাজ
তাঁহাকে রোগমুক্ত-করণ-নিমিত্তপরম-যতু-প্রকাশ
করিয়াছিলেন, কিন্তু কোন প্রকারেই তাহাকে কালের করাল-গুনুসহইছে রক্ষা করিতে পারেন নাই।

রায় গুণাকরের জন্মপত্রিকা প্রাপ্ত কঠিন, এবং ভাঁছার পুঞ জাবিত থাকিলেও বাবিক ক্রিয়ামার। মৃত্যুর দিবস স্থির হইতে
পারিত। অতএব ভাঁছার পৃথিবীতে অবতরণ ও
ভাছাহইতে জালা-সম্বনের সময় আমরা স্থির

করিতে নিতান্ত অক্ষম; এই মাত্র বলা যাইতে পারে, যে তিনি ১৯৭৪ শকে প্রনিদ্ধ অল্লামন্ত্রন স্মাপ্ত করেন, † গণনায় তাহা পলাসির যুদ্ধের তিন বংশর পূর্ব হইবে, এবং অধুনা
এক শত বংশর অতীত হইয়াছে।

बहे गुष्ठ पूरे था विख्य, श्रथम था '' व्यवपान महत्त,'' विछोत्र था '' विपान मुक्त अ मान मिर्म् ;'' क्वाफ मग्छ-गुरम् ताम मग्या । कि र र मग्यान श्रम् क्वापान क्व

"দুই পক্তে কহিনারে পুথি নেড়ে যায়। ব্রিনে পণ্ডিত চোর পঞ্চাণী চীকায়॥" বিদ্যাসুন্দর।

কেহ ২ বলেন চোরপঞ্চাশত কাব্য সুন্দর কর্তৃক প্রণীত; তাহার এক নাম চোর কবি, এ কারণ তাহার রচিত কাব্য চোরপঞ্চাশত-নামে প্রসিদ্ধ হইয়াছে; এ বিষয়ে এক প্রাচীন প্রমাণ আছে;

"কবিরমকঃ কবিরমরঃ কবিলোরমযূরকৌ।" কবি অমৰু, অমরশতক কর্তা বলিয়া কেই ২

<sup>\*(</sup>১) বৈদ্যক পাত্রমঞ্ উদরাগ্নি ও প্রকার, যথা, মন্দাগ্নি, সমাগ্নি, ও বিষমাগ্নি।

<sup>†</sup> বেদ লয়ে থবিরসে বুজা নিরুপিলা। সেই শকে এই গীড ভারত রচিলা।।
স্কিলামকল খানসিৎছ।

কণ্ণানা করেন, কিন্তু এ ৰূপ কিম্বন্তী আছে, যে অমক নামে রাজঃ ছিলেন, তাঁহার সমক্ষে শঙ্করাচার্য্য ঐ পুস্তক প্রস্তুত করেন। কবি অমর, সম্ভবতঃ অমর্নিংহ, তাঁহার কৃত অভিধান সর্ব-ত্রই প্রক্রিল আছে; তিনি নবরত্বের মধ্যে এক রত্ব ছিলেন। কবিচোর সুন্দর, এবং কবিময়ূর, ষোধ হয়, রাজা ময়ুর বর্মা হইবেন। ময়ুর বর্ম চরিত্রে যাঁহার বৃত্তান্ত 'বিবৃত হইয়াছে, তাঁহার অপর নাম শিথিবর্মা।

> ি চিরকাকে গতে করা বিথিকর্মক্তঃ স্থীঃ। চন্দুগগদ জাতি লাভেঃ বিচারমককোরেদ। দ্বা ভরুর সক্ষাদু ক্ষেত্র

অমকশতকের বাঙ্গালা অনুবাদ এ পর্যান্ত প্রকাশ হয় নাইঃ শতক-সমূহ-মধে। কেবল শা-স্থিশতকের ভাষাত্তর দৃষ্ট হয়। অমর-কৃতাভি-ধানের দুই থানা অনুবাদ দেখিতে পাই; প্রথম 'শব্দসিদা,'' দ্বিতায় 'শেককপালতিকা''। তন্মধ্যে শেষোক্ত পুত্র প্রীযুক্তজগন্নাথ প্রসাদ মলিকের কৃত। চোরপঞ্চাশত কাব্য, নন্দ কুমার কবিরতু বাঞ্চালা ভাষায় পদ্যভ্**দে অনুবাদ করেন, যাহা অধু**না भूर्व**र**न्दुनिय ७ रिज्ञन्। **रन्दा**न्य य**ःख मृ**न्ति অল্লদামকলের মধ্যে প্রবিষ্ট হইয়াছে। কবিরত্ত-ক্ত চোরপঞ্চাশত কাব্য বহুকাল মুদ্তি প্রযুক্ত একণে অপ্রাপ্য হইয়া উঠিয়াছে, কিন্তু যাঁহা-দিগের রচনার দোবগুণবিচার করিবার ক্ষমতা আছে, তাঁহাদের কবিরত্র "প্রণীত-কালী-কৈবল্য-मात्रिमो " " ६ छक-दिनाम " अङ्कि शुरञ्ज इक नाइ महिত क्षेका कहिताई हेशाइ ख्वाख्व समझस्म হুইবে। যাহা ছুট্টক, চোরপঞ্চাশত কাক্সের বাজা-লা অনুবাদ রায় গুণাকর প্রণীত নছে। অল্লা-মজল ব্যতিরিক্ত তিনি রসমঞ্জরী ও সভ্য নারায়-(भन्न कथा त्राचन करत्रन, किंख (भरवांक भूरहन्न नाम

প্রায়ঃ অনেকেই অবগত নহেন, যেহেছু নচরাচর নত্য নারীয়নের কথা যাহা শুবণ করা যায়, তাহা ভারতচন্দ্রীয় নহে।

) कार्वा )११९ नव।

श्रीरतियार्न तन ७४।

# দেশীয় পাুক্ত সৌঠব।

्रिक्टिकिकिकिकि भीवारम या **श्रमात श्राहा मरहाश ह**न्न. ্রী কলিকাতায় ভদ্রপ শৃষ্তার প্রতাশা করা শ্রিষ্টের পারে না: ও কলিকাতার সৃষ্ঠা ্রিক্রাইট্রের ইপুরে নাই। অপর কলিকাতার সন্নি-करते (य मकल शर्स, शर्का, गरा, कल, पुल्लांकि ज्हेज्ञ, তভাবৎ কাশীতে সম্ভবে ন: ও চাশার পাপ, পক্ষী, भग, कत, श्रुक्त, कान्तित जूना नरह। अहे श्रकाता **७०-**পত্তি ও সৃস্থতা বিষয়ে প্রত্যেক দেশের আবান্তরিক ভেদ আছে। ঐ ইতর-ভেদ-বিষয়ক দেশের অসাধারৎ ধর্ম कालनार्थं "প্রাকৃত সৌষ্ঠর" भव् राउसा हहेन। দেশ-ভেদে প্রাকৃত নৌভবের **ভিন্ন**তা হওয়াতে **পৃথি-**বায় প্রমোকার **সিদ্ধ হ্**ইয়াছে। যদাপি করণা**ময় প্রম**্ পিতা সমৰ পৃথীৰ প্ৰাকৃত ৰৌষ্ঠৰ সমান কৰিতেন, তাছা इत्रेंद्र अहे कर्ष ए धनोड़ बाबाकाटीत कल श्रक्षापि नह्यां क्रिया धाकि, टाका कमाश्रि मध्य क्रेंड मा। এতদেশীর-ব্যক্তিদিগের মতে 🐗 প্রাকৃত সৌষ্ঠর জল ও বায়ুর প্রতি নির্ভর করে; এই প্রযুক্ত সামান্য কথায় কোন দেশের সৃত্তাদি গুণ বর্ণন করিতে হইলে, লোকে ডা-হার জল "বাভাদ (আধ হাওয়া) ভাল" কহিয়া থালে। জল বায়ুর ক্রমে যে দেশের প্রাকৃত সৌষ্ঠবের ভেদ इस् इंड! अवना बीकात कतित्त इहैरव, किस हें हा मार्ख्या, মে দেশের অবস্থা-ভেদে জল-বায়ুর অনাথা হয়, অভ-এর সেই অবস্থাই প্রাকৃত-সৌষ্ঠব-ভেদের আদিকারণ, ক্রল বায়ু লক্ষণ মাত্র। পর্বতোপরিস্থিত দেশ অবশ্যই অনাত্রহাতে পৃথক হটবে ইহা উল্লেখ করাই বাহলা। शनार्वविषाय शावनभी प्रशामत्यका तमाय श्राक्ज-ती-গ্র-ভেদের অন্ট কারণ নির্ণয় করিয়াছেন, তদাধা; ১, দ্রোতাপ; ২, সমুদ্-জলনীমাহইতে উচ্চতা; ৩, সমুদু-रेनेक्टा; ६, मिश्राक्टम हानुका; ৫, शर्बाक; ७, प्रुक्तिका; ৭, চাল; ৮, বায়ুর বিশেষ গতি।

 गृ(र्य) स्वाभ-(७८५ (मरणत প्राक्ज-वृद्धत व्यन) था इय, हेरा जनायात महत्व; शुक्षायशलाह होत् उ मीज-মণ্ডলের হিম ও দীর্ঘ রাত্রিতে তরু, পুষ্পা, পশাদির সমতা ছউবে, ইছা কোন মতে বিশ্বাস যোগা নছে। সূর্যা-কিরণ সুধ্যহইতে ঋজুভাবে বিকাণ হয়; টিক মন্তকোর্ছ-হউতে আগত ঐ ঋজুকিরণ-ল্পে পৃথী বিশেষ উত্তপ্ত হয়, সৃতরাপ যে সকল স্থান উক্ত ঋজুকিরণ প্রাপ্ত হয়, ভাষা অন্যতাপেকায় উষ্ফ ইটয়া থাকে। বুণার্ নামা এক বাক্তি করাদ স্পণ্ডিত গণনা করিয়। ছির করি-য়াছেন, যে মগাছ-সময়ে সূর্যা যে স্থানে টিক মস্ত-কোপরি থাকে, ডদিগে ১০,০০০ কিরণ সূর্য্যইতে আনত হউলে তাহার ৮১২৩ টি কিরণ তথার উপনীত হয়, অনশিষ্ট কিরণ বায়ুতে লুপ্ত হয় ৷ লুব্য মন্তকো-পরি না হটয়া ৫০ অংশ ঢালু থাকিলে সেই স্থানে ৭০২৪ টি কিরণ-মাত্র আগমন করে; সূর্য্য ৭ অংশ एान् इहेल १४०० है किंवन उथाय आहेत, अ मुर्वा रमडे द्वार्तित ठळताल शाकिल ১৯৯৫ টি कित्र वार्ष बहेश क्वान अविविद्य शांक्षे किवन उष्चात्न ममा-शत र्य। अयुनानु-तृख्यय्-प्रशाह मकन स्वान वर्माद पूर्वे-বার করিয়া সূত্যদেবকে টিক মন্তকোপার প্রাপ্ত হয়,অপর শূসা অভান্ত চালু হটলেও ঐ ঢালুডা ৬০ অংশের न्। न इरा ना, এই প্রযুক্ত পুর্বেক্তি কারণানুসারে ঐ বৃত্তহের मशाम् मान मर्खाएभक्तांग उष्ट शारक। उक वृद्धपरात বহির্দেশে সূর্য্যদেব কদাপি টিক মন্তকাপরি হন না, मर्क्षना होलू थारकन, मृठद्रा ७ उत्तरम्य कान काल-ও অয়নাম্ত-वृक्त-प्रधास्-सारनव जूला उक्त रहा ना। जाभव নিরক্ষর্ভাইতে দেশ-সকল যত দূর হয়, ঐ চাল্ভার ততই বৃদ্ধি হয়, অতএব ঐ ঢালুতানুদারে তত্তদেশের উষণ-তার হ্রান হয়। দূর্যাদের নর্ম্না নিরক্ষরুত্তের টিক উপ-রিভাগে ভুমণ করিলে এই নিয়মানুদারে কেন্দু-নিকটস্ক স্বান-সকল এমত শীতাক হইত, যে তথায় মনুষ্য बाम कतिएक भातिक ना। अहे मारिषत नित्राकत्वार्ध न्द्रीत खर्भ रहेशा धारक, छत्राता त्कमु-निक्षेष्ठ श्रान उन्नह्य रहेगा मन्यायात्मत्र (याना रहा (य ममद्र দুর্ঘ্য উত্তরায়ণান্ত-রুন্ডোপরি আইনেন, তৎকালে উত্তর- तक्तु-निक्षेत्र-कात्र, निवामान खिथिक, ७ ताविमान खङ्ग रत । वे निवाजाता श्वियो य शतिमात मूर्यगाखाश

পারে না, সূতরাশ প্রতাহ গ্রাঝের সঞ্চয় বৃদ্ধি ভউতে খাকে, ও তৎসাহায্যে শস্যাদি উৎপন্ন হয়। ৭০ অংশস্থ-शास बारहारत श्रामत्म अहे श्रकारह शुक्रिकारम जालमान যন্ত্রের ৮০ তাপাৎশ গ্রীয় হইয়া থাকে। অপর সূর্য্য দক্ষি-भावत्व याजा कतित्व क्रमणः पिवामान कत्र, ও ताजिमान অধিক হইতে থাকে, তথা ঐ রাত্রিতে সঙ্গুহীত শীতলতা खन्नमान-मिवत्मत উश्च्ठात खनाशात्म श्वर्भन कतिया नीत्रत বৃদ্ধি করিয়া থাকে। শীতগুলিয়ের এই কারণ; এবং এই কারণেই সর্ব্রে ঋতুর ভেদ হয়।

१। मिट्या श्राकृत मोछेद एउटमद बिठीय कार्न, ममून-জলসীমাহইতে তাহার উচ্চতা। যে দেশ সমৃদু-জলসীমা-সূতরাণ ভাহার প্রাকৃত সৌতবেরও ভেদ হয়। নিরূপিত হইয়াছে, গ্রীয়ুমণ্ডলে, যেথানে দুযোগালাপ অভান্ত প্রথর, তথায় সমূদ্-জলদীমাহ উতে ১০,০০০ হয় উচ্চন্থান এতাদৃশ শীতল যে তাহাতে প্রায়ঃ চিরকাল বরফ থাকে।

৩। সমূদু অতিশাঘু শাতল বা উফ হয় না; উষণ-বায়ু তদুপরিভাগ দিয়া প্রবাত হউলে জলহিলোল-লুশে শীঘু भीउन रहेरा यात्र, उथा भीउ तात्रु उदझटमं से खटनत उक्षठा প্রাপ্ত হইয়া স্বয়ণ উষ্ণ হয়, কিন্তু জলকে আন্ত উষ্ণাবা 🕆 भोजन कतिरंड भारत ना। शिक्षातन ममसु कन आस्मा-লিত থাকাতে শীত বায়ু তাহার একাণশ বছকাল স্নৰ্শ করিয়া থাকিতে পারে না, কারণ প্রতিক্রেন্তন উষ্ণ জল উটিয়া ৰায়্র শীতলতা হ্রণ করে। ভূমি সঞ্জদা আন্দো-লিও হয় না, বারির ন্যায় উফতা চালনেও অশক্ত নছে, শৃতরাপ তদুপরি কায়-গ্রমন-ক্মায়ে কেই ভূমি অনায়াকে তাহার ধর্ম অপহরন করে। এই প্রযুক্ত সমসূত্রে স্থিত দুই প্রদেশের যে স্থান ভূমিতে বেকিত তাহাতে যে প্রকার অত্যন্ত শীভ ও গ্ৰীষ্ম ঘটিয়া ধাকে, সমুদু-বেটিত স্থানে তাদৃশ অত্যন্ত ঘটে না: কুনুদাপ গ্রীম্মকালে কদাপি -অত্যন্ত উষ্ণ, বা শতিকালে অত্যন্ত শতিল, হয় না; সন্তদ্য অন্যত্তাপেক্ষায় সমভাবে থাকে। কলিকাতা ও আকৈরি-কার মধ্যদেশ উভয়েই সমস্তে আছে, কিন্তু কলিকাভার निकटि ममूनु श्राकारः चाकतिकातं मधारम्य याम्न शुरिवाद প্রথরতা ইহাতে তাদৃশ প্রথরতা অনুভ্ত হয় না। সমুদু-বায়ু শীতণ হইবার যে কারণ উক্ত হইল, ভতিন অপর এক কারণ আছে। উক্ত বাবু সমুদ্র দিয়া আলিবার সময়ে मनूर करत, अनुमान-त्राजित्व केवादर भीवन इहेरक वास्भात महिक मिक्षित इवक भीवन इहेता बाहेरम; सद्

ভূমুপরি প্রাত-ছওন-নময়ে তাহার বান্ধা ভূমিতে শো-,ষিত হইয়া স্বয়ণ গুরু ও অসহা উফ হইয়া উচে।

৪। পৃথিবাপরি দ্যা কিরণ পতনের যে নিয়ম উক্ত হইরাছে, তাহা বিবেচনা করিয়া দেখিলে অনায়াসেই বোধ হইবে, যে দেশের চাল্তানুসারে তাহার উষ্ণতার, তথা প্রাণ্ড ধর্মের, ভেদ হইতে পারে। যে দেশ পুর্বাদিগে ঢালু তংহাতে অগিক রৌদু নিপতিত হয়, সূতরাণ ভা-হার উষ্ণতা অগিক; পশ্চিমদিগে ঢালু দেশে রৌদু প্রথর হয় না, সূত্রাণ গ্রিয়ের অল্লভা ঘটে। এই প্রযুক্ত আল্ল লামক পারতের উভয় পাশ্বন্ধ ভূমি সমোদ্ধ হললেও বে স্থান্য গার্মের পারতের হিম্পালার মন্তিত থাকে।

ে। পর্ক্রছারা দেশীয় প্রাকৃত ধর্মের অনেক প্রকার অন্যথা হয়। তদ্বারা বায়ৃদ্ধ বাদপ আকৃষ্ট ইইরা প্রভ্ত বৃদ্ধিকপে পর্ক্রতন্ত্রস্থান করে, ও উন্থাপকে প্রভিন্নিয়া করে, ও উন্থাপকে প্রভিন্নিয়া হইরা দূরে যাইতে নিবারণ করেয়া উক্ষতার বৃদ্ধি করে। এই প্রয়ুক্তই উপত্যকায় বৃদ্ধি ও গ্রীষ্ম অধিক ও করের অন্নতা। অপর কৃদিয়া ও দিবিরিয়া দেশের উন্থার কেনি পর্ক্রেশী না থাকাতে হিমমন্তলের প্রকার করে, ঐ সকল দেশের সমসূত্রে দ্বিত জনা দেশে ভ্রমণ ভ্রমণ ভ্রমণ প্রকার কিনা দেশের সমসূত্রে দ্বিত জনা দেশে ভ্রমণ ভ্রমণ প্রকার কিনা দেশে ভ্রমণ ভ্রমণ ভ্রমণ ক্রমণ অনুভ্র হয় না।

১। মৃত্তিকা কর্মান্ত কমত্বা নহে; কোন মৃত্তিকা প্রাচ্ব সংল্কাকি শিক্ষা; ভাষাতে বৃষ্ঠির জল পাছিকেই শোষিত হর্মান পাথা-গর্ভে ইলিয়া মায়, ও ভাষা রৌধ্রে আতি শাখু উন্ধন্ধ ধ্রীয়া তত্রতা বায়ু উষণকরে। আফরিকা দেশের বালুকাক্ষেত্রই তথাকার ভয়ানক উষণভার কারণ। অনা মৃত্তিকা কর্মানক ভাষাতে জল পাছিলে শালু ভাষ্ক হয় না, ও শুনাকিরণে সেই জল বাশার্কে পরিণত হইটা তথাকার বায়ুকে অসুষ্ক্রমক করে। শবন বিশিক্ষা মৃত্তিকাও অস্থান্তাকর।

া ক্ষি-কাহো দেশের নৌষ্ঠব-রৃতি হয় ইছা বর্ণন করাই বাজ্লা। অক্ষিত ভূমি বন-জন্ধনে সমাকার্ণ, ভত্রভা নদী-সকলের তট ভগ্ন হইয়াও ভদ্মারা বন্যার জল ভূমিতে বিস্তুত চইয়া দুর্গতি বাজা উৎপন্ন করে; ভথার সূত্রভার হানি অবশাই সম্ভবনীয়। মানব-পরিভানে ভূমি ক্ষিত হইয়া রৌদে তত্ত্ব হয়, বন-জলল পরিষ্কৃত হয়, নদীর ভট বন্ধ হয়, পুনানা প্রকারে দৌওব-র্তির সন্ধার সংস্থান সংস্থান পিত হয়। পরস্ক বন কাটিবার নিরম আছে, যে স্থানের বনে অনিটকর বান্ধু আসিতে নিবারণ করে, তাহা ক্ষেদন করা কোন মতে প্রেয়ংনহে। কবিত আছে, প্রীস্দেশের সমস্ক বন কাটাতে তত্ততা সূত্তার হানি হইয়াছে।

৮। পুর্বেই উক্ত হইরাছে, বারু যে প্রদেশ দিয়া
ভূমণ করে, তদৰুসারে ভিন্ন ধর্মবিশিকী হয়। সমৃদাগত
বায়ু শীতল, মকুভূমাগত বায়ু উফ.ও পার্কাতা বায়ু ক্তব্ধ
ও শীতল, অতথ্য ইহা অনায়াদে অনুভূত হইতে পারে
যে, বায়ুর আগমন দিগনুসারে প্রাকৃত-সৌষ্ঠবের ভেদ
হইবে। যে দেশে সর্কাণ সমৃদু-বায়ু প্রবাত হয় তথাকার
বায়ু সর্কাণ অনাজাপেকায় সমভাবাপয়; কদাপি ভজ্তা
লোক দুক্রা শীত বা অসহা গ্রীয় ভোগ করে না।

প্রাকৃত দৌষ্ঠবভেদের যে সকল কারণ প্রদর্শিত হুউল ভয়াধো উফভাই প্রধান; অনা দকল কারণ প্রায়: ঐ উষ্ণতার ভারতমা ঘটাইয়াই প্লাকৃত দৌষ্ঠবের ভেদ সমূম করে। ঐ উফতার উর্ছ-দীমা নিরক্ষ-বৃত্তের কিঞ্চিৎ উত্তরে স্থিত। তথাহউতে যত উত্তর রা দক্ষিণদিনে অগ্রবর্ত্তি হওয়া যার তত সূর্বাকিরণের ঢাল্ডা ও হিম-কেন্দ্রের নিকটতা প্রযুক্ত ক্রমশঃ উষণভার হ্রাস হ 🗥 তাপমান যন্ত্ৰারা "এই হাস বৃদ্ধি নিরূপিত করা যায় ৷ ঐ হয়ধার! উক্ত উর্ঘুদীমার উফতা ৮৪ তাপাশে নির-পিত হইয়াছে; অর্থাৎ প্রত্যন্ত ঐ মন্ত্রে উফ্তার ফে তেদ দৃষ্ট হয় ভাষার বার্ষিকাড় ৮৪ ভালাণ্শ। এই গড় निव्रभगार्थ প্রতাহ ने यद्ध य मकन जान मङ्गा पृष्टि করা হায় তাহা একত করিয়া যে কএক বার দৃষ্টি করা ষার তৎসঙ্থা দিয়া পুরু সমন্টির হরণ করিতে হর; তম্বারা আছিক গড় নিরুপিত হর। পরে এক বংশরের नमस আহিক গড় একর করিয়া ৩৬৫ দিয়া হরণ করিলে বার্ষিক গড় নিরূপিত হয়। ভদাধা; बनाপি প্রাতঃকাদে তাপমান-যান্তে উফতা १; वर्ण चण्डोत नमत्र १३, ब्रूट প্রহরের সময় ৮:: मूरे প্রহর চারিটার সমর ৮0; G সন্ত্যার সময় ৭৯ হয়; ভাহা হইলে নিম্নে লিখিক অকা-नुजारत आहिक १६ ११ † जाशायम 🗲 ‡ बणक हरेरद।

শতকারোধনী পরিকার ১০২ সর্ব্যায় ঐ ভাগমানী বঙ্গের বিবরণ প্রকটিভ আছে।

<sup>া</sup> ভাপাংশ জাপনার্থে সঙ্খ্যার উপর (•) এই প্রকার চিত্রু (1) ও ভাছার দশাংশের আংশ জাপনার্থ এই প্রকার (<sup>2</sup>) চিত্র দেওরা যার।

-			
श्राच्यकारमः	h *	92	,46
১০ টার সময়	• •	98	
১২ টার সময় • •		-	
৪ টার সময়		F-0	
শন্ত্যার সময়	• •	. 42	
শম্বি	•	OF 2	*
मुख्यित्र मङ्ग्या	e)o		n\$
	•	) <b>¢</b>	
	-		
	•	2	
	•	00	ing.
	8	, 0	
	8	3 •	
	-		
	•	9	

মাদিক ও বার্ষিক গড় ও এই প্রকারে নিরূপিত হয়। যে সকল দেশের উষ্ণভার বার্ষিক গড় তুলা শাক্তে काश्मित्रातक "मममृजब्रम्" नत्य विशान करत । शतुः हें अर्खता ता, पूरे मिल्यत वार्तिक गढ़ जूना रहेलाहे তাহাদের শীত্রীয়া তুলা হইবে, এমত নহে; অতাত্ত গ্রীয়া ও অত্যন্ত শীতের গড় ও মাধুর্য্য গ্রীষ্য্-শীতের গড় তুল্য হইতে পারে; অতএন প্রত্যেক দেশের গ্রীষ্ক্ষণর উষ্ণতার গড় ও শাতকালের উষ্ণতার গড় নিরপিত না कत्रित्न जाहात প्रकृष व्यवद्या द्वित्रीक्ष इस ना। अह निमित्र भगार्वविगावादमाशिता वे छिन श्रकात गए नित्र-পিত করিয়া থাকেন। মানচিত্রে "উষ্ণ-সমন্ত্র," "গ্রীয়ু নমসূত্র' ও "শীত-সমসূত্র' এই ডিন প্রকার সমসূত্র আছিত হইয়া থাকে। পূর্ব্বকালে অনেকের বোধ ছিল, ষে যে সকল দেশ এক অংশরেথার উপর স্থিত আছে, ভৎভাৰতের উঞ্ভা ভূলা, কিন্তু দে ভূম মাত্র; লমস্ত্রের मानिहत्व वृक्ति कतिरम जादा ब्रक्ति वाक इदेरव।

পুর্নেই উক্ত হইরাছে, সমস্তাহ-দেশের শীত গ্রীরা সর্ক্রা জুলা এমত নহে; দেশ ও অবহা ভেনে কোন ২ সমরে অভ্যন্ত শীত বা গ্রীয়া হইলেও সেই দেশ মাধুর্যা-শীত-ব্রীয়াবিশিক্ট দেশের সহিত সমস্তো অবহিত হয়। কলিকাভার অভ্যন্ত-গ্রীয়া-সমরে উক্তভা ১০০ ভাপাণ্ডলের অবিক ও শীক্তকালে ৫০ ভাপাণ্ডলের নান হর না। পিকিন নগরে গ্রীয়াকালে ১১০ ভাপাণ্ডল উক্তভা ঘটে,

অথচ শীতকালে সর্ব্রে বর্ষে আর্ত হইরা উষ্ণতা ৩০ তাপা॰ শ হয়। ভারতবর্ষের স্থানে গুলিবলালে উষ্ণতা ১০০ বা ১১৫ তাপা॰ শ হইরা থাকে, কিন্তু শীতকালে ভথার বর্ষ পড়ে না। আফরিকার মর্ভুমিতে উষ্ণতা ১২ লুট হইরাছে; ঋতুর ক্রমে, বোধ হর, তাহাত্ইতে অধিক উষ্ণতা কুরাপি দৃষ্ট হর নাই। শীততা বিষয়েও এই প্রকার ভেদ আছে; অনেক স্থানে সমস্ত্র শীতকালে জল জমিয়া থাকে। শিবিরিয়া-দেশে পারদ ক্মিয়া যার; কুইবেক্ নগরেও ভক্রপ ঘটে। হড্সন্ হুদের তটে পারদ তাপমান যন্ত্রের শন্ন সঙ্খা হইতে ৫০ তাপা৽ শন্ন উষ্ণতা হইয়াছিল। সুমের্ল-সমূদ্রে কাপ্তান পারী সাহেব উক্ত যন্ত্রের নান সঙ্খাহইতে ৫৫ তাপা৽ শন্ন উষ্ণতা সহা করিয়াছিলেন্।

বায়ুর গতি-বর্ণন-সময়ে উক্ত হইয়াছে, পৃথিবীর উত্তরার্জ অপেক্ষায় দক্ষিণার্জ শীতল; এবং তদর্জে সমৃদ্রের আধিকা ঐ শীতলতার কারণ বলিয়া গণ্য হইল্যাছে। পরস্ক তদ্ভিম অপর কারণও আছে। সূর্যাদের নিরক্ষরতের উত্তরায়ণ অপেক্ষায় দক্ষিণায়ণের কাল পি দিন অক্ল; তর্জেরুক দক্ষিণ ভাগের উষ্ণতার হানি হয়। অপর দক্ষিণ ভাগের সমৃদ্রের বিস্তাপতার হানি হয়। অপর দক্ষিণ ভাগের সমৃদ্রের বিস্তাপতান প্রযুক্ত কুমেরু সমৃদ্রের বরক সমৃদ্রেশ্যুতে বিকীর্ণ ইইয়া ভ্তাগের সমৃদ্রইতে বরক আদিবার তাদৃশ সদ্পায় না ধাকা-প্রযুক্ত উক্ত ঘটনা সম্ভবে না। পৃথিবীর উত্তর ও দক্ষিণাতে উষ্ণতার কি পর্যান্ত ভেদ আছে, তাহা নিম্নেপ্রকটিত হইবে।

অপশ রেঝা,	₩Ţ,	<b>श्</b> शिवीद	পৃষিবীর
		मक्रिगारकंत्र शक्,	উত্তরার্কের গড়,
্ব অবধি ১৪	श्रीबा,	₽× 8'	٣٥٠ ٥'
<b>A</b>	ৰৰ্মা,	P2. 4,	124, 17
29	3° শীত,	&&* 88'	62, 15,
83	o° श्रीया,	62° 06'	٥8°, ٩٥'
81	न वे	88° 5'	'60°, 66'
¢1		80° 56'	45°, 5
কেহ ২	কহিয়া ধা	रकन, ख भृषिव	क्रिमः नोजन
			AND REAL PROPERTY AND PERSONS ASSESSED.

\* ভালয়ান বন্ধ নানা প্রকার ছইয়া থাতে, ভ্রাথ্যে পার্ক্ত ভালয়ান বন্ধ ও স্বর্গ ভালয়ান কর্ত প্রথান। হইতৈছে, কাছার বোগে, পার্থির উষ্ণতা ক্রমশঃ বৃদ্ধি হই-एक, किन्तु में नाका प्रश्न (कान विश्वननीय प्रभाव नारे। তাপমানযত্ত একশত ৰৎসরাৰধি মাত্র প্রচার হইয়াছে, आहे প্রযুক্ত তদার। অদ্যাপি কিছু द्वित कর। धाইতে পারে নাই। ক্রমাণত সহসু বৎসর তাপমান-যন্ত্রছারা পরীক্ষা জারলে এ বিষয়ের মীমাৎসা হইতে পারিবে।

(मगोम शाक्जानोकेव-श्रमाम सजू-(कामत উल्लास कावना मग्राप, किन्न शृथिवीत गाँउ विषया कारनक वर्गन ना করিলে তাহা অনারালে বোধগায়। হইবে না। ফলভঃ লে বিষয় পণিতভূগোলে বিচার্যা; অতএব এছলে তদু-লেথে কান্ত থাকিতে হইল। এ প্রকরণ-সমুদ্ধে পাঠক-দিনার এই মাত্র স্বর্গ রাখা কর্ত্তবা, যে পৃথিবীর উত্ত-तारकं भीठकान स्टेल मक्तिवारकं शुक्तिक श्लाम् जीव रहा, उ मक्रिगालं भीरुत खेरकर्रा इहेरन উत्तरार्क शिख्द দমৃদ্র হর; নচেৎ উত্তরাকের শাত গ্রীয়ের ত্লনা-করণ সময়ে ভুম হ**ইতে পারে।** 

### জিরাফার বিবরণ।

ইহার ও গাড়্ছাদিত শ্রমন্তর, জলাখারবিহীন পাক-क्की ७ अन्याना कछित्रियुद्धत अवस्व उद्घेवर ना इहें शा कतिराद मृक्ष शाकद्यों ও अखिल्-রের তুলা বোৰ হয়: এই প্রযুক্ত প্রাণিতভূজের। रेराक रितन ও कालमादित्र मस्या अक शृथ्राः वर्ग পরিগণিত করিয়াছেন।

रेशंत जग-शान जाकतिका-भक्त जनाव कूवा-

পি ইহা প্রাণ্য নহে। উক্ত-খণ্ডে আরব্য-ছাত্ময় हेहात नाम "क्वित्राका" वा "क्वातका" वा अक्तारकण वा अक्तारकरणा हेरात्र **ब्रे**ड्रेक्ट च्यवयव अवः वराचुवर চिত्रि उदर्ग मृह्हें काम र हेरब्राक हेहारक "कारमन् त्वश्रक्", व्यर्थार উষ্ট্র-ব্যাঘু শব্দে বিধান করিয়াছেন।

জিরাকার প্রবয়ব-দৃষ্টে অনেকে বোধ করেন, य हेंहात भाष्ठाका अम्हहरक भूतः अम मोर्च, किस त्य ज्व-माब, यवजः जनामा-शन्ध-शाम्त नाम् वैवात्र शृतः श्रम चाराकाय शाम्वाका अन नीर्घ, क्तित करमात डेक ठा अयुक्त **डाहात्र** मीर्च ठा **खा छ** প্রত্যক্ষ হয় না। উদ্বের পদতলে যে প্রকার गारमिल इरेशा थात्क \* क्रियाकात भरवत তজপ কোন মাংস-পিগু নাই; কেবল ছবিণ-খুরের नात्र पूरे थानि थुत चाहि। छेट्ट्रेत छेपत-मध्य যে প্রকার জল-রাখিবার স্থান থাকে,রিজাকার विश्वार्थ-अकाम-कडरण्ड डेलक्य-नय- डेप्ट्र डाप्म काम पृष्टे इस ना; चलद्र डिए्र \* বিভাগন-পরে যে চিত্র মুদ্ত ভার্বহন-শালতাও ইহাতে প্রাণ্য নহে। শ্র-🏂 🖟 🏯 হট্যাছিল, ভাহার বিষয়ণ প্রকটিত বিষয়ে প্রস্তাবিতপশুর এক অসাধারণ লক্ষণ হয় নাই; অধুনা দেই অভিপ্রায় নিদ্ধ করা মনো- আছে। অন্য-সশৃক্ষ-পশুর ন্যায় ইহার মন্তকো-নাত চইশ্বাছে। এ চিত্র জিরাকা-নামক-পশু- পরি দুট শৃষ্ণ ব্যতীত ললাটের পুরোভাগে এক বিশেষের প্রতিমূর্ত্তি। ভূমগুলে যে সকল পশু তৃতীয় শ্লের মূল আছে। জীবিত-পশুতে তাহা সম্পুতি বর্ত্তমান আছে, ভন্মধ্যে ঐ পশু সর্বা- কেবল উচ্চ মাত্র বোধ হয়, কিন্তু বর্গবিমোচন পেক্ষায় উচ্চ। উপ্লের পদ ও গ্রীবার বহিত এই করিলেই স্পার্থ প্রত্যক্ষ হয়, যে এ উচ্চতা ললাটা-পাওর পদ ও গ্রীবার ভূলনা হইতে পারে; কিন্তু বিষ্ট্তৈ পৃথক্ এক খণ্ড অছিছারা জন্ম ; অন্য शन्द्रक के **अहित महल दिना अहि नारे।** मख-কোপরিত শৃত্তের অগুতাগ সূল-কেশে মঞ্জি।

बिहाकाइ बिखा चिं चाक्टी छोरा चनाशास्त्र श्रमातिक या नक्तिक क्रेका क्रीहरू वनः श्रमातिक क्रेटन मुक्तकरे के क्ष क्ष विक গত হইয়া পড়ে। ভাহার উপরি ক্তক্তান

\* विश्वितिक र बरन २० गृश्वे द्वाची



क्फेंक बादक, खाहा अ (क्क्राम्नादक नज ना फक्क कतिए नक्स स्त्र।

প্রস্তাবিত পশুর চক্ষু বৃহৎ, এবং প্রাহার কির-उम्र वहेटक नाम । क्षावर के श्रवाशिक किसा- मः म क्ष्युटकावेत्रहरेटक विविधक : करे श्रव्यक बाहा क्रिताकाहा बनामात्म क्या क्रिया निव्यक्तान ना कहिया वह शत क्रिया का-হার পশ্চাতে স্থিত পদার্থ দেখিতে পারে।

ইহার বর্ণ পাত, এবং তদুপব্লি কৃঞ্চবর্ণের চিত্র হয়। পুংপশু অপেকায় জীয় বর্ণ কিকা এবং ভাহার বদনের চিত্র কটাবর্ণ।

. हेशामत म्छ-मङ्गा २२; उद्याद्या वर्तनम्ख २८, लदः इम्म-म्छ ৮; जे इम्म-मछ-मम्ख इन्द्रमा दिए; উপরের মাড়ীতে তাহার একটিও জন্ম না, কলতঃ গোছাগাদিবৎ ইহাদের উপর-মাড়ীর পুরোভাগে দ্ভ নাই।

বিধাতা প্রাবিত-পশুদিগকে শাথাগু ভথ করিয়া ভক্ষণ করিতে সৃষ্ট করিয়াছেন, সূতরাং তদ-থেই ইহারা প্রশস্ত। ইহার আফরিকা থণ্ডত্ বা-বলা বৃক্ষ ভক্ষণ করিয়া দিনপাত করে; তৃণক্ষেত্রে চরণ করিতে হইলে ইহাদিগকে অভ্যস্ত ক্রেশ পা-ইতে হয়, কারণ প্রোব্জিপদ্বয় অভ্যস্ত প্রসা-রিত অথবা জানুদ্য ভূমিতে আরোপিত না করিলে ভারাদের বদন ভূমি-স্পাশ করিতে পায়ে না।

জিরাকা পশু দলবন্ধ হইরা বাদ করে। এবং
আপ্রহইতে পলায়ন করিয়া প্রান রক্ষা করা শুের

যর বোধ করে; পরস্ত শত্রু নিকটকর্ত্তী হইলে
পলায়ন-সমগ্রে ভাহাকে ভয়ানক-বেগের সহিত
পদাঘাত করিতে তুটি করে না। ঘলাবতঃ
ইহারা ধার, এবং বাল্যকালাব্যি গৃহে প্রতিপালিত হইলে অনায়ানে মনুযেরে বন্য হয়।
এতংপশু-দর্শনাভিলাযিরা লার্ড সাহেবের চানকের উদ্যানে অথবা কলিকাভান্ত প্রিযুক্ত কার্
রাজেন্দু মলিক মহানায়ের সূচাক বিহল্পমনালায়
গিয়া আপন অভান্ত নিদ্ধ করিতে পারেন; পরস্ত
ইহা অভব্য, যে উক্ত স্থানন্থ পশু প্রাপ্ত-বয়ক্ষ
নহে; প্রাপ্ত বয়ক পশু সার্ছদেশ হস্ত উক্ত হয়।

## গলিকরের ভুমণ বৃত্তান্ত।

**দিতীয়াখায় প্রারম্ভ।** 

লিলিপট দেশীয় সমাটের সভাসমাজে পরিবৃত হইয়া গুরুকর্তাকে বন্ধনাবস্থার দেখিতে আসা, ও তাঁহার আক্রার প্রকার বর্ণনা। গুরুকারকে তল্পেণীয় ভাষা শিক্ষা করাইতে নিপুণতর পঞ্জিত শিক্ষক নিযুক্ত হওন; মুশালভা নিবন্ধন গুরুকারের রাজানগুরুপ্রান্তি: পরিক্ষণাদি অলেস্বর্ণপূর্বক গুরুকারের নিকটহইতে তলবার ও বন্দুক কাড়িয়া লওন।

জাপে মুক্তবন্ধন হইয়া চতু দিক্ নিরীক্রিন্তির্বার করান আমি এমন
ক্রিন্তর্বার করানান, আমি এমন
ক্রেন্তর্ব্বর্বার ব্যাপার আর কথন নয়নগোচর করি নাই। সমুদয় দেশ একটা উদ্যানের
ন্যায় বোধ হইল। তরিকট্রব্র্তি প্রান্তর ভূমি
সকল উল্ সঙ্খ্যায় চলিশকিট চতুরসু ক্রোশের
অধিক হইবেক না, মে সকল বোধ হইল যেন
চলিশটা পুস্পের চৌকার ন্যায়। এ সকল
ক্রের্ত্বর মধ্যত্ব উদ্যান গাচ কিট প্রশন্ত হইবেক।
আর তত্ত্ত্ব্য উক্তম ব্কের হার্ত্তা পরিমান
প্রায় ৭ কিটা বামদিকে অবলোকন করিয়া
দেখিলাম, তথাকার প্রথান দগর চিত্তপটে
লিখিত কোন নগরের দ্যায়।

क्षिर काल शांत छाछ। नद्रशां निक शांतानहरेट अवजीन हरेग्ना अभारताहन शृद्धनत जानाहिटक अगुनत हरेग्ना आनिट वाभिटलन। किछ
जानन जमांगम जाहात शांक रेड जुनाथ वाथ
हर्ग नारे। कार्न कार्ना आताहरनत अभाने मुनिकिक हिन्न पटि: किछ जाहात क्यानिक्रमण
वजाहन विकोधना शांची हर्मन हर नारे,
मुख्ताः आमात आकृति क्रमार्थना नार्म कर नारे,
मुख्ताः आमात आकृति क्रमार्थना नार्म कर नारे,
मुद्द शर्थ शक्ति हरेगामात व कर क्रमार हर्माक्ष

**হুট্য়া বারম্বার অগ্নির পাদ্ধর উত্তোলন ক**বিতে लाशिल, किंडु मेगुछि व्यथाताहर विकि निश्न ছিলেন; একারণ আসনচ্যত হইরা পড়িলেন না। তদবনরে তাঁহার পারিষদ্ধি তাহার সমাপস্থ হইয়া ঘোটকের ব্লশ্মি ধারণ করিলে ভূপাল তা-ছাহইতে অনায়াদেই ভূমিতে অবরোহণ করি-লেন। অনস্তর তিনি বিকায়রসে নিমথ হইয়া বার-ধার আমার বৃহদাকার নিরাক্ষণ করিতে লাগি-लिन ; किन्न जामात वन्तन मृष्यत्वत जनमा सातिर দপ্তায়মান রহিলেন। ক্ষণকাল বিলম্বে তদাক্তায় পা-চক ও পরিচারকবর্গ অয় ব্যঞ্জন ও বিবিধ পানীয় দুব্য এবং ফলমূল প্রভৃতি আমাকে অভ্যবহার করা-ইবার জন্য প্রস্তুত করিয়া শকটযন্ত্রে সমারোপিত করিয়া আমি হস্ত প্রদারিলে পাইতে পারি এমন স্থানে আনিয়া রাথিন। আমিও তথাহইতে ভক্ত ভোজ্য পানীয় দুব্য পুরিত পাত্রাদি লইয়া অবিল-দ্বেই শুন্য করিলাম। তন্মধ্যে বিংশতিটা পাত্র माः नशूर्व ଓ मगण। मना शूर्व किन। माः राज विः-শতিটা পাত্র তিন গানে খাইয়া ১০ পাত্র মদ্য এক এক ঢোকে পান পুরংসর নিঃশেষ করিলাম। অব-मिन्ने याहा हिन जाहा अ अ अ अ कि व व हेन। রাজ্ঞারা এবং যুবতা রাজকুমারীরা বহুসঙ্খ্যক প্রিয় বয়ন্য ৰথা সমভিব্যাহারে আৰিয়া আমার কি-कि॰ पूर्त **च २ जागरब उंशरवंगन क**तिन। अरत অকলাৎ নমুটের অশ্ব কোঁন ঔষত্য প্রকাশ করি-ब्राहिन हेहाटड के नकन जोटनाक निव्रेडिनाय छोडा হইয়া যে ৰূপে সমাটের সমিধানে উপস্থিত हरेट नाभिन; **उदियात वाणि किश्विय वर्गनी** क्विकिश्व नमुटिंब द्विक्य सामात्र नुकासूष्ठ হইতে বিছু অধিক। কিন্তু ততুৰা দীৰ্ঘকার তৎ-সভার আর কেহই হিল না। ভাহার আকার रणन कहिरामाल रणटकत गतन छत्र । विव्यद्यत

उद्भुक इहें । उद्भवानीन तालात वस्त्र १४ वर्गत ছিল, তক্মধ্যে প্রায়ঃ সাত বৎসর নানা দিগ্রিজয় कतियां मरुंगि भाखि श्राथ रुरेग्नाहिस्तन । जोराह আকার প্রকার সূচাক্তরণে দর্শন করিবার মান্দে আমি পার্ম কিরিয়া শয়ন করিলে রাজা আমা-क्**रे**टि ८।७ कांच मृद्र म्लायमान द्रित्तन। याका হউক আমি অনেকবার ভাহাকে হাতে পা-ইয়াছিলাম; সুত্রাং তাছার বেশভূষাদির বর্ণনে কিছু মাত্র তুটি করিব না। তাঁহার পরিস্থদ মতি পরিকার ও সহজ, না আসিয়াদেশীয় রাজবজের মত অলঙ্কার বিভূষিত না ইউরোপদেশীয় ভূপা-লদিগের পরিচ্ছ ব পরিচ্ছদ ন্যার আভরণ হীন বের্ম হয় কিন্তু উভয়ের মাঝামাঝি বলিতে পারা যায়। আবার তাহার মন্তকে নানা রত্ন সুশোভিত এক সুবৰ্ময় কিরাট ছিল। তাহার চূড়ায় কোন উৎ-क्षे शक्ति शूक्। स्टेरवार विमुक्त म्ड्यनावसम इ**हे**म शास्त्र याँगि यङ्गाठात कति, धरे छस्म नमार्गे बरुष्डः अकथानि निष्काय अति धात्र कत्रियाहित्यनं; जाहात देनचं शतिमान श्राय जिन বুৰাল হইবেক। তাহার তুব্দ ও কোৰ হারক প্রচিক হাটকময়। এ রাজার হর অতি সূক্ষা, কিন্তু সুস্পাই अवः अভिवाक वर्गाञ्चक । अमन कि म्<mark>डाझमान इके</mark> लिख जोहा श्रामात कर्वकृहत न्माडे**नात्म ग्राविड हहे-**য়াছিল। রাজবংশীয়ও অমাত্য বংশীয় জালোকেরা मुहाककरण পরিচ্ছ इहेश। "कोजूक हर्णनार्थ তথার উপস্থিত ছিল। ভাছাদের অবস্থানের স্থান म्मारन त्वाथ इहेन यन अक्शानि उँ क्षे नाणेन বন্ত্র মন্তিত ভূমি ও তদুপরি কলধৌত ও রক্ত নির্মিত পুত্তলিকাবৎ স্কাদ্ধারা কোন শিশ্পী কিছু विक्रण क्या कित्रा काश्याहि। के महातास कुरका-ज्यः जामात প्रकि वाका अस्तान किंद्रिक जानि-र्तान; व्यामित छेत्र रिनाम; किन्न रेक्स महस्र

কে कि কহিল উভয়ের মধ্যে কাছারে। তহন ভদনুসারে বেনারাও তাহাদিগতে বন্ধনপূর্বক আ-र्यायक इहेन मा।

রজকোর হতে সমর্থণ করিয়া গৈলেন। তম্বধ্যে দিলাম, সৈও তৎক্ষণাৎ পলায়ম করিয়া গেল। तिह शृह्हारत उँशिविष्ठ हहेवामाज शामात्र भारज्ञ বাদ বৰণ করিতে লাগিল; তাহার একটায় আমার বানচলুর কিঞ্জিজাত হানি হইয়াছিল। এই উপ-ব্যক্ষ কাহাদের সেমানায়ক (কর্পেন) তক্ষধ্যহইতে দুষ্ট ২ বোক ধবিখা বাধিতেও ভাহাদিগকৈ আ-শান করালকরে নম্পণ করিতে আদেশ করিলেন। (ছিল।

পন १ **एडाखे (वसम) मिशा ठिलिए १ जामि हा**टि ্অধিকন্ত আৰু কতিপয় ব্যক্তি তথায় উপস্থিত পাই এমন হলে আমান্ত সন্মুখে আনিয়া উপ-हिल, जाहारमत तीकि बाता প্রভৃতির ভাব क्षिक करिता; आधि ও उरक्तार मिकन इस रिवा पिशिश (राध इहेल कथक कम शूरहाहिष्ठ ७ डोहारम्त गर कथक खनरक धतिशा e के व्यानन অলারের ব্যবস্থাপক কেবল আত্মগরিচয় প্র- পরিচ্ছদের জেবের মধ্যে রাখিলাম ও যান্তর প্রতি कान जानतम आयाद मयोलागड हहेला उठ, अयनि मुश उन्हों प्रचाहेलाय, य ति वाध कदिल क्षात्रीय, कहानिम् प्यानीय, इट्रोलियान् প्रजृति य यम व्यामि जाहारक कीवहनदास्य भाग कतिन. কএকটা ভাষায় আমার কিছু ২ অভিজ্ঞতা ছিল, ইহা দেখিয়া ঐ নিৰুপায়ব/জি অভ্যস্ত ভয়ে চাৎ-জানশুদায়েতেই আমি কথা কহিয়া দেখিলাম; কার করিয়া উঠিল। ভালতে গদৈন্য দেনাপতির किन्तु क्लान कल प्रामिलामा। त्रा याहा रूडेक बहे अयथ श्रामान्त्रि मनः स्मान स्हेग्राहिल। विस्मय उ क्टल मूठे वन्ते थाकिया में जा जब इरेक । अनल्ड आमारक वालन क्लिवरेट प्रविका वारित केंद्रिट ममर्भनास्त्रिति नमाग्रङ देख्द लाक्द्रा यथामा- (मथिया म काहात जीवला कामाय अकवाल ज-क्रम कामारक (बद्देम कतिवाको ड्राइटन शाष्ट्र कामि नाञ्चनि कित वामि विवस्त कार्याम गर्वन स्वरं कार्याम गर्वन स्व তাহারের উপরি কোন প্রকার **অভ্যাচার বা ষয়**ে। নির্ভন্ন করিবাম। কারণ আমি সদয় ভাবে তাহার কিছু দুইত। করি, এই ভায়ে রাজা আমাকে খনেক। বন্ধন রজ্জুছেদন করিয়া তাহাকে ভূমিতে ছাড়িয়া পরিদেবনাশূন্য কএক ব্যক্তি ছিল, তাছারা আমি এই রূপে অবশিষ্ট পাঁচ ফনের এক ২ টিকে বাছির कतिया वक्तमरक्षम ७ मुक कतिया पिलाम । हेराट তত্ত্ত্য দৈন্যামস্থ ও স্মাগত ইত্র লোক নকল व्यामात म्याम् विक्रष्ठा मन्दिन निकास सहै जाद गरहाय श्रकान क्रिटंड वाशिन। समस्त्र जाहाता वाद्याकारण बन्नका बाबाब कर्गमान्य कहिया-

# विविधार्थ-मञ्जूर,

পুরারভৈতিহাস-প্রাণিবিদ্যা-শিশ্প-সাহিত্যাদি-দেয়াহক মাসিক পত।।



যোগল জাতির আহাস।

# দোগল-জাতির বিবরণ।



चयूना राष्ट्रे অভিলাষ निष कतिवात প्रयक् कता वाहरण्डा

स्वितित्वेद्व श्राम्बद्ध स्थानवि व्यामिया-थरश्च मधा-श्राम्बद्ध सम्बद्ध भिन्न भूनः १ डेट्राच इत्याटक चन्नि कटन, कालाता किंचक, क्रमून, कालात, अवः गरनरक कळाचीत्र-तियदा जि- (माशन, अहे जाकि हजूडेट्य विक्रक चारका कवा मान्तिक सान् करेगारकन्य अवस्थानुक तथा राग नकत मन्द्रमा सामान स्मरण के करत

বসতি করে, তাহারা তিরত নামে প্রসিদ্ধ, এবং তাহাদের নামহইতে তাহাদিগের নিবাস ভূমির माम जिंक हरेशाहि। काण्लीश-दूर्व शूर्व গোবি-মক্তুমি-পর্যন্ত প্রদেশ তাতার-জাতীয়দি-গের বাসস্থান। গোবির উত্তরে মাঞ্রিয়া-পর্যান্ত সমস্ত জনপদ্ধে সকল মনুষ্যে সমাকীৰ্ তাহারা মোগল বা মোজল নামে বিখ্যাত। অপর এই জাতি-ত্রয়ের নিবাস-ভূমির স্থানে ২ অন্য এক জা-তায় মনুষ্য থাকে, তাহাদের নাম তঙ্গুম।

ূর্বকালে মোজল ও তাতার জাতির মধ্যে कान रिरम्य প्रভেদ ছिन्ना; উভয়েই তাতার-নামে বিখ্যাত ছিল। অনেকে কছে তাহার। গগ্ ও মেগগ নামা দুই সহোদর ভাতার সন্তান; कन्दः बाम्भीय-इपक्रेट ठीन-प्रामत्रेखत जान-প্या छ नम छ-श्रामिना निवा नक काछोत्र, वस्कान मन्दास्य इंदशारक हे जाहारमत काकाः स्थ एक हरे-शाह्। द्रयोप्डेकीन्-नामा अतिक शाहना-रेंजि-হাদবেত লেখেন, নাড়ে আট শত বংসর হইল আলফোয়া-নামুঁ৷ প্রকিছা রম্বার পরাক্রমশালী शुरुवता ज्यालमामिरगत वीर्या अकाम-कर्तार्थ ব্যান্য প্রাপক মোজন-উপাধি ধারণ করিয়া-ছিল; এবং ক্রমশং ভাছাদের বংশ ও পরে তাহাদের দলবল সকলেই ঐ উপাধি ধারণ করি-ত্ব) মোন্দল-জাতির সৃষ্টি করে।

कालक्षांशांत क्लिक्ष्णां नाम वर्षास्कातः তিনি বিশিষ্ট ক্ষমতা-সম্পন্ন ছিলেন, এবং তাহার হাজ্য মাঞ্রিয়াহইতে গোবিমকভূমির পশ্চিম शाद-शर्भ उ विष्कृ हिल; उ द्रयुक डेक इन অদ্যাপি মোজোলিয়া নামে বিখ্যাত আছে।

নতঃ নিরামিষ ভোজিপ্রযুক্ত মোগলেরা পশ্চিম দেশীয় আনিষ-প্রিয় ভাতরেদিগের অপেকার

थर्दकाश, अवः वधु। जाहारम् इ कड्वा चि थर्द, अवः उर्ध्ययुक्त नमछ एक थर्व (वांच क्रा । न्या-প্রচুর নংখ, কিন্তু মস্তকের কেশ চিক্কণ কৃষ্ণবর্ণ ও দীর্ঘ, মোগলেরা ঐ কেশের একটি বেণী করি-या প्ष्ठप्रत्म लक्ष्मान कतिया तात्थ। मयनषय পরস্পার অতি অন্তর ও তার্য্যগ্-ভাবে স্কিড, না-निका कृपु उथई, अदः करलाल छेक। इंहामिरणंत हन् मीर्घ, किन्ত उज्जाहरू अंकि उन् माछित पन्छ-शॅंकि इरेट शम्हार दिन, कनन्त बारति द पर অধরোপরি স্থাপিত। বর্ণ উত্তম গৌরাজ (চম্প-ক-ৰৰ্ণ) বটে, কিন্তু অবয়ব তাদৃশ সুঞ্জী নহে। বল-दीर्य।- हश्वाचारि अन हेर्हास्टिशन टेशिवक मन्भ-खि-मरक्षा भना, क्वहरे जाहार**७ वंक्षित्र माहे**।

চীনদেশীয়দিগের সহিত সংশ্রুব হইবার পূরে মোজলেরা অদম্য, জুর, এবং বিবাদ-তৎপর ছিল, किञ्च अधूना भाज, नहन, बदः चार्जिशा-श्रिय हहे-ब्राह्म, शरु बम्रिश अबर दिशुशद्रवम बाह्म व দৈব রাগান্তিত হইলে অদ্যুপি তাহারা ক্ষিপ্তপ্রায় रुहेश थारक।

क्षिकार्या-मण्यामान माभावता निजान वि-मूथ ; (करुरे उৎकर्ष अवृष्ठ रम ना ; आकः ভারতবর্ষের তুলা বিস্তীর্ণ মোজনিয়া-প্রদেশে এক সহসূ কৃষক প্ৰাপ্ত হওয়া কঠিব। তত্ত্ৰতা সক लाहे स्वय, महिय, हात्र वा जान छात्रन कतिशा हि-নপাত করে। অপর তাহার। অচল গৃহাদি নির্মা-(वंड ७९ शत नरह। जाहारिए अंद्र स्टब्स हेंद्रेक नि-বিতি বাটী প্রায়ঃ নাই; হংসাদি-আক্সাদস করিবার हालाइ नगर कार्ड-निर्मिष्ठ ठाटहे त्ववटनाम-नि-বিতি মলিদার ন্যায় এক প্রকার ভূল বউ আছো-মোজলদিগের কাশ্বিক নৌধৰ উত্তম নছে। প্রধা- দিত করিলেই ভাষাদের পৃষ্ প্রস্তুত ইয় ি শ্-হের নাম "ষের;" ৭০ পৃত্তে তাহার চিত্র সুস্তিত व्हेबारक। श्रीत्रकारन के गृह पूर-वात्रा-व्यक्ति- বন্ধদারা আচ্ছাদিত থাকে; কিন্তু শীতকালে क्षे आव्हामत्नद्ग देवछन्। ना कदित्व मिन्नाउँ कर्ना पूक्त हन्न। अहे स्वत्र-नामक गृत्वत मध/ভारी अक পাত্তে প্রজ্ঞালিত অঝি রাথে; এবং তজ্জাত-ধুম-নির্গমের নিমিত্ত গৃহোদ্বভাগে এক ছিদু থাকে। মোঞ্জিয়া-প্রদেশের কোন ২ স্থান অন্তান্ত শী-**छन**; मीजकारन उथाय ताम-कन्ना पूश्माया; अह প্রযুক্ত মোগলের। গ্রীয়কালে তথায় বসতি করিয়া শাতের প্রাব্লস্তে তথাহইতে অন্যত্ত প্রস্থান করে। অপর মোগলদিগের সম্পত্তি-মধ্যে অশ্ব, উষ্টু, ছাগ ও মেষ্ট প্রধান; তাহাদিগের চরণ-করা-ণেতে এক স্থানের ক্ষেত্র তৃণ-শূন্য হইলে, সূতরাং অন্যত্রণ প্রয়াণ করিতে হয়, এই কারণবশতঃও (मागला वर्काल अक्षांत वाम कविष्ठ भा-রে না; সর্বদা স্থানে ২ ভূমণ করিতে বাধ্য হয়, এবং তল্লিমিত্তে যাদৃশ গৃহ অনায়াদে স্থা-নাম্বরিত হইতে পারে, তাদৃশই প্রস্তুত করে, ও গৃহ-সজ্জার সামগ্রী অধিক সন্তুহ করে না।

পূর্বে উক্ত হইয়াছে, মোগলেরা নিরামিব ভোজী, পরস্তু তাহারা অন্ততঃ যে মাংস-উক্ষণ করে না এমত নহে, মধ্যে ২ মেয় মাংস ব্যবহার করিয়া থাকে। পরস্তু দুগাই তাহাদিগের প্রধান আহার, এবং তাহা নানাপ্রকারে প্রস্তুত করিয়া গুহণ করে। দুথো বা চার জলে যবের শক্তু সিদ্ধা করিয়া ভক্ষণ করাই প্রসিদ্ধা রীতি। তাহারা অম্বিনী-দুগা অতি-প্রিয় জ্ঞান করে; এবং তদুপোর তক্তে এক প্রকার মদ্য প্রস্তুত করিয়া পান করিয়া থাকে। শুদ্ধ জল পান করা মোগলদিগের রীজিনহে। জলে চার-ইউক নামা চা-বিশেষ সিদ্ধা করিয়া পান করাই ব্যবহার-বিদ্ধা আনেকে এ চার জলে দুগা, লবণ ও নবনীত মিশ্রিত করিয়া ভাহার স্বাদ্তা-বৃদ্ধি করে; কদাপি ঘৃতে মন্ত্রা ভাকারা ভাহাও ঐ

চার জলে মিশ্রিত করে। ঐ চা পান করিবার নিমিত্ত মোগলমাত্রেই আপন ২ বক্ষঃপ্রদেশে কাঠনির্মিত চাপান-পাত্র ধারণ করিয়া থাকে।

অশারোহণে মোগলের। অত্যন্ত তৎপর; তৎকর্মে তজ্জাতীয় কেহই অক্ষম নহে, এবং অতি
বৃষ্ণেরাও প্রভাহ বহু-ক্রোশ-পরিমিত-স্থান অশ্বারোহণে ভূমণ করিয়া থাকে। তাতার-জাতীয়েরা
মাংসাশী-প্রযুক্ত মোগলহইতে ভূলকায়, এবং
বলিষ্ঠ, কিন্তু লঘুকায় মোগলের তুল্য অশ্বারোহণে কুশল হইতে পারে না।

পূর্বকালে মোগলদিগের আদিপুরুষেরা নানা-বিধ দেবদেবীর উপাসনা করিত। বিশেষতঃ বৈকাল নামক হুদ তাহাদের অত্যন্ত মান্য ছিল। ডেড়-मरुगु विश्वताविध हेमानी छन । योशताबा धे (मव-দেবার বিনিময়ে বৃদ্ধদেবের দেবায় তৎপর হইয়া-(**ए**; किन्न देवकान-ष्टुरम्त भीन/जात नायव रूप्न नाहे; चम्राणि नकत्व जाहारक यथ्भरतानां मान्। করিয়া থাকে। তাহারা কছে ' এ ছুদের সমুদুাভি-নান আছে; কোন নরাধম তদ্গুর্ভে নৌকারো-र्ग कतिया जे कला नग्रतक 'मालाहे' व्यर्थाय नगुमू नात्म मत्त्राधन ना कतिया 'अतम्बा' अर्थार इन भारक चारवनन कतित उरक्तार तम महामाइटि নিপতিত হয় ; কারণ ঐ কুপিত হুদ তাহার শাস্তির নিমিত্ত ঝড় বৃষ্টি তরঙ্গ উৎপাদন করিয়া তাহাকে প্রাবে বিনষ্ট করে,"। পরস্তু, শ্রুত আছি, এক জন नाहनशूर्व क्योग्न मनुष्य अवियद्यत याथार्था निकाल-ণার্থে ঐ হুদের মধ্যভাগে আপন তরিমধ্যে <del>দ্</del>ঞা⊷ यमान रहेका थे हुम्रक निम्हामूहक अरवदा मरक मस्त्राथन कतिया उन्नाति अक शिनाम सर्। जानि-या नियाहिन; किन्तु के दून काशांक किङ्गाक भाखि प्रम नाहै। त्राथ इत्र विष्मि विश्वा कुम **जाहादक कमा** कतिया थाकिदक्ता

स्मानता युक्तित्र्र च्यानिक नरहः श्रदीक वमाञ्चकात मगद्रीन पूर्वा मामाना हित्तम ना। ठा-हार्हेट मनम शुक्य कड्यिन्थी व्यानिया-शस्त्र অধিকাংশ জয় করিয়াছিলেন; ও তাঁছার প্র-(भोडा वावत्मार **ভाরতর**र्ष सामन-वाका मः-স্থাপন করেন। অপর এই মোগল-রাজ্যকংশে আ-তিলা-প্রভৃতি অনেক স্প্রসিদ্ধ মহীপাল জন্মগুহণ করিয়া পারসা তুক, চীন, ভারতবর্ষ, ও ইউরোপের কএক প্রদেশ জয় করিয়াছিলেন।

### গলিবরের ভুমণ ব্তান্ত।

নি যে যরে থাকিতাম তথায় ভূমি-শ্বাম অবলম্বন ক্রাম বর্ণ তা। ই শয়া অবলম্বন করায় রাত্রিকালে ই আমার বড় ক্লেশ হইত। করি কি, ইনিক্ত্রেক্ত্র্ট্ট্র ক্রমাগত এই কেশে এক পক্ষ যা-

পন ক্রিতে হুইল। অনস্তর রাজাজ্ঞায় আমার জন্য এক শ্যা প্রস্তুত হ্ইয়াছিল৷ তাহারা আপনা-দের ব্যবহারের মত ছয় শত শ্যা একত্তে এক भक्ते (टाकारे कतिया चानिन, ७द९ वे शृक्ष मरध्र লইয়া থিয়া আমার ব্যবহারার্থ এক শ্য্যা পুনঃ প্রস্তুত্তরাইল। তন্ধধ্যে দেড় শত শ্যা দীর্ঘ প্রন্থে যুভিয়া ও উপয্রাপরি চারিতল করিয়া সাধন ক্টল যাহা ইছো তাচাই ত্টক, আমি তৎ-কালে বেই প্রস্তরময় মেজিয়ারপ-শয্যার কা-ঠিনা জনিত যাতনাহইতে মুক্ত হইলাম। উক্ত म प्रधान् कल काशाता व्यामात कन्। ठापत, कचल, ল্যাক্ষত্ৰ প্ৰভৃতি অপরাপর ব্যবহার্য্য বন্ধা-দিও প্রস্তুত করিয়া দিয়াছিল। কলতঃ এত দিন কেশে কালহরণ করিয়া এই কএকখানা বস্তুর नाकायान यरवष्टं विलया मानिएक क्हेरवक।

রাজ্যমধ্যে আমার উপস্থিতির সংবাদ প্রচার

हरैवामां कि धनी, कि जानन, कि कूजूहनी, नक-**लहें चामारक राधिवांत्र समा चानियाहिल।** विवारण कि, गुर्म नकल मून/প्राप्त इहेसाहित।

यिन ब्रांका ७०काटन ब्रांका मध्य स्वायनावाजा নিবারণ করিয়া না পাঠাইতেন, তাহা হইলে কৃ-यापि ७ माः गांत्रिक वालादित महारेनिथिन। इहेशा উঠিত। রাজা যাহার।২ আমাকে দেখিয়াছিল, जाहारमञ्ज नकलाकर वाष्ट्रीय कित्रिया याहरू , এবং সভার বিদা অনুমতিতে আমার গৃহের নিক-**ऐंद्र मेल्ड्रिंड मर**धा काशरकंड नः चानिएड লক্ষে অধ্যক্ষের। যৎপরোনান্তি লাভ করিয়াছিল।

এদিকে রাজা সশক হইয়া লুয়োভ্য়ালসভা দিগকে আহ্বান করিয়া নানা উপলক্ষে আমার বিষয়ে বাদানুবাদাদি করিতে লাগিলেন। পরি-ণামে এক জন সদাশয় নিগুঢ়তবুজ্ঞ মহাত্মা বন্ধুর প্রমুখাৎ অবগত হইলাম; যে সমভা রাজা আমা-ষ্টিত বিষয়ালোচনাজনিত-মহাকুেশে দিন্যামিনা यालम कतिरङ्ख्न। चार्षा मरस्त्रता द्राकारक व्यामात वद्यानाटमाचन-कत्रत्वत सूयक्ति पिशाहिकः কারণ দিন ২ আমার খাছারাদি দুব্য যোগাইতে यामृत्र वार इंट्रिइन, जाहा यनि उजारी किंडू काल इस, जरत द्वाङ्ग्रामस्या अककारल पूर्लिक উপস্থিত হুইবার সম্ভাবনা। कथम २ वा छा-होता असन शतायर्भ कतिएं नाशिन, य जामारक किছু আহার না দিয়া অনাহালে ওক করিয়া মা-রিয়া ফেলে। কোন ২ নময়ে বিৰমিশিত-বাণে আমার মুখ নানিক৷ হস্ত পাদাদি সর্বান্ধ বিভ করিয়া বংহার করিতে উদ্যক্ত ক্ষিণ্ধ কিন্তু পাছে व्यामात्र मृत्राराहन मृज्ञिनम द्वासा मध्या विकृत रहेश त्राक्षधानी किया सञ्जवका समृत्या त्राका-मट्या महामाती छेलान्डिड करत, अहे आनकार

তাহাদের ভৎকরণের প্রতিবন্ধক হইয়াছিল। এ जमस नामाश्रकात भ्रतामम् इहेएछएइ, जम ९-जमद्भ কএক জন দৈনিক সভাগ্হদারে উপস্থিত হইল। उच्चार्थ। पूरे कन चामात शक हरेयां गरिनात निर्वपन क्रिन, "महात्राकः। এই महावीत चा-मार्टित इम्र क्न प्रायित्क धतिया मार्टिन कति-शास्त्र, व वर्ष् महानयुः। वह कथा छनिवामाञ नगर्डा-ताकात मत्न अमिन मर्छाव डेम्य रहेन, य তিনি তৎক্ষণাৎ ঘোষণাদ্বারা অঠাদশশত হত্তবৃত্ত जे नशदा ও जिंदूभाखिमगुरामनमूनासा এই আদেশে ডিপ্তিম প্রচার করিয়া দিলেন, যে "আমার আ-হারার্থে গুমন্থ সমন্ত লোকদিগকে অনুক্রমে প্রতিদিনু প্রাতঃকালে ৬ টি গে। ৪০ টি মেষ ও जिंदुभगुक जनाना थाना ७ (भग्न पुरापि भा-ঠাইতে হইবেক, এবং যাহা ভাহার উপযুক্ত মূল্য তাহা রাজভাগ্রারহইতে প্রদত্ত হইবেক "। কা-त्रन ज्थाकात वह अथा य ताकात मः नात्रयाजा নির্বাহ একপ্রকার নিক্ষর ভূমির উপম্বহুইতেই হইত, কোন দৈব প্রয়োজন উপস্থিত হইলে ब्राकाञ् श्रकावर्ग वकवारका यथकिकिए र श्र-मान পূर्वक जरकार्या नमाथा कति । तन याहा **হউক আমার দৈনন্দিন পরিচর্য্য সমাধানার্থ** রাজা ৬০০ লোক বিনাবেতনে কেবল আহার मामशाय नियुक्त कतिया पिरलन। **व्यामात्र शृ**ह ষারের উভয়-পার্ষে তাহাদের শিবির সংস্থাপিত **e**ইল। অপর তদ্দেশপ্রচলিত পরিচ্ছদের ন্যায় আমার বেশোপযুক্ত-পরিচ্ছদ-প্রস্তুত-করণার্থ তিন गठ गृठीकीयो, अवर एटफ्लीयाजाया-िनका श्रक मानार्थ । जन हेशयुक्त जूनिकक, नियुक्त इरेन। शद्द बाक्कीय अथ ७ दिक्कीय माना त्वाक अवश् क्रमार्थ मियुक रेनम्।माससामि नर्करमह चामात नच्द्रथ निश्मकात त्राणात्राक कत्रत्व चन्-

শীলন করিতে লাগিল। কলতঃ ইত্যাদি ব্যাপার সকল রাজাজ্ঞানুসারে বিশিষ্ট-প্রকারে চলিতে জুটি হইল না। তিন-স্পাহের মধ্যে আমার ডদেশীয় ভাষার যথেষ্ট শিক্ষা হইল। তদানীং রাজাও সশরীরে আসিয়া যৎপরোনান্তি সম্মান সহকারে আমার তত্ত্বাবধারণ করিতেন; এবং আমার শিক্ষার্থ শিক্ষকদিগকে সাহায্য করিতে মহা সপ্তেই হইতেন।

এখন তাঁহার সহিত আমি এক প্রকার কথা कहिए बाइछ • कद्रिलाय, बामाद वन्तन मुक्ति विषयक कथावाडांहे श्रथम निका हय। ताका আমার নিকট আগমন করিবামাত্র আমি প্রতি-দিন ভূমিপাতিত-জানু হইয়া এ কথাই বার মার কহিতাম। তৎশুবৃদে তিনিও উত্তর দিতেন "हाँ, काल नहकारत जूमि मुक्कवकान हहरतः কিন্তু আপাততঃ সভাসম্বর্গের সহিত একমতে পরামর্শ করা, বিশেষ্তঃ আমার রাজ্যের শা-স্তিভক্ষের অকরণ-বিষয়ে তোমার শপথ করা ব্যতীত তুমি মুক্তি পাইতে পার না।" সে ষাহা হউক রাজা আমার প্রতি **সর্বতোভা**র্ত্ত म्या अकान कहिए नाशितन। मरध्र द्वाका देशया ও গান্তीया नहकारत প্রজাবর্গের ও তা-হার অনুরাগ-ভাজন হইতে আশাকে ভূয়ো-ভূয়ঃ অনুরোধ করিতে লাগিলের আরো রা-कात मत्नत वह चंजिश्राम त्वाथ हरून, "त्य একেত এ এতাদৃশ বৃহৎকার ভাষাতে আপান্দার উপযুক্ত অন্ত শন্ত রাখিলেও রাখিতে পাত্রে, যদি ইহার উপরি আবার অজাদি রাখিয়া थात्क, उत्वे याहात शत नारे जत व विश्व घर्षमात्र गञ्चादमा, चण्यत चामकाश्रयुक यहि তিনি কতিপয় সেনা পাঠাইয়া আমার শরীর विकारित श्रेष श्रेष्ठ मात्र मात्र मान्यान

করান, তাহাতে আমি মনে ২ বিষয় বা ক্রুদ না হই।" রাজার এতাদৃশ অভিপ্রায় অবগত হইয়া আমি কহিলাম, "আমি তোমার সম্-थ्य नथ हरेश नर्वाक ७ পরিধীত পরিছ-দাদি দেখাইতেছি, আপনি নিউয় ও সম্ভষ্ট হউন: " এই নমন্ত বিষয় আমি তাঁহাকে কতক কথায় কতক বা ইঙ্গিতছারা তবগত করাই-লাম: ইহাতে তিনি উত্তর করিলেন, "রাজ্য প্রচলিত-ব্যবভানুদারে আমার দুই **জন দৈ**নিক যাইয়া তোমার বজাদি অস্বেয়ণ করিবেক; কিন্তু काश कमाठ नूनन्धम रूख्या नद्धर ना "। मया ७ विमा, यथा। ন্দিচার প্রভৃতি **গুণে আমার প্রতি রাজা**র যে আমানে নে সমন্তই তাহারা প্রতিদান করিয়া-ছিল। যাকা প্রত্যপ্রায় বোর হম নাই, তাহার যে মলা শামি নিদিষ্ট করিলাম, তদনুসারে তাছার নেই মূলঃ তাহার। আমাকে দিয়াছিল।

तिहै नकल मुद्य ऋष्यवार्थ छेनिष्ठ पृहे सम বৈনিককে আমি হত্তে করিয়া তুলিয়া প্রথমভঃ আমার কুত্তির জেবের ভিতরে রাখিলাম, পরে ক্ৰমে ২ ভাহাদিগকৈ এক জেব**ছ্ইতে অন্য জেবে** প্রবেশ করাইতে লাগিলাম, কিন্তু আমার ঘটিকা-রক্ষণের দুইটি জেব ও অন্য **একটা গুপ্ত জেবের** मस्या व्यनर्थक व्यास्य जाशांनिशस्क प्रस्वम कद्रा-हेलाम ना, कांद्रव नामान/२ श्राह्मन इहेरन छा-शास्त्र कामाधावनकारण कामाइहे वावहादा थाएक, অন্যের কিছুমাত্র সংশুৰ থাকিবার সম্ভাবনা নাই।

যড়ি-রাখিবার দুই জেবের একটাতে আমার একটা ফপার ঘড়ি, অপরেতে এক চীরখণ্ড-পু-णिङ कथक जूवर्ग मृषु। हिल। अहे पूरे कन छम् रेननिक कालो, कलम, काशक लहेशा व्यामात श्रीत-ক্দের যেথানে যাহা অধ্যেণ করিয়া দেখিতে शाहेन, ७९मम्माग्रहे जित्रनकारा श्वाक्ष् क-রিল। তত্ত্বওয়া শেষ হইলে তাহারা ঐ পত্ত नमुाटित नूरगाठत-कत्रश-मानटन व्याननाहिनदक জেवक्टेट नामाहेश मिट पामाटक चनुद्राध করিল। ঐ তালিকা-পত্র-লিখিত তাবদ্বিযয়ের তাহাতে তোমার অনুমতি ও সাহায় ব্যতাত একটি ২ কথা ধরিয়া নিজ-ভাষায় অনুবাদ করি-

"নহারাজ। আছে আমরা এই ন্রুলৈলের প্রকার বিশাস জিমিয়াছিল, তাহাতে তিনি অনা (কুইনবসফ্রেন্ট্রিনের) কুর্তির দক্ষিণ জেব অনুস-য়াবে এককালে নিঃশক্ক চইয়া আমার হত্তে আ ু দ্বান করিয়া কেবল এক থানি প্রকাণ্ড ভূল বছ-পান সমস্ত লোকদিগকেই সমপান করিতে পারি-। খণ্ড দেখিতে পাইলাম; ইহাতে অনায়াসে আপ-্রন ৷ আর ভাহার৷ বে ২ দুব্য আমাহইতে ; নার রাজ্যের প্রধানালয়ের মধ্যভাগ আবৃত ১ই-क्षेश्राष्ट्रित. जे नगद्रश्रेटक প্रक्रागमन-कालीन कि भारत। वामिंगरक्र क्षारत अक्षे। बृहद तक-ভময় निम्मूक वा कंब्रिड (পেটারা) প্রাপ্ত হইল, মা-मृत्र अध्ययनकार्तिएत शाक ठाहा उत्तालन कता সুদ্রপরাহত। আমর। ইহা অনাবৃত করিয়া দেখা-हैट वामना कहाएं जाएाई रहेन; बारत भागता তম্মখ্যে নানিয়া দেখিলাম, বে এক প্রকার धृनित मध्य चामा**रहेत चालानू शर मध ए**हेता গিয়াছে; আর ভাহার অণুৰৎ কিয়বংশ আমা-मित छेल्छात मूथमानिकात्राम् अविके स्रेगाउ व्यामदा व्यमवद्रवह रावित्व नाशिकामः हैरात ফতুয়ের দক্ষিণ জেৰে দেখি<sub>ট</sub>নে শাসাহ পা-चना कान मुन्। উপर्यु। পরিছাবে সাজান বড় क्क शाहा काहि रिया वैक्षा काम २ जन्मप्र চিক্টে চিক্তিত ভাষার প্রত্যেক কিছ অন্তর্গন वर्षर्वजन नाइ। रेहाइ नाम (बर्र बक भावा

কোন যন্ত্ৰের মত এক বস্তু, মূলহুইতে লম্বা ২ ছপ্ত कृष्णि यश्चिर श्रमार्थ मून्या जिल्ला व्यक्तिन যেন মহারাজের সভানগুপের সন্মুথস্থ কাঠগড়া বোধ হয়, নরশৈল তাহা দিয়া আপন মন্তকের क्या विनाम कविशा चारक, हेरात उथा कानियांत জন্য তাহাকে জিজ্ঞানিয়া বিরক্ত করিলাম না; ফলতঃ বলিতে কি আমাদের কথা ভাষাকে অব-গত করান বড় সহল ব্যাপার নহে। পায়জামার (রেনফুলোর) দক্ষিণদিকের ৰড় জেবের ভিতর একটা লৌহময় ভিতর ফাঁপা কোন ব্যন্তবৎ প্র দার্থ দেখিলাম, দেটা এথানকার মানুষের মত লম্বা, তাহা হইতেও বড় এক খানা কড়িকাঞ্চের ন্যায় শুক্ত কাপ্ত তাহাতে বাঁধা, উহার এক দি-কের উপরি দিয়া একটা প্রকাপ্ত লৌহ খপ্ত বা-ছির হইয়া রহিয়াছে, তাহা আবার এক প্রকার করিয়া কাটা; উহাদারা কি ব্যবহার নিদ্দ হয় তাহার কিছুই আমরা জানি না। উহার বাম জেবে ঐৰূপ অপৰূপ আর এক যন্ত্র রহিয়াছে। দক্ষি-ণের ক্ষুদুজেবে দেখি কতকগুলিন গোল ২ চেপটা খেত ও রক্তবর্ণ ধাতুনির্মিত খণ্ডবৎ বস্তু। তম-(थ) जामा छनिन इक्ट उत्र (वाध इहेन। वृहर उ ভারীর কথা कি কহিব, তাহা मঞ্চালন করিতে चामारम्त्र উच्रयत कम्या इहेल ना। वामिर्कत **ब्बारवद्व मरध्य अनिवाजगठरमञ्ज पूरे**हे। कृष्णवर्य-उञ्च দেখিলাম, ঐ জেবের তলে দপ্তায়মান ছইয়াও তাহার অগুভাগ স্পর্শ করিতে পারিলাম না। ভাহার একটা আবৃত থাকায় কোন অথপ্র পদার্থের न्। या वाच व्हेन, किन्तु चलत्रोत्र केन्द्र जारत (क्या পেল বেন আফাদেয় মন্তকেয় বিশুণ বড় খেতবৰ্ণ সোলাকার কোন পঁদার্থ রবিয়াছে। এতাদুশ ভর-কর বত্র দর্শনে শক্তিত-মনে তাহা দেখাইতে আ-किकन क्षित्रात्र महरेगमद्य कामा दरभारेटक एरेग।

তিনি উভয় বস্তু নিকোষ করিয়া আমাদিগকে कामाहरतम, रय উहात अरकत बाता जिनि चरमरण আপন খাশ্রুকৌর ও অপর দিয়া ভোজন কালে मार्ग क्डन कतिरुन। जनस्त जात पूर्वे कपूर् জেৰ ছিল, কিন্তু উন্নধ্যে আমরা প্রবেশ করিতে পারি নাই। দেখিলাম ইহার<sup>্</sup>দক্ষিণ বগ্লি-হইতে এক গাছা রৌপ্য-শৃত্ত বাহির হইরা রহিয়াছে। তাহার তলে এক আশ্চর্য্য যন্ত্র हिन। **यामारम्बं श्रार्थनामुमार्त्व नारित**्रक्तिरन পর সেটা বোধ ছইল, যেন বর্তুলাকার ও অ-র্ষেক রজভময় ও অর্দ্ধেক কোন স্বচ্ছধাতু নি-র্মিত দুব্য বিশেষ। নরশৈল সেই যন্ত্রটি **আমা**-**रित कर्णत कारह धितरल त्याध हहेल, यान हेहार इ** कनयञ्जवक अविज्ञ**े क्**नि हहेटल्**र । मरन** २. করিলাম হয় তাহা কোন অজ্ঞাত পশু, কয় দেই নরশৈলের উপাদ্য দেবতা হইতে পারে। আমরা বাগুতানহকারে ইহার তত্ত্তিভাসু হইলে তিনি আমাদিগকে এই বিজ্ঞা**পন করি**-लन, "य हेरात त्रहित अक मठ ना इहेग्रा আমি কোন কর্ম কথন করি না", এই অস্পাই कथात्र मर्ग्य यपि चामत्रा यथार्थकटेन वृतिश्वा থাকি তাহা হইলে আমাদিগুকে তাহার উপাস্ত **(म्व**णांचे त्वाथ कतिए स्त्रा विश्वता हें हा নর শৈলের জীবদ্দশার তাৰৎকার্ট্যর সাধ্দো-প্রোগি সময় কহিয়া দৈয়, একারণ তিনি ইহা-क देन वर्णायी विभिद्यम । ज्यान बाम पिटकंड वर्गान वा कुनुदक्षत्रहरेट जिनि अक भागा क्लानवर पुत्र বাহির করিলেন, তাহা এত বড় যে ভাহাতে चनाग्रारम धोरतरमत कार्या-माधन क्हेटक शादक, কিন্তু তাহা থলির দ্যায় বিস্তৃত এ সংকৃতিভ कता नाम, ७ जांचा फकरण नामसंत कविरक्रक रिशिवाम। क्यक थक शोउवर्व बाजू खांबारड

ছিল, যদি তাহ। যথাথ সুবৰ্ণ হয় তাহ। হইলে তাহা বলুমূল। হইবেক সন্দেহ নাই।

"মহারাজ, অপেনার আক্তা শিরোধার্য্য করি-য়া নিরতিশয় যতুসহকারে তল্ল২করণপূর্বক নর-শৈলের পরিধীত পরিচ্ছদের জেব নকল অন্-সন্ধান করিয়া দেখিলাম। অপর যে এক প্র-কাণ্ড গশুর চার্মে নির্মিত কটিবন্ধনে তাহার 🕆 কটিদেশ বাঁধা রহিয়াছে, তাহাতে পাঁচ মানুষ লম্বা এক থানি আনি তাহার বাম ভাগে লম্ব-गान चाह्न, चनद्रित पूरे मूर्या अकरें। रेथनी, তাহার এক ২ ট। মুখে আপনার সমুদায় প্রজা অনায়ানে ধরিতে পারে ৷ ইহারি একাংশে অস্ত্র-দাদির মন্ত্রকবৎ বর্ত্তুলাকার গুটিকান/ায় অতি-শয় ভারী বাতুময় কোন পদার্থ, তাহা তুলিতে क्हें ति देखें विवासित व्यादिशाक क्या रेथलीत অপর ভাগে রাশাকৃত ক্ষ্মবর্ণ বালুকাবৎ বস্তু আছে, তালা নিতান্ত ওকতর নহে; আমরাও করতলে অক্রেশ ৫০ টা লইতে পারি।

"নর্গৈনের অন্ধ প্রতান্ধ অবেষিয়া যাত। ২
আমানের নম্নগোচর হঠল তৎসমুদায় অবিকল পত্রাকার করিলাম। শৈল মহাশায় আপনার আনেশ যথপরোনান্তি মান্য করিয়া আমাদিপের প্রতি বিশিপ্তরূপ ভদুতা প্রকাশ করিয়া
ছেন ইতি। এই পত্র আপনার শুভ রাজ্যের
উন্নব্তিত্ম চালুমানীয় শুক্ চতুর্থীতে স্বাক্ষরিভ হট্যা ক্রেক্রিম ক্রেক্র, মারসি ক্রেক্র্
এই বাক্য মধ্য মুদ্বান্ধিত হটল ইতি "।

ভূপাল সমিধানে যথাবিধানে এই নির্ঘণ্ট বা তালিকাপত্র পাঠ সমাপ্ত হইলে পর তিনি সাতি-শম-প্রযত্ন-সহকারে আমাকে ঐ সকল রক্ষিত বস্তু সমর্পন করিছে আদেশ করিয়া সর্বাপ্তে তলবারের কথাই উল্লেখ করিলেন; তাহাতে

আমি তৎক্ষণাৎ সেই সকোষ অন্ত্রধানি ও चनग्रान्। वस गकन स्क्रवहरेट वाहित कति-लाम। ইতিমধ্যে তিনি ब्रुका-कद्रशार्थ निक-ममो-পত্ন মনোনীত প্রধান ২ তিন সহসু সেনাকে কিয়দুরে আমাকে ঘেরিয়া দাঁড়াইতে আদেশ করিয়াছিলেন, ডুাছারাও তদনুসারে ধনুর্বাণ লইয়া गठकं छ।-পূर्वक अमञ्च अ अख् उ रहेशा ब्रहिशाहिन ; কিন্তু নৰ্বতোভাবে রাজার প্রতি স্থিরদৃষ্টি হই-বাতে দে দকল আমার দৃষ্টি পথে পতিত হয় নাই। ভূপতি অন্তথানি নিকোষ করাইবার অভি-প্রায় প্রকাশ করিবামাত্র আমি তাহা করিলাম। সমৃদু জল লাগিয়া ভাছার স্থানে ২ কিছু ২ মরিচা পড়িয়াছিল, কিন্তু অধিকাংশই উচ্ছল ছিল। এ নতেজ অন্ত করে করিয়া খেলিবার মত ইভস্ততঃ সঞ্চালন-করিবার-সময়ে সুর্য্যের তেভোবি**স্থ তা**-হাতে প্রতিবিধিত হইবামাত্র তাদৃশ চাকচক্য-শালী প্ৰতিফলিততেকে তাহাদের চকু সকল দধ বা বিদ্ধপ্রায় হওয়াতে তাহারা সমুপঞ্চাতভয়ে ভীত ও বিস্মিত ছইয়া উলৈঃম্বরে চাৎকার শব্দ করিয়া উঠিল। রাজার মনোবৃত্তি নির্ভিশয় দৃঢ় ছিল বলিয়া তাঁহার যত পরিমাণে ভয়হইতে পা-রিত অনুমান হয় তদপেকায় অনেক নু/ম **হ**ই-রাছিল। **অনন্তর রাজা আমাকে তাহা পুন**-র্বার কোষমধ্যগত করিয়া মৎপ্রেনান্তি অনু-গত ভাবে আমার বন্ধনশৃত্থলার অন্ধিক চারি হত্ত বাহিরে ভূমিকিও করিতে শাদেশ করি-লেন। দ্বিতীয় আদেশে আমাকে সেই কাল-চো-কার মত দুইটা উক্ত অন্তঃজ্না বৌহ-বুত-वर भनार्थ वाहित कतिए कट्टन, जिनि युक्ति-वल दित्र कतिशाहित्वन, हेशा नामात्र शिख्न। यारा रुपेक जाराति मटक आमि मक नक्काज णारा नारित कवित्रा छाहा ह्य कार्द्य नार्द्य

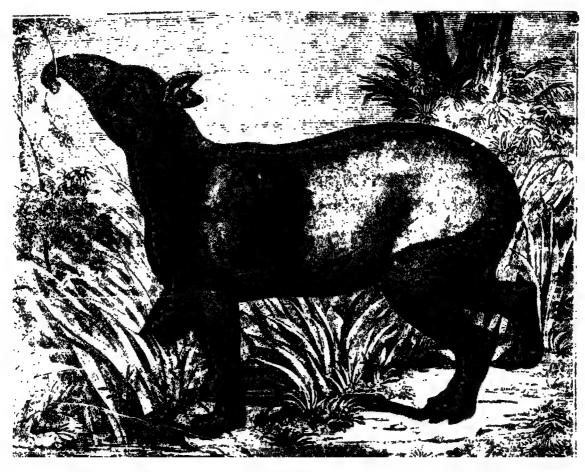
তাহার সবিলেষ অবগত করাইলাম; এবং বাক-দণ্ডলান শুদ্ধ ভাষা ভাষার নিকটে রাখিলাম; বগলির মধ্যে বিশিষ্টকাপে বন্ধ রক্ষিত থাকাতে **जाहा नमूर्युत खरन जिल्ल नार्हे; नाम्**ष्क्रि ना-विक्यारबहे शाग्रः ब म्वाबकार्थ मञ्ज्ञा-পूर्वक বিশেষ যতু করিয়া থাকে। আমি নিভঁয় হই-বার জন্য রাজাকে ভূয়োভূয়ঃ সাহস-প্রদান করত जडर्क हरेएड कहिया भून/भार्ग मिटे शिखलात শব্দ করিলাম। ভাছাতে রাজার বিকায় পূর্বা-পেকায় প্রবলতর হইয়াছিল। উপস্থিত শত ২ লোক শব্দ-শূবনে আছতমৃতবৎ তৎক্ষণমাত্তে ভূমিপতিত হইল; এবং আপন স্থানে দপ্তায়-मान थाकिया चयः ब्राक्षात्कं किय्र कान चरह-তনবৎ থাকিতে হইয়াছিল। পরিশেষে পিন্তল मूहें जि वाकम अनित वंशनी शूर्वव का हात जारा निक्कि किताम, अवः जानारेश मिनाम; "ए-थिल, नर्दना नावधान, এक क्कूलिक माज व्यात्रिक (यन ইহাতে ना लाग्नि, जाहा हहेटल हेहात (उटक এक काल महातारकत चिंडानिकां मिकन वसु बाकारम উভ্ডাन इहेन्ना याहरवक ११।

উল্লিখিত জেবের মধ্যে একটা জেব অনুসন্ধান-কালীন তাহাদের হাতে পড়ে নাই। তথ্যধ্যে এক থানা দিব্যচক্ষু ছিল, দৃষ্টিশক্তির নূগ্রতা হইলে সময়ে ২ আমি তাহা ব্যবহার করিতাম। এতদ্যতীত একটা ক্ষুদু দূরবীক্ষণ যন্ত্র ও অন্ত্রিমান যথসামান্য বস্তুও ছিল, তাহাতে রাজার কিছু মাত্র অভীষ্টসিদ্ধি হইতে পারিত না। অভএক নেঃ সকল বস্তু বাহির করিয়া দেখান যুক্তিসিদ্ধি যোগ করিলাম না, বরং ভাবিয়া দেখান যুক্তিসিদ্ধি যোগ করিলাম না, বরং ভাবিয়া দেখান মুক্তিসিদ্ধি যোগ

रें जि बि बोशाधाय ममाथ।

# টেপর্-পশু।

র-পৃতি যে পশুর চিত্র সৃত্তি হইন,
ভাহার নাম টেপর। হাক্তি-আন
রিকা-দেশ ইহার ক্ষত্রি, ভবার



টেপ্র-পশ্ন।

উচ্চ। শুক্রাপেক্ষায় ইহার শুগু বৃহৎ ও বলবান্, পৃষ্ঠ ও পার্শভাগ **ওকু।** 

शास करन मुमाब-बोर्ल हेरात काराम कारह; ७; मकरनत ममष्टि ४२ है।। कामित्रका-सम्भोष তভিন্ন অন্যত্রে ইহা দৃষ্ট হয় না। উক্ত-দ্বাপে ইহা টেপরের কলে এক কেশশেণী হইয়া থাকে; কিন্তু "কুড়োএয়ার," "সালাড়া," ও "গিওল" নামে সুমাত্রা-দ্বীপের টেপরে ভারা দৃষ্ট হয় না। এই প্রনিদ্ধ; বেজুলন-মগরে ইহার নাম "বাবি- দেশায় পশুর বর্ণগতও কিঞ্চিৎ ভেদ শাছে; वान्"; এदः मालाक:-प्राप्ताम " हिम् "। हेम् इ पिक्-वामित्रकात हिनम् क्काल-वृम्वन् मु-দেহ শুকরাকার, ৪াা০ হস্ত দার্ঘ, এবং ২াা০ হস্ত মাত্রা-ছাপের টেপর চিকুণকৃষ্ণবর্ণ; এবং ভাহার

ও পরিমাণে প্রায়ঃ অর্জহন্ত। ইহার লাজুল অতি। টেপর অভিবল্ধান পত্ত; কবিক আছে। ইত थर्व, ७ शायः लामविहोन। हेहात शन-ठलूडेयु व्यारशकात हेहात विश व्यवहान व्यवहान অর্জ এবং জ্বা, ভথাধ্যে প্রংপদ্ধরে চারিটি দিস্-দিয়া 🐗 পতরা শ্লাবশাস 🚒 ক্ষাব্য সম্ভ कतिहा, এरः भाग्वाजा-भाष्यदम् जिनकि कतिमा कृत्वक-श्रमानि कथ व्येमा क्रिकिन अपिकिक गथ थारक । अहे शक्षिरात्र (क्षत्र-क्ष-क्ष्म-क्ष्म) वृहेत्र। यात्र। किश्वक्षी नात्क-व्य कार्य हैकाइन्त প্রতি মাজিতে », এবং চর্ণদত্ত-সঙ্গ্রা উপর প্রোগরি আক্রমণ করিছে ইবারা কিনিছি বিভা \* माजित श्रीत शार्षि १, ७ इन्हे हाजिनार्षे सर्थः बाताम्म-(यहम धात्रमाम सम्बद्धाः सम्बद्धाः सामीत षर्याः वाणु विनष्ठे इहेन्ना यात्र, ख्यालि हिलाइन्न किङ् च्यमिक्रे इन्न ना।

ইহারা অভাবতঃ শান্ত, মনুষ্য দেখিলেই পালায়ন করে, এবং দিবদে দিদিত পাকিয়া রজনীযোগে আদে কোন জলাশয়ে উত্তমকপে সান
করত নবীন-ভক্-গুল্যাদির অন্তেবনে বন-পর্যটেন
করিয়া থাকে। কোন দুব্যই ইহাদিগের পজে
অথাদ্য নহে। অন্তি, মৃত্তিকা, কান্ত, প্রস্তরগপ্ত
যাহা কিছু নিকটে প্রাপ্ত হয়, তাহাই গলাখঃকরণে
ত্রুটি করে না। ডাজারা-নামক এক জন সাহেবএকটা টেপর্-পশুকে একটা রজতনির্মিত নস্যদান দিয়াছিলেন, সে তাহা তৎক্ষণাৎ চর্বণ করিয়া নির্গিলিত করিয়াছিল।

ইংরাজেরা কহে, টেপর্-পশুর মাংস শুক্ক এবং
কঠিন, কিন্তু আমরিকা-দেশবাসিরা তাহা সুমাদু
জানিয়া এই পশুবিনাশে প্রবৃত্ত হইরা থাকে;
পরস্ত বিনাশের রীতি সর্বত্ত তুল্য নহে; কোন
স্থানে শিকারিরা বিষাক্ত শরমারা টেপর্-বিনাশ করে, কুত্রাপি কুক্তুরের সাহায্যে মাভাইসিদ্দ
করে; কুত্রাপি বা বন্দুকই টেপর্-সংহারের অজ্
বলিয়া গণ্য আছে। কুকুরমারা আক্রান্ত হইলে
টেপর্ মাতকদিগের সহিত ভয়ানককাপে ঘূম্বা
করিয়া থাকে; এবং অনেককে বিনক্ত না করিয়া
মার পাইলে ভয়াধ্যে মন্তার্মান থাকিয়া
আর পাইলে ভয়াধ্যে মন্তার্মান থাকিয়া অনায়ালে শত্রুইতে নিক্তি শায়।

वक क्वेटन किलाजड़ा चन्छा लामिन नाटक नि-वक्षमणाडीज वणीक्क कहा। जामिन नाटक नि-विज्ञादका, निकल-चाटमिक्काङ जाम्लाद चटनक लोगा क्रिया कृष्ट किला चाटक; चालाड़ा आटक चटन ग्रेडान कृष्टिंग चालाइक असूह काठीटक श्रीकान कृष्टिंग चित्रात्मक चाला क्रियां, जरः

नाष्ट्रबङाव मृट्डे (वाथ एवं क्वि कि वित्व के नकत अने मनुद्रवात वावशादत श्रद्धांश श्रेटक शादतः; जात्रब्साद्यं के नकत अने वित्यव श्रद्धां क्वीय।

ডেবিড্ হেয়ার সাহেবের ওণবর্ণন।

(মৃত ডেবিড্ হেরার নাহেবের মৃত্যু-দিবদীর-বার্ষিক-গড্)
দমীপে পটিত হয়।)

\*\*\*\*\* कर मेठ महाचा (हजात नाटहरतत 🍳 🌋 व्यव्रशीय मिवन डेलिइड। मःवरम-\*\*\*\* बार्ड श्नता यम् यागता ब-इल बक्ब डेशिविष्ठे हरेशा (मरे महानुडाव शुब-বের গুণকীর্ত্তন করিতে প্রবৃত্ত হইয়াছিল অদ্য তাঁ-হার গুণ ব্যরণ করিয়া ভক্তি ও কৃতজ্ঞভা-রুষে यनः चार्न् हरेएएए। कि काल कि श्रकात छा-হার ওণানুবাদ করিব স্থির করিতে পারি না। তাঁহার গুণ সকল অসাধারণ ও আশ্চর্য্য। এমং म्यामीन मानव-- धमर शहिरेड्यी वास्तव-- अह वक्रामाण कथनहे प्रथिष्ठ भाहे बाहे। विरम्भोग्न হইয়া ভিন্ন-জাভির কল্যাণার্থে এতাদৃশ-কঠোর-তর-পরিশুন-কর্ত্র। অতি-দুস্পাপ্য; তিনি আমা-**पिरात यक्रव-मन्यापनार्थ ও मानमिक-छेन्नछि-**সাধনার্থ যে কত পরিশ্ন-কত ব্যয়-করিয়া नियारहन, ठाहा वर्नन कता यात्र ना; त नक्छ व्यात्नाच्या कतित्व व्यामानित्रत व्यक्षकतृत्व का-হার প্রতি প্রতি ও ভক্তির উদয় হয়। আ-महा उद्याना स्य जाराह निकटि अक अक्छड थान-भारम वस चाहि, नम्भूवंतरण कि ठाहासहै-एक कथन शतिमुक्त ए**रेएक शांतिय? स्वयनहे सहस्**। षामत्र। अवरत षामापिरभन्न षास्त्रीक क्षणाह्य हिस् श्रकान कडिएडि बाब। ान प्रस्तान करणा मान्य कतिरक क्षारम् (क्ष

বক্তা করিতেছেন, তথন হেয়ার সাহেবকেই নেই মঞ্লোন্দেশ্যের প্রধান কারণ বলিয়া বোধ হয়। যথন দেখি দেশীয়-ভ্ৰাতৃগণ একত হইয়। श्रीत्वाकिम्टिशंत मूर्थे छा-निवाकत्व-क्रम्। कण्यमा कतिएक एक, वा कित्रवित्र हिनी-विश्ववामिरशत मू-দাৰুণ-বৈধব্য-যন্ত্ৰণা-দৃষ্টে কাতর হইয়া তাহা নুক্ত করিবার উপায় চেষ্টা করিতেছেন, তথন ছেয়ার সাহেবকেই তাহার প্রধান কারণ বলিয়া। বোধ হয়৷ ফলতঃ যথন দেখি হিন্দু যুবকের৷ জননা জন্মভূমির রোগ-প্রতিকারের নি**মিত্ত মনঃ-**সমপণ করিয়াছেন, তথন হেয়ার সাছেবকেই जाहात अधान कात्रव विलिया (वाध हम्। यथन দেখি এতদেশস্থ কোন কৃতবিদ্য ব্যক্তি চি-কিৎনা-বিদ্যা-বিশারদ হুইয়া বহু-প্রাণীর প্রাণ-রক্ষণ করিতেছেন, তথন হেয়ার সাহেবকেই তা-হার প্রধান কারণ বলিয়া বোধ হয়। বাস্তবিক प्रभाव जुरेष्मानक यथम य अका य कि**ष्ट्र** विष्ण বৃদ্ধির পরিচয়-প্রদান করিতে দেখি ক্য়োর সা-**इ**ञ्. ज**ल्ल्ड् नाइ** ।

ভারতবর্ধের পূর্বতন অবস্থা ক্ষণমাত্র করে। করি-

য়ার সাহেবই আ্তিপথাকা হয়েন; তাঁহার মনো- হয়! কিন্ত এই পরিবর্তদের শুল-কারণ হেয়ার रह मूर्जि चामामिश्रत मानम्भाष्टे काज्जून।मान- नार्व्यक किर्ण करेरवक । अहे वस्रीमा अक-कारण श्रकिष इया कि विम्रा-विवरस, कि कान- किलोन निविष- वकामान-कृरण निकिश्व हिना। বিষয়ে, কি ধর্ম-বিষয়ে, যে কোন প্রকারে এত- চিরমূর্যতা এদেশে আধিপত্য করিও, বঞ্চ-সন্তা-দেশীয় লোকের প্রীবৃদ্ধি হইয়া থাকুক, ছে- নেরা কুসংক্ষার-পাশে বন্ধ থাকিয়া নিভান্ত য়ার সাহেবই তাহার অদিতীয় কারণ। তিনিই অমানবৰৎ ব্যবহার করিতেন। কৰণীকর ছে-আপনার যতু ও পরিশুমদারা তাহা নিজায়: য়ার সাহেব আমাদিপের তাদৃশ হীনাবস্থা দে-করিয়াছেন। যথন দেখি এতদেশীয় কোন ব্যক্তি থিয়া অতিশন্ধ-দুঃথে সম্ভপ্ত হইরা তাহা দুর-করি-কোন সভা-বিশেষে উপস্থিত হইয়া সুযুক্তি- বার নিশিক্ত তৎপর হইয়াছিলেন। বিশেষ-যুক্ত-বচনাবলিছারা এদেশের মঙ্গল-সম্পাদনাথে পরিশুম-প্রুক তিনি এই হিন্দুকালেজ সংস্থা-পন করেশ্র মেডিকেলকালেজ যদ্যারা সহসূহ প্রাণির প্রাণ•রক্ষা হইতেছে, তাহার উন্নতি-সা-হার প্রণাত বিদ্যালয়, যাহা অদ্যাপি তাঁহার नामबाता व्याथा । बार्ट्स, ठाहाट डाँहात कड পরিশুম ও ব্যয় হইয়াছে: বন্ধভাষরে অনুশা-मन-निभिन्न (य अक्षि পाठेगाना नः इाणिक इस, তিনিই তাহারও সূত্র-পাত করেন। এই বিদ্যা-লয়সমূহে যে কত শত ঝক্তি সুশিক্ষিত হইয়া-ছেন, এবং হইতেছেন, তাহা গৰিয়া শেষ করা यात्र ना।

হেয়ার সাহেবের অসাধারণ দয়ার কথা কি कहिव? जिति चालम विष्णावादा पतिषु पूःथा अवः चन्यामः वालकिष्णिदः विना विकास वि-म्रा-मान कतिएवन; जानामिभटक शृक्कामि अ चनाना श्राह्माचनीय वस श्रमान कविराजन, जनः नगरा २ वर्ष नाहाया कतिराउ वित्रक हिर्मन ना। जिनि बक्रप्रमञ् मूर्श्य वानकगरमः लिजा-খকণ ছিলেন। তাঁহার দৃত্যুতে কত লভ পি-ज्ञाज्होन वागरकता शूनतात्र शिक्हीन हरेता व्यनाथ रुरेग्नारः। जीरात यस्त्र श्राणिशाणिक क का रिविद्य कि अक काम्कर्या भविवर्षन श्राक्षीक भिक्षिक क्षेत्राः क्षेत्र मात्र याकि विव वर्गनावालक का

मोडानामि मक्त्र क्रियाएम! क्रास्मीय करनक ব্যক্তি তাঁছার স্বেছ ও কঞ্না রসের আভাদন করিয়াছেন; এই সভায় উপস্থিত আনেক মহা-শরেরা হেয়ার সাহেবের ছাত্র। তিনি এতদেশস্থ লোকদিগের যে কি এক প্রিয়ক্জু ছিলেন, তাহা वष्टमाञील। याहारल चामानिरगद्र विमा वृक्ति गভ্যতা वृक्षि इस, व्यामदा मन्या ममारक माना ও গৌরবান্ধিত হই, এবং সর্ব-প্রকার-সুথে সুখী হই, হেয়ার সাহেৰ যাবজ্জীবন তাহারই চেষ্টা করিয়াছিলেন। তাঁহার অর্থ নামর্থ্য আমাদিগেরই কল্যাণার্থে **সমর্পিত হইয়াছিল। বোধ হয় তিনি** কেবল আমাদিগেরই মঙ্গলমাধনে জন্মগুছণ করি-शाहित्तन। किन्न श्राः जारकरभत विषय अह যে তিনি কিছু কাল জীবিত থাকিয়া আপনার পরিশুমের সাকল্যানুভব করিতে পারিলেন না যে তাঁহাদারা কি প্রর্যান্ত এদেখের বর্তমান নৌভাগ্যভিবৃদ্ধি স্বচকুষারা দর্শন করিতে পা-রিলেন না। ছা বন্ধো ছেয়ার সাছেৰ। তুমি अक्रांत कोविक थाकिल व्यामाहिरभंत मुश्च मो-ভাগ্য যে কডগুৰে বৃদ্ধ হইড, তাহা বলিয়া প্রকাশ করা যায় না। হা মাতঃ বন্ধভূমি। যা-হারা ভোমার মুমুর্-বস্থার-প্রভিকারের নিমিত্তে যত্নযুক্ত হয়, তুমি কি তাহাদের ভারবহনে অস-मर्था? राम्न : अक्तरन जामरमारून जाय, याँशादक প্রস্ব করিয়া তুমি জগৎ-মধ্যে ধন্যা হইয়া ছিলে, লে মহাত্মা এথন কোথায়? বিদেশীয় সাধুলোকেরা যাঁহারা ছোলার পোষ্য-সম্ভাবের ন্যায় ক্ইয়া ভোষাকে মাতৃৰৎ জ্ঞানে ভোষার मित्रो **एकाया क्रिक्** चळीब ए० श्रेड हित्तम, डीहाजाहे दा अथन काणावत कि चान्छर्। यामात्रा अवाति कवानि लव किसा करतन, वीराहारे कि बार्ग कामाद व्यवस्था कर-

श्रुष्ठ इहेशा कृषास मिलादाद व्यक्तवृक्ति कतिए । গমন করেন। হায়। তাঁহারা নকলেই বিলুপ্ত, সকলেই অন্তৰ্ভিত হইয়া গিয়াছেন। একণে তো-मात्र व्याचा-मञ्जान वा श्रीमा-मञ्जानगरवत मरवा তোমার প্লতি যথার্থ প্রেমিক ব্যক্তি না দে-খিতে পাইয়া আমার চিত্ত ব্যাকুল হইতেছে। কৰে ভয়ঙ্কর জাত্যভিষান, বিষময় কৌলীন্য-প্रथा, कूर्मिक नामा किंक होकि नीकि, याहा लामात श्रमत्र विमोर्ग कतिएउए, करव कि श्रकारत কাহার চেষ্টাদারা তুমি তাহাদের হস্তহইতে পরিত্রাণ পাইবে, কবে বিদ্যা বৃদ্ধি সভ্যতা স্থা-ধানতা জ্ঞান ও ধর্মের আলোক চতুর্দিকে পরি-ব্যাপ্ত হইয়া তোমার অন্তঃকরণ প্রকুল হইবে, তোমার মুথপ্রী উজ্জ্ব হইবে, কবে ভোমার পূৰ্ব-গৌরৰ পুনঃ স্থাপিত হইয়া তুমি ধরাতলে প্নরায় মান্যা ও গণ্যা হইবে? \*

विनि व्यामानिशंत अमे शिय महाश्वाती विष् हिलन, व्यामानिशंत कलान-माधन याहात कीवहनत अक माज वुष्ठ हिल, अ त्य वुष्ठ
छेनाभानत-निमिष्ठ जिनि यजू, धन, अ मातिति क क्वम, विम्माज वजी तार्थन नाहे। व्यमा जाहात वितहर प्रजूषिक मृना मिथि छिन, मनः व्याकृत माकमाशस्त निमम हहेया कानकर्णहे व्यात माखुना श्राष्ठ हहेए हा। जाहात व्यहादव व्यामानिशंत मुश्रानानमा प्रतिष्ठार्थ हहेए हा। जाहात मृजूत मह्म महम्हे व्यामानिशंत मूथनिमंत्र ग्राह्म अस्म महम्हे व्यामानिशंत मूथनिमंत्र गिष्ठ थर्व हहेया हि। यहि व्यामता व्यावाम अमातिक अमानिक व्यामानिशंत व्

<sup>\*</sup> যে সকল-প্রবন্ধ-পরিশেষে লেখকের ছাক্ষর বা চিক্ক থাকে, এতৎপত্তের সম্পাদক ভদুক্ত অভিপ্রায়ের দায়ী নছেন। বিগুল, সং

পোষক হয়, এমৎ বন্ধু অতিবিরল। স্বার্থ-मूना इहेशा शतकाठित महत व्यवस्य करतन, अलाकृष यन्त्र। अकरत मूल्युला। यांकाता चा-मानिटमत रक्षु रिलया शतिष्य (पन, जाँशानिटभन्न আন্তরিক অনুরাগ সে প্রকার নছে; সুভরাং ভাঁছাদের যজপ যতু ও আগুৰ প্রকাশ করা উচিত্ত, তাহা না করাতেই আমাদিগের মনো-हथ किक्र हे पूर्व इहेट उट्ह ना। उपिक्त ठाउँ त-পরিবর্তনের সময়ে ছেয়ার লাচেবের বিরহ আ-गामिटणङ्ग मञ्जथ-कारद्य शूनकक्तीशन क्हेंग्राह्। তিনি यদি এমৎ সময়ে বর্ত্তমান থাকিতেন, ভবে কি আনাদিগকৈ আর কিছু আক্ষেপ করিতে **इ**रें छ ? छटत कि व्यामानिरगत कि**ष्ट्र व्यक्त**ान থাকিত? তিনি আমাদিগের দেশীয়-ভ্যাতৃগণের সহযোগা হইয়া যাহাতে আমাদিগের সমস্ত দৃঃখ मुंब इ.स. अवः याका**एक आमन्ना मन्नारम्ब शर**म সংস্থাপিত হই, তাহা অবশ্যই করিতেন। তাঁহার উদার স্বভাব ইহা না করিয়া কথন নিবৃত্ত চ্ইত না; কিন্তু হতভাগা ভারতবর্ষের বৃ**রি এরূপ** मदल कथन উপত্তিত हहेरत ना। जामता तृति চিরকাল আক্ষেপ করিয়া জীবন হরণ করিতে জন্মগ্রণ করিয়াছি।

যিনি এতদেশন্ত লোকদিগের বিদ্যা বৃদ্ধি ও নভাতা বৃদ্ধির নিমিত্ত এত পরিশুম ও বায় করিয়া গিয়াছেন, অত্ত্য ক্রালোকবর্গও বিদ্যাবতী হয় <sup>ইহা</sup> তাঁহার অভিপ্রায় **ছিল, সন্দেহ নাই**। ভবে যে তিনি তাহার বিশেষ অনুষ্ঠানে পুরুত্ত रुएत गाइ, जारात पातक कात्र हिला श्रका-শ্যৰূপে অবলাদিগকে বিদ্যা-শিকা দেওয়া হয়, ভারতবর্যের ভাদৃশ সময় তথন হয় নাই।

হইভেছে না; যেতে তুক আমাদিণের চেষ্টার প্রতি- । ভীষ্ট অবশ্যই সিম্ম করিতেন। আমরা যে একতে। নানাপ্রকার সাংসারিক রীতি নীতি এবং কৃপ্রথা নকল পরিবর্ত্তন-করিবার চেষ্টা করিছেছি, এবং ক্রমশঃ সভ্যতা দোপানে আবঢ় হইবার উপায় দেখিতেছি, হেয়ার সাহেব এতদৃষ্টে অতিশয় আহুদিত হইতেন, এবং যাহাতে আমরা কৃত-कार्य। इहे, जाहात विवक्त मह्याणिका कति-তেন। তিনি জাবিত থাকিলে বন্ধভাষার অনেক উন্নতি হইত, এবং বিদ্যা-প্রচারের সুন্দর প্রণালী नः इंशिंठ इहेठ।—विता कि वासता नर्दे थका-**दि मुथी इहे** जाम।

> चात कि विनव, क्रडरे वा चारक्रिश कत्रिव, কত্ই তাঁহার গুণ স্মরিব। যত্ত তাঁহার গুণ স্মরণ করি, তত্ই বিচ্ছেদানল পুনরুদাপ্ত হয়। मन्द्रिक कि महीसमी मिक्कि निवास्त्र ६ दाथ हरून, यन (रुयात-नाट्य अरे मजा-गृष्ट् श्राप्य कति-लन, এবং প্রবিষ্ট হট্য়া যেন তিনি আমাদি গকে সম্ভেহ্-বচনে জ্ঞানোপদেশ-প্রদান করিতে नाशितन

> > <u>এ</u>প্রিপতি মুখোপাধ্যায়।

किनका जा। ) वा जून, ३৮०८ मान।

वनी ও यवबोर्ल हिन्नुवर्ण-भठारतत विषय।

তদেশীয় লোকদিগের সংস্কার আছে

বি ভারতবর্ষ পরিত্যাপ করিয়া ভিন্ন 🎎 🖟 🔆 🛪 🏗 (मरम) शमम कड़िल का जिल्हें स्रेटिक হয়; কিন্ত পুরাব্তানুসন্ধানভারা ভল্তবাধিনী পত্রিকার ইহা স্পষ্ট প্রভীত হইছেছে, বেংপুর্ব-जनकारन हिन्दुता जनाजारक जनत-करण भगन नकर्व िति कोविक थाकिता काँदात महत- कतिर्वन, बवर द्वाराक्षममहत्व वस्ति। कति-

त्मता व्यविष्ठि कतिराउट्टन; \* बाहाता हैना অবগত মহেন, তাঁহাদিগকে অবগত করিবার मिभिन्न जामना वनी ଓ यवकीरणत अनक छैपा-পদ করিলীম।

वलीबोभञ्च हिन्दुिंग्दर्गत महिल जातलवर्षीय লোকদের এত পাদৃশ্য-ব্রাহ্মণক্ষতিয়াদি-বর্ণবি-ভাগ—তাহাদের উৎপত্তি-বিবরণু—ব্রাহ্মণদিগের ष्यनामान्।-मधान, এবং मिथा রাখিবার বিশেষ প্রথা-সমান-বর্ণের সহিত বিবাহ-অসম-বিবা-হে বর্ণক্ষরের উৎপত্তি—চণ্ডালজাতি—গোবধ-প্রতিষেধ - মৃত-পতির অনুগমন-মৃতশরীর-দাহ —ব্যবস্থাদি-প্রচার বিষয়ে ব্রাক্ষণের অ**ধিকার**— नानाविध-इटम्पत नाम-(वन, तामायन, महाजा-রত, বুক্ষাণ্ড-পুরাণাদি গুস্থ--সময়-বিভাগ--বা-রাদির নাম-অঙ্কশাজ্ঞ-এই নকল-বিষয়ে উভ-व्रकां वि अव नमजावाशम, (य वनोषीश-मन्त्र-র্কীয় তত্তবিষয়ের বিস্তারিত বিবরণ হিন্দু পাঠক-मिरगत भरक वाल्ला (वाध हहेटल भारत।

ধর্মবিষয়ে তথায় এখানকার ন্যায় নানাপ্রকার मञ প्रविच नाहै। टेमवधर्य वनोषीशङ्क लाकिन-গের ৰজাতীয় ধর্ম; তথাকার বৌদ্দিগের সঙ্খ্যা অতি অপে। ইহা অতি আক্ষর্য্য তথাকার ব্রান্ধ-(नहां डेनवीं खांतन करतम मा। इंहात कांत्रन कि? তাঁহারা কি পবিত্র-ব্রাহ্মণবংশীয় নছেন? অথবা ठाँशाहा छथाच शमन-पूर्वक चामिम मितानी-দুের শহিত উদ্বাহাদি করিয়া কি উপবীত ত্যাগী कतियादमा? अरे मकत श्रदणुत छेखनारम चा-महा नमर्थ महि। वुष्क्रद्वता कर्ष्य, ठाराता शृख-विकात श्वा करतम मा; किन्न मनीबीटलत मध्।-रित्न स्वक्रीला वर्षमाम नाटक द्वारिश्रारम स्व म क्यार्टिविनी अधिकात अविषयक करवन वृत्तात श्राहात कारक।

अम्याणि वह मूद-मान किमूनसा- वक वक केनामना-सान थारक, जाशांक रकान দেবপ্রতিশা নাই। তথায় এথানকার নীগয় সল্ঞা-मो नकत पृष्ठे रुप्त मा। वाक्य पिरणत थापा-मरधा **क्रिक উण्डिक र अगर। शूर्व प**िरिक हरे-याष्ट्र यं वनीषीर्ण भावध প্रতিधिक आह्नः 'কিন্তু ব্ৰাহ্মণব*্*তীত অপবাপর জাতি গে৷ ভিন্ন খন্য কোন পশুর বিচার না করিয়া প্রায়ঃ দর্ব-প্রকার জন্তুর মাংল অবাধে ব্যবহার করে।

> वनीषीर्भ कवि \* नारम अक ভाষা আছে; তাহা সংক্তেরই তুলা ৷ কিন্তু অধুনা সামানা কথোপকথনে তাহার ব্যবহার নাই। পাঠকদি-গের স্বোধ-জন্য উক্ত ভাষায় রচিত বারত-যুধ (ভারতযুদ্ধ) নামক গুতুহইতে একটি শ্লো-कार्क छेकुङ केंद्र। याहेरल्ट् ।

> > পিভরাকুল শুবেঃ নুপতিকর্বে মূল্থমূরিলে।। ইরিকা গটোৎকচ হ্রুমান্ নস্তিয়া স কিও গগন॥"

কবি-ভাষায় রামায়ণ, নীতিশান্ত, অর্জুনবিজয়, এবং নানাবিধ আগম-গৃত্ত লিপিবদ্ধ আছে।

· পূर्वाक्षमञ्ज्ञाभवानीता अकवाकः इरेशः कर्हः, य क्रिक् (कविक) फ्रमश्हेर काश्रापत प्राम সভ্যতা, ধর্ম, এবং ব্যবস্থা আনীত হুইরাছে। প্রথমতঃ যবদ্বীপেই দে দকল আনীত হয়, তথা-ছইতে চতুর্দিকে পরিব্যাপ হইয়াছে। ভারতবর্ষীয় লোকেরা শদ্যাত্যতাপ্রযুক্ত যবদ্বীপকে শুেষ্ঠ জ্ঞান করিয়াছিলেন। ১ শকান্দে ত্রিতৃষ্টি নামক এক জন বান্ধাণ বহুলোক সমভিব্যাহারে যবদ্বীপে গমন করেন। তাঁহারা দ্বীপের দক্ষিণতটে উত্তীর্ণ হইয়া শেক-নামক পর্তমূলে প্রথমতঃ বসতি করিয়াছি-(বান। যবদীপে অধুনা যে শক প্রচলিত **আছে** 

<sup>\*</sup> काशाब माम "कवि" व्यक्ति व्यक्तिमां नहरू; श्राहीन वोश्व-मिर्लाह कावाह नाम "शार्था"; श्लाहीन रैटलिक-म्यूडह नाम "ছদ্দস্", এবং ভাহার অপভূৎদে পার্নিদির্গের ভাষা "স্ক্রেম্প बारम विश्वाह जारह।

ভাছা ত্রিতৃষ্টি মানা এক প্রাচীন রাজা স্থাপন कार्त्रम, उर्कीमा वे मक जामिनक-मास्य अनिष चारक्। यवधीरभन्न वर्खमान भक ১११७। यव-बीटल ज्यानिम हिन्दू छेलनिटविनकिनिटगंत नक्था। कं इनि, ठाइ। विवाद मसत्र यवदी शवानी बाकि मकन बक-वाका सर्वन; किन्न ১৯० পরিবা-রের অংশকা অধিক বলিয়া কদাপি কেছই কছেন ना। हेहा व्याकटर्यात विषय वटि, य छेलित्व-**मिकराद मर्था जानक जी ७ मिश्र हिन। बि-**जुष्टि बकीय जी প्रथमिंगरक नम ভিব/श्रिकी कति-शाहितनः जाहात महध्यिनीत नाम वाक्रनी-कानी, পুঞ্জের নাম মনুমান্স, এবং মনুমাদেব। কা-कर्ज मार्ट्य अनुमान कतिशास्त्रम, य यथन छा-हातः जी-शृध-शतिबात वहेशा यवधीरश श्रञ्जान করে, তথন তাহাদের বৌদ্ধ হওয়াই সম্ভব। কিন্তু তদ্ধপ করিবার বিশেষ বলবৎ প্রমাণ দেখিল। তিনি ও তাঁহার অপত্যেরা কিয়ৎকাল তথায় রাজ ব করিয়াছিলেন।

ে শক-পর্যান্ত যবদ্বীপে অনেক উপনিবে-শিকের সমাগম হয়। কভিপয় বিখ্যাত ব্যক্তির নাম এই: যথা,

শেলপ্রবন্ধ, ১০০ শকে গমন করেন।
বোটক

ম্বিল, ৩১০ ,
ত্তম, ৩৩১ ,
রিসদী ও তৎপুশ্র দশবাদ্ধ ৩৫০ ,

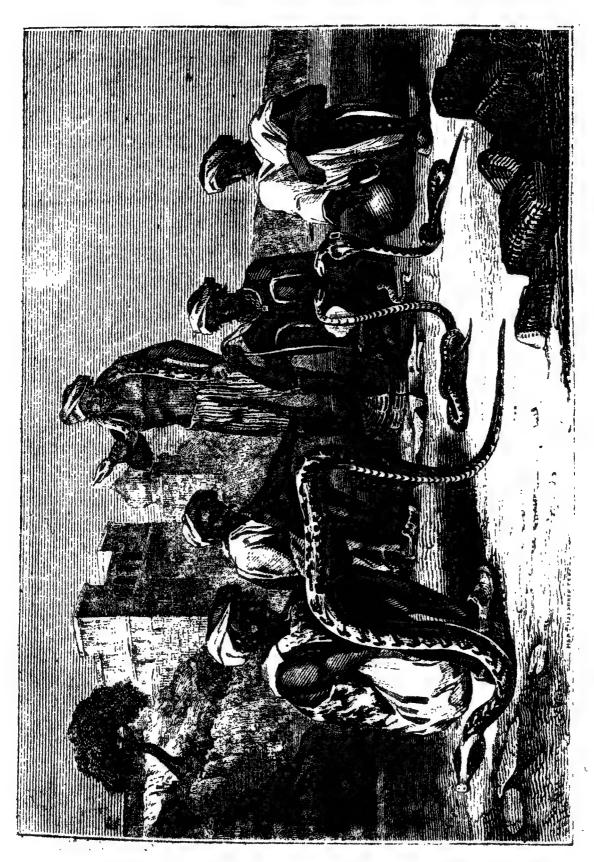
৪৮০ শকে কভকগুলীন পণ্ডিত (লৈব?) ম্বগিপে গমন করিয়াছিলেন; কিন্তু তাঁহাদের মতের
নহিত যবদ্বীপ্রান্দির মতের বিভিন্নতা হইবাতে তাঁহারা দুরীভূত হইয়া তথাকার রাজা
ভিতদামের শরণ-গৃহণ করেন। শুতুদাম তাঁহাদের মভাবলম্বী হইয়াছিলেন।

যবনীপবাদীদের মুসল্মান ধর্ম-পূহ্ণ-করিবার কিয়ৎকাল-পূর্বে কভকগুলীন লৈব তথার গমন করিয়া মজপহিৎ শমক-ছালের শেব রাজা বুবিজয়ের অ্যুল্য প্রাপ্ত হয়েন। মজপহিৎ রাজ্য বিচ্ছিন্ন হইলে তাঁহারা বলান্তীপে পলায়ন করেন; তাঁহাদের অধিপতির নাম চান্তরান্ত। বলান্তীপে এক্ষণে ১৭৭১ শক চলিতেন্তে।

#### সর্পের বিবরণ।

नारिंग अविव जिन्न शाबीय 🥞 🗪 🎉 धर्मगाब-मर्गत्न देश मून्लहेकाल अ-क्षीलकार के काम स्ट्रेटक य विवर प्रभोव ও জাতীয়েরা মৃত্যু-প্রদ অভিভয়ানক ব্যাপার-मन्नाहक मर्निहान मश्रक विष्यं मुकायुक হইয়া তাহাদিগকে দেবতাবোধে প্রাণানুরোধে পূজাদি করিয়া পাঁকে. এবং তদ্গুণ-বিদয়ে नानायज-প্রযুক্ত ইহাদিগকে কেছ্ । यहन-नमूर्वत, त्क्वा পृषिवीद यावनीत्र व्यवकात्रत. मुन छान करत्र। मिनत-(मर्ग नर्श-कांकि चक्र-छ मन्त्र हिन। जबाकात्र स्माटकता मन्दित-मध्या-প्रेजिष्ठिक प्रत-मृर्जित्र ममीरण नर्गिनगरक गर्नमा मः चालिक क्रिया छेत्रम १ (छाक्)-(ल-য়াদি দুব্য ভোগদান করিভ: এবং রাজা, পুরো-हिन्छ ७ वनीकत्रव-(वस्तामिरगद्ग सीत्र २ गरि असि-(एक-कालिक महामरहाक्त्राद वे नर्लन्न श्रृक्षा कतिछ; क्या छाराजा मगरक शहूत एक करनत চিক **७ পৃথিৱীর নিদান করিয়া জানিত।** চিকিৎ-गाविष्रा । वर्षे " वक्त शहेन वाशिका " वर्णवाडा निक्छ व्हेशारक्। नरणंत्र शुक्त काशारत्त्व स्वरम न्डाकात नःगय कतिरम बार्थ कलाकृष्टि गठम





নিশার হয় তাছা তাছারা সৌরপরিধি অর্থাৎ
চক্রাকৃতি সূর্য্-মন্তল এবং অনাদি অনন্ত পারমেশ্রী নিত্যভার অনুরূপ বোধ করিত। অআদাদির শান্তেও এই প্রকার উক্তি আছে, এবং বোধ
হয়, তজেত্কই অনন্তদেব সর্পাকারে বর্ণিত হন।
যে২ প্রকার বিরোধ বিসম্বাদাদির ঘটনা সম্ভব
হয় সে সকলের প্রবর্ত্তক সর্পাণ ইছা ঐ মিসরজাতীয়েরা কহিত, অপর তাহাদের বোধ ছিল যে
ফিউরিন্ নামা বিবাদাধিষ্ঠাত্রী-দেবী-ত্র্য-নর্প লাইহা কশারূপে ব্যবহার করিত।

हिश्मिन्नमी-जीवक आठीम काक्षीय काजीयवा সর্বাপেকা অণ্ডে এই চল্লিগণের উপাসনার বি-ধান প্রকটিও করে; তদনম্ভর তদ্ভাস্তে অন্ত্র প্রতিযোপাসক উক্ত মিসর্দেশীয়ের। তৎপ্র-চার পূর্বক পল্লবিত করে; পরিণামে আশিয়া ও আফ্রিকার যে২ ভানে ঐ দেশের বাণিজ্য-বি-वर्य नः मर्भ हिन जथाय अत्नकात्नक अः म हेका धर्माना इहेशा कनशृष्णामिबंदश बाध হুট্যাছে, বিশেষতঃ ভারতবর্ষে ইহার প্রচার দশন বাতলা। বোধ হয় যে এভাবৎ এবং অত্তর অন্যানঃ অবৈধ কুসংক্ষার ও মিধ্যা-জানের আকর স্থান মিসর দেশ, কিন্তু এত-षियस युक्ति-नव्-कन्यान-वाकोक **व्यात** कान প্রকার প্রমাণ পাওয়া সুকঠিন। এই হেতু ঐ দকল মত এই ক্ষানে ভারতবর্ষীয় রূপে বিখ্যাত व्यादश मिमतदम्भोध्रमिर्गत नाम् अहे छात्र उत्रं गण दिलादवडा वर्धार मानुर अत्नक वाहि; তাহার৷ আপনাদিগকে অন্যনিরপেক জাতি ক-রিয়া বোধ করিয়া থাকে। ভাছাদের এভাদৃশ। অভিনান আছে যে বলীকরণ-শাজ্যেক সর্গমন্ত্রের এমত মোহিনা শক্তি আছে যে সেই মজোচারণ-নাত্রেই দর্শেরা বশাভূত হুইয়া এক কালে জড়াব-

স্থায় পরিণত হয়; এবং তদবলম্বদে তাহারা উহা-मिशरक नृष्ठा कहाहा: याहा रकरन व्यक्ताम-मूनकहे বোধ হয়। অধিকন্ত ভাহারা কহিরা থাকে যে यामृग विवधाती नर्भ इडेक छए: भन कल इहेर छ তাহারা প্রাণ রক্ষা করিতে পারে, এবং ঐ সকল দর্শকে কিছু মাত্র ভয় করে না। ইহা সর্ব-সাধারণ বিদিত আছে যে এই ব্যালগুহিরা বনহইতে সর্প পূহণ করিয়া তাহার বিষ-দস্ত-সকল সমৃ-लाष्पारेन-पूर्वक ३७७७ कीड़ा कताया चाउ 4व ब म् ज-होन-नर्श-मंत्रीदि इंडार्गन कताश (माय नारे, किन्नु रेश मश्रमां। चाष्ट्र य चित्रितंत्र সর্পণাহীও অণ্যে সর্পের বিষ-দম্ভ ভথ করিয়া তৎপ্নকৃথিতি না জানিয়া হঠাৎ তৎসূপ-দং-শনে প্রাণে বিনষ্ট হুইয়াছে। সর্পের দম্ভ ভথ করিলে পুনশ্চ পাঁচ ছয় বার সে স্থানে দন্ত হয়, তাহা স্বরণ রাখিয়া তদুমূলনে যতু করিতে क्य, नरहर श्रीन-मः नरम्य महावनाः व्यामना अठ-জ্জন্য পাঠক মহাশয়দিগকে অনুরোধ করি যে ভন্নব্ৰকদিগের বাক্যে বিশান না করিয়া নর্প-স্পর্শ-विषयः डाँशाहा यथा नाथा नावधान थारकन।

অন্যান্য-দেশের ন্যায় ভারত-থণ্ডেও অলোকিক সর্পের ইতিহান শুনা গিয়া থাকে; এবং
এতজ্ঞপ অভুত ইতিহান অনেক শুভ আছে।
কিন্তু তাহাদের ক্পাই-ব্যক্ত-অলীক্ম লক্ষণসত্ত্বেও
যে তভিষয়ে অনেকের বিশাস হয় ইহা পরসাফর্ম্যা অনেকে কহিয়া থাকেন যে তাহারা মচক্ষুতে রাজসর্প দেখিয়াহেন; ভাহার রাজবং
ব্যবহার ও রাজ চিহ্নে চিহ্নিত গাত্র এবং রাজ
মুক্টোপলোভিত মন্তর। উহা অপার-সর্পর্যবর
সাহত বিচারাসনে বসিয়া হিচার করে, এবং রাজবদনুমতি করে। তৎপ্রজাবর্গ ভাহাকে আহারদান করে, ভাহা উপস্থিত বা করিতে পারিকে

विन करल श्रमान करता। आमहिका ও अन्योग्र थाल जानक-मर्लाद्र स्मारिनी-मान्ति चाह्य, चर्थाय তাহারা যে প্রাণির প্রতি দৃষ্টিপাত করে সেই প্রাণী ভৎক্ষণাৎ উহার দিকে আকর্ষিত হয়, তত্ত্র-ত্য লোকেরা এমত বিশ্বাস করে; কিন্তু অত্তেত্যরা चारतक है जो हो चीकांत करतन मा, अव॰ वह সুবিজ্ঞ পণ্ডিত যাঁছারা অনেক সর্প দেখিয়াছেন ভাঁহারা কহেন যে ইহা সম্পূর্ণ সমূলক।

मर्लान প্রায়ঃ পৃথিবীর সর্বাংশেই প্রাপ্ত হওয়া যায়, কিন্তু দেশ-ভেদে ন্যুনাধিক ও জাতি-ভেদ इश्र अहे माज विस्मव।

শিগেল্-নামক গুত্তকত্ত্ব। সর্পজাতি নিৰূপণ-বিষয়ক স্বীয় গুন্তে সর্পাগণকে সবিষ নির্বিব ভেদে দুই বর্গেতে প্রথমতঃ বিভক্ত করেন। অনস্তর নির্বিদ-বর্গকে ছয় শেুণীতে বিভক্ত করেন, এবং जाशास्त्र व्यवाख्यत-(छाम पूरे माठ इस अकार জাতি হয়। সবিষ-বর্গকে তিন শ্রেণীতে ভিন্ন क्रिया व्यवास्त्र-(जनमङ्कादत जाङ्गानिरभद्र व्यष्टे-পঞ্চাশৎ জাতি নির্ধার্য্য করিয়াছেন। অভএব উভয়-বর্গের জাতি সমুদায়ে দুই শত চতু:-यिष्ट-প्रकात हरेल। मर्गकां कि कल ও इस উভয় স্থানে বাস করে, একারণ ইহাকে ভূজল-**एत कहा यात्र; किन्छ हेहारएत नकत्वह छेछ-**शबनवन्त-नरवृष् हेरामिशस्य च्लक ७ कलक **ब**हे पूरे श्रकां अभिन्न २ किन्न विकाश कन्ना यात्र। चलत्र हेरामिरणत्र लित्रमार्गत् यर्थछे (छन चाए। किहर चित्रीर्घ अवः वनवान, किह वा हुन बबर आश्रक्षितिशत निक्ठ जूननाम आमः यम्भीन।

छेत्ररमद्रा अञ्चलभादाम 'निनिडे मीर्घाकात

আপনাদিগের এক জনাকে তাহার ভোজনার্থে। রব লক্ষণ বলা যায়। মৎস্য জাতির ন্যায় এই कां जि मभलका इकां हो अवः **शक्षत मात्रहे हेहारमत रमरहत क्रवलयन। अह** পঞ্জর বহু-সঙ্থ/ক, এবং মেরুদণ্ডের সহিত অসাধারণ-ক্পে সংলগ্ধ থাকে। এই জাতির গতি উন্মিবৎ; তদ্বারা তাহারা অত্যস্ত বি-यम-ध्रां उस वरः वन-मर्धः नमस्वरं ठिलाउ পারে। ভিন্ন ২ জাতীয় সরীসৃপগণের অন্তরি-्रिमुद्रात यथिष्ठ देवलक्षना चार्ट्छ; किन्न वार्ट्य-ন্দুয়ের বহুংশে সমতা দৃষ্ট হয়। অপর জা-তিভেদে মেরুদণ্ডীয় থর্বান্থির অনেক ন্যুনাতি-রেক দেখা যায়, এবং এক জাতির মধ্যে ব্য-ক্তিভেদে ৩· বা ৪**৽ খণ্ডের নূ**/নাভিরেক হয়। (मक्रप्रक्षत चाक्छ-পूक्-পर्य/छ ममूनाय चर्डित সত্থ্যা ১০০ অবধি ৩০০ পর্যান্ত অবধারিত হই-য়াছে, পরস্ত শতের ন্যুন ও ৩০০ শতের অভিরিক্ত প্রায়ঃ হয় न। পুক্দেশীয় মেরুদণ্ডের খর্বাস্থি-বিষয়েও উক্ত ভিন্নতা দৃষ্ট হয়। কোন সপের কেবল পাঁচ থণ্ড মাত্র আছে কাহার বা সাজ শত-मध्याविध पूरे भठ-मध्या-शर्या निर्वोक र्रेशास्त्र ।

शूर्व डेक रहेग्राष्ट्र य नर्लिए शत देमिक পরিসরাপেকা দীর্ঘতা সর্বতোভাবে বৃহ্ৎ। অধি-কম্ভ তাহাদিগের শারীরিক-গঠনে এতাদৃশ কৌ-শল আছে যে তাহারা ব্রুদেহের ভিন্ন ২ ভাগ चनाग्नारमञ् स्वव्हाक्रास क्रीठ क्रिट शास्त्र, मूठबाः जाहाबा चार्णका दृहर दख-नकल मह-**ब्बरे** गुन कतिए नमर्थ हया এই कोमन नर्ण-भार्वित्रहे मेखर्क विरमय करण मृष्टे हम्री ष्म-श्राविषिरागद्र यखरकत चन्द्र-मकन भद्र-भ-রের সহিত দৃঢ়তরকপে বন্ধ থাকে, কিন্তু সর্প-हरेंग्रा थात्क, बकावन जाहारे छेरात्मव नाथा- मिट्यत छक्तन मा रहेग्रा करवक मछकान्हासक

হয় ভাহাতে ভাহারা অনায়াসেই আপনাপন দেহ প্রসারণাকৃঞ্চন করিতে পারে। হনুর সন্ধি নম।-মাংনগেশীর কব্জার ন্যায় হওয়াতে বিস্তার कारण मुश्रवाचान इस। करे अव पारहत मारम-পেশার বিপুলত্ব ও তাহাদের শিরা সকলের দী-ঘত্ত-প্রস্তুত সর্পদিগের বিশেষতঃ সবিষদিগের তত্তৎ স্থান অপ্রয়ানে প্রসারিত হয়।

উরগজাতির ঘাুাণেন্দ্র বলবান্ নহে: তাহাদের নাদিকার উপলব্ধি প্রায়ঃ হয় না । চকু অভিকৃদ্ হইলের পরিষ্কার উজ্জ্ব ও অতিতীফু হয়, এবং জাতিভেদে তাহার অবস্থানেরও ভেদ দৃষ্ট হয়৷ লপাদগের কংপিও তাহাদের মন্তকের নিকট থাকে. তথা ভাৰারা অতি চতুরতার দহিত কুণ্ডলী-ভূত চইয়া অন্তঃকরণকে বিবিধ-বিপদ-গ্রামহইতে রকা করে। ভাছাদিগের জিহর। অতি মাণ্দল ও সূক্ষ তথা দিভাগীভূত। ঐ জিজাকে তাহার। मरमार्थे रहिनिक्किश करत, विस्मयकः (काथा-বিধ হইলে অনবরতই এবং অতি সম্বরে তাহাকে বহির ভংগ্রাগে করায়। দর্শজাতির স্বভাবানভিক্ত অনেকেট ওচাদের জিহ্বা দেখিয়া ভীত হন, अद॰ त्ताच करत्न (य छे**टाई दियमग्न अ**द॰ **दिया**-কর, কিন্তু বস্তুতঃ তাহাতে কো**ন আপদ না**ই। ভাষ্টদের জিলার গঠন এমত যে তদ্বারা নি-গিলনের নহকার কিয়া আৰাদগৃহ কিছু মাত হয় ন : কেবল স্পাশেন্দ্রির কর্মা নিজার হয়, এবং তল্পিত্র তাহ। বর্দ। সঞ্চলত হয়। অনেক জাতীয় দপগণের জিলা মূল পৃথক্থ বোধ হয়, কিন্তু দকলেরই জিন্তা গলদেশীয় অতি নম্য এবং দার্ঘ শিরাদারা দংলম থাকে যদারা ঐ যন্তের সঞ্চালনে বিশেষ কৌশল জমে।

অতি ব্যত্তি সকলই নমনীয়-শিরা-ছারা মিলিত | প্রত্যেক-দন্তের কিয়দণ্শ কোঁপরা অপর ভাগ निद्धि । किन्न हैका वर्ष निष्णुसाक्रनीय সপদন্ত তাহাদের অবয়ব ও হিতির কৌশ-ল-ক্রমে দংশন, ও দংশিত-বস্তুর থারণ, তথা তৎসহকারে কপোলম গুদ্ধিহইতে নিঃসৃত লা-লছার। ভোজা দুবা লেপিত হওত গলাধঃ-कद्रश्निर्याणि इस। পূर्दिक-म्ख-वाजीज नर्ग-জাতির চতুর্থাংশের এক প্রকার বিষদস্ত হয়, যদারা দংশিত কত মধ্যে এই বিষধর-জাতি ভাছাদের অনিবার্যা বিষ নিকেপ করে। এই ভয়ানক-অক্সের সত্থ্যা দুই, এবং ইহার প্রত্যে কের মধ্যে এক ছিদু থাকে যদ্ধর্য-ভারা বিষ নিঃসূত হয়। ইহাদের স্থান উর্দ্ধ-মাড়ির প্রাক্ পার্যাভাগ, এবং ভলিমেতেই বিষাধার থাকে। এই দন্তের পঙ্ক্তিতে অন্য-দন্ত হয় নং, এবং ইহাদিগকে কদের মাজিতে কোষের ন্যায় আবর্ত্তন করে। কিন্তু তদ্যারা অন্য দন্তের ন্যায় ইছারা রক্ষিত না ছওয়াতে কোন কারণ বশকঃ ভথ হইলে পরম কাঞ্নিক পরমেশ্বরেচ্ছায় পুনঃ২ अक जात्न इस तात विवन छ डेठिसा थाएक।

**अब्रे कर्रा मरस्रत नक्र**नहाता मिर्विय निर्विय সর্প নিরূপনে পায়-বিষয়ে উরগপরীক্ষক ডা-ক্তর রসল সাহেবের রচিত উপদেশ উদ্ভূত করিয়া উপসংহার করিতেছি। রসল সাহেব করেন যে, ''ইছা অরণে রাখা কর্ত্তব্য যে অহিংসক সর্পগণের উপর মাড়িতে তিন পড়ক্তি সামান্য দম্ভ থাকে, ভন্মধ্যে এক পছজ্জি বহিঃস্থিত ও অপর দুই পড়্কি ভালুকাভ্যস্করবর্তী। সবিষ দর্গের বহিঃ-ষ্ঠিত দস্ত পঙ্ক্তি নাই। যথন উপর-মাড়িতে বাহ্য দন্ত পঞ্জি পাওয়া যায় **তথ্ন আর বিষ**-দত্তের অবেষণ করিবার আবশ্যক নাই। যে ছলে नर्भक्षित प्रस्त केरविक अव जीक, अव अलास्त्रक्र म्स क्षा क्षा विव-

मस विष ग्लाइंड ना मिथा यात्र (कांत्र क्थन र माःम-एक ना कतित्व वियमस मृष्टिमाञ्ज इत्र ना) ख्थाणि ख्यमाई खाउदा य म कांडि हिःमक मर्ग, हेहारू कांन मन्मह नाहें "।

ইংরাজি ১৮৫০ অফের সভ্যান্বহইতে উদ্ভ।

#### वृष्टित्र विवद्ग ।

শিলিক বর্ষাদিকপে পৃথিবাপার বর্ষিত হয়, তাহার ভালের দেশীর প্রাক্ত
রুপে পরিণত হইয়া নভোভাগে উত্থান করে, ও পরে কি নিয়মেই বা তাহা পুনঃ একত হইয়া হিম-শিশির-বর্ষাদিকপে পৃথিবাপার বর্ষিত হয়, তাহার উল্লেখ হয় নাই। এই প্রকরণে তাহার সহক্ষেপে বিবন্ধন কিলিখিতবা।

তাপদারা নকল পদার্থই ক্রমশঃ স্কৃতি বা পুসারিত হই-তে থাকে, ও ভদভাবে সঙ্গৃচিত হয়; পরস্ক সকল পদার্থ সমভাবে স্টাত হয় না। কচিন-পদার্থাপেকায় তরল-পদার্থ অধিক স্ফাত হয়, ও তদপেক্ষায় ৰায়ু অধিক। কটিন পদার্থ ক্রমশঃ তাপাপিকে। দুব হইয়া যায়, তদনন্তর তাপের বুদ্ধি হইলে বাকারপে ভাহার পরিণত-হইবার সম্ভাবন।। লাগারণতঃ তরল পদার্থ কচিন-পদার্থাপেক্ষার শীঘু বা-ক্পরপে পরিণত হয়। এই বাক্স-হওনের তাপ-পরিমাণ निर्मिक आहि, माने निर्मिक-शतिमाल उद्धक्ष न। इहेल কোন পদাৰ্থ ৰাম্পীভূত হয় না। পরস্ত কোন ২ পদা-র্থে এক বিশেষ ধর্ম আছে, যৎকর্তৃক তাহার উপরি-ভাগের পরমাণু-সকল অন্তর্ভাগের পর্মাণুর তাপ-সমা-হরণ-করত, বিশেষতঃ নিকটছ উত্তপ্ত বায়ুর তাপ-সমাহরণ-করত, বাক্প-ছওনোপযুক্ত তাপসমূহ করিয়া ম্বরণ বাক্প रहेशा यात्। এই প্রযুক্ত মদা, कर्ण्त, আতর প্রভৃতি করেক পদার্থ সর্বনাই বাক্লীভূত হইয়া থাকে। জলও এই প্রকারে বাষ্পাভূত হয়। প্রাভঃকালে কোন প্রশস্ত অগভীর পাত্তে কিঞিৎ পরিমিত জল রাখিলে বৈকালে তাহার সমস্ত পাওয়া যায় না; কিয়দংশ ৰাকা হইয়া ৰাষুতে মিশ্ৰিত रत्। वातृत्व चानुत्व चन्द्र-रहेवान वह भाज कान्। नम्मानि-बनानवर्हेए अहे श्रकारत (व निव्चार बन अछार बाका रहेता बाकारण डिविड रत, छारा मनन

করিতে হ**ইলে বিমারাপন্ন হইতে হ্য ৷** অনুমিত হ্ইমালে : প্রতিবর্ষে ২,০৫,২০,০০,০০,০০০ দুট শঙ্কু পঞ্জ নি-থকা দুই থকা মন জল আকাশহইতে বৃষ্ট হইয়া পৃথি-ব্যুপরি নিপতিত হয়, এতভিন্ন কোটি ২ মন জল হিম-শিশির-শিলা-কোয়াদা-প্রভৃতি নানাবয়বে আকাশহর-তে পড়িয়া থাকে; তৎসমুদায়ের আদিকারণ নাকা। আদৌ ভূমিহ্টতে আকাশে নাম্পরপে জল না উচিলে ভাছার কিছুমাত্র উৎপন্ন হইবার সম্ভাবনা নাই। অত-এন ইহা মুট্ট প্রতীত হইতেচে যে প্রতাহ পৃথিবীহই-(७ )०,००,००,००,००० अक निथस्य प्रम, उथा প्राच-चणोग्र ৪,১৬,৬৬,৬৬,৬৬৬ চারি অব্দ সোড়শ কোটি ছেম্ডি লক্ষ ছেষ্টি সহসু ছয় শত ছেষ্টি মন জল বাকণ হইয়। উচিয়া থাকে; তন্তিন নিগমিত-পরিমাণে বৃষ্টি হইত না। এই বিষয়েজনক পরিমিত-জলের কিয়দণ্শ প্রাণিদিনের প্রস্থাসহইতে তথা বৃক্ষাদির প্রহ্ইতে \* ও দক্ষ-ছ্ওন-**সময়ে কাঠা**দিহইতে নিৰ্গত হয়, অৰশিকী দকল ভল রৌদুদারা আকর্ষিত হর্ট্যা থাকে।

হিম-শিশির-বর্ষাদি আকাশাগত বারিমাতের কার্ণ বাকা; তম্ভিন তাহার কিছুই উৎপন্তর না, মূর্রাণ সে দকল কারণে বালোর বৃদ্ধি হয় তাহাতে বৃদ্ধ্যাদিরও আ-ধিকা হয়। ঐ বাক্ষা আবৃত-ভানাপেকার জনার্ভ হাবে क्षिक अत्या. ও य कन वाका इहेरत, क्रक्रकृत्वित्राह ঐ জলাপেক্ষায় উষ্ণ থাকিলে ৰাম্প শীঘু উৎপন্ন হয়। গভীর-পাত্রাপেক্ষায় অগভীর-পাত্রে ও বাধুর দাহতেশ ৰাক্ষা ৰত্বৰে উথিত হটতে থাকে। এই পুযুক্ত উন্ধ पूष कर्किन भोजन कहिटल इंडेटन अडरम्मीसा लिहि-মীরা তাহা গভার বাদীহইতে অগভার পরালিতে ঢালিয়া খাকেন, তদভিপ্রায় এই যে গভীর-পাত্রে দুয়োর যে অংশ শীতল-বায়ুর সহিত সংস্কৃষ্ট হয়; অগভীর-পাত্রে তদপেক্ষার অধিকাৎশ বায়ু স্কুর্শ করিয়া শাখু শাতল হইবে; ঐ পরালির উপর বাভাদ করিলে দুগ্ধের আ-ন্দোলন হইয়া তাহার দক্ষত বায়ু দ্বর্শ করে, তথা শীতকার্যাও শাঘু সমূন হয়।

অপর জল ও বায়ুর উষণতা তুলা হইলে, তথা জল অপেকায় বায়ু ১৫ তাপা॰\শহইতে অধিক শীতল হইলে

<sup>\*</sup> বৃক্ষদিগের নিখাস প্রখাস আছে; তাহা প্রশারা কার্যার ও বহির্গত হয়; এবং প্রখসন সময়ে বার্ব সহিত কিঞ্ছিং বাক্ষা নির্গত হয়রা থাকে।

इहिलाउ नामन जलियात शानि एत: अहे अपूक्त वया- वृक्ति-शतिमान 03 वा 0¢ वृक्त इहेरवक। কালে অভান্ন নাল্য কৰিয়া থাকে।

भरेंगारक विलाल এहें छाड़िया (ए डेक्क ख़ारन ए। दृष्टि शिड़ि- (छात् अहे निहासित छारनक **खनाथा ह**हेरा। **थार**क। सम-চলত ভাষার জল মৃত্তিকাদার। শোষিত বা নদাদার। মঞ্লে ভুমির পশ্চিন-পার্পে <mark>অধিক রুটি হয়, ও গ্রীয়া</mark>-প্রশাহিত বং ভড়ালাদিতে স্ফুট্ভ না হউলে, তথ্ডানের মঞ্লে ভ্রির পুক্ত-পার্যে অধিক; ইহার কারণ, উক্ত মঞ্ল-মাল্ড ১৬ কি ৩০ বুকুল গভার হট্যা মলুহিত থাকিত। ছয়ের কায়ু: গ্রাহামণ্ডলে বাণিজাবায়্র সাহায়ে বাকণ ৩০ ব্রুল বাকে ছটয়াছে বলিলে ৩০ বুরুল গভার জল পুন বায় আদিয়া পূজ-তটে উৎক্রিপ্ত হয়, সমমগুলে কায়্র নাক্ষরতা পরিবাদ হউয়াছে, ইইন্ট জ্ঞাতব্য |

রূপে পান্ডি ভারের করে।

যে স্থানহটতে যে পরিমাণে বাসে উপান করে কথায় 🖰 তদস্তপ কৃষ্টি নিপতিত হয়: মুত্রাণ গ্রায়ামগুলে যে: পরিমাণে রুক্তি ভ্য়, সময়ওলে তাদৃশ হয় না, ও সমন্তলের র্ফি হিম্মগুলের বৃষ্টিংইতে অনেক অধিক। অনুমিত ष्टरेशाञ्च, शुक्रा=७८न शर्फ श्राव्धितार्स ৮० बुक्न शंखीत জল ৰাক্ষা হয়: ও ভথাকার বৃষ্টির বাষ্টিক গড় ১০০ বা

ৰাজ্যোতির অভ্যন্ত লাগর হয়। বায়ু বাজ্যে পূর্ণদিক \* ১১০ বুরুল; উত্তর-সমমগুলের বাজ্প-পরিমাণ ৩০ বুরুল,

প্রত্যেক মণ্ডলের সর্ব্বে সমপরিমাণে বারি পতিত হয় ় রায়্য সাজের ও বৃষ্টি-পতনের পরিমাণ-করণার্থে না। কেতাদি-নিমু-স্থানাপেকার উচ্চ-স্থানে বৃষ্টি অল্ল, পদার্থবিদা: বিশারদ পভিতেরা নানা উপায় স্থির করি- । কিন্তু কেতাদি সমভূমিইইতে পর্বতের ঢালে, বিশেষতঃ য়াছেন। এ শদ্পে আড়ার পরিমাণ প্রসিক; বিলাতে, ঐ ঢাল অসম অতি উচ্চ পর্বতের পার্ছে হিত ছইলে, ভংপালেরকে অন্যান্য যন্ত্রধারা বাক্ষা ও রুফি নিরুপিত বৃফির আধিক্য হয়;---কারণ বাক্ষপূর্ণ বাবু পর্বতা-হত। কোন সেশে নিপতিত বৃষ্টি মৃত্তিকাদারা শোষিত ও ভিমৃত্যে গমন-সময়ে তৎস্কর্শে শীতল হওত বৃষ্টিরূপে নিপ-ভড়ালালিত সমুভিত না হইয়া খদাপি উক্ত দেশের উপ- ভিত হইয়া থাকে; এই প্রযুক্ত হিমালয়ের ঢালু স্থানে রে সমল সমলাবে বিষ্ণুত থাকিত, ও তদ্ধারা ঐ বৃষ্টজলের । বৃষ্টি অধিক। অধিতাকায় বৃষ্টি অল্ল, এবণ উপতাকায় তে গভারত হউতে পারে, উল্লেখিত বৃত্তিমান-যক্তে তাহ। অধিক: তদ্বীন্তে ইরাণ দেশ; তথার প্রায়ং কদাপি। ভানালালে নিক্শিত হয়। এই প্রকার বাজ্যমান-মন্ত্রত মেঘ দৃষ্ট হয় না, তথাচ ভন্নিকটার মাজেন্দ্রান-প্রদে-প্রচারিত আছে, ভদ্বারা যে পরিমিত জল বাজারপে লৈ প্রচুর বৃটি ছইয়া থাকে। নমুদুতটে বাজা অপিক, পরিণত তথা, তাছার গভারতা নিরুপৎ করা খায়। ঐ তথা বৃষ্টিও অধিক। বৃহভূমিশণ্ডের মধাভাগে অধিক ণক্র-দৃত্তিয়োরদারে কোন স্থানে ২৫ কি ৩০ গ্রাল বৃষ্টি বাকোর সন্থাবনা নাই : মুতরা∿ বৃষ্টি অল্ল: কিন্তু স্থান-গতি তাদৃশ নহে, সূতরাণ বৃষ্টিরও অনাথা ঘটে।

শীরকালে বায়ু অত্যন্ত ভাস্ক থাকে: এই প্রযুক্ত তথ- ে স্থানভেলে বৃষ্ঠি-হরীবার কালের আনেক ভিন্নতা হইয়া কালে প্রচুর বাকা ক্রিয়া থাকে: **গ্রীষ্ম-বায়্র উঠ্- থাকে:কোন স্থানে বার্মাদ**র কিঞ্ছিৎ হ**র্ফি হয়;কোথাও** ভাষও হাধিক রাপে ত্রানর উপায় হয়; কিন্তু তৎকালিক। বর্ষের সমস্ত বৃষ্টি দুই তিন বা চারি মাসের মধ্যে নিপ-ৰায়াক শতিবাসকাত ৰাম্প নিজ রাখিয়া তভোধিক ৰাম্প - তিত ২ইয়া **যায়; কোথায় শতিকালে বৃষ্টি হয়; কোথা**য় হলতে দেৱনা, এই কারণগণতঃ শতিকালে যে পরিমানে গুলিয়, কোধায় হেমস্তে, কোথায় বা নিয়মিত বর্ষা-্রভাগানি হয় হয়, গ্রীয়ে তজ্ঞপ হয় না। পরে শীত ও কালে বারি চক্ট হয়। গ্রীয়ামণ্ডলে নিরক্ষরের উত্তর-भीया डेलह-अहका ह बारकः बाह् भारितक इकेटन, बाक्य- छाता उन्तरायन-नमस्य, अ जनकितन मिकनायन-नमस्य হাওন-কংবল প্রায়ত হুলিত হয়, ও বায়ু-মিজিঙ **বাজগ বৃষ্টি- বৃষ্টি হয়; ফলতঃ পৃথিবীর স্থানে ২ যে নিয়মে বৃষ্টি** इ.य., जम् कि वर्षाकानक अपूत प्रांत श्री करा (अयः বোগ হয় না। শীত গ্রীষ্টে ঋতুর প্রধান, অপর-সকল ठाहात मिक्कानमाज। स्नन, शहुंशान्, এव १ हेहानि-দেশ-সকলের দক্ষিণভাগে, তথা সিসিলি ও মেদেরা ঘাঁপে, ও আফরিকার উত্তরভাগে, তথা গ্রীস-দেশের সর্বত্রে, ও আসিয়াথত্তের উত্তর-পশ্চিমাঞ্চলে, শীতকালে বৃক্তি হটয়া থাকে; অতএব ঐ সকল স্থানতে, "শাতকালিক বৃটির प्रथम" विनास वना शाहा। आह्न-शर्वासह उपत्रज्ञांशम् कर्मन-रवभ, कुम्लरवरभद्र शूर्खकाश, विवद्गलक श्ररवर्भ, मूहे-

<sup>\*</sup> যাহাতউতে আধিক সিক্ত হউতে পারে না তমবস্থার মান পূৰ্ণীকলান যা :

জর্লন্ত-দেশের উত্তরভাগ ভেনমার্ক এবং উরাল পর্যতের পূর্ব্ব সিবিরিয়া দেশ পর্যান্ত সকল হান গ্রীষ্কালে বৃষ্টি প্রাপ্ত হয়। অতএব তাহা "গ্রীয়ুকালিক-বৃষ্টিমণ্ডল" নামে বর্ণিভবা। তথায় শীতকালে প্লায়ঃ কিছুমাত্র বারি বর্ষিত হয় না। ইউরোপথণ্ডের পশ্চিম-পার্খন্থ সমস্ত দেশ তথা ব্রিটন আদি তত্ততা দ্বীপ-সকলে বর্মাকালেট বৃষ্টিপাত হয়, সূত-রাণ তত্ত্তদেশ "প্রাবিট্ বৃষ্টিনওল"। আফরিকার দক্ষিণ-ভাগে ও অন্ত্রেলিয়া-দ্বাপে বর্মা ও শীতকাল বৃষ্টিপাতের সময়; পরস্ত প্রতিঘাদশবর্গান্তে ক্রমাণত তিন বৎসর তথায় কিছু মাত্র বৃষ্টি না হইয়া অকাল উপস্থিত হয়।

भूटर्स डेक इडेशास्त्र शुक्षाप्रशत नर्सारभक्षाय अधिक বৃষ্টি হয়: কিন্তু ঐ বৃষ্টি পড়িতে অদিককাল আবশাক হয় না: তথায় দুউ মাদ-মধ্যে যে বৃদ্ধি নিপতিত হয়, ছিমমঞ্চল দুট বৎপরেও তাহ। সন্তুপ নতে। জট্লভের निकड़े मिहेका-नामक-ष्ठी प्राप्त ४० निवन श्रांत है। থাকে, অপর প্রত্যাহ বৃষ্টি হটয়া থাকে, অথচ কলিকাডায় বর্দে পরিমিত রুফি ২ইয়া থাকে, তাহার চতুর্থা শ-পরিমিত বারিও তথার নিপতিত হয় না। চেরাপুঞ্-প্রদেশে যে প্রকার প্রচুর বৃষ্টি হয়, ভূমগুলের আর कूजानि जामृन वृक्षि घटि ना; उथात ৮०। ৮৫ मित-দের মধ্যে ৪৫০—৫৫**০ বৃক্**ল বৃষ্টি প্রপতিত হয়, অপচ তথার বর্ষের ২৮০ দিবদ পরিষ্কার থাকে, কোন মেঘ বা বৃষ্টি দৃষ্টিগোচর হয় না। দেণ্টপিতদ্র্গর-নগরে প্রতি সপ্তাহে কিঞ্ছিৎ ২ বৃষ্টি পড়িয়া বর্দের ১৬৯ দিবসে ১৭ বুরুল বৃটি প্রপতিত হয়। অন্যত্তেও এই প্রকার অনেক ভেদ আছে, এবং তদ্ধে ভ্গোলবেক্তারা গ্রাম্ম-মণ্ডলকে "দাময়িক বৃষ্টিনগুল", ও তাহার উভয় পার্মস্থ स्वान्तरक, " वितृष्ठिमश्रम " नत्य विधान करत्न।

·লাময়িক-বৃত্তিমণ্ডলে কমাগত দুই তিন বা চারি মাল মধো২ বৃদ্ধি হইয়া ৫৩---৬৩---১০০ বা ভতোধিক বারি বর্ষিত হয়; অবশিষ্ট কাল অনাবৃষ্টি থাকে। চির্বৃষ্টি-মণ্ডলে বৃষ্টি অল্প, কিন্তু তাহা বর্ষের সর্ব্ধে সমরেই কিঞ্ছিং ২ পড়িয়া গাংক।

ভারতবর্ষে মৌদুমি ৰাষ্ক্র প্রান্ত্রি-প্রযুক্ত তথার वृधितः शुर्खाकः निवम तकः। शात ना, अवन्यक्रम उधात वृक्ति ना इहेता श्रीमुमामूनांद्र दृक्ति इस । अधिरकानीय भोनूध-मधरा, मझवात छटि छ देनान-स्कानीत भोनूध-

যাটপর্বতের বাধায় সমূদ্রের বাজ্পপূর্ণবায়ু দক্ষিণদেশে: সর্বতে প্রবাচ হটতে পারে না বলিয়া তথায়ও অতি-ভিন্ ২ ঋতুতে বারি বর্ষিত হইয়া গাকে।

গ্রীষ্মগুল-সমম্ভলাদিতে যে প্রকার বৃষ্টির ভেদ বর্ণিড হইল, উক্ত প্রত্যেক মণ্ডলের প্রত্যেক হানে প্রায়ঃ তদ্রপ (**७**म जार्क्ट; अठअव मार्डवा य शृरकीक वर्षना (करन ৰুল জানের নিমিত্ত লিপিবৰ হইয়াছে। সূক্ষা বোধের নিমিত্ত প্রত্যেক স্থানের বৃষ্টির পরিমাণ জ্ঞাত হওয়া আ-বশাক। কয়েক প্রধান স্থানের বৃষ্ঠির পরিমাণ নিয়ে निर्मिष्ठ इहेन।

स्टानंद साम,	रार्धिक शङ् ।
চেরাপুঞ্জি,	. ৫०० तुरुल,
আরাকান্,	. 500
माजिनिड्	. \$2.¢ .,
्रविश्वाहे,	. bo
भार्जुाक,	• 81,
কাশী,	. cs
मध्ता,	• <del>২</del> 9?
কলিকাতা,	. %
怀嗣,	. 20
় যান্ লুই মারান্ছো, •••••	. 160
দেণ্টভোমিস্কো দ্বীপ,	. 320
্রেণাডা দ্বীপা,	. 558
্রোম,	. 05 ,
निवत्रभून,	. 38
ृ गञ्जन,	. 1.8
শারি,	
ं रमणे निषेत्रहा,	. >9 ;.
্অপ্নল,	. >>
ATT & ATTACA TO THE PARTY OF TH	e cas is a

कार १ मण्डक छूलाल्डकाता "निवर्व" वा " वर्तान বিহান ' দেশশবেদ দগন করেন, কারণ ভাতদেশে বৃষ্টির প্রচার নাই। তিক্তেদেশের অধিত্যকা, পারস্য-দে-শের মধ্যভাগ, মেজোলিয়া, গোলি-মরুভূমি, আরবদেশের উত্তর ও মধাভাগ, মিদবদেশ, দাহারা-মরুভূমি পুভৃতি श्राम अहे श्रकातः, उथात्र मृक्षि मात्रे, अवल श्राप्तः मटका-ভাগ মেঘাচ্ছর হয় না; তর্ধো কোন ২ স্থানে ২০।৩০ वर्मरवृत्र मर्था मूहे यक भमना वृधि इहेना श्वारक, সমরে চোরম**ওগ-তটে বর্ষার প্রাদুর্ভাব হইয়া লাকে। কো**ধায় বা বর্ষে দুই চারি পদলা হয়; অপর কোন ং

স্থানে কদাপি বৃহ্টি হয় দা। মিদর-দেশে বৃষ্টি নাই ; পরিণত হয়। অপরাপশ নভোভাগে শীত-বায়ুর সণ-जानाया मात्राहेर अमार्थह मात्रा तना जारू । नाहे-ना भारमरभद्र *(नारकटा कर*्ष्ट्र **हे॰ताकि ३७७२ व्यक्त**ी ১०३ कृषाई अरस्म প्राइड ৮ होत्र मधान, शरू ३१२० जारम्, उद्देशाह ३१९१ जारम्, ८८% उद्देशाह ३५०० जार्द्र ३३८म जार्द्रन मिनरम (भवशंक्तन १०४१/छन । (म्या माम नाउँ। শিকদেশের নিমূভাগন্ত মনুন্যের। নধ্যে ১ বিদ্যুৎ দে-দের প্রায়ন বোধ মাল, কালে শতরদের মধ্যে তা- তিছিবরণ পরে বক্তব্য। अहिलात एएटण मूर्वे अकदान वृत्ति क्षः। यक वृत्ति महि গুল লিমিত করে যে ভাষা দুই এক প্রদা বৃতিতেই বি-कते हरा : वह श्रमुक्त ool8 o दा co दश्मतारम देनता पूर्व नाम्म श्रमिक। वे देनद मिमा-श्वरमत कातन दिम्रा : utfa দিন সুটি হইলে, তত্তদেশে ভয়ানক উপা**দুব ঘটি**র: গ্রামে। পরেন্ত্র্যটির পরিবত্তি তথায় গ্রেস্থা নামক এক প্র-কার কোয়াল আছে; কোন ২ দিবস পুরুত্তে ভাই' শমস্ত ः छ। वलन আफ्डन कविया तार्थ, छ॰ कारन मुगापन अस्मुह भारत (तांत्र बहा। शरत तकनीरबारत वे कारांना श्रहूह কিবিরুরণে স্থানশাপরি নিপতিত হয়।

পুরেট উক্ত হর্নয়াছে গ্রীষ্মাপেকায় শাভকালে অধিক ্রাজা উপ্তান করে। ঐ বাজোর কিয়দ**্শ মেঘরপো বেচ্ছামতে রাবছত চটারেক।** 

ভিদিনময়ে শ্লেট্রপার্লার্থে বর্ষেই নীল-নদীর বন্ধা ল্লেছিত হইয়া শিশির বা কোরাসারপে ভূমিতে হ্টয়া থাকে: ঐ ব্যার দলে ভূমি সিক্তা হ্<sup>ট্</sup>য়া শস্য- নিপতিত হ্য়; শীতের প্রাথ্য্য হ্**টলে তাহা হিম বা** শালিন 🕶। উত্তরামরিকায় মেক্লিকোর অধিতাকা, তুষার রূপ ধারণ করে। দেশীয় উফতার বর্ণন-সময়ে গোলেনা এবং কালিফণিয়া প্রদেশে বৃত্তি নাই। উক্ত হইয়াছে, গ্রীষ্মানগুলই সর্বাপেক্ষায় উষ্ণ, তথাহইতে দ'লব নে বিলাল পশ্চিম-পার্থে বৃষ্টির এতাদৃশ অভাব ্যত কেন্দ্রাভিমুখে অগুবন্ধি হওয়া মায়, ডভই শাভের লে আন্পেদিবের দেশে ৩০ শালের বয়া। কি ৭৬ মলরর নৃদ্ধি হয়**, সুত্রা**ৎ ইছা অনায়া**নেই অনুভূত হ্ইতে** সভাপা তির্নার্ণীয় ভুখায় মেহণার্জন ও ব্রিপাত জ্ঞাপা পারিকেক, মে ঐ শতিপ্রদানদেশে শিশির পাতন-সময়ে শীতাদিকো হিম \* রূপে পরিণত হউবেক। ঐ ছিম হ্ওনের সীমা পৃথিবার উত্তরভাগে ৩০ অক্ষাণশ, তা-লার দলিতে হিম পড়ে না। পৃথিবীর দলিতভারে হিমদীমা ৪৮ অক্ষাণ্শ তাহার উত্তরে হিম পড়িতে

পরত্ত এই নিয়ম সমভ্মির সম্বন্ধেট প্রমাণীকৃত হয় থিতে পায় কিন্তু মেখগজ্জন কাছাকে বলৈ ভাষা তাহা- পিনতে ইয়ার অনেক অন্যথা প্রভাক্ষ হুইয়া থাকে:

বাক্স শীত-জনে ঘনীত্ত হটয়া বৃষ্টিরূপে নিপাইড विलिश' काकाहर को गोरक व चार्त्र मार्ग व काल्य का पछत्र कर कर । क कर्यम १ थे शक्रम-म्मार्ग मोहाधिका कहील অত্যন্ত ঘন অর্থাৎ দৃঢ় হউরা মার, এবং তাছা শিলা-डाइन्त महारा डिब मिला इन्तात मम्रावना नाहै।

> ্ তিহ শব্দের প্রাকৃত ঋথ আকোশাগত " বর্ফ "; কিন্দু অন-ভিজ্ঞাননামে ভালা শিশির-ভাপনার্পের বারকত হরীয়া থাকে; এট পুডে আমেনা ঐ শব প্রকৃত অর্থে সাহছত করিলাম: अधानित अल कनिता रच नृष्ट भनार्थ दस, आहा तबक नार्य জ্ঞাপন করিব। ফলবং ইৎরাজি "আইস্" ৪ "ঝো" শব্দে দে ভেদ, আমরা তিম ও বর্ফ শক্তে সেই ভেদ নিশিষ্ট করিলাম তিয়ের প্রয়ার "নীচার" ও "ভুষার"; উপার অন্যতম শব-

# विविधार्थ-मञ्जूर,

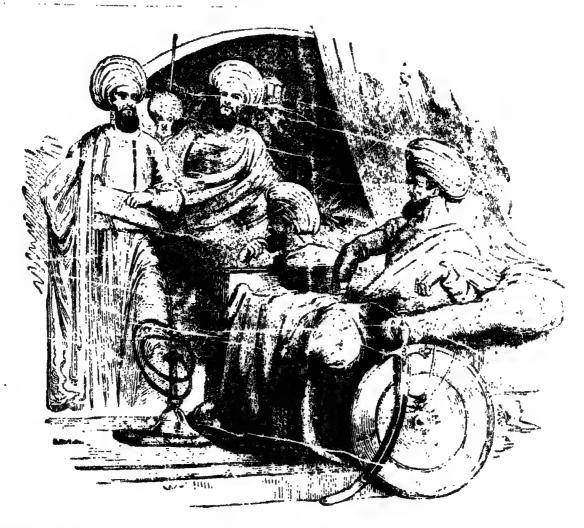
অর্থ†ং

পুরারত্তেতিহাস-প্রাণিবিদ্যা-শিল্প-সাহিত্যাদি-দ্যোতক মাসিক পতা।

७ भई ]

मकास ३११७, मुख्त।

(२२ थड़ा



निक्-(मणोशनित्यत उभाश्रान।

अट्टिएएएएट **जू-नाम्ब डेड**श-उठेक जूनि नि रात्र असुगंछ।

্লুচিন্তান্ দেনের অভান্তরত্ব সমত ভূমি তা-

 শুদেশ নামে বিশ্বাত। আটক- এই প্রদেশের প্রাকৃত-ধর্ম নইত্র তুল্য নহে; নগরহইতে সমুদু-পর্যান্ত ভাছার টাটা করাচি প্রভৃতি সমুদু-নিকটস্থ ভূমি শিলা 20000000 विकात, अवर ताकवाता । व- । वानुकामम, श्रामः ज्वक्कानि विकास अवर

"नात" नाम विधान करहा

লার-প্রদেশের উত্রে হাইদরাবাদের চতুদিগ্-वर्डि अन "विकादना" नात्म अनिक। छा-হাতে সমাদি অনেক উৎপন্ন হয়, এবং বৃক্ষা-দিরও শভাব নাই; তথায় অনেক বিখ্যাত नगरापि । आहि। अहे था उहकाल निक्-रम-रमत ताजभाषे हिल, अवः अधुना हैः ताकि पिरगत ভাদেশ-শাসনকরী রাজপুরুষেরা তথায় বাস করে, এই প্যুক্ত অন্য ভাগাপেকায় তাহার मिक्ष व्यक्षिक। मिक्नू-नरम्ब वस्राय उथाय मरदार व्यानक व्यानष्टे यिष्टिया थारक, किञ्च अ বর*ায় দেশের শদাস*ম্পত্তি এ প্রকারে বৃদ্ধি লয়ে যে লোকে ভয়জনিত অনিষ্ট অনিষ্ঠই জাৰ करत सः।

হিলেলোর উত্রস্ত সেহবান্ লাখান্ খয়েরপুর প্রভৃতি আনের সমষ্টি নাম "সিরো"। তথায় नमून नायुत প्राणात नारे, मुखता॰ वर्षत नम् মান ক্রমাগত অনহা গুলিয়র প্রাদ্ভবি থাকে; ক্ষিত্র বেলুচিতান্ ও ভাওল্পুরের মকভুম্যা-গত দিন্দ-লামক প্রাণদংশারক উফ বায়ু আ-भिशः ज्यानक जिल्मुव घटे। हेश्रा थारक, उৎकारन भड्युन, रयं। इटेरल्टे किश्विष्ट **देवे, नरहरू** फ-ডান্ত ক্রেশ নহা করিছে হয়। **অপর সিন্ধ**-দেশে অধিক বৃত্তি হয় মা, ত**েপ্রযুক্ত মধ্যে ২** কিঞ্চিৎ চইলে ফনগৰে ভাষাকে ক্ষক্তান্ত প্ৰিয়

অস্বাস্থ্যজনক। সিল্ল-দেশীয় লোকেরা ঐ স্থানের প্রদেশে প্রসিদ্ধ নগর অনেক আছে; এবং তা-राष्ठ प्रकातक यखाव नाहे। वकत्, नकत्, রোহার, লার্থানা থয়েরপুর প্রভৃতি নগর-দকল निस्तृ-प्रत्मेत वह प्रप्तरम चित्र। त्मरयाक द्रान व्यम्पाणि बाधीन व्याष्ट्रः हैःब्राक्षकर्वृक निष्तू-দেশীয়দিগের পরাজয়-সময়ে তাহার পরাজয় হয় नाहै। जानপूत-वःभीय भीत जानि-स्माताम् जधूना ঐ ভালের সামুজে। করিতেছেন।

সিলু-দেশের প্রধান অঙ্গ সিল্লু-নদ; ভাহা **উक्ट-(म्म-नयस्त दाक्रमथ, क्रमाञ। এवः मम**्-माजा। ज्री-नकन नानिक्र-माधनार्थ जाहात গর্জদিয়া ভুমণ করিতেছে, দূরদেশস্থ বন্ধু পর-म्भात-नम्भारिनाभात्र जाहाहहर आश्र हहेराज-ছে; তাহার বয়াায় ভমি শ্নাশালিনী হই-তেছে; তথাকার প্রাণি সকল ভজ্জলে জীবন-ষারণ করিতেছে। চৈত্র অববি ভাদু পর্য্যন্ত **मध्य ६ निष्तू-नाम्ब नज्ञा एहेबा थाक्द्र जन्म** ধ্যে চৈত্র ও ভাদেুর শেষে যে বন্ধ্য হয় জা হাই অভ্যন্ত ব্যাপক।

প্রস্তাবিত দেশের আদিম প্রজারা হিন্দুধর্মা-वनशे हिन; किन्नु वङ्कान यवन-नःमर्ग अहा-দিগের ধর্ম চ্যুত হইয়াছে। এইক্ষণে তাহাদিগের किशिकारम (मानन्मान्; अवर वर्गमह मन्-বেরো যে প্রকার দুর্দ্দি ক্ইয়া থাকে ডজপ অধম। পরস্তু তত্ত্ত্য বেলুচ-জাতীয় ব্যক্তিরা এই निमात ভाकन नरहः जाहारम्ब करनरक शर्वरक कान करते। निरता-अरमरण निक् नरमत उठेव वाम कत्र यथायाग्र-व्याद्याम-नरकारत व्या-जुमि केशेता अन- कातक केन्यानाभिएक शित्रामा- शब २ काश्चिक-त्रोष्ठव मूठाकंबारण वाफाहेश ভিত, কিন্তু ভভিন্ন সকল তান মঞ্জুমি-প্রায়ঃ; থাকে; এবং মৃগয়া-য়ুম-বিগুছে কোন মতে কোন তানে কেবল আউবন, কোন স্থান বালু- সামান্য নছে। ইংগ্লাকক্ক বিজু-রাজ্যের অপ-कामग्रः क्षायां वा ज्व-होन निनामग्र शर्वज, इत्रव-ममस्य स यूष-विश्वहानि इहेमाहिन, जा-एक्सि बात किन्दे पृष्ट इस मा। शब्द निद्धाः । एत श्रमश्मा विन्द्र-साविद्यादि । विक् আছে তজ্জাতীয় ভাবৎ লোকেরা যুদ্ধ-সক্তার উপযুক্ত কাল পাইলে ইংরাজদিগের পক্ষে নিজু-রাজ্য গৃহণ-করা কঠিন হইত।

মোসল্মান্ সংসর্গে সিক্সিদিগের বর্ণ যে প্রকার সঙ্কর; তওঁকারণ তাহাদিগের ভাষাও সেই প্রকার সঙ্কর হইয়াছে। উক্ত ভাষার মূল সংস্কৃত; ব্যবহার-দোষে সংস্তের পরিবর্ত্তন হইয়া যে প্রকারে প্রাকৃতাদি-ভাষার সৃষ্টি হই-য়াছে, ইহার ও উৎপত্তি তদনুকাপ।

দিবিদিগের আহার বাবহার প্রায়: অন্যান্য মোসল্মান্দিগের তুলা। যে বোন অংশে পা-র্থকা আছে তাহার সমুদায় বর্ণন করিবার অবকাশ এই পত্তে সম্ভবে না; অতএব ভদ্মিয়ক কতি-পয় প্রধান লক্ষণের উল্লেখ করিয়া এই প্রস্তা-বের উপসংহার করিতে হইবে।

হিন্দুদিগের ন্যায় নিজিরা কন্যা অপেক্ষায় গুএকে প্রিয় জ্ঞান করে, এবং বেলুচ জাভীয় প্রভৃতি কোন ২ জাতীয়েরা রাজপুঞ্জিপের অবস-প্রথানুগামী চুট্য়া জন্মিবামাত্র কন্যাকে অহি-কেণ নিগালিত করাইয়া অথবা দুধো নিমগ্ন করাইয়া বিনণ্ট করে। পরস্তু প্রস্তাবিত দেশে कन्।-विनात्मत तीं विवय मरहः अदः कन्।-জন্মকালে তৎপ্রতি অবছেলা করাও ব্যবহারসিদ্ধ নছে। পূঞ্জ কন্যা উভয়ের জন্ম-সময়ে প্রসূতি-कात्र व्याचीत्र कृष्ट्रवता जूला-व्यानम-प्रकाल-पूर्वक जारांत गृट्य गोज-बाम्यापि जानम्यमू क वर्णागांत-मुवनावत्वाकत्व छर्भन्न इन्न, अवः भृक्कर्डा । यथानाध्य मूथ मिष्ठाञ्च ७ उनाकू पिया चाडिया-नायन कतिता चारकन। अन्छिकातः चाक्रीया अ क्ष्रेषिनीता अपनिवादक चार्शमन-ममस्य नव-श्रम् एत विविध किकिश र पूर्य **यानग्रम क**न्ना वि-रिङ खान क्षेत्र । चनवायात्र वनव्यागनादस्त

সম্ভাবনা। এই জম্মোৎসব ক্রমাণত পাঁচ দিন থাকে; তদনস্তর ষষ্ঠ দিবসে নব প্রসুতের লাম-করণ-সংক্ষার বিহিত হয়। তাহার কোন বিশেষ লক্ষণ নাই, অতথব এইকণে আমরা তদায় বিতীয় সংক্ষারের উল্লেখ করিতেছি।

বিভায় সংকারের নাম "আকিকো" অর্থাঙ চূড়াকরণ; জন্মানন্তর তিন ুমাস অবধি এক বৎসরের মধ্যে এই সংস্কার করা বিধেয়। ভদর্থে अकि मूनकन स्मयंक स्मामन्यान्पिशत अविनिष्ठ বিধির অনুসারে বধ করিয়া তাছার মাণসহইতে **চর্ম, ও পরে অন্থিক্ইতে মাংস, পৃথক্ করিতে** হয়; এবং তৎকালে অস্থি যাহাতে আহত বা ভশ্र ना इम्र उन्दर्श नित्नय नावधान इउहा কর্ত্তব্য; কারণ ঐ ব্যাঘাত হইলে পরে অনিষ্ট হইবার সম্ভাবনা। পৃথক-কৃত মাংন আত্মীয়-কৃটুম্বদিশের অবহারার্থ পাকশালায় প্রেরিত হয়, ও বালকের মন্তক মুগুত হইলে মুগুত কেশ ও পূর্বোক্ত মেবাহি মেবছকে আবৃত করিয়া श्रृषाद प्रथवा नमाधि-छात्न (शित्रुष्ठात्न) থ্যোথিত করিয়া রাখে। নিধিদিণের ধ্যাশাস্ত্র-मा चर्म भारत श्राप्त विकासिक विकास शक्षां अल्मित्र मार्था अक छएकती नमी चारह; এক অভিসূত্য-সূত্রের দেতুদিয়া ভাছা পার ছইতে হয়: এ সূত্রোপরি অতি সাবধানে পদ নিক্ষেপ না করিলে তল্লিন্মে নরকে পড়িবার मञ्जावना। किन्न चाकिएक। गश्कांत यथाविहिक দিন্ধ হইলে এই আপদের নিরাকরণ হয়, কারণ विश्व निर्मात-१७न-पित्र श्रावीक स्थादिः ও চর্ম সৃন্দর অখাবয়ব ধারণ করত বঙ্ সম্বচ্ছে **আকিকো স**ংকার বিহিত হয়, তাহাকে প্টেষ্ঠ লইয়া ৰচ্ছদেৰ নৃত্য করিতে ২ নৰ্যৰ্ভৱন্ कत्रक बर्गास्त्राह्य करव।

সিক্ষিদিগের তৃতীয় সংক্ষার বিদ্যারম্ভ, ও চতু-र्थ मः कात मूचर। उपनस्त विवाद्य उपगान क्हेब्रा थाएक। धननान् निस्तिता क्लिपुनिरगत कर्म्य ब्रोड/नृजादः दि॰मण्डि-व॰मद्भव मध्याहे উषाह বন্ধনে নিৰন্ধ হয়; কিন্তু মধ্যবিত গৃহত্ত্রা ২৫-७० वष्मात्रत शुर्व विवादकत छेरमार्ग करत ना। मिक्किर्धि घटेक "डेकीन" मार्थ विथातः; ভার্রে বাক্পট্তায় তাহাদিগের বলীয়-ভাতা-দিগছট্ডে কোন মতে ন্যন নছে। উভয় দেশেই তাহারা পাত্র-ক্ষ্যার প্রশংসায় গদ্গদ্চিত্ত, ও প্রলোভ-দর্শনে তুল্য কুশল; এবং তাহা-দিগের বাক্টের বায়ু-তুলা দার্চাতা উভয়-খা-<u>त्म ने मान। विवादम्ब कण्णन। इहिन्द प्रथम इ</u> यहेकत्र প্रसाव भूवनमात विवाह मिट्ट बीकात कतः भिक्षिपिरगत (वार्य नर्श्या मर्गः अहे প্রয়ন্ত উলাহ-প্রস্তাব ভনিলেই সিন্ধি কন্যাকতা-हा बहीकात कतिया अप्रिति महेक्टक विभान করেন: ভদনস্তর এক মাদ অভীত হইলে ঘটক কন্যাকভার নিকটে দ্বিতায় বার আগমন-পূর্বব নালালিখ ভূমিকার পর পুনরায় বিবাহের প্রসঞ্জ করে: ভাছাতে কমাকেন্তার বিরাগ থাকিলে िनि (म नियस्ति धानक कतिए निरम्भ कर्दन: नइद। अप्ति नम्डि-श्रकान-कर्त्रार्थ वर्षा-नका रिन्हक (काम देखि, क्षिक्क थार्किन। अ विक-যের এক প্রচলিত ব্যক্ত এই: " **ঈশ্বরের নিব**-জান খণ্ডাট্বার নভে; কিন্তু এইজাণে আমাদিণের कन्छ- मार्च अध्यक्ति मारुंग। अरे श्रकातः बाध-লিভ হইলে বর্কত্ ও তৎপরিবার পুনঃ ২ ভাবি কুটুম্বদিগের বহিত সাক্ষাৎ করিতে যায়। ওঁ ভাবি কুট্দেরাও আপন সভ্যতা-প্রদর্শনার্থে कांशादमंत्र वाणे नर्बम गाजाशांक करते। अहे ममद्य अस्तिवानिका वृत्रयाबीक-स्वादक्त लाटक পাত্রকন্যার প্রশংসার বিরত হয় শা, সুতরাং অপ্পকাল-মধ্যেই বিবাহের কপেনা হিরীক্ত হইয়া উঠে।

অভঃপর বিবাহের দিন ছির করা আবেশ্যক; তল্লিমিত্ত আমাদিগের ন্যায় কোন পত্র লিখি-वांत প্रয়োজন হয় ना। वतकर्खा नशतिवादा যথাসাধ্য বস্তালকার ও কিঞ্চিৎ পিষ্ট মেহ্দি-পত্র লইয়া মহাসমারেটিছ কন্যাকর্তার বাটী আগমন করেন: তথায় জ্বীপুরুষেরা পৃথক্ ২ সভা করিয়া আগত জ্রাদিগকে জ্রীর সভায় ও शुक्यभिगरक विश्वां होटि नमामन-शृक्त **डेल**-বেশন করায়। ভারতবর্ষের সর্বতেই বিবাছ-मयस्य नाणिक अ नाणियनी श्रक्षान जातः जा-হাদিগের অনুগরিতে বিবাহ টোপর-বিহীন-বি-বাহের নায় বোধ হয়। **বিল্পুদেশে নাপিত** च्यालकाय नालिक्सी श्रधानाः, तम भरवत कि-বল, পাত্রের বাটীহইতে তৈল-হরিদার প্রতিনিধি বজ্ঞালক্ষার-মেল্ডি-প্রভৃতি আনয়ন-পূর্বক কম/া-क नुभड़की कृष्ठी कहा जी मिरशह गड़ा-मरश डेल-বিষ্ট করায়; ও ভদনস্তর এক বৃহ্ৎ-পাত্তে কিঞ্চিৎ দুধা লইয়া বহিবটোতে বরকভার সম্বাধে ভাষা न•স্থাপিত করে।

বরকরা ওভাশাংপুরংসর ঐ দুগা সভাদ সক-লের সহিত পানকরণপূর্বক উপত্তি মিন্তায় সে-বন করত অবশিষ্ট মিন্তার জাদিগের সভায় প্রেরণ করেন। অতঃপর কদ্যাকর্তা বিবাহের দিন ভির করিলেই সভা ভঙ্গ হয়।

विवादम् शूर्तं शांक कमात्र माकाः इत्या প্রসিদ্ধ রীতি, নতে; शत्र खाकशानिमण्डतं नाम खानद्रक গোপানে काबिक्षीत्र माकाः कित्रश थादकः এবং কথন ২ বিবাহের পূর্বে কদা। অন্তম-সন্ত্রা হইতে দুটা হইয়াছে। तिष्कु-(मर्ग गांब्र्हिनु व उ। शांत नामान।
नरहः कन्।कर्जात ग्रह विवारहत मानाधिक कालहरेर वे उ० मव शांतक हम, बवः उ० काल यांव०
श्राच्य महानमाद्धार (जांक हरेर थारक।
नाशिष्ट्री महानमाद्धार (जांक हरेर थारक।
नाशिष्ट्री नाधान्माद्धा य० शांतानाण श्रिक्षमुमशूर्वक कन। त्र क्रान्ति य० शांतानाण श्रिक्षमुमशूर्वक कन। त्र क्रान्ति य० शांतानाण श्रिक्षमुमशूर्वक कन। त्र क्रांत्रि क्रांति माथामा, ममत्व कञ्जल वद्धात्मत क्रित्म मायामा, मायामा, ममत्व कञ्जल वद्धात्मत क्रित्म मायामा, मायामा, ममहल-श्राद्धात्म व्यक्ति व्यक्ति क्रित्म क्रित्म

বিবাহের দিবদে সিল্লিরা কোন বিশেষ যজ্ঞাদি করে না: সমস্ত দিবনাবধি রাত্রি দুই প্রছর পর্য্যস্ত কেবল অঙ্গরাগ স্বাভীষ্টানুরপে সাধনে নিযুক্ত থাকে। বেশভূষা হইলে পর পাত্রের সূহহইতে দুই ব্যক্তি কন্যার নিকট গিয়া এক জন তৎপক্ষীয় কর্মকর্ত্তী (প্রতিনিধি) নিযুক্ত করিতে তাহাকে অনুরোধ করে। জ্রাজাতি ৰভাবতঃ লজ্জাবতী; বিশেষতঃ উদ্বাহ-দিবনে অত্যস্ত লভ্জায় সঙ্কুচিতা थारक: मूज्राः প्रजिनिधि-निरश्नारगत्न ष्यानक বিলম্ব হয়৷ অবশেষে তাহার পিতা কি ভাতা কি অন্য কোন আত্মীয় তৎপদে নিযুক্ত চ্টলে পূর্বোক্ত দুই ব্যক্তি পাত্রের গৃহে নমাগত মোলা প্রভৃতি সভাস্থ সকলের সন্মুখে সাক্ষিতা দিয়া কহে, " कूँशात (कना) चम्करक প্रতिनिधि नियुक्क कति-शास्त्रण। अरे अकाद्ध अखिनिधि नियुक्त रहेता পর মোলা ঐ প্রতিনিধিকে তিনবার জিজ্ঞানা করে-न; जूमि अमूक अमूरकत कना, अमूरकत शोजी

অমুককে, অমুকের পুঞা, অমুকের পৌঞা, মান্ককে দান করিতে স্বীকৃত আছা ?? ও দে স্থাক্ত ভালা পূর্বোজ্ঞ বাক্যানুৰপ বাক্যে পাত্রকে জিজ্ঞানা করেন ও নে বিবাহ করিতে স্থাক্ত হইলেই বিবাহ নিমাহ হল। তৎপরে কন্যা জীখন-স্বৰূপে (দেয়ন—নোহর) কত টাকা প্রাপ্ত হইবে, অলক্ষানাদিতে তাহার স্বত্ব হইবে কি না, ইত্যাদি বাক্যের চুক্তিপত্র কিথিত হয়, ও তদনন্তর মোলা উলাহের মাহাত্মসূচক \* অনেক-বজ্ঞা-করণপূর্বক আন্থানিকরত বিবাহ স্বন্পন্ন করেন। তৎপরে জীআচার-ব্যাপার; তদুলেথে অনেকে কৃত্ত্বলী হইতে পারেন, কিন্তু এই পত্রে তদ্বণনের স্থানাভাব।

मिकिमिरगत (स्वकार्य) चरछाछि किया. छाङा स्वागल्यान्पिरगत প्रधानक-दीरानुगारतके मन्श्रत इक्षा थारक। चरुक्व छाङ्गत विखात-कत्व वा-क्वा।

পূর্বেই উক্ত হইয়াছে, নিষারা মোনল্যান,
অতএব তদ্বিষয়ের ব্যাখ্যান করায় প্রয়েজন
নাই; পরস্ত ধর্মবিষয়ে তাহাদিসের এক আশুর্মার বাছে, তাহার প্রবন্ধ কর্মা।
তাহারা কহে, ইম্বরানগুহ-প্রাপ্ত ধান্মিক ব্যক্তি
জনগণের যে প্রকার উপকার করিতে পারে, তাহার গোরহইতেও দেই রূপ উপকার সন্তবে। এই
প্রযুক্ত বিদেশায় কোন ধান্মিক ব্যক্তি তাহাদিগের দেশে আগত হইলে, তাহাকে বম্ব করিয়া
স্বদেশে গোর দিয়া রাখিনার চেপ্তায় সাধ্যান্সারে জুটি করে না। মিনোহরি নামা এক ব্যক্তি
মুক্তানি ক্রীরকে এই অভিপ্রায়ে ব্য করিবার
উদ্যোগে ক্রেক জন নিক্কি রজনীযোগে তাহার
অনুপস্থিতে তাহার শিষ্যকে ব্য করিয়াছিল।

<sup>\*</sup> বিবিধাংশ্বর ১ খণ্ডে ১২৮ পৃত্তে ইংগর কিন্দেৎ উল্লেখ আছে।

#### श्हेमत् यानि।

(विकीय का यह १०५ शृष्टेक्ट्रेंट क्रमांश्रह)

सिमिमिमिमि इंकिमिशित महिल **बहे अक्टूब-म-**🥏 <sup>রে</sup> জ্বান-পরিশেষ-করণের কিয়ৎকাল প্রস্তিত্ত পরে হাইদর্ হররাজাপেকা আর এক প্রবল শত্র সভিত সভানে প্রবৃত্ত হন। মহারাষ্ট্রী-हिता बादवाजा ७ ७ भनामा यूक्तिमातम रमना-मीत अधीरन कार्न्यत्व टेनरनात विश्वन नास्याक अक मन रनग नश्या जाँशा द्वारका अरम ক্রিল। হাইদর্ পূর্বিৎ স্বায় নগরাদি বিখ্ত ক্রিয়া ভাষাদিগের দুরীকরণে বছবিধ যতু পাই-লেন, কিন্তু কিছুতেই কৃতকার্য্য হুইতে পারি- लन ना । पृष्णीख पर्शाहीद्वी(प्रजा व्यव ६ व्यवहात বৰ্দ্ধ প্রকিত দুর্গ ও নগর আক্রমণ-পূর্বক পাণ্যাদিগের কর-গত করিতে লাগিল; ও বিজ্ঞানীদর্শিস্থাচরণ-প্রদশনধারা নকলের হৃৎ-य 🗝 अंतिरङ वाधिन। क्यान पूर्वाङ्क देवनः শাংগানিপার সভিত **ঘোরতর যুদ্দ করাতে মহা-**যেরার বেনাথে,জ ভংপ্রতিকল-স্বরূপ তাহা-জিলের নালিকা ও কণজেদন বরাইলেন, পরে পুণ রয়জ নেন্দাতিকে তাকিয়া জিজানা করি-ে। শন্মত এই রপে শাত্রির যোগ্য, ইছা ভোষাল বেধি ২২১০৩ কি মাণ? সে উত্তর दरिया, १ ७१०१८७ आबाह अस-हानि माज, दिश्व ্ড্লের ৰম্ভ অপ্যশ**্** এই **স**দূত্রের অভি-প্রায় নিচর মহারাষ্ট্রায় নেলালীর হাদয়ে প্রবেশ বলিল, ও লে দেনাপতির প্রতি হতেতেবালন না কহিল ভাৰাতে সৃত্ত-শর্ভারে গমন করিতে অনু-মতি দিলে। অভঃপর মাধোরাও পাড়া প্রযুক্ত ্জে জশক্ত হুওয়াতে ব্ৰাপ্তকমানাকে সেনাপতি-পাৰে লিল্ফ করিয়া স্বয়ং অবস্ত হইলেন।

शहेरत् चीय बाजधानीए अहे चाडिनव रमना-পতির প্রবেশ অবরোধ করিবার নিমিত্ত কতি-পয় পাৰ্বত্য পথে আপন সেনা লইয়া দণ্ডায়-मान इश्टिलन, किन्नु किन्ट्र उँ। हाटक विमुध क्तिरं शाहिरलम् मा। व्यवस्थिरं द्रक्रमीरंशारश त्नामङ् ताक्रणार्षे প्रज्ञानार्थे याज। कतियात উদ্যোগ করিলেন। এই সময়ে তাঁহার এক জन रेननगथाक पूर्वुकिन्निकः अकृषा रुक्त ध्नि করাতে তদাকণন মাত্র শতুরা ভা**হার দৈনে**/র পলায়ন-ব্যাপার অবগত হইয়া তাহাদের উপর অক্রিমন করিল। ছাইদর্ প্রতিদিন নিশাযোগে य क्ष मामक मुदा स्वन कतिएकन, अहे ता-ত্রিতে ভয়ানক বিপদাপন্ন হইয়াও তাহা গুহুণ করিতে জুটি করেন নাই: অর্থাৎ তিনি সুরা-পানে বিলক্ষণ উত্মত্ত হটয়াছিলেন, সুভরাং चयः रेनन/मिशरक तका कतिरा व्यानातक इते ष्यश्व ििन ए९काल विद्वकण्य, (लग; চ্ইয়া আগন পূজ টিপুকে যৎপরোনাত্তি ভির-স্কার ও তাহার পৃঠে অতিশয়-বল-পূর্বক বে-ত্রাঘাত করিলেন: তাহাতে টিপু রাগান্তিত ষ্ট্য়া শপথ ফরিলেন, যে তিনি সে রাজি-তে শত্বিকদে কদাপি অস্ত্রধারণ করিবেন ना। हार्रेष्टवत रेभरनाता अहे करण समाणि বিধীন হইয়া শত্ত্ৰকতৃ দ অনান্ধানে ইতত্ত তা-फ़िड बहेल।

পরে যথন মহারাষ্ট্রায়ের। তাঁহার দুব্যাদি লুগুন করণে ব্যস্ত ছিল, সেই সুযোগে হাইদর্ এক ফ্রত-গামী অস্থোপরি আরোহণ করিয়া প্রিরম্পত্তনে নমাগত হুলেন। টিপুও এক ভিকুকের বেশ ধা-রণ করিয়া শ্রুদলের মধ্য দিয়া অপরিচিতকপে প্রেয়াণ করিলেন। এক্ষণে ত্রাধ্বক্ষামা মহীসুরের রাজপাটে প্রবেশ করিয়া এই নগরকে আপনাদের করতলে আনয়ন করিতে পারিলেই হাইদর্কে রাজ্য-চুতে করিতে পারিতেন, কিন্তু তিনি এই বৃহৎ
কার্য্যোপযোগী বৃদ্ধি-কৌশন সম্পন্ন ছিলেন না।
তিনি সন্মুখ যুদ্ধে তাচ্ছীলা করিয়া প্রায়ঃ মাসাবধি
অনর্থক কর্মে কালহরণ করিতে লাগিলেন; এই
অবকাশে হাইদর্ নৈন্য-সন্তুহ ও যুদ্ধের অন্যান্য
উপকরণ প্রস্তুত করিতে সচেপ্ত হইলেন। পরে
আপেনাকে পূর্ণ ক্রমানীবান্ দেখিয়া শাত্রুদিগের
তাড়না করিতে লাগিলেন। এই প্রকারে প্রায়ঃ
সার্দ্রহমর গত হইলে হাইদর মহারাষ্ট্রায়দিগকে স্বীয়-রাজ্যের উত্রাংশের অনেক ভাগ ও
নগদ ১৫ লক্ষ টাকা দিয়া পরে আরও ১৫ লক্ষ
মুদ্রা দিতে ছীক্ত হইয়া তাহাদের সহিত সন্ধি
করিলেন।

अहे युषा हे॰ तारकता शूर्व-मञ्चानुनादत हाहे-मत्रक किछूरे माहाया करतन नाहै। कातन अरे युकावछ-कारल कान्मानीव श्रवान कर्णकीरवता मानुष्वत्र नमाङ्कत প্রতি একপ আজ্ঞা দিয়াছি-लেन, छांहाता कर्नाष्ट्र युक्तविशुरह कान ध्रकात मः गुर ना तारथन, विरमय ३३ १। १ न त् वा वान। কোন প্রদেশস্থ রাজার পক্ষে কিছুমাত্র সহা-युका ना करतन; मुक्ताः हाहेमत् यथानादा महा-রাষ্ট্রীয়দিগের হস্তহ্টতে নিজ্তি পাট্যা আপন প্রজাদিগকে বশাভুত করণে উদ্যুক্ত হইলেন। প্রথ-মে তিনি মলবার-প্রদেশে প্রবেশ জন্যুতদঞ্চলের षात्रयं कर्भ क्रांदिम चाक्रमन करत्न। अहे श्रान नम्पूर्व यहिक्छ हिल, मूछदाः छारा यनाशास्त्रहे তাঁহার হস্তগত হইল। হাইদর্ তথায় আপন क्युপতाका উত্তীয়মানা করিয়া আপন জ্বন্য निष्ठुतवकारवत्र अक मृद्धास श्रम्भन कतिशाहिरनन। फिनि ठवठा श्रक्तांक्रित्र छेर मामनकरण्य जाहात निक्टे य क्रम् नद्रम्थ चानम्म क्रिट्र उाहाद

প্রত্যেক মুপ্তের ৫ টাকা পারিতোয়িক দিয়েন বিলয়া আপন নৈন্দিগকে ভাষাদের সংখ্যার রাজাননে রাথে উৎসাহ প্রদান করেন, ও স্বয়াও রাজাননে উপবিষ্ট হইয়া ছিন্নমুগু-সকল গুহুণপূর্ক যথানিরমে ভাষার নির্দিপ্ত পুরস্কার বিভরণ করিতি লাগিলেন। এই প্রকারে ২০০ মনুযোর প্রাণনাশ করিলে পর তিনি এস্কাপ পরম সূক্রর মুখু বিশিপ্ত দুই মন্তক দেখিলেন, যে ভদশনে ভাষার পাষাণ অপেক্ষাও কঠিনভর হাদয়ে অভ্তপূর্ব কাফ্রন্যরেরের স্ক্রার হইল। তথন তিনি নরহত্যাতে ক্ষান্ত হইতে অনুমতি করিলেন।

কুর্গের পর হাইদর্ কালিক্ট অধিকৃত করেন।
তৎপরে তিনি মহারাপ্লাইদিগতে আপন রাজ্যের যে থণ্ড দিয়াছিলেন, তাহার পুনকদারার্থে
সচেপ্ত হন। তদভিপ্রায় স্থিতি করণার্থে তাঁহার অনেক সুর্বাথা হুইয়াছিল। ১৮-২৯ সংবৎসরে মাধোরাওর মৃত্যু হয়, ও রঘুনাথরাও
(যিনি রাঘোরা বলিয়া খ্যাত ছিলেন,) মহারাপ্লীয়দিলের প্রস্থেতিনালালা-পদে আকাদ হযেন। কিল মহারাপ্লীয়ের এক মত হইয়া তাঁহাকে ঐ পদে বরণ করিতে সম্মত হইল না।
ইহাতে রাজ্যমধ্যে ঘোরতর বিবাদ বিসম্বাদ
উপস্থিত হয়। ঐ সুযোগে হাইদর আপন
পূর্বাধিকারের অধিকাংশ প্রায়ঃ অবাধে গুতুণ
করিলেন।

মহারাষ্ট্রীয়দিগের হস্তহতে আপন রাজ্য উজার-ক্রনায়ন্তর হাইদর গুতি নামক এক প্রধান
দুর্গ অবিলয়ে আক্রমণ করেন। এই দুগ মুরারারাও
নামা এক জন অতাব পরাক্রান্ত মহারাষ্ট্রায় দস্তকতৃক রক্ষিত ও কতিপয় গিরিমধ্য-স্থিত হওয়াতে
দুর্ভেদ্য ও দুর্গমাপ্রায়ঃ ছিল। দুগস্থ সৈনের

308

ই াজের। ভাছাদের পূর্ব-প্রতিজ্ঞানুসারে হাইদর যখন মহারাট্যায়দিগের কর্ত্ত আক্রান্ত 🖯 হয়েন, তথন ভাহাকে সদৈন্যে রক্ষা করেন মাট: অত্তাৰ চাইদর বিবেচনা করিলেন, যে দিগের সন্লোভগাট**নে এক্সেতিক ছইলেন**।

ज्नवर व्यभाष्ट्र कतिरलन । जिनि विरवहना कति-लिन, य यथन रेश्त्राकि मिरात माराया जारात ষত্যন্ত প্রার্থনীয় ছিল, তথন তাহার। প্রতিশ্রুত থাকিয়াও তৎপ্রদানে সম্পূর্ণ কার্পান্য করিয়াছে; এখন তাহাদের বহায়তা নিভাত্ত নিভায়োজন জানিয়াই তাহারা মৃক্ত-হত্তে তাহা দিতে বাগু হইয়াছে। অপর এই সময়ে ইংরাজ ও করা-नोमिं पिरात मध्य विवाद जैन्याम छे शक्ति इ.स. য়াতে করাসাসেরা ভারতববে ইংরাজদিগের ক্ষতি-क्रबर्गाञ्जारम बाहेम्रद्भव महिष्ठ यात्र (एड-मित मानम कतिल; ७ शाहेमत् उथकागाय जा-शास्त्र मध्य है दार्जामरणत विकास अक मिन পত্র স্থির করিলেন।

ইংরাজের: ভারতবর্ষে ফ্রাদীস্দিগের অধি-কৃত সমুদয় স্থান ধৃংদ করিতে ডির-প্রতিচ্ছ হ্ইল। প্রথমে তাহারা পশ্তিচরি হস্তগত করে। হাইনর তাহাতে কিছু আপত্তি করিলেন না, वतः सोथिक चाङ्गाम अकाम कतित्वन। किन्न ङ< शत है यथन हे तास्त्रता महात्रह महीपूर्व चाक्तमानत छेन्द्यां कतिल, उथन जिनि वे ই-রাজাণিগের সভিত বজাতা ভদু নহে। প্রত্যুত ্তান নিজ-রাজ্যের অন্তর্গত বলিয়া ভাহাদিগকে তিনি আপান সোলাগ্রেপ-উদ্যানে তাহাদিগ- ুত্পুতি হস্তনিকেপ করিতে নিষেধ করিবেন; া বিষম্য কণ্টকবৃক্ষরূপ ভাষে করিয়া তাহা- কিন্তু ইংরাজেরা ঐ দুর্গ করাধীদদিশের প্রতি-গুণিত জানিয়া তাঁহার বাক্যের প্রতি কর্ণাত মহালাষ্ট্রালেরাও এই সম্প্রে কাইদরের সহিত্ করিল না, ও অবিলয়ে তাহার বিনাশার্থে ্ শঞ্ত:-পরিষ্যার নষ্ঠিত সৌহাদ্দ-শৃত্ত- এক দল সৈন্য প্রেরণ করিল। ছাইদর্ তাহার থালে বদ হইল: ও ইংরাজ্দিণের বিপাকে রক্ষার্থে সাধ্যমত চেষ্টা পাইয়াছিলেন, কিন্তু হাইদ্রের সহিত এক যাড়্যন্ত করিল। এদিকে কৃতকার্য্য হ**ইতে পারেন নাই। কথিত আছে,** মাজুলিও রাজপুরুষেরা চাইদরের বহিত সভাব . যে ইংরাজেরা এ দুর্গ লওনাবধি ভাঁছাদের করন জির করণাথে ভীহার সভিত পূর্যবৎ সন্ধিন প্রতি হাইদরের অভঃকরণ অভ্যন্ত আভাবোধ ত্তাপন জন্য এক দূত প্রেরণ করিলেন। হাইদর হইয়াছিল, কিন্তু ইংরাজেরা ভূমজানে তাঁহাহইতে তাহাদের এই প্রস্তাবে অভ্যস্ত কৃষ্ট চ্ইয়া ভাষ্ কাৰ বিপদই আলক্ষা করে নাই, প্রস্তুত

তাঁহার সহিত সন্ধি করণার্থে এক দূত প্রেরণ कतिशाहित। हारेपत् के पूट्यत यथष्ठे नमापत করিয়া তাহার হস্তে এক থানি পত্র সমর্পণ शूर्वक विषाय कतित्वम। जे शत्व हेश्त्रात्कता তাঁহার যে সকল অনিষ্টের প্রতি কারণ হইয়া-ছিল, তাহার আনুপূর্বিক লিখিয়া অবশেষে তিনি এইকাপ ভয় প্রদর্শন করেন যে "এখনও चामि हेहात প্রতিকার করি নাই, ভবিষ/তে যাহ। হয় "। ইংরাজেরা ইহাতে गলির আশা পরিভাগে না করিয়া পুনরায় জনৈক নাছেব-কে তাহার সমাধা-নিমিত্ত হাইদরের নিকট প্রেরণ করে; কিন্তু ছাইদর্ ইংরাজদিগের শঠ-তা-অরণ-পূর্বক ক্রোধসহ্য করিতে না পারিয়া উপস্থিত ব্যক্তিকে এই বলিয়া বিদায় করি-लन, य "जात मिक्रांज कि कन? শংবৎসরের যে সন্ধিপত্র তিরীকৃত হয়, ইংরা-জেরা তাহার প্রত্যেক নিয়ম ভঙ্গ করিয়াছেন: তাঁছাদিগের প্রতিজ্ঞানুসারে আমার বিপক্ষ মহা-রাষ্ট্রায়দিগকে দমন করা তাহাদিগের উচিত हिन; তাহা ना कतार्ट्य यानि नर्बचाछ हरे-याहिनाम, देशांत्र अत ठाँशांपत चात चनार्या-ह्मिथ कहा चश्रासामनीय "।

मित्र कप्पमा अहे श्रकात्त वार्थ इहेटन हाहे-मत् है श्वाक्षिपित महिक मञ्जामार्थ अक विश्व रेमन। প্राच्छ अतिएक माणिएलम। हाहेम्बावारम्ब निकाम मरुयम् चालि अञ्चियः रे दाक्रिनित्र জ্ঞাপন করিয়া উপস্থিত গুৰুতর বিপদের ঝটিতি পরিত্রাণের উপায়-করণে তাহাদিগকে উত্তেক্তিত कतियाहित्वन, किन्न देश्बाकिहिरात्र छेलाञ्चाভाव ও রাজপ্ক্ষদিগের পরস্পার মনাস্তর থাকা-প্রযুক্ত কোন नप्शास्त्रत (ठडी इहेन ना। जाशत

দিগকে বারম্বার বিপথগামী করিয়াছে, হাতএব তাঁহার অমূলক কথা শুনিয়া হাইদরের দভিত श्नतात्र विताध कता कर्डवा नरहा अमिरक हाहेम्ड এক দল অন্এন-নবতি-সহসু-সঙ্থাক সংহসিক रेनना, उपितिक চाরि-শত-इफेरताशाश-भग-তিক সমভিব্যাহারে এরঙ্গণভনহইতে চাজামা नामक ज्ञान-पिया कर्नाहे-प्राम উপनी इ इट्लन, अ আপন নিদ্ধক্ণ-বিক্রম-প্রকাশ-পুরঃসর তথাকার প্रकापिरगत्र गर्बनाम कतिए नागिरनम्। दे दा-জেরা তথনও নিরুদ্ধেগে বসিয়া ছিল; কিন্তু যথন हारेम्द्रित टेमना कर्ज्ज य जकल ग्र-म्था इरेटठ-ছিল, তাছার ধূম ও অশ্বিশিখা মান্দাল-নগরের চতুদিলৈ । দেদীপামান इहेल, তখন দিব্য-চক্ষুদ্বারা আপনাদের সম্পূর্ণ বিপদ্ অব্লোকন করিয়া সশব্যস্তে তৎ প্রতীকারের উপায়-চি-स्टर्म नियुक्त रहेन। अथरम ठाहाता मूग-मकन আপনাদের অধীনে আনিবার নিমিত্ত চেষ্টা পা-हेल, किन्তु पूरेणे। पूर्ण नाजिरहरक ज्यलब मक-लहे भाकु मगाकान्त रहेशाहिल। **ইংরাজদিগের সেনানা**য়ক সরু ফেক্টর মনরো मार्ट्रित अधीरन बाह्य मन, इ कर्नन् ट्रिन्त व्यथीरम व्यश्व अक मल. अहे मुहे मरत गर्वश्रक ৫२ • याका हिल। जे छेडरात मः यान इहेरन हे॰ दाक्षिरिशंद भाक्त गद्भव इहेर्ड भावित, किन्न হেক্টর সাহেব অবিবেচনা-পূর্বক বেলি-সেনা-পতির দহিত দদৈনেঃ মিলিত না হইয়া তাঁছার माहायगार्थ >,००० यामामाज एक्षत्र कतिरलन। অত্পা দৈন্য ,লইয়া বেলি-নাছেব হাইদরের সহিত युष्क প्रान्थन-एष्टे। कतिलंब भवाकृष्ठ इहेरनक ইহাতে বিচিত্র কি? হাইদর্ ভাঁহার সৈন্মের অধিকাংশ বিনষ্ট করেন, ও অবশিষ্ট ২০০ ইউরো-তাহারা মনে করিল যে মহত্মদ আলি তাহা- পায় ও অপর কতক্তনি দেশায় পদাতিককে

তিনি ঐ বন্দ্রীদিগাকে যুৎকিঞ্চিৎ কদল আছার, ও সেস্থান ত্যাগ করত স্থানান্তরে গমন করেন। প্ৰিত হইয়াছিল।

অভঃপর হাইদর্ই রাজদিগকে পরাক্ষ করি-कगाँउ अन्यान्य कडकछनिन् गाँठ अधान २ नृशं आक्रमन कदिलन। हेडिमस्या कनिका-ভাত গ্ৰণ্ড হৈছি সু সাঙ্গেৰ মান্দুজের উক্ত प्राप्रमात गःचीम आष्ठ करेशा डाहात•निवाकतन-নিমিত্ত অরায় আইর্কুট্ নালা এক জন বিখ্যাত সেনাপতিকে তথায় প্রেরণ করিলেন, ও যুদ্ধাথে क्रमात्मा छेन्द्यातं कतितक लाजित्वमः

कृषे नारश्न मानुष्क वानिया युष्कत किष्ट् न्वीयी प्रियासमा। जीकाद अवीत १,००० मांव मत् **मान्द्रारकत निक**ष्टेष श्राम्मानकल मकाचूमि-শ্ব্য-গ্রাপ্তির সন্তাবলা ছিল শাঃ ইহাতে উল্লাজ-লেনাপতিকে বৈন্দিগের আহারায়-সামগ্রী-প্রা-राष्ट्रांत्र बिह्न ; किन्नु नार्शिक कृषे भारत्य अहै । इहेब्रा चाविताय भरेनात्म इन्ड इहेर्सन । ন্মত কোশ নহা করিয়াও শার্দ্**মন্-করণে আ**-कर्रेट इहाइ उहास्त्रि उहाम अ श्रद्धारकि नामक

वक्कन कतियां शिवद्राभावत्व वहेवा यान। उथाय वे यूष्क हाहेनत् मन्भूवंकत्भ भवाष्ट्र हत्यन,

অপকৃষ্ট বাস ও অন্যান্য শারীরিক কুেশ প্রদান । যুদ্ধের পর ইংরাজ-সেশাপতি ওয়ান্তিওয়াস্ করিয়াছিলেন: ও তদ্যাতনায় ভাহারা অনেকেই ও বোলার নামক দুর্গ শত্তুদিগের হস্তহইতে নাংঘাতিক-রোগে আক্রান্ত ও সেই রোগের কিছু-। উদ্ধৃত করেন। এই সকল লাভ সৌভাগেরে চিহু माञ्ज िकिथ्यः ना इवद्यार्टि अकारत मृत्रुभ्राथः वरहे, किन्नु अक उत्त शहरतद कोमन जात পতিত হইয়া ই॰রাজনের বিস্তর ক্ষতি হইয়াছিল। कर्लिल् दुव्वदशहे मारहत २.००० याका लहेशी য়া অনায়ানেই আরকট্ দুর্গ অধিকৃত করত টান্জোর-প্রদেশে আধিপত্য স্থাপন করিতে প্রে-ति । इत्रेश्वाष्ट्रिया । जे श्वाप्टमा हाहेम्दतत कि कांच्या देवना वर्जभान-थाका प्रयुक्त कर्णन् नारह-বের তথায় অবস্থিতি করা অকর্ত্ব্য ছিল ; কিন্তু তিনি মান্দ্রাজন্ত লাহেবদিগের অনুমতি বংতি-রেকে তাহা পরিত্যাগ করিতে অশক্ত হইলেন। হাইদ? ঐ অবকাশে আপন বেতনভুক্ কতকগুলিন লোককে মান্দুাজহইতে আগত দূতবং ৰাজাইয়া ইংরাজ-সেনাপতিকে মিথ্য-সংবাদদারা অভয় প্রদান করিতে লাগিলেন। ইহাতে কর্ণেল্ নাহেব যোজ। ছিল, ভয়াবে। সপ্তদশ-শতের অধিক আপনাকে নিরাপদ জানিয়া ৰচ্ছদে বসিয়া রছি-হউরোপ্টায় প্রাতিক ছিল না। অধিকন্ত হাই- লেন। ইত্যবদরে হাইদরের দৈন্য তাঁহার চতুঃ-शास्य पारानला नगाय (४%न कतिए नाशिन। গ্রায়ং করিয়া রাথিয়াছিলেন; তথায় কিছুমাত্র তথাকার এক জন প্রজাকর্তৃক সাছেব আপনার मम्भून विशास विषय छा । इहेशा हाइमात চরদ্বারা একাপ বিভাত ছিলেন, যে সেই সংবাদ পির নিমিত্ত কেবল মান্দ্রজের উপর নির্ভর অমূলক জ্ঞান করিলেন। অবশেষে তিনি আপন कित्रिक रुक्ति मुख्यार शास र पूर्जिक्ति देनगारशका प्रमाधन वृहर रेमनाकुर्क चाकाञ्च

शहरत् अहे यूट्स क्य लाख क्रिया चालम প্রন্থাপ্র-চেন্তা নিয়োগ করিলেন, ও শত্তু- বিশেষ সেভোগ্য-বোধে কাইচিত্ত না ক্ইয়া ভাবি বিপদের আশক্ষায় উদ্বিধ হন। তিনি पूर्वे पूर्णित পतिञान कितिना भारत कर्डमूत्र-मा- (मिथालन, य रहिष्टेन् मारक्रवत वर्षयञ्जवात) মক স্থানে তাইদরের সহিত তাঁহার এক যুদ্ধ হয়। মহারাষ্ট্রায়েরা তাঁহার পদ্ধ পরিত্যাগ-পূর্বক ইং-

য়াছে। অপর কলবার-অঞ্চলে ইংরাজকর্তৃক তাঁহার এক দল সৈনে/র প্রতিঘাত হওয়াতে তিনি নি-ভাস্থ ভথাশ হইয়া ক্রাট-পরিভাগি-করণোমুথ इरेशाहिता। अगठ मगाय जिनि अक नहन् कतानीन योकात नाकाया প्राथ क्रेश जिन-या कान इहालना कतानीत्मता श्रथाम काज्नुत দ্গ আক্রমণ করে। ঐ স্থান সম্যক্রফিত না হওয়াতে তাহা অপোয়াদেই তাহাদের করতলত্ত हरेता उर्शात उग्नासि उग्नाम्नामक श्रधान দুর্গে তাহাদের হস্তকেপ হইবামাত্র কূট্ বাহেব ठाहारनत महिन मध्य-मञ्जास প्रस्त क्रेलन, अ जाहारमत शण्ठा ६ । वातमान इरेश जानि-नामक স্থানে তাহাদিগকৈ সম্পূর্ণকপে পরাভূত করেন।

ইতংগুৰাবধি হাইদরের অস্বাহ্য দিন্থ বৃদ্ধ হুইতেছিল। এক্ষণে রাজবিক্ষোটক-নামক অসাধ্য ব্যাধিক ত্ঁক পীড়িত হইয়া তিনি ১৯৪১ সংবং-महत् चन्।म व्याधि वर्ष दश्रयः क्रेशः स्मृतनीलाः गश्दत्र करत्र ।

হাইদরের জন্মাবধি চরম পর্য্যন্ত অবস্থাবি-বেচনা করিয়া দেখিলে চমৎকৃত হুইতে হুয় िनि कि नोष्ठ-चरश्रारहरेख, यथा-कथिक ल-থন-পঠন-জ্ঞান-বজ্জিত হইয়াও কি বিস্তীৰ্ণ রা-জ্যের অধীশ্বর হইয়াছিলেন। অপর ঐ বিপূল ताका व्यथिकात ও भागन कत्रात जिनि कि वाना-माना-त्किनिशृवका ७ को मल अन्मन करतन! नमत-देनशूर्वा अ द्वाका नामरन, रवाथ इत्र, जा-कांत्र जूना विष्ठकन मन्या उरकारन उक्कृ मिक्न-परम हिन ना। প্रভाরণা—कপটতা—िव-শাস্বাতকতা—বিজাতীয় নিচুয়তা—প্ৰভৃতি কুক্তি-शांश जिनि विद्रक ছिलन ना वर्षे, किन्न जां-रात्र व्याप्तत्र विष्ठात-कत्र १- जमर्य हेरा व्यादन ताथा

রাজদিগের সহায় হইবেক, ইহা প্রক্তিশ্রত হই- | কর্ত্তব্য. যে তাঁহার ন্যায় হঠাৎ দারিদুন-দশ্য-হইতে অসম্ভব ঐশ্বর্য ও একাধিপত্য প্রায় **इहेल--विश्विष्ठः छम्वछा अभूनः** विम्यास्त्रानः विभिन्न इहेटल-मनुरयात प्राय-मकल হইয়া গুণ-পামকে প্রচ্ছন্ন ক্রিয়া রাখিবেক, ইহাতে আশ্চর্য্য কি? তাঁহার তুলা অবতঃ প্রাপ হইয়া অনেক সদিদান ব্যক্তিও বিষয়-भरि मूथा रहेशा ठाँशाहरेल अधिक मूक्तियाय मध इहेब्राट्ट। अञ्जव विम्या-विद्यान कोहेम्एवत পক্ষে দুঠাচার হওয়া অসম্ভব নহে, তিনি যে চৌকিদারের গৃহে জন্ম লইয়া পরে চৌকিদারি কর্মের মর্থাক্রথিকিৎ শিক্ষা প্রাপ্ত হওত বৃহদ্যক্ত্য উপাৰ্জন ও সুকাৰুৰপে তচ্ছাদন করিয়াছিলেন इंहाई अवसान्धर्ग।

> 지. 31. পার্থারয়াবাটা।

#### বিজয়ন্গরের ইতিহাস:

ిపిపిపిపిషిక किन-म्हिन शहाद्वानुमञ्जान-विय-🔐 ह्य करनेन स्मरकञ्ज नाम। এक जन ্রিটারজে অতি প্রশিদ্ধ হইয়াছিলেন: ्रिक्का हिन क्रमाणक ०० वटमत **उ**टकार्य নিবুক্ত থাকিয়া বিপুল-১/য়সহকারে হিন্দুদি-গের ধর্ম ইতিহাস ও সাহিত্যাদি বিষয়ক অ-मिक श्रुष्ठक ও मिदरमवीत मुर्खि— उथा श्रुष्ठा निका দেবভবন প্রভৃতি অনেক প্রাচীন পদার্থের চিত্র সঙ্গুরু করিয়াছিলেন। অপর তাঁহার অনুজ্ঞায় ও পরিশুমে অনূ/ন ৫০ খানি বৃহদাকার সংস্কৃত ও পারসি পুস্তক ইংরাজিতে অনুবাদিত হইয়াছিল। তাঁহার সহযোগি কাবেলি বেণ্টক বোরিয়া নামা



ক্রেল সাহেত্রের পশ্চিত। কারেলি রেণ্টক রোল্লিয়া। ্ কর্মেঞ্

এক জন ব্ৰাহ্মণ সপ্তশতী চণ্ডী ইংরাজিতে অন্-তামুশাসন প্রভৃতি অনেক বীত্রক পাঠ করিয়া वाकापिरगत পূर्वकालीन वः भावली निक्राभव क-রেন। এ প্রসিদ্ধ পুরাতৃত্তানুসন্ধায়িদিগের প্রতি-क्रण शूर्वशृष्टि मृष्ट्रि इंहेल; বোধ করি তাহা शार्ठकिरिशत मर्भागीयं स्ट्रेंदैक।

পশ্চিমদিকে নগরের প্রধান-মন্দির-সকল তা- বিজয়নগরাধিপাহির অধিকাব-ভুক্ত ছিল। থোদিত বিংশতি-ছন্ত-উচ্চ স্তম্ভোপব্লি স্থাপিত। ঐ দিয়া তাহাতে প্রবেশ করিতে হয়। ইংরাজ রাজ-পুक्रविता (मार्चे मिन्दित कीर्द्शाक्षात कतिया था-কেন। বীরভদু ও গণেশের নামে প্রতিষ্ঠিত অভার দুইটি বিখ্যাত দেৰায়তন প্ৰস্তাবিত নগৱে বৰ্তমান আছে; ভশ্মধ্যে শেষোক্তের নিকটে ২০ হস্ত উচ্চ अक नहिन्ह मूर्डि मृष्टे रहा। द्राष्ट्रांत चिका, হস্তিশালা, এবং তুক্কভদ্যা-নদীর উপর একটি সেতুর च्यावरमवं अन्।शि वर्डमाम आह्य

>>>> শকে **वर्दम-नाम**क अक झन हे डेटड़ा वाषिक करतन; जानत अक छन वाकान आधीन शीय भूछकात विकयनगढ़क मृविखीन, वर जना-कीर्व, এবং धनशान/-शृबं विषया वर्गना कविद्या গিয়াছেল। ভংকালে ভথায় দেশজাত হীরক, ভারত-নম্দের মৃক্তা, পেণ্ডর পদারাগমণি, চান s त्वन्मद्राचारण्य शांके दक्तिम्थावः स्मरमाङ স্থানের বনাৎ, নানা দেশের পার্ড, কহিফেন, উক্ত মেকেঞ্জি সাহেব অনেক প্রাচীন-নগ-্ চন্দন, মুসরর, এবং কর্পুর; মল্মবারের ম্গনাভি রের বর্ণন করিয়াছেন, তন্মধ্যে তুম্বভদ্যা-নদীর ও মরিচ ইত্যাদি বিবিধ দুবা উক্তনগরে বিক্রীত ন্দ্রিজ্ন টিক্র অকটি প্রতাবশিষ্ট-নগরের উল্লেখ হইত। তত্ত্ত রাজার ৯০০ হত্তী, ১০,০০০ অস্থারোন আছে; পূর্বকালে তাহা বিজয়নগর-নামে বি- হী, এবং ুবহুসঙ্থাক পদাতি ছিন। রাজ। খ্যাত ছিল। ঐ নগরের উত্তর্দিগে অনত্তন এবং অমাতে রা প্রতর্ময় সুর্ম্য নিকেতনে বাদ বা হস্তিহরী নামক উপনগর এই ক্ষণে নগর করিতেন: ফিস্তু অপর লোক মৃত্তিকা-নির্মিত বলিয়া খ্যাত আছে। প্রকৃত বিজয়নগরের ভথাব- সামান্য গৃহে নিবসতি করিত "। বর্ধের লিপ্য-শেষ বন জন্তলে পরিপূর্ণ; অধুনা তাহা কেবল নুসারে বোধ হয় তুলুর, কানারা, চোরমপ্তল, বানরের আবাদ হট্য়াছে। নদী চারবর্ত্তি বর্জের তৈলন্ত, দুর্গিড় ইত্যাদি দেশ কোন সময়ে

প্রিত ছিল। তন্মধ্যে একটি মন্দিরে বিতলদেব ্ বিজয়নগরের ভাপন-বিষয়ে দাক্ষিণাত্যদিগের নামে প্রতিষ্ঠিত বিজ্যু-মৃত্তিবিশেষ আছে। ঐ মধ্যে নানাবিধ কিঃবদন্তী প্রচলিত আছে। মন্দিরের ছাদ প্রস্তর নির্মিত, এবং উত্তমকপে: কোন জনপ্রত্যনুসারে নাধব্বিদ্যার্ণ্য-নামক अक राक्ति देनवानुकम्लाय धनना छ्लू**र्वक विमा-**স্তম্ভ সকলের প্রত্যেকটি অথপ্ত প্রস্তর। শশপতি- নগর-নামা এক নগর স্থাপন করিয়া রাজত্ব করি-বিৰাপাক্ষ-নামে একটি মনোহর মন্দির আছে, এক ্যাছিলেন; সেই নগরের নাম পরিবর্ত্ত হুইয়া স্থার্থ, সুপ্রশন্ত, স্তম্পুরিদ্বারা সুশোভিত বর্ম- বিজয়নগর হইয়াছে। অপর প্রবাদ্ধারা জ্ঞাত হওয়া বায় যে মাধ্বাচার্যা ময়ণ রাজস্ব না করিয়া বুক্ত নামক-ব্যক্তিকে রাজপদে স্থাপন क्रियाहित्वन। (न यांश इडेक, এই नकन किश्द-मखीषात्र। व्याय एस य विमारतिकात माहारका বুরু ও হরিহর নামা ব্যক্তিময় বিজয়নগর স্থা-পিত করিয়াছিলেন। .

> विकारतथ माधवांगया व्यामाक्तित भारत বিশেষ প্রনিদ্ধ আছেন; তিনি স্মৃতি—ব্যাকরণ—

আছেন। ক্ষিত আছে যে মাধবাচাৰ্য্য সঙ্গম- কোন বিভিন্নতা নাই"। চিল। সমমের পুঞ বুর ও হরিংরের রা-ছিলে।

ज्याभी हित्तमः जीशाम्ब शक्तम शब मक्रम কিয়া তাঁহার পুঞ্রো ক্ষমতারম্পান চইয়াঁ বিজয় লারের পুত্রপাত করিয়া থাকিবেন। জনশ্রতানু যাবে বোৰ হয় ১২৫৮ শকে এই নগর সংস্থাপিত क्हेर, जिल्ला उथकारनत किश्विय शुर्व गुनन्मान्-क एक मधीमूब-अध्यक्षीय (वलान-डाब्लास्ट ताक-ধানা আক্রান্ত হয়, এবং অন্তর্ভাক্ত বিনষ্ট হয়; মত্রৰ তথ্য**লে বিজয়ন্গরের উন্নতি বিলক্ষ্** ४३% इंदेशहिल हेंद्रा **(वाथ इंदेश्यह्य)** 

গামতে খেদিত রাজানুশাসন পত্রে ব্র-कारकार १५ दिकासमध्यक श्रमाना चारह। दुका মন্ত্রী বিদ্যারণ্য শৈবাচারবিশিষ্ট, এব॰ ই**রাওপু শ্যাশেকে কালের গ্রাদে পতিত হইয়াছিলেন।** 

ও অধ্যাত্মশাস্ত্র বিষয়ে অনেক গুতু রচিত পুরোলেখিত শাসনপত্রে দৃষ্ট হইয়াছে যে তিনি করেন। তাঁলার পার নাম পায়নাচার্য। এই একবার এই বলিয়া জৈন ও বৈঞ্বদের বিরোধে নামে তিনি বেদের ভাষ্যকর্তা বলিয়া বিখ্যাত মধ্যক্তা করেন, যে "এই দুই প্রকার ধর্মের

রাজায় নজী ছিলেন, ও সক্ষরাজার অধিকার বুক্ত-রাজের পর কহিণর অপ্রসিদ্ধ রাজা বি-मकिन-शांक्ष्य ও পূर्द-ममुम्-भगोन्छ পরিব্যাপ্ত জয়নগরে রাজ্য করেন। তদনন্তর তৈলস্করাজ नदिशिष्ट् नामक उँदैकल मिनीय दाकाक र्क জন্ম সময়েও মাধবাচার্য্য অভিহিত পদে বৃত্তি বিজয়নগরের রাজসিংহাসন অধিকৃত হয়। নর-াসিংক বিজয়নগরের সমাক্ প্রাকৃদ্ধি করিয়াছি-সক্ষম-র'জের বিস্তার্ণ-রাজ্যের কথা কবির বর্ণ- লেন। তিনি দক্ষিণ-দেশের মুসল্মান্-রাজাদের ন্তিশ্রমাত্র বোধ হয়; সম্ভবতঃ তিনি কল্যাণ বিকল্পে অক্সধারণ করিয়া দক্ষিণ-দেশের অনেক বা বেলাল রাজাদির অধীনত এক জন যুদ্ধপ্রিয় ভাগ সাধিকালত করিমাজিলেন। তিনি বীর-নরসিংহ ও কৃঞ্দেব ন্দ্র দুইটি পুঞ রা-থিয়া লোক।ন্তরিত হয়েন। কৃষ্ণদেব স্বকায় जुल्लाइ अधीरन (म अप्रामी कर्य कहिर्द्यन। दांत-নরনিংহের তিনটি পুঞ; স্চুত, সদাশির, এবং जिमन। इंशापित रेमानवराश्चियुक क्षाप्तवकर्क রাজকার্য্য নির্বাহ হইত। বস্তুতঃ ধীরনরশিংহ জীবিত থাকিতেই কৃষ্ণদেৰ রাজকার্য্যের ভার গুহণ করিয়।ছিলেন।

क्छ-রায়-চরিত্র-নামক গুস্থানুসারে কৃষ্ণদেব এক বারবিলাসিনীর গভেঁ জামিয়াছিলেন। নর निः रहत পाণिशृशेकी जिलका, चकीय পूष वीत-শ্যাভিত্তি করে তাতুদাল শাতাকের শোষ-ভাগে নরসিংহের রাজ্য-প্রাপ্তির প্রতি ব্যাঘাত জন্মিবে, धार्वेठ क्षेत्राकित्वन । विनि এक উদ্যমশীল এই আশকা-নিবারণার্থ, কৃষ্ণদেবের প্রাণ হনন উৎলাজাখিত মুপতি ছিলেন, এবং বহু-দূর পার্যন্ত করিতে স্থামিকে অনুরোধ করিয়াছিলেন; কিন্তু অ'পানার ক্ষাত্র প্রচার করেন। যুদ্ধবিগুঢ়াদিতে ক্ষেদেব অমাত্রদেগ দ্বারা রক্ষিত হয়েন। নর-সর্বা তিনি অনুক্ল থাকিতেন। বিশেষতঃ সর্ব- বিশেষ আপন-মৃত্যুলময়ে কৃষ্ণদৈবের জীবিত-থা-প্রকার থকের প্রতি দেয়শূন্তা প্রযুক্ত তিনি কিবার বিষয় শূবণ করিয়া ভাঁছাকেই উত্তর্ধি-অনেক বিষয়ে লক্ষকাম হইয়াছিলেন। তাঁহার কারী নিযুক্ত করেন: ইহাতে বীরনরসিংহ নৈরা-

मानक अक कन रननाशिक देखनधर्मावयाची ছिल्लम। कृकारमव विकश्नभन्नाधीम ब्रोका सूमग्रहाला

দিগকে পরাজিত করিয়া কৃষ্ণানদীর দক্ষিণ-তীর-পয়ান্ত রাজ্য বিস্তৃত করেন; পূর্বদিগে কন্দবির ও বার†ফুল প্রদেশ জয় করেন: এব॰ উত্তরে কটক-পর্য্যন্ত আদিয়া গজপতি-নৃপতির দুহিতার পাণি-গুছ্ব করেন। দক্ষিণে জ্রীরক্ষপত্তন ও কামেশ্র-নগর তাঁহার কর্মচারিদ্বারা শাসিত হইত। পো-ভূগীন্-গুৰুক**ৰ্জারা লেখে "যে মাল্নেট্**-দ্বীলাস রাচোল নামক স্থানও তাঁহার অধান ছিল"। त्ताथ इहेटउटक्, मलवात प्राप्त ताका ७ की कात প্রাবান্য **ধাকার করিয়াছিলেন।** ফলতঃ কৃঞ্রায়ের अधीरन विकश्नशंब-ब्रांख्याब मीमा अक्रमण गाप्ता উল্লুভ হইয়াছিল তাদৃশ আরি কথনই হয় নাই।

কৃষ্ণরায় বিদ্যার উন্নতি-পক্ষেও যতুবান ছি-লেন। তাঁহার সভাত আট জন পাণ্ডিত 'দিগ্ৰাজ্য' নামে প্রনিক্ষ; করাজে খনেকে তেল্ভ-ভাষায় গুত্ত রচনা করেন; কেবল অপপায় দীক্ষিত-নামক . এক জন সংস্কৃত-গুত্তকর্তা ছিলেন।

প্রস্তাবিত রাজ। পরম বৈক্ষব ছিলেন। তিনি উদয়গিরি-দ্র্গ জয়-করণপূর্বক তথাহইতে এক , ক্ষপ্রতিমূর্ত্তি আনয়ন করিয়া কৃষ্ণপুরে স্থাপিত করেন; ও ভাছার ব্যয়াদি-নির্বাহ-নিমিত্ত সাত-খানি গ্রাম প্রদান করিয়াছিলেন।

কৃষ্ণ রায়ের পুঞ ছিল না; এবং নিকটভম উত্তরাধিকারী অচু/ত অনুপস্থিত থাকাতে স্কায় জামাতা রামরায়কে তভাবধারকরপে নিযুক্ত क्षिया नमानियक बाज्य-श्रमान करतन। शत्रु অচ্যত প্রত্যাবর্ত্তন-পূর্বক ৰকীয়-রাজ্য অধি-ক্ত করিয়াছিলেন; তাঁহার মৃত্যুর পর সদা-শিব রামরায়ের সাহাযে। রাজত্ব করিছেন।

স্থাপিত করিয়াছিলেন। তিনি আদিল্শাহী রাজা- তদবধি মুনল্মান্দিগের দৌরাজ্যা িজংলগর उदमञ्च इरेशाह्य।

#### कार्ट्रविषाण।

🏸 🧡 ু ি চন্তুদ্ধের। কচকগুলিন পশুনে 🏂 🕰 📝 ছিদন্তা নামে বিখ্যাত করেন; কা-ি<sub>১০০০ ন</sub>ির্ণ তাহাদিগের মুখপুরোভাগের

প্রতে । ক মাড়ীতে দুইটি করিয়া ছেদন-দন্ত পাকে। ইন্রদিগের ঐ সুতীফুদন্ত প্রনিদ্ধ আছে; সজাক শশক ও কাঠ্বিড়ালেরাও ঐপ্রকার-দন্তবিশিট: এই প্রযুক্ত উল্লিখিত পশু-সকলকে এক বগান্ত-গত কহা যায়। এতডিল বিবর্থভৃতি অপর কতকপ্তলিন পশুরও দুই ছেদন দস্ত-থাকে: অত-এব তাহারাও এই দিদন্তি বর্গমধ্যে নির্নীত হয়।

এই পশুদিশের এক প্রধান লক্ষণ এই যে ইহা-**রা পাশ্চাত্য-পদদ্ধয়োপ**রি উপবেশন ভরত পুরঃ-পদ-সহকারে অনায়ালে আহ্রেদি, অন্তিতে জাল রে। কাঠ্বিড়ালের। এই অবস্তারলার জরিতে অ-**ाञ्च उर्लंड, बदर माहा**द-कंद्रन महाश सब्ब हान-हा धार्रक हिंसा थारक। एक वन भार मा अने कारण **छेशर्दशास श्रष्ट्रे नरहः** दाद इतः फारामिरवाद्य পাত্রত শলকোদকল ঐ পপাইছার ফারণ চইবেক।

নমন্ত লিমন্তি-পণ্ডর বর্ণন এক গ্রেন্ডারের কাভি সন্ধি নহে, আইএব এই এবঙে টেবল কঠেবি-জালদিগের বিবরণ লেখা মাইতেছে। ঐ পাখ-দিসের দরল গাত্র, চিত্রিভাঞ্চ, কোমল-কেশ, ও জাড়াতৎপর চঞ্চল মভাবপ্রযুক্ত ইহারা অনে-কের প্রিয়। ইংলগুদেশে অনেক বিলানবভীরা এই পশুকে বিড়ালাদির ন্যায় প্রতিপাত্র-জ্ঞানে শুসল্মান্-ধর্মাবলম্বি আদিলশাহি-রাজাদি- প্রতিপালন করিয়া আকেন। দেশব্যবহার-বশী-भित्र निरुष्ठ यूर्य द्वामद्वारम् मृजू। इद्यः , अवः । जूना अकरम्भोमा विनिन्ता द्वामभानाम विवृत्ता,



গ্রিয়পত-প্রনাদের স্বকাশ-বিহানা, ভ্রাপি ক্তক্তলিন কাঠ্বিড়াল পক্ষবিশিষ্ট এবং ভংগছ-<sup>একার বিভাগেদের</sup> প্রতি নিরক্তা **নহেন, এবং** हेहाटन चाम्हर, कि?

কাঠবিড়ালের অণেক মাজিডেদ আছে। কতক্- ভাল ভারতিবর্ষে দৃষ্ট হইয়া থাকে। किका अवस्य इंडामि अनिक चाहि। अउखिस काठिविष्म मुद्दे इहेम्राह्म।

কারে উভ্ডান হইতে সক্ষম হয়। তাহারা "থেচর" भाष करेता वार्रिक हात्सा श्रानिका कहेरवन सर्वा शक्ता बहै शक्वाय श्राप्तः लकामठ साठि নি-নিত আছে; তক্মধ্যে ৩০।৩৫ জাতি কাঠ্বি-

পণি কাঠ্যিড়লে ভুলিতে বাদ করিয়া শশকা- । অবমূব এবং বর্ণবিষয়েও কাঠ্বিড়ালের অনেক দিন্য নটর ছোল: প্রভৃতি ভুম্পেরিস্ত উদ্ভিদ্- 'ভেদ আছে; রে**থাচতুষ্টয়বিশিষ্ট দামান্য কাঠ**-लमाथ (मत्न कड़क कीवन-इका करते; जाहा- तिजाल, वातरकत वालकात कृत्वाय (मननीशृत, দিগকে 'ভূচর-কাঠবিড়াল" শব্দে কহি। অপর আরাকান, দাজিলিং প্রভৃতি ছানে তাহাহইতে কতকগুলিন সর্বা ব্কোপরি কাল্যাপন করে, দশগুণ বৃহৎ,—প্রায়ঃ ঝুমরি কুরুরের তুল্য—কায় তাহার। সূত্রা ক্রমতর; ও ভলিমিত্র কাঠ্বিড়াল কাঠ্বিড়াল অনেক আছে। অপর ক্ষুদু কাঠ-মাত্রের নাম সংক্ত গুড়ে বৃক্ষমর্কটিকা বৃক্ষশা- বিড়ালেরও অভাব নাই; নেঙ্টি ইন্দুরের তুল্প

প্রতাবিত-পশুদিগের বর্ণগত অনেক ভেদ আছে। কোন ২ পশু ক্ষবর্গ, কেহ বা শুকুবর্গ, কেহ ধুমুবর্গ, কেহ তামুবর্গ, কেহ শুকু-কৃষ্ণ-রেখা-বিশিষ্ট, কেহ ভন্মশুকু, অথবা কৃষ্ণ ভন্ম ইত্যাদি বর্ণের রেখাবিশিষ্ট। পরস্তু সকল বর্ণই রম্য বটে।

বৃক্ষমকটিকাদিগের পুক্ত অতি সুন্দর, এবং তাহার আকৃতিহইতে এই পশুদিগের নাম "চমর-পুক্ত" হইয়াছে। থেচরপর্ণমৃগদিগের পুরুপদ ও পাশ্চাভ্য-পদের মধ্যবর্ত্তি-স্থানে এক প্রকার ক্রক হইয়া থাকে, তৎসাহায্যে তাহারা অনায়ানে উড্ভান হইতে পারে। ঐ অগুপরি কোন পালক নাই, এবং তাহার আকৃতিও পর্ফার ভানার তুল্য নহে। এই পক্ষবিশিষ্ট পর্ণম্গেরা নিশাচর, অর্থাৎ দিবদে নিদ্তি থাকিয়া রছনীযোগে আপন ২ খাদ্য অন্থেষণ করে।

ষভাবতঃ এই পশুরা অত্যন্ত চঞ্চল, এবং
সর্বদা ধানন উৎপুবন ও ক্রতিয়ার তৎপর থাকে।
সিকারিরা কছে, যে কাঠ্বিড়াল এতাদৃশ সম্বরে
দৌড়িয়া থাকে, যে তাহার গমন-সময়ে তাহাকে বন্দুকদারাও মারা অসাধ্য, ফলতঃ নয়নও তাহার গতির অনুগামী হইতে পারে না। হোয়াইট্
সাহেব লেখেন, যে বিড়ালীরা কাঠ্বিড়াল-শাবককে অত্যন্ত প্রিয়ক্তান করে, এবং প্রাপ্ত হইলে
স্বত্রে স্তন পান করাইয়া আপন-শাবকের ন্যায়
ভাহাদিগের পোষণ করে।

মোহমদের জীবন চরিত।

রাজি ৫৭০ অন্দে ১০ই নবেম্বর বা কাছারো মতে ৫৭১ সালের ২১ সে অনুদ্ধান্ত এপ্রল্ দিবলে মোছমাদ মক্তামগরে জন্ম পরিপুদ্ধ করেন। জিনি পিতার একমাত্র পুঞ্ তাহার পিতার নাম আব্দুলা। বিখ্যাত হাসেম

বংশহইতে তাঁহার উৎপত্তি হয়। এই বংশ ক্রেস্
জাতিরই এক শাখা। এই জাতায়েরা আরব-জাতায়দের আদিপুরুষ ইন্সাইল হইতে আপনাদের
উৎপত্তি কহিয়া থাকে। অন্যান্য ঘনিস্ক-জাতিদের উপরি ইহারাই কর্ত্ব-প্রকাশ করিয়াছিল।
বহু বাণিজ্যব্যাপার কুশল কুরেস জাতায়েরা
থনাচ্যতা ও সভ্যতাবিবয়েই যে কেবল বিখ্যাত
ছিল এমত নহে, কিন্তু তাহারা আরব-জাতির
সাধারণ প্রাচীন উপাসনা স্থান কাবার নিকট
বাস করত পুরুষানুক্রমে তথাকার তাবংকার্য্যের
সম্পাদক ও অভিভাবক হইয়াছিল। পৌরোহিত্য-সম্বলিত মে স্থলের আধিপত্য দার্ঘ-কালপর্যান্ত তাহাদের হস্তগত থাকাতেই তাহারা তথাকার একপ্রকার সর্প্রধান হইয়া উঠিল।

মুসল্মান্ গুস্তকারের। ভুরি ২ আডুত ও অলৌ-কিক ঘটনাদ্বারা মোহক্দের জন্ম সুশোভিত ক-রিতে **সম্ভু আছেন।** তাঁহারা কহিয়া থাকে**ন,**  উহার জন্মকালীন পারসাহিত গৃঢ়ানল সহসা নিৰ্বাণ হয়, এবং সৰ্বত্যেদেদীপামান এক তেজো-রাশি ছার। স্মুদার আরবদেশ বালে হয় "। দে যাহা হউক, আমর: এতাদৃশ লোকাতীত তদ্-গত গুণ্গাম তাঁহার উন্মত্তবং শিষ্ট্রস্পুদায়ের ক্ষীণ-বিশ্বাসসাগরে বিসভ্জন করিয়া চলিলাম। **অতি শৈশবাবস্থাতে নোহমদের পিতৃমাতৃ বি-**য়োগ হয়। মোহমাদ দুই বৎসর বয়ঃক্রম ছই-লে তাঁহার মাতা আমিনা লোকান্তর যাত্রা করেন। উক্ত কাবার প্রধান পুরোহিত নিজ বৃদ্ধ পিতামই আবদুল মত্লিব্কত্ক জিলি ७९कारन প্रजिभानिक इहेग्राहितन। चात्पू-লের মরণান্তে মোহম্মদ নিজ কনিষ্ঠ পিতৃব্যেব্র অধীন হইলেন। ভাহার নাম আবুতালিব। মো-হম্মদ্ ঐ পিতৃব্যের সহিত অনেক দেশ পরিভূমন নগরে যাভারাত করিয়াছিলেন।

ति अभि-तर्य-दश्रक्**रम् त्र त्राक्रम महा-**चील 💎 राजिमिरगंड शार्थय-वस्त्र-लूथेन-लाल-সায় আছেছায় ২ সমাগত অপহারক-জাতি-গ্রের প্রতিক্লে যাত্র। করেন। এইরাপ পরি-ভুমণ ও দমর করণে তাঁছার তর্ংকমে নির্চি-শয় সাহস হইতে লাগিল; এবং তাহাই তাঁহার ভবিষ্/ হিনীয়ার একপ্রকার অস্তর চইয়া-ছিলঃ ইত্যুক্তাশে বিশ্বাম ও ধর্মটিভার নি-মিত তাহার নিজন স্থান বাদের আবশাক इरः এवः छोत्रात महन २ अग्र मह्काल छेन्य হট্যাছিল, যে স্বন্ধানীন উপাদ্ধ্যণ ম্লায় গিষা যাদুশ নিচুর-ভাবাপন্ন পৌতুলিক-বল <del>ও</del> क्यमञ्जन-कर्या-मकल कांत्रश भारतना, जाङ्का दियस रिटम्ब कथा छाना छाहात मुखा फेस्मना हिन অসুরোধে পড়িয়া কাবার মন্দিরের পুন্নবী কর্ণ-ৰদায়ে তাহার ভিতিতে প্রাণিত একথানি কৃষ্ণ পা-াণ ভাষাকে পুনঃ স্তাপিত করিতে হইরাছিল।

লগোৱার মান্ধ্যক্ষ বছেবিয়া-লামক এক জন নেঙোটার মভাৰলয়া প্রথমতঃ যুবক মোহ-কাদের অংলাকিক বুদিন্ত্র নিগৃত্তর **জানি**-তে পারিংছিল। সে ঠালার নতে ধর্ম বিষ্-য়ক কথোলকণৰ করিয়া ভাষার পিতৃব্য সাবু ভালিনের নিকট বাইয়া এইকাপে ভাবি ঘটনা কহিলা দিল যে যদি যাতুক যিত্দীদিগের যড়-यक्ष-महाक्ष्य त्राहमान्त क्षानवादम রকা করা যায় ভাছা হইলে এ ভবিষাতে এক महाशक्षि राक्ति इहेश डेठिटवक, नत्मह नाहै।

शक्षरिः क्षणि दर्श-तद्यः क्ष-नगर्यः (माइसम थमी-

বিশেষতঃ অণ্বনানেও কএক বার সূরিয়া ও হইয়া কিছুকাল-বিলম্বে তাহার পাণিগুহণ করেন। দেমাফ্রের মেলায়, এবং বাগ্দাদ্ ও বসোর। তৎপরে তিনি ক্রমাগত পঞ্দশ-বৎসরকাল মনোগত-সাধনে স্যত্ন হ্ট্য়া বারংবার অদূর-বর্ত্তি ভূধরের গুহাতে কথন বা সুরিয়া কদাচিৎ व। আরবের দক্ষিণাঞ্চলে গমনাগমন করিচেন। এই সকল পরিভূমণ-সময়ে আপন-অবস্থানুসারে যত হইতে পারে তৎপরিমাণে নর্ব-বিষয়ের নমা-চার লইতে তিনি ত্রুটি করিতেন না : কথিত আছে তিনি এক দিন কতিপয় সুবিজ্ঞ খিহুদা ও খুঁান্তি-য়ান-দিগের সহিত যৎপরোনাত্তি আনুগত/ভাবে करणालकथन कविशाहितन। उन्नाद्धा विधाउ রবি আবদুলা ইব্ন সোলম, এবং ভাষার শালক পু अ दहरकह विषय विस्था विस्था विवास कहा इहे-शास्त्र। উहारम्ब चान्त्रियत्वक् चारमे बजा शेव নানা দেবোপাদনায় রত থাকিয়া ভত্তাগ পূর্বক गिल्मोय-ध्यादलयन करतन, श्रिट्मार जाहार उ चम्का-शृदंक थाष्ट्रेश्रास्य नमानक इहेशा ७ कर्म-পুত্তকের আদি ও অন্তভাগের সূচাক্তমর্মাঞ্জ হয়েন।

> इङ्<sup>राद</sup>ः शत्रर्थ-वश्र**त । भाश्यम ভবিষ**∫ बङ्खारद আর্মান-স্থল-জ্ঞাতি-কুট্রবগের মধ্যে আপ-নার মত ও অভিপ্রায় প্রকাশ করিতে লাগি লেন। তাঁছার পত্নী খদিজা, বরক্ আবুবেকঃ, তংপিত্ৰাপুঞ মালীবিন্ আবু তলিব্ এবং মন্যা-ना उৎপরিবারস্থ লোক-সকল অবিলম্বে তদ-ভোপদেশকে ধর্মোপদেশ এবং তাঁহাকে (আলার) ঈশ্বরের প্রেরিভ দূত বলিয়া স্বীকার করে এবং তাহাতেই তাঁহার প্রাথমিক উদ্যমনকল সর্বতো-ভাবে नकन इहेन।

মোচআদ অতিঘলিষ্ঠ অসম্পর্কীয় বন্ধুবান্ধব-विहरन अञान्म धर्माभरमम-प्रशास পণকে ক্রমাগত বর্ষভ্র ব্যাপ্ত থাকিয়া একদা দি-জা-নামুঁ ধনবর্তা বিধবা যুবভীর বহিত পরিচিত কালয়ে হাবেমবংশীয় মান্য ব্যক্তিদিগকে নিম-

ন্ত্রণ করিয়া পাঠাইলেন; এবং একমাত্র অদ্বি-তীয় পরাৎপর পরমেশ্বরের অক্ত্রিম উপস-नात প्रচात-कर्व-गानरम नाना-परवाशामनामृहक পৌত্তলিক-ধর্ম-পরিত্যাগের মন্ত্রণা সম্পুদানপ্-র্বক আপামরসাধারণ সকলকে ঘোষণাদার! **बहे विकाशन कतिराम रय 'किर्**ट्रम् नामक একমাত্র প্রমেশ্রের দূত স্বর্গ্ছটতে অবতার্ हहेशा चामारक वह भातस्थतिक প্রত্যাদেশ কহিয়। গিয়াছেন যে তুমি নিরতিশয় যাতুনছ-कारत सरमभोग्रगनरक जनमोश्ररतत व्यम्ला श्र नाम विख्त कतित्व; छाहाहे छाहारमत करल পর্ম-কৈবলে।র নিদান হইবেক সন্দেহ্ নাই"। মোহসাদের মুখহইতে এই কথা সূরণমাত্র তং-স্থানোপত্তিতা জনতা তীহার মত-গুহ্ণের কথা দূরে থাকুক এককালে দবিষায় ঘৃণারদে নিমগ্ন হইল। কেবল আলী-নামক উন্মন্ত-প্রায় অপো-গণ্ড এক বালক মহম্মদের সমভিব্যাহারী হইবার জন্য তাহার পাদানত হইয়া পড়িল। তাহার পিতা আবুতালিব সহজে অতি ধীর ও মৃদ্যভাব, করেন কি? অতি গন্তীরতাভাবে মোহসদকে এই অদ্ভুত কণ্পিত অভিপ্ৰায় হইতে काल इड्वात भन्नामर्भ रितन। साइयर कि সে কথায় কাণ্দেন? তিনি উত্তর করিলেন. " (मथ, हम् ও সূর্য্যকে ৰপথহুইতে সরাইতে চাहित्त कि कि क् कृष्ठकार्या इस वाधु कत?" অপর আত্মীয়-সক্লনের বাধায় ভীত না হইয়া, বরং তাহার ইচ্ছাবৃত্তি আরো উত্তেজ হইয়া উঠি-ল। ইহাতে ভিনি দৰ্ব কৰ্ম-পরিত্যাগ-পূর্বক প্রতিনিয়ত মক্কার প্রকাশ্য ক্লানে যাতায়াত এবং कन-नमारक कर्णनोश्वरतत अक्ष-मः याभनामृहक বজ্তা করিতে ও তৎসমাপনাস্তে তাহাদের क्ष्ण्वं लोडनिक धर्णावनद्यत यदशासास्डि

অনুশয় করত তাহাদিগকে পরাৎপর পরমকাঞ-विक शत्रामश्रातत चक्**बिम উপাসনায়** প্রবাত হই-বার পরামর্শ দিতে লাগিলেন; এবং কোরানের কোন ২ অংশ উদ্ধৃত করিয়া কাবার মন্দিরের দ্বারে খোদিত করিয়া রাখিলেন। কথিত আছে, তিনি মহাকবি লেবিদ্-নামক এক ব্যক্তিকে এইৰূপে স্বনতে আনিয়া মহাসন্তুম প্ৰাণ্ড হই-য়াছিলেন। ঐ বাক্তি তাঁহার বুদ্ধির মহো-য়তি ও ধর্মকথা প্রচারে অভ্যন্ত যতুশীল **ছিল।** প্রজারা এই নাডিজ্ঞদের উপদেশ শুনিতে লা-গিল। এবং বক্তৃতাবলে মনে ২ আকৃষ্ট ছইয়া তা-হাদের অত্যপ্প লোক পুরুষ-পরম্পরাগত চির-প্রচলিত ধর্ম ক্রিয়াকলাপাদি পরিত্যাগ পূর্বক অচিন্তনীয় অনিৰ্বচনীয় আত্ম-ধৰ্দাবলম্বনে মনস্থ করিয়াছিল। মোহম্মদের সমিধানে তাহারা ভূয়ো-ভূয়ঃ প্রার্থনা করিতে লাগিল, 'ভাপনি এই দৈব-প্রতাদেশ কোন ২ অভুত ঘটনায় সুদৃঢ় কৰন "। কিন্তু তিনি অতি বিজ্ঞ চা-পূর্কি তজ-র্মের আন্তরিক গুঢ় সভ্তোরই প্রকাশ করিতে नाशितन, अवः प्रशिष्टिधात कहितन, "चा-শ্চর্য্য-ঘটনা ও শুভ-লক্ষণ প্রভৃতি কেবল শুদ্ধা-ব্দ্তির ন্যুনতা-সম্পাদন করত নান্তিকতাকেই সতেজ করিয়া তোলে।

মেছিম্মদ অলেকানেক অফুত কার্য করিতেন,
তম্মব্যে মকার মস্জিদ হইতে যামিনীযোগে যিকশালম্ নগরে যাত্রা ও চলুকে অক্সদারা দিখণ্ড
করা তাঁহার ভক্ত শিষ্যেরা প্রোটোজিতে বর্ণনা
করিয়া থাকে। এই বিষয়ে তাহাদের যে অলীক
কথন সে অভিঅসম্ভব, সূতরাণ এই স্থলে তাহার
উল্লেখ করণের আবশ্যক নাই।

মোহম্মদ নিজপত্নী থদিজার লোকাস্তর-গম-নের পার অবুবেকরের একমাত্র দুহিতা আয়ে-

সা-নামী যুবতীর প্রাণিগুছন করেন। তদুপলকে ভব্যবক্তার সমিধানে উপস্থিত চ্ইয়া যথাসন্মানে वूरवकरत्व शतामन-वर्ग चावू अरेवमा, इमझा, ওথ্যান, উমার প্রভৃতি কতিপয় প্রধান ২ ভদু সন্তান মেঃহুমদের মতেই মত নিযোজনা করি-ल। उथालि **रम्हेनककाल मस्स्र** अहे मव-धर्म-প্রচারের কিছু উন্নতিই হয় নাই। ফলতঃ যদি! কুরেশ জাতীয়ের। হাসেম বংশীয়মাত্রের প্রতি-। কুল স। হইত তাহা হইলে ইহার এক কালে লেপোপতি হইবারই সন্তাবনা ছিল। মোহমদের কএক জন অনুচর অতিশয় যাতনাও তাড়নায় লাড্যমান হইয়া আবিসিনিয়া দেশে পলায়ন করিয়াছিল বটে, তথাপি তাছাদের মনে ঐ বিবাদানল প্রজ্ঞৃলিত থাকিতে ক্ষান্ত হয় নাই। कर्मार्य मकाञ्चमञ्ड (नाक बेक्वांका (माइ-ন্ধাদের প্রাণ সংহারে কৃতনিশ্চয় হুওয়াতে তিনি প্রক্রের বেশে যাভরের নগরে পলায়ন করেন। लाइ व मण्ड छदारकाइ नगत सिम्ना-नाम খাতে ১০০ ই০ ৬২২ সালের ১৬ ই জুলাই ও रिक्षभागित्यह ३५৮ मध्यद्धात मात्र भारत अहे ব্যাপার ঘটনা হয়। ঐ প্রায়ন দিবস ছইতেই : মোলমাদের হিভারা নামান কবা প্রচলিত হইয়া আসিভেছে। ম্ফাহইতে প্রত্যবস্মান যাত্রিগণ स्मिनिन राजिएम् त वृक्षि-चृमिए करेव व धर्म वीक বপন করাতে ভাহারা ভৎক্ষণাৎ ভাহা, মত-প্র-চারদের প্রদানলয়ন্ত্রপ জলাভিষেকে অফুরিত করিতে মনন করিল। ইতিপূর্বে বিশেষ ২ কা-র্ম্যোপল্পে মোহ্মদকে ভাহারা নিমন্ত্রণ করিভ এবং কহিত, '' ভোমার কাহারো প্রতি বৈরনির্য্যা-তনের অবেশ্যক্তা হ্ইলে আমরা যথাসাধ্য নাহায্য করিছে জুটি করিব না "। ভাহার। এভা-म्म श्वर् उ अञ्जानुमात अवना जे निवामिङ

খণ্ডর জানাচায় অতিশয় প্রীতি জন্মে। ঐ আ- বিজ্ঞাপন করিল, "আমরা আপনার এই অভিনব-ধর্মের প্রণালী বলপূর্বক প্রচার-করণে যৎপরোনা-স্তি সাহায্য করিব, কোন মতেই জুটি করিব না "। এবংপ্রকার উৎনাহ প্রাপ্তিমাত্র মোহমদের মানাকাছ্কা-বৃত্তি আরে। পৃথীয়দী হইল। তা-हाइ मत्न बोग्न (मनवानीत गु।ह) जावियत्य जातक আখান জন্মিল। ইহাতে তিনি ঐ উপস্থিত यिमिनाव। निर्मिशास्त्र उपरम्भ मिश्रा कहिरतन, "পৌত্রলিক ধর্মাবলম্বীদিগের বিৰুদ্ধে অস্ত্রধারণ করা এই সনাতন ধর্মের অনুসারে যুক্তিযুক্ত; অত-এব প্রতিজ্ঞা কর অদ্যাবধি আরবীয় ও অন্যান্য প্রতিবাদিনী জাতিরা যাবৎ অকৈতথ্যের অব-नम्न ना करत, এবং चामारक देशतरप्रतिक वनि-য়া না মানে, তাব্থ পর্যান্ত তাহাদের শোণিতে স্ব ২ করবাল আরক্ত করিতে জুটি করিবে না "।

सार्यम अहे शकात अधावनायां कर रहेल পর কুরেশ্ জাতির সহিত তাঁহার তিনবার যুদ্ধ হয়। উক্ত জাতির। আবু গোকিয়ানের অবান; তিনি মোলআদের ও হাসেম বংশের অত্যন্তালিকের লোকান্তর গমনের পর মক্কার প্রধানতা তাঁহাতেই বর্ত্তিয়াছিল। मूर्तिया (करण (य नकन धनाष्ट्रा विश्वतिका) शमन করিত তাহাদের রক্ষা এবং মোহঅদের সাহ-সিক দলকে আক্রমণ করিবার অভিসন্ধিতে আবুসফিয়ান এক সহসু সমরদক্ষ যোকা সঙ্গুহ করিয়া রাথিয়াছিলেন। মোহম্মদ তৎকালে তিন শত যোদ্ধা वर्षा मिनि। इहेट कान-मरेनक পথ অন্তরে বেদর নামক এক পর্বতের গভরে मरथा भावूनमागम् श्राकीका क्रिटकिस्तन ; পরে শতুগণকে সমুপাগত জানিয়া তারা-দিগকে আক্রমণ করিবেন। তাহারা কবৈক

যুদ্ধ করণান্তর সর্বতোভাবে পরাজিত হইয়া স্ব ২ বহুসু যোদা সন্তুহ পূর্বক হিজরি ৮ অন্দে মক্রাভি-তাহার নির্ম হইল না। এই পরাজয়ে অপমা-নিত হইয়া পর বৎসর হিজরি ও অবে আবু-সোফিয়ান তিন সহসু বোদার এক দল নমভি-ব্যাহারে লইয়া যুদ্ধার্থ মেদিনার অভিমুখে যাত্র করেন। তথায় উভয় পক্ষে ওহদ্পর্তের নিকট এক তুমুল সন্ধাম হয়, তাহাতে মোহমদ অ-ত্যস্ত আছত হন। শতুপক্ষীয়ের। এ যাত্রার ক্ষয়া হুইল, কিন্তু মোহমাদ অবিলয়েই বিছিন দৈন্য দলবদ্ধ করিয়া রণক্ষেত্রে পুনর্বার উপ-স্থাপিত করিলেন। এই তৃতীয় সন্ধান কেবল महारल পরাক্রান্ত আলীরই বাহুবলে পর্য-বসিত হয়। এই সময়ে মেদিনা নগর ক্রমাগত দশ দিন শতুকর্তৃক আক্রান্ত থাকে। সমনন্তর উভয় পক্ষের একমত্যে দশ বৎসরকাল যুদ্ধ বিগুহ স্থগিত রাখাই নির্ধারিত হইল। ইভাব-কাশের মধ্যে মোহমদ দকলের মত প্রত্যাবর্ত্তন कतिएक किया टेकनका छ, कार्देत्रधा, निधत, टेकवात् প্রভাত প্রধান ২ যিহুদীয় জাতিদিগকে পরাজয় করিতে প্রবৃত্ত ছিলেন।

नमुभान्भयुक यिश्मीमिरशत इखक्रेट पूर्ग ও নগরাদি অকুেশেই অপাহত ও লুঠিত হইল। দুর্ভাগ্যবান্ প্রজার। জেতার নবধর্ষাবলম্বনে অনি-ष्कुक इरेवारक चाकि निष्ठुतकाशूर्वक मिणहरेरक म्बोक्छ, ७ विविध याजनाम क्रिष्टे. এवः इंछ इंहेर्ड वाणिन। अहे काल (मनीय कांकि नकरनद ममन रहेनाटि मार्यापेत्र भताक्य ७ शायान्य हेयुडा রহিল না। কোরেশ জাতীয় প্রাচীন ধর্মাবলম্বার। किह्कालात जन। नमत्र इतिष द्वाथित्वक किह्ना-ছিল, কিন্তু পাবে তৎপ্রতিজ্ঞা ভব্নে তাহারা ক্তো-माम रहेल; व्याज्यात प्रमाह्यात प्रदेशकार मन

অর্থসম্পত্তি কেলিয়া কে কোথায় পলায়ন করিল। মুখে যাত্রা করিলেন। বিনা বাধায় নগর আক্রান্ত रुहेल। (गाइमानीय चार्षि उपत्रंत क्या शहाका উত্তোলিত হইল,দেখিয়া প্রকারা যে ভব্যবক্তাকে ইতিপূর্বে লৈত্ক বাসভানহইতে নির্নাসন করি-য়াছিল ভাগাকেই ঐকবাক্যে মকার অধীশর বলিয়া তাহার শরণাগত হইল। মোহমদও যাহা-দের হইতে পূরেঁ এত অপমানিত হইয়াছিলেন তাহাদিগকে নিজ মতাবলম্বা হদখিয়া তৎক্ষণ-भार् के यार्जन। किंद्रिक बुर्षि किंद्रिलन ना; शर्द्र কাবার চতুর্দিক্ত ৩৬০ থানি দেবপ্রতিষা ভম ও চুর্ণ করনপূর্বক পৌন্লিকখর্মের চিহ্নমাত্রও না দেখিতে পাওয়া যায় এমনি ভাবে সকল বস্তু নত করিয়া ফেলিলেন; এবং ঐ সকল ভান এক অদিচীয় পরাৎপর পরমেশ্বরের ভল্নালয়ে সুশোভিত করিয়া দিলেন। তদব**ধি ঐ স্থান** মহাতীর্থ ৰূপে খ্যাত হইল। তথায় যাত্রিরা যে সমস্ত ধর্ম চচ্চা ও ধর্ম কর্ম করিয়া আসিতেছে সে সকল তাঁহারি ভজনা ও উপাসনার দৃষ্ঠান্তম্বরূপ।

> মোহমদকর্তৃক মক্কার পরাজয় ও তৈরফের দুর্ম্বর্য দুর্গের নিপাত দেখিয়া আরবীয় সমস্ত পৌতুলিক ধর্মাবলম্বা জাতীয়েরা অবিলম্বে আসিয়া তাহার **অধীন হইল। সমীপত্ত দেশবর্তী প্রধানেরাও** তৎকালীন সমুপাগত ছইয়া জয়শীল ভবাবকু स्मारुक्यरम्ब निकटि विविध जार्थाय उनहात প্রদান পূর্বক অকপট বন্ধুত্ব সম্বলিত সন্ধি প্রার্থনা করিতে লাগিল। সম্ভুমলিপ্সামদে মন্ত হইয়া মোহমাদ পারসারাজ থোক্র পরবেজ্ ও আবিদিনিয়া-দেশের রাজা হিরাক্লিট্স্ ও বাই-জানটিয়নের নিকটে গন্তীরক্তপে ভয়প্রদর্শনপূর্বক এই বলিয়া দুত পাঠাইয়া দিলেন যে, "ভোমরা रुस चरेष उपरंगंत व्यवन्तरम कत, नम्न व्यामात

সহিত যুদ্ধ করিতে প্রস্তুত হও "। এ দিকে তিন। ধর্মের গুঢ়মর্ম কি, তদ্ধিষয়ে কেই কোন তর্ক সহসু মোশ্লেম যোদা বস্হীত হইয়া পালাস্-र्षित्वत शर्वमीमा जाज्यन कतिल; अवः अह যাত্রায় পশ্চিমাঞ্চলের নানা দেশীয় বিবিধ-জাতিদকল কেভাপূর্বক আদিয়া মোহক্ষদের বশত। খাঁকরে করিল। খাঁপ্তিয়ানবর্গের উপরি হল ব্ৰকাশ করিয়া মোহস্মদ তাহাদিগের হইতে : মংকিঞিৎ কর গুছণ করিয়াই ক্ষান্ত হইলেন। এই সকল যুদ্ধ যাত্রাহইতে প্রত্যাবর্তন করিয়া তিনি আর একবার জন্মের মত তথিচড়ামণি মস্ক্রাতে যাত্র। করিয়াছিলেন। অনন্তর তথাইইতে ্মাইমদ মেদিশায় কিরিয়া গেলেন, এবং তথায় দুই স্থাধ্কাল জ্বর রোগে পীড়িত হইয়া তত্ততঃ শিষ্পেণকে মহাভয়সাগরে নিম্প্ন করিয়া পর-लाक यां किंदिन। ७३ काशाह है ४०२ াকের ৮ই জুনে ঘটনা হয়। তথন তাছার বয়ং-ক্রম ১০ বংশর ছিল। মোহয়দের মরণানস্তর ভাঙার দিয়ভাবং শিষ্গেণ সম্মিল্ডাইটা ওমরের মলে ৭০ প্রতীতি হইল যে মোহমদের মরণ ক্ষাটেই ঘটাতে লারে না। এ**তাদৃশ অসকত প্রত্যে**য় প্রভাষনার বিশ্যে **ধরিসভার স্বিতঃ আবুব-**শংরে যথপরেনান্তি প্রমাণ প্রয়োগ দর্শাইতে হটাছিল। িনি তত্রপিত ক্লিপ্তবৎ জনতাস্থি-থানে উচ্চে হটে কভিতে লাগিলেন, "তোমরা মাহাকে উপারতা করিয়া থাক তিনি কি মো**হম্ম**দ किय भारत्यापत नेश्वत भरताई दलिए इंडेर्क ভাষ্যে ইবঃ: মিনি ভাষ্যর ঈশ্বর, ভিনি কথন মরেন না; কিন্তু মোহ্মদ তাঁহার প্রেরিড ব্যক্তি: **ाराइ यहन ७ जनन कामार्मित ने/। यहे इहेर्निक,** ্ছাতে দলেহ কি গ?

তিনি এমত কৌশল করিয়াছিলেন, যে তৎপুনীত

করিল না; তথাপি শতাক্রীর মধ্যে সমুদায় আরব, সুরিয়া, আসিয়ামাইনর, পারস, মিসর, এবং আফরিকার কিয়দংশের মধ্যে তাঁহার জয়-পতাকা উত্ভীয়মান হইল। বৰ্ত্তমান নময়েও দেখা याहरण्ड वुक्रपृत्थत जोगविध वाष्तासिक् महा-নাগর পর্য্যন্ত সর্বত্রে এক শত কুড়ি লক্ষ মনুষ্যে-রও অধিক বাঁক্তি তাঁছার মত গুহুণ করিয়াছে।

মোহ্মদ প্রণীতথর্মের নাম অদৈতথর্ম বা মো-त्रिम् धर्म। काहार्व नामक भूट्य जे धर्म मूर्वाक चारक्। याक्यम सञ् ঐ গুস্থ तहना कतिशाहित्तनः এবং কহিতেন যে ঈশরের দত আসিয়া ভাঁছাকে এক ২ দিন এক ২ অধ্যায়ের উপদেশ দিয়াছিল ৷ এই ধর্মের দুই অন্ন, ''ইমান্" ও ''দীন"। মত-প্রকাশকের প্রতি যে বিশ্বাস তাহার নাম ইমান: ও তৎপ্রনীত ধর্মের প্রতি শুদ্ধার নাম দীন। এট धर्मित मर्म এडे या शतस्यत এकमाज, चित्रजीय. निका, मईगक्तिमान, मईछ, असुधामी, शतमकाक-ণিক। কেবল ভাছারি উপসনাদিই শ্রেরাধন ও সর্বচোভাবে করব/। তাঁহার মহিমা প্রতি-নিয়ত দেবদূতে দৰ্ভ ঘোষণা করিতেছে। এই পরিদৃশ্যমান নচরাচর বিশ্বনং নারই তাঁহার সৃইৰ ও নিয়ন্তুহের একমাত্র নিদর্শন স্থল। তিনিই জগ-তের কন্তা, তিনিই জগতের পাতা, তিনিই জগতের শাস্তা,তিনিই জগতের ভাগ্যাভাগ্যের নিয়ন্তা,তাঁ-হারি ঐশ্বিক শক্তি ও আদেশে মানবাদি জাতি नकन जनन मत्रशिष शास इहेरज्य । अहे धर्मावन-विकिट्णत वीक्रमञ्ज "ना हैनाहा है जिन्हा साहयम রসূল আলা " অর্থাৎ ঈশ্বর এক ব্যতীত দিতীয় नाहे, अवर साहचार जीहात (प्रतिक। अहे वारका নোহয়দের বুদিপৃত্তি অন্তুত ও তীকু ছিল, বিশাস না করিলে কেহই মুসলমান্ হইতে পারে না। ৱা. শা. বি.

#### হিম-বিবরণ ৷

পুণুক্ত যে সকল-স্থানে গ্রীয়া-পরিমাণ ৩২ তাপাণ্ড ন। তল্পার জল বর্ফরপে পরিণত থাকে। হিন-কেন্দ্ৰে সন্নিকটের উফতা ৩২ তাপাণশত্টতে অনেক নান: ভঞ্চা কোন ২ স্থানে গ্রীফকালেও ঐ সংগাং অভিক্রম করে না: তথ্তাবথ স্থানে উরল জল দৃতি-रिशाप्त अवता करिन: ममस कल वात माम नव्यक्र সারণ করিয়া আছে। তথার শিশির ও বৃটির পরি-বত্তে মাহার পড়িয়া থাকে। অপর যে সকল স্থান গ্ৰায়াকালে যথানিয়মে গ্ৰীয়া হটায়া শীতকালে বাফু ৩ং তাপাংশ অপেশ্বায় শীতল হয়, তথায় জল শীতকালে বরফ ৰূপ ধারণ করত গ্রীয়ে দুবীভ্ত হ্টরা লায়। সম-मछालत कानक स्थान । विसमछालत मर्खाल अने घरेन! घिरा। थारक। नममञ्जलत रकान २ खारन भोठकारलत দুই চারি দিন মাত্র ৩২ তাপাৎশ প্রয়ন্ত উফতা হইয়া থাকে, তথার বর্ষে ঐ অল্পকাল মাত্র জল জমিরা থাকে। গ্রীয়ামণ্ডলে শীতের লাখন, তথা জল জমিবার অসম্ভাবনা। কলিকাতার অভান্ত শীতের সময়েও বায়্র উষ্ণতা ৫০ তাপাংশের ন্যন হয় না, মুতরাং এথানে কদাপি ভূষার নিপতিত হয় না, এবং জল জমিয়া বর্ফ রূপ भातन करत ना \*।

পৃথিবীর উত্তরত্ব সপ্তম অক্ষাণ্শের উভয় পার্শ্বে জনশঃ যে প্রকার শীতের বৃদ্ধি হয়, সমভূমিহইতে উর্দ্ধ-দেশেও সেই প্রকার শৈত্যাধিকা বোধ হয়; ফলতঃ প্রাকৃত-ধর্মবিষয়ে গ্রীষ্মগুলস্ক্-পর্বতের মূলভাগ গ্রীষ্ম-मधलवर, उन्दर्भ किश्म भागमधलवर, उच्छम्रई विभ

| **मधनन्द्र | भगाभारभन्ति, नीशात्-शट**न, काशिक-00/384, প্রভৃতি বিষয়ে পৃথিবীর মণ্ডল-ভেদে যে প্রকার ১৯৮ ত্যালক্ষ্য প্র উক্তরা-বিষয়ক-প্রকরণে উক্ত হুইয়াছে হল, পর্ততের উচ্চতান্সারেও সেই প্রকার ভেদ ঘটিল 🔾 🚶 পৃথিবীর উত্তরম্ভ সপ্তম-অক্ষাণশে ভান স্বর্ধান থাকে। গ্রীস্থানগুলম্-পর্ততের মূলভাগে বর্ফ জ্যে না ই পেক্লায় উক ; তাহাহ্টতে উত্তর-দক্ষিণে উদুর্গ্থে শীতকালে ত্যার পড়ে, গ্রীয়ো তুষার বা বরক ক্রমশঃ উষ্ণভার ছাম হইয়া কেন্দু-নিকটন্ত স্থান ভাহাত্ব থাকে না: তদুখে প্রত্যাগুভাগে চির্কাল তুনার ও শীতল হয় ৷ তাপমান-মন্ত্রদারা ঐ উফতা-নিরপণের বরক বর্তনান খাকে ৷ সমমগুলস্ক-পর্বতের মূলভাগ উপায়ও তথায় বর্ণিত হউয়াছে ৷ উক্ত ঘন্তের ৩২ তা- : সমমগুলনং, তনুযে ব্নার, হিমমগুলম্-পদতের সদাত্রী পাংশ-পরিমিত উঞ্জায় জল জমিয়া বরফ হয়; এই হিম্বিশিকী ! কুমেকুব্রে ইরিবল্-নামক দশ-বহ্দু-হত্ত-हेमा बढ चारवर अल र चारह, ठाहा मला र मुतीवृत्र धक्रत खरामक-:यन डि॰िश्ड कतिया थारक, उ मिता-রাতি প্র উলাত্ণ পরিতেখে: অথস তাহার স্কাফ ভতিষ্ণ হিমশিলায় মণিত, বুতাপি এক মৃষ্টি, মাত্র মত্তিকাও দ্ভিগোচর হয় না।

शुन्धं नगमान्यादत त्वात कनैटक शास्त्र या शुक्षामधनाङ् পরত ফারেটেট ডিন মভালর প্রাকৃত সম প্রত্যক্ষ মন্ত্ৰ কিন্তু ভাষে। যথাপুনহে। যে দকল প্ৰত ভাষ্য উচ্চ ভাজ্যভেশ ঐ ঘটনা দৃষ্টিলোচর হয়, নিমু পদত্ত তাল: অন্ভূত করা না। ফলতঃ নিরক্তৃত্তর নিক্টকলতক কেন্দু পগান্ত সেমন ক্রমশঃ উঞ্ভার ভূষি হয় পর্বাচঃ উদ্ভানুসারে দেই মত ক্রমণঃ উত্তেপরও লাখৰ চিন্ত থাকে। হিমালর পর্যতের ৪—৫ সহসু হয়েছি পদাহ ভ্লার দৃষ্ট হয় না, এবন তথাকার শীতও সমভ্মির শীতের ভুলা; তদুর্দ্ধে ক্রমশঃ শীতের ও ভূষারের বৃদ্ধি কালে সক সহসু হন্ত উচ্চ স্থানে বর্মের ৮। ১ মাস শীত ও নিহার **থাকে, তদুর্দ্ধে আরও শীতের বৃদ্ধি হটকা** ছলেম-গ্রন্থার **উচ্চ স্থানে শীত বা নী**হ্যরের বিজ্ঞান হয় ক<sub>া</sub> ভংছাক **অবধি হিমালবের অগুড**াগ প্রাত্ত ফর্ড টেরসংস্থ **নীহারারত থা**চেন, গিরিরাজ ঐ খঞ্ টোপর ব্যাপ্ত চুতি হন না। অপর মনুহামখাক টোপের ধারে। কার**লে**। যে প্রকারে মন্ত্র টোপরের মিলন স্থান টোপেরের শীমা জ্ঞাপক রেখা অনুভূত হয়, তেননি ঐ নিরেশিখরে ও চির্মাহারের সামানিরপক রেখা নিদিউ আছে: গ্রাম্ব-কালে সেই রেখার নিয়ু স্থানম্ সকল নিয়ার গলিয়া যায়, কিন্তু দেই রেথার উপাত্ত নীহার বিকৃত হয় ন।।

के द्विशादक " जित्रवीशादत मोमा " मटक किश मुश्च-वीत मधन एडर अ अर्थ उट्टर भे नीमात झान एक इहेगा থাকে। হিমালয় পঞ্জের দক্ষিণ ভাগে ঐ দীমা দাদশ

<sup>\*</sup> छशमी अत्मत्म धारकोत्-मृष्पाद्ध सम त्राचित्रा मोठकात्म वद्रक श्रेक्ड कहात हो छि छिल ; किन्छ छाराष्ट्र आधामितात उक्तिह কোন বিরোধ ছটবে না; কারণ ঐ বরুফ প্রকৃত করণের প্রথা ৰঙন্ত্র, বায়ুর শীভঙা ভাহার প্রধান কারণ নছে।

ইরিবস্পাকতের মূলেই ঐ চিরমীহার মীমা ভিত আছে। প্রচারিত শিল্পীলারদীনার নিয়ে চির্নীহারের বাত্ষরপ খালে: ভাষা চির্নীয়ারবং বার মাস দৃঢ় থাকে, কদাপি ! প্রথম করণ শত পদ উচ্চ।

উপাধে উক্ত হঠল যে অতান্ত চালু স্থানে চির্নীছার-वाहा शहर हो। उथकातन मोडकाटन उथ्हारन रव मकल মালার সম্পতি হয়, প্রথিয়ার প্রাদুর্ভাবে ভালার মূল ভাগ দুব হইয়৷ ঐ নীহারপিও স্বস্থান হউতে উপত্যকা

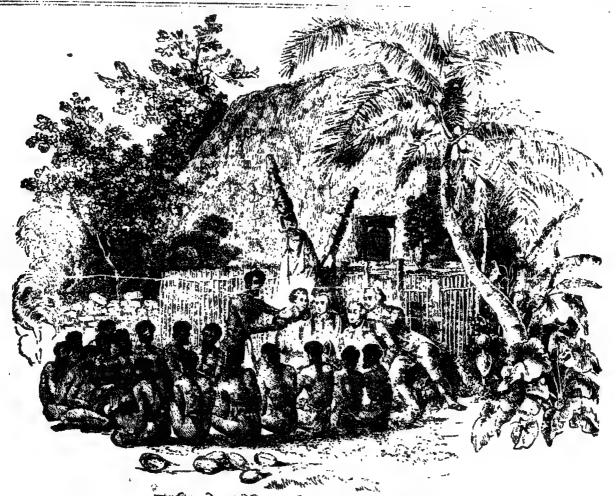
াসহসুহয় উচ্চে ও উদ্ধর ভাষে চকুদশ সহসুহয় উদ্বে। মধ্যে আসিয়া পড়ে। এই প্রযুক্ত পার্মতা পথ বা সঞ্চীর্ন অবস্থিত। আল্লুস পর্লাত ভাষা নব সহসূ হস্ত উচ্চে ও উপতাকা দিয়া ভুমণ করা অতান্ত ভয়স্কর; তৎস্থানে উরাল প্রতে 🐃 সংসূহন্ত উচ্চে হিত। পুর্ফোক্ত বাহুর যাতায়াত প্রায়ঃ থাকে না, সকলই স্তব্ধতাবে আছে; ঐ পথ দিয়া গমনসময়ে नय বা গোলযোগ করা নিষিত্ব, কারণ ভদ্বারা পতনোমুথ হিমশিলা-সকল কেলে হ স্থান সুহদ্যকার নীহারের রাশি লম্বনান হউয়া : শিথরাগ্রুইউতে ভিন্ন ইউয়া তৎক্ষণাৎ শব্দকারিদিগের মঙ্গুকোপরি নিপতিত হয়। গামান্য লোকে এই ঘটনাকে मुर हर गा। भे लप्तमान मीराइनाइड है दाकि नाम नानवकी वि विलया वर्गन कदिया थाति। विश्वमानी ্লাসিমর্"। বন্ধভাষার তাহাকে "চিরনীহারবাত্" শব্দে আছে কান্ধরা দেশীয় এক জন রাজপুত্র মহীপাল পঞ নিধান করিব। পানতের কুদু উপত্যকা মধ্যে বা দুই সহসু স্বজাতীয় অনুতোভয় বলদল সমভিব্যাহারে গণ্ডশেলের মধান্ত নিমু ভানেই প্রস্তাবিত চিরনীছার- কিশ্মীর দেশের পার্ছে পাচানদিগের দমনার্থে যুক্তমাতা তাল ব্যুমান খাকে, সুত্রাণ **ঐ নিমু স্থানের আকা-** করিয়া পথি মধ্যে হিন্দুকুশ-প্রত্তের এক গিরি-সঙ্ক-২°রুমারে ছির্নামারবাহার আফৃতির ভেদ হয়। কোন টের ছারে উপনীত হউলেন। তথায় তাঁহাকে লোকে চিল্নাছ।রবাজ্ অভাকার, কেছ দীর্ঘ নদাবৎ, কেছ বা ুক্ছিল। যে ঐ রিরি-সঙ্কট এক জন দানবের অধীনঃ ত্রগার্থ। এই সক্ষর্তার চির্নিহার্বাহ্র উপরিভাগ ভাহার সন্মান রক্ষা কর্ত নিমুদ্ধভাবে **ঐ পার্ন্ত্যপথ**-ৰত্ল, এবং ক্ৰমানত তাহ। অগুৰতী চইতেছে। গ্ৰায়ু- দিয়া গমন করাই তদু, নচেৎ **ঐ দানৰ পৰ্বেতাকার** কালে ঐ গাত্রারা প্রত্যহ চিরনাহ।রবাত ১:৩ হস্ত বৃহ্ৎ হিমশিলা-প্রক্ষেপণ-পূর্মক দকলকে বিনষ্ট করি-গ্রন্থর হয়। শীতকালে ঐ গাতর কিঞিৎ চ্যুদ হয়। বৈক। তিনি কছিলেন, "আমি রা**জপুত্র, স্ব**য়ৎ দেবতা, কিন্তু কলাপি গমনে নিক্ষে হয় না। পরন্ত কোন ২ চির-। আমি কোন্দানবের ভয় করিব। রাজপুত্র শরীরে নিচারে বাজ জনশঃ হুয় হুটয়া লুঙে হুটয়াছে, বিশেষভঃ ভয় পদার্থ কদাপি বজে না, এবণ আমিও জাডিধর্ম তে বকল চিরনালারকাছ অধিক চালু স্থানে স্থিত তাহা নিট করিবার পাত্র নহি।" অপর ঐ অভিপ্রায়ানুসারে শাঘু বিনয়ী হয়। পর্যের পার্শ্ব অভায় চালু ইউলে তা- তোপ ও ভদ্ধারেনি কারতে হ তিনি পার্শ্বভাপথ প্রবেশ ৰ এত চির্নীহারবাজ তিভিতে পারে না। এই প্রযুক্ত ক্রিলেন, এবং অন্তিরিলম্থে হিমশিলার পত্নে দলৈনা #জিল আমরিকার আন্দিদ্ পর্বতে আশিলার কৃষ্ণস্থান প্রোথিত রহিলেন, এক ব্যক্তিও প্রত্যাগমন করত পক্তে, পাণভাই পর্বতে ও উরাল পর্বতে চির্নীছার-, তদ্বার্তা কহিতে জীবিত্যান রহিল না। এই ঘটনাহইতে বাল নালা। হিমালয়ের দক্ষিণ পার্শ্বেও কোন চিয়নী- প্রস্কাবিত পর্বতের নাম হিন্দুকুশ্ অর্থাৎ হিন্দুহত্তা হউ-কারশত দট্ট হয় না। পরস্থ তাহার পশ্চিম ও উত্তর । য়াছে। তিক্তে-দেশীয় পার্ক্তা পথে এই প্রকার ঘটনা পালে তানে তিরনালারনাত বর্ত্তান আছে; কাশ্মার দর্জনা ঘটিয়া থাকে; এবং ভুত্ততা লোকেরা তদারা প্রদেশে জারিতে গ্রামের নিকটে বাঁণ সাহেব এক বৃহ্ছ দানবের অস্থিত্ব প্রমাণ করে 💏 বার্ভিঃ পাতনোমুখ হিমশ ্রবনাহাকরাত বেশ্নরাভিন্নেন। তাহা প্রায় অর্জ কোশ শিলা সকল শব্দের বেগে কল্পিত হইয়াই পড়িয়া থাকে। কোন ২ স্থানে এই পতনশীল হিমশিলার এক ২

থণ্ড দুই তিন সহসু হস্ত বৃহৎ হইয়া খাকে, এবং তাহার পতন সময়ে পথি মধ্যে পর্ত্তে শিথরাদি যাহা কিছু উপস্থিত থাকে, তৎসমূদায় ভগ হইয়া পড়ে এবং ভং-मभरत उत्कृत तक्तर क्य इहेशा शास्त्र।

# বিবিধার্থ-সঙ্গৃহ,

ভাপাথ

পুরারত্তেতিহাস-প্রাণিবিদ্যা-শিশ্প-সাহিত্যাদি-দ্যাতক মাসিক পত ।



লাওবিচ দীপবাদীদিগের সভিত কাপান কুকের দাক্ষাৎ।

गार्खित् बीभा

नमूमु" नात्म विश्वां का विश्वां मा नमूरमु जाद्वादात्र नमरह य क्ष इन डेक्निड इरेडा

থাকে, উক্ত সমুদ্রে তাদৃশ জলের উথিতি হয় ना, उथाय कन आयः नर्वन नमजादन थादक। नित्राथएक পূর্বস্থ সমৃদু "ছির- ঐ স্থির জলে প্রবাল-কীটেরা অনায়ানে নির্দিত্ব षालन २ जारान निर्माण करते, अवः जे जारामः नकन क्रमभः कलाक् जारत विश्नृत क्रेश्ना कील-करण পরিণত হয়। এই প্রকারে স্থির-সমুদ্ दा " श्रीभमञ्जूर " नात्म निर्मिष्ठे चाहि।

क्षिक्रमुधनिन ज्वन्तज्ञित् विशेन। हेशास्त्र माधार्य नकत होला मनूषावान आह्र, जाहा शत-স্পার অপেকাকৃত বৃহ্ৎ, এবং ভাহাতে ফলপুস্থা-দিরও অভাব নাই। পরস্ত তত্ত**্য মনুযে**/রা অ-ত্যস্ত অধ্যা, এবং যৎপরো**নান্তি অসভ্যা লৌহাদি** ধাতুনির্ফিত কন্ত্র বা ফাপাসবন্ত্র প্রস্তুত করিতে কেচ্ট সক্ষম নছে: অনেকে বল্কল ধারণ করিয়া প্রতির দিন্যাপন করে; কেছ্ বা দিগম্বরাব-লম্বন-পূরক বৃক্ষকোটরাদিতে কা**লকেপ করি**য়া থাতে : কৃষিকর্মে কেহ্ই তংপর নছে; দক-(कड़े इन) कहा मुल ७ मृश्ह। ष्टांदा **कीवरनाशाय** डेशाङ्क्षम करते।

शृर्वकारन करफर्नाद ७ हेर्रेदाशीश समुरकाता. ্ট সকল ছাপের কোন বিদরৎ জ্ঞাত ছিলেন না।

বহুসঙ্খ্যক দ্বীল উৎপন্ন হইয়াছে। ভূগোলের মাই" বা "ওছিছি"। ভিরসমুদের মধ্যভাগে मानिटिख पृष्टि कहिल चनायात वाक इहेरव, निव्नकवृत्ख्व मिक्किटि १९१ प्रक्रिम-मधाङ्ग-तिथाय य जिल्ल-मग्राप् या बील चारह, श्थिवीत चात के बील वर्डमान चारहः, जाहात प्रजूपिंश चलत कूबालि उत्त नारे। वे नकत घीरलं कथि- पन वार्त है बील कारह; जहारात्र नमष्टित नाम কাংশই অভিক্র ; তাহাদের ৫।৭ টা বা ততো- "সাগুবিচ্ দ্বীপ"। ঐ দ্বীপসমন্তিতে প্রজার অ-ধিক বাৰ একত্তে মণ্ডলীভূত আছে, তক্সধ্যে যে ∫ভাব নাই। ১৮৮৯ সংবৎসরে পাদরি এলিস্সা-টা প্রধান তাহারই নামে অপর দ্বীপ গুলিন হৈব অনুমান করিয়াছিলেন যে তথায় ১,৩০,০০০ নিখ্যাত হয়। ভূগোলগুল্পে ঐ সকল মণ্ডলীভূত ব্যক্তি প্রক্ষা আছে। যে সময়ে কাপ্তান্ কুক্ हील " हीलनम्हि." " हीलतृ ह," " हीलमञ्चन " े वे हीरल जमन करतन, उৎकारन उथाकात মনুষ্যের তৎপ্রতিবাসি অন্য ছাপবাসী অপে-এই সকল ছাপের অনেকই নিজন, এবং তন্মধ্যে ক্ষায় সভা ছিল; ভাছারা ভূমিক্ষণ, বলকলের वक निर्मान, मानूबवूनन अञ्चि कार्यं। ७६-পর ছিল, এব॰ দেবে পোসনায়ও উৎসুক ছিল; পরস্তু নরবলি প্রদানে বিমুখ ছিল না, এবং শ্ৰু-পক্ষ্-নরমাণ্স বিশেষ পর্বদিবসে ভক্ষণ করিত।

> তৎকালে কুকুর শূকর ও ইন্দুর ভিন্ন অনঃ কোন পশু তথায় ছিল না, এবং চাছারা সকলেরই थामा मरधा भवा हिला नातचानु, माहिरकन, নানা প্রকার কদলী এবং ইন্দুও প্রচুর ছিল। তারো এবং রোটিকাকল নামক অপর দুই প্রকার কল প্রস্তাবিত ছাপে অনেক, এবং তদবলমনেই তত্ত্ব-ত্য লোকেরা জীবন ধারণ করিত।

कुक नारहरवत वश्व व्यवश्व ३৮०० न॰व नत्र পর্য্যস্ত উক্ত ছাপে কেই গমন করে নাই। कार्यों के दर्ग इकेंस कुक्-नामा अक जन काकि- लिखाक दर्श काक्रुवंत् जार्द्द उथाय गमन প্রনিজ কাপান (পোতাধিপ) পৃথিবীপ্রদক্ষিণ করেন; এবং ভদবধি বানিজ্যানুরোধে অনেকে করত ভির-সমৃদের অনেক দাপাদির বিবরণ জন- 'তথায় যাতায়াত করিতেছে; বিশেষতঃ আ-সমাজে প্রচারিত করেন। ঐ প্রসিদ্ধ নাবিক মরিকাহইতে চীনদেশে আগমন করিতে ঐ ধী-पूरे दाह खित-ममूपू चुमन कतिशाहित्वन, अवः (शत शार्धिवशा शमम कतिता वित्मव मुवीपी বিতীয়বার ভত্তত দীপত্ত এক অসভা জাতীয় হয়; এই প্রযুক্ত মার্কিন-দেশীয় আনেক বিশিক্ কত্ক বিহত হন। উল্লিখিত দ্বীপের নাম "হাও- । ঐ পথ দিয়া সমনাগমন করে; এবং আপনাদি-

অসভ্য-আচরণের অনেক পরিবর্ত্ত করাইতেছে ৷ তাহাতে অনূ/ন-চতুর্দশ-সহসু বালক বিদ্যা-অপর বিদেশীয় বণিগ্দিগের সংসুবে দ্বীপবাসি- ভ্যাস করে। বাণিজ্ঞারা তত্ত্রত প্রজারা নমুচিত দিগের যে প্রকার সভ্যতার উন্নতি হইতেছে, অর্থোপাজ্জন করিতেছে, এবং ধর্মাথে অনায়ানে शामितिमिरात शिति**म्राम धर्म**ियरश्च उपनुकाश পরিবর্ত্তন হইয়া উঠিয়াছে। তথায় বাঙ্কুবর্লাহে-বের গমনের পর বিংশতি বৎসর মধ্যে রিওরিও নামা এক জন ভত্তত রাজ। গুড়িয়ান-ধর্ম গুছ্ণ-পূর্ক এক মহাসভায় আপন পূর্বধর্মের নিষিদ্ধ দূব্যাদি ভক্ষণ করত আপন জ্রীদিগকে তাহা ভক্ষণ করান। প্রক্রারা ঐ ধর্মত্যাগী রাজার শাস-नार्थ विरमुशिष्ठन कतिशाष्ट्रिन, किन्न देशाक-দিগের সাহায্যপ্রযুক্ত কোনমতে তাহার অনিষ্ট করিতে পারে নাই। ঐ রাজা সন্ত্রীক হইয়া বি-नार्ड अमन कतियाष्ट्रितनः उथाय উভয়েই হান রোগে আক্রান্ত হইয়া প্রাণ ত্যাগ করেন। উক্ত রাজার পিতা তামেহামেহা মদেশের অনেক উন্নতি সাধন করিয়াছিলেন। তাঁহার রাজত্বের शृद्धं नाश्चित्र-फोल-नम्बद्धत প্रভোক घीला अकर প্থক্২ রাজা ছিল; তিনি তৎসমুদায়কে পরাভূত করিয়া আপন অধীনে আনয়ন করেন।

প্রস্তাবিত দ্বীপে অধুনা চন্দন-কাষ্টাদি দুব্য-वर्शनंत्र वानिका चाष्ट्रः अवः विरमभीय चरनक জা**হাজ তথায় যাতায়াত** করিরা থাকে। ইং-রাজ, করাসিস্, এবং মার্কিন দেশীয় রাজারা তথাকার রাজার ৰাধীনতা ৰাকার করেন, এবং তাঁহার রাজসভায় আপন ২ দূত সংস্থাপিত রাথিয়াছেন। সম্পুতি ছাওয়াই-ছীপে ছোনো-লুলু নামক এক দুর্গ নির্মিত হইয়াছে, তাহার বপ্রোপরি বস্তি ভোপ আছে, এবং রাজার অধীনে **>२-->८ थाना कारोक चाट्टा श्रधान-नगरत** मुम्यक नश्वाप-शक अवः विम्यालम् चरनक

নের সভ্যতা-প্রদর্শন-পূর্বক ভাষাদিগের পূর্ব- বর্ত্তমান আছে। বিদ্যালয়ের সঙ্খ্যা দুই শত: প্রতিবর্যে ২০,০০০ টাকা ব্যয় করিয়া থাকে।

#### মোহ্যদের মত্বিবরণ।

বি বি ভিন্ন মত এই যে মনুষ্টের আল্লা নিত্য। মরণানত্তর মন্য।মাত্রেই আ-क्रिक्शक्षतार्थे **भग २ कर्यान्**मारत अंडाएंड करनत ভাগী হইবেক। পাপিরা, ন্যান্তিকেরাও পৌত্রনি-কেরা অন্তে অন্ধৃত্যসূত্র ও প্রস্থানিত-ছ তাশনপূর্ণ নরককুণ্ডে নিপাতিত হইবেক। ধন্মশালীরা অনত্ত-সর্গার্থভোগ, ও পাপাত্মারা অবিচ্ছিন্ন-নর্ক্যাতনা गर्न कतिरक। এই धर्मानिह ইতিকর্ব্যতা কলা-পের মধ্যে প্রতিদিন ৫ বার করিয়া মক্কার মসজিদে উপাদনা করাই প্রধান ও মুখ্য কর্ম। উপাদনায় পরমেশ্বরোপস্থানের অন্ধেক পথ অতিক্রম, উপবা-নে তাহার প্রানাদের দ্বার প্রাণ্ডি, নহস্ট ব্যক্তি-দিগের প্রতি দয়া ও বদান্যভা প্রকাশ করাই তাঁ-হার সামীপট লাভ**ৰূপে কোরাণে বর্ণিত আছে: এব॰** দেহশুলি ও ভূয়োভূয়ঃ আরাধনা দৃঢ়**রপে আভ্রাপ্ত** হুইয়াছে। প্রতি শুক্রবারে মসজিদে যাইয়া ঈশারো-फिट्न कार्यः करा विधिरवाधिक **इहेग्नाइह। करेष्ठ**-ধর্মের জন্মভূমিৰূপ মকানগরে অস্ততঃ জীবনের मध्या अकवात्र यावशा छेठिछ। लात्कद्वा नृत्व সঙ্খ্যায় চারি বিবাহ করিতে পারিবেক। কো-রাবে জ্ঞানকৃত বধ, লাম্পাট্য, পরাপবাদ, মিথ্যা-नाकामान, चमछा-श्रमान, कदाई निद्रिष्टमञ्ज भा-शमरका शतिगविष **रहेशास्।** क्मीम भुरुव, मृत्ठ- রেশার পুনত ছিল না।

প্রেরিত দুত, ব্লিয়া মানিত কি না তাহা একেবারে নরকগামী ছইবেক। আন্তিকেরা স্বর্গ পরাক্ষা করিবার নিমিত্ত স্বর্গীয় আত্মা তাহার সুখভোগ করিবেক "। मसारण पृष्टे प्रवपृष्ठ (श्रह्म कहिया थारकना णाशाहा शिया **जि**ड्डानिटन योग (म कोकांत करत, তবে सभीश नुश्र स्रक्रम नासाभ कहिए यमर्थ हस, নতেও অভিনবিচারদিবস অবধি আপনার চরস বিচার প্রয়ন্ত ভাহাকে মহানরক্ষাত্না সহ্য करिएक हरा। स्नन्सारन्त्रा करू, सद्देशकार्त सद्देश-দৃত (হন) আধিরা মুন্ধুর দেহহইতে আছা। পৃথক্ করিয়া লইয়া হায় কিন্তু ভবিষ্যজ্গণের আন্না সদেহে লগে সংস্থাপিত হইয়া থাকে। ত্ত্যভাত আন্মন্ত্ ব্যক্তিদিগের ক্র্যানুবারে যাতনার ভারত্যে। ন ংক্তিত হয়।

कोषा, महाशान. ७ मृदद्व-मा॰म-(ভाজनও অতি । शान्तमितिक मूर्यात्रम्, धूमाण्डम श्थिती, ममूयः নিষিদ্ধ কর্মা মোহমুদ নিজে লপ্তদশ নারীর বাক্য ভাষি পশু-পক্ষী প্রভৃতি অনেক ২ অশুভ পাণিগুছণ कत्याहितन। তाहाता नकरनह वि- । ভशानक ठिक पृष्ठे हहेरवक: किस स्माहमापत नि-ধবা, কেবল এজমাত্র আবুবেকরের কন্যা আ- জের কথা এই, "পুনৰুপান দিবদে এই দৃশ্যমান ं नमछ পৃথিবী পরমেশ্বরের এক মুষ্টিমৃত্তিকা ও ্মাল্ফার্নায়ের। বিশ্বাস করে যে পৃথিবীর শেষ স্বর্গ বর্ত্ত্রাকারে তাঁহার দক্ষিণকরস্থিত ছইবেক। किराम महामध्य এक महामङ। कतिशा ममछ छनानीः क्रियमुखिध्न इहैरवक, जूर्लाक ए মন্যাকে সমাধিহইতে পুনৰুপাপন এবং সক- ষলোকস্থ সমস্ত ব্যক্তি এককালে ধুংস হইয়া যাই-লের দোয গুণ বিচার পূর্বক যথাবিহিত পুর- বেক। অমস্তর দুন্দুভি পুনর্ধ্যাত হইলে নকলেই ক্তাৰ প দণ্ড প্রদান করিবেন। ঐ দিবনের গাতোগোন করিয়া ঈশ্বর-দশন করিবেক। কোরাণে নাম "চরমবিচারের দিন"। তাহাদের দৃঢ় বি- বলে "পরমেশ্বর আপনিই তাহাদের বিচার করি-খাস আছে যে শব সমাহিত হইলে, সে প্র- বেন; এবং যে শরীরের যে আছা সে তদনুরূপ মেশর একমাত্র অভিতীয়, ও মোছমাদকে তৎ- পুরকার তাঁহাচইতে প্রাপ্ত হইবেক। নাত্তিকেরা

কোরাণে অনেক প্রকার নরক বণিত চট-शास्त्रा निया उन्न श्रममार्थ (मारुयम् १ भाग-ভেদে नतकভেদ म॰**ञ्राशन क**तिशा शिशाहिन। नकत्वत मध्य मृत्रमाखि शामुकाविद्दीनशाम অথিতে সংস্থাপন করা বিহিত। দথা-তৈল-পূৰ্ণ-কটাহে প্ৰক্ৰিপ্ত হইয়া ভঞ্চিত হওয়া নাত্তিক-দের দণ্ড। অগ্রে নাস্তিক থাকিয়া পশ্চাৎ মোহ-মদীয়ধর্মাবলম্বন করিলে পর তাহাকে অগ্রে প্রায়শ্চিত্তস্বরূপ নরক যাতনা ভোগ করিতে হয়, অনন্তর ভাহাহইতে মুক্ত হইয়া ৰগে অধিগ্ৰ-পিত হুইয়া থাকে। উক্ত ৰগ ও নরক না-काम हिरम ममाधिकहेट की वाकाद छिलान हहे- मक मूथपूर्थालायद मधासार वादाकण मा-বে ভাষার প্রচার নাই। মোহমদ শিষ্যদিগকে নক এক লোক বিশেষ ভাছে। বাহাদের জানাইয়াছেন যে আমি পুন্কথান-বিষয়ে দেব- পাপ পুণ্ড সমানাংশ তাহারা ঐ লোকে দুত ক্ষিবরেলের সন্নিধানে প্রশু করিলে পর তিনি গিয়া অবস্থিতি করিবেক। নরকের উপরি ভাগ এ বিষয় 'জানি না' বলিয়া উত্তর দিয়াছেন। দিয়া 'পুল্নের্ত' নামক এক সেতু আছে, मुमल्मारनद्री वरल के व्यवस्थितंत्र शाक्कारम काश कमन्य हुन्त, क कृत्रवातारभका क विश्व তীক্ষা সকল মনুষ্যকে তাহা দিয়া গমন করিতে
হইবে। যাঁহারা থার্মিক ও সৎ তাঁহারা অবলীলাক্রমে চকিতের ন্যায় পার হইয়া যান; এবং
যাহারা পাপিষ্ঠ ও অসৎ তাহারা যাইবার
উদ্যম করিবামাত্র ঐ সেতুর নিমুস্থ অতলম্পূর্শা
মহাঘোর নরকে পতিত হয়।

माइन्मर वर्ग जश्रजन विद्या वावशालिज করেন! তাহার উপরিস্থ সপ্তম তল নিরতিশয় সুথধাম; ভাহা মোহক্ষদের আবাদ স্থান। ইহার षादि भारमन्त्राणी-नामक अक कटलंद उँ९म चाहि। साहमारायता वल 'य व वालीत वक চমস জল পান করিলে জন্মের মত এককালে পি-পানা নিবৃত্ত হইয়া যায়?। স্বর্গীয় ভূমি কেবল अ-ख्री क्क्रुममग्र। मूका ও याकू । मि ज्थाकात প্রস্তরস্থানীয়। প্রাসাদের ভিত্তি সুবর্ণ তত্ত্রত্য ও ব্রজত বিনির্মিত। বৃক্ষসকলের কল্পাদেশ বর্ণময়। তক্মধ্যে প্রধান বৃক্ষের নাম "তুবা" অর্থাৎ সুখ-তৰু। বোধ হয় অন্দাদির শান্ত্রোক্ত কম্পতক अहे मूथज्यत जाममं चत्रा, उपनंना मुद्रामसुद्रहे তাহার কম্পেনা হইয়া থাকিবেক। ঐ তব্দ মোহখ-দের প্রাসাদ স্থিত। দাড়িম্ব থজুর, জামুর প্রভৃতি উত্তমোত্তম ফলভরে ঐ বৃক্ষের শাখা-সকল অব-ना रहेश (मार्यभीय धर्मावनशीमिर्गत প্রত্যেক ব্যক্তিরই বাদস্থল শোভিভ করিয়া বিস্তৃত খা-ছে। ঐ বৃক্ষের মূলাবধি অনস্তক্রোশ পর্যান্ত मूल, सम्रा, मध्यञ्चि नूर्लय मुर्दात सम-तकन প্রস্তুত হুইয়া রহিয়াছে; ইহার সোতে মোহ-यटम् तांशी शतिश्ति इय। महक्क होतकामि मिविषात्रा जे कुरमत्र ताशान-नकल मिर्चिष्ठ इहे-शिष्ट्। य नम्ड नर्शित्र त्नाडा वर्गना कति-লাম সে সমস্তই অধ্যুদ্ধানিলের স্বোভাহইতে অধরীক্তঃ শোক্ষাদের ধর্মবিশাসীরা সেই সকল

অপুরোগণের সহিত সুথ সম্ভোগ করিয়া থাকে। भाइयम बीग्न धर्म व्यवनवन कडाहेदांड क्रमः नियापिशतक अरे श्रातांचना पियार्ह्न, य अरे **धर्म** विश्वाम कदिल चारस स्वर्ग गिया मृथ কেণন্যক্ত অপূর্ব শয্যায় শয়ন ও নানা জা তীয় অনৌকিক স্বাদ্দম্পন্ন কল ভোগ এবং অপুরোগণের সহিত বিষয় সুথ সম্ভোগ করিতে সমর্থ হইবে। কোরাণে বলে "অতি নিক্ষ গুণ সম্পান ধর্ম বিশ্বাসীও ৭২ জন সর্গের অপুরাভোগ নিমিত্ত প্রাপ্ত হয়। তচ্চতাত তাহাদের মত্যলো-কীয় বিবাহিতা জীরা তথার উপস্থিত থাকে। বে বাদার্থ এক মণিময় আবাদ ও ভক্ষবার্থ লোকা-তীত সুৰাদু ভোজা দুবা প্ৰাপ্ত ছইবেক। ভাছার **অবস্থার গতিকানুসারে** তাহার পরিজ্প ও গৃহা-লঙ্কার দুব্যজাত প্রস্তুত হইয়া থাকে। অপর সে ব্যক্তি এ সকল বিষয় রসের আম্বাদন জন্য অপ-রিমিত ক্ষমতাশীল—অনস্তকালস্বায়িনী— যৌবন-দশা প্রাপ্ত হয়। তথায় প্রতি বিষয় কামনা করি-বামাত্র তাহ। তৎক্ষণাৎ পূর্ণ হুইয়া থাকে।

মোহখনীয় স্বৰ্গ তাঁহার স্বকপোল কলিপত নহে। ইহার অধিকাংশ যিহুদী, পার্মি, ও ছি-লুদিগের এবং কিয়দংশ খুষ্টীয়ানদের মত হইতে তথকত্ক উদ্ভ হইয়াছে। রা. না. বি.

#### সিয়াগোষ।

তি তিয়িপর্বের ২-৭ পৃষ্ঠে আমরা বিভালাদিপশু-শুনার সাধারণ-লক্ষভালাদিপশু-শুনার সাধারণ-লক্ষভালা পাঠকবর্গ অনায়াদে এই পশ্ব-শুনাকে
আমা-পশুশ্বেরিইতে পৃথক করিতে সক্ষম হইবেন।
উক্ত শুনার প্রধান পশু সিংহ; ভালা দেশ



जिल्लाहराय ।

বর্ষায় এবং শক্ষরিকা-দেশজ। ভারতবর্ষায় **দিংহ ও বর্ণাদিভেদে পাঁচ সাত** উনিখিত-শূেণীত ভিতীয় জাতির নাম "পুমা" সিয়াগোষের য়ৰ সিংখ্যে জুল্য, কিন্তু ভাৰাৱ কেশারা হয় না। বিদর্ঘ্য-পরিমাণ । নাগাপুষ্টতে জাতিতে নানাবিধ চিতাব্যাঘু নির্ণীত আছে। একবিংশতিক্ম অবধি কএক জাতিতে বিভাল इरेश बादक।

ও বণভেদে দুই দলে বিভক্ত আছে; ভারত- এই পশু দেহদৈর্ঘ্য, পৃক্ষাবয়ব কর্ম গুল্ছ, পাত্রণ, ও অফ্রিকাদেশজ সি॰হ কটাবর্ণ। আছে। উপরে মুদ্ভি-চিত্রে এতদেশপ্রসিদ অবয়ব অথবা শুমার্কিন বিভ্ডা; ঐ জাতীয় পশুর অব-া পশুর অবয়ব বৃহৎ-কুরুরাবয়বের তুলা; ইহার তদীয় তৃতীয় জাতির নাম ব্যাঘু,; চতুর্থের নাম ১৮০ হস্ত; উচ্চতা ১ হস্ত। দেশ ও পতু-णिकाः जनसञ्जत शक्षमान्धि विश्मिकिकम-शर्यास । उत्तर इहात वर्षम व्यापक । एक एहेना शास्त्र, चाउ/छ-मोछ-श्रधान-रमरम देशास्त्र वर्ग श्रीसंध युक्, এব॰ দেহে अक श्रकात्र वित मून्माहे বনবিভালাদি কএক পশু নিৰ্ণতি হয়; এবং বোধ হয়; কিন্তু পুরিসেশে ঐ বর্গের গাঢ়তা उद्शन्ताद "मिश्राद्रश्य" वर्षाद "क्षक्षक्।" व्यापा म्नावद वा उद्वादिक विवाद स्क ঐ পথ্যাত্রের কর্ণান্থে কৃষ্ণকেশের এক ২ গুদ্ধ স্থা যায়, এবং ভিজ্ঞাকল অবিট্রাই ছবর । কেবল शलरम्भा अवश् अरुकारमञ्जू अवर अरुका भूक करें। वर्ष अव काराज शास्त्र १ अक्तीयकवर कृष तथा मृष्टे स्त्रा

পূৰ্বকালে এই পশুবিষয়ে অনেক অলীক গণ্পা প্রচরিত ছিল। বিলাভীয় মদুব/দিগের বোধ क्रिन य निवारिशय अगउ मृत्यपर्नी य म प्रेडवा-দির ব্যবধান থাকিলেও তাহার অপর পারের বস্তু দেখিতে পায়। কেছ ২ কহিত যে ইহার মূত্রে মণিমুক্তাদি জন্মে। এতদেশীয় মনুবেরা, বিশেষতঃ মুনল্মানেরা, কছে যে নিয়াগোষ হতার মন্তিক ভিন্ন অন্য কোন বস্তু ভক্ষণ करत ना; अव - ज्र श्रीशार्थ इस्त्रेत मस्तरकाशित আরোহণ করত প্রথমতঃ তাহার নরন বিদার্প করে, ও তদনস্তর মন্তক ভগ্ন করিয়া ভদন্তর্গত মেদঃ ভক্ষণ করে। অধুনা বন্ধদেশে জ্ঞানা-লোক এ প্রকার বিভাবিত হইয়াছে যে এই সকল বাক্য যে কেবল মাহাত্ম্যুচক ভাহা বর্ণন-করি-वात चात्र প्रायासन नाहे; शाठकमहानारमञ्जा के राका भुवनमाबहे जाहा यनायात्महे यन्छव করিতে পারেন।

विजान-(मुनीय शख्यारित से स्वाम चि छेड्डून। वहे श्रयूक वक्षे। मामामा श्रुवान चार्क् रा, '' तार्व विज्ञारित क्ष्मू करन।" नियारिगारिय त मयम विज्ञानित नयम चरणका विरम्य छे-च्छ्रुन, वाद इय, चना काम शख्य मयम वजा-मूम छेड्ड्रिन मर्ग, मुख्यार- छवर्गन रा चानीक भारत्भेत श्रमात इहेर्य हेड्रा काम मर्ड चाक-रा मरह।

निशाशित्वत ब्रांच विशासकः विशिष्ट स्त्र मृत् किन्न है। उत्तमकत्म मन्द्रात विशासकः स्त्र मा; किन्निः हिः नुव नविश्वते उत्ताहतः वर्धमान शास्त्र। विशासिः शास्त्र व्यवस्थानकः स्वित्र विश्वति । दिन्हें भीव नाहत्र स्वरः निशास्त्राम साहित्रकान व्रान হার কনিও নহে। ঐ পশু সিপ্ছকে দেখিয়াও ভাত হয় না; অনায়ানে অকুতোভয়ে তাহার নিকটে শিকারঘারা থাদ/দুব্য আহরণ করে বোধ হয় অকেশে বৃক্ষারোহণদারা সিণ্হহইতে ত্রাণ পাইতে পারে বলিয়াই ঐ সাহস হইয়া থাকি-বেক; কারণ বৃক্ষচর-চিতাকে সম্মুখে দেখিলে রিয়াগোষ তাদৃশ সাহসিকতা প্রকাশ করে না।

বিয়াগোষ শিকার করিয়া থাদের-সমুহ করে, **अवश् उमर्र्श** द्याचृविक् वामिव इसेनोर्यार्ग বন-ভুমণ করিয়া থাকে। নক্ল, রেজি, কাঠবি-ড়াল প্রভৃতি কুদু গণ্ড ইহার প্রধান থাদ।; তদাহরণার্থে নিয়াগোষ ব্লেচ্ছ ভুমণ করি-তে অভ্যস্ত পটু। ছাগ্ন খেষ, ছরিন, শশ-কাদিও প্রস্তাবিত পশুর অ্থান্য ন্ছে, এবং रःन कृक्षेपि भक्षे जाहात नृशान्। मध्य গণ্য ; কলতঃ নিশ্বাগোষ সুখাদ্য মাংস পাইলেই **७क** करत, किष्ट्रे वर्डिन करत ना। अशत का কৰা অত্যন্ত কুষিত হইলে স্বজাতীয় পশুকেও পরিত্যাগ করে না। কথিত আছে যে মেয-माः नार्ष এই পশু नृष्ठ थनन कविशा मिय-গোঙে প্রবেশ করে; এবং বৃক্ষমূলতঃ ফ্রতগামী পশুর ক্ষে বৃক্ত্টতে নিপতিত ত্ইয়া তাত্রর मःशंत कदत्।

बहे भक्षता चन्ना स्मानिन्धिभागृ, बदः क्रीव-हिःना कतिया चारमे नाहात स्मानिन भान कत्रन भारत क्र्यात উर्दुकानुनारत माश्म-नक्षन करतः; चन्ना क्रिक ना हहेरा स्मानिन-भारतहे मञ्जूष थारत, माश्माहारत छेश्मक हत्र ना। य नक्षता प्रत्म निश्हित चाहिका चारक न्यानात क्रिक सारमान वयः मृगता ना कृतिता निश्हित बाह्य पर्या कर्मन क्रिका कार्याका क्रिका निश्हित क्रिका पर्या कर्मन क्रिका कार्यम् क्रिका निश्हित क्रिका यात्र, अवश् मृगतारकत्र क्रिकारक्षता मुक्त क्रिका (इतं (मार्काण अनिक इन्हाट्ह।

সিয়াপোষের চর্য এবং লোম অতি কোমল, ৮-- মহসু সিয়াগোৰ-ত্ৰ বিক্য়াৰ্থে আনীত इहें शिक

## গলিবরের ভূমণ বৃত্তান্ত।

**ङ्**ञीराधि।य ।

্রুরকার কর্ডুক লিলিপট দেশীয় সামাতা-সম্ভা-সমুক্তিত মনোনীত পথছউতে আকর্ষণ করণ। ভত্ততা সভার সমালেছ পুরুষ্ক বিনোদ বর্ণন। কোন বিশেষ নিরান বৰ করিয়া গ্রন্থকরাকে স্থাপনিতা প্রদানের **বিবর্ণ**।

শ্রশ্নশ্রী মাত্য রাজা ও প্রজা সকলকেই ্ষ্ট্রী আমার ভদুতা ও লাধুকুত্ত দশনে পরিতৃষ্ট দেখিয়া বোধ করি-紫紫浮彩紫 লাম আমার অবিলঙ্গেই বঞ্চন মোচন হইবেক, নদেহ নাই; কিন্তু এতাদৃশ অবস্থায় जाहारमत मरन मृष् विश्वाम क्षत्राहेवांत सम् यथा-নম্ভব আর কএকটি প্রণালী ব্যবস্থাপন করিতেও ত্রুটি করিলাম ন। আদে তদ্দেশবাসিরা ক্রমশঃ मन्दम इरेशा चानिएड अदः निर्दिष् चामात निक्षेक्ट्रेट हिन्दा याहेट नामिन, कथन र আমি ভূমিতে শয়াম হইলে ভাহাদের গাঁচ ছয় জন আমার মন্তকে আরোহণ পূর্বক নৃত্যাও ক্রিত। পরিশেষে বালক বালিকারা ক্রীড়া**হলে** 

**दिन्यालन करतः; अहे निमिछ हेरात नाम ''निः- भागात क्लाकाल अर्विया लुकाब्रिछ हेर्डि** नागिन। जरकारन चामि जाहारमत रममोत्र छा-यात्र करवालकवन वृतिए ७ कहिए अक %-বিশেষতঃ শীতলদেশবাসি-সিয়াগোষের লোম কার পারক্ ছিলাম। ইতিমধ্যে এক দিবস রাজা অভ্যস্ত সুলার; ধনী ব্যক্তিরা তাহার পরি- আমাকে কোন দেশীয় কৌতুক দেখাইয়া সম্ভট্ট क्ष्म भी उकारत व्यवहांत करतन। अहे कातन कतरात मानरम महाममारताह कतिया क्रिलन, किन्न অনেকে এই পশুর সংহারে নিযুক্ত আছে; আমার মনে ভাছার কিছুতেই পরি তুপ্তি হইল এক হছ্সন্-উপসাগরের ভটহ্ইতে প্রতিবর্ষে, না। তম্মধ্যে এক প্রকার রজ্জুন্ত্যের ন্যায় কৌ-তুক হইয়াছিল। তাহা তাহারা ভূমিহইতে প্রায়ঃ সাম্ম হন্ত উদ্বেধিক গাছে সৃক্ষ শেত রজ্জু বিস্তার করিয়া সম্পন্ন করে। এ বিষয়ের বর্ণনায় গুল্পের किष्णि वाष्ट्रवा कतिएक मानन कति भाठेकवर्भ . স্থিরচিত্তে পাঠ **করিতে অবছেলা করিবেন না।** 

> যাহারা ঐ রাজ নভার বিশিষ্ট প্রকারে কৃপা-ভালন হইয়া উচ্চ পদ প্রাপ্তির প্রার্থনা রাখিত তাহারাই এ সমস্ত ব্যাপার স্বহস্তে সম্পন্ন করিয়াছিল। বাল্যকালাবধি ভাহার। এ বিদ্যায় সুশিক্ষিত इहेब्रा थाकिछ। ये मकन बाकि প्रायः नवः भक्षा ७ अधिन। इहें ना। कान ब्राक्षकीय কার্য্যালয়ে কোন রাজকার্য্যচারির মরণ বা অপ-त्राथ विरमयु निवक्षम ७९९४ मून्। इहेरल बे नकन नहरकता कार्यार्थीताकनमीरन कर्य था-র্থনা করে; তাহাতে রাজা ভাহাদের মৃত্য বিষয়ে পরীকা লন। সর্বাপেক্ষায় যে ব্যক্তি অধিক উদ্রে नाकाहरू भारत त्राकाकात्र (नहें न/कि उ०भएर অভিবিক্ত হয়। পাছে:ভুলিয়া থাকে এই আল-কায় প্রধানামাত্যেরা উক্ত বিষয়ে ৰ ২ সৈপ্র প্রদর্শন করিতে আমিষ্ট ক্ইড, এবং ভাকারা যে जान्य भर्यास्त्र जिल्ला विकास मार्ग, हेरा ब्राकारक म्बिकिङ क्षिक। क्षित्रम्/ाण् मानक्रका-गाधारकः शक्ति अस वहत ब्रम्बू केतव्यन कतियात भन्ति एतं अवियस्त हात्वात अस्ति कृतिम

হইল। আমি ভাহাকে এক গাছ। রজ্জুর উপরি षिया **अटकाम**∫रम वातःवात मांचा चूताहेता পড़ि-তে স্বচকে দেখিয়া আনিয়াছি৷ হয় পক্ষপাত इहेरवक, विवार कि, वामाई मट अथान ताक-कार्याध्यक बाबात उंजाजा अक सन वस्तू (तलापु-मान এ विषया अं कावाधारकत नीत इइ-লেন। অবশিষ্ট প্রধান ২ অধ্যক্ষেরা তাহাহ্ইতে উদ্বৰ্তিয়া গেল।

এতাদৃশ কৌতুক করণ সময়ে কথন ২ আক-স্মিক বিপদ্ও ষটিয়া থাকে। একদা আমি স্বচক্ষে দুই তিন জন তাদৃশ কৌতুকীকে তৎকরণ সময়ে হস্ত পদাদি ভাঙ্গিতে দেখিয়াছি। এতাদৃশ ব্যা-য়াম প্রদর্শনার্থ যথন অমাত্যবর্গের প্রতি অনু-মতি প্রদত্ত হয় তথন তাহাতে তাহাদের পকে পূর্বাপেকায় আরও অধিক বিপদ্ঘটিবার সম্ভা-वना इरेबा উঠে। विकिशीयावृखित वनोजूज इरेबा পরস্পার বিরোধ করত তাহারা এত দুর রজ্জু-লঙ্ঘন করে যে অন্ততঃ একবারমাত্র অধঃপতিত না হইয়া কেহই নিফ্তি পায় না, বরং ততোখিক হইয়াও থাকে। আমি নিশ্চয় অবগত হইয়া-हिलाम चामादर উপস্থিতির দুই এক বৎসর পূৰ্বে ফুম্ৰ্যাপ্ নামক কোষাধ্যক্ষ এই ব্যা-পারে নীচে পড়িয়া গিয়াছিল, ভাগ্যে ২ রাজার শয়দের একটা গদি यদি ভূমিতে কেলিয়া स দেওয়া যাইড, ভাহা হইলে সে ভমগ্রীব হইয়া যাইত, সম্ভেচ্ নাই!

তথায় আরো এক প্রকার খেলা আছে, তাহার को पूक क्वकं नमञ्ज विरम्य द्वाका, दाखी, अवः र्थिनामान्य कि इस्थान काम । नामान নেজের উপান্ধি শীল, হরিড, রক্ত এই তিম

ছইতে তাহার লক্ষ্য অস্ততঃ এক বুকল অধিক দৃষ্ট শেষ অনুগুছ ভাজন করিয়া পুরক্ত করি-उ द्रांका मनत्र करतन, ठाश्राम्हिश्त क्रमाडे এ সকল সূত্র প্রস্তুত করা যায়। এতাদৃশ মহতী किया बाजधानीत अधानान्यहे नम्भन रहेशा থাকে। কাৰ্যাৰ্থিরা তথায় যাইয়া আপন্হ গুণাগুণ বিষয়ে পরিক্ষিত হয়, জুহোতে কাছার কেমন কিপ্রকারিতা তাহা সুব্যক্ত হইয়া উঠে। এ ব্যায়াম পূর্বাপেক্ষায় নিতান্ত বিভিন্ন। আমি ইহার একাংশগত তুল্যতা আর কোন ব্যায়ামে प्रिय नाहे। वे द्वारन ताका **चहरछ এक महि** वातन कतिया वाटकन, ठाड़ा पूरे निटक नमान **९ नंतन, किन्मां नक स्मा**ष्टा स्वास् व्य ना। পদপ্রাথির অগুসর হইয়া ক্রমে ২ কখন বা ভাহা উল্লড্খন কথন বা ভাছায় নাচে দিয়া সক্ষৃতিত শরীরে ভূয়োভূয়ঃ অগু শশ্চাৎ ভাগে যাতায়াত करत, नार्षि भावषि जूनिया नामाहेया दतिरनह তাহাদের উক্ত দুই প্রকার গতির অবলঘন করিকে एम। कथन २ वे यष्टि द्राष्ट्रा अक मिर्टश ७ প्रधान **মন্ত্রী অন্য দিকে ধারণ করেন।** কথন বা তাহ **অসাধারণকাপে ম**ক্তিহত্তেও থাকে। ইহাদের যে ব্যক্তি সভৰ্কতা পূৰ্বক ঐ কাৰ্য্য সমাধা পৰ্য্যন্ত্ৰ নেই ৰম্ভি বাৰণ করিয়া পাকিতে পারে তাহায় পूतकात ऐक नोलवर्न मूब अम्ब रम् । ६ वि इस, भवर ज्लासक र्वे अयोगुनारत जे नजाय या

रात किएसमा छान्म मूख मूर्णां छ ना कि **अगद व**्रक्तिहे चश्रतिक।

रेनन/रमत अ त्राक्षमणुतात स्थापेक सतक अधि निवं ज्यामात ने मूर्थ উপनी क हरे बार्क का हात कारम र निः मक व्हेता उठिन। बनिए कि बाह्य त्राचत्र किम नाक्षा गळ त्रात्थक। याक्षरक ६ वि- कामून वार्यक्रकात्र एक मन्त्रात्वात एक मन्त्रात्वात

আমার পাদের নিকটে ২ আসিতে লাগিল। আমার মতে সমত হইলে পর আমি তাহা-ডিজাই> हिल, कल के अ सहालक्ष विलाख हरे- : व्यनि लहेशा (कह शलायन (कह काहादा शण्ठा-(तक, भ याहा इंडेक, आमिও এक मिन मी-ভাগ্তিমে রাজাকে অতি অভুতৰূপে নম্ত করিয়াছিলাম। আদৌ আমি তীহোকে সামান্য বেতের মত মোটা দুই পাদ লম্বা কএক গাছা : नाहि जानावेट किनाम। वाहाट विनिष তদগুসারে বন্য লোকদিগকে ভাছা স্থানিয়া উপান্তি করিতে আদেশ করিলেন। পর দিন প্রভাতে ছয় জন বুনো লোক প্রত্যেকে আট ২ ষোড়া যোতা এক ২ গাড়িতে সেই সকল বেত্র <sup>[बाकाइ</sup> किंद्रश **चामात निक्छ नहेत्रा चाहेन।** শামি ভাষাক্তিত নয় গাছা যতি লইলা**ম।** এবং ডৎনম্দায় ভাড়াই পাদ চতুরসাকারে मृদ्दरण ভূমিতে প্রোথিত করিলাম। অনন্তর শার চারি গাছা লইয়া প্রোখিতপূর্ব লাটের ভূমি हाङः मूरे **ना**न डेक्ट बाङ्क्ति नाश कात्वर ৰাধিয়া লখা পোতা ঐ নয় গাছা লা-किंग्स्टर दिया है। बिनान हारकत्र हारन्त्र मञ आर्थ মাভূলি চারি গাছা যতি ঐ **কমালহইতৈ পাঁচ** ুক্তল উচ্চ হইবাতে চতুর্দিকে **ঢিপি ঢিপির ন্যায়** वाय धरेएक काणिल। अहे कया नाक इहेटल পর আমি রাজার নিকট কহিলাম সশক্ত ২৪ জন ্ৰিন্ ২ অশ্বাৰ্চ বৈন্∪কে ডাহার ভিতর যাইয়া (भना के दिए पारिण करून। छाराइ ब्राह्म

যথন আমার হাত ভূমিতে পাতা থাকিত তথন দিগকে একেং হাতে করিয়া তুলিয়া লইলান। প্রধান ২ অখাবারেরা র ২ অখাকে আমার নেই তথন তাহারা অশ পৃষ্ঠে আকচ্ এবং নায়ুখ हाउ लक्ष्याहेट जिका पिछ। अकमा ममुटिंद हिल। तीजिमा अकब हहेवामां जाहाता पूरे এক জন শিকারী প্রকাণ্ড এক শিকারের যোড়া দলে বিভক্ত হইয়া পরস্পার মিখ্যা ছড়াছড়ি চড়িয়া পাজামা ও জুতাভদ্ধ আমার জন্ত্যা, করিতে ও ভোঁতা তার ছুড়িতে এবং নিচোষ कारमान हरेए वाशिन। चन्छिरिवास छाहा-रित युक्त वियस अञानम निश्वा श्रकाम शहेन ষে বুঝি তেমন আরু কোথাও কখন না দেখিয়া থাকিব। গোছা ২ যতি পুতিয়া মণ্ডলাকারে বৃতি দেওয়া গিরাছিল বলিয়া তাহাদের ৰ ২ বো-টক সহিত অধঃপতনহইতে নিস্তার হয়। এতা-দুশ অডুত ব্যাপার দর্শনে রাজার মনে ২ এমন আনন্দ জ্বিল, যে তিনি সেই উৎসব ক্রমা-গত किছু দিন চালাইতে আদেশ করিলেন: এবং পরম সভোষ পূর্বক এই আদেশের কথা বৈৰ্যদিগকে শুনাইবার জন্য **জাপনাকে** বেড়ার উপরি তুলিয়া ধ্রিতে আমাকে কহিলেন, তথা यथा यथकिष्धिश्वारण बाब्बीरक छ छात्वाचना मिर्छ লাগিলেন; "তুষিও উহাকে দিয়া চৌকী ওজ সোমাকে তুলিয়া ধরিতে দেও, হানি নাই; जाहा इहेटन याहा किছू अ इत्वा इहेटज्य नक-লেই সর্বতোভাবে দেখিতে পাইবে"। কি স্মা-ननः ! अकाम्मा कूक्रातत नमात्रः य कान पूर्य-টনা ঘটিভেছে নাৰে আমার পরম সৌভাগ্য বলি-या भानिए इहेरवक। (कवल अक्टि बाद माज अक জন কাণ্ডেনের একটি সভেজ ঘোড়া অতিবেগে त्यहे (वड़ाय (वडेन कदा) चामात क्यांक अक शहायाच कविशास्त्रिया । **काहारक ऋश्यना**ज ভাষার পা ভাষাতে বিশ্ব ক্ইবাতে শ্রীবনার नहिल (बाउँकडि উजामशान-बरेग्रा शक्ति। श्री

আমি ভাষাদের উভয়কেই অবিলয়ে তুলিয়া সুত্ত করিলাম। পরে সেই ছিদুটি এক ছাত দিয়া আছাদন করিয়া সেনাদলকৈ অপর পথ দিয়া বাহির করিয়া দিলাম। রা. না. বি.

### शुक्ठ-ज्राणा

দেশভেদে উদ্ভিক্তা-ভেদ।

গদাখরীয় অতুলা করুণার বর্ণনার্পে উভিজ-🏥 वश्चत्र जालावना निरमय कलमाविनी। अ ্রবন্তুর প্রতি দৃষ্টিপাতমাত্র ভাহার অনু-শ্ ক্ষার কত বিষয়েজনক প্রমাণ প্রতীত হয়! জীবের আহার-নিমিত্ত তিনি বসুজরাকে কি আক্ষ্যা উৎপাদন-ক্ষমতা প্রদান করিয়াছেন ! ঐ ক্ষমতা-প্রদাদে কত কোটিশঃ তরুলতাদি প্রতাহ উৎপন্ন হইতেছে! যে স্থানে নয়ন-निश्का कदा याग्र उथायर उँछिक-अमार्यत मुक्कि रय। शोग्र-मञ्जलत উভপ্তবাযুহहेट हिम-मञ्जलत हिन्नीशात-পদান্ত, তথা দম্দুর লোক প্রসিদ্ধ-অতলর্মা-রার্ড-হইতে, অত্যুচ্চ পর্বতের শিশ্বরাগ্রপর্বান্ত, কোন স্থানে তরুলতাদির অভাব নাই। মেলিল্-ছাপে, যথায় বর্ষের मण प्राप्त **अरानकभो**रिक शामू जीव शास्त्र अवल यखका বাৰবা-উফ্তার বার্ষিক গড়ং তাপাৎশমাত, তথাৰঙ তৃণ, শৈবাল, মাদা, গোলালা প্রভৃতি অনেক 😘 হইরাছে: কাপ্তান্ পারি তথার এক সপুকা রা कुणम् छक् पिथिशाष्ट्रिणमां स्टा९ ताथ इहेर्छ शाद्व ষে চির্নীহারারত-পর্বত-শিখরে কোন উভিজ-পদার্থ নাই, কিন্তু দে ভুম মাত্র; দোদসুরু দাহের দণ্ডায় করিরাছেন, যে চিরনীহারের উপরে এক প্রকার ছাউ শৃক্ষ শৈবাল জিমিয়া থাকে, সামান্য নয়নে তাহা প্রস্তুক্ত হয় না, কিন্তু এই নীহার দাবিত করিলে তাহা পায়ু-वर्षवर वास्त्र इस्।

জ্যোতির অভাবে তরুলতাদির অত্যন্তাভাব হয় না; থনি ও গুহার মধ্যে নানা প্রকার ছতাক (কোঁড়ক ব্যা-কের ছাতা) ভোশীজাত পদার্থ ক্রিয়া থাকে। দক্ষিণ অমরিকার কুমানা-প্রদেশে কারিপ্-গ্রহার মধ্যে ভদারু

হইতে সহস্যাধিক হস্ত অন্তরে হয়ে। লড্ট সাহেন ১।। হস্ত উচ্চ কতকগুলি তকু দেখিয়াছিলেন, রশ্মাভানে ১।হার পাত্র-সকল স্তর্ক্তর্ন ইইয়াছিল, এবং অন্যনেপৃত অন্যথা হইলাছিল, কিন্তু তাহার উদ্ভেদিকা শক্তির নিশেষ হানি হল নাই। কল-মধ্যে লড়াদি ক্যাতে সকলেই দেখিয়াছেন, পরস্ত ইহা অতি আশ্চন্য যে কোনং ঐ জলজলত। ভালক অতি রুহ্ছ রক্ষাপেক্রায়ও দীয়া। আহলান্তির মহানম্দ্রের মধাভাগে এক প্রকাব শৈষাল শতাধিক কোশ হান নাগিলা আছে; দূরহইতে তাহা লল লাকিত ক্লেতে রুলাগে বোধ হল। অনেক জলজলতা ১৫০ হস্ত জলের নিম্মুলাকরণে ভলিতেতে।

কেবল উষ্ণতার দৃক্ষ ক্রিবার ছানি হয় না। ভা-রতবর্গে আটিশ্লফ দ্রেপ তথা ভানাতে ভানেক উষ্ণ-প্রসূত্র (মতাকুর) আছে, যাধ্রি জল এমত উষ্ণ জে ভাষা স্থা করিলেট হার দক্ষ হট্যা যায়, এবং তা-হাতে তওুল নিকেপ কালে শীৰু অন্ন প্ৰয়ত হয়; অথচ তন্ত্ৰাস্থা নান্ত্ৰিস বতা জনিত্তিছে ৷ **গন্ধেও তরুর বিশেষ হানি হয় না। লংনক আং**রেয়-পকতের গদ্ধকপুর্ণবাচে কএক প্রকার তত্ত্ব অনাহাদে জিল্লিয়া থাকে। ফলতঃ প্রয়োজনানুত্রপ কল পাইলে উভিজ্ঞা तबु मकन बादन कविष्ठ পारतः, किनन জলাভাবেট তাহার উৎপত্তির হানি হয়। **এব°ে গোবি মফুড্মিটে ডলের অহারাভাব: তথার বৃষ্টি, মেঘ**্ হিম্ শিশির কিছুমাত্র দ**ষ্ট** হয় না; ক্রমাগত মারাত্মক উফ ব্রন্ধ বায় বহিতেছে, এবণ তত্ত্বারা তত্ত্তম **অগ্রিকণাবৎ বাল্**কা-দকল সঞ্চালিত হ্টয়া **দকলেরই**ু প্রাণ দংহরণ করিতেতে; জীলা

বোধ ইর সম্ভাই উদ্ভিক্ত বস্তুর অবস্থিতি আছে।

পরস্থ সকল দেশে এক প্রকার তরুণভাদি রয়ে মার্ দেশীর-প্রাক্ত-ধর্ম-প্রসঙ্গে উক্ত হইয়াছে, যে উৎপঞ্জি-বিষয়ে প্রভাক দেশের আবাস্থরিক ভেদ আছে; কোর দেশে ধানা, কোধাও গোধ্ম, কোধাও কাসাবা-কর্ম কোধাও রোটিকা-কল, কোধাও ব্রাক্ষা, কোধাও কর্ম কোধাও কাওরা, ইত্যাদি দেশভেদে বিবিধ রস্ক উৎপদ্ধ হয়। লাব্র কোন এক দেশের ব্রা ক্রাড্রেই উৎপদ্ধ হকতি দেখা যায় ম। বহুদেশে ধ্নাই জীবনাধান, জাবচ হিমপুদান উত্তৰদোশ তাহাত নামমাত্ৰত প্ৰচাৰ নাই; ভিতৰসমূদত হালেও দানা প্ৰশো লাহ। সমম্ভলে নাই; ভিতৰসমূদত হালেও দানা প্ৰশো লাহ। সমম্ভলে তাহা দাকা-ফল প্ৰচল্পাল লাহ। কিন্তু চীয়ানভালে তাহা কুৱালি দানিভাচৰ সহ লাহ। চলত যে সকল কাৰণে দেশেৰ প্ৰকৃত্তৰ হিছা হল, তাহাতে তত্ত্তা বৃক্তন্ত্ৰিক সমাগ কেন্দ্ৰ প্ৰশা থাকে।

্রাম্ব-নংলক আধিন্-পর্বতের মূলে কদলা এবং তালব্যাকর প্রদূর্ভাব তদ্কভাবে ওক্ কর্, পার্চন, প্রভৃতি
ব্যাকর প্রদূর্ভাব তদক্ষভাবে ওক্ কর্, পার্চন, প্রভৃতি
বীত্র প্রদূর্ভাব উত্তরভাগক বৃক্ষ করিয়া থালে। নিরক্ষবাহ্র কিন্তুরি প্রবিত্তর ও সহস্ হস্ত নিম্নে ওক্-বৃঞ্চ
বৃক্তি হয় ন লাগ্রি অবিনার ভাবের উন্ধানীয়া ১৫০০
বৃক্তি হয় ন লাগ্রি অবিনার ভাবের উন্ধানীয়া ১৫০০
বিস্তৃতি বাহালি নাল্যির স্বেন্সার (পার্নিন্ন) প্রভিত্তির
বিস্তৃতি প্রান্তির স্বন্ধার ১০০০০ হাস্মান্ন প্রান্তি
বিস্তৃতি বিস্তৃতি নাল্যির স্বন্ধার ১০০০০ হাস্মান্ন প্রান্তি
বিস্তৃতি বিস্তৃতি নাল্যির স্বন্ধার ১০০০০ হাস্মান্ন প্রান্তির
বিস্তৃত্তি বিস্তৃতি নাল্যির স্বন্ধার ১০০০০ হাস্মান্ন প্রান্তির
বিস্তৃত্তি বিস্তৃতি নাল্যির স্বন্ধার বিস্তৃত্তি বাহালি বাহালিক বিস্তৃত্তি বাহালিক বিস্তৃত্তিক বাহালিক বিস্তৃত্তি বাহালিক বিস্তৃত্তি বাহালিক বিস্তৃত্তিক বাহালিক বিস্তৃত্তি বাহালিক বাহালিক বাহালিক বিস্তৃত্তি বাহালিক বিস্তৃত্তি বাহালিক বিস্তৃত্তি বাহালিক বাহালিক বিস্তৃত্তি বাহালিক বাহালিক বাহালিক বিস্তৃত্তি বাহালিক ব

থাকে কেনেতি-ছালেত তেনি ক্লিক প্রতিত এই প্রকারে প্রতিত কেনেতি-ছালেত তেনি ক্লি-প্রতে এই প্রকারে প্রতিত কলা প্রতিত্য স্থান বেলিড

প্রথমি বৃত্ত শ্রেষ্টির বিষয়ি ।

চনুগালেগাতে ব্যাসালনামেল এক গ্রেষ্ট কুনু তর:

তন্যেলি প্রথমেলাটিক হুল। ডোনেটিক পর্যেত ৭৫০০

তন্যেলি বিষয়েশ ইছাকে হুল অবস্থিত শেষ; ইছারে

তিন্যাল লাগ্রেক স্তালে তাগ্রে ভপ্রে লাভারেক নামা

বিষয়েশ দুক্তি স্কৃতি এবল তদুক্তি ভির্মীভারেষ্ঠ শৈষালা।

্দনামর্ভরণ-নগাও-ভানে উঞ্ভার বার্নিক গড় ত্রান্দর রুক্ষান্তির ভেদ হয়, যে সকল স্থানের উক্ষ-ত্রান্দর বার্মিক গড় তুলা, সে সকল স্থানের বৃক্ষলভানিও

তুলা: যথার উঞ্চার বার্ষিক-গড়ের অন্যক্ষ তথায় বৃক্ষাদিরও ভেদ হয়। কিন্তু সমমপ্তলে 🐗 📆 মের বাতিক্রম দৃষ্ট হটয়। থাকে। তথায় বার্তিক ভার পরিবর্তে গ্রীয়াকালিক উঞ্ভানুসারে বৃত্তাদির ভেদ হয়। লাপ্লগু-প্রদেশে এনটেকিন্-মানের উঞ্চ তার সামিক গড় ২৭ তাপাণ্য, এবণ তার্কিই মা-ভিরো-ছীপের উদ্ভার বাষিক গড় ৩২ তাপান্স, অগ্রচ এনপ্টেকিম্-ছাপে সুদীর্ঘ-বৃক্ষের বন আছে; এবং মাজিবো ছাপে পত্রপুক্ষাবহান অতিকৃদু আগাছা ভিন্ন কিত্ব দুক্ত হয় না। ভাছার কারণ এই যে গুরিকালে এনড়েফিন-প্রদেশে যে প্রকার উত্তাপ ছইয়া থাকে, মাজিপে: দ্বীপে তদ্ৰপ উত্তাপ হয় না; এনটেকিস্পুদেশে গ্রীয়াকর্ণিক উফ্ডোর গড় ৫৯॥০ তাখাংশ, এরং মা-'কিরে'-দীপের গ্রী**শ্বা**কালিক উষ্ণতার **গড় ৪৬৸০ তা**– া পাণ্যা হিম-মঞ্লের অভায় শীঙল-ছানে ভকুলভাদির াবিরল প্রচার: পরস্ক তথার গ্রীমাকালে মত শীষু উন্ভিদ্ পদার্গ ভাষা অন্যত্ন ডক্সপ শীঘু ভয়ে না । তথাকার উদ্ভিত্ত সম্ভ্র প্রাংগনাতঃ প্রসংতর দক্ষিণপার্থেই ক্রিয়া গাকে: ত্রতা কুফাদি অতি কুদাব্যর। তর্তা উড়িজের মধ্যে কএকপ্রকার শৈবাল ও আগাছা, কত্রকপ্রকার লক্ষ্ এবণ কুদু উষ্টে প্রান: অন্য কিছুই জল্মে না; কেবল লাপ্লপ্ত-(দংশ ভাষার কিঞ্ছিৎ অনাথা আছে; তথার রাই নামক শদ্য এবং কএকপ্রকার দিম প্রিক শ্সাও \* উৎপন্ন হট্যা থাকে।

সমমগুলের ভাতাদুশতিলভাগে দেবদারুশ্রেণীয় বৃক্ষেবৃক্ত আহলা; ভদনন্তর ওক, এল্ম ও বাচ, বৃক্ষ; তদনন্তর
সেমার, কাউ এবং কাক বৃক্ষ; শেষোক্ত যানে নাগরক
পুত্তি উত্তম নিমু এবং ভ্যুবের ও পুদুভাব আছে। ৩০
আবিধি ৫০ ভাক্ষাংশপর্যান্ত-মান দ্যাক্ষার জ্বাভূমি:
ক্রিণে ৬০ অক্ষাংশপর্যান্ত বাদ্যা; পরস্ত গোধ্ম উত্তরদক্ষিণে ৬০ অক্ষাংশপর্যান্ত বিস্তুত আছে।

উভিজ্ঞ-বন্ধর প্রধান আকর গ্রীয়মগুল; তথার ধানা, ইকু, আমু, কাওরা, নারিকেল এজ্ঞুর, দাকুচীনি, জয়তি, র্লিচ, কপ্র প্রভৃতি বিবিধ উপাদের দুবা উৎপন্ন ছইয়া মানুনোর সুথ সংবর্জন করিতেছে। তথায় কোন বৃক্ষ সুপের

<sup>\*</sup> যে সকল বৃংক্ষর ফল সিংগ্রন সার অবয়ব ভাষাকে "সিম-প্রক্রিক" লাজে কহি। মটবল্টি, লিখ, আরহর সাল, গিলা প্রভৃতি অনেক বৃক্ষ এই ত্রেণাড়ে মিণাড় আছে।

श्रुक्ति बनक-चमा-श्रमान-श्रुवश्गत कृषात मासि িকোন বৃক্ষ মগুর-ফলছারা রসনা সন্তুপ্ত করি- ७क कप्रभीय श्रुकाषाता नगरनिसुत्यत — त्कर् । ছাণেন্দ্রের—স্বার্থ সাগন করিতেছে। मृत्म कममी-वृष्णानुक्रभ এकश्रकात वृक्ष

আছে, কাণ্ড ছিদ্রিত করিলে অনানাদে এক-ঘটিপরিমিত সুরাদু জল প্রাপ্ত হওয়। নায়। দক্ষি-ণামরিকার অপর একপ্রকার বৃক্ষ আছে, ভাষা দে-बिट्ड बहेबुक्टबर: डाहात श्वमकन हृद्यांत नात স্কুল; প্রস্করোপরি তাহার জন্ম এবণ ভাষার নিকটে 🖰 জনা কোন বৃক্ষ দৃষ্টিগোচর হয় না। গ্রীয়াকালে ক্রমা-গত ব্লমানের অনাকৃতিতে তাহার শাথা-ব্যুল লম্ব-কাষ্ঠ-প্রায়ঃ বোদ হয়, অথচ তাহার কাণ্ডে ছিদুঁ করিলে তদ্বার। প্রচুরপরিমাথে একপ্রকার দুফ নিগত হয়: ভাষা পুফিলনক ও সৃস্বাদু, এবং দেখিতে বটদুয়ের ভুলা। উক্ত স্থানের কাফরির। এই বৃক্ষকে "গাতী-বৃক্ত" সংহ, এবং আনেকে প্রকাহ প্রাতে পাত্ত লইয়া अडे मुक्काइत्वार्थि माखा कतिया थारक। अडे घछला नम ও হিম মণ্ডলের বৃক্ষ লতাদিও দুক্ষাপা নহে; তত্ততা উচ্চপর্যতে ভত্তাবৎ অনায়াদে প্রাপ্ত হওয়া যায়। সর্ত্তা-(शकात भीर्य-नर्सारशकाय कृत-नर्सारशकाय मृत्यत-मरखा थ कृष्ठे अविविधि — डे सिक्ड वस यानृ म श्राहर्या अहे प्रश्नल कश्चिश थातक, ठामून जात कूजानि मृखिरशाहत হয় না।

উদ্ভিজ্জ-निमा-निमातम মহাশয়ের। অনুমান করেন, পৃথিবীতে দুই লক জাতীয় বৃক্ষ আছে: ভন্নধ্যে তাঁ-হার। প্রায়ঃ এক লক্ষ জাতীয় বৃক্ষের বর্ণন করিয়াছেন। ঐ লক্ষ ভরু ৮৯৩৫ শ্রেণীতে বিভক্ত, এবং তাহার প্রায়ঃ অর্থাপুশ গ্রীয়ামগুলে স্থিত।

পুনঃ ২ উক্ত হইয়াজে, যে দেশতেদে বৃক্ষাদির ভেদ হয়; কিন্তু টহা মরেণ রাখা কর্ত্তরা যে ঐ দেশ-শব্দে वावशावनिक-(मरणव উत्तय इय नाहे; शाक्छ-धर्य-ভেদে যে দকল স্থানের পার্থকা আছে, তাহাই আমা-দিগের উদ্দেশ্য। শোপুর-নামা এক জন প্রসিক্ক উভিদ্বেস্তা এই বিষয়ে ভুমনিরাকরণার্থে সমস্ত-পৃথিবীকে ২৫ উদ্ভি-क्रश्रेरमरण विভाগ करत्व। बे श्राज्यक श्रामानत विराम বিশেষ লক্ষণ আছে; দৃষ্টিমাত্রেই তাহা প্রতাক হয়। যে

পুর্ব্বক পিপাসুর ভূফা-নিবারণ করিতেছে: ব্যক্তি অনেক বন ভুমণ করিয়াছে সে কোন এক বিশেষ বন দেখিবামাত্র কহিতে পারে: "এই বনের লক্ষণ অমৃক-দেশের বনের তুলা"। **ঐ লক্ষণ কোন এক বিশে**ন র্ক্টের বাহুলোই ঘটিয়া থাকে। ভারতবর্ধের সম্দু-নিকটে নারিকেল তাল ও এবর্ত্রের আধিকা; মধ্য-দেশে অংগ্রের বাঁহলা। মেয়েন্-নামা এক সাহেব দেশীয়-উদ্ভিক্তলকণ বিশ্বভিপ্তকারে বিভক্ত করিয়া-ভাষার বগনানুসারে কোন দেশ তৃণব**ত্ল**, (SH ) অথাৎ স্থায় সান্যাদি কুল্যা বংশের আধিকা আছে ৷ क्ति। (मन कम्ला क्ला , उर्गाय उर्थात कम्ली आमा ছরিদ্রা আরোকট এড়ভি বৃক্ষের আধিকা আছে। কোন দেশ কেয়া-বছাল। কোন দেশ আনার্য-বছ্ল। কোন দেশ স্তরুমারি-বছল। কোন দেশ, তালি≖ वङ्गा (काम (भग माम-वज्ञा (काम (मग वावना) বহুল। ইত্যাদি।

> প্রকালতার্ফাদি-বিষয়ে দেশ-ভেনে যে রূপ ভেদ হইয়া शास्त्र, थाना-नुवा-निभएरा ७ उनन्त्रश एउन आरह् । मूर्पाक-मखलीय साम्बर मनुसायरवात श्रेशन श्रीमा-मुता द्वारे-नामक শস্য ; তথার পান) দি কিছুই জন্মে না ; তৎপার্থে গোমুম ; ফুল্স-দেশের দক্ষিলপান্ত সকতে ভাহাই মনুষ্যের জীব-नावनप्रन। উक्त सामित मिल्लि लाभ्यात जाशासि रहा ना, পরস্তু কুল্ল-দেশের দক্ষিণভাগহইতে অরুনাল্ভবৃত্ত-পর্যান্ত-স্থানে গোধুম মনুষ্যের একমাত্র থাদ্য নছে; যব, ভূটা, যই (उष्टे) अव १ शाना ३ उथा ए न्यर्गात थामा म्हा भूधानवर १ গণা। এই সীমার দক্ষিণে দক্ষিণায়নান্ত-বৃত্ত-পর্যান্ত সমন্ত हान धारनात जालयः, उधाय जन्मानाश्रकातः न्ना इहेया श्रीतकः, भत्रसु धानाङ उधाकात श्रधान भागाः, मकरमङ् जनवनश्रत (मर्थात्व करत्। हेक्नू, काउरा, नातिरकन, থক্র আমুদি দুবাও এই মগুলের পদার্গ ; এভডিন অনাত্র তारी উत्तमक्राल जत्या ना। अला, लतक, माक्रकोनि, काग्रकल, মরিচ, কপ্রাদি দুগন্ধ-দুবা ও মশালাদকল আলিয়া-**এত্তের দক্ষিণ-ভাগে নির্ক্ত-বৃত্তের নিকটে বিশেষভঃ** ভারত-সমূলের উত্তরাঞ্চনত-দীপব্যুহে জন্মিয়া থাকে; তদনাত্র কুত্রাপি উৎপন্ন হয় না। দক্ষিণামরিকায় এবৎ তনিক্টস্ কোনং দীপে কোকোয়া-নামক এক প্রকার उद्ग कल जामा, ठाराउ चार्तरक कोरनावमञ्चन वटि ; পরস্ক তাহা ধান্যগোধ্মাদির সহিত তুলনার যোগ্য নহে 4 जीवनावनस्त्र प्राथा शांनाई श्रशांन, उन्नह्र शांध्य,

[বিবিঃ

उमन्तुत यत् उदशक्ताः कृषेः १४९१-६१६ ताहै, उदश-म्हां कारकांगः या कममदा नार्छ।

विभान्तरमञ्ज प्रजित्रभाष्यसम्बद्धः होम-। प्रतिन (गत्रमोमा-পর্যান সম্ভাত চা-পানের দেশ তথ্যামরে বহিভাগে চা कर्ना सः

कुक्समानात क्यायान-विभाग यात्रा तिखू डेक रहेन ত্রালা, কেবল ভালার স্বভাব-শিদ্ধ-ধ্যাক্তাপক, মনুদাকত্ব স্থান্ত দেৱ প্রতিপালন-বিনায়র লো**ন উদেশ তাহাতে নাই** ৷ इन्युट्याङ-मोमार विक्रिकाश क्रांस्क झारन वारमात কের সারাকে মুপ্তালের এবং শীতপ্রসারদেশের পাইন্-प्रभूषात्रहरू ५० लिए इ. इ.स्ट्राइफ : अ. मकल विভिन्न स्थान अमा विष्ट देश-सकत्मत संभाविक अस्पृति वर्षाः

লোক লগত কুলাপি ভাষার প্রাপ্তি হয় না। কোনং গ্র-लिय कठि मृत्र पूरे (मर्ल १५) शे उद्यशक काना (मर्ल প্রাপ্তরা নছে: অপর কতকওলিন তিন চারি দেশে প্রাণ্য, ह्मभन्न कडक छन्निम अधिनीत मकलस्थान भाउरा धारा अहै। একদেশভারমান, দিদেশভায়মান তা বহুদেশভায়মান বুক্লবর্ত কি প্রকারে সুমন্তবে বিষ্তু হটয়াছে পদার্থ-বিদ্যাবিশাহদ এসংগ্রেষ্ট্য এত্যিসয়ে অনেক তর্কবিত্তর্ক ক্ষিয়া ডিন নত 'ডেবিড ক্রিয়াছেন। লিনিয়স হাতেব অনুষ্ঠান করেন, গে ভালেল পুথিবার কোন এক দেশে भाग প্राप्ती १ मुक्तरागद्र मृक्ति करा, स्थाकोराह क-মশা ভূমগুলের সর্বাত্র তাহানের বিস্তৃতি ইটবা তা-मिट्डाक डाकार महामुगादद को खब्दा इ-स्मा शीक्षा-মধ্যায় : ডালার ৯৫৮) এন আহাত পরেত আছিছ: দের পর্যাত্র ল্লাসাপ-সন্ত্রাস্থ্য উষ্ণভার প্রভেদে স্থারে ২ প্রথমন্ট্র সমন্ত্র পদার্থ কণ্ডাপিত হয়; পরে नार् कल्लाका अन्य शासिमरशत् नाहारमा उत्था স্তানাম্বারত চইয়া পৃথা আপেয়াছে। কোন্থ পাত্ত-। কা কৰেন্ প্ৰথমতঃ **প্ৰত্যক্তা**তীয় বৃক্ষ **অনেক** স্থান এক ক'লে কলিয়াছিল; পরে ঐ একাধিক शाकतरहीरक जागारक निकुष्ठ रहा। जाशास्त्र कररून स्य ए कारन य क्रम मृहिता ও कन अ डेक्स्डा उथीर ভদন্তপ বৃহ্ণদি জন্মিয়া ভূম**ওলের সক্তাৎশ এককালে** उक्नजामित्व गमावनेवं कविद्याल्यः, अकर स्वारम अकर

জাতীয় বৃক্ষ ক্ষিয়া পরে বিস্তৃত হয় নাই য়ের অনুসন্ধান তাদৃশ ফলদারী নহে, পরস্ত ব পোষণাৰ্থে যে সকল প্ৰমাণ প্ৰযুক্ত হইয়া ধা কিঞ্চিৎ লেখায় পাঠকদিনের সমুপ্তি হটতে পা

যে সকল উভিজ্ঞ-পদার্থের অবয়ব অভিস্থ অসমপূৰ্ণ অন্ধ-প্ৰতান্ধবিশিষ্ট তৎতাবৎ পৃথীর বাাপ্ত আছে। অব্যক্ত পুশাক \* উদ্ভিজ-শক শৈবাল কোঁড়ক (ছত্তক) প্রভৃতি বস্তু ভূমগুলের অনেক खारन कुला। वारकुलिसा-घीरभ स्य मकल लाहरकन्-नामा চান কাচে, পুর্যাদ্রালর কদলা-বৃক্ষ উপলভ্যে আনে- শৈবাল দৃষ্ট ছাইয়াছে, ভাহার অপিকাশশ বিলাতে সুপ্রা-পা। অপর করণ্-তরুর মে একশত-জাতি তথায় ছাত্তত কৃষ্ণ গ্রামুমণ্ডলে অপ্রাপ্তা নত্ত্ব; পারস্ক তৎভাবৎ <sup>†</sup> প্রভার আহেছে, তম্মানা ২৮ প্রকার তরু পৃথিবীর অন্যতে अनागारम भावशा गांग।

এক পত্রোৎপত্তিক 4 বৃক্ষ বহুপুদেশ ব্যাপিয়া ক হত্ত প্রতিষ্ঠ । উদ্দিশ্য বিষ্ণাত কেন্দ্রে বস্তুমান । আছে। চুণাদি ইউরোপ ও আছেলিয়ায় প্রায়ে ভুলা। মার্কিন এর ৭ ইউরোপ এরে ও তৃণ-নিষয়ে তুলাতা আছে: কলতঃ তুণ প্রারঃ কোড়েকের (ছত্রকের) তুলা সমাত্র-ব্যাপি। ব্ৰোণ্-নাম। এক জন উভিজ্বেত্ত। অন্তেলিয়া-श्रामाण ६०० जाडीस खताकश्रीकार तृक. ৮५० जाडीस একপাত্রাহপদ্ধিক বৃক্ষ, এবপ ১৯০০ কাতীয় দ্বিপাত্রোহ-পত্তিক বৃক্ষ দেশিয়াছিলেন। ঐ তরুসকলের মধ্যে ১১০ পুকার অব্যক্তপুষ্পক কৃষ্ণ বিলাতে স্বতঃ ছয়িয়া থাকে: ৮৬০ দাভায় একপজোৎপত্তিক বৃক্ষের মধ্যে ৩০ টি দাভে বিলাভে প্রাশ্য, এরণ, ২৯০০ জাডীয় দিপত্রোৎপত্তিক বুক্ষের কেবল ১৫ টি জাতি বিলাতে দৃষ্ট হয়; অপর সক-लश्रील अरञ्जलिशा घोरण चंजः निका मकिनामतिकात মগাভাগে যে সকল দিপত্তোৎপত্তিক কৃষ্ণ আছে. তৎ-সমুদায়ই তদ্দেশ-ভিন্ন আনাজ দৃষ্টিগোচর হয় না।

<sup>ा</sup> महाना होत्यक्तरशहक मुक्के खाराण विकास कहा माहा : अधिहा বাহাদিগ্রে পৃষ্ণ অনায়াদে দৃষ্ট হয়; যথা, কানু শক্লাবি, विश्वीय गाणात्मत् भूका मुकित्याहत् एक ना, वश्वी, रेनावासामि । এ প্রথমাশ্যানর নাম "বাক্রপ্রস্থাক", ও বিভারের নাম <sup>এ</sup> ভারারুপ্রপ্রপ্র

<sup>†</sup>कडक्छलिन दोष अथव चान्नविक इहेश। अक्कारन मुन्देगे ं भक्त शार्य करत, गया, काघु, झिंह, श्रीठ, शालात, स्वल, सूथि প্রভৃতি; ভাতাদের নাম বিপরোহপতিক। অপর করকর্ষদিন বৃংক্ষর রাজ্যইতে আদৌ একটি পতা আছুরিভ হয় ও পরে এক ২ টি পত্র করিয়া প্রসরিত খন। ভাষাদের নাম এক পত্রো<del>ৎপত্তিক</del> नातिरकम अम्बद्धंत पृथ जाम केमनोष्टामि अरे तर्भन वृक्षः

আফরিকার মধ্যভাবের তরু-সকলও তদ্মুরপ। শে-বোজাদেশের পূর্ত্ত-তটে যে সকল কৃষ্ণ আছে তাহা ভারতবর্ষের দক্ষিণ-তটেও সুপ্রাপা, দক্ষিণামরিকার পূর্ত্ত-তটের কৃষ্ণকলের কতকগুলি অফরিকার পশ্চিমে জিমি-য়া গাকে।

ব্রিসমূদের ছীপসকলের মধ্যে যে ওলিন আসিয়া-গণ্ডের নিকটন্থ তাহাতে আসিয়াদেশপ্রসিদ্ধ বৃক্ষই দৃষ্ট হয়, এবং যে ওলিন অমরিকার নিকটন্ত তাহাতে প্রাধানাতঃ অমরিকার বৃক্ষই জিয়া। থাকে। যে সকল দ্বীপ দুই মহাজ্মিগণ্ডের মধ্যভাগে দ্বিত, তাহার বৃক্ষলভাদি উভয়-থণ্ডের হলা। এইপ্রযুক্ত মাল্টা এবং সিসলাদ্বাপে ইউরোপ এবং অফরিকা এই উভয় স্থানের বৃক্ষ প্রচরিত আছে।

দ্দ্দু- হটন্ত-বৃদ্ধের এই সামান্ত-দ্টে ক্লাইট প্রতীত হয় দে স্মৃদুস্থেতে এক-ভটের বৃক্ষপীজ অপর-ভটে মান্ত ইইয়া ঐ সামান্ত্র ঘটায়। ভডিল্ল বায়্সহকারেও অনেক বীজ একদেশহইতে অন্যদেশে নীত হয়। অ-পর মনুধ্য-পণ্ড-পক্ষিদ্বারাও একদেশের বীক অন্যত্রে চালিত ইইয়া থাকে। কাকের উদরে অখণ্ড-বৃক্ষের বীজ কি প্রকারে চালিত হয় ভাহা অনেকেই জ্ঞান্ত আছেন। নূতন সভূত দ্বাপে প্রথমতঃ শৈবাল জন্মে; তদনন্তর সমৃদু-শ্যোতে সমাগত বীজ অঙ্কুরিত ইইয়া বৃক্ষাদি সম্ভবে; পরে এইরণো ক্রমণঃ অন্যান্য বৃক্ষের উৎপত্তি হয়। অপিতৃ প্রায়ঃ অনেক দ্বাপে তালার ভতঃনিদ্ধ এক বা তভো-ধিক বৃক্ষ দ্টী হইয়া থাকে; ইহাতে বোধ হয় প্রভোক ভানের এক বা তভোগিক বিশেষ তরু নির্দ্ধিই থাকিবেক, পরস্তু অধুনা ভাহার অধিক আলোচনায় ক্ল্হা নাই।

# ইলেক্ট্রিক্ টেলিগ্রাক্ অর্থাৎ তাড়িত-বার্ত্তাবহ যন্ত্র।

পার্থ করি আলোচনাদ্বারা যে বোধ করি, অন প্রান্ত কর্মান্তে, ভন্মধ্যে বাস্প-ভালাকাল্য যজ ও ভাজিতবার্ত্তাবহু-যজ নর্ব-প্রধান। ভৎসাহাযে। মনুষ্য অভুত দৈবশক্তি "একপ্রকার অ প্রাপ্ত হইয়া অসম্ভাবনীয়-কার্য্যনকলও অব- "নাম'তাড়িত।

ह्नाञ्च मिष्णद्य कत्रिटिक्न। भट्याक भूष्यः व्यामि मिन्।यान-भाषांनकल वाष्प्रयञ्जाता গতার্থ इहेशाছে। क्योउमाम অপেক্ষায়ও উত্তন षाळावर रहेश डेक्यब মনুষ্টের कर्म्य कितिए अधीकात करत मा। विवाद वा-স্পায় যন্ত্ৰ জল তুলিতেছে, কাষ্ট কাটিতেছে. প্রভুকে ক্ষেরে লইয়া দেশভুমণ করিতেছে, বস্ত্র वलन कतिराज्ञाह, जिलाहिमक्तन कतिराज्ञाह, जृति-कर्षन कित्रटाइ, थाज-थनन कित्रटाइ, जन्म-চন করিতেছে, খনিহুটতে ধাতু উত্তোলন করি-তেছে, লৌহাদি পিটিতেছে, শর্করা প্রস্তুত করি-তেছে, তরি-नश्चानन করিতেছে; <mark>ফল</mark>তঃ এক বাপাযন্ত্রদারা, নিবিকা-বাহক, নাবিক, তন্ত্রবায়, মোদক, কর্মকার, তৈলকার, কৃষাণ প্রভৃতি সকল ভূত্যের কর্ম সম্পন্ন হইয়া থাকে। তাড়ি**ত-বার্তা**-বহু যন্ত্র বাস্পীয়-যন্ত্রের তুল্য উপকারি মহে; পরস্ত যদ্যার। সহসুক্রোশ-দূরস্থ-বন্ধুরা ক্ষণে পরস্পার আপন ২ স্বাক্ষরিত পত্র আদান প্রদান করিতে পারেন তাহার ক্ষমতা নামান্য বলা যায় না। কলিকা তাহইতে আগরা এবং তথা-হইতে ৰোম্বাই-পৰ্যন্ত একটি তাজিতবাৰ্ত্তাবহ যন্ত্র দংস্থাপিত হইয়াছে, তদ্ধারা একদপ্তকাল-মধ্যে বৌম্বাই-নগরের নংবাদ কলিকাভায় আ-निट्छ। अ भत्रमाम्घयं।-यद्यतं नर्छ्कभ-विव-রণ পরপর কতিপয় পঙ্ক্তিতে লিখিত চ্ইল; পাঠকবৃন্দ মনোযোগপূৰ্বক তাহা পাঠ করিলে, বোধ করি, অনায়ানে এই অন্তুত যদ্ধের লক্ষ্ণ ও ধর্ম জ্ঞাত হইতে পারিবেন।

পদার্থবিদ্যানুসন্ধারীরা নির্ণয় করিয়াছেন যে "ভূমণ্ডল ও ভদুপরিস্থিত বাসুমণ্ডলের সর্বানে "একপ্রকার অভিসূক্ষ পদার্থ আছে, ভাষার "নাম'তাড়িত।

"এই প্রমাশ্চয় পদাথ সচরাচর প্রত্যক্ষ " হয় না, কিন্তু কথন কথন কোন কোন বস্তুহ্ইতে ' অতিশয় সৃত্য জেয়তিয়য় পদার্থ য়য়পে আ-"বিভাত হয়। বিদ্যুৎ ও বজু-ধুনি এই পদাথের · काय: शह काठ, तन्मम, टेंडनफ्**টिक, शक्ष**क, পধুনা, কয়েক প্রকার রত্ন ইত্যাদি কতক গুলি দুব্য এমধন ক্ষিত্ৰ, তাহা হইতে অপেকাক্ত অপে প্ৰ-শন্ত তাড়িত প্রকাশ করিতে পারা যায়।

 विक काठ अथवा लाका उक्क इत्छ अथवा ্লোষ্ট্র হক্তে যুষ্ণ করিয়া কেশ, সত্র, পাল্ক, · কগ্রন্থ, অথবং অন্য কোন লঘু দুব্যের নিকট • ४८: यास. जरव जे लघु मृत्र (महे कां**ठ राथ**का · লাকা ভারা আকৃষ্ট হ্ইয়া ভা**হাতে লথ হই**য়া থাকে: কিন্তু অত্যাপ কাল সংযুক্ত থাকিয়াই 🕶 বিমুক্ত হইয়। পড়ে। এ উত্তয় ব্যাপারই ঐ পতাড়িত নামক পদার্থের গুণ; একারণ ভাহার া:য ওন দারা লঘু বস্তু কাচ অথবা লাকার শন্তিত সন্পূত্ৰ ইইয়া থাকে, ভাষাকে ভাছি- গতালয়ন বলে এব॰ যে গুন দারা তাহা হইতে শালয়ক্ত হয়, জাতাকে ভাড়িতবি**যোজন** ভো-कांकिक प्राचित्रका करहा

•ভংডিতের কারে এক গুণ এই, যে যদি এক • সংবে শ্বিক থাকে. এবং তাছার নিকটবর্ত্তি " यहा हाति अन्य थाति, द्र**र श्रथ्याक हा**- শের কিয়্দ৽শ শেষোক্ত তানে আসিয়া উভয় • জানে সমান হয়। যদি এল খান মেষে অধিক প্র-<sup>০</sup> মাণ ভাড়িত থাকে,আর এক মে**য়ে অণ্স প্রমা**ণ শ্রমাজ, ভবে উভয় মেঘ **পরস্পার নিকটবর্ত্তি** • তংগ্রিত নিগতি ১টখ্ন শেষেক্ত নেষে প্রবিষ্ঠ হয়, শ্রুষ্ঠ ভয়স্কর ব্যাধার ঘটনার সময়ে **অতি প্রথর** ''রেসতিং প্রকাশ ও যোরতর মেম গজ্জন

· হয়: লোকে ভাছাকেই বিদৃহি ও বজু-ধুনি "किशा थारक। शृथिवीश्हेर**ङ (मरब, व्यथवा** "মেষহইতে পৃথিবীতে তাড়িত প্রবেশ করিবার '' সময়েও এই রূপ ঘটনা ঘটিয়া থাকে।

"এই তাড়িত পদার্থ কোন কোন বস্তুদারা "এক স্থানহইতে অন্য স্থানে ক্রন্ত বেগে সঞ্চা-'লিত হয়। এই নকল বস্তুকে তাড়িতপরিচা- লক কছে। অন্য কতক গুলি বস্তুর পরিচাল-শ্ৰুতা শক্তি এত অংশ, যে কোন স্থানে তা- ছিতের সঞ্জন নিবারণ করিতে হইলে ঐ সকল "দুব্য ব্যবহার করিতে হয়। এ সমস্ত বস্তুকে **" अश्रिठालक कर**हा

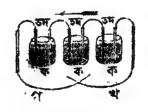
"সমুদার খাতুই প্রবল পরিচালক। তড়িয়া "অঙ্গার, লবণাক্রলল প্রভৃতি আর কতক গুলি "দুব্য আছে, ভাছারাও পরিচালক বটে, কিন্তু পথাতুর নগায় নছে। কাচ, গন্ধক, ধুনা, পরি-" শুক্ষ বায়ু, কাষ্ট্ৰ, কাগজ, কেশ, রেশম, পা-· লক, পশুলোম, এ সমুদায় সর্বতোভাবে অ**প**-'' রিচালক''\*।

এই ভাড়িত বা বৈদ্যুৎ-পদার্থ চুম্বকলীছেতে সর্বদা বস্তুমান আছে; এবং তাহাহটতেই উক্ত লোচের আকর্ষণ-শক্তি উৎপন্ন হইর। থাকে। मुत्रावय न॰ म्लूष्टे थाकिया न्रानाधिक উত্তপ্ত इटेल व्यथवः मावकानि-शमादर्थ निमञ्जित चौकित्व खे তাড়িত-পদার্থের উৎপত্তি হুইয়া থাকে। পরস্ত চুম্বক-লৌহের তাড়িত, (চৌম্বক তাড়িত) আকা-শাগত বা কাচাদি-ঘর্ষণদারা উৎপন্ন তাড়িত (বৈদ্যুত তাড়িত) ও দ্যুবকাদি-দুৰ্যক্ষাত তাড়িত শহর্তবার সময়ে প্রথমোক্ত মেথের কিয়ৎ প্রমাণ ; (রাসায়ন-ভাড়িভ) এই তিনের কিঞ্ছিৎ প্রবাস্তর ভেদ আছে; অভএব ঐ তিন প্রকার ভাজিতই अक कडी है नाधनार्थ अयुक्त इहेर के शांत मा।

त उत्तरवाधिनो लाजका । ३०२ मध्या ३०४ पृष्ठे।

ব্যবহার হয়। ঐ তাড়িতের উৎপাদন করা খনা- ত্রের গ, চিহ্নিত তারের সহিত নিলিত হট্যাছে। श्राम-नाधा। बक कांच्या मृष्पाद्य (वेश्वन श्रादन) बकाश्म शक्षक-पुरक ও দশাংশ जल मिन्रिक করিয়া তম্মধ্যে এক খণ্ড দন্তা ও এক খণ্ড তামু ভূবা-ইলেই ঐ ভাড়িত উৎপন্ন হয়। পরে ঐ ধাতৃখণ্ড-ঘয়ের বহিত লৌত বা তামু বা অন্য কোন ধাতুর তার বংঘুক্ত করিয়া অনায়াদে বহুদূর-পার্য্যস্ত ঐ তাড়িত লইয়া যাওয়া যাইতে পারে। প্রস্তানিত কোল্পানের উত্তরভাগের নিকটে আনীত হই- ভেদে আক্ষিত বা প্রতিস্ত হইয়া থাকে। ভাগকে আক্ষণ করে; তথা দন্তা**জাত তা**ড়িত জান হইবে। এই চিত্রের নাম তাড়িতমান-মন্ত্র। দক্ষিণভাগকে প্রতিসূত করিয়া উত্তরভাগকে আকর্ষিত করে। প্রস্তাবিত-পাত্রের তামু ও দস্তা, বৃহদাকার করিলে অথবা তজপ তিন চারি বা ততোধিক পাত্র একত্র করিলে এই আকর্ষণ-প্রতি-সরণ-শক্তির আধিক্য হয়। পরস্তত্তে যে চিত্র मूर्पि इहेन, डाइएड छिन्छि-शावितिश्वे-यखत व्यवस्थ श्रमणिक इड्साइह। वे চिख्त क, क, क, हिट्ट मुन्क-शूर्व काहलाब, ७, ७, ७, जामुशब, এবং দ, দ, দ, দন্তার পত্র। প্রত্যেক পাত্তের দক্তার পত্র অপর-পাত্রের তামুপত্রের সহিত পিত্তলের তাহার নির্মাণতে একটি তামুতারকে দীর্ঘচতু-

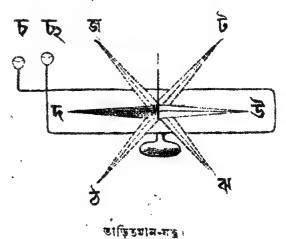
বার্ত্তাবহ-যন্ত্রের নিমন্ত রাসায়ন-তাড়িতেরই চিহ্নিত তারন্ধারা অপর পার্শীয় পাত্রত্ তানুপ-



তালিতাৎপাদক মন্ত্র।

এই ঘত্রের তামু'ও দন্তায় যে তাড়িত উৎপন্ন বজ্রের ধাতুদয়হইতে যে তাড়িত জম্মে তম্মধের হয় তাহার পরস্পার আকর্যন-শক্তি শত্যস্ত বেগ-তামুজাত তাড়িত দন্তাজাত তাড়িতকৈ আকর্ষণ বতী, পরস্পারের মিলন-নিমিত্র তাহা এক নিমেষ-করে; এবং অন্য তামুথগুজাত তাড়িতকে প্রতি-্মাত্রে সহসূহ ক্রোশ ভান ভুমণ করিয়া **থাকে।** স্ত করে; কলতঃ চৃত্বক-লৌহের যে শব্জিতে চিত্রের থ, এবং গ, চিহ্নিত ভার যত দুরপর্যান্ত এক ভাগ উত্তরদিনে ও অপর ভাগ দক্ষিণদিগে। লইয়া যাওয়া যায়, তত দূরপর্যান্ত ঐ তাড়িত আক্ষিত হয়, প্র**ন্তাবিত যন্ত্রজাত তাড়িত দেই নিমেষমাত্রেই** ভুমণ করিয়া থাকে. এবং ঐ শক্তিবিশিষ্ট: তাহার তামুজাত তাড়িত চুম্বকের ভুমণনময়ে ঐ সমস্ত তার চুম্বক-লৌহের ধর্ম উত্র-ভাগের তুলা,এবং দন্ত জাত ভাড়িত তাহার প্রাপ্ত হয়; সুতরাং তৎকালে ভাহার নিকটে দক্ষিণভাগের ভুল্য। অভএব তামুজাত তাড়িত কাম্পাদের কাঁটা থাকিলে ভাহার উত্তর-দক্ষিণ-

লে উভয়ে পরস্পর প্রতিসৃত হয়; এবং দক্ষিণ- নিমুত্ত চিত্রে প্রস্তাবিত বিষয়ের বিশেষ পরি-



णाइषात्रा मश्यूक । এक भार्यञ्च भारतित मछ। थ त्रनाकारत वक्क कतिया अक काश्रामरन चाभिक

कत्रक जाहात मर्था अविके काम्भारमत कीकी ता- । किक अक्तरतत्र मृष्टि करतम , अवः अ अक्नत्रवाता ममधाता यूनाहेट इसा अहे यञ्ज छे बतमकित्व देन-र्घाडारि बाथित काम्मारिम काँहा अमी र्यहरू तमु-ভারাকতি এক ভাবেই থাকে। অভঃপর পূর্ব বণিত তাডিতোৎপাদক-যন্ত্রের যে পার্ম্ব দস্তায় শেষ ২য় তৎপাধ্যের তার (থ অঙ্কিচ তার) আনিয়া তাড়িত্যান যন্ত্রের চ-চিহ্ন্ত স্থানে ও তামুপান্থের তার / গ চিছ্লিত ভার : আনিয়া ছ-চিছ্তি ভানে সংস্থাই করিলেই ভামু-ভার মণ্ডল চুম্বক-লোভের ধর্ম প্রাপ্ত হয়, এবং চুম্বক-লৌ-কের ধন্মবিশিষ্ট কোম্পাদের কাঁটাকে প্রতি<sup>†</sup> সুভ করে: তথা ঐ কটি। ঘুরিয়া যায়, ও তা-হার উত্তরভাগ পূর্বাভিমুখ (ঝ- চি**ছের নি**-কট ৷ ও দাক্রণভাগ পশ্চিম ভিমুখ (জ-চিচ্ছের নিকট। হয়। চ বা ছ চি হ্রত স্তানে তাড়িতোৎ- ' চিল্লিড ভার ভাড়িতমান-যন্ত্রের চ-চিল্লিড अात्न न॰ गुक्त ना कतिया ছ- विक्रिक-ऋा**त्न न**॰ युक्त করিলেও তাড়িত্মান যক্ত চুম্বাহ প্রাপ্ত হুইয়া काम्भारमङ कॅछिड मध्यानन कविश पाक: কিন্তু ঐ অবসায় উক্ত কাঁটার উত্তরভাগ পূর্বে লা আদিয়া পশ্চিমদিরে টাচিক্রে নিকট যায়, এবং দক্ষিণভাগে পুৰে ১-ভানে আইসে। এই কাঁটার সঞ্চালন বিষয়ে ভামুদস্তাত্তদে ব্যতি-क्रम ब्हेरात कातनान्मसारन कानरक्रम कविवात व्यानमान नाडे. शब्द ने वाजिकम् इहेटडहे वा-डांदरानत डेलाग्न रुग्न, अज्यव यहे श्रेखाद्वत अर्थः গুহণাথে তাহার বিশেষ স্বরণ রাথা কর্ত্ব।

পণ্ডিছের। এই की छोत्र **नकलन्हेट उहै, नाइ** 

বার্ত্তাবহন কর্ম নিষ্পন্ন হইয়া থাকে। তাজিত-वाडीवर-यज्ञ-ठालरकता मकरलरे अक श्रकांत्र मा-ক্ষেতিক অক্ষরের ব্যবহার করে না; অনেক স্থানে অনেক প্রকার সঙ্কেতের প্রচার আছে; তৎসমু-मार्यंत विवत् । **अहे कृ**म्युष्ठ<del>म श</del>र् **(लथ) मछव** নছে; অতএব কেবল কলিকাতার যন্ত্রে যে২ সঙ্কে-তের বাবহার আছে, তাহারই নিয়ম এই স্থানে লিখিতবা। কলিকাতান্ত-যন্ত্র-পরিচালকের। তা-ড়িতমানযন্ত্রস্থ কাঁটার উত্তরভাগ এক বার পূর্বা-ভিন্থ ध्हेत्व च (A) अक्तरतत क्ष्मिना क्रान्। কাঁটা উপযুঁতপরি দুই বার পূর্বাভিমু**খ হইলে** ব ( 🖪 ) অক্ষরের, ভিন বার প্রাভিনুথ হইলে স ((') অক্ররের এবং চারি বার পূর্বাভি**ম্থ** इहेल **ए (1)) अकार्यस क**म्थाना करतन । काँगित পাদক-খন্ত্রের তারের বিয়োগ করিলেই তামু- <sup>†</sup> উত্তর-ভাগ পূর্বে না **আনি**য়া প**শ্চিমাভিমুখ হই**-ভার-মণ্ডলের চুম্বকত্ব লুপ্ত হয়, তথা কোম্পা-্লেল (L) অক্সরের কম্পানা হয়, কাঁটা এক ব্যর সের বাঁটা ৰভাবে আসিয়া পুলঃ উত্তর-দক্ষিণ-া পশ্চিমে তৎপরে পূর্বে আইলেএ (E) অক্রের মুখে স্থিত কয়। তাড়িতোংপাদক-যুদ্ধের থ কম্পনা হয়। ইংরাজি বর্ণনালার অপর সকল অ-কর এই প্রকারে কম্পিত হইয়াছে, তাহার জ্ঞাপ-নার্থে নিমে আমর৷ সমস্ত নক্ষেত গুলিন লিখিতে हि; अक अक माँडिएक अक अक नात्र काँछोत्र नका-लन लक्किल हहेशाह्य; जवा बे मीज़ि चार्तु (वी कान रुरेतन, काँगात উखन्नजान পूर्व चानिशास्त्र, बनः शक्टाटक व्यांकान क्हेरल काँग्रेज छेड्डब्रकान श-भित्र शिशारक, अहे बाध कड़ी कड़ेबा।

সাঙ্কেতিক চিহ্ । 1 II III IIII 🐧 I वजामन्त्। ভকা ব ইৎরাজি অক্ষর। A 👪, C AIII AIIII IZ 1 TAIF

H IJ K

যে পাঠক-মহাশয়ের৷ এই প্রস্তাবের এপর্য্যস্ত মনোযোগ-পূর্বক পাঠ করিয়াছেন, তাঁছারা অনা-য়াদে অনুমান করিতে পারিবেন যে প্রস্তাবিত যন্ত্রসারা কি প্রকারে এক-দেশের সংবাদ অন্য-ত্রে কবিলয়ে পাঠান ঘাইতে পারে। ভ্রাপি এবিষয়ের স্পাঠপ্রকাশার্থে ভারও কিঞ্চিৎ লি-খিত হইতেছে। এবিষয়ের জ্ঞানাভিলাষি পা-ठेकर्म मनन कबन य महीह পूर्वाक जाड़ि-তোৎপাদক যন্ত্র একটি বারাণসীতে সংস্থাপিত আছে: এবং কলিকাতায় একটি ভাড়িত-মান-যন্ত্র বর্ত্তমান আছে, এবং ঐ যন্ত্রের খা, গা, ञ्चानक्रेट कामीलयोख पूरे गाडि लोक्जात मञ्जिष আছে। এই कार्ण यहां भि कामीय मः বাদদাতা কহিতে চাহেন যে "আমি পাড়িত আছি", তবে তিনি সন্ধুথে উপস্থিত তার্থয়ের থ-চিহ্নিত তার তাড়িতোৎপাদক যন্তের শেষ দস্তার সহিত এবং গ-চিহ্নিত তার শেষ ভামের महिल मः म्यृष्टे कदिरवन, वे मः म्यानिमार्वहे কলিকাতাস্ তাড়িতমান-যন্ত্রস্ কাঁটার উত্তর-ভাগ পূর্বে বা অক্ষরের নিকট আইসে; ওদ্ষ্টে কলিকাতান্থ সংবাদপুৰীতা এক থানি প্ৰস্তৱ কল-क (जूरि) बक्षि विक् काइन, उपाया । ; ७९-शब्रकरन कामोञ्च मः वाममाञा উপर्यू। পরি দুই বার

গ, চিছিত তার তাড়িতোৎপাদক-যত্তের তামের সহিত এবং থ-চিছিত তার দন্তার নহিত সংস্থা করান, তদনুসারে কলিকাতান্ত তাড়িত-মান-যন্তের কাঁটা দুই বার পশ্চিমাভিমুথ হয়. ও তথাকার কর্মকারক প্রন্তর কলকে তদনুরূপ দুইটি চিছ্ন দেন, তদ্যথা য় : তৎপরে কাশীন্ত সংবাদদাতা ভারদ্বয়ের উপর্য্যুপরি তিন বার পার্মপরিবর্ত্তন করেন, তাছাতে কলিকাতান্ত যদ্তের কাঁটা একবার পশ্চিমে,পরে একবার পূর্বে, তৎপরে এক একবার পশ্চিমে সঞ্চালিত হয়: এবং তথাকার কর্মকর্ত্তা তদনুরূপ চিছ্ন করেন; তদ্যথা য় এই তিন চিছ্ন একত্ত্র করিলে বানা মুই

তদনন্তর কাশীস্থ সংবাদদাতা তারদ্বয়ের আমশঃ যথানিয়মে পার্মপরিবত্তন ও কলিকাতাস্থ ব্যক্তি তাড়িতমান যত্ত্ত্ব কাঁটার গত্যনুসারে প্রস্তরকলকে চিহ্ন দিতে থাকেন। সংবাদ শেষ হইলে তাঁহার প্রস্তরকলকে নিমুম্থ
চিহ্নগুলি প্রত্যক্ষ হয়, এবং তদর্থে সংবাদদাতার
ভাতিপ্রেত বার্ডা ব্যক্ত হয়।

উপরে যে প্রকার বর্ণিত হইল তাহাতে অনুভূত হইতে পারে যে সঙ্কেতদ্বারা একং টি অক্ষর
জ্ঞাপন করা এবং তাহাহইতে সংবাদ উদ্ভাবন করা
অভি ক্লেশপ্রদ; পুরস্ত ইহা অরণ রাখা কর্ত্বথ যে অস্ততঃ পাঁচ দিন ক্রমাগত দিবারাক্র বেসে
ধাবন করত কাশীহইতে সংবাদ আনা অপেক্ষায়, দুই চারি মিনিট শুন করা শতাংশে শ্রেষ্ট। অপর তাড়িতবার্তাবহ-যন্ত্রচালকেরা অভ্যাস-বশতঃ সক্ষেত-পাঠে এতাদৃশ পারণ হয় যে · আমি পীড়িত আছি" এই তিন্টি পদ পাঠ করিতে অর্দ্ধ প্র কালও লাগায় না। উত্তম मरक छ- পাঠকে । এक सिनि है - कान-मरश्र विश-শতি টি পদ পাঠ করিতে পারে। অপর পূর্ব-ব্যিত তাড়িতোৎপাদক-যক্তের তারের পাশ্ব-মন্ত্র প্রস্তুত চইয়াছে: তদ্যুরা এক-বিপল-কাল-মবে, দুই তিন বার তারের পার্শ্ব-পরিবত্তন हरेंद्र भारत।

প্রস্তাবারত্তে কথিত খুইয়াছে যে লবণাক্ত জল, নিক্ত মৃত্তিকাদি বস্তু তাড়িত-পদার্থের পরি-ঢালক; এ সকল বস্থু তাড়িত-সঞ্চালনের তার স্ংস্থাশ ক্রিলেই ঐ তারহইতে তাড়িত সং-হরণ করত অনাত লইয়া যায়, সূতরাণ বার্তা-नक्रान्द न्यायाक घरते। धके माय निराद्यात्र নিনিত প্রস্তাবিত বস্ত্র-নির্মাতারা ঐ তার সকল অপারচালক পদার্থদারা আবৃত করিয়া রাথেন. অথবঃ আকাশ-মার্গ-দিয়া ঐ তার বিভৃত করেন। অপরিচালক-পদার্থের মধ্যে ধুনা রে-जम इसर् अवः भंगेभागा-सम्मक अस्थिकात टिंदू पर श्वान । এ কোন পদার্থদার। তার আৰ্ত জাধলে তাহাছইতে তাড়িত অন্ত যাই-তে পারে मा। এই প্রযুক্ত কলিকাতাহইতে যোগাই-পদান্ত যে তার দিখুত আছে তাহা পটাপার্চামরে। মান্ত।

ক্থিত হুট্য়াছে যে তাড়িত-যজনার দূর-দেশত ব্যক্তিদ্য অবিলয়ে পরস্পায়কে আপন হস্তাক্ষর দেখাইতে পারেন; কিন্তু প্রস্তাব-বা-ভ্লা-ভয়ে অধুনা ভাছার বিশেষ-বর্ণনায় বিরত इन्टेंड करेन।

## পারস্য-দেশ-পুচলিত গোলেন্তান্-নামক নীতি-শাঙ্কের পুসক।

के से से से के थ ना कि नी ब्रांक-मर ब्रोट क का शिव गुरुव के करवन। विविध-इत्साव का अपना अ ণীয় উপাখ্যানদারা স্বীয় গুস্কু সুশোভিত করিয়া পরিবর্ত্তন ক্রান্ত্র্যানে সাধনার্থে এক প্রকার গারস রাজ্যে তিনি অতি প্রধান গুস্করে বলিয়া প্রসিদ্ধ হইয়াছিলেন। তাঁহার শারীরিক বৃত্তান্ত সকল অতি অজুত ও ফলজনক হইলেও গোলে-স্তান্ প্রশংসা-ছলে এ ফলে উল্লেখ করিলাম না: উক্ত-গুম্ববিষয়ক কিঞ্চিৎ বিবরণ পাঠকবর্গকে অবগত করাই আমাদের উদ্দেশ্য।

গোলেস্তান্ গুন্ধ আট অধ্যায়ে বিভক্ত হই-शास्त्र। जमार्या প्रथमायास्य ताजनीजि, वि-जीट्य मन्त्राभीमिटशत नीकि, कृकीट्य मरस्राट्यत उरकर्षा, ठाठुरथ मोनवुराउत कल, शक्षाम श्रम ও योदन, यक्ष विमीनीवङा ও छता, मथुरम विमाद कल, अर्थस खवज्रास्टर कीरम-या-পনের প্রথা বণিত ও ব্যবস্থাপিত হইয়াছে। গো-লেস্তানের লিপিচাতুরী বিবেচনা করিতে হইলে গুস্কারের অসাধারণ রচনাশক্তি বিশিষ্টকপেই প্রতীত হয়। রচনা-প্রণালী ভুরিং অলঙ্কারে সমলকৃত হইয়াও সুকুমারতা ও প্রসাদগুণ পরি-उर्रात करत नारे। शातम-श्रीमक जनगना जन-ক্ত কাব্য-সমূহের সহিত তুলনা করিয়া একৰে পারসিকেরা ইহাকে সর্বোৎকৃষ্ট বলিয়া মানি-ভেছে। **এই গুন্ত জনসমাজে এতাদৃশ প্রনিস্** আছে, যে অধুনা তাছার দোৰ গুণ বা লক্ষণ वर्गन कहाश मरमङ्गलात श्रकाम हहेएक भारत, অভএব কয়েকটি সমীত্যাত্মক গণ্গা পাঠকবগের সুগোচরার্থ বজভাষায় অদুবাদ করিয়া বিবি- ধাথৈক-দেশে প্রচার করিতেছি: তাঁহারা তৎ-। পাঠে গুন্তকর্ত্তার অভিপ্রায় ও নীতিশিক্ষার নিয়ম অনায়ানে জ্ঞাত হইতে পারিবেন।

#### সাধুসফের মাহাত্মা।

"এক দিবস সানার্থ আমি সানাগারে প্রবিষ্ট আছি, এমত সময়ে এক বন্ধু আনিয়া একটি সৌরভময় আমস্থপিও আমার হস্তে প্রদান করিলেন। আমিও তাহা সমাদরপূর্বক পরিপুত্র করিয়া কহিতে লাগিলাম, "অহে মৃথপিও! তুনি করুবা কি অন্য কোন সুরভি পদার্থ? তোমার সোরভে আমোদিত হইয়া আমার চিত্ত মুখাপ্রায় হইতেছে"। ইহাতে মৃতপিও উত্তর করিল, "আমি অতি সামান্য অপকৃষ্ট মৃ পিও, আমি কিছকাল সৌরভপূর্ণ গোলাব-পুষ্পের সমভিব্যাহারে বাস করিয়াছিলাম, এ কারণ তাহার সৌরভ আমাতে সংক্রান্ত হইয়াছে। যদি আমার তাদ্যা সাধুসক্লাভ না হইত, তাহা হইলে আন্মাকে সামান্য মৃত্তিকাই পাকিতে হইত"।

#### রাজন্কীবের মাহামা।

"একদা রাজা নৌদেরবান্ মৃগয়া করিছে
গিয়া বনমধ্যে শিবির সংস্থাপনপূর্বক তাহাতে
পাচকদিগকে শীকার করা পশু পাক্ষর মাংস
পাক করিতে আদেশ করিয়াছিলেন। তথায়
লবনের অভাব প্রযুক্ত রাজা ভ্তাবর্গকে সমিহিত গ্রামহইতে কিঞ্জিৎ লবণ আনিতে অনুমতি
প্রদান করিলেন, এবং কহিয়া দিলেন; "লবনের
যথার্থ মূল্য যাহা হইবেক, তাহা প্রদান করিতে
কোন মতে জুটি করিও না", ভ্তােরা কৃতাঞ্জলিপুটে
রাজসমকে জিজ্ঞানা করিল, "মহারাজ। এ তৃক্ত্
বিষয়ের নিমিত্ত এতাদৃশ আশক্ষা কেন হইতেছে?
ইহাতে কি অনিষ্টই উৎপন্ন হইবেক?" রাজা উত্তর
করিলেন, গ অপকর্মনাত্ত অশেশ ২ আরক্ষ হইয়া

এই বিস্তৃত জগতীমগুলে বহুলপ্রচার হইয়া থাকে।
প্রত্যেক নৃত্তনং দোব কালসহকারে পরিণানে বন্ধমূল হুইয়া উঠে। রাজা হুইয়া স্বয়ং যদি কাহারে।
উদ্যানস্থ বৃক্ষহুইতে অন্যায়ে কোন একটি কল
পাড়িয়া লন, ভাহা হুইলে ভাহার ভূত্যেরা তাহার বৃক্ষ সমূলে উৎপাটন করিয়া কেল। যদি
রাজা ভূত্যবর্গকে কোন প্রজার হুণ্স কুরুটের পাঁচে
ছরটি ডিম্ন বলপূর্গক আনয়ন করিবার অনুমতি
প্রদান করেন, ভাহা হুইলে কি ভাহারা ভাহাদের সমস্ত পাক্ষ আনিয়া শৈল্যপুকৃ কোবাব ) করিতে কালব্যাজ করে? দুরাত্মা রাজা
কদাচ দায়কাল অবস্থিতি করে না। কিন্তু ভা
হার কুরায়াজাত অকার্ত্রি দিগদগন্ত ব্যাপিনী
হুইয়া চিরস্থায়িনা থাকে লে

ওক তর ভর মন্তরের নাশক।

এক রাজা এক জন বালক ভৃত্য সমভি-ব্যাহারে এক পোতে আরোহণ করিয়া বনিয়া আছেন। ভ্তাটি জন্মাবিজিলে সমুদু নয়নগোচর করে নাই: সুতরা সে পোতাদির গুণাগুণও জা-নিত না। একারণ সে বালক রোদন ও পরীতাপ कतिए नाशिन এवः नमूर्मुत जतकं म्यान কম্পামান হটতে লাগিল। বাজা তাছাকে যথেষ্ট नाइम ७ यद्भारतानां उना जुना श्रहान कतिरवं अ প্রবোধমানির না। তাহার ক্রন্সনে রাজার কৌ-তুক-করণ-বিষয়ে মহাব্যাঘাত হইতে লাগিল,কিস্ত তদ্বিষয়ে কোন উপায় দেখিতে পান না। এমত সময়ে এক জন পোতস্থ দার্শনিক পণ্ডিত রা-कात निक्षे निर्वरन कतित्वन ; "मशताक, यरि অনুমতি করেন তাহা হইলে আমি উহাকে माखुना कतिए भाति "। ब्राका कहिएलन, "हेहाब পর আর দয়ার কর্ম কি আছে"? দার্শনিক পো-তবাহদিগকে আজা করিলেন, ''তোমরা এই বাঁ-।

জ্জন্ হইতে২ যখন সে ছুবু২ ছইবেক তথন তাহা-কে কেশে ধরিয়া গদর্গার পোতে ধর্ষণ করিয়া তুলি-ও 😘 ভৎপন্ন মধ্যে ভাহার৷ বালককে তজ্ঞপ করিয়া তুলিলে পর বে পোতের এফ কোণে গিয়া নিস্তর্ম **इ**इष्ट्रिश विभिन्न राज्या हेब्राट**े পরম সম্ভ ই इहेटनन,** अव- कि। शामिद्वन, "अिक श्रकात इडेल "। माम-নিফ উত্তর করিলেন, "প্রথমতঃ এ বলেক জলম-জ্ঞনজন্য বিপদ্ ঘটনা ও পোতাবলম্বনে তাহাহ-ইতে পরিআণ পাইবার বিষয় কিছুই অবগত ছিল না। এই ক্লনে ক্লেমে পতিত হইয়া পরে সুখজনক রসাঝাদন করত অনায়ানে তজ্জনিত সুথ অনু-ভব করিতে সমর্থ হইয়াছে।

•যে ক জির কুমিবৃতি ইইয়াছে তাহার ফবশজ্-তে স্থা থাকিতে পারে না। পরস্তু যাহা তাহার দেখিতে অসুথকর আমার পক্ষে তাহা দর্শনমাত্র ক্ষদয় প্রকল্প হর্যা উঠে। বর্গীয় অপুরোগণের পক্ষে পাবনলোকও নরক তুলা প্রতীয়মান হয়, কিন্তু নরকবাদিদিগকে জিভাগিলে তাহারা কি সেই লোক স্বৰ্গত্ব্য করিয়া জানায় না ''?

#### शहबिकात विका

'আমার ফারণ হয়, আমি বালগাবস্থায় বড় ধ্র্যা-সময়ে গাভোতান প্রংসর ভাগদীপরের উপাস-চেছিলাম. এমত সময়ে দেখিলাম অপরপের স- আমা অপেকা সর্বতোভাবে শেষ্ট বোধ হয় "। মন্ত লোক সামাদের চতুদিকে শয়িত ও নিদ্ত হইরা রহিরাছে। ইহাতে আমি পিতাকে কহি- "একদা আমি যৌবনমদমন্ততার অভী-

লককে সমুদের জলে কেলিয়া দেও, উন্মজ্জন নিম- বিই কথা শুনিবামাত্র মৎপিতা উত্তর করি-लেन, " वार्ण (इ! अहे बाल शहकीश माय्वन উদ্ভাবন না করিয়া যদি তুমিও নিদ্ভি থা-কিতা তাহা হইলেও বড় ভা**ল হইত "। আত্মশ্ৰা**-ঘী ব্যক্তি শ্রাঘার অবগুণ্ঠনে বদন আবরণ করিয়। আপনা ভিন্ন অন্য কিছু দেখিতে সমর্থ হয় না। যাহার দৃষ্টি পরমেশ্বরে সমর্পিত থাকে সে কি आलनाइहेट काहारक अधिक (मायी विरव-**इन। क्ट**इ ??

> পরের নিকটে উপকারবশতা, স্বীকার অপেকা কারিক অন সহা করা অেয়ঃ।

একদা কএক জন একত্র হইয়া হাতিমতা-ইকে জিজ্ঞাসা করিল, " আপনি কি কথন কা-शास्त्र वालनब्हेट व्यक्ति मनाभग्न (मथिया-ছেন "? ভদুত্তরে তিনি কহিলেন, "এক দিবস আনি এক আরব-রাজনব্রির সহিত কোন বনো-দেশে গমন করিয়া দেখিলাম এক কাঠুরিয়া কতকগুলিন কণ্টক্যুক্ত ভালপালা একত্ত ক্রিয়া বোঝা বাঁধিতেছে। ভাহাকে জিজাসিলাম, কেন এত ক্রেশ করিতেছ? হাতিমের অতি-থিশালায় অনেক লোক গিয়া অনায়ানে আ-হার করিয়া আইনে; তুমি কেন তথার গমন ভা ছিলাম। আমি প্রতিনিয়ত রাত্রিযোগে যথা কর নাশ। সে উত্তর করিল "যাহারা পরিশুন করিয়া দিনপাত করিতে সমর্থ হয়, তাহারা নাদি করিতাম: এক রাজি আমি পিতার সমাপে কেন হাতিমের অধীনতা স্বীকারে স্বাধীনত্ব চুত উপবিও ও বিনিদু ছট্য়া ধ্র্পুত্তক পাঠ করি- ছ**ইবেক ?? আমার বিবেচনায় দেই ব্যক্তিকেই** 

মাতৃপ্ৰতি ভক্তি।

তে লাগিলাম, • দেখুন ইহারা সকলেই নিদ্বায় ভুত হইয়া জননীর প্রতি কঠোর বাক্য প্রয়োগ অচেতন ও মৃত্যায় পড়িয়া আছে, উপাসনাথ করিয়াছিলাম; ভাছাতে তিনি নিভাস্ত বিদ্য-কাহাকেও ভূমিপাতিভজানু দেখিতে পাই লাগ মালা হইয়া গৃহের এক আতে বসিয়া রোদন

कत्रक किंद्रक नागितन, "है। ति जाति य এত কেুশে বালগাবস্থায় পালন করিয়া এই তব্দ-ণভাবস্থা প্রাপ্ত করাইলাম, ভাহার কি এই প্রতি-কল দিলি? এতাদৃশ নিষ্কুরতা প্রকাশের কি আর পাত্র পাইলি না? হায়! সন্তান নিংহবৎ পরা-ক্রমশালী হইলে বৃদ্ধমাতার কথায় তাহার চিত্ত আকৃষ্ট হয় না; পরস্তু তোর নিরুপায় শৈশবাব-স্থার কথা যদি ক্ষণকালের নিমিত্ত তোর মনে থা-কিত তাতা হইলে কি চুট আমাকে এতাদৃশ কঠিন বাক্য কহিতে পারিভিন্? এখন তোর বল পরা-ক্রম দিংহের ন্যায় ছ্ইয়াছে, এবং আমারও এই শেষ কাবস্থা (

कभानुमादत भावणातक वितुक्त करा कर्डवा, उपनाथांग 医红虫 多数十

• এক ব্যক্তি নেত্রোগী চন্দুর **যাতনায় এক** অশ্চিকিৎসকের নিকট ঔষ্ধ লইতে গমন করি-য়াছিল। উক্ত চিকিৎসক পশুদিগকে যেৰূপ করিয়া থাকে তজ্ঞপ ভাষার চক্ষেও ঔষধাদি দিল্ল। রোগী ঐ ঔযধপ্রভাবে একবারে অন্ধ रुहेशा (शन, किविक्यु ताशाक व्हेशा विष्ठांद्रकत नि-কটে তাহার নামে অভিযোগ করিল। বিচারপতি चर्रः शर्मे का इहेट जाहा इहेट कराठ व्यापन । নেত্ররোগের চিকিৎসা অশ্বচিকিৎসককে দিয়া করাইতে না"৷ এই গণ্পের তাৎপর্য্য এই যে य वर्गक कठिन कार्या नाध्यन अप्शनमीयि नि-युक्त करत, अवः উত্তরকালীন পরীতাপ বিষয়ক চিন্তায় পরাধ্যুথ হয়, বিজ্ঞ পণ্ডিভেরা ভাহাকে बक प्रकात मूर्थ विनिद्यारे गन्ध करतन। य वास्कि खामो हुत्र त्न कथन धक्छत्र वर्गणादात छात्र कराष्ट्र

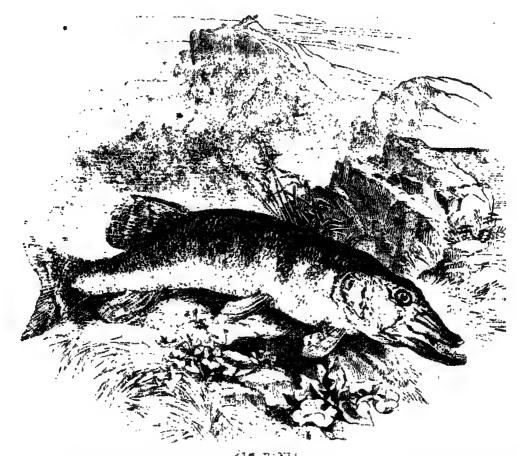
याहाता मापूत यूनन करत, जाहाप्तिगरक अक প্রকার ভদ্রবাপ কহা যায়, কিন্তু তাহাদের হত্তে পট্ট বন্ধ বপদ করিবার ভার বিশ্বাদ পূর্বক কে नमर्भव कतिया थारक?"

হিতকারির আদম কালে তাহার কথায় নির্ভর করা (अंग्रुकत नरह।

ইছা বিশিষ্টৰূপে পরিক্রাত আছে, যদি এক বালককে এক প্রচুর ভারবাহী সুশিক্ষিত উট্টু পৃষ্ঠে আরোহণ করাইয়া দেওয়া যায়। আর বালক যদি দুৰ্গম শঙ্কাজনক পথ দিয়া তাঁছা-क लहेशा याहेरठ हारह: अवः टेमवाय यान তাহার হস্তহইতে রাশরজ্জু নরিয়া পড়ে, তাহা হইলে ঐ উট তাহার চালনে মানে না. কেননা বিপদের কাল উপস্থিত ছইলে তথন ছিডকারীও নিতান্ত অহিত হয়। রা, না, বি,

# কৃতিম মুক্তা।

পর পৃষ্টে যে মৎদ্যের চিত্র মুদ্তি হইল, ডাহা বিলাতে সুখাদ্য বলিয়া 🏯 💥 প্রসিদ্ধ আছে; এবং মৎস্যপ্রিয় ব্য-অনুমতি করিলেন, "তুমি দুরীভূত হও; তোমার জিরা ইহাকে ধৃত করণার্থে অত্যন্ত বাগু থাকে। এ হানির অভিযোগ গুলি নহে। তুমি যদ্যপি জেসি নামা এক সাহেব লেখেন, যে " আমার প্রিয়পাত্র মধ্যে ব্রীক মংশ্য সর্বাপেক্ষায় বিশেষ की ज़ानुक, अवः जानम्यूष । श्थितीमखता देशा অপেক্ষায় অধিক চঞ্চল মৎন্য আর কুত্রাপি নাই; অপরাহে জল নিকটস্থ মক্ষিকা ও অপর কটি ধৃচ করণে ইহারা যৎপরোনান্তি তৎপর बदः मईनारे ठकन बदः हर्ययुक्त पादक।" शतु এই মৎস্য সুথাদ্য বা ভড়াগাদিতে দেখিতে সুন্দর বলিয়া তাদৃশ প্রদিজ নহে। ইহার শল্কের কোন সন্মান্য ব্যক্তির হত্তে সমপ্র করে না। নিমে এক প্রকার রজত-চূর্বং অতি সুক্ষ প্



দাথ থাকে, এবং ভাহ ই এই মংস্যের মাহাত্ম্-বলির প্রধান কারণ 🗷 পদাথহইতে ভাহার এক শৈশ্পকারের। ভড়ার, এক প্রকার অভিসুন্দর ক্তিন ন্ত। প্রস্তুত করিয়া থাকে। এই পদার্থ-রোছিত াতীয় সকল নগবেন্ট প্রাপ্ত চওয়া যায়, िष्ठ मुखा नियागाराथं (काशाकेनेट्टने संस्टाग्र मास्क मनेश्रयाम, ७९ ९ ७ १ १ त्रांक मटरनात मास्क, এব॰ ভাষমন্ত্র রোচ এবং (ডেন্ \* মুখ্নের শক্ত। বীবংগ্রে এই শক্ল মথসঃ খৃত করত ভাছার শ্লম-বকল মুক্ত করিয়া লয়, এবং মুক্তা-প্রস্তত-কারিদিগকে বিক্রয় করে। মুক্তা-প্রস্তুতকারীর। এ প্রে সাবধানে ধৌত করত জলে ভিজাইয়া हत्याः पूरे जिस मिन खाल जिलिशा थाकिता

\* এই মনসাহায়র চিল চারিলাথের ছিডায় **এবে মানুত আতে।** 

রজথবৎ চৃণ পদার্থ শক্তেইতে পৃথক্ হয়: े शम्रार्थ कि. धिः शतिकात गेंटम्त कल. वा শালক-সকল বৌপাবিৎ চাকচক,শালী বোধ হয়, শিরিস মিশ্রিত করভ তাহাই তবলকির ভি-তরে বা উপরে লিপ্ত করত শুক্ষ করিলেই মুক্তা প্রস্তুত হয়। এই ক্রিম মৃক্তা প্রস্তুত করণ-कार्या चात्रक नियुक्त चार्छ, এव॰ এजमर्थ श्रेखा-বিত মংসেবে শক্ত টাকায় > বা সাং তোলক পরিমাণে বিক্রীত হয়। রোহিত, কাতলা, বাটা প্রভৃতি মৎস্য ব্লীক, ডেন্ প্রভৃতির সহিত এক শুণাভুক বটে, বোধ হয় তাহাদের শক্তে যে র্জতবৎ পদার্থ আছে, ভাহাতেও মুক্তা প্রস্তুত रुइटिङ शारत, अञ्जाव छिष्टिस्य श्रीका करा कर्ज-वा। य वाकि व विषय कृष्कार्या क्रेट्न किनि चवन्।ई श्रह्नार्थ डेशास्त्रंन कतिएड शाहिएनम

# विविधार्थ-मञ्जूर,

পুরারত্তেতিহাস-প্রাণিবিদ্যা-শিশ্প-সাহিত্যাদি-দ্যোতক মাসিক পত্র।

৩ পর্ব ]



# नू ऐका-जािज विवत्र ।

000000 (छ/क-कोर्वत्र व्यावान-निमित्र পৃথিবীর বিশেষ ২ স্থান নি-र्षिष्टे चारक्। कान कीव गर्दछ 💯 বাস করে, কেহ সমভূমিতে 🖦 वस्म कर्द्र, क्र वा अस्त्र मर्द्य वाकिरबर्

নির্বিঘু দেহযাত্র। নির্বাহ করিতে পারে। কেছ কেই উফ-স্থান-প্রিয়, কেই সাম্য-স্থান-প্রিয়, কেই वा मोज्यधान-एएटम निवादनत्र हेम्हक। श्रीम. উপভাকা, অধিতাকাদি ভেদেও ভলিবাসি জী-(वत (छम एत्। (कवन मन्य) अहे भित्रत्यत अधीम गरहः (न श्थियोत नर्दा यान कतिर्घ नक्त्र ; रिममक्टलक चनका भीक, वा निव्यक्त विकरेष

मूश्मक्। भीया, किकृटकरे काशांक छीठ कतिएक পারে না। হিম্মপ্রনের ভানে ২ এমত শীত যে তথায় বর্ষের নয় মাস ক্রমাগত জল জমিয়া थारक, अध्यासा ना भनाहरन शासाशयुक्त मुव জল পাওয়া ভার: অথচ তথায় স্বক্লে মনুষ্য বাৰ করিতেছে। অপর সাহারা-মঞ্জুমিতে এমত श्रीमा या मन्या महिता होत्पु खारण उरकारार खक्त श्हेश योग, **পठिवांत व्यवकामा थाएक ना**; किन्नु (म जान अ निर्कात नरहा अहे अजाद সর্ত্ত বাবে সক্ষম বলিয়াই মনুষ্ঠের **মাছাত্ম**। कालक निर्काठ इहेबाएइ; शब्द शृथियोत नर्बे মন্য্য আপান কায়িক ও মাননিক ধর্ম নম-ভাবে রক্ষা করিতে পারে না। দেশভেদে মনু-स्थात करम्ब ६ तृक्तिगठ **करनक एउन इहेग्र**। थारक। कृकसन्-शर्वज-निक**ेष्ट प्यजूना मुम्मत्र** নীরপুরুষ, আফরিকার কাকরি, সাওবিচ্-দ্রী-(लंड चन ड) श्रेज़ी, (सिनिनेशूरतंत्र धाक्रफ़, बदः অক্তেলিয়া দাপের অভিচর্মদার দার্ঘকার দৃত্ব-রব, ইহাদিণের প্রতি দৃষ্ঠি করিলে তাহা অনা-য়ালেই সংখোণ হইতে পারে।

স্থা, এবং বর্ণ প্রায়ং ইংরাজদিগের তুলা গৌ-हाकः; शहस्र (मम-वादहात-व**मठः हेहाता (मटह** 

মনুষ্যের তুল্লা বোধ হয়, ভাছাদিণের এক कन्या (मन-वावश्रातत वणकः जाहात निक्रान করা কঠিন। অপত্য জন্মিবামাত্র ভাহারা মন্তব্দের উভয়-পার্মে দুই থানি কাণ্টকলক (তক্তা) এমত नवल वाश्विता द्वारथ, य जन्नकाल-मृद्धा देवा-লকের মন্তক চিরকালের নিমিত্ত চেপটা ছইয়া যায়; আশ্চর্য্যের বিষয় এই যে এবস্পূকারে মন্তক বিক্তাকার করায় তাছাদের বৃদ্ধিবৃদ্ধির কোন হানি হয় না; সকলেই অসভ্যতানুৰূপ मूठ्युत ও कर्षात्रे, बदः बालना मिर्गत श्राह्म न-মত গৃহ-নৌকাদি-নির্মাণে তৎপর।

हें शास्त्र हें हा दिशंदक "मू छे्का-कलवीय " नारम विश्वाण क्रियाह, श्रेड जे मक हैश-দিগের দেশে প্রচলিত নছে। দলভেদে ইহারা व्याणनाहि गरक रान्य, क्रीरेनण, अञ्चाकाम्, मूटरे-लामा वा क्रामूथ् नात्म विथा छ कत्त ।

**बरे काठीय-मन्य/दिशंब अथाम शाम/मृव/** नामन् मरना। छक्छ-कन्ननार्थ हेराता नर्वमा वागु, जवः भौटित धाक्काल नकत्वहै जहे मध्मा থরিয়া শাতকালে ভো**জনের নিমিত্ত ওক** করিয়া উত্তরামরিকার পশ্চিম-৬টে "নুট্ক। কল- রাখে। এই মৎস্য-সন্তুহের শেষ হইলে পর সক-ষ্ঠায়" নামা এক জাতি আছে; তাহার। এই প্র-। লেই আনন্দে মহামহোৎসৰ করিয়া থাকে; এবং ত্তাবের এক উত্তম প্রমাণ। ভাষ্দিণের আহার তৎকালে কোন ২ দলপতি বনমধ্যে গিয়া অনা-ব্যবহার সকল মনুষ্যহইতে পৃথক। রকি-পর্ন- হারে ঐলুক্সালিক মন্ত সাধন করিতে থাকে। তের নিকটে তাত: ও শীতল জানে তাহাদিগের এ তপারীবিগের নাম "তামিশ্"। নুট্কাদিগের আবংস, অথচ বস্থাদি-বপন-ক্রিয়ায় অক্ষ, বিশ্বান আছে যে তপস্ঞা-কালে ঐ দলপতিরা সুতরা তাহারা সর্ব। সলোম ভলুক্চম ধারণ (শ্রোলোক শামা এক দেবতার সহিত কথোপ-করিয়া থাকে। ইহাদিগের অবয়ব থর্ব অথচ। কথন করে, এবং তদনুগুড়ে দৈবলজি প্রার্থ হয়। त्म याश इडेक, इठार अक र रिवन अक र अन जामिन् (एटर् क्कर्क्यविनिके वर्ष चान्द्रापन वरः সর্ব। নানা প্রকার মৃত্তিক। লিগু করিয়া রাখে। মন্তকে বলকন-নিশিত রক্তরণ মুক্টাদি ধারণ করত हेराफिश्व मछरकत्र श्रक्ष व्यवस्त, वाश्वताशत शुम-मर्था श्रर्टमा करता व्यवस्थान-वृष-

विनिञ् नकरमञ्ज अमास्त्रम कितिएक बार्कः किवन धात्रभ कितिस बारक, बावः मृत्रेस बाता प्राथ उझक-मखबात्र। जाहात वाह्रहरे पूरे जिन गुान माःन **एः जन कविया वया जे एः जन-नमस्य दे**थर्य। जात-ভাৰতে অক্ষ তাহার অত্যন্ত নিন্দা হয়; তা-मिम् अनाशास्त्र अवः भीघू मः भन कतिश माः न ना नहें एक भावितनहें निका हहेगांव मछावना। लारक প্রচরিত আছে, যে নুট্কারা নৃমাংসাশী; পরম্ভ উল্লিখিত-প্রকারে যত মাংস ভোজন হই-য়া থাকে, তভিন্ন অন্য নৃষাংস ভক্ষণ করে না।

मूहेकान्टिशत ভाষার लक्ष्य বিবেচনা করিয়া দেখিলে বোধ হয়, তাহারা আজতেক \* জা-তির শাখা হইবেক। ঐ উভয় জাতির ভা-यात व्यत्नक दाका "९म् " दा "९मे " भारक শেষ হয়, এবং উভয়ই এক অর্থে ব্যবহাত; उम्रथा, "बाश्कूरेद्भिष्ण्", बालिस्मः "(डा-মক্তিক্সিৎল্", চুহুদ; "ছিত্ল্ত্জিৎল্", জ্-छन; " ए जिए जिस् कि महेन्", शृषिरी; " आग्रका রাৎল্", যুবতী, রমণী, ইতাদি।

ইহাদিগের আবাস কাষ্টনির্মিত, অত্যন্ত অপরি-क्छ, बदः मरगागरस পরিপূর্ণ। ভন্মধ্যে कार्ष খোৰা পুত্তলিকাদি অনেক থাকে। ১৪৫ পৃষ্ঠে মুদ্ধিত हिट्ड मुरेटि व्रमाकात शूखिल मृष्टे रहेरवक। कथमर শংশ্য ধরিবার শমস্ত ব্যাপার ভাষ্চের গৃহে অ-ক্লিড থাকে। ইহাদিগের আবাদ যজ্ঞপ অসভঃ हेरापिटगंत वज्र ७ जन्मूना । कार्णाम वज्र माज मार्रे; वज-वशन-कर्में छार्चात्रा कांच मर्ट, मक-लाई शाहेनवृत्कत छाल-निर्मिष्ठ अक-श्रकात मामूत

कं विविधार्थत १ थरक, ३२७ शृष्टं और साहित विवृत्त चार्ष्ट ।

नाइनिक वा नाइन-मूच/ाजित चिंडनायी (काम २) हम् कि चम/ काम मलायहर्म शाहेत उपात्री পুরুষ ভাহার সন্মুখে অগুসর হয়। ডামিশ্ ঐ মাদুরের অভঃপৃষ্ঠ আবৃত করে। কেহ২ মলি-অমত ব্যক্তিকে দেখিবামাত্র ভাহাকে ধৃত করত। দার ন্যায় এক-প্রকার কমল প্রস্তুত করিয়া থাকে। शूर्वरे डेक रहेशास्त्र, त्य मुहेकान्तिगत श्रथान ं थामा-मुवा मथमाः । अ मुरवा जाहा किरणेत शृह नवम-পূर्वक सक्त थाकारे धनःमनीयः य वाकि शतिशून यादक, जवर छम्गरस जे गृदर धारकम করাই কঠিন। মুটকারা ঐ মৎদ্যের তৈল পান করে, ভদগুদারা এক-প্রকার রোটিকা প্রস্তুত করে; अवः भोडकारम एकम्परमात व्यवस्थान कीवम धातन करत।

> নুট্কারা অভ্যন্ত অসভ্য, সুতরাং তাহাদিগের বৃদ্ধিবৃত্তিও সৃতীকু নছে; মৃগয়াও মৎসা-ধরণ ভিন্ন অন্য কোন কর্মে তাহারা নিযুক্ত থাকে না; **अवर चा**ठवन-विषय ब्रक्तवर्ग देशीय नामा मार्किन দেশীয় বিখ্যাত-জাতিহইতে সর্বতোভাবে অথম।

### कोजूकावर जाभए।

श्रीक्षेत्रिक श्रीक श्री निं निंध नामा अक जन धनाए। विनक् क्ष्युक्तुकृत्रकृति व्यथ-वाशिका निन-याश्रम कतिकः এবং তদ্যায়া আপন সম্পত্তিরও বিশেষ প্রা– চুর্য্য জন্মাইয়াছিল। তাহার পর্বোক-প্রাপ্তি হইলে, তাহার এক নাত্র পুঞ গ্রিগোরিও পৈত্রিক-ঐশ্বর্য-অধিকরণ-পূর্বক পিতৃব্যবসায়ে नियुक्त रहेव। वानावकावधि रय-भन्नीका कना-তে ত্রিদ্যায় সে উত্তম পারদর্শী চ্ইয়াছিল, वरः नन्यां । व नक्यं। त नाक्रां नम्ब-प्राप्त-वानित अपन्छ नमाम्ब नष्डांग कतिन।

তাহার গৈত্তিক-সম্পত্তি-প্রান্তির কম্পক্ষার भारत जाम-मभारत अक महायादनार मन स्टेग्नाहिन इ

छवात्र ज्ञा-किञ्च-विक्यां छिनात्य ज्ञानक इत-विक्तित मभागम एष्ट, अवः ग्रिगिति ७७ छथात्र উপস্থিত ছিল। অশ্ৰ ক্ৰয় করাই তাহার এক-মাত্র অভিপ্রায়, অভএব বে এক সহসু বর্ণমুদ্রা-সমভিকাহারে লইয়া তথায় আগমন করে; পরস্তু প্রথম-দিবদের হত্তে কোন উত্তম অশ্ব উপস্থিত না-থাক -প্রযুক্ত সে সকল অশ্বের পরী-का করিয়াও কোন অশ্ব ক্রয় করিলেক না। ঐ शतीका-कत्रन-मगर्य **१८७ मगर ज**महे <mark>मन</mark> বলিয়া গ্রিগোরিও মনেমনে উৰিষ ক্টতে লা-গিল, পাছে অখ-বিক্রেতারা মনে করে যে এ ব্যক্তি ভণ্ড, হয়ক্রয় করিবার ধন নাই বলি-য়াই যাবদীয় অখের নিন্দা করিতেছে; এবং ঐ অপবাদের নিরাকরণার্থে মধ্যে২ আপন कहित्मा मृत्रात जेशत वहे श्रकात इन्डक्स করিতে লাগিল. যাহাতে নিকটস্থ ব্যক্তিরা অনায়ানে জানিতে পারে যে তাহার কটিদেশে चात्रक मुद्दा चाहि। जे नगरत अक पूर्व जी ভথায় উপত্তিতা ছিলা বিদ্পাকারী মৃদ্রাধূলি ভাচার কণগোচর চইবামাত্র সে একেবারে करेश्या इक्षः व मून् ना श्रीष इकेटन कान गएक काहोत मनः मास्त हत ना, व्यक्तित म হাট ভাজিবামাত্র গিংগারিওর পশ্চাৎ ২ গমন कद्रक टाशांत कारारमंत्र निर्णेष्ठ कविरल्कः; अव॰ ভত্ততা ভূত্যদিশের নিকট ভাষার নাম-খামের পরিচয় লইয়া স্বাভিষ্ট-নিদ্দি করিবার উপায় কম্পনা করিতে লাগিল।

অন্ধদিবস হটে বৃথাশুমে শুন্ত হইয়া অপরারে গিগোরিও বাসায় শয়ন-পরায়ঀ আছে,
এমত সময়ে এক জন ভৃত্য আসিয়া কহিল;
শমহাশহের সহোদরা আপনার দর্শনোৎসুকা
হইয়া সদাশীঃ-পুরংসর আপনাকে আন্তান করি-

फिट्न "। शिर्गातिक करिन; अभागात शिन् ভার আনি এক-মাত্র অপ্তঃ, আমার নহেছিলা कि श्रकात नग्रव ?" ज्ञा कविनः " वर्गनानी चार्छानिও महानम् अहे नगरत नानकत्र-कानीन আপনার মাতার পাণি-গুৰ্ণ করণে, এবং ু তাঁছার গর্ভে প্রথম এক কন্যার পরে আপনার জন্ম ছয়; আপনি ভূমিষ্ঠ হইবার পরেই আস্তোনিও মহা-শয় জ্ঞার সহিত বিবাদ করত জ্ঞা-কন্যা-ত্যাগ-পূৰ্বক আপন অপোগঙ্ভ পুঞ লইয়া মেপল্ন্-রাজ্যে প্রস্থান করেন। আপদি সেই অপৌ-গণ্ড বালক, এবং আমি আপনার ভরিনীর ভ্ত্যাশ অতি শৈশবাৰস্থাতেই গ্ৰিপোব্লিওর মাজু-वियाग इरेग्नाइल, এव॰ त चालम माज्-वृता-ন্তুও কিচুই জ্ঞাত ছিল না; অপর সে জভ হই-মাছিল যে ভাছার পিতা কিয়ৎকাল রোম-সগরে বাস করিয়াছিল; অতএব ভৃত্তোক্ত এই ও এব-ম্পুকার অন্যান্য বিশ্বাসঞ্জনক বাক্যে মুখ চ্ইয়া তাহার সহিত সংহাদরা-দর্শনে যাত্রা করিল।

প্রতাবিত ত্রা এক প্রশন্ত অক্টানিকার বাস করিত এবং তাহার গৃহে সুবেশা দাসী ও তৈজ সাদি দুব্য সামগুরি কিছুই অপ্রতুল ছিল না। তদ্প্তে গ্রিগোরিও বোধ করিল, গৃহবামিনী অবশ্যই ভদু রমনী হইবেন, এবং ভাহার সহিত বাক্যালাপে মুথ্ম হইয়া পরম বিশ্বত্ত হইল যে নে অবশ্যই ভাহার ভনিনা বটে, ভাহাতে ভিলার্জ সন্দেহ নাই। অপর এ শঠনীও ভাহাতে ভিলার্জ সন্দেহ নাই। অপর এ শঠনীও ভাহাতে ভিলার্জ সন্দেহ নাই। অপর এ শঠনীও ভাহাতে প্রসারণ করিতে জুটি করে নাই। নে গ্রিগোল প্রসারণ করিতে জুটি করে নাই। নে গ্রিগোল ভাহাত এই সংখাধন-পূর্ণক ভাহার শলনেশ ধারণ করত মন্তকের আত্মণ ভাইন, ও নাড্-পিত্র-পোক পুনক্ষাণিন হইয়াকে কলিয়া জন্মন করি-

তে नाशिन। भज्भगत यथ्भातासि नमान्त (जूर-विषयक-समाविध-वाक्यालारण किवाब-मान रहेता गिर्गिति वानाय याहेवात मानम প্রকাশ করিল। কিন্তু ঐ জ্রী ভাষতে সম্মত मा रुहेश कहिल; "आमि जामात गरहामता; আমার বাটীতে মদ্য আহার না করিয়া তুমি কি প্রকারে অমাত্র ঘাইতে চাহ? ত্রিংশৎ-বৎসর-পরে ইষ্টদেবের ক্পায় অদ্য ভাুতার সহিত সাক্ষাৎ হইয়াছে; তাহার সহিত একত্রে ভোজন না করিয়া প্রাণ ধারণ করিতে পারিব না; অতএব তোমাকে অদ্য অবশ্যই আমার গৃহে ভোজন করিতে হইবেক।" গ্রিগোরিও কছিল; "বাসায় সঞ্চিরা আমার প্রতীক্ষা করি-তেছে: यामि य পर्यास मा याहेव मा नर्यास তাহারা আহার করিবে না; অতএব জ্বন্য জা-मारक कमा कुद्र, चामि क्ला चानिया अधात ভোজন করিব।" ঐ বাক্য শুবনমাত্র বাক্চাতুর্যে অত্যন্ত-কুশলা কণ্পিতা ভগিনী অঞ্চ-নিক্ষেপ করিতে ২ কহিল; "ছে বিধাতঃ ৷ আমার ভাগ্য এমত মন্দ। ভূমগুলে আগ্রীয়-মধ্যে এক-মাত্র ভাতা, আমি তাহারও সুহপাত্র হইলাম না: ভাই, তুমি আমাকে পূর্বে জানিলে আমার গৃহ স্ক্র্যাপ করিয়া ভেটেরাখানায় যাইতে চাহিতে না। হার! কি দুর্ভাগ্য। আমরা এক পিতার সম্ভান, এক গর্ভে জাত, ও এক-মাতৃ-ন্তনে প্রতিপালিত হইয়াও পরস্পর চিনিতে অক্ষম হইলাম। গ্রিগোরিও, মা বর্ত্তমান থাকিলে তুমি কি এমনি করিয়া আশার মলোবেদনা দিতে পা-ब्रिट्ट?'' **এবং এই कथा विनया चा**छा**छ क्रम्मन** করিতে লাগিল। গ্রিগোরিও একান্তে অবসৃত म्हेर्छ न। शांकिका अन्तरगट्य इम्पर्यामनी छिनिन निकार एका समादर्भ अहिता

দৈৰ বা কম্পিত ৰ্যাম্বাতে ভোজন-সমাপনে প্রায়ঃ ৯ ঘণ্টা ক্লাত্রি ছইলঃ ছৎপরে গিগোরিও वानाय याहेवात প্रजाव कतारङ उद्धिनी कहिन; "ভাুতঃ আমি বড় দুংখিত হইলাম যে আহার প্ৰস্তুত হইতে এত বিলম্ব হইয়াছে; কিন্তু একণে ভোমার বাদায় যাওয়া কোন মতে উচিত নহে। তুমি বিদেশী; রোম-মগরের পথ ঘাট কিছই জ্ঞাত নহ: এই অধাকার রাত্রিতে তুমি কো-থায় যাইতে কোথায় যাইবে তাহার হৈয়ঁ নাই; অধিকস্তু এ নগর দস্যুতে পরিপূর্ণ; স-क्यात शत बात-विहर्माम योवेट वर्वेट प्राप्तत আশা পরিভাগে করিতে হয়। আমি জানিয়া ভোমাকে কি প্রকারে এমত নঙ্কটে প্রেরণ করিব? তুমি অন্য এই খানে অবস্থান করঃ कना প্রাতে বাসায় যাইবে।" গ্রিগোরিও এই वाका जैलंद्यन कतिया वानाय याहेवात जात्नक চেষ্টা করিল, কিন্তু কোন মতে মায়াবিনী ভগি-নীর অনুরোধ থণ্ডিতে পারিল না; অধিকত্ত চোরের ভয়ে বর্ণমূদুাগুলিন সর্বদা আপান কটি-प्राप्त तक রাখিত, তাহা मह्य वहेश। तक्रमी-योगि पम्।शूर्व-भाष जुमन-कहा कान मार्ड শ্রেঃ নহে, বোধ করিল; সূতরাং সে বাজি তাহার তথায় বাস করাই স্থির হইল; এবং তাহার ভগিনী ঐ অবস্থানের বার্ডা তাহার বা≁ मात्र পঠि।हेट७ উদ্যত। इहेल।

রাত্রি দশটার সময়ে গ্রিগোরিওর ভগিনী তাভাকে সুসজ্জীভূত এক ঘরে লইয়া গিয়া কহিল;
ভাতঃ দুঃখিনীর এই গৃহে অদ্য শায়ন কর;
রাত্রি-মধ্যে কোন দুবেরে প্রয়োজন হয় এই
উপস্থিত ভ্তাকে অনুমতি করিও।" এই কথা
কলিয়া এক অন ভ্তাকে সন্ধান রাখিয়া কে

ি গুগোরিও ঘরের চতুর্দিণ্ বিলক্ষণ করিয়া যাহা হইবার তাহা হইয়াছে, এইকাণে প্রনায়সঃ निश्चीकान कत्रज, मक्स बात भवाक बहर्ख वस कड़ १- शूर्वक (मरुइइ) ए । शासन विद्यापि विसुकः করিয়া শ্যার উপর স্থাপন করিল, ও একবার यहिटफानाइटेट आमिया नयन कविरव मानरम ভূত । क जिल्लानि**ल, "विटर्फन याहेवात जान** কোথায় 🕾 বে তদগৃহ-পার্শেই এক কাষ্টের বারাপ্তা দেখাইছ: দিলেক: কিন্তু গ্রিগোরিও তথায় যাই-বামাত্র ভাহার ভল ভাঙ্কিয়া গেল; এবং গ্রিগো-हिंड उतिरम् এक सनकृष्ट निপण्डि रहेन। जे मक्रांटे रन शुनः र जुडारक डाकिन, किंख रकह উত্তর দিলেক না; করে কি? বছকটে কুওছইতে উঠিয়া রাজপথে আইল, এবং ভগিনীর ছারে গিয়া উচ্চৈঃস্বরে তাহাকে ডাকিতে লাগিল; কিন্তু কেংই জোন উত্তর দেয় না; অবশেষে এক জন क्षीयशकांत प्रमुग्न भवाक्ष्ट्रेट भित्रश्यमात्र कति-য়া কহিলেক "কে রে, দ্বারে এত রাত্ত্রে গোল করিতেছে? চৌকিদার, এ বেটাকে দুর করিয়া দেহ।" গ্রিগোরিও কহিল; "আমি এই গৃহ-সামিনীর ভাতা: দৈবাৎ বারাণ্ডাইইতে পড়িয়া গিয়াছি: তাঁহাকে একবার <mark>ডাকিয়া দেহ</mark> "৷ দন্য কহিল; "র'খ, শ্যালা, তোর মাতলামি রাখ; শালু দুর হও, নহিলে ইট কেলিয়া তোর মাথা ভালিবা" পিগোরিও নম্ভাবে অনেক मृषु कथा कहिटलम ; किन्नु उमूखरत, कर्षेकारेवा ভিন্ন ভারে কিউই উত্তর পাইলেন না; অধিক্স তাহাদের গোলে প্রতিবাদিরাও উঠিয়া অনেকে म्याकः। करिएक लाशिनः। अभक ग्राह्म अक জন পথিক গ্রিজোরিওর বিবরণ শুনিয়া কছিল; · তোমার ভাগ্য ভাল যে এই দসুদ্দীর সূচ্ছ প্রাণচ্যত হও নাই; এ বেশ্যার পর্নী; এম্বানে এ

कत्र।" कनजः তত্ত्वज्ञ सारकत्र। य अकात्र उद्यान গভর্জন করিতে ছিল ভাহাতে তথায় ভিষ্টৰ ভার ; मूछताः गुरगाविष अक मर्मु वर्गम्म । व वक्कापि চুতে হইয়া-বিষ্ঠা প্রলিপ্তাকে তথাহইতে প্রস্থান क्रिया मत्न क्रिन नगत-मण्यका महीर् मान করিয়া বাবায় যাইবে; কিন্তু এই অভিপ্রায়ে कियमृत याहेए ना याहेए प्रिथन, चज्रधाती দুই ব্যক্তি ভাষার দিগে আনিভেছে, এবং তদ্ঙে মনে করিল, যে ভাছারা বুঝি প্রছরী ছইবেফ, ভাহাকে ধরিতে আনিভেছে, সুভয়াং ষ্ঠ্যস্তভয়ে প্ৰপাৰ্মে এক নিৰ্মন বাটার ভিতর नुकारे उर्देन।

रेमरवत अमनि घटना खे वाकिषय अविषयि वाहीत मध्या প্रবেশ করিল, এবং ভারপ্রান্তে উপবিষ্ট हरेशा शतम्भत करवाशकथम कतिए २ अक व/कि कहिन; " साहै, बनागीए अम्। नफ़ मूर्नम्, त्वाध হয়, পেৎনাটেৎনা কিছু আদিয়াছে"; অপর व्यक्ति विश्वः " छेशूं, जे श्रिश्ने मरहः जहें-থানে কোথাও মল আছে; অথবা আমরা পথে विश्वा भाषाहिया शाकित।" अहे श्रकात किषि-करवालकथरनद्र लाद्र डेस्ट्रा चालन २ किएमन-रुरंट नुकारेक मीश वास्त्रि कतिया मात्रि गर्देख चरष्यन कतिरुष्ठ २ स्मर्थ, गुर्गाति । मननिष ত্ইয়া এক পাৰ্যে দ্ঞায়মান আছে। তাহাদের इट्ड अज्ञालिकवामाळ शिर्शाविक मूम्ब्याग्र হইয়া তাহাদের চরণে প্রতিত হওত আপ্রন मिछारगाइ विवद्गन-वर्गनश्रदेक गाँवजान आर्मना कतिन। जे व/कियत्र क्ष्मिः " कामात्र आज **उत्र मारे, जूमि या जे बूड़े जीव श्रुवेट प्राप्त** वहेशा काविशाह देहाहे शहम आकः अहेलात व्यवश्राय (कामात क्रमक नमर्य वाका केकिक मरह। वामानिस्मत नरक क्या व्यवस्था महान व्यवस्था

व्यम्। । (परणात तालशृत्वत नमाधि इरेशास्त्र, তাহার অভে অনেক বত্মূলা বজালকার আ (हः अक श्रङ्ग्रीय्राकत मृत्र हे नश्नु वर्गमृत्र ; व्यामता शातक्रेट भव जुलिया वे पुरापि नरे-বার মানদে যাইতেছি, তুমি আমাদিগের সা-हारा कतित्व किथिए जन्म शाहेरक शात"।

**ब**इ भन्नामाण जिम साम भाना हिला ; किन्नु পথিমধ্যে এक क्रमें उन्हत्न कहिन; ''ভाই, কোথাও লইয়া গিয়া ইহার গাত্র ধৌত করিয়া দি।" তদনুসারে ভাহারা নিকটত্থ এক কুপের কাছে গেল; এবং তথায় গিয়া কোন পাত্ৰ না পাওয়াতে গ্রিগোরিওর কটিদেশে রজ্জু বালিয়া **जाहारक कृशमरदा निर्माश कितलक; ७ वह**े मरक निषिष्ठ श्रेन य गांज धकाननान उत গ্রিগোরিও রজ্জু নাড়িলেই ভক্তরেরা ভাহাকে পরে এক জন পিপাসু প্রহরির তথার আসাতে তন্ধরেরা অবিলয়ে পলায়ন করিল, সুতরাং গ্রি-গোরিও কৃপমধ্যেই নিমগ্ন রহিল, যত রজ্জ্ব नाएज्न किছुट्डे (क्र डाहारक उपांत्र कर्ब না। অস্ততঃ উক্ত প্রহুরী আসিয়া কুপের রঙজু তুলিতে ২ কহিতে লাগিল; "পাড়ার ছোঁড়ার। कि मूछ; পাতकुशांत मिं शाहांत्र এठ कें वा-धिया करन किता शियाह (य जिलाहे जात; थाक, मन मानारक काल थानाय लहेया यात्छि।" পরে রক্ত্র ত্রালয়া দেখে, ইষ্টকের পরিকর্ত্তে এক দিগম্বর পুৰুষ উঠিল, এবং তদৃষ্টে ভূত বোধে অভ্যন্ত বেগে পলায়ন করিল; একবারমাত্রও किरत চাहिवात छत्रभा रहेल मा।

् शिर्वाहिक अरे धिकादि क्षरहरू मुक हरैया क्रमनिष्दक्रमः वन्।यामः कतिरण्टाः, अयाजः नगरम

পূর্বোক্ত ভক্ষরের। প্রভাবর্ত্তন করত ভাষাকে नकल विवत्र वृक्ति कतिरलक, ও আश्रनामिरणत কিয়ৎ বস্ত্র তাহাকে পরিধীত করাইয়া তিন জনে **এक**ट्या (गांत्र हारन गमन कतिल।

রাজপুঞ্রের গোর ইষ্টকনির্মিত, অভিগভীর কুণ্ডাকার; ভাছার অধ্যেভাগে এক কাণ্ডের নিন্দূকে রাজপুঞ-শব সংস্থাপিত ছিল, এবং গোরের মুখ বৃহৎ এক প্রস্তরদার। আচ্ছাদিত ছিল। তক্ষরেরা আমাদের এ নহিংর দুর্গন্ধে বাঁচ। ভার, চল আসিয়া তিন জনে অনেক-ক্রেশে ঐ প্রস্তরের এক াদেশ কিঞ্চিৎ উচ্চ করত একটা কাষ্টের ঠেকুয়া ं फिटलक: शरद खे भारतत मरधा कि श्ररवंश कित-বে, এই বিবাদ করিতে লাগিল; ভূতের ভয়ে (कहरे ख्यांस यारेट ठाट ना। তব্দরদ্বর ভাড়নার ভয়-প্রদর্শন-পূর্বক গ্রিগোরিও-কে তথ্যধ্যে প্রেরণ করিলেক। দে অগত্যা ভন্মধ্যে গিয়া শবের-বন্ত্রাভর্ণ হরণ করত দক্ষি-টানিয়া তুলিবেক। এই ব্যাপারের কিঞ্ছিৎকাল দিগকে তুলিয়া দিতে লাগিল; এবং তৎসময়ে मरन कतिल; "य এ চোরেরাত আসাকে কোন অংশ দিবেক না, অতএব আমার অংশ এই থানে লওয়াই উচিত"। এই বোধে শ-বের অন্ধ্রীয়কটি লুকাইয়া অপর সকল দুব্য ভক্ত-রদিগকে দিল। তাছারা অজুরীয়কের নিমিত্তে প্নঃ২ কহিতে লাগিল, কিন্তু গ্রিপারিভ প্রাক্ কিছু ছিল, তৎতাবৎই দিয়াছি, আর কিছু नाहे", विलया প্रভाরণা করিতে লাগিল। व्यव-শেষে তক্ষরেরা কট হইয়া গোরাস্থাদন-প্রস্তরের ঠেকুয়া বিমুক্ত করত প্রস্থান করিল; সুত্রাং জাবিত গ্রিগোরিও শবের সহিত গোরে প্রোথিত হইলেন। তৎকালে তাঁহার মনোযাতনার আর ইয়তা রহিল না; কোথায় অখ ক্রয় ক্রিয়া আপনার সুধসম্পত্তি বৃদ্ধি করিবেন; কোমায় नर्वच पूष्क एरेया शानगरन् भावन् एरेखा।

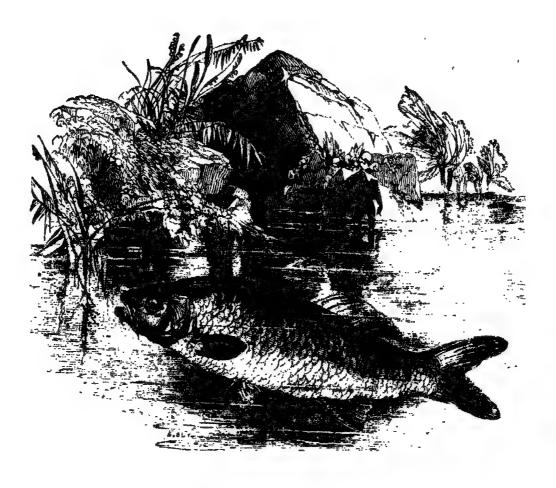
क्रमारन कि मत्नारतम्मात भाष्टि इस? मकनरे অক্কার; নমুখে শব; এবং গোরমধ্যে অনা-হারে মৃত্য উপজিত; ইহাহইতে ভয়কর ব্যা-পার আরে কি ছটতে পারে? পরস্তু কি করেন? ভাষার এনার শক্তি **ছিল না, যে একক প্রস্তর** ঠেলিয়া তুলিতে পারেন: অপর গোরমধ্যে শব্দ করিলে বাহিরে কেহ ভনিতে পায় না; আর গোটকানে শুনিবার লোকই বা কোথায়? অগভ্যা ম্মুর্প্রায়ঃ হইয়া সজল্ময়নে শবের উপর শায়ন 🕆 ফরিলেন। তদবস্তার প্রায়ঃ দুই ঘণ্টা কাল পত চটলে তাঁচার বোধ চ্টল যেন কেছ গোরের প্র- কদাপি যথেপ্রিত মী**নভারে পুলকিত চ্ট্**য়া, কথন ত্তর সঞ্চালন করিতেছে; এবং তদবিলম্বে ঐ প্রস্তর एकीक् छ इश्वः अग्छ नगरा अक् क्वन कहिल, "ভাই, ভোমরা কেই গোরে অবভরণ কর; ইহার এক জন মীনব্যাধ মৎন্য-ধরিবার উপায় ও गर्वा कृत कार्ष्ट, कामि उथाव याहेव माण। इस्त्री-म्टरगत चलाव-विवयक अवधानि मू-অপর এক জন কহিল; "ভবে আমিও যাইব না, পাঠ। গুন্তের রচনা করিয়া গিয়াছেন। ভিনি রো-णात (कर या फेंक"; এই প্রকারে পাঁচ হয় ব্যক্তি হিত-সম্বন্ধে লেখেন, "এই মৎস্য নদী ও গোরের মুথনিকটে বিবাদ করিতে লাগিল; কে- পুষ্করিণী বাদী; ইহার তুল্য আনন্দপ্রদ, সূচ-হই গোরে নামিতে হাকৃত হয় না; অবশেষে এক তুর, রসনা-বিমোহনকারী, আর কোন মৎস্য জন কহিল: "ক্রাজ্ঞা, আমি যাইতেছি, চোরকে মন্যের নয়নগোচর হয় মাই" কলভঃ মৎব্য-ভূতের ভর কি? কিন্তু আছি যাহা লাভ হই- ব্যাধেরা যে রোহিতের প্রশংসা করিবেন, ইহা বৈ ভালার বেলীভাগ আমাকে দিতে হট্বেকণা আশচ্যা নহে, কারণ ছালে ধরিবার উপযুক্ত এই কথা ব্লিয়া সেই ব্যক্তি গোরমধ্যে একটি মৎস্য রোহিতের তুল্য কেছই নছে। णाम धारिके कतिरनाम, किन्नु वे नरभन्ने गिर्गा-

তथन कम्मन वह आह शिंठ गाँहै, किस उम्बद्धात दिशान कतिन; अवः चाराएउँ चारापिदशत अरे डेलन/रमद्र प्रक्रिशास क्रेन।

कार्भ वा विवाजि जाहिज मरमा।

अक्षेत्र अक्षेत्र विकास क्षेत्र क्षेत 🎆 পর্পের। ভদপেকার ন্যন নছে। चामा विकास करन करन क्षेत्र के कर्मा शाया चर्फ-(म्ह-निमधावद्यात्र नम्ख पित्न याणम कङ्क नम्पात जमस्य पूरे बक्षि मध्ना नरेया, বা রিক্তহতে মুমূর্প্রায়ঃ হইয়া, গৃহে প্রত্যা-वर्जन कतिया थारक। अञ्चल्हिन् नामा अहे अकात

ইংল্ণ্ডদেশীয় রোহিত মৎসের দাম "কার্প" নিও তানার পদ ধরিয়া এক টান দিল; ঐ পূর্বকালে ভথায় কার্পনৎসের প্রচার ছিল না। টানিবামাত্র প্রাণ্ডয়ে কে কোথায় যে পলায়ন প্রায়ঃ চারিশত বংসর চ্টল, ভাছা করাসিস্-করিল তাহার কোন উদ্দেশ রহিল না; গোরের দেশহইতে বিহাতে নীত হয়; এবং ভহবধি মুখ রোধ করিবার অবকাশ কোথায়? সূতরাং ইংলত্তের মর্ব্র ঐ মংস্য বাল্লে হইয়াছে; অ-ार्यान्टर लनाइनामखंद शिर्शादिक व्यनाद्वारम (नरक शवना कदिना स्विद्वारक्त, स्वानीक स्वत গোটাইতে নিঃস্ত ইইয়া সহসু সর্গমুদ্ধ পরি- পরিমিত একটি কার্থমংবা সমলক মণ্ড প্রস্ব वर्षि जनातात अवि अस्तोयक लहेन्रा समात्म कतिना बारक, मुख्नार हेन्। जनवात मर्दा



कार्भ ना निजानि (ताविक वह

যে প্রচরিণ্যাদি ব্যাপিয়া কেলিবেক, ভাষা কোন প্রাপ্ত হইলে অনায়ানে মনুষ্যের বশীভূত হইয়া মতে আশ্বর্যা নহে। অপর এই মৎস্য অতি থাকে। এই-প্রস্তাব-লেখক কষ্টনগ্-প্রাণবিশিষ্ট (ক্ঠিন প্রাণী); অনায়াদে বহুতেতে ময়দা খাইতে দেখিয়াছেন। कथिक चाह्न, अनमाक्रिमरभन्न मिटम भीवरतना রোটিকা এবং দুখা খাওয়াইয়া এই মৎস্যকে লৈ-বাল আৰু দন-পূৰ্বক মধ্যে ২ তদুপরি কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ ২ খাদ্য দুব্য প্রাপ্ত হয়। कल निक्षन कत्र चनायात्म (एक मान काल ক্ষতি হইবার আশক্ষায় তাহাদিগকে শক্তিত **रहेट इ**ग्न मा; यथन हेक्स **७ थन**हे नकीन मदम् विक्य कतिए भारत।

कार्ल बरः ह्याहिक मध्ना श्रुकार थाना पुरा

রোহিত-মৎস্যকে এক-শাসকাল স্থলে যাপন করিতে পারে। য়া দেশীয় রাজ্যেদ্যানে এক তড়াগ সাছে, তল্লিকটে ঘণ্টাধুনি করিলেই অনেক কার্প মৎস্য ভটনিকটে একত্ৰ হইয়া থাকে; এবং প্রভাছ

कार्श-मध्दमात काशिक नक्ष्य वर्गन करा विकनः স্থলে রাথিয়া থাকে; সুতরাং মৎস্য পচিয়া পাঠক মহাশারেরা উপরে মুদ্তিচিত্র-দৃষ্টে অনা-য়াসে তাহার অনুভব করিতে পারিবেন। এই মং-(मात्र शक्तिमान कार त्वत्र, तृष्ट्र स्ट्रेस्न किष्यु व ना वि-उन रूप्तः किन श्रायः यस मात्तम स्थिक रूप्त मा।

#### গলিবরের ভুমণবৃত্তার।

ক্রন্থে মধঃপতিত হুট্রাতে অশ্ব
তির বামদ্বলে কিঞ্জিৎ আঘাত

লাগিয়াছিল, কিন্তু ঘোটকারটের
গালাদি কত হয় নাই। আমি তৎকালে সেই
ভিন্ন ক্রন্থানি এক প্রকার সাবন করিয়া প্রস্তুত
করিয়াছিলাম, কিন্তু তাহার দৃঢ়তাবিষয়ে আমার
আতা হয় নাই, সূত্রাং তদ্বলম্বনে এতাদ্শা
ভয়ন্ধর ত্যাপার সম্পাদন করা সুদূরপরাহত

হুইয়া উঠিল।

মুক্ত হইবার প্রায় দুই তিন দিন পূর্বে যখন আমি রাজভবনে এ সকল আশ্চয়া ব্যাপার-प्रमानाथं नीज क्ष्याक्लाम, जशन ताजगित्रधारम জভবেগে এক দৃত আদিয়া এই সংবাদ প্র-দান করিল, 'মহারাজ আপনকার রাজে/র কথক জন অস্থাক্ত প্রজা নগরপর্যটেনবাস-নায় ইতস্ততঃ পরিভূমণ করিছে২ পূর্বে যে द्यारम महदेशन चानीठ हरेशाहिन. उथाय जृति-পতিত এক প্রকাপ্ত ক্ষ্যবন পদার্থ দেখিতে পাৰ্যা অতিশয় চনৎকৃত হ্ইয়াছে। ঐ দুব্য দেখিতে অতি কদাকার, এবং নম্বতাযুক্ত মণ্ডলা-কার: তাতার পরিদর আপেনার শয়নাগারের जुलः ध्टेरवका ভাহার मीर्घछा मगूर्यात जमान। এ প্রজার। ইহা ঘাদের উপরি স্পাদ্দাইন পতিত থাতিতে দেখিয়া নির্জাবিষ্ট্ত বোধে বারস্বার देशात हर्जुर्किटक जुमन कतिया विखारेशाटक, এক ৬ক জনের ককে এক জন তদুপরি আর এক জন আরোহণ পূর্বক তাহার উপরি উঠি-মাভ দেখিয়াছে, যে তাহার উপরিভাগ পরি-नत्रयुक्त अ नमान। शा निया हाशिया विकारेटक २ তাহাদের বোধ হইয়াছে তাহার ভিতর শুব্ধ।

ইহাতে তাহারা অনুমান করিয়া**ছে, এ অ**বশ্য**ই** नतरेनात्मत्र कान वावक्षां वस क्रेटवक, नत्मक् নাই। যদি মহারাজ অনুমতি করেন, তাহা হইলে তাহাদিগ-যারা পাঁচ অন্মে বোঝাইয়া ঐ বস্তু কথা শূৰণমাত্ৰ আমার তৎকালেই সেই বস্তুর তाৎপर्या (वाथ इहेन, बवः छৎमःवाम পाওয়াতে व्यामात मान मान याप्य व्यापमान कविना। चनुमान रहेन, चामारम्त (शाक ख्य ७ कलमय **হইবার পারে আমার প্রথম তটস্পার্শ করণ সম**য়ে আমি এমনি অবসন্ন হইয়াছিলাম, যে আমার निमु ७ इरेवात ছानে উপস্থানের পূর্বে আমার টুপিটি কোনৰূপে খুলিয়া পড়িয়া থাকিবেক, তাহা জানিতে পারি নাই। তাহা কিন্তার সহিত चामात मछ्क पृष्वाण वक्ष हिल, এवः नम्पु जतन-নময়েও তাহা সর্কাণ তরজে বাধিত হুট্য়া রহি-য়াছিল। অনুমান হয়, কোন কারণ-বশতঃ তাহার ঐ কিতা ছিল্ল হইয়া থাকিবেক, তাহা আমার জ্ঞাত হয় নাই, একারণ তাহা সমুদ্রেই পড়ি-য়াছিল। যাহ। হউক, তাহার উপযোগিতা ও গুণের পরিচয় দিয়া রাজার নিকটে তাহা অবি-नय जानाहेवाह जनुमिन अनाम कहिएन आर्थना করিলে পর তিনি তাহাদিগকে ঐ বস্তু আদ-यन कतिएक कारमन कतिया পाठाहरलन। शत-দিন শক্টবানেরা সেই বস্থানিয়া রাজনভায় উপর্নাত করিলে দৃষ্ট হুইল, তাহা তথন অতি দূরবস্থ হইয়াছে; তাহারা তাহার ধারহইতে তিন অজ্লির মধ্যে দুই পার্ষে দুই ছিদু করিয়া ভাছা-ए पूरे एक वाधिया वाशिकारक। के **बूरे ए दर** पूरे গাছা লখা রজ্জু শাঁছিয়া তাক্ বোড়ার বাজের नक्ष भक्त कतिया वाधियाहिल है अहे बदन भागात নেই টুলিটি ভাহাছিগ-কর্ত্ক কিঞ্চিয়্নেগাছ- জোশ পথ আনীত হইয়াছিল। যে সময়ে ধরা- যে কথায় ও যে নিয়মে আমাতে শপথ করা তলে তাহা অবতারিত হইল, তথন তাহার সকলই ইয়া মুক্ত করিতে মনস্থ করিলেন, তাহা ব পচিয়া গিয়াছিল। সহতে লিখিয়া প্রস্তুত করিবার যতু করিতে লা

क्रे वर्गाणारतत पूरे फिन शरत ताका वि-नाम्बा इहेश जानन ताजधानीय हरूपीलन इटें जारम्य कतित्वमः প্রস্তুত কারণ তিনি আমাকে যথাসাধ্য পাদভয়ে নির্ভর করিয়া সরলভাবে দপ্তায়মান দেখিতে নিতান্ত অভিলাধী হইয়াছিলেন। অমন্তর আমি দপ্তায়মান হউলে ভিনি সল্লিছিত মদেকসহায় আপন সেনানায়ককে অনুমতি করিলেন, "তুমি नतरेमात्नत लामहारात यदा मिया अहे उलाहिक **সেনানী লইয়া গমন কর", ভাছাতে সেনাপতি** তৎক্ষণাঞ্ তাহাই করিলেন। সমুদয় সৈনে/র বঙ্থ্যা জিন সহসু পদাতিক, ও সহসু অখা-ৰাচ্। বংকালে তাহারা আমার বঙ্কণের হাতে দিয়া চলিয়া যায়, তথন তাহাদের সবিষ্যু-হাযে।র আর ইয়তা রহিল না।

এই রূপে আমি স্বাধীনতা প্রাপ্তির জন্য ভূরিং বিশ্বাসজনক ব্যাপার, ও সময়েং সবি-নয়ে প্রাথনা করিতেং পর্য্যবসানে রাজার তৃপ্তি জন্মাইলাম। তিনি সম্পূর্ণ সভা করিয়া তাহাতে আমার যাত্রার বিষয় প্রস্তাব করিলেন। সকলেরি মত হইল, কেবল আমার একমাত্র বংগাদ্যত শক্তু (কিরেস্ বান্রোলাম্) নেই মতে মত প্রদান করিল না। ইহাতে তাহার উপরি সকল সভ্যের সহিত একবাক্য হইয়া রাজা অভ্যন্ত বিরক্ততা প্রকাশ করিতে লাগিলেন। রাজমন্ত্রী বা প্রদেশা-মান্দ [বান্রোলাম্কেনি প্রভূর নিভান্ত মভাবলদ্বী এবং বিশেষকাশ কার্যক্ত ভাজি বলিলে ও বলা যায়, কিন্তু নে কঠোরচিত্ত, ও বিবদর্শন ছিল। যাহা হউক, পরিণামে লৈও সমান্ত হইল, কিন্তু

ইয়া মুক্ত করিতে মনস্থ করিলেন, তাহা গে ষহতে লিথিয়া প্রস্তুত করিবার যতু করিতে লা গিল। শপথ-করাওনের ধারা-দকল লিখিত হইয়া প্রস্ত হইলে পর (ফিরেস্ বান্গোলাম্) দুই জন महकार्ति व्यथाक ও व्यन्ताना डेफ्लपम्य क्रि-পয় ব্যক্তিকে সমভিব্যাহারে লইয়া স্বরং সশ-রীরে নেই পত্রসহিত আমার নিকটে উপস্থিত হইল। আমার নিকটে তাছারা দেই পত্র পাঠ করিয়া শুনাইলে পর কানি তলিখিত সমৃদয় विषय जम्भारत প্रতিজ্ञ इरेया भभव कहिएक উদ্যত হইলাম। প্রথমতঃ আমার স্বদেশীয় রীত্য-নুদারে, অনন্তর তাহাদের ব্যবস্থাপিত প্রথান্-नातः जागारक भाषाय कतिराज इहेन। जथाकात শপথকরণপ্রথা যে প্রকার ভাহা গাঠকবর্গের সুগোচরকরণার্থ প্রকাশ করা যাইতেছে। অপ্রে আমাকে বামহত্ত দিয়া দক্ষিণপাদ ধরিতে এবং পরে দক্ষিণ হস্তের মধ্যমাজুলী দিয়া শি-রোভাগ ও তাহার বৃদ্ধাঞ্গদারা দক্ষিণকর্ণের উপরিভাগ স্পর্শ করিয়া থাকিতে হইব। তত্ত্রত্য ব্যক্তিদিণের এই রাতি নাতি ব্যবহারাদি স্পষ্ট-ৰূপে জানাইবার অভিপ্রায়ে প্রতিজ্ঞান্তরের লিখিত-নিয়ম-সকল অবিকল অনুবাহিত করিয়া প্রকাশ করা যাইভেছে, পাঠকবর্গ মনোনিবেশ-পূর্বক ততাবতের মর্ম অবগত হইবেন।

"প্রবল-প্রতাপ, জগদানকভয়ভাজন, বট্কোশবিস্তারিতসামাজ্যপুরজয়য়য়জয়াজ, দীর্ঘকায়জিতপ্রজ, নিমুমধ্যতলপ্রপদ্যুপল, নিরুজদিনকরশিরা, সঙ্কেতমাত্রসমুথভূমিপাতিতজানু-রাজবর্গ, বসস্তবন্ধনোহর, নিদাদ-বৎ সন্তোর্গক,
শরমৎ কলভরসম্পার, শীতবৎ সকল-চিত্তসংকোচক, প্রিমন্থারাজাধিরাজ লিলিপটাধিনাথ

স্বৰ্গকম্পানামূল্যে কচিলেপনীত-নরশৈল- সন্নি भारत अहे প্रस्ताद किंद्रिक्ट एवं जीहारक निरम লিখিত নিয়ম পত্রিকার কএক ধারানু নারে শপথ कतित्व इहेर्दक।

লে কদাচ রাজনান্তরে যাইতে পারিবেন না।

रवभवादन जावर প्रकारक नावधारन द्राधिएक भारमत त्रारकात नीमाजुक चारक, नतरेमलरक হ্টবেক, কারণ রাজকীয় প্রকাশ্য আদেশ না তিছো মাপিয়া তা**হার মানচিত্র প্রতিমানে রাজ**-পাইলে ভাষার রাজধানীর মধ্যে প্রবেশের গোচর করিতে হইবেক। ক্ষমতা থাকিবেক না।

পথেই গমনাগমন করিতে পারিবেন। শস্যা- জনপানের দুব্য উপযোগ করিবার ব্যবস্থা করা দির ক্ষেত্রে তাহাকে ভূমণ বা উপবেশনাদি যাইবেক। এই রাজ্যের ১৭২৪ জন প্রজার क्षित्त मन्या यहित्य न।।

• (8) जुमनकालीन जा**जभय**भागी कान जाज-कांश श्रीजिलालन श्रकात महीत्त, वा फांकारमत অন্ধে, কিয়া লাকটে তাহার দেহ স্পার্ম না হয়, এমন জপে নুর্দেলকে সাব্বান হইয়া চলিতে: হুট্রেক, এবং তাহাদের বিনা অনুমতিতে কা-ছাকেও **যহুতে তুলি**য়া **লইতে পা**রিবেন না।

 ০ : যদি কথন কোথারও কোন আশ্চর্য্য নংবাদবাহক প্রেণের আবেশকে হয়, তাহা হই-লে নর্শেলকে ভাছাকে লইয়া যাইতে হইবেক। প্রতি শকুপক্ষেই এই ব্যাপার ঘটিয়া থাকে। প্রথার 🖟 সংবাদবাহ্ক পুরুষকে আশ্ব সহিত নিরিংগুবহন করিয়া **আনিয়া রাজসমকে উপ**-স্কর্মপত করিতে হইবেক, ইছার অন্যথা না হয়।

\* ১) শত্তুদিগকে আক্র**মণ করিবার সময়ে** नहरेमनद्य जामार्यं महायुका क्रिटक हरेटवके।

श्रीतिश्र के मही जली । गरहाम्य नाहामूत सीय अवः आमानिश्राक आक्रमन कतियात निमिष्ठ व नकल यूक्ता ज्राज्य वाकित्वक, नहरेममुद् ভত্তাবং এককালে বিনা বিচারে জলমথ করিতে इरेदक।

''(৭) স্থাতিগণকে রাজভবনের ভিত্তি রচনার ে নরশৈল আমার রাজকীয় গৃঢ়মুদুাঙ্কিত জন্ত যে সকল প্রস্তরপত তুলিতে হয়, অবকাশ (थान शिव्याक्तमञ्जिक) अनुम्जिभव ना भाहे- भाहेत मतिभवत्क जाहानिगत्क उपकर्म 🦙 সাহায্য করিতে হইবেক।

🕶 😢 । নরশৈলের আগমনকালান রাজ্যের প্র- 💡 "(৮) সমুদের উপকূলের যে সমস্ত ভূভাগ আ-

"এতাদুশ নিয়মাউক প্রতিপালনে শপথপূর্বক 🕶 😊 উক্ত ন্য়লৈল কেবল প্রসিদ্ধ রাজ- ্ প্রতিশ্রুত হইলে পর নরশৈলকে প্রতিদ্ধিন ভো-ভোজ্য ও পেয় দুব্য নরলৈলের দৈনিকবৃত্তি **(** पड़िशा याइट्रक । इंडि बाममी डिथि। मिनिल हे রাজ্য প্রারম্ভাবধি একনবভিত্তম চন্দু"।

> আমার অহিতাকাঙ্কী (কিরেস্ বান্গোলাম্) প্রণীত ঐ সকল নিয়মের কতিপয় সম্পাদন করা আমার বোধে অপমানজনক হইলেও তত্তাবৎ বিষয় नम्रलिङ প্রতিজ্ঞাপত্তে পর্ম নভোর্পূর্যক স্বাক্তর প্রদান করিলাম। ভাহাতে তৎক্রণ-মাত্র অতিমাত্র বাগু হইয়া ভাহারা আমাকে गुकु भृष्यम कतिया चाथीम कतिन। निनिश्मा-থিনাথ অয়ং মহাসমারোহে আমার সমি-হিত হইয়া সন্মান প্রদান করিলেন। আমিও यश्यातालि कृष्ठका बीका भूर्वक मही-अभी-विमीजित व्यवन्यस्य जाराह हत्। वा-चार्क नमर्गं। केंद्रवाम। हैश्रंटक जिति चि गमश्रकाटव वागाटक केठारेबा नानाश्रकात वर्ग-

গুহুসুচক বাক্য প্রয়োগ করিতে লাগিলেন। তৎপ্রকাশে অভিমান প্রকাশ হইবার আশকায়
তাহা এইনে উলিথিত হইল না। বিশেষতঃ রাজা
আরো কহিতে লাগিলেন, "আমার মানস হয়, যে
তুমি এই রাজসরকারে কর্মচারী হইয়া কালযাপন কর; সম্পুতি ভোমার প্রতি দয়া প্রকাশ
করা গেল, এবং ভবিষ্যতেও তুমি অনন্যজনসাধারণ রাজপ্রসাদভাজন হইতে পারিবে"।

আমার মোচনার্থ প্রতিক্তাপত্রের শস্তিম নি য়মে ব্যক্ত আছে, যে রাজাকর্ত্ক আমার দৈ-নিকবৃত্তি বিধানার্থ ১৭২ জন লিলিপটীয়ের খা-मा ও পেয় সামগু আমাকে প্রদত্ত হইবেক, ইহাতে পাঠকবর্গের আপাত্তং সম্ভোব জন্মিতে পারে। কএক দিন গেলে পর আমি এক জন সভাকে জিজাদিলাম, রাজা আমার খাদ্যাদির পরিমাণ নিণ্য় কি প্রকারে করিলেন, তুমি ইহার किष्ठ् जान? इहाएठ स्म किष्त, "ताजन जार কএক জন মহামহোপাধ্যায় জ্যোতির্ঘিদ্ পণ্ডিত নিযুক্ত আছেন, তাঁহারা প্রথমতঃ একগাছি লয়৷ ভার লইয়া ভোমার শরীর মাপিয়াছিল। পরে সেই তারেতে এতদেশীয় বার ২ জনের দেহমান লইয়া এক ২ অংশের চিহ্ন দিয়াছিল। এই ৰূপে গণনা করিয়া তাছারা নির্ণয় করিল, তোমার **( इ.स. १८) हिं कि कि कि कि कि अपने । मुख्यार** তদ্ৰুসারে তাহার। উক্তসন্ত্থ্যক লোকের দৈ-নিক-খাদ্য-সামগ্রীতে তোমার ভোজনপান প-যাগ্র হইবার সম্ভাবনা বোধ করিয়াছিল "। পা-ঠক মহাশয়েরা বিবেচনা করিয়া দেখুন দেখি, তত্ত্ৰত্য প্ৰজাগণের কাদৃশা সৃত্যবুদ্দি, এবং এতাদৃশ मर्गम्य निनिभिगिधिदार्कत कि श्रकात व्यत्नी-किकी विक्रणा, उ यथायर्थ পরিমিত ব্যক্ষিত। ইতি তৃতীয়াধায় সমাধ।

#### प्रभाउप कीवरउप।

💥 🌋 🌋 শতেদে উত্তিজ-বস্তুর যে প্রকার ভেদ ्रै इडेग्रा धारक, कोव-मञ्चरक्ष अत्र प्रकात 🎇 বিলক্ষণ অবাস্তর ভেদ প্রতীত হয়। বোগ 🏋 💥 🏋 हरा. वृक्त ९ প্রত্যেক-জীবের এক বা ততোপিক নিদিষ্ট স্থান আছে, ভণ্ডিল অন্যত তাহা নির্বিত্রে দেহ্যাতা নিজাহ্ করিতে পারে না। জীব-प्राप्ता अक्षा को है अत्रामकी है नर्बा (शक्ता स्व अप्र : तर्-কাল অনেকের নোপ ছিল, যে ঐ কটিসকল উদ্ভিব্ধ পদার্থ, জাব-মধ্যে গণ্য নত্ত্ব; পরস্ত তাত্রার পৃথি-বীর সর্বতি জয়িতে পারে না; সমৃদ্রের বিশেষ ২ স্থানে তাহাদের উৎপত্তি হইয়া থাকে; অধিকস্ত সমৃদু-জলের উक्षडा-(ভদে ঐ कीवेमिरशंत क्वांडि-(ভদ হয়; সুতরাৎ হিম-মণ্ডলের সম্পুদ্র যে যাদৃশ প্রবালকীট প্রাপ্ত ছওয়া যায়; ভারত সমূদ্রে তাদৃশ নহে। তাকিকাসয়য়েও अडे नियम तलत्रः, श्राह्यक स्रांतित तिर्लय १ सिक्का নিদিষ্ট আছে, তদ্ভিন অন্য ত্তকিকা তথায় প্ৰায়ঃ উত্তমরূপে জন্মে না। মৃক্তার ফিনুক নিরক্স-রুত্তের নিক্টস্ত্ শমূদ্রে প্রাপা, অন্যত্তে দৃটিগোচর হয় না।

পতঙ্গাদি-বর্গের \* অধিকাণ্শ জীর উভিজ্জ-পদার্থ 
ভক্ষণ করে; মৃতরাণ্ গ্রীয়মগুলের প্রচুর-বৃক্ষ-লতাদিবিশিক্ট দেশে তাগাদের সমাগ্ বৃদ্ধি হইয়া থাকে।
তর্মগুলন্থ প্রজাপতি-সকল যাদ্শ সুচারু চিত্রিত, ভাদৃশ
আর কুত্রাপি সম্রবে না। তথাকার থদ্যোতিকা-সকল
একং সময়ে সমন্ত বনকে এমত প্রভাসিত করে যে
বোপ হয়, সর্মত্রে দাবানল প্রজ্লিত হইয়াছে। তথায়
অপর অনেক বিষাক্ত পত্রাদি আছে, ষাহাতে মনুধাের মহদনিষ্ট কদাপি ইষ্ট সিদ্ধুও হইয়া থাকে। ভিমকল, বোলভা, মধুমক্ষিকাদির নামোক্ষারণ করিলেই
আনায়াদে এ বিষয় সপ্রমাণ হইতে পারে। বল্লীকদারা
মনুষ্যের কীদৃশ অপকার হয়, ভাহা অনেকেই ভাত
আছেন। দক্ষিণ-আমরিকার বন-মধ্যে হানেং মশকের
এ প্রকার প্রাচুর্গা যে দূরহইতে বােধ হয়, শমন্ত হান
কোয়ানায় পরিপূর্ণ হইয়া আছে; ভ্রায় মনুষ্যের

<sup>\*</sup>द्रोबागडि, कड़ि॰, प्रक्तिका, त्रामका, म॰म, प्रमंख, निशीनिका, गुडा, देवनभाविका, श्रकृति कीय और यदन मिर्शिक स्व ।

তিষ্ঠন অসাধ্য। হিমন্ত্রল পত্রাদি-বর্গীয় জাবের প্রাচুষ্য নাই, পরত্ত তথায় তাহাদের অতাস্থাতাবও নছে: গ্রিমলও আৰু লাপ্লেও দেশে গ্রীয়াকালৈ এক-প্রকার মধ্য । বিষয় প্রতি, তাই। অত্যন্ত ক্লেপথস।

মংসা চচালে কোন মংসা হলে, কেই বা নদীতে, অপর ্ চুত্রপি 🗳 মৎসা প্রাপা নছে ৷ ভূমধানগেরে চারি - তাহ্য কদাপি আপন নির্দিষ্ট কডিলেরপের্রতহইতে প্রকার মৎস্য আছে, ভাহাকে ল্লাকারলে দেহ ক্সিড ুদুরে গলন করে নাঃ কাকাছুয়া, নূরি, বাঙ্নু প্র-কর্তীয়া উচে, কিন্তু ওচেতে প্রাণ হানি হয় না। ভিত্তি প্রকল্ডীয় পালীর জন্ম-স্থান ভারত-সামৃদ্রিক-হাস্তর প্রান্তলে বাস করিল থাকে, সম বা হিম- ছাপ্রাছ, তছছিলেলে কুলাপি তাছারা দুইটবা নছে। মঙলে তাহার প্রচার নাউ। কোনং মৎদা ঋতুভেদে । দলিক্ষান্তিকার আনেক তাক আছে; কিন্তু ভাহার। দান গরিবর্ত্তন করে। ইলিন এবং তপদা মখনা : এত্লেশীর লফ-ডাতিছইতে পৃথক্। শুত্রমূর্ণ-পক্ষীর শক্ষা ভারত-সমৃত্রে বাস করিও খাকে, কেবল অন্ত- বাসভান তারের এবণ আফরিকা; কালোও<mark>মুরি-পক্ষীর</mark> श्रमध-कत्व-कारम ममी-प्राप्ता श्रातम करतः। তেরি ०-মুখ্যা হিল্মুল্যালি, কিন্তু প্রতিব্হস্ত এক ১ বার भिक्ततेक वेकेस: सम्माध**्लत सम्द्रम् कारू-श्रमत क**हिटक राजिया धारक, धनल उदकश्च-नम्भ श्रुटन श्रृहारन । গ্রহাদেরন করে। অপরাপর অনেক মহদ্য এই প্রকারে रक्षावर अक यानकरेटड अनाज याजा कृतिहा थारक।

্ট্য এনশে বিশেষতঃ আমেরিকা-শল্পের উক্ত স্থানে, 🕶 বৰগায় ৰ প্ৰাণীয় অভান্ত প্ৰচায়। শেলোক ভানে ८ टिन सर प्रवेशारानाम्ब छ। इत् विसंत्रतं अभिन्नाः धारकः। কুমাল, ১ বলে একং গোৰোপণ্ড তথাৰ অনেক আছে; বাহারে ু কালে ক্যান্ত তেন চারি মান মূন্যান চতত ন্যা। দিল গভর খন্ধ-পান্ধে প্রেখিত থাকে: বধার १६६८६ १,७०७ वसर्व कोतम १५१व शहेता श्रश्च निर्मित (দহাকা) · ) লিচুক্ত হয় ্ ফল্ডঃ অনেক ভাবের দেও+মাক্রা স্থাৰ পাত ও গুৰা উভসেই সুলা; জ্জান শীতে ছিলন্ত-লব অনেক মান যে প্রাধে চারি পাঁচ মান ক্যাগত लिए। १८११ अध्यक्तिकात् हेस्थका-श्रकाति**व कुमाना** वित्र **(म**ने प्रति । विकास भारतः। भारततः वृक्तानुसारतः स्वामि-वशीतः कारवज्ञ राहका। ऋक्ष वरा, अत्र विरावज्ञ छ वीरमीज स्थान

শ মৰ্ব, বৃজ্ঞীয়, লে ব , টিকটিনি, কুমা, গিগিট্ প্রভিত্তি প্রাণী मध्यक्तिराश्चर आवश्वर ।

হয়। হিমমগুলে দর্পাদির দঙ্খ্যা অত্যন্ত এবং কেইই ভয়ক্কর বিষপর নছে।

উড্ডানশীল পক্ষীরা অনায়াদে এক স্থানহইতে অনাত্র মাউতে পারে, **তদ্**ষ্টে অনেকের বোধ **হউতে পা**রে মৎসা- বলেল ও বিশেষ কান নিদিষ্ট আছে; কোন যে বিহঙ্গম-বর্গ সর্ব্রে-ব্যাপি; তথা শকুন্যাদি অনেক পক্তিও পৃথিবার প্রায়ঃ সম্রে দৃষ্ট হইয়া থাকে; কে: সন্ত্র কলিফ থাকে। এক প্রকার বাইন-মংলা পরস্তু ইছা প্রক্রিদিগের সাগারণ নিয়ম নছে; অপ-জাছে, কালাক স্থাকরিবামাত্র অভ পর্যান্ত কল পশু বাপর জীবদিধার নাায় তাথাদিধারও জাতিভেদে ক্ষিত কা াও ভূমিতে পড়িয়া তৎক্ষণাথ প্রাণ ত্যাগ বিশেষ হ দেশ নির্দিক্ত আছে। কণ্ডোর নামক বৃহৎ করে, তাজার জারাম দ্দিণ-আমেরিকার নদী, অন)ত । বাক যাত। অনায়াদে দুই কোশ উর্জ্ উড়িতে পারে অচবাস নুত্রবাধার এবং হোমা-পক্ষীর নিবাস জাবা, স্মতে।, বোণিও প্রভৃতি দ্বাপা: ইহারা কেহট ঐ নিশিষ্ট ख्यानत जनाक अवस्थान करत ना।

> अर्गेट शकी कब्रुअस अक्षान शतिकास कर् उनाव श्रहान करता। श्रान्तिवश्मत वर्धाकारण शाक्तिल পলা কলিকাত পরিতাগে করিয়া পরতাভিমুখে যায়, পদে ব্যার নিরুত্তি ছউলে প্রত্যাগমন করে, ইছা খনেনেট জাত আছেন। বনাহ্ণদ ও বনাকপোড-मकल ९ अने श्रकारत सम्न-चुमन कतिया धारक। तिनार छ বক্ষার্য, চাতক, প্রভৃতি পক্ষারাও শীতকালে উপলও-(मन उग्नात कर्ड (कान डेक्टमरन यांजा करत्।

> অপরাপর জীবহুইতে স্তনাজীনী পত্ত প্রধান; ভাষা-सिर्वात मुहाक काव, मम्पूर्व डेस्प्वित, अव वृक्तिमः हा-রাদি আনা জীবহুইতে অনেকাংশে শ্রেষ্ঠ; অসিক্স ইহা-দিলের স্বভারধর্মাদি মনুষ্যদারা উত্তমরূপে বিবেচিত হই-য়ছে, অভএব তাহাদিগের আলোচনায় প্রাকৃত-ভূগোল-नम्क्षात প्राणितिमात मध्यूर्ग उपकार मम्रत। व भन्न-দিগকে "সূনাদাবী" শবে কহি, কারণ ইহারা সকলেই বাল্যাবস্থায় মূন-পান্থারা পোবিত হয়। মনুষ্য ইছা-मिरशत मरभा श्रक्षान !<sup>™</sup> वानज्ञ, इन्हो, नि°र्ह, वााचु, अङ्शी প্রভৃতি প্রধান ২ পশ্বও ঐ স্ভন্যজীবিদিগের অন্তর্গত।

অখ, गर्मछ, कुङ्कत, त्शा, प्रम, ছाগ, শ्रूकत, এव॰ বিড়াল গৃহপালিয়ত-পত্তর মধ্যে গণ্য; তাহারা মনু-ষ্যের সহবাদী: মনুখ্যের সহিত পৃথিবীর সর্বতি ব্যাপ্ত হউয়াছে। যে ২ স্থানে মনুষ্যের সমান্য আছে, তথা-गर्डे अगकल शर्ध जनागांत्र-श्रांशाः, (के बन शर्मे छ राजाय-भीजन-स्रात्न व्यवस्थान कतिरु शादन ना ; स्थ-গ্রাম্ম স্থানেই তাহাদিগের প্রাদুর্ভাব। অস্বের আদি জনুভূমি আশিরা-এণ্ডের মধাদেশ; তথাহইতে এই ফণে ঐ মহদুপকারি পন্ত ভূমগুলের মর্বাত ব্যাপিয়াছে। তিন শত वर्ग रहोल (स्त्रीय मनुत्वाता जाशांक मिक्सिमार्थन কায় নীত করে; তদৰ্ধি তথায় তাহার অভ্যন্ত বৃদ্ধি ছট্টাট্টে এবং অধুনা তথাকার বনে বহুসহ্থাক অ-পালিত ভাষা চরুণ করিতেছে। আইস্লপ্ত এবং নর্-গুলে প্রদেশেও অনেক অপ আছে, কিন্তু প্রথার-শীত-জ্ঞান চাহারে একলিয়া, ও অন্য অশহনতে প্থান্ভূত भगगरहा। भनुषाशीन-हीरण मृकत **७ हात श्रां**तः नृष्ठे জন না ুক্তি মনুষ্যের সমাগম হউলেই তৎক্ষণাথ ঐ ! भागकाष्ट्रत ३ जिथास श्राह्म इत् ।

করিয়া থাকে; পরস্তু প্রাচীন ও নূতন পৃথাবিত্ত তদিদয়ে তথায় অনাধানে নিবাদ করিতে পারে। অনেক ভেদ আছে। প্রাচীন-পৃথীথত্তের হয়ী, থড্গা, দেশীয় মহিষের ভূলা নহে। তথাকার সিণ্হব্যাখাদিও 🖯 প্রাচীন-পৃথীথভের তত্তৎপত্তইতে অনেক অধম। মনোহর মহদুপকারি অস্থ, গো, ছাগ, এবং গর্মত ও ইয়ানীয়দিনের যাতায়াতের পুর্রেন নূতন-পৃথীক্তে প্রচরিত ছিল না।

পশুদিনের এই-লক্ষণ-দৃষ্টে প্রাকৃত-ভূনোলবেক্তার। প্-থিবীকে কতকগুলিন জীব-প্রদেশে বিভক্ত করিয়াছেন; ঐ প্রত্যেক প্রদেশের জীব অন্য-প্রদেশীয় জীবহইতে পৃথক, এব॰ তাহার বিশেষ ২ লক্ষণ নির্দিষ্ট আছে। এই পত্ত স্তব্ধুক, হিম-শ্বাল, রীণ-হরিণ, এবৎ সিস্তু-ছো-हेक। পृथिवीय প्राहीन ও न्छन उठम अरखह अहे नकन পত্তর সামাত্ত আছে; তৎকারণ বোধ হয়, শীতকালে

তত্ত্বতা সমস্ত সন্দু জনিয়া জোল এক নাংগ্র পার পান।-सारम जाना शरक अभन कतिए। धारक ।

সমমণ্ডল এক বিশেষ প্রাণিপ্রাণ ব্রোজার নিদিন্ত পত হিম বা গ্রীয়ামণ্ডলে প্রচলিত নাটা। অধিকত্ত প্রচ চীন ও নূতন পৃথীকতেও এলিদ্যের প্রভেদ আছে। নূডন भृथिवी-शरश्वत मध्यश्वरण (स मकल शाय विश्वान ना एक. जाशात किलू हे भागेन-श्थिती-यरध भाषा भरह।

গ্রীয়ামণ্ডল চারি প্রাণিপ্রদেশে বিভক্ত; ১. গরেড-वर्स, ४, बाक्रतिकात मधारमण, ०, मिल्पामिकिकार ५ छत-ভাগ, ৪, ভারত-নামৃত্তি-ছাপর্টে। ভিরম্যুর্র পাপুরা, নুতন গিনি, প্রভৃতি দাপব্যাল এক বিশেষ প্রাণিপ্রাদশ; ততঃপর অস্থেল্যা তীপ, তদনমর আফরিকার দক্ষিণ-ভাগ, অবশেষ দক্ষিণান্ধিকার দক্ষিণ-ভাগ ও পৃথক হ श्वानिश्वरमण। वही मकल श्वानिश्वरमण श्वरकारक वि-শেষ হ পত্ম-পজা নি দিয়ে আছে। ঐ সকল পত্মপঞ্জী-দিগের থাদা দুবা ভত্তাদাশের ইউরুমরাপে জন্মে, এবং তথায়ত তার দের দেহ্যানা পারপারীরপেন্যুদে; সূত-রাপ এক দেশ ভাটা করিবা ক্যাত্র গ্রম করে না; পরস্ক সক্ষাপেক্ষায় বৃহত্বসায়, সক্ষাপেক্ষায় ভীষণ, ও সক্ষা- 'উভয়ের প্রান্ত পদা জ্লা ভটালে বা ইনিয়াতে ভিন্ন পেক্ষার বলধান পার পৃথিবীর গ্রীয়ামণ্ডলেই নিবাস ছউলেও এক দেশের পারপার্কী তানা দেশে লউয়া গেলে

্যে সকল প্রাণিপ্রদেশ নিদিনী অংজে ভন্নাে অন্তে-ছিপাপোটেমস, উট্টু, জিরাফা, গৌর প্রদৃতি পশুর সহিত । লিয়া সমাপেক্ষায় বিষয়েজনক। তথাকার পশু অপর ভুলনা চকতে পারে এমত পত্ত নূতন-পৃথীথতে কিছুই । দকল পত্ততি পৃথক। অনেক প্রাণিতজ্বজের বিশ্বাস নান। তত্তা সমাপেক্ষায় বৃহৎ পশু বাইসন্; তাহা এত- ছিল যে চকুক্সন পশুনাত্তেই জরাযুক্ত এবং স্তন্ত্রীনী, কিন্তু অন্তেলিয়ায় ভাষার বিপর্যায় দৃষ্ট হউতেছে। তথার কতকগলি পর আছে তাহারা মাতৃগর্ভইতে হরিণ ও পরনবেধা নৃষ্ণার প্রচৌন-পৃথুরৈ পশু। মনুষ্যের : অপ্রাকারে প্রদারত হট্যা কিয়ন্দিন পরে স্বাধ্ প্রকৃত (मर् श्राप्त रह: कलांशि खना शान करत ना। उथार অপর কতকওলি চতুকাদ পাষ্ট আছে, যাহারা মাণ্-দপিওবং অপ্রকৃত-দেহবিশিষ্ট শাবক প্রদর করত य भर्याप लाश প्रकृषावद्या ना श्राक्ष रय जनविष উদরের নিকটয় এক কোষমধ্যে ধারণ করে; ফলতঃ जारामित्रात पूरे शर्ज आष्ट्र बिनाल बना याग्र। अह জীব প্রদেশের প্রথম প্রদেশ হিমমণ্ডল; তথাকার প্রধান। দিলর্ভ-পশুর মধ্যে কলার-পশু প্রধান। দক্ষিণামরিকায় অপোদম-নামক এক পত্ত আছে, তন্তির আমরিকা বা ইউরোপ বা আফরিকার কোন স্থানে षिগর্ভ পর নাই।

দেশভেদে যে প্রকাশে কারলাতির ভিন্নতা হয়, উচ্চতা ভেদেও ভক্তপ ঘটিয়া शास्त्र। মাণ্লাদ পক্ষী-সকল প্রায়ঃ আত উচ্চ স্থানে বসতি করে। দক্ষিণামরিকায় करखात-भवानी ১১,००० राम छेक झारन जुमन कतिया शास्त्र। उशास्त्र व्यन्ताना नकुनी उ वाजन श्राहः उक्तन। উউরোপ এবং অংশিয়া এতে অনেক মাণ্সাদ পক্ষী উচ্চ প্রার্থিত বাদ করে। হ্পদের। জলপ্রির, মুতরার্থ অতি উচ্চে ভাষাংগ্র গমন নাই। তৃণজীবী পর্যমধ্যে মেষ, ত্বার এবং নম<sup>ন</sup>্ত-গো অতি উচ্চ পর্যাত্তবাদী। শেষোক্ত পত্ত প্রায়ঃ তির্নীহারাণুত স্থানে বাদ করিয়া থাকে; वैधन-डेक्टइएन जानील इंडेल्टे उदक्रगांद प्रतिशा गाग्। দ্কিণ্যারকায় স্লামা পারত পর্বতপ্রিয়, এবং গ্রীয়ু-কালে তাহারে আজিদ্পরতের চির্নীহারের সীমার নিকট নিবাস করে। উর্টু মক্লভূমিতে স্ব**ক্ষ্**ন্দে কাল-সংপ্র করিয়। থাকে: তৃণপূর্ণ নদীম্থাগুর্ভুমিতে নীত হটলে পাড়িত হয়। জন্যানা পশুপক্ষি-সহক্ষেও স্থেদশ विषयान्त्र निरंग উত্তমক্ষে প্রচারিত আছে: ফলতঃ জন্ম-পিতা প্রত্যেক-দেশের প্রাকৃত-ধর্মানুসারে বিশেষ ২ जी. विक्रिके कविद्यार्थिन। उपन्य का उपनुक्ष श्राकृष প্রমারিশিকী দেশ ভিন্ন অন্যত্ত তার্ত্ত জীব নিবিবিয়ে দেহ-হাত্র, নির্রাচ্চ করিতে পারে না।

কালে কার সকল এক স্থানে উৎপন্ন হইয়া, পরে পৃথি
ত সতি কালে স্থানি সকল এক স্থানে উৎপন্ন হইয়া, পরে পৃথি
পন্ন সতি বালিকালে এবিসায়ে প্রাণিতজ্বজের। অনেক স্থানি উৎ
পন্ন ভটায়া জিলা, এবিসায়ে প্রাণিতজ্বজের। অনেক স্থানিত্র করায়া

কলেভাস। ব্যক্ষর প্রচাল-বিষয়ে সে মীমাৎকা ইইয়াছে, \*

পেত স্থা শীস-বিস্থাও তাহাই সন্থাননিয়া এক হ দেশে

এক হ সংগ্রম প্রত্তির প্রটার ক্রেট ইছার অন্তথা মনোনীত

অস্না, প্রিবার স্থানা হ বে সকল পশু নিদিন্ট আছে পূর্বে হাছাও অন্যাগ ছিল। অনেক শীতল স্থানে হস্তাদি গুলি মঙ্গার পশুর আন্ত প্রাপ্ত হার বিরাছে; তদ্যে স্থান মঙ্গার পশুর আন্ত প্রাপ্ত হার কলে তান অতি উফ ছিল, অথবা ই পশুরা কনেবলে অনায়ানে অভ্যন্ত শীত সহ্য করিছে পারিছে। ই অন্তি মকল এই কলে পারাণ হইয়া গিছাছে; তদ্যেই অন্তর হল ই প্রান্তি অন্তর হল ই প্রান্তি কলে।

প্রধান ২ জীব-জাতির সমষ্টি-সঙ্গ্যা ও কোন দেশে কি সঙ্গ্যার প্রচার আছে তাহার বিবরণ নিমে নির্দিষ্ট হইস।

							, , ,
	প্রাচীন পৃথী।					মূতন পৃথু	সর্বা সম
कीऽठत नाग।	का[मिहा,	अके.वाभ,	জা কৈ বিক,	व्याञ्चितितः,	भक्तित्वश्रित बोश	बाग दिक,	
नाञ्चविनिके वानवः	কান্তি.	का जि	ক্ষাতি	শান্তি	লাডি,	ক্লাভি	
চনুমান্ প্রভৃতি।	63	,,	8.	,,,	>1	٠,	23
লাক্সল হানিবানর উল্লুক, ননমানুষ প্রভৃতি।	<b>২</b> >	"	82	,,	9,5	,	ઝર
সাপাড় ও যাজুই বানর।	,,	,,	25	"	7,	22	22
ছিগত পথ ; কঙ্গাক অ- পে'কম প্রভৃতি।	d.	9.7	24	20	21	ર જ	<b>524</b>
নহুৱান শংশ: ব্রুকার পির্দালিকা-ভূত্পপ্রভৃতি	; >	,,	5	Ċ	27	40	85
चृलाहमाः हन्हाः ;	,	9,	>	,,	} **		. 5
शङ्गी :	0	21	8	,,	,, •	,,	9
শ্কর-প্রেণীন্ত পদ্ম।	ъ	٥	Œ	,.	,.	,,	>8
আমা ও গদিক.	+ 5	,,	3	,,	,,	7)	۵ ا
ভিপপটেন্নর।	99	9,5	2	,,	17	23	1 3
८४ भन् ।	37	33	٠,,	٠,,	99	3	0
भिकारि ।	٠,	17	٠,		1)	8	8
वामुङ (कोडाम)।	32	82	23	. >	2	.,	202
राम्ड (कक्षान)।	3.0	90	3.	>	20	99	228
য়াং নাম প্রায়, জ্ঞ ল্ক,কৃ ক্রে,ডেলফ্,নে- উল, ভূচা, প্রভৃতি।	र≽व	>>>	>0.	. 3	29	724	¢>8
উষ্ট্র	>	27	١ ٦	31	3.9	27	٦.
आग।	99	.,	,,	17	29	8	8
<b>छ</b> ाश ।	8	0	2	,,	,,,	3	38
C911 :	٩	>	₹	33	"	٤	2.0
হেন।	>@	8	0	9,9	80	1	٤۶
एतिम ।	52	٩	>	,,	9.9	20	92
मात्र।	9	2	<b>0</b> F	,,	,,,	>	86

<sup>\*্</sup>তারত বিপর্যহ, মালাকা।

† ইউরোপ-থণ্ডে অনেক অব ও গর্মত আছে, কিব তাহা
আসিয়া-প্রতীয় অংগর অপতা।

<sup>ं</sup> अंडे सरकत् ५०६ जुटक दहसा।

এক ২ জাতীয় পশু দুই তিন প্রদেশে প্রচরিত থাকাতে পূর্বা-পৃষ্ঠয়্ব নিদর্শন পত্রের প্রত্যেক মৃদ্রে যে দকল জাতির নিদেশ আছে, তৎসমুদায়ের সমষ্টি করিলে সর্ব্ব-সমষ্টির মৃদ্রে যে অঙ্ক আছে তাহাহইতে অধিক হয়; কিন্তু আমরা তাহা না করিয়া শেষ স্তন্তে যে দকল পৃথক্ জাতীয়পশু মনুষ্যের গোচর চইয়াছে কেবল ভাহারই সঙ্খ্যা করিয়াছি। পত্র-বাহুলা-হ্ইবার ভয়ে এই নিদ্দর্শন পত্র অতিসংক্ষেপে শেষ করিতে হ্ইল।

### ক্ষিয়া-রাজ্যের ইতিহাস।

কির্দিন ইইল ক্ষিয়াখিপতি তুর্কদেশের পরাজ্যকল্পে অন্ত ধারণ করেন। ঐ অত্যাচারের শাসনার্থে
সন্ত্রতি ইপরাজ ফরাসিস্ ও তুর্ক দেশীয়েরা সমজ্য ইইয়া
উক্ত কৃষ্টিয়াধিপতির সহিত তুমুল সন্ত্রামে প্রবৃত্ত ইইল যাজেন। অপুনা কলিকাতাত্ব সকলেই ঐ সন্থামের আলোল নো করিতেছেন, অতএব এমত সময়ে অজ্ঞাত ক্ষদেশের ইতিহাস জানেকের পক্ষে আনন্দ্রনক ইইনে বোধে এই প্রস্তাব উপদেশক-প্রভাইতে উদ্ভিও ও স্পৃত্ব করা ইইল।

বিভ্রালের মধ্যে ক্যিয়া-নামক রাজ্য নির্ভঃ কলতঃ ইউরোপ ও আশিয়া নামক দুই মহাদ্বীপের প্রায়ঃ
সমস্ত উত্তরাংশ তাহার নামান্তর্বর্তী; কিন্তু
সেই অঞ্চলে অতিশয়-শীতপ্রযুক্ত অত্যাপ্থ
মন্য্য বাস করে। সেই রাজ্যের প্রজা সর্বন্তন
ম্যাধিক হয় কোটি মনুষ্য; তাহার মধ্যে
ন্যনাধিক হারিকে টি প্রকৃত ক্যায় লোক;
অবশিষ্ট দুই কোটি ফুদ্ধে পরাজিত পোলন্তপ্রভৃতি মানা-দেশ-নিবাসি লোক।

অতিপূর্বকালে ক্ষীয়-লোকেরা অতি অনভা ছিল; প্রায়ঃ একসহস্ বৎসর হইল থ্রীপ্তি-য়াম নামধারি গুীক লোকদের ধর্ম তাহাদের মধ্যে প্রচলিত হইতে আরক্ষ হয়। খ্রীষ্টের মহতা মরিয়ম প্রভৃতি প্রকৃত ও কণ্পিত সাধুগণের ছবি পূজা এবং উপবানাদি নাহ্য ধর্মকর্মা সেই মতের নার। তদবলমি-লোকদের অবিকাশন খুটিধন্ম-বিষয়ে অতি অক্ত; ক্যিয়া-দেশীয় গুমেলাসি পুরোহিতগণেরাও এই সপাবাদের পাত্র: বিশেষতঃ তাহাদের অনেকে মদ্যপানে এমত আ্যক্ত যে তাহাদের প্রতিবাসি কৃষকের। পাছে নেই দিনেও মদ থাইয়া পরদিন রবিবারে গুজা-ঘরের প্রার্থনা প্রভৃতি আরাধনা করিতে অপারক হয়, এই ভয়ে প্রতি শনিবারে প্রাতঃকালাব্ধি তাহাদিগকে আপন ২ গৃহনধ্যে ক্য় করিয়া রাখে।

এই বর্ত্তমান-কালেও ঐ রাজ্যের সামান্য-লোক-সকল অতি অক্ত। জমাদার-লোকদের কেবল ভূমিতে অধিকার আছে এমত নহে, কিন্তু আপন ২ ভূমির সামান্তর্নানী ক্যক-লোকদি-গেতেও অধিকার আছে; ফলতঃ ক্যকেরা ক্ত-দাসের মধ্যে গণ্য; তাহাদের মধ্যে কোন ক্যক জমাদারের অনুমতি-ব্যতিরেকে স্থানান্তরে গিয়া বসতি করিতে পারে না; এবং সেই অনুমতি পাইলে যদি কোন প্রকার ব্যবসায় করে, তবে যথা সন্তব লাভানুসারে প্রতিবৎসর ঐ অনুমতির নিমিত্তে উক্ত জমাদারকে নিয়মিত পারিতোষিক দিতে হয়; তাহা না দিলে কিশ্বা অন্য কোন প্রকারে জমাদারের অসম্ভোষ জন্মা-ইলে সেই ব্যবসায় ত্যাগ করিয়া পূর্ব-বাসস্থানে পুনরায় ক্যিকর্মা করিতে তাহারা বাধ্যে হয়।

ডেড় শত বৎসরাবধি ক্ষিয়া রাজ্যের নিত্য উম্নতি হইতেছে। দেই উম্নতির আদিকর্ত্তা পিতর নামক রাজা। তিনি ইংরাজি ১৯৭২ শালে জ্যোছিলেন। তাঁহার জ্যেষ্ঠ ভ্রাতা ক্ষিয়দর মরিলে পর ইউয়ান বা যোহন-নামক ভাহার দ্বিতীয় ভ্রাতা রাজ্যের অধিকারী হইল; কিন্তু দেই ব্যক্তি জড়মতি হওয়াপ্রযুক্ত রাজ্যের কুলী-



শেরা দ্বাব্যন্ত পিতরকে রাজক দিতে ।

ভিত্ত করিলে পিতরের বৈনাত্তের ভগনী সকায়া

আপনি রাজ্য পাইবার আশাতে রাজদেহরক্ষক
কৈন্যদিগের নাহায্যদারা আপনার সহোদর ইউরানকে রাজ্য করিলেন। রাজক-পাইবার সময়ে

শেউ জভমতি যুবা সহোদরীর অভিযোয় না বুবিজ্য নেনাদিনের নাজাতে স্পরকাপে কহিলেন,

শতোমর যদি আমাকে রাজা কর,ভবে আমার ভ্রা

তা পিতরকে यूनद्राक्ष करिया भाषात नजी कर्ता। रेमरमाद्रा के श्रेष्ठारक मध्य इंड्राट ध्वा हाछ-मस्मिनी তাहात প্রতিবাধিনী हंইতে পারিলেন না।

পিতর অতিশয় তাকুবুদি ছিলেন; বাল্যকালাবিধ পরাক্রম-বৃদ্ধির উপায়-চিন্তা করিয়া লেকর্জ
নামা এক জন বিদেশি লোককে আপনার
শিক্ষকরূপে নিযুক্ত করিয়া তাহার নিকটে যুদ্ধবিদ্যা ও ভূগোল বৃত্তান্ত ও দুই এক বিদেশী-

ভাষা শিখিতে লাগিলেন। পরে আপন গুমের
সমবয়ক্ষ বালকদিগকে একত্র করিয়া আপনি
পদাতিক হইয়া দৈন্য-সামন্তের নায়ে যুদ্ধাভালে
করাইতে লাগিলেন। প্রথমতঃ বোধ ইইল যে
ইহা তাঁহার খেলামাত্র, কিন্তু ঐ সকল বালকেরা
ক্রমে যুবা হইয়া পূর্বৎ কর্ম করাতে অভি
উত্তম সুন্দ্রিকত হইয়া উঠিল। ১৯৮৯ শালে
ঐ সকীয়ার সঙ্গে বিবাদ হইলে পিতর আপনার সেই সমবয়ক্ষ দৈন্যদলের সাহায্যে তাঁহাকে ধরিয়া এক মঠে কদ্ম করিয়া আপনি প্রকৃত
রাজত্ব করিতে লাগিলেন, কেননা ভাঁহার জভ্মতি
ভাতার যেরাজত্ব সে নাম্মাত্র ছিল।

আপনার রাজ্যে ইউরপীয় বিদ্যা প্রচলিত করণাভিপ্রায়ে পিতর আপনি বিদেশে যাইয়া গভা লোকদের আহার ব্যবহার দেখিতে মনস্থ করেন। তাঁহার এই মানসে প্রাচীন লোকা-চারাসক্ত অনেক ব্যক্তি সাতিশয় অসম্ভুষ্ট হই-য়। তাঁহার প্রাণ-শাশার্থে কৃযুক্তি স্থির করত य त्राबिट वाशनारम्त वांड्याय मकत कतिरव, নেই রাত্রিতে কোন বিশেষ অউালিকাতে একত্র হইল। পিতর কোন মতে তাহার সমাচার পাইয়া রাত্রি একাদশ-ঘটিকার সময়ে সৈন্যদারা এ পৃহ বেষ্টিত করিবার আছে৷ এক জন সে-नागि कि मिलन; शत जाशिन तारे निर्मिष्ठ সময় বিশাত হট্য়া এক জন ভূতেরে সহিত দশ ষটিকার নময় তথায় উপস্থিত হইলেন, তথা গৃহের বাহিরে কাহাকেও দেখিতে না পাওয়াতে সৈ-ন্যেরা ভিতরে গিয়া থাকিবে, এমন অনুমান कित्रा वे गृरह अत्वन कित्रलन। उथाय कक्जो-ভুত কুমন্ত্রণাকারিগণ যেমন তাঁহার দর্শনে बामयुक इरेन, তেমনি ভাহাদের দর্শনে তি-निश्व अथरम जानमूक रहेत्वम वर्ण, किन्न भोचु

रेश्वर्यान् इड्या अन्त-वहत्न क्हित्नन, "वानि शर्ष याहेरछिनाम; आत्नाक विश्वा ताव করিলাম, এই স্থানে কোন ২ লোক আ-মোদ প্রমোদ করিতেছে: অভএব নিদু যা-ইবার পূর্বে তোমাদের বঙ্গে কিঞিং ভোজন পান করিতে আইলাম "। এই কথায় ক্মন্ত্রণা কারিগণ ভয়হইতে মুক্ত হইয়া তাঁহার সহিত মদ্ পান করিতে লাগিল। ফিঞ্চিৎ পরে তাহাদের मर्था এक क्रम शृह्लिखित कर्ल कहिल, "ভाই (ए, जमश हरेल "। शहला कि फेउन कतिल, " अथ-নও হয় নাই"। ইহাতে রাজা লক্ষপ্রদানপূর্বক উঠিয়া ভূকার-তুলা-সরে কহিলেন, "কেমন? তোর সময় হয় নাই? আলার সময় হইল"। ইহা বলিয়া ঐ গ্রপতিকে মৃষ্ট্যাহাভদারা ভূ-মিতে নিপাভিত করিয়া উন্মতের ন্যায় দারের मिर्ग म्थ कतिया **जाकित्वन, " (त रेगन)**गन, अरे বেটাদিগকে ধরিয়া বান্ধ্যা তৎক্ষণাৎ একা-मन बन्छ। वाजित्व शृद्धांक मनाश्वि ଓ उँ।-হার অর্থান দৈন্য উপস্থিত হুইল। তাহাতে কৃমন্ত্রণাকারিগণ কৃতাঞ্জলি হইয়া কৃপা প্রার্থনা করিলেও বৈন্যের যোদ্ধারা ভাহাদিগকে বান্ধিয়া লইয়া গেল। বিশেষকঃ তাহাদের মধ্যে তিন জনের অতিশয় ভয়ানক দণ্ড হ্টল; ফলতঃ ভা-হাদের দেহ চারি ভাগে ছিন্ন হইয়া নগরের এক ২ ছারে এক ২ খণ্ড টাঙ্কান গেল।

অনন্তর পিতর রাজমন্ত্রিগণের হতে রাজ্যশাসনের ভার সমর্পণ করিয়া রাজদূতের বেশধারণ-পূর্বক জর্মণি-দেশ দিয়া গমন করিয়া
হোলগু-দেশের আম্টরদাম নামক অভিপ্রসিদ্ধ
বাণিজ্যভানে উপস্থিত হইলেন। সেই মহাশগরে অণ্প-দিন-অবস্থান-করণানস্তর তিনি নিকটবর্ত্তি সার্দাম্ নামক গুমে গিয়া জাহাজ-

নির্মাণ-করণ-ব্যবসায় শিথিবার অভিপ্রায়ে সা-শান্য সূত্রধরের বেশ ধারণ করিয়া ছুভারের কর্ম করিতে লাগিলেন: কলতঃ প্রতিদিন প্রাতঃকালে বাইশ কর: ৬ প্রতি অক্ত জইয়া অন্য ছ্তা-*(तु*द्ध श्रुहार क्यंक्यात प्रानित्वन, श्रुहार ममस् मिन विवासका ब्रह्मा क्याँ-क्युगानख्य देवकार्स সকলের শেষে বাদাতে ফিরিয়া যাইতেন। উক্ত গুংমে ভিন চারি মাদ পর্যন্ত এই রূপে কাল-যাপনানভর তিনি আশ্ইরদাম্নগরে প্রত্যাগমন করির। নেই স্তানেও দুই তিন মাস পর্যান্ত ছুতা-রের কর্ম করিলেন; পরে রেখাবিদ্যা অঞ্চবিদ্যা প্রভৃতি নান: বিদ্যা উপাজন করিতে লাগিলেন। তদনত্তর তিনি ইংলগু-দেশে গিয়া লগুন-নগরেও নেই প্রকারে কিছু কাল যাপন করেন। পরে। মিত্রে প্রতিনগরের প্রবেশদারে সর্বনাধারণের ইংলপ্ত-দেশহুইতে কএক জন নাবিক, দেনাপতি, গোলনাজ প্রভৃতি লোকদিগকে আপনার রাজে/ পাঠাইরা আপনি যুদ্ধবিদ্যাভ্যাস-করণাথে জর্ম-নি-দেশের বিয়েনা-নগরে গমন করেন। এই ক্রমার ভাতার রাজ্যের প্রাচীন দেশাচারে আ-সক্ত লোকেরা পুনরায় উপপুব করে। তিনি ভাষার সমাচার পাইবামাত্র অতিশয় প্রচণ্ড জোধাবিও হইরা খদেশে প্রত্যাগমন-পূর্বক ঘইতে নানাধিক একশত মানুষের শিরশেছদন করিভেন: এবং তাহার ভূগিনা স্কায়া সেই রাজ-দ্যেত-দোলে সম্মতা হইয়াছিলেন, এই কারণ তাঁ-হার কারাগারের বাতায়ন-সন্থ্রে প্রাণদণ্ড-প্রাপ্ত- রবা নগরের নিকটে পিতরের ৮০,০০০ যোদা যুদ্ধ বিদ্যোহদের মধ্যে দুই ভিন শত মনুষ্যের শব করিতে প্রস্তুত আছে, ইছা শুনিয়া উক্ত চালস টাকাইয়া ঐ রাজননিবীর মৃত্যুপর্যান্ত অর্থাৎ আপনার ৮,০০০ যোদ্ধা লইয়া তাহাদিগকৈ আ-शाह ४६ गत्र यूनाइश द्वायितन।

করণানত্ত পিতের তাহাদিগকে নভ্য লোকদিগের যুদ্ধ করিয়া কালকেমে বাল্তিক সমুদ্রে উত্তর-রাতি গুল্ন করাইতে মনস্থ করেন। আদে সমূদু- ভটস্থ সমস্ত ভূমি আপনার অধীন করেন। পরে

जीतक वार्थाक्त नामक नगरत यूरकाशरयांशा काराक-नियान कहान, उथा वनाना रेडितालीय त्रस्कात माथा टेमनामामाखंद य निवस हिन, ति नियमानुनादत चालन तारकात रेमनामाञ्च প্রস্তুত করিলেন; এবং দাড়ি রাখিতে তথা দীর্ঘ পরিচ্ছদ পরিধান করিতে নিযেধ করিলেন। যে সামান্য লোকেরা দাড়িবিশিষ্ট হইয়া ধরা পড়িত, তাহাদিপকে বলপূর্বক ক্ষৌর-কর্ম করাইতেন, এব॰ मीर्च পরিচ্ছদাখিত পুৰুষদের পরিচ্ছদের অন্ধেক **एमन कडाइटजन। धनि-लाक्टम्ड मट्या याहाडा** माछि वा मोर्च शतिक्म ताथिएं ठाहिक, जाहारमत নিকট্ছইতে বাষিক শুল্ক গুৰ্ন করিতেন। তথা दख्य डेलयुक्त चाक्छि नकनक जानाइवात नि-চক্রেচিরে তাহার আদর্শ টাকাইয়া রাখিতেন। তৎকালে कविया-রাজ্যের পশ্চিমে সমদ্তারশ্ अथल-मकल सीम्न-दारकार्त अधीन, बदः मिक्रान नमृप्रोतञ् अथन जूकक नाटकात अधीन हिन। পিতর ঐ পশ্চিমদিক্স সমৃদুতীরের অধিকারী হুই-বার নিমিতে পোলগু-দেশের আগষ্টস্-লামক রা-জার সহিত মিত্রতা করিয়া স্বীদন-রাজ্যের বিক্জে যুদ্ধ আরম্ভ করিলেন। তৎকালে চার্লস্-নামী আঠার-বর্ষ-বয়ক এক য়ুবা चोनन-দেশের রাজা ছিলেন; তিনি যুদ্ধেতে অতিদক্ষ ছিলেন, এবং তাঁহার সৈন্য অতিশয় সাহসিক। অভএব না-়ক্রমণপূর্বক সম্পূর্ণৰূপে পরাভূত করেন। কিন্তু এতাদৃশ-জ্রক্রপে বিদ্যেছি-প্রজাদিগকে দমন- তিন-বৎসর-পরে পিতর ঐ অঞ্লে পুনরায়

পিতর্স্-বর্গ (অর্থাৎ পিতরপুরী) নামক নুত্ন व्राक्षधानी छाशन क्रिवांत मानम क्रिवान ! (गरे স্থান নলবনে পূর্ণ, সুত্রাং তথায় নগর-স্থাপন-করা সাতিশয় কণ্টনাখ্য ছিল। তথাকার ভূমিকে সমভূমি-করণাভিপ্রায়ে তিন-শত-ক্রোশ-দূরহইতে তাহাদের কোদালি চুপড়ি প্রভৃতি কোন অন্ত্র- অদ্যাপি জ্ঞানি লোকের মনে ঘ্রা জিল্লিয়া থাকে। शक्ष-वकाधिक (वाक वान कांत्र कांत्र

পিতরের জে/গ্র পুঞ্জ আলেক্রিস প্রাচীন-দেশা-চারে আসক্ত হওয়াতে পিতর তাঁহার প্রতি এমন জ্ঞান করিয়া ইটালি-দেশে পলায়ন করে। কিন্তু পিতা ভাঁহার আশ্রন্থান অনুসন্ধান করিয়া পুন-

তথাকার নেওয়া-নামক নদীর মুহানার নিকটে পীড়াতে পীড়িত হুইয়া শত্প দিনের মধে ৮১৭১৮ भारत) थांवडाश कतिरत्व। वाक्षक:-कारत मि-তর নানারোগদ্বারা অতিশয় য|তনা পাইয়া অব-শেষে ১৭২৫ শালের ৮ কিবুয়ারি ভারিথে প্রাণ-ত্যাগ করেন। তিনি ক্ষিয়া-রাজ্যের উল্লিতি কার ক हिल्लन वर्षे ; किन्नु नर्बमा ताशानिष्टे ६ भहालारण দ্যুখি-প্রজাদিগকে বলেতে আনয়ন করা যাইত। লিপ্তথাকিতেন বলিয়া তাঁহার নানোচ্চারণ করিলো

শস্ত্র না থাকাতে তাহারা আপন ২ অফুলিদারা স্পিতরের মৃত্যুর পরে কথোরীণা নামী তাঁহার মৃত্তিকা তুলিয়া আপনং বজে করিয়াবহনকরি- বিধবা জ্ঞা রাজ্য করিতে লাগিলেন; ,রিকস্ত ভা এইৰপ-কেশ-প্ৰযুক্ত ভাহাদের লক্ষ ২ লোক ভাহার রাজন নামনাত্র, কেননা শেন্সিকফ্ অকালে মৃত্যুসূথে পতিত হইতে লাগিল, কিন্তু নাম। রাজ মন্ত্রী প্রকৃত শাসনকর্ত্ত। ছিলেন। তাছাতে নগর নির্মাণের কোন হানি হইল না, কা- উক্ত মেন্সিকফ্ বালাকালে অতিদরিদু ছি-রণ তাহাদের পরিবত্তে পুনঃ২ নৃতন-লোক বলেতে । লেন: রাজধানীর পথে ২ বেড়াইয়া পিউকাদি অনায়ানে আনীত হইতে লাগিল। **এই রূপে ১৭০০ । মিপ্তার**্বিক্রের করিতেন। ভাঁহার অতি স্শাব্য শালে কএক মানের মধ্যে ঐ পিতরপ্রীনামক নগর স্বর থাকোতে অনেক লোক তাঁহাকে ডাকিয়া নির্মিত হইলে পিতর আপন রাজ্যের নানা অঞ্চল তাঁহার নিকটে মিন্তায় ক্রয় করিত। একদা কোন নিবাসি বণিক্ ও ব্যবসায়ি ও ভদু লোকদিগকে । প্রধান সাছেবের ভ্তাগণ ভাছাকে ভাকাইয়া অ-সপরিবারে নেই নগরে গিয়া বদতি করিতে আজা । টালিকার রক্ষনশালাতে তীহার গাত শুবণ করি-করিলেন; যাহারা যাইতে অর্থাকার করিল, তাহা- তেছিল এমত সময়ে গৃহ্যামী স্বয়ং আনিয়া পাচ-দিগকে অতি ভন্নানক দপ্ত দিলেন, সুতরাং অপ্প- ককে কহিলেন, "এই যেবাঞ্জন তুমি প্রস্তুত করি-कालमध्याहे क जिनव नगत वर् कन-नमाकीर्व रहेला (उष्ट्र, हेशांट विल्व मत्नार्याग कत, कनना সম্পুতি উক্ত নগর অতীব স্কর, এবং তক্মধের আমি মহারাজকে ভোজনের নিমন্ত্রণ করিয়াছি; তিনি এই वाञ्चन অতি ভাল বাদেন"। এই কথা বলিবার নুশয়ে পাচকের দৃষ্ঠির অগোচরে পাক-পাতের মধ্যে বিষ নিকেপ করিলেন। মেন্সিকফ্ निर्मेश वावशांत करतन या मिहे यूनी ठोश अनदा उद्मर्गनानस्त्र सक्तांत श्रहान करतन; शरत ভোজের নিক্পিত-সময়ে পুনরায় সেই পথে-আসিয়া মিস্তান-বিক্রয়-করণার্থে গান করিতে রায় তাঁহাকে হুদেশে আনমুন করেন, পরে তা- লাগিলেন। মহারাজ পিতর তাঁহার সুশাব্য রব হার বিচার করিয়া তাঁহার প্রাণদণ্ডাক্তা করিলে। শুবণ করত তাঁহাকে ডাকিয়া নানা প্রকার কথো-বেই রাজকুমার তাহাঁ ভনিবামাত্র নাঙ্ঘাতিক পিকথনানস্তর কহিলেন, "তুমি আমার সম্ভে আ-

अभय गगरस सम्मिकक (भाषात कें हारक नात्वत लिए पत्रत्वाक-श्राध इहेलन। र्रावरलन, "यर्भू प्रामात्र कथा ना छनिया पा-ক্ষনিয়া মহারাজ উঠিয়া তাহার সহিত এক-পার্শ্বে গিয়া অত্থা-কণ্-পর্যান্ত কথোপকথন করি-लम। शर्तः भूनताम्न निकानत्न उेशरनमनशृद्देकः গৃহের করাকে কহিলেন, " আপনি অগ্রে এই ব্য-क्षान्त काश्वाम लडेन, कामि शांत लहेव "। हेहार ह সে ব্যক্তি নানাপ্রকার আপতি করিলে মহারাজ (महे वाक्षन निक्षेवर्खि अक कुक्तुत्क मिलन। কুরুর তাহা থাইবামাত্র অতিশয়-যন্ত্রণা-ভোগ করত প্রাণভ্যাগ করিল৷ তদববি তিনি মহা-রাজের প্রিয়-পাত্র হইয়া ক্রমে ২ ধনবান্ও উচ্চ-পদান্থিত হইলেন, এবং মহারাজের মৃত্যুর পরে বাস্তবিক রাজত্ব করিতে লাগিলেন।

ইংরাজি ১৭২৭ সালের মে মানে কাথারীণা রা-নার মৃত্যু ইইলে মেন্সিফফের যতুদার। পিতরের শোপ্র অথাৎ প্রাবদপ্তাক্তার ভয়ে মৃত মালেক্মি-নেৰ প্ল বিভায় পিতর নানে ক্ষিয়া রাজে।র লি-চাজন আরোহ্ন করিলেন: ও রাজকায়ে সমস্ত মন্ত্র ক্ষানে রাখা অসহ্য বোধ করিলেন। এমত ব্যব্য একদা মহারাজ ভগিনীর নিকটে টাকা প্রেরণ করিলে মেন্সিকফ্ দুতের **হস্তহ্ইতে সেই** টাক লইয়া সাপনি রাখিচেছেন, ইহা শুনিতে পাইয়া ভাষাকে পদচুতে করিতে তির করিলেন, अवः पविवास परामात तीकानुनादा सम्बन्ध **२ (क नश्रिवादत ভয়ানক-শাত্যুক্ত निर्वाति-**

সিয়া ভোজনের সময়ে আমার পরিচয়া কর"। য়া-প্রদেশে প্রেরণ করিলেন। পথের মধ্যে তাঁ-মেনস্কিষ্ এট আদেশানুদারে বাটার ভিতরে হার ভার্য্য অনবরত ক্রন্সন্ধারা অস্ক হট্যা গিয়া ভোকনশালাতে নহারাজের পশ্চাতে দপ্তায়-। প্রাণত্যাগ করিল। পরে ঐ দেশে তাঁহার এক মান রহিলেন। পরে গৃত্রে করা ঐ ব্যঞ্জনের আ- কন্যাও মরিলে তিনি ক্রেশ ও শোকপ্রযুক্ত নির্বাক্ হাদন লইতে মহারাজকে সাধ্যসাধনা করিতেছেন : হইয়া আহার করিতে অখাকার করিয়া ১৭২৯

**এই ঘটনার অপ্পকাল পরে, (১৭৩**० मालের পানি ইছা থাইবেন না "। বালকের এমন কথা জানুয়ারি মানে) দ্বিতীয় পিতর বসস্তরোগে প্রাণভ্যাগ করেন, ও ডল্গরুকি-নামক এক জন প্রধান-লোকের যতুদারা প্রথম পিতরের ভাতৃকন্যা আল্লা রাজত্ব প্রাপ্ত হন। উক্ত ডল্-গভকি মেন্সিকফের বিশেষ শত্র, ও তাঁ-হার পাতনের আদি কারণ হটয়াছিলেন, কিছু উक्ত ১१७० नात्वत यस्या चार्यान्छ . शरहू छ ছইয়া নিবারিয়া-দেশে নীত ছইলেন। যাছারা তীহাকে লইয়া গেল, তাহারা মেন্সিকফ্ ও তীহার পরিবারকে মুক্ত করিয়া কিরাইরা আ-নিবার নিমিতে রাজাত্তা পাইয়াছিল। আ**ন্না उन्गक्किक मृतोकत्र अष्टेत्रमान अ मूनिक नारम** पूरे कन क्यांन गार्क्विमिश्क उक्रशास नियुक्त করিয়া আপনি রাজত্ব করিতে লাগিলেন, কিন্তু বস্তুতঃ তাঁহার অতিপ্রিয়পাত্র বিরণনামা সাহে-বের আদেশানুসারে সকল কর্ম নির্বাহ হইত। মুনিক নাছেব প্রধান সেনাপতি ছিলেন। ১৭৩১ नावावधि ১१७२ मान পयान्त जिन जूकक ला-কদিগের সহিত যুদ্দ করেন, এবং বার ২ জায়ী হ্ন, তথাপি অবশেষে সন্ধি-করণের **সময়ে** करात डेभयुक कल প্राप्त इन नाहै।

১৭৪০ সালের ২৮ অক্টোবর তারিখে আলা রাণীর মৃত্যু হইলে বিরণের চাতৃরীতে সেই রা-নীর ভগিনীর দৌহিত্র ইওয়ান বা যোহন নামা ডেড়-বৎনর-বয়ক বালক রাজবপদে অভি-

ষেক হয়। ইছার বিশেষ বৃত্তান্ত এই।

হার নিকটে আদিয়া এক খণ্ড কাগজ দেখা- তাঁহাকে উপহাস করাতে এলিলেবেথ সতিশয় ইলেন। সেই কাগজের দুই পৃষ্টে এলিজাবেথের জেলবাবিত হুইয়া তাহার সহিত দুদ্ধ করিয়া অপ-প্রতিমূর্ত্তি চিত্রিত ছিল। কলতঃ এক পৃত্তে তিনি রাজমুকুটে বিভূষিতা রাণীকণে, অন্য পৃষ্টে বন্ধু-্ এলিজবেথের মৃত্যু হয়। তিমন্তর তৃতীয় পি-গণের মৃতদেহ্মপ্তলে বেষ্টিতা দাসাক্ষপে, চিত্রিত। তর নামক ভাগার ভাগিলের রাজাই প্রাপ্ত হব। ছিলেন। ইছা দেখাইবার সময়ে চিকিৎসক: ভাছাতে কহিলেন, "এই দুয়ের মধ্যে আপনি কোন্টা মনোনাত করেন, তাহা শাঘু নিশ্চয় ককন"৷ এলিজাবেথ রাজত্ব মনোনীত করিয়া দুই এক দৈনাঘল আপনার পক্ষ করিয়া ভাছাদের नाक (१८७) । ३५८० मारलंब (१८४ ब्राजिन: १५न । ভাগন খধীনে খানয়ন করিলেন। ঠাঁহার খা-ক্রাতে ইওয়ান নামক রাজশিশু কারাবদ্দ হইল; 🖯 এবং যদি দেহ ভাগেকে মৃক্ত করিবার চেপ্তা করে, **ভবে** ভবিলম্বে সেই বালককে বধ কবিতে হইবে, ' এমত আছে। ভাষার রক্ষকদিগকে প্রদত্ত হইল, এবং তাহার থিতা মতে ও মন্ত্রিগণ দিবীরিয়া-**(मरम** প্রেরিত ১ইল। তিন বৎসরান্তে প্রাপ্তক লিষ্টক-নামা চিকিৎনক কোন শত্র ছলেতে ' মহারাণীর অবস্তোবের পাত্র হয়; তথা রাজ্ঞী নামক যুবরাজের মোচনার্থে কেই চেষ্টা দেখাইলে তাঁহাকে কশাঘাত করিবার আজা দেন, এবং ভা্ছার রক্ষকেরা তাঁহাকেও বধ ফরিল। অবশেষে তাঁছাকেও সিবারিয়া-দেশে প্রের । এবম্পুকারে ১৯৬২ সালের জুলাই মাসে দ্বিতীয়া করেন। তদবধি বেষ্টুচেফ্-নাম। ভাহার শত্রু কাথারানা রাজন্ব প্রাপ্ত হইয়া প্রায়ঃ চতুন্তিংশৎ-প্রধান মজির পদে নিযুক্ত হওয়াতে, এবং রাজম- বিষ-পর্য্যন্ত দেশ-শাষন করেন। প্রযিয়ার রাজা

যিক্ত হয়। কিন্তু অলপ দিনের মধ্যে বিরণ ও বর্ণা মথ থাকাতে প্রহারা অভিশাস দোরাক্ষ্য ওষ্টরমাণ ও মুনিক এবং শিশু-মহারাজের পি- ভোগ করিতে লাগিল। বিশেষ সং কোন বাচাল তা মাতা, এই সকলের মধ্যে পরস্পার বিবাদ : জীলোকদারা অপবাদিত হইলে আভিযান লো-বিসম্বাদ জান্মিয়া ঐ বালকের পদচুটি ও প্রথম : কেরাও কশ্যেতি প্রহারিত হটত : কিয়া তাহা-পিতরের কন্যা এলিজাবেথের রাজপদে অভি- দের জিলাক্রেদন-পূর্ক তাহাদিগলে সির্বারিয়া-্ দেশে গ্রেরণ করা যাইত। তাৎকালিক প্রাযিয়া-একদা লিইক নামা তাঁছার চিক্তিশক জিল্টোলনের রাজা এলিজবেথের লম্পটিভা-প্রযুক্ত বারহ বাদ আছোদনের চেল, এরিয়াজিলেন। ১৯৬২ নারে **िन जे श**िवशा-होट्ड निरम्प नृ**ध्व हिरलन**; এই চেতুক তৎক্ষণাৰ টেননগাবিপতিনিগের নি-करि बई काब्दा ट्यात्व कि दिनम, अट्टायता अ-দ্যাবধি যাঁহার বিপক্ষে সূজ করিভেছ, আবি-লমে তাঁহার পক হত্যা তাত্ত্তি নাচায়। কর''। এই পিতর কোন ২ চিত্রে অবস্থলাকী ছি-লেন; কিন্তু কিঞ্জিৎ স্থামতি ৩ একপ্ৰইয়া হও-द्वारण मामाना लाकरम्ब, विरम्भयस्थ, टेननाभरम्ब व्यनस्थाय जनावैद्याष्ट्रितनः अतः काथाताना-নামী আপন ভাষাগার নহিত অভিশয় মন্দ বাবহার করিতেন; তাহাতে নেই কাথারীন ব্রাজন্ব পাই-বার উপায় দেখিয়া কতিপয় দৈন্যদলকে সপক করত আপন মামাকে ধৃত ও ব্ধ করিলেন। এই ঘটনার দুই বৎসরাজে প্রোক্ত কারাবন্ধ ই ওয়ান-

হিষা অভিঘূণার্ছ কুকর্মে ও কাম্পেনিক ধর্মকর্মে। তাহার মৃত-স্থানির বিশেষ বন্ধু ছিলেন, ও তাহা।

ভোগ করিতে গ্রুগ্ছিল, এই ফনুমানে রাজমহি-ৰী তাঁলার বিক্জে যুগা করিতে প্রবৃত্ত হইয়াছি-লেন: কিন্তু কিন্তুদ্দিৰসানন্তর তাঁহার সকল-পত্র-পাঠ করণ দারা ও অনুমানের মিথা বি প্রকাশপা-डेरल केलात महिले मिख करतन।

হাবিংা দেশের দক্ষিণ পশ্চিম অঞ্চলে "ক-মাক শ্লামল লোকেরা বাদ করে। তাহারা দভ্য त्वि-मर्भारणका गृष्क अधिक अनुत्र । কাহাদের সুক্ষাধ কৃদু, কিন্তু অতিশয় চেত্রগামী e বিশ্বস্ত। সেই লোকেরা পৈতৃক দেশাচারে অতি আনকু কোথারাণার কর্মকর্টাণ অজ্ঞানতা-প্রযুক্ত অনে 🕮 বিষয়ে নেই দেশাচারের অন্যথা 🖯 হইহাছিল। ভালতে পুগাছেক-নামা তাহাদের : বিভাগ করি: তাহাতে তাহার বল ভফ ছইলে মধে। এক জন স্থাপনাকে মৃত পিঁতর রাজের প্রতিবাদির। নিভঁয়ে থাকিতে পারিবে।" এই ত্ল্যাকৃতি জানিয়া স্বজাতীয় লোকদিগকে ক- তিকারে ১৭৭২ নালে পোলণ্ড-রাজ্যের দুই কুদু হিতে লাগিল, "পিতর নামক মহারাজের মৃত্য- আশ্ল ঐ রাজধয়কর্ম, এবং অভিবৃহৎ এক ন্মাচার গণ্যমাত্র। তিনি মৃত না হইয়া পলা-্ অংশ কাথারীনা-কত্ক অপহাত হইল। অবশিষ্ট মুন ক্রিয়াভিলেন। আমি সেই মহারাজ। আ- অংশের রাজা সম্পূর্ণক্রেপ কাথারীণার অধীন ভোকে তালার শন্পামী হট্যা কাথরীণার বিক্**দে** यहिन्। हाक्षी जावातुः प्राप्ति ।

নীমাজিল পোল্ড-নামক রাজ্যের প্রতি অতিশয় চাত্য্য-সংবছার করেন; কলতঃ প্রথমে আপনার । দৌরীক্স-প্রযুক্ত অভিশয় অসম্ভই আছে।

রইপরামশান্সারে ক্থোরীণাকে জনেক দৌরাআ । অভিলয়িত ব্যক্তিকে সেই দেশের রাজা করণার্থে ज्याय देननागिरक (श्रुत्रव क्रित्रवम । श्रुर्त्त (जरू দেশের মধ্যে যে দলভেদ ছিল, তদারা লোকদের অ্লৈক্য নিত্য ২ বাড়াইলেন ৷ তাঁহার এইৰপ वावहारत अगस्रहेम्रानत लाक्ति जूककरमत मा-ছাঘ্য-প্রার্থনা করিলে কাথারীণা ভুকক-রাজ্যের मञ्जि युक्त कदिएं नाशिएलन। (मन् युक्त विर्मु) हि প্রজাদের অবিশ্বস্ততাপ্রযুক্ত, এবং ছেন্সি-নামক उत्त्व निकटि नाविक रेमत्म्य श्राक्षप्रधाता जू-ককলোকের অধিক ক্ষতি জন্মিল। তাহাতে অস্ট্রিয়া-দেশের রাজা, এবং প্রবিয়া-দেশের রাজা অস-त्याय श्राकामा कतित्व काथात्रीना कहित्वन, " अह পোলণ্ড রাজ্য মিত্রভেদের কারণ। আইস, আ-করিতে প্রবৃত্তি চইলে তাছারা সকলেই অসম্ভুষ্ট মরা তাছার ক্তিপয়-প্রদেশ আপনাদের মধ্যে ট্র, জাষার লাছায়। কর, আমি ভোমাদের। হুইলেন। প্রায়ঃ বিংশতি বৎসর পরে সেই দে-করিব:" তাজার এই কথাতে সর্বসাধা- কোর লোকেরা তাঁহার দৌরাল্ম্য আর স**হ্য** রুভের বিস্থান জন্মিলে অপ্পকালের মধ্যে লক্ষ্য ক্রিতে না পারতে রাজ্যের অপর এক অংশ ক্ৰিয়ার ও প্রবিয়ার রাজদ্বয়ের মধ্যে বিভক্ত মুজোভাত হয়। কিন্তু দুই বৎসর পরে ধনা ভাবে তা- । হইল। পরে পুনর্বার ভয়ানক যুদ্ধ হইলে ১৭৯৫ ভার মৈল। হাল পাইল, ও তাহার অনুগত লোক- । নালের শেষে সেই দেশের অবশিষ্ঠ অংশ ক্ষিয়া ক্রেমারে জিলা জন পারিলোয়িকের লোভে তা- ও প্রবিয়া ও ওপ্তিয়া, এই তিন দেশের রাজ-शास्त थ त्रिशः देश्कित शिक्त स्वाकि मिर्गत इरण ममर्गन शिल्त मर्था विख्क इन्ने । अने करण शूर्वका-ালের অভিবৃহৎ পোলগুয়-রাচ্চের পঞ্চাংশের এছ সালাব্ধি কাথারীবা কবিয়ার পশ্চিম। চারি অংশ ক্ষিয়া-রাজ্যে ভাষাৰ হইয়াছে। (महे प्रत्भाव (लाएक वा अम्। भि क्यीय (लाक प्रत

# বিবিধার্থ-সঙ্গৃহ,

পুরারভেতিহাস-প্রাণিবিদ্যা-শিপ্প-মাহিত্যাদি-দ্যোতক মাসিক পত্র।

৩ পর্ব ]

मकाक ३११७, कांचिक।

# ভরতপুরের ইতিহাস।



পরে তাঁহার বংশ অবিরোধে ৪০ বৎসর কাল ভরতপুরের রাজ্য শাদন করে। ১৮১০ সংবৎ-গরার পশ্চিমাংশে ভরতপুর সরে তাহার পৌত্র রণজীৎ সিংহ ইংরাজদিগের তা ৄ নামে এক প্রনিদ্ধ দেশ আছে; সহিত এক সন্ধি স্থাপন করেন; তাহাতে উভয়ে তাহা মোগল-বংশায় দিল্ল/খি- পরস্পারের শতুদমন-নিমিত্ত অস্ত্র ধারণ করিতে পতিদিগের উমতাবস্থায় তাঁ- প্রতিশ্রত ইন: এবং রণজাঁৎ সিংহ তদ্যারা हामिराग्रहे व्यथान हिन: किन्न ठाँहामिराग्र श्री श्रुष्टे- सीय साधीनय উভयकारण जन्दालन करतन, अ হওন-সময়ে জাটদিগের হন্তগত হয়। উক্ত গোয়ালিররের রাজাকে বার্থিক-কর-প্রদান-ক্রিয়া কাট জাতীয় ব্যক্তিরা প্রথমত মুল্তান প্র- হইতে নিফ্তি প্রাপ্ত হন: অধিকস্ত তাঁহার রা-দেশে বাস করিত; প্রায়ঃ দুই শত বৎসর জ্যের সীমা-নিরূপণ-সময়ে সন্ধিকারিদিণের কৌ-इन्न ज्थार्हेट जानिया जायंगवर्जन नर्व भटन जारात जायाजन द्वि र्यः किन्न अर्मनकन ব্যাপন করে। আর্যাবর্ত্তে আদৌ তাছারা কৃষি- লাভ সত্ত্বেও তিনি তাছার পর বৎসর ইংরা-কর্মে নিযুক্ত হয়, কিন্তু অপ্পকালের মধ্যে জদিগের শত্রু হইয়া ছলকারকে দীঘপুরস্থ বলবীর্য্যের কৌশলে ছলের পরিবর্ত্তে থড়গ- মহাদুর্গের সন্মিকটে শিবির সংস্থাপন করি-ধারণপূর্বক আপনাদিগের নিমিত্তে অনেক স্থানে তে দিলেন, এবং ভৎপরে ঐ স্থানে ইংরাজদিগের वासिनिः रामन कार्यन करता वे मकन वास- रिमना ও छनकारवद रेमनामरथा जूमून मञ्जाम বিংহাসন-মধ্যে যাহা ভরতপুরে স্থাপিত হয়, উপস্থিত হইলে দীঘের দুর্গহইতে তিনি ইংরাজ-তাহাই দর্বপ্রধান; তদুপরি সূর্য্য মল (সুরজ্ সৈন্যের বিনাশ-নিমিত্ত কামান ছুঁড়িতে লা-मक्) नामा अकलन कां प्रथमणः बाधीन इहेशा शिलान। अहे व्यमक्रवहादत है शास्त्रता व्यक्रस আরোহণ করিয়াছিলেন। ১৮২॰ সংবৎসরে তিনি ক্ট হইয়া তাঁহার সৈন্যকে পরাস্ত করত তাঁহার **रिझाथिश**ित त्मानायक नकक् थाँत निरुष्ट इस्ट्रेंट मीच नगत व्यश्चित कार्य, व्यर मण्य-मण्डारम काकास्त्र याजा करतन। ७९- मीरमत मूर्ग-धूरम-कत्रवार्थ केमू क इत्र । त्रविकार

and the second s

ভরতপুরেঃ মূর্গে এক্ত করিলেৰ।

लिक् नास्टि म्म-नर्मु योका वहेश के मूर्णत अधीन थाकिए, बीकांत करतन। विकास उथा पूर्व याचामिर्गत चक्र विकास रेमना श्रात्र कतिशाहिरम। কোনগড়ে তগুণর হুইয়া কৃতকার্য্য হুইতে পা-भगम को (क लाशिका

রংপাধিতঃ প্রকাশ করিয়াছিলেন, এবং তাঁহার रंगनां वात्नुक्रायह यथाथ धर्म-प्रविभावन-शूर्वक धार्यात यामित मञ्जल (ठठे। कतिया

निः ए जमवद्याय (मिश्रासन, देः ताकि मिश्र व्यवश्य नाहार्या जिनि वहकान है दास्ति भारत গোলাহইতে দীম রক্ষা করা অসাধ্য; অতএব যুদ্ধ করিতে পারিবেন, বিশেষতঃ তাঁছার আপন ও রলকাঞ্জের নমস্ত দৈন্য আনিয়া দুর্গে যে সকল খাদ্য দুব্য সন্তুহীত ছিল, তা-हात त्याय हहेट जाशिल; है बाटकता पूरर्भत ঐ न्त्र অতি লাবধানে অনেক ব্যয় ও বুদ্ধি- চতুদ্িগ্বেষ্টিত করিয়া রাখিয়াছিল, দুর্গ-বহি-মহকারে এ প্রকারে নির্মিত হইয়াছিল, যে দেশিহইতে খাদ্যদুব্য আনিবার উপায় নাই, क्ष्या । विष्य क्ष्या विषय क्ष्या व्यवाद नहिं। मुख्दाः मञ्जूरोष थात्मात्र स्मय व्हेत्वह उभवाम ভালার চতুদ্ধি প্রশস্ত ও অতি গভীক্ল এক সন্তাবনা। অতএব ইংরাজদিগের নিকট সন্ধির খাত ছিল, ভাতার অবতরণ করা নিরতিশয় ক- প্রস্তাব প্রেরণ করিলেন, এবং তৎসম্পাদনার্থে ভিনা কাৰ ভংপশ্চাতে ৪০ হস্ত ছুল, ও অত্যুক্ত অভ্যন্ত ব্যগু ছইলেন। সন্ধি করিতে ইংরাজদিগের এক নৃৎপ্রালার ছিল, ভাষা কামানের গোলায় মনন ছিল, সুতরাং উভয়ের অভাষ্ট অব্যাজে ভথ হয় না, সুতরাং ঐ দুর্গ-ভেদ-ছওয়ার কোন বিদ্ধ হইল। সক্ষিপত্তে রণজাৎ সিংহ ইংরাজ-मुक्तारकः ছिल ना। हे॰ ब्राक्तिरिशव रिमालिङ मिशिक २० लक्क होका मिर्छ ও हे॰ ब्राक्किरिशव

েচন-করণার্থে যৎপরোনাস্তি প্রয়তু করিয়া- । এই ঘটনা অবধি ভরতপ্রের রাজ্য নির্বিঘ্র ছিলেন; কিন্তু ক্রমাগত চারি মাস ঐ দুর্গোপরি চলিতে লাগিল, রণজীৎ সি॰হ এবং তাঁহার পুঞ প্রাতিট্ কালের বর্ষার নাগায় গোলা বর্ষিত করি- । রণধীর আপনাদিগকে ইংরাজহইতে দুর্বল জা-আৰু ভাষার ধুংস করিতে পারিলেন না; প্রভাতে নিয়া সর্বদা তাহাদিগকে সম্ভুষ্ট রাখিতেন, এবং পুগ্রত পেল কর্ক মধ্যে ২ আক্রমিত হইয়া কোন মতে কাছার সহিত বিবাদ বিস্থাদ করেন দিন ২ জান্তল হইতে লাগিলেন। এই অবস্থায় । নাই। ১৮৭৩ সংবৎসরে ইংরাজেরা পিগুরিদিগের তিনি বলপ্রক দুগ-প্রবেশ করিবেন মানলে দমনার্থী ছইলে রণধীর সিংছ ইংরাজদিগের णाहि यात मृश बाक्य व करतन; किन्नु पूर्णत श्राष्टीत मण्यूचित्र एं उदमाहारया अक पन अधारताहि

১৮৮০ সংবৎসত্ত্রে রণধীক্র সিংহের মৃত্যু হয়, রিলের কা বুডরা- অবলেবে সন্ধি করিবার এবং ভাহার ভাতা বলদেব সিং**হ ভরতপুরের** রাজ্য-ভার গুহণ করেন, কিন্তু তাহা বহুকাল যদিচ রাজা রণজাঁও দিংক দুর্গারকায় উত্তম বৃহন করিতে পারেন নাই; দুই বৎনরের মধ্যেই তাঁহাকে পরলোক যাত্র। করিতে হইল। তাঁহার ছয়-বৎসর-বয়ক্ষ এক মাত্র পুথা ছিল; তাছার नाम दलवन्छ नि॰इ; भाजामूनादत छत्रक्त्रत ত্ত্ৰভাৰ কিন্তাহিল, ভত্তাপি তাঁ- রাজ্য তাঁহাকেই অশে, এবং ইংরাজেরা ভাঁহাকেই शत अगठ एउना हिल मा, या छाहात टेममा- ताँका विवास बीकात करतम ; किन्न छाहात शिख्वा-

পুঞা দুজ্জন শাল \* পিতৃষত্ত্ব আপহরণাভিলাবে | হইয়া তাঁহার সহিত যুদ্ধ না করিয়া দুর্গন হ তাঁহার বিরোধী হইল। ই রাজেরা তাহাকে তা- হইতেই গোলাবৃষ্টি করিতে লাগিলেন। ই রাজের। দৃশ কদাচরণছইতে নিরস্ত ছইতে পুনঃ২ উপ- তাছাতে কোন মতে ভীত না ছইয়া দুপ-বেপ্তল দেশ দিলেক, কিন্তু তাছার কিছুমাত্র আকর্ণন পূর্বক দিবারাত্র তম্মধ্যে গোলা-মিক্ষেপ-করি ना कतिया त्म ভत्रज्ञशूरतत पूर्णभरका रेमना-म- वात मानत्म द्यात्म र वृङ्क कामान द्यापन মাহরণ করিতে লাগিল। তাহার বোধ ছিল করিয়া দুর্জনশালকে এই বলিয়া ন॰বাদ পাঠাই-যে ইণ্রাজের। ভরতপুরের দুর্গ-ভেদ করিতে লেন যে "যুদ্ধের সময় দুর্গ মধ্যে জ্রীদিগকৈ রাখা এক বার অক্ষম হইয়াছে, আর ভাহার সমূথে আসিবে না, সন্ধি করিয়া তাছাকেই ব্লাজা খী- থাকিব, তন্মধ্যে জীদিগকে অন্যত্র প্রেরণ ক্র "। কার করিবে; অপর দল বল সমাহরণের অবকাশ- দ্র্জন ঐ পরামশ গুহণ করিলেন না; সতএব প্রাপ্তার্থে সন্ধি করিবার কম্পনায় ইংরাজদিগের নিকট দত প্রেরণ করিলেন। এতৎসময়ে জেন প্রতিনিধিষ্কাপে দিল্লাধিপতির সভায় উপস্থিত क्रिति श्राप्त ६३ए७ हम्न अहे ज्या, जाहाति निरयध कतिरान्। वे व्यवकारम मुर्क्कनमान यथानाध्य देनन्य मामञ्ज मञ्जूष कतिए जुष्टि करतन নাই, এব॰ মনে ২ করিতে লাগিলেন যে অভেদ্য ভরতপুরের সমুখে ইংরাজেরা কদাপি আসিতে পারিবেক নাঃ কিন্তু অপ্পকাল-মধ্যেই ভাহার **म** जुम मृतिकृष इरेन। रेश्ताकमिरशंत मिनाशिक नार्छ कथर्ममञ्ज् २०,००० (योषा व्यव धारा पूरे শত কামান সমভিব্যাহারে লইয়া দুর্গসম্বুথে উপ-पूर्जनमाल पूर्वहरेख निर्शेख श्विक इक्टलमा

কর্ত্রা নহে: ২৪ ঘণ্টা কাল আমরা নিরস্ত প্রদিব্দে ইংরাজ-দেনাপতি প্রবায় ভজ্জপ म॰वाम भाठाहेलनः किन्न जाहा नियून इहेनः রল সর্ভেবিড্ অকুলোনি সাহেব ইংরাজদিগের অবশেয়ে ইংরাজ-দেনাপতি কামান ছুড়িতে चन्यि अनान कविरलन। এই আজ्ञान्मारत ছিলেন। তিনি দুজনের গুঢ়াভিপ্রায় জানিতে কএক দিন জমাগত গোলাবৃষ্ঠি হইতে লাগিল, পারিয়া কতকগুলি যোদ্ধা একত্র করত ভরতপুরে কিন্তু তাহাতে দুর্গ-প্রাচারের কোনই হানি হইল যাত্রা করেন, কিন্তু গবরনরজেনের**ল্ আমহ**র্ভ না, অতএব কম্বর্মিয়র্ সাছেব ইণরাজি ১৮২৫ সাহেব, পাছে কুদু-দল-বৈন্য-নহকারে যুদ্ধারস্ত শালের ২০ ডিদেশ্বর দিবদে (নংবৎ ১৮৮১) भू एक थनन कतिए अनुमिं कि कितिन। ১०-->२ मिनदनत यदशदानान्ति शतिनुत्य वे मुख्य पूर्न-প্রাচীরের নিমু-পর্যান্ত পৌহুছিল: তথন তথায় এক বৃহৎ গুছা প্রস্তুত করত তথ্যধ্যে বারুদ পুরিয়া তাহাতে অমি সংযোগ করিবামাত্র ভয়ানক ধুনি করত তথাকার কিয়দংশ প্রাচীর ভগ হইয়া গেল। এই প্রকারে ক্রমশঃ প্রাচীরের কএক স্থান ভগ্ন করত ই॰রাজি ১৮**২৬ অব্দে**র ১৭ই জানুয়ারি **দিবলে সলৈনে। কন্তর্মিয়র সাহেব দুর্জন-**भारतत टेमना प्रहिष्ठ पूर्व यन्टें।काल जूमून নস্থাম করণানন্তর ঐ ভগ্রস্থান দিয়া দুর্গ-প্রবেশ वादत वसी कतिया, श्रेयारण श्रिवन कतितान; তথায় অদ্যাপি তাঁহারা কারাক্তর আছেন। ।

<sup>\*</sup> द्वाबीर निश्टहत हाहि शृञ्ज, दगधीत निश्ह, उलाहत निश्ह, লক্ষাণ দিৎছ এবং পূর্থা-দিৎছ। ওল্পধ্যে রণধার এবং পৃথ্ সিংছ নিংদস্তান ছিলেন, বলদেবের পূজ বলবন্তদিংছ, এবং কাৰ্মনের পূজ্ দূক্রন শাল।

এই ঘটনার 🕫 দিবস পরে ইংরাজ-সেনা- বিজি বাস করিত। তাছার পুঞ্রের নাম-বিত-র্বিয়ে ৰাধীনাবসায় হহতে রাজকার্য্য সম্পন্ন তোভাবে কাপট্/ছীন ছিল. একারণ বিনাবিলথে করিতেছেন।

## णि अप्तानम् अ कन द्वान्निया।

পতি বলবার বাহুকে ভরতপুরের রাজ সিং-। ডোশস্। তিনি নীতিবিদ্যায় অতিশয় পণ্ডিত, হাসনে সংস্থান প্রক ভাইর মাতা রাণী অমৃ- ও সভ্যতা দয়া দাকিণ্য প্রভৃতি অন্যান্য গুণ-তকুমারাকে (ইম্রৎকুম্বর্) কর্মকর্ভ ও দিবান রিজে মণ্ডিত ছিলেন। যৎকালে তাঁছার বিংশতি জবালা লাল এবং কৌজদার চুড়ামণ্ এবং বর্ষ বয়ংক্রম তথন তিনি পূর্ণ-পঞ্চদশ-বর্ষীয়া োবিদ্দরামকে রাজকার্যের নির্বাহ করিতে নি-। কনষ্টান্শিয়ার সহিত পরিচিত হন। তাঁহাদের যুক্ত করেন। এই কএক ব্যক্তি কিয়দিন অবি- বাসন্থান কেবল ক্রোশার্দ্ধমাত্র-ব্যবহিত ছিল, রোবে রাজা করিয়া, পরে পরস্পার দুই তিন একারণ প্রতিদিন পরস্পার নাক্ষাৎ-হওয়ার কি-বার বিবাদ করিয়াছিল। ভাছাতে ইংরাজকত্ক ছুমাত্র বাধা জন্মিত না। কনষ্টান্শিয়া থিও-অম্তক্লারা রাজ্যভার হইতে মুক্ত হন এবং ভোশদের মনোহর-রূপ-লাবনেরে মাধ্য্য-দর্শনে দিবান ও ফে:জদারের হত্তে রাজ্য সমর্পিত হয়, 😼 সুখাময়-বচন-বৈদ্ধ্য শুবনে নিতান্ত মৃথা ভ্যা এক জন ই রাজ প্রতিনিধি এবং কএক দল হুইয়া আপুনাকে চরিতার্থা ও ভাতার নিকট বিনা-ইংরাজ পদাতিকও তথায় স্থাপিত হয়। ১০১৮ মূলের জীতা করিয়া মানিলেন। সে স্বয়ং ও সংবংগরে বলবস্ত প্রাপ্তবয়ক্ষ হইয়া সদাচরণছারা নৌন্ধ্যি বিষয়ে কোন অংশে তাহাইইতে নূন है ब्राक्षिणिक मञ्जूष करतन अवः जनविध मि- हिलाम ना, विश्वाय कः काहात मरनत साव नर्व-থিওডোশদকে তাছার অকৃত্রিম-প্রনয়-পাশে ়বদ্ধ হইতে হইল;্ফলতঃ উভয়ে উভয়ের মনঃ रुत्रव कतिरलन। প্রতিদিন তাদৃশ প্রবয়ের নব ২ ভাব উদিত হইতে লাগিল। याहा हरेक छ।-নির্দানির বিষয়ে নাম্বী এক অসাধারণ- হাদের তথাবিধ প্রতি কবিষ্যতে বন্ধমূলা ও চির-বিষয়ে নাম্বী এক অসাধারণ- হামিনী হইবার উপযুক্ত। হইয়া উঠিল। এতাদৃশ লাবণ্যবতী যুবতী ছিলেন; তাঁহার নিবিবাদ সুখসস্তোগের গময়ে ঐ প্রিয়ত্ম ও প্রেয়-পিডা বড়াত্র-প্রমান্ত্-সহকারে অপরিমেয় ঐশ্বর্য**্ সীর জনকেরা কেছ কুলাভিমান কেছ ধনাভিমান** मञ्जूष করিতে তংগর ছিলেন। কি কাপে অর্থ প্রকাশ করত এক অপ্রতিবিধেয় বিষম বিবাদ উপাত্তিত হউবেক কেমনে তাহার রক্ষা হইবেক, উপস্থিত করিলেন। উভয়ের যৎপরোদান্তি বৈর-কি প্রকারেট্ বা তাছার বৃদ্ধি হইবেক, ইত্যাদি ভাব প্রকটিত হইতে লাগিল। ইহাতে কন্তান্-বিষয়ে সর্দঃ চিন্তা ও অনুশালন করত তিনি শিয়ার পিতা ৰকীয় প্রতিধন্দির উপরি কোপ-ক্রম্মিলাচ বলিয়া পরিগণিত ছিলেন; ধনের প্রকাশ-পূর্বক তৎপুত্র থিওডোশস্কে নিজভবনে পরিচালন ব্যতাত আর কিছুডেই তাঁছার সুখ- আসিতে বারণ করিয়া নিঞ্পায়া কন্টান্শিয়াকে বোৰ হটত লা। ভদ্যিগুমি সলিহিত গুমা- ভাহার মুথাবলোকন করিতে নিবেধ করিলেন। ত্তরে অতি সভঃশজাত ধান-ভাবাপার এক নিবেধ করিলেন বটে, কিন্তু নিজভনয়া কনউনিশি-

শ্বণ করিয়া কন্টান্শিয়া ভয়েতে কিছুই উত্তর ভূত হউক "। দিতে পারিলেন না, সুতরাং তাঁহাকে মৌ- ঐ দিন সন্ধাকালে পত্রথানি কনপ্তানশিয়ার

(लग। यथा,

য়ার প্রাণাধিক প্রিয়তমের সহিত পুনর্বার মিলনের ট্ইছাই কি আমাকে জীবদশায় থাকিয়া প্রতিত बाधान चाह्न जात्व वृक्षित शाहिया जिनि अक इहेन ? य नकन मही जाते, य य श्री खात । य महत्य মানধনকুলসম্পন্ন নবযুবককে নিজতনয়ার পা- কুঞ্জমধ্যে, আমরা একত্তে কথোপকথন করিভান, নিগৃহনের পাত্র, স্থির করিয়া এককালে শুভ- এক্ষণে গেই দকল দর্শন করিতে গেলে আমার বিবাহের দিনাবধারণ করিলেন, এবং অবিলম্বে ছদয় বিদার্গ ও অনিবার্য্য-দৃংখানল-প্রভালিত सेरिनाश ও প্রয়োজনীয় দ্বাদি আহরণ করিয়া হইতে থাকে; ভিতিক্ষায় জীবন বহনও ভার কনপ্রান্শিয়াকে কহিলেন, "বংসে! তোমার বেখি ছইতেছে। ঈশ্র-সলিধানে প্রাথনা করি শুভবিবাহকাল উপস্থিত, তিন সপ্তাহ পরে তুমি পৃথিবীতে বহুকাল পর্ম-সূথে অবস্থিতি সুপাত্তের হত্তে তোমাকে সমর্পন করিতে মনস্থ কর, এবং পিওডোশন নামা কোন ব্যক্তি এই করিয়াছি"। পিতার মুখহইতে এতাদ্শ বাক্য ভূমগুলে ছিল এ কথা তোমার মারণহইতে দরী-

নভাবেই থাকিতে হইল। তদর্শনে সম্ভটননে হত্তে আগতমাত্র তিনি অতিমাত্র সবরা হইয়া পিতা তাঁহাকে অশেষ প্রশংসা করিয়া কহি- তাহা উম্মোচন পূর্বক পাঠ করত তম্মর্যজ্ঞানে লেন; "ভাল ২, ইছা উচিত বটে, বিবাহের জ্ঞানশূন্য-প্রায়া হইলেন, এবং অতিকটে বিভাবরী-কথা-প্রসঙ্গে কুমারীদিগের মৌনভাবে সক্ষতি- যাপন করিলেন। পরদিন প্রাভাকালে প্রকাশ প্রদান করা বড় ভদুতা বলিতে হইবেক", ইহা হইল যে নিশীথ-সময়ে থিওডোশস একাকী গৃহ-বলিয়া তিনি বিবাহের উদ্যোগে রহিলেন। পরিত্যাগপূর্বক কোন স্থানে প্রস্থান করিয়া-এদিকে লোক-মুখে কন্টান্শিয়ার পাত্রান্তরের : ছেন। ক্ষণকাল-বিলম্বে তাঁহাকে অম্বেষণ করিতে সহিত বিবাহের সংবাদ থিওভোশদের শুবণ- দুই তিন জন লোক কন্টানশিয়ার পিতৃণ্ছে গোচর হইবামাত্র তিনি মনে ২ যৎপরোনাত্তি আগমন করিলে পর কনপ্রান্শিয়ার ভয় ও ব্যাকৃল হইতে লাগিলেন। তাঁহার তাৎকালিক শোকের নীমা-পরিশেষ রহিল না। পূর্বদিন থিও-মনোবেদনা ভদাতিরেকে অন্যের ব্যক্ত করি- ডোশস্কে তৎপরিবারবর্গ উৎকণ্ঠাকৃতিত দে-বার সাধ্য নাই। পরে তিনি ধৈয্যাবলম্ব-পু- থিয়াছিল, এক্ষণে অস্বেষণকারিদিপের প্রমুখাই র্বক ক্ষণকাল তাদৃশ ভাব সম্বরণ করিয়া কন- তাদ্ধয়িণী কোন বার্তা শুনিতে না পাইয়া ষ্টান্শিয়াকে এক পত্র লিথিয়া প্রেরণ করি- ''না জানি থিওডোশান্ কি সর্বনাশই ঘটাইয়া-ছেন" ইহা ভাবিয়া নিতান্ত ভীত হইতে লাগি-• এত দিন তোমাকে চিন্তা করিয়া আমি লেন। কনষ্টান্শিয়া ভাবিয়া দেখিলেন যে অপার আনন্দ অনুভব করিতেছিলাম. কিন্তু "আমারই বিবাহের কথা শুনিয়া থিওডোন্স্ এক্ষণে তোমাকে চিন্তা করিয়া আমাকে অসহ। এ পর্য্যন্ত করিলেন; আমিই তাঁহার সংসারসুখে বেদনা ও মহায়সী যাতনায় পরিপীড়িত হইতে জলাঞ্জলি দিবার মূলীভূত কারণ হইলাম । হইতেছে। এত দিনের পর তুমি অন্যের হইলে; ইহা ভাবিয়া তিনি অপার-লোক-পারাবারে

শাস্ত ও স্তর্ভাবে কংপাত করিয়াছিবেন বলিয়া আপনাকে আপনি কোটি ২ ধিক্কার দিতে ও : ষ্মনৃতাপ কৰিতে লাগিগেন। অধিকন্ত প্ৰস্তাবিত-भाजरक विकासिना मन्दात्रक्षम् (वाध করত মনে ২ এতাদৃশ সঙক প স্থির করিলেন · ভাষাকে এডদুপলকে ভনকের **ক্রোধ**ভাজন চইয়া অপার চাতনায় জীবন-ঘাপন করিতে হয়, ভাষাৰ ৰীকার, তথাপি এন্ধপ অমকল পাপ-ময় বিবাহ করিতে আমি কথনই সমত হইব मा"। इंहा जारिया जिम शिज्ममोल-विवाह ক্রণের অনিজ্ প্রকাশ করিলেন। ভাছাতে তৎপিতার অসন্তোষ না হইয়া বরণ ইউনিদ্ধি वाध एडेल। भारक श्रकात थिएडामम्रह यमाथा कहा इहेन, अथह डेशङ्गित लाउ थाभाउक कन्।-नन्भूनान वित्र इहेरन स প্রভাত ধন বায় করিতে হইত ভাষ্যওরক্ষা পা-ইল, সুতরাং এমত অনুকূল ঘটনায় তাহার অস-मध्यानिमः हरू। वित्रकृषाती-तुक-शतिशृहशूर्वक

নিম্থা হইলেন, এব॰ উলিথিত বিবাহের প্রসঙ্গে । অভিপ্রায় জনক-সন্ধিধানে ৰাজ্য করিলে পর তৎপিতা সাংসারিক-ব্যয়লাফকের বিলক্ষণ সন্তা-বন! বোধ করিয়া নিডান্ত বিরুক্তি-প্রকাশ कतित्वन मा। पिनावधात्र रहेत्व जिनि त्नहे चाराक-माधावनकाय-नावनावकी मण्णूर्न-(योक्न-वर्छी शक्षविः भक्ति-वर्षीया कनक्षेत्रभाष्ट्रक चा-পনি नमভিব্যাহারে লইয়া অদুরবর্ত্তি-ধর্মমঠে গমনপূর্বক চিরকুমারীবুভধারিণী মন্ন্যানিনী-দিগের দলমধ্যে প্রবেশিত করিয়া প্রভ্যাগমন করিবেন। তাদৃশ বুত-পরিগুছ্ণের প্রথা বা নি-ध्रमान्त्रादः याचात्रा जन्त्र्रात अवस्थान इनेक তাহাদিগকে ভত্তত্য প্রধান যোগির সমিধানে नगुराय व्याचामात्नात्वरना-विकाशन-शूर्वक कमा প্রার্থনা করিতে হইতা ক্নষ্টান্শিয়াও সেই রূপে श्रम्राञ्ज वाकमा-मकन याभित निकृषे चारम्।-পাস্ত বর্ণন করিতে বাসনা করিলেন।

अम्रिक स्व मित्र विश्वरकामरमञ्जूषा হয়, তদিনে তিনি কন্টান্শিয়ার নিবাস-মগরে স্তোধ প্রকাশের বিষয় कि? মনোনীত পাত্রকে উপস্থিত হইয়া এক কুয়ের অথাৎ চিরকুমার-বুত-হুনার অসমতি জানাইয়া আপনার নিজেকতা- ধারি সম্যাসির মঠে অধিষ্ঠান-পূর্বক তজভা জ্ঞাপনপূর্ক নিরস্ত করিলেন। সে তো প্রতিৰদ্ধ যোগিগণের সন্নিধানে আপনার নাম ধাম গো-विवाहार्थी महरू किनन धन-व्याटक्टरे घोकात ला- शत्म द्राधिवाद सम्। शार्थमा कविया, व्य निवन ইয়াছিল, বিশা আপোৰতেই কান্ত হইল। কন- । তাঁছার সপত্রের বহিত কনষ্টান্শিয়ার বিবাহ প্রনিক্ষা ভাবিতা দেখিলেন যে " ধর্মানুষ্ঠান হইবেক শুনিয়াছিলেন তদিবলে প্রজাবিত ও পরমার্থার জু জিন্তন ব্যতিরেকে আর কিছুতেই বিবাহ সম্পন্ন হ**ইয়াছে অনুভব করিয়া, মনে ২** 🎂 যাত্র, শান্ত ভট্নার নছে, শতএব আমাকে : প্রতিজ্ঞ: করিলের " আর আমি কন্টান্শিয়ার জগদাশ্বরের সালাধনায় মনোনিবেশ করিতে।কোন কথাও কথন মুখে আনিব না। " অনস্তর কইল ''৷ মনে ৯ এই যুক্তি ছির করিয়াও তাঁছার থিওভোশন্নিজোপার্জিত-প্রগাঢ়-বিদ্যার প্রভাবে াল্য কোলোলালে সম্বর্গ করিছে কঞ্জ বংলর যাবজ্জীবন ধ্রমানুষ্ঠান-করণে **সর্বভোভাবে মনো**-লাগিয়াছিল। পারে তিনি রোমায় ধর্মমঠে নিবেশ-করণার্থ সম্মা**লধর্ম অবলম্বন করিলেন।** ठाँहाइ अक अमाधात्। कम्बा क्रिय, य क्रिकामू भूथा-धर्मा करान यन विष्ट-कीवन-याशन क्रिकात नक्षम अनामाक्षिकगद्वत क्रिक्क विष्ट शिक्क कान ६ हिट्डाश्राम्यस्त्रश वीकं दशम कतिश তাহা অবাধে ও অবলীলাক্রমে অঙ্কুরি চ, পল্লবিভ, कूमुभिज, कनिज कतिएज शांतिएजम; विस्मियजः ভাঁহার ৰভাবের সাধৃতা ও গুৰুতা হংপরোনাত্তি ছিল৷ ঐ সকল অসাধারণ গুণ্গাম-প্রভাবে সেই কতিপয় বৎসরমধ্যে তিনি বিজাতীয় की खिमान् इरेशा ছिल्लन। मठी विकाशि वर्गा थ 🐄 ব্যভীত তাঁহার নাম ধাম ক্ল অন্য ক্ছ অবগত ছিল না, তথাপি কন্টানশিয়া সেই সর্ব্য বি-খ্যাত যোগিবরের সল্লিধানে আত্মনের বেদনা नकत वाक कहिएक धनुक हहेरनम। **अर**करण যোগিবর পূর্বতন থিওজোশন নাম গোপন করিয়া কুান্তিস নাম গুলে করিয়াছিলেন, ভা-হাতে আবার দীঘ্যক্র প্রভৃতি অণুই যো-্ গিবেশে সুশোভিত, সূত্রাং তাঁহার ভাদুশ-ভাবে পূর্বের বৈষ্যিক ভাব উপদ্ধ হইবার বিষয় কি? ফলতঃ তৎকালীন তাছাকে চিনিবার কোন সভাবনাই ছিল না।

কালে মঠে বিসিয়া আছেন, এমন সময়ে কন
ত্তানিলয়া তাঁহার সনিধানে উপনীতা ও রীতিনত
ভূমিপাতিত-জাল হইয়া আপন হৃদয়ের অবস্থা
নকল প্রকটিত করিতে লাগিলেন। প্রথমতঃ দ্বীয়
পরিশুদ্ধ নিম্নান্ত জাবন বৃত্তান্ত আদ্যোপান্ত মন্ন
করিয়া আবিরত-বিগলিত-জলধারাকুললোচনে এ
যোগিবর যে উপাধ্যানের ম্বয়ং বিষয় ছিলেন
আদৌ তাহাই বর্ণন করিতে প্রবৃত্ত হইয়া কহিলেন, "আমাকে কোন মহোদয় নিরতিশয় প্রীতি
করিতেন, বোধ হয় আমারি অপরাধে তিনি
করাল কালগানে পতিত হইয়া থাকিবেন। তিনি
গৃহস্বাবহায় আমার হৃদয়ের অমুক্য নিধি ছিলেন, এক্ষণেও তাহাকে অরণ করিয়া আমি

व्यम्बर्भेग्र विवक्षानत्व प्रथ ७ विद्यान्त्रभूष **रहेट इति : जीरात अर्जार कामांद्र कामांद्र कामांद्र** यांछना मकल क्वतन मही खर्यामी क्वमहीक है **बार्टनन्य केन्सिंग कहिएक १ व्यक्ट बाल्य** बार करा-होन्शियात कर्शावसाध इहेश उठिन। তিনি অঅপূৰ্ণনয়নে যোগির প্রতি দৃষ্টিপাভ করিয়া দেখিলেল শিনিও তাপিত হইয়া **নম**।ক্-প্রকারে পাছিপাত্তি ফরিতে পারিতেছেন না, কেবল यन २ मीर्यान-न्यान-लितिकार्गन-लूबंक शम्भम 😘 অপরিষ্কৃটকরে এক হ বার ভাহাকে মাখ্যা-য়িকা নমাপন করিতে আজ্ঞা দিতেছেন। কান-क्ष्मिन्ना श्रमाद्रव समाउ याजना दाउन कतित्व পর যোগিবর শোকে নিতান্ত অধীর ও কাতর ষ্টায়া উচ্চৈ: **ৰ**য়ে রোদন করিতে লাগিলেন। कन्ध्रानिया ভाविद्यन " भागावर प्रथ प्रथिक হট্যা ও মংক্রপাপের আভিশ্য্য অনুভব করি-য়া ইনি এইবাপ গোদন করিতৈছেন"; পরে ভিনি मम्बिकिष्डियालिना ध्रकाम कत्र स्कृत पृक्-ভলোচন ও থিওডোশদের নাম-অরণ-ফর্ণ-মা-नत्य (याणिव्यम्भियोत्न वियुक्त्यातीयु कथात्न कति-বার বাসনা বিজ্ঞাপন করিলেন। ইহাতে যো-ণিপ্রবর প্রযতুসহকারে রোদন সম্বরণ করিয়া अक्वात **कामत्न म्यामीन ह्हेतन, किन्नु** जीहाड প্রতি অমন্যক্ষয়া কন্তান্শিয়ার অচলা প্রাতির পুবলতা-বশতঃ এতাদৃশ অপার যাতনা ভোগ দর্শন করিয়া ও তন্মুখহুইতে স্বকীয় পুরাতন নাম-শুবণ করিয়া নম্নবারিতে পুনর্বার তাঁছার বক্ষঃছল পাবিত হইতে লাগিল। অধিক বাক্য-প্রয়োগের मामया हिन मा. उपालि-विश्वखानम् भाक मञ्जल -श्वा कनडोन्भिशारक श्राय-मानहस्य अक र वात्र व्यक्ति कतिए जाभिरतन, "(महक नवतन কর, আর চিস্তিত হইও না, তোখার ভয় কি 🏞

জগদীশ্ব-সমাপে তোমার সমস্ত দোব মা-জিত হইতে: ভূমি যত অনুভাগিত হইতেছ ৰাজ্যিক ভাষ গোলা নত, ইছাতে এত অধিক শোকাত ক্টালে বিষয় কিট্ম ইত্যাদি লানা-প্रकात প্রায়েশ্বর প্রায়েশ দারা যোগিবর ভাবে কন্ত্ৰেয়াও কিঞ্চিত বৈষ্ট ক্ৰলম্বন করিলেন। স্থল যোগিবর রীতিমত তাঁছার দোষ ভালৰ করিলেন, এবং কনষ্টানশিয়া যা-হাতে চিভক্ষারাবৃত-প্রতিপালনে মতুবতা হয়েন ভিছিনতে ভালাকে সাহস ও সুমতি প্রদান করিবার জন্য পরদিবস প্রাভঃকালে পুন-হার আনিতে আদেশ করিলেন। কনপ্টান্শিয়া তদিবস তথাচইতে প্রস্থান করিয়া প্রদিন প্রাতংগালে পুনরার ভাষার মঠে আমিয়া উপ ष्ठिত बहेरनन, अवः याणिवहरः स्रोत्र श्रीयंगः বিজ্ঞাপন করিলেন। যোগিভাবাপন্ন থিওডোশন্ বিভ্দাবভূতৰে ও তভুজানে আপনার ক্ষয় পরিপুণ করিয়া প্রণয়িনা যে পথাবলমিনা ছইতে भागमा कविद्वारक्षम, जांशांक उरश्यवाहिमा किट्ट यथान ४ डेंदनाइ-धनात बुटि कित সেও না এবং যে দকল অনুলক শক্ষায় তাঁছার জন্য আৰুত ছিল, **ৰে ৰকল তাহাহ্ইতে দূর** লাক্তে উপদেশ দিয়া সর্বশেষে তাঁহাকে কৃছি-দেন, এলামি জোনার নিকট প্রতিপ্রত রহি-लाम, ज्ञि छि। कमाहीत्त-अवलयन शूर्वक भि-ध्रम मनारह पन्नावहश्वाल व्यवस्थेन लाविश्ह করি এ আমি তোনাকে নর্থা ২ উপদেশ প্র-দান পরিব। এভাদ্দ সন্ধানধর্মের নির্ম প্র-ভাবে লোমার নহিত আমার আর নাকাৎ হওয়া प्यमञ्जूष अलाह कामात मुक्ताप्तिक नेश्वरतत्

সদুপদেশ প্রদান করিতে আমি কিঞ্চিষ্মাত্ত বুটি করিব না ৷ এফবে গমন কর, যে সনাতন চি-ভ্রসাদকর ধর্মময় পুর্বের পথিক চ্টলে তা-হাতে প্রফ্লাচিতে গমন করিতে থাক, অনতি-विवास अगन अशृर्दभाष्टि ও जानम वाज कति-বে, যে এট অসার সংসার মধ্যে কুত্রাণি তাহা প্রাপ্ত হওনা দুর্ঘটে । যোগিবরের এবজূত উপ-দেশবাক্তশুবনে কন্টান্শিয়া মনে২ এ**মনি** প্রসয় হটলেন, যে পর্দিনই সেই বুতাবলম্বন না করিয়া কালাভিপাত করা ভাঁহার পক্ষে অক-্বি। বেশি চইল। ইহাতে তিনি তদিবদ বৃত্যুখ্ণ ও ভদ্পয়েগালি ভাহার ইতিকর্ত্বভো-কলাপ সমা-ান-প্রংসর একাছে উপবিষ্ঠা আছেন, এমত ্ময়ে ঐ মঠাধিকারি । কাঙার হত্তে এক পাত্রিকা जानिहा अभाग कतिला। अलाद काठे अहै,

"তুমি যে পরম-পথ্যবিল্যন পূর্ধক অপরি-সীম সুথ ও শান্তিৰূপ কল লাভ করিলে, তা-হার প্রথম কলম্বাণ তোমাণে এই বিদ্ধাপন कता याहेर उर्फ, या जागात थि अ जागा चना-পি এই পৃথিবীমগুলে জীবিত লাংছন, या**टा**র লোকান্তর প্রাপ্তি ছইয়াছে বোব করিয়া তুমি অপার শোক-পারাবারে নিম্ম চইয়াড় তিনি अथन भगाष्ट्र कालगृात्नत वदन इस नाहे। যে যোগির-নিকটে আসিয়া তুমি আয়ুমনো-বেদনা সকল ব্যক্ত করিয়া গিয়াছ, ভিনিই তো-মার শোকের নিদানকাণী থিওডোশন্। বিবাত। कामामिरात প्रवश मकल रहेर्ड मिरान मा, কিন্তু তাহা বিকল হইয়াও কোটি ২ গুণে সুখ-कत इहेल। जिनि भागामिशिए व २ हेक्सानूनाती कतिया मृष्टि करतन नाहे वर्रो, किन्न व्यामा परान भद्रम-भूक्याध-नार्ड्य উभाष्र क्रिया फिलानी িনিকট প্রাথনা ও ভূয়োভ্য়া প্রদার। ভোষাকে এথন মনে কর যেন ৌমার থিওডোশস্ ।

বিতাবস্থায় নাই, জুান্সিজ যোগাই তোমার শুডাকাজ্কী হইয়া অহরহঃ ঈশ্বরের নিকট প্রা-র্থনা করিতেছেন।"

কনস্তান্শিয়া উপস্থিত-পত্তের অক্ষর ও মর্মের সহিত কান্সিজ্যোগির উপদেশাদি-বাকের উপন/াস-কালান স্বর ও শোকাবিছার প্রভৃতির ঐক্য করিয়া ক্ষণকাল ভাবিতে ২ নিশ্চরক্রণে জানিতে পারিলেন, যে এই পত্র ফুান্সিজ্ যো-গির স্বহন্ত লিখিত, এবং তিনিই আমার হৃদয়-সর্বস্থ থিওডে:শুস্, তাহাতে কিছুমাত্র সন্দেহ নাই। এতাদৃশ নিশ্চিত-জ্ঞানপ্রভাবে মথানন- : প্রবাহা কনষ্টান্শিয়া বাস্পাকুললোচনে কহিয়া উঠিলেন, "আর আমার চিন্তার বিষয় ফি?২, আমার থিওডোশন্তো জাবিত আছেন, এখন পরমসুথে জাবনযাত্রা-নির্বাহ-প্রঃসর প্রশান্ত-চিত্তে পরলোক-যাতা করিতে সমর্থ চ্ইব, ভয় नाइ "। এই काल চরিতাথ। হইয়া কনপ্রানশিয়া **नक्ष**ानिनाञादव भटठ দশ-বৎসর্-কাল অতিবাহিত করেন: অনন্তর দৈবগত্য সেই ছানে এক মহামারী-ভয় উপস্থিত হয়, তাহাতে কনপ্রান্শিয়া থিওডোশস্ উভয়েই সাঙ্ঘাতিক हिशिकां छ इन्द्रेश श्रीयः वक नमस्यने कत्नवद्व পারত্যাগ করেন। কন্টান্শিয়ার বাসনানুসারে তথায় উভয়ের শব একত্রেই সমাহিত হয় !

কনষ্টান্শিয়ার নিকট থিওডোশসের প্রেরিড উক্ত পত্র ও সময়ান্তরের প্রেরিড অন্যান্য পত্র সকল কনষ্টানশিয়ার মঠে অদ্যাপি সংরক্ষিত রহিয়াছে। তত্ত্তে কুমার কুমারীগণের মনে মন্ত্র-গুণ ও সুমতি উত্তেজ করিয়া দিবার বাসনায় মধ্যেৎ সে সকল গত্তাদি ভাছাদের সমীপে পঠিত চ্ইয়া থাকে।

ক্ষে, মো, ভ,

# উডিজের চৈত্র উঞ্চা পুর্তি আশ্চর্য ধর্ম।

🎎 🖽 🏗 फिड्ड स्रायत-शर्मार्थ-मर्था गना, अहे প্রযুক্ত অনেকের বিশাস আছে যে ब्रिक्टिक्ट किंड डेडिएबडानिश्वत अनुमन्तात-নে বিশ্বাদের অলাকতা প্রকাশ হইয়াছে। ক্লগৎ-ফরার বর্ণনানীত কৌশলে বৃক্ত সকল প্রায়ঃ বুদ্ধি-নান্পুৰুষের ন্যায় আপন ইণ্ডানিষ্ট অনুভূত করিয়া **মন্দের প**রিবজ্ঞানপূর্বক **মঙ্গলে**র গুঞ্গ করিয়া থাকে। ভাহাদিগের প্রধান মঞ্লাম্পদ রুন वः वाद्याक, मृरद्राः उथ्यक्षक् जाहारमद्र देठ-তন্য ব্যক্ত হয় কোন বৃক্ত্বের এক পার্শে সার-খীন মৃত্তিকা ও অপর পার্ম্বে উত্তম মৃত্তিকা থাকিলে, তাহার শিকড্-সকল সারহীন-পার্শ-ণরিত্যাগ-পূর্বক নসার-স্থান্দিগেই গমন করে। क्टिश् किट्ट शास्त्र य ममात्र दानइ निक-ড়ের শীঘু বৃদ্ধি হয়, অসার তানে তাদৃশ বৃদ্ধি न। इत्राटि ठेव्छ। निक्ष नगात स्निमित्र গিয়াছে, বোধ হয়, বস্তুত তাহা যথার্থ নহে; किन्त गावधारम के अञ्चाविष्ठ वृत्कत मृत्र निद्रीक्रव করিলে ব্যক্ত হয়, অসায় পাশ্বের সিকড় বক্ত হইয়। সুসার-পার্মাভিমুখে গমন করে; শিকড়ের रेष्ट्रीनिष्टे छान ना पाकित्न कि श्रकारत के वक হওন সম্ভবে? যে কোন বৃক্ষের শাখা অধােমুখ করিয়া রাখিলে তাহার অগ্রভাগ প্নরায় উদ্ধুখ रूप, बदः य दान रुक्ष थाकिताएक रक् रहेएक পারে না, তৎস্থানের পত্র সকল ঘূর্ণাম্বমান ভ্রমা তাহাদের অধঃপৃষ্ঠ অধোদিকে এবং উদ্ধপৃষ্ঠ উদ্ধে আনয়ন করে; অপর বাধাপ্রযুক্ত তৎকর্ম निक न। श्रेटन जाशास्त्र, नृख नक्स भाकान



इहा लटाइ बाकिए-नकन य **फिरण हा**स तिहे नित्र याद्र। य वटा प्राट्ट होनू भार डानाइ कालायं श्रीक्रमाडिम्थं: याहाता देवकाटन होन ल किमास्त्रिय इरेशाह, जाहाटक लिक्टम होषु चकुत छेकास्मिय रम।

श्राश्व इन्टेट शादत अवन खादन जानित बतार ভাচার শবন্ত আঁকড়ি পূর্বাভিমুখ হইয়া যায়। গৃহমধ্যে কৃদু বৃক্ষ রাখিলে তাহার অগুভাগ भाष काशत व्यक्ति शृदीचिमूथ इस। व्यश्व या गृह्द अवाक्तिश व्यभुवत इस। वीक्रमारक्तिहै अठात लोकि जिन्न द्वारिक हो पू प्राश्व इकेश डिक्टी (तालन कितिष काशत मून वर्शामूथ वरः

্ৰতান্তৰ উভিন্ধ বিশেষে গতি শক্তি ও চে-उना मामाधकारक राज्य एत । वाक् का वाक मरे শক্তি অতি প্রত্যক। তাহা ক্লাল করিবামান जाहात भाव-नकन नकूष्ठिज हत्त, बन्ध भाषा भाव नकत्वहे मण इहेश शर्फ। वनहाँ काल जबन এই প্রকার, কিন্তু তাহাকে স্পর্শ করিবার আবশ্যক দাই। দিবাভাগে মেঘাচ্ছন না হইলে তাহার পত कल वाह्य काव्रव व्यक्ति ठालिख इट्टि थात्क; এবং কথন ২ ঘূর্ণায়মানও হয়। অপর কারো-লাইনা-দেশস্ ডায়োনিয়া মিউনিপুলা অর্থাৎ মক্ষিপাশ নামক ভকবিশেষেও এই শক্তিম্বয় অতি স্প**ষ্টকাপে দৃষ্ট হয়। এ তক্তর পত্রদল স**-্ কল সন্ধিদারা সংযোজিত এবং প্রত্যেক দলো-দিগের উদ্পত্তে এক প্রকার মিট রস জন্মান্সা-প্রযুক্ত ভল্লোভে মিকিকারা তৎস্থানে আইনে; উথিত হ্টয়া মক্ষিকাকে তৎক্ষণাৎ চাণিয়া বিনাশ করে। দলমধ্যে ত্ণাদি নিকেপ করিলেও ঐ গতি প্রত্যক হয়।

কতকণ্ডলি নামুদ্ধিক শৈবাল আছে, তাহার সমস্তদেহ ত্রিভ হুটয়া পাকে। অপর কতকগুলি : শৈবালকে অনুবীক্ষণ যন্ত্ৰদারা দেখিলে প্রত্যক্ষ হয়, যে যে পাত্রে তাহা রাথা যায় তাহার এক-স্থান-পরিত্যাগ-পূর্বক তাহ: অন্যত্র গমন করে। স্থাবর পদাথের এই গতি-শক্তি অতি আশ্চর্য্য-য়া পাকে: ব্যুমকা পুচ্পের এবং ফণিমনসা-জাড়ীয় পুলোর গভকেশর ঘূর্ণিত হইয়া জ্বমে ২ সকল

शत करनक वृक्त लाटह बहिएत शब तकनीरयारम मुक्तिक इस : अवस्थितित विक्तिक इस । व्यानति भावत वरे वाहिकारक क्रमत विद्या रिवरा कामा करतम। किन्न श्रे शुक्रां अहे अकारत ता-खिटा मूनिए **७ मियरन विक्तिए स्हेग्न**्थास्क।

ব্লের চৈতন্য আছে, ইছা পঞ্জি-মহাশ-(युद्ध) चात्नरक विश्वाम करतन ना, बावर करहन যে পত্রপূষ্ণাদির গতির আদিকারণ চৈতন্য নহে: পরস্ত ইহা অতি আশ্চর্য্যের বিষয় य मन्या व्यक्तिक वानि मानक मुदा छक्तन कतिरन य श्रकारत टेम्चना भूना इहा, अवः कथिक थाएँटल महिला यात्र; दृक्छ (मरे প্রকারে মাদক-দুব্যের ক্রম ভোগ করিয়া থাকে। পরি এক ২ কণ্টক-শূেণী আছে; এবং ঐ পত্র- লাজুকলতার মূলে কিঞ্চিং সহিকেণ মিশ্রিত यन निर्दा, ओ नडा चार्चन हो को नगर्थ। (इन्डमा-শ্না হয়, এবং তাহার পত্র নকল মৃদ্ভি কিন্তু এই মিন্ত রন স্পান করিলেই পাত্রদক্ষয় হয়, তংপারে বছক্ষণ পার্যান্ত রৌদুর্গির উত্তাপ ্পাইলেও ভাহার পত্র আরে বিক্ষিত হয় না ; জ্বলর, দুই এক দিবন জ্বনাগত ঐ জলনেচন করিলে ঐ লতা মরিয়া যায়। কোরোফর**ম্** নামক এক প্রকার ঔষ্ধি আছে, তাহার ঘানে মনুষ্য অচৈতন্য হয়; লাজুফলতায় তাহার বাষ্ণা স্পান্ন করিলে ঐ লতাও অচেতন হয়, অধিকস্ক উক্ত লভার এক শাখার নিকট ঐ দুব্যের বাষ্পা আনিলে ভাষা ভৎক্ষণাৎ নৃপ্ত হয়, অপর नकत नाथा (ज्ञादल बदः लागुः थातः। वा-खनकः शत्क शूर्णार ७७ वह शिक्तिक मृष्ट इहे- । क्रुक झाडात किक्षि ए ए छना मा थाकिता वहे ষ্টনা কি প্রকারে মন্তবে।

অপর, পণ্ডর দেহে যে প্রকার উষণ্ডা অনুভূত तरकारकमात्र म्लामां करता (पुकिया हैनाधिका मा- इस, त्रक उज्जल चनुकुछ इस। तर्शाक, धत्नक् মক এক প্রকার মার্কিনদেশীয় আগাছার পত্র হণ্টর প্রভৃতি প্রসিদ্ধ পরিক্রো পরীক্ষা করিয়া স্পূর্ম করিলে তৎক্ষণাৎ তাহা মৃদ্ভি হয়। অ-। দেখিয়াছেন, যে শীতকালে চতুর্দিপস্থ বাসু-

হইতে বৃক্ষমাজেরই উঞ্জা জনেক অধিক, এবং ্কচু পুষ্পো গুীয়াকালের অপরাক্তে আলোক দে-গুরিকালে বায়ুর উষ্ণতঃ অপেকায় অপে হয়। থিয়াছেন। অপর, ব্রেজিলদেশীয় মনসালেণীত উফতার ভারতমা তইয়া থাকে। বৃক্ষ পুলিত-∮সময় উজ্জ্ব বোধ হয়। এতদেশে একপ্রকার ছওন-সমতে এই উফভার বিশেষ বৃদ্ধি হয়। একপাত্রিক বৃক্ষ আছে, তাহার মৃত্তিকাথঃস্থ কাপ্ত काम र जनस्य भूष्प-विक्रिक-रूखम-कात्व वृद्धाः छत्व निक्क कित्वह ज्यात्वाकभून इरेश छत्ठे; উফত: এত বৃদ্ধিত হয় যে বায়ুর উফতাপেকায় পরে জল শুক্ক হর্লেই তাহা পূর্ববং রশ্মি-বি-ভাষার উষ্ণত। ভাগান-মন্ত্রের ২০ সংশ অধিক হান হুইয়া যায়। ভানেকে এই সাজুত ঘটনার নিক্পিত হুইয়াছে।

एषा पुरुष नामा अक छन पुरुषकर्ता लायन कितिहाई अहे প্রস্তাবের উপসংহার করিতে হইল। যে অক্সেলিয়া-দ্বীপে স্থান-নদীর তটে তিনি এক প্রকার ছএক বিজের ছাতা) দেখিয়াছিলেন, তাল রাত্রিতে এমত উজ্জ্ল হয় যে ৩৫-। নাহায়ে অনায়াদে তিনি পুস্তক পাঠ করি-हहा। भागः मार्ट्सवतः मृश्यम्थी-शूरण के इन-्रकाम र शूर्द्धत अनकी ईन इहेर्ड शास्त्र। थह-भूराण कहरनिमि धामास अवः अक्यकाहः

বৃক্ষের আয়ত্তন ও মূলের দীর্ঘতান্সারে ঐ ইউফর্বিয়া কক্ষোরিয়া নামক বৃক্ষের রস সক্ষার জারণানুসন্ধানে নিযুক্ত হইয়া নানা মত প্রচার কোন ২ উডিজের অপর এক আশ্চয়া ধর্ম করিয়াছেন, কিন্তু অদ্যাপি তাহার কিছু স্থির আছে, যদুরো ভাষা রজনীযোগে প্রদীপ বোধ : হয় নাই; সুভরাং অধুন, কেবল এইপরার্থ জ্ঞাপন

### নূতন-পুস্থের সমালোচন।

्र यहा वर्षा वर्षा वर्षा मानम कहिए हि তেল। দক্ষিণ-অমরিকার বেজাল-দেশে এক প্র- 🌂 🔍 🗒 যে মধ্যে ২ নুজন-গুরের মহিমা-কার ছুএক 💌 আছে, ভাহাইইতে খদ্যেতি- 🔆 🕾 বিষয়ক প্রস্তাব বিধিধাণে প্রকটিত কার আলোকের ন্যায় ঈষদ হতিদ্বর্ণের জোন- কিরিব, কিন্তু অবকাশাভাব-প্রাযুক্ত দে কংগানা তি নিগত হয়। ভূেন্ডন নগরে কয়লার আদ্ অদ্যাপি সিদ্ধ করিতে পারি নাই, এবং জনায় করে ভিলাইন্ লাছেব কোন ছএক দেখিয়া- ছাছা কলিতার্থ করিবার উপায়ও দেখি ন।; ছেন, তালাচইতেও আলোক নিগতি হয়। বি- আনুধ্ব নূতন-গুম্ভের গুণ-কার্তন-পরিবর্তে অন্থা-খনত উভিজ্ঞাবত। লিনিয়স্ নাহেবের পুঞ্ মাচুল-ন্যায়ে তাছার বিজ্ঞাপন বরাই বিহিত িবিধান্তিন যে নপ্তরশিষ্ধ পূজা ও কয়েক প্র- বোধে এই প্রভাবে নূতন-গুন্তের নাদ্মাত প্রক-কার গেদ। পুসা সক্ষ্যার সন্থে উজ্জ্ব লোধ টিভ করিলাম। ভবিষ্যতে অবকাশান্সারে ইছার

>। मृज्य-शृष्ट्-मरक्षा श्रीयुक्त रातृ नामावतन-শার্মার বাজনা ব্যাকরণ বর্ধীয়ান। গৌড়ায়-্ঞাং জালাল মধ্ন দে দিনে সূত্ৰ জাত্ৰ লখান মাই দিলে সঞ্চ ভাষায় ভাদৃশা সূচাক ব্যাকরণ আর নাই। তথ-পাঠ ভিন্ন বজভাষার যথাথ মুর্ম কোনমতে (बाध इहेट शांद्र मा। जठवर भागता चनू-

<sup>ি</sup>ছ বার নাম আস্থানিক্স গ্রাণ্ডলবার

र १६ क्लामा, हेंद्र, आदम शक्ते अभावरण **स**र्वाच्यामा क**हे श**कारम् esser, চল্যাভিয়তে সৰু কৰে প্ৰায়ুক্ত প্ৰেলার নাম **সুন্যমু**ৰী

রোখ করি, যে সকল মহাশয়েরা বদেশ-ভাষার অনুরাগ করেন তাঁহারা জরায় ঐ গুছের মালো-**চ**ना ककन।

২। বর্জমানাধিপতি মহারাজের অনুমত্য-नूनारत वान्तीकी तामायर अक मृजन व्यमुवार প্রকটিত হইয়াছে। অনুবাদকদিণ্ডের কংপানা ছিল যে কৃত্তিবাস-কৃত রামায়ণ হইতে পরিগুদ ভাষায় মহাকবি বাল্মাকের পদিতায় কাব্য ভা-যাস্তরিত করিবেন; কিন্তু কেবল-সংস্তৃত্যাদের প্রয়োগেই উত্তম কবিতা জন্মে না; কৃত্তিবার্সা রামায়ণের রস অভিনব গুল্পে সুদ্রাহ্ প্রাণ্য।

ा পতিবুজোপাখ্যান। এই গুদ্ধ পূর্ণচন্দো-দয়-যত্তে মুদুত হইয়াছে: কিন্তু আমরা অদ্যা-পি তাহা পাঠ করি নাই।

৪। এ রামচন্দ্রে জীবন চরিত্র। ভবানীপুর-নিবাদী খ্রীযুক্ত রাথাল দাস হালদার মহাশয় এই ফুদু গুন্ধ রচন। করিয়াছেন।

৫। মনু সংহিতার প্রথম দুই অধ্যায়। এই গুপ্তে মন্ত মূল ফুলুক ভটক্ত টাকা, আনন্দ-চন্দু-বেদান্তবাগীশ-কৃত বাঙ্কালা অনুবাদ, এবং <u>जान्त्र नाएका कुठ देश्यां जिन्नुवार अकटल</u> মৃদ্রিভ কটিয়াছো দুং**থের বিষয় সম্পাদকের**: অনুবাদ-দ্বয় উভ্ৰমকাপে সংশোধন করিতে যতু করেন নাই। জোন্ন নাহেবের অনুগুঞ্ প্রথম मन्। वापूर्व नगाव किया एकान निया धारन रिनशात्ह्न, नन्धानत्कत्रा जीहात्क जनवञ्चाहहत्ज শ্বতান্তর করিলে প্রশংসনীয় হইত \*।

৩। মানিক পত্রিকা। এতদেশীয় শুভানুধ্যায়ী वा किषय हिन्दू-यनिकापित्वत छेलान्यात्व छेकाः-খ্যায় এক থানি জুদুপত্ৰ-প্ৰকাশে বৃত হই-

शास्त्र । मझण्या छेखमः अवः खत्रमा कति महत्र চইবেক। পত্তের লিপি-প্রণালার আদশ বজগ निया कठिनश मध्कि छेन् इरेल।

"মদের আছুত **শক্তি'** যে ব্যক্তি পান করে বে पूर्क कन तरन ७ कनक मूथ वरन। कनिका-ভার কোন বুনিয়াদি মাভানের বাটীতে ভাঁছার চাকর প্রজাব করিতেছিল, মাতাল বাবুর মতকে পড়িলে তিনি জিজ্ঞাসা করিলেন, "আমার মা-থায় কি পড়িনা"? পরে শুনিলেন-প্রশাব। তথন উত্তর করিলেন, "তবে ভাল: আমি বোধ করিয়াছিলাম জল "।

 ক্ষিত আছে যে জন্য এক বৃনিয়াদি মা-তাল বাবু মদে মত্ত হইয়া দশগার দিবস প্রতিমা-বিসজ্জন-কালীন নৌকাহইতে ব্রোদন করিয়া বলিলেন, শেষরে মা চললেন রে—মার मह्म (क्ष कि याति मा? व्यामहा मकत्व काछ, অরে বেটা ঢাকি তুই যা" এই বলিয়া ঢাকিকে ধা**কা দি**য়া জ**লে** কেলিয়া দিলেন।

"আর ভনা আছে যে কোন মাতাল ভোজন করিতে বনিয়াছিলেন, তাঁহার পালে জলের ঘটা हिन ना, करेंगे विखान वीत्याहिन। माठान करनत घटें। मरन कतिया विकालरक धतिरनन। বিড়াল মেয় ২ করিতে আরম্ভ করিল। মাতাল विनित्तन, भन्धाना कलात यहाँ जुहै त्य वर् कतिशा শ্রোকে যোগি প্রধান ভগবান মনু অনায়ানে । কি বীচবি, ভোকে অগ্রে খাবুই । পরে বিড়া-লকে মুখের কাচে তুলিলে বিড়াল আঁচড় কা-মড় ক্রিয়া পলায়ন করিল।

> "পার এক ভক্ত-মাতালের কথা শুনা আছে, তাহাও বল। याইতেছে। ঐ महाजात्नत्र नाम—जिल्ह। আপন বাটাতে পূজ। হইবে, ষণ্ঠার রাত্রে উঠি-या প্रতিমার নিকট বাইয়া কোলেতে পরিপূর্ণ रहेरान: निःहरक विलालन, " वात (विक्रिक्ट,

<sup>\*</sup> Manu sat reglined &c. Verse L.



पूर्व मकत नि॰इ. जामि जामत नि॰इ, जुई विषे भाव शमहरत (क्स २० अहे विलय) निः इरक छा-জিয়া আপনি চানৰ মুডি দিয়া নিংছ হই-लान हाल कारत शुर्दाहरू जानिया (मिश्र- अवः मन यन ज्वनश्चानरन कार्निर थारक। <u>टलन व्यक्ति । है जिन्द्र रुध्यो इरियार्डन। जिन</u> মহাশ্র ৬খাবে কেন ?" কর্ত্তার নেসা ছুটিয়াছিল, চক্রথান্য গ্রিয়া যসিলেন। গুরু প্রোছিত সক-(स. इतिहाँ आशितायाः "कर्छ। **वष्ट्र उक्त, मा श्र**व (जार, शिव्रत्भा। "

### विटाइ-वियम् अटाफ्रणीय कुनुशा। প্রেকি প্রকার।

বি । কেই বুলিবৃহি মাজিত না হওয়াতে ্ত্ৰ ্তিথানে যে কতপ্ৰকার কৃথনিত কৰ্ম প্রচলিত চইয়া এবিয়াছে -কভ কুকর্ম যে কত মতে দেশকে দুক্লাগন করিল রাথিয়াছে—ভাহা আরু বলেয়া শেষ করা যার না! যে সমস্ত : ল্যানোয়ে দেশের নামকে এক**ালে** সু**ই ক**রি-কৃত্য নেয়, এদেশে তাছার কোন কর্ম করে তান-ভিত্ত হটাত অপেকা নাঠ, এতা বি বাণিজ্ঞা, কি इफ्डिय, कि गुडकाया, धार्चाड (य भक्त दि-গড়ে দেলের মহলোয়ভির সম্বাবনা আছে. ্ৰপ্ৰতিবন্ধকে ভাষার একটি বিষয়ও পরিশুদ্ধ-ৰাকে সকলন্ন হউবার উপায় নাই। যাতার र्गिवह यथेन चारलाठना करायाम जाहाहरू বিনিত্তি তথন অবস্থার জাক্ষেপ করিছে হয়; চিভাতে আকুল হইয়া একেনারে হতাশ হই-ि इस, এवः विगामनाभात सभ **इहेशा मीर्घ-**

নিশ্বান ত্যাগ করিতে হয়। এদেশের এক উত্থাহ-भट्डत कथा मान इक्टलके कटलावत *व*र्गक्याक হইয়া উটে, শোণিত শুদ্ধ হইতে আরম্ভ করে, এদেশে বাদ্যাবস্থায় বিবাহ হইবার ইাতি প্রছ-क्षा १ १ । १ वित्यान, ''महामञ्ज अथाति (कन -। विष्ठ धाकाए कि गर्तनाम ना इवेट व्हाइ? व्यात-াকে বিবাহ ছরিয়াও যাযজ্জীবন উদ্বাহ-সুখে क्रियान हो । कार्य २ केठिया व्यवसमूच्य टेव- , विष्णु थाकिश म्हाक्छे क्रियाशन कवित्तरह। ' এদেশে দম্পতির মধ্যে যে সক্ষয় কপ্রানয়, কলছ, এবং বিরক্তির ভাব দেখা যায়, উক্ত রী-তিই ভাছার এক প্রধান কারণ বলিয়া প্র इंग्रेट शांदा। अमिनीय (लाटकत इंडनार्य) ছইবার এবং শারীরিক ও ভৌতিক নিয়ম ্ল্প্যন-পূর্বক ন নাপ্রকার দেগে শোক ভোগ করিবার এমত থাবল কারণ আর দিভাগ দৃঃ ্দার অভাব হেজু এ দেখায় লো- হয় না। এই রীজির নিমিত্ত এদেশায় বালক-वानिकामिधात अनुभाषुक-काट्य मरनश् अस्यास्त्रः वृहेंसा अदः हेन्द्रियद शिक्षना एवंसा काश्रामित्रः প্রকৃত-সুস্তাসাধন । পুষ্ঠিবদ্নের পক্ষে ব্যা-भाठ छत्य, अवः विमानिका। अठि राज উপস্থিত হয়। প্রায়া এদেশীয় অনেককে যে প্রথম-সন্তানের শোক সহ্য করিলত হয়, এই কৃ প্রথাই ভাষার এক প্রণল কারণ। পুরুষ নুক্রা: এক-বংশজাত নম্ভানগণ উত্তরোত্তর ক্ষাণ হইগ্র বংশ-লোপ হওয়াও এই কুপম্ভিন এক প্রধান अफरन दिवस महिमुखा श्रद्धन क्षित्राोक्।

সম্ভানের কোন যোগ। তা-কোন উপাজন শক্তি না দেখিয়া তাহার ট্রাহ পরে আমোদিত হইয়া অনায়ালে তৎকর্ম দশ্যম করা কি ভাগানক কু कर्ष ? टेममवावञ्चात्र शूथ यथन निजानी वालक, নিভাস্ত অবোধ, যথন ভাহার কতিলয় বর্ণরি-

চয়মাত্রই জ্ঞানের সীমা, এবং দৈহিক কার্য্য- ক্রণপ্রয়ন্তা ক্রমান্ত্র উদ্বাহ-কর্ম সম্পন্ন কলিতে মাত্রই কেবল কর্ত্র্য বোধ, যে সময় ভাহার অপর ব্যক্তির ভার-গৃহণ-করা দূরে থাকুক, সে প্রাপ্ত অন্ন উত্তমকপে ভোজন করিতে অশক্ত, পরিধেয় বজা সুচাঞ্জাপে ধারণ করিতে অপটু. এবং नामान। विशम्बहेट जाशनाएक क्रका क-य अपनाक मोखाण लाखिक कांत्रक इरेल कि अपनामत कथान कलान चाहि?

পারিলেই 'আপনাদিগকে ধদ্য ও চরিভার্থ বেশ্ব करत,— उल्जावर काम मझरलंदर मञ्जावना व है। **बहै विक्रम-(ध्रत्रशन्मारत क्राय डेडरताइत डेड** कुलकार्वित अञ्चलात तृष्कि इहेशार्क रा अरम्र वेश ভদুকুলের কোন ২ প্রধান শূেণার মধ্যে গর্ভত্ব রিতে অক্ষম;—যথন দে সন্তান মূর্থ হইবে, সম্ভানকে কন্যা লক্ষ্য করিয়া তাহার বিবাহের কি পণ্ডিত হইবে, ধনী হইবে কি দিঃ দু হইবে. সম্বন্ধ স্থিয় হইয়া থাকে, তাহাটো সে সম্ভান সাথু হইবে কি অনাধু হইবে, তাহার কিছুই সজীব কি নির্জীব-বিকলান্ধ বিকৃতাকার 🙀 নির্দেশ করিবার উপায় হয় না. তৎকালে পিতা কৃৎনিত কদাচার ইত্যাদি কি প্রকার অবস্থায় মাতা জ্ঞাননেত্রে ধূলি প্রক্ষেপ করিয়া, এবং शंप- গে ভূমিষ্ঠ ইটবে, তাহার বিষয় জি বরকুল-য়কে পাষাণদৃশ অঠোর করিয়া সেই সস্তানের করা, কি কন্যাকুলকর্ত্ত। কেছই কিছু যিবেচন। महिल चण्यायका कर्णात शतिवय-काया मण्याम करत ना। कूलसर्यामा वर्भमयामात्र भरणानीक क्रिति (क्रम ना উভ্রোভির দেশের দরিদুতা-বৃদ্ধি हरेलिই ভাহার। এইৰূপ সম্বন্ধ নিবদ্ধ ক্রিতে হইবেক। অতএব বিলক্ষণ প্রতিপন্ন হইতেছে, মহাবাগু হয়। এপ্রকার কৃৎসিত-ব্যবহারণত্ত্

—মহত্ত্বে মণ্ডিত করিতে হইলে —এই ক্লেই এমত ইছা সিদ্ধান্তীক্ত সত। যে পিতা-মাভার অনর্থকর কুরাতির উচ্ছেদ করিয়া প্রাপ্তবয়নে শরীরগত ও মনোগত যে সমস্ত দোষাদোৰ থা-পাণিগুছণ করিবার মন্থলাকর নিয়ম স্থাপন কে, তাহাদিগের সন্তানের প্রাকৃতিক নিয়মা-করা আবশ্যক। কিন্তু এদেশীয় লোকের প্রগাত নুসারে অবশাই ভাছার কিছু না কিন্তু প্রাপ্ত ভুাস্তি-ছেতু, না উক্ত কুরীতির অন্যথা করিবার হয়, অতএব যদি কোন জাতিবিশেষের কোন উপায় আছে, না দেশের দুদাশা দূর হইবার স্বাভাবিক দোষের নিমিত্ত ক্রমাগত তাহাকে कान नथ चार्छ। य नर्यास अञ्चलनीयकन- चार्यानामी इत्रेड इय्, उत्व ज्यनगढ़ उत्ताय-গণ মহাজুমে অবা হইটা শিশু বালকের সহিত বজিত কোন ভিন্ন জাতির সহিত যিবাহ প্র-অত্যত্প বয়কা কন্যাদিগের পরিণয়-ক্রিয়া নদাধা চলিত করিয়া তজ্জাতির উক্ত দোষ পরিহার করিয়া থাকে, পরিণামে যে, ফি সর্বনাশ হুইবে, করা সর্বভোভাবে বিবি, এবং ঐ বিধির অনু-তথন তাছারা সে বিষয়ের প্রতি একবার নেত্র- নারে কার্য্য করিয়া অনেক কদাকার কুৎগিত भाजक करत्र मा, तक वा तम कम्मादक छत्रव (भाषव काफोस लादकता मः मात्रमध्य काकाव मूठाम क्रित्र कि वा उज्जार मञ्जानगरक नीमम । अ मुनद विद्या १०। इहेट एहः अदनक होनवन পালন ও রক্ষণাবেকণ করিবে, ভাহার ঝিবয় ক্ষীণমতি জাতির সস্তানেরা মহাবলবান ও বুদ্ধি-अकरात्र माज ७ छारापिटानंत मान फेर्य इस्ता, मान् रहेशा मूर्विकोनं ताटकात कियाती रहे-क्विम विक्रमारकारतत विभागायम हरेसा काउ। यादहः कात्मक हर्वार्य । क्विम हाव कावित

कांचि निवास विभिन्न ध्रेटफर्ट, धीणा छतीय क्रम महाद्वपुरक य श्रकात जण्याम्यता विकश् করিতে বাধ্য হইতেছ, পুরুষানুক্রমে তাহাদিগের मञ्जानभगरक अ-अजन-वियस सह मा इहेरा হইবেক: কিন্তু তথাপি দেশ-ব্যবহার-পাশে दक् धाकिया अस्मात लाक विश्विकाल বিবাহ প্রচলিত করিয়া ভাহার কোন পূর্ব-প্রতীকার করিতে উদ্যোগী হয় শা।

স্থকায়-সাধন উদেশ করিয়া এদেশের প্রতি করিয়া রাথে। क्केरवात । कारबार बरमनीय क्याकिस्टिशत अकरन व्यक्तरम स्मेरे कार्या कतिया **वास्का** 

महावीर्यवान् ଓ माहनो विन्यः भगः इहेटक्षः मछव। धर्म-क्षुखिरा वधानकात्र मनुर्यात खान-এতদেশীয় বর্মান পুক্ষেরা একণে যেজপ অগ- চক্তু এমত দুর্বল হইয়া রহিয়াছে, যে আপনা-ন্য ও হেয় চইয়া ইহিয়াছে, অপরদেশীয় সভ্য- দিগের নিকট উপস্থিত বিপদ্কেও তাছারা ক্ষণ-লোকের নিজট যেপ্রকার অধম এবং অগুছেন কালের জন্য দেখিতে পায় না। এদেশের যে मम उ लारक এই বিৰুদ্ধ-नः कारतत वन जाना মনুষ কর্ত পরাজিত হইয়া আপনাদিগের হইয়া স্বজাতির হতবল হতবীয়া কন্যা-পুঞ্রের গৃহস্ক্রপ জন্মভূমির আধিপতেঃ যেক্রপ বঞ্চিত দিছত উদাহ-ক্রিয়া সম্পন্ন করিয়া ইচ্ছাপূর্বক হুইয়া ব্রহিয়াছে, এবং আপনাদিগের স্বাধীনতা- আপনাদিগের কুলনাশক কালকে আহ্বান করিছে-**(ছ। मिनोग्न जनगन मध्या किञ्हे अक्तल निर्दाध** नहरू, य े क्रा चेंदिश विवाह क्रमा तम मकदा গর্বনাশ ঘটিবার সন্তাবনা এবং পূর্ণবয়ক সবল गटङ खाणूकरवत महिङ विवाह हहेता 👣 অনুপম সুথ মৌভাগ্ বস্তু হইতে পাঃ যুক্তি ও তর্কের দার। অনায়াদে ভাহার অন্ ভব করিতে না পারে, পরস্তু প্রগাঢ়-ব্যবহাঃ-যদিও ভিন্ন-দেশীয় লোকে দয়া করিয়া কি ভ্রান্তি আনিয়া তাহাদিগের জ্ঞান-পথকে ক্র

নগরে নগরে—প্রতি গুমে গুমে—পল্লী পল্লীতে— । বিবাহ-বিষয়ে এদেশে আর যে এক প্রকার মহামহা বিদ্যালয়-ভাপন দারা বিধিমতে জ্ঞান- কুরাতির অনুচান হইয়া থাকে, ভাহাতে করিয়া বিভানের প্রচার করে, তথাপিও এদেশায় কিমিনকালে আর দেশায় মনুযেরে মন্তকোনে নস্তানগদ ২লবুদ্ধি-বিষয়ে ভালাদিগের পূর্ব- করিবার সাধ্য হইবে না, এবং ভাছার নাম করি।ক পুক্ষদিগকে ক্ৰিন্কালে সম্পূৰ্জাপে অভিক্ৰম ভূদয় বিদাৰ হয়। মনুষ্য নিভাস্ত নিদ্য —নিড়াছা कड़िएड शाब्दिक मा। कार्य)-कार्यन-मृत्व नक निष्ठृद्ध-मा क्ष्येल, अक्काल कृष्यक शायानिक প্রতিয়া অবশ্যই তাহাদিশের পিতামাভার কঠোর না করিলে এবং বৃক্ষ পর্বতাদির ন্যায় শার্লারক ৬ নান্দিক দকল দোষ ভাষা- অচেতন না হইলে যে কর্ম করিতে পাসুর না, দিগারে বিভাগত বিভাগত অধিকরণ করিতে, উক্ত কুরীতির অনুসারে মহামহা বিচক্ষণ/ভাবে

रम्बर नाडीहिक अ नानीयक अदछ। इहेंशा काम वृष्तिमान वाक ना **पीका है** दिवन রহিষ্যছে, এবং বৈজ্যাত্য-বিবাহের প্রতি এদে- যে যৌবনাবস্থায় জার বিয়োগ হয় পুক-শাষ লে'তের তাপ্রকার বিক্রন্ধ সংখ্যার আছে, তির যে মত পুনর্বার দরিপরিপূর্ কার্ট্রিপর-ভাগতে হিন্দু-সন্তানগণের আর জ্রাকৃদ্ধি হওয়া মেশ্বর-প্রণীত শারীরিক নিয়ম পার্যী, করা লরে খাত্ক হিলু নাম অচিরে লুগু হওয়াই লিখি, দেইমত অপেবয়ক। জা∕দণের শুয়মী হত

হইলেও মিতীয় বার পাণি-গুহণ করিয়া শারী- মানুসায়ে অবশ্যই তাহাকে মাকজীবন অসহত প্রক্ত-সভাবানুসারে যেমন ভাহার মনের ঢা-্ পঞ্চইতে নির্নিপ্ত থাকিয়া সমস্ত জীবন গাল পন করিয়া যাওয়া অভ্যন্ত কঠিন হইয়া উটো: দেই মত বালবিধবা নারীদিগেরও ভাবশ্য**িচ**-ত্তের অভিরত্য হইতে পারে এবং আপনাদি-গের সভীত্তের রক্ষা করাও দুংসাধ্য হয়। এ-**७**९मः नाटत जोविहोन शुरुष्मिटशत मट्या चरन-কের চেপ্তায় যেমন অত্যস্ত কুৎনিত ও ভয়া-নক পাপের অনুষ্ঠান হইয়া গিয়াছে এবং অদ্যা-পি হইতেছে, নেই মত প্তিহীনা রম্বীর মধ্যে অনেকে অধৈয়া হইয়াও অসঙ্থ্য অভ্যা-চার উৎপাদন করিয়াছে এবং করিতেছে। কিন্তু এদেশে কি বিপরীত রীতির বলবৎ প্রচার! পুরুষের যত বার জ্ঞা বিয়োগ হয়, প্রচলিত দে-শাচারানুসারে দে তত বারই বিবাধ করিতে भारत, अवर अक खी **मर**खंख यमि भूकव कान्।-জীর পাণিগুত্ব করিতে ইচ্ছা করে, ইঞ্চনুসারে ভাছাও ভাহার করিবার অধিকার আছে, কিন্তু जीत्नारकत ७क राज सामा मृठ हहेता छाहात क्रिशानिशृहन कहिनाइ निधि माहै। शूर्वहे छेक হা যে ক্রীতিকাপধুমে অস্বা হইয়া এদেশের ला । अभवर्षीया कन्गात्र विवाह श्रमान क्र यिन (नहें कन्। इं जेबाह-किश নাৰ তি না হইতে তাহার পতিকে অকসাৎ কাৰ্ট্টেড প্ৰিত হইতে হয়, তথাপি তা-शांत्र कीवत्नत्र माध्य चात्र काहात ভार्यत

রিক-ধর্মের রক্ষা করা সর্বচোভাবে কর্ত্তব্যা বৈধব্য-যন্ত্রণা ভোগ করিতে ছউবেক। অবি-প্রথম-বয়দে পুরুষ দ্রাহান হইলে, যদি সে কন্ত ধর্মশাক্রমধ্যে বয়দের তারতম্যান্তা-ব্যক্তি আর অন্য জ্রীর পাণিগুহ্ণ না করে, ভবে ্রে বিষবাদিগের আচারব্যবহারের কোন ইত্ত विस्मय कता नाइ; शूर्वनग्रक। कान खीह लिक ঞ্জা জন্মে, শরীরের ভাবান্তর হয়, এবং পাপ বিয়োগ হইলে, শাস্তানুবারে তাহাকে যেমত বেশভ্যা-ৰজিতা হইয়া সময়ে সময়ে উপবাদ শ্রুপাহার করিয়া দুঃসহ-শারীরিক-কণ্ট-খাকার-পূর্বক ঘোরতের কঠোর-নিমগ্র-সকল পা-लन कहिएक इश्व, शक्षवर्यीक्षा कन्यात्र पूर्णाग्य-यमञ्ह देवधवाएमा क्ड्रेटन, छोडाइ প्रक्रि (मर्डे-মত ব্যাত নিয়ম পালন করিবার বিধি আছে, এবং পিতামাতাও বিষমভূমে অন্ধ হইয়া অনা-য়ানে সেই বালিকা দুহিতাকে ঘোরতর যন্ত্রণা-প্রদান করিতে প্রবৃত্ত হয়েন। এদেশীয় লো-কের **এত বিপু**ল অজ্ঞানত। যে ব্রাহ্মণ ও কা**ন্নস্থ** বণের মধ্যে কোল নিয়মিতদিব**দে পিতামাতা** यिन वानविश्ववा कनगारक डेलवारनंत करहे वा मार्क-िलामात्र क्ले एक क्वेंग धान-छात्र করিতেও দেখে তথাপি আপনাদিগের ধর্মভূম দূর করিয়া ভাছাকে যৎকিঞ্চিৎ আছার বা জলদান করিয়া ভাষার প্রাণরক্ষা করিতে পারে না। ব্রাহ্মণ ও কাষ্ত বর্ণের মধ্যে সত্তর্জাবাত্যায় ও বিধবা-**फिरिशंद्र गुथ्यरक्षित्र छानश्चरमानशृर्दक श्वीनमान क**दि-তে নিবেধ আছে। কি আশ্চর্যা! কি মূঢ্তা! কি মহাভূম: এ আচার-দৃষ্টে কথনই বোধ হয় না, যে ইহারা বিধবান্তাদিগের কোন नकीव थानी निवाध मान करत, याद्यू वृत्ति-চৈচন্যবিশিষ্ট লোকে কোন পশু পশ্চির প্রতিও अञ्चलका निष्ठूत-वावश्वत कतिए**ण शास्त ना**। विश्ववा कम्मा वशुःशुंखा इहेटल शिकांमांका यिक 📆 🗓 থাকে না। দেশ-ব্যবহারের নিয়- ভাহাকে নিরম্ভর পতিবিরহে কাতর হইতে দে-

জাণ্ছতা প্রভৃতি ভাকর পাপ-সকল আচরিত ভাগ্য হুইবার সম্ভাবনা আছে? করিতেও দেখেন, তথাপি ধন্মানুরোধ ভ্যাগ-পূর্ক নেই ক্ষ্যায় প্নর্বার বিবাহ দিয়া উক্ত অস্যাচার-স্ফল নিরাকরণ করিতে শক্ত হয়েন না৷ এদেশীয় এই কুর্গতির প্রভাবে ভারত-বর্ষের কর কন্য যে যাবজ্জীবন বৈধব্য
মুস্কু তদেশে উত্তম চিত্রকরের অভাবে আ
যন্ত্রণা সহা করিতে অশক্তা হইয়া উরন্ধন এবং স্কু মরা সর্বদা কৃথিত হুইভেছি। যে কোন করিছা সৃষ্টিঃ অন্তথ্য উপকার সম্পাদন করিতে পারিত, এবং খায়কুলের ও স্বায়দেশের কার্ত্তি-পত্রকা-বন্দে হছত, ভাছারা ত্মিপ্ত ছইলে, কি জानि नकन (नारका घुनाई कोरत, शांत कारम नम्हणार्यः व्याकनिन्नाम् माङ्ग्याख्यः । छानः कतिर्वः এবং কাহারো বিকল্প আশুর না পাইছ। অল্লাচ্ছা-মানে কেশ পাইবে এবং পিতৃকুল ও নাতৃকু-

थ्यम, मात्रीतिक-विकाल व्यर्थियः इहेशा भार्य इहेर्छ अहे नकस छश्चन-विकाल क्रेन-तं इहेट रमत्यन, अव व्यवस्थाय मठोवनामा जित्र উत्क्रम ना इहेटल कि कथनहे स्मान स्मी-

### পুরাণ-পাঠ।

বিবপাশাদিদার। আত্মঘাতিনা হইয়াছে, কত 💥য়য়য় নৃতদ বিষয়ের বর্ণনা করিতে মানস ক্ল্যা যে শারারিক-বিকারে অবৈষ্যা হইয়া সন্তা-্করি, ছবির আদাবে তৎক্ষণাথ তাহাতেই হতা-ননাদ, প্রভৃতি অসঙ্থা অদ্ভৃত পাপের সৃষ্টি শ হইতে হয়। এ পর্যায় যে সকল ছবি কড়িয়াছে, এবং কুলভয় ও লজ্জায় জলা**জলি এতৎপত্তে প্রেটি**ত হইয়াছে, তাহার অধিকাং-বিয়া বা/ভিচারিণা হওয়াতে পিতৃকুল ও ভ্রাতৃ- শই বিলাভট্টতে আনীত চ্ট্রাছে; সুভরাং ক্লের মাননাশিনী হট্যাছে, ও কত নর্হত্যা আমর৷ যে 🖟 ছবি প্রকাশিত করিতে মানস প্রভৃতি ভয়ক্ষর অত্যাতারের কারণ হইয়াছে, করি, তাহা না হইয়া আমাদিণের বিলাওস্থ এবং আদ্যালিও হইতেছে, তাহা বর্ণন করি- সাহায্যকারি যাহা পাঠান, তাহাই প্রকাশিত श भाग कहा यात्र ना। अहे कृतीवित छन्। कतिए**उ इ**हेएए**एह। कियुफ्रियन हरेन, अउएम्स्न** প্রার্থনীয় ক্লোদ্রব অনেক সন্তান যাহা- কি প্রকারে কথকেরা কথকতা করিয়া থাকেন, তা-রা জাবিত আকিলে পিতামাতার শারীরিক হার ও তংশোডাদিগের এক থানি ছবি পাঠাইতে ও মানসিক গুণসমূহ অধিকার করিয়া এই আদেশ করিয়াছিলাম, তদুভরে মপর পৃষ্ঠে মৃদুত মন্ত্ৰকে ক্ৰমাৰাজন ধাদম্পন এবং অধিতায় ছবিখানি প্ৰাপ্ত হইয়াছি; ভাহার প্ৰতি দৃষ্টিমাত্ৰ পণ্ডিত ছটটে পারিত, আছুত আছুত কাষ্ট পাঠকমহাশহেরা জানিতে পারিবেন যে আমা-मिर्गित मानम कि शर्या छ अकल इहेग्राइह। की-थाश यात्रामनाकृ ভेडाहाया भुहान शुह्न क-तिरक २ लाटक**त भन मूचा क**तिरवन, काषा प्त उग्राना (था भार्याचा छे भूछ- इहेबा-মৃতি উপস্থিত! পর্যন্ত কি করি? এতদেশীয় মনুষ্ঠো তল্গ-বিদ্যায় न। इन्द्रेश्चर, उन्दंशि मरश्र र व म र् াটার কলক্ষরজাপ হটবে, এই আনালায় তা- করিতে হইটো; এবং তৎকারণ পাঠক ছিবি-हातः कानाक्ष्ये माज्यादा मेरे हर्याएह। एम श्रममन-शूरक काम अकाज-वियद्शि



প্ৰাৰ-পাত

थना कतिए इन्ट्रिं।

না দিয়া আমাদিগতে তাঁহাদিগের মার্জনা প্রা-াগুন্থপাঠে অনুরক্ত, তাহার বুদ্ধি প্রতিদিন প্রথার চ্টতে থাকে, কুকর্ম চ্টতে দর্বদা মন পরস্ত ছবির দোষে গুল্ক-পাঠের মাহাত্ম্যবর্ণনে বিরুত এবং প্রকরণবসাং সমাগত করুণাস্ত বিম্থ হওয়া কর্ত্তব্য নহে। এতদেশীয় প্রাচীন তাদি রদে নিম্ম হয়। শ্রোতারাও শ্রুবণ-প্রভা-ঋষির। গুন্ধপাঠ ও তাজুবণে সর্বদা আদেশ করি- বতঃ রদিক ভাবুক সচ্চরিত্রান্তি হয়। গুলু-তেন: তৎকর্মের মাহ্যান্ত বামান্য নছে। তদ্যা- পাঠের আছুত শক্তি! তদ্যার। পাষাণ্ডাম বর্ণজ্ঞ-ता धर्म वर्ष माम अ भाक अहे ठलूर्वरात माधन । ता अ मुद्रनभा छहे ए एक नार शून कि क महीक विभ-হইতে পারে। গুরুপাঠ করিলে তদুলিখিত বাজি- লিডক্দয় গদ্গদ্চিক্ ক্ট্যা যায়। ক্ষন্য পরের গণের জান দেয়ে অবণত হওয়া যায়, এবং লোকে কা কথা, সর্বদৈব ক্রীড়াতৎপার- বালক পাঠ-ভদ্তাজ্ঞের অনুগমন করে; অনস্তর নিরন্তর স্থানে উপস্থিত হইলে ক্রীড়ায় নির্স্ত হইয়া পাঠ-नीजि-कारमङ अनुनीलनवाडा प्राचाश्म शति- जुर्ता मरमाजिन्दिन करत। हिराएक भारति जान कहिया नम्भरवत ভाकन इस। य वर्णक (शत् अनायातव कम्का विवार इहेरवक: स्य বিভিন্ন-কচিবিশিষ্ট আবালবনিতাদিগকে বিবি-ধোপাখনে বিষয়ক বাকচাতুরীঘারা বিমুগ ক-রেন। দেখুন, এতদেশীয় কথকনভাশয়ের। কি অবলীলাক্রমে মনুষ্যতে বিমুগ্ধ করিয়া ইচ্ছা-নুসারে কথন কদিত কথন ছবিত, কথন বা প্রেম্পূর্ণ করিতেছেন

কথকতার প্রনালী দেশভেদে বিভিন্ন। ছইয়া থাকে, বস্থানীয় কথকদিগের সরমাধ্রা, এবং বাক্চাত্রাদি বিলক্ষণকাপে থাকে, কিন্তু বর্ণোচ্চারনের উদ্ভব্ধ স্পষ্টতা নাই। শাস্ত্রেও ইহা উক্ত আছে, যে '' উচ্চারণানভিদ্ধাঃ খলু বস্ধাঃ '' অর্থাৎ বস্থানায় কথকদিদিগেরও এ, ন, শা, ম, ন, ব, ব, ইভ্যাদির যথান্তান পৃথক্ ২ উচ্চারণ করিতে প্রায়ঃ ক্ষমতা নাই, এবং শ্যেতাদিগকে বিমুগ্ধ করিতে বস্থদেশীয়দিগের তুলা নহেন। উচ্চারণবিষয়ে দাক্ষিণাত্যের কথকমহাশ্যদিগতে অন্বিভিন্ন বিশ্বে চার্লিগতের কথকমহাশ্যদিগতে অন্বিভিন্ন বিশ্বে চার্লিগতের কথকমহাশ্যদিগতে অন্বিভিন্ন বিশ্বে হার্লিগতে হটবে; বেদপাঠে মুপাপ্তত উক্ত কথকের। যে প্রকারে প্রত্যেক বর্ণের পৃথক্ ২ উচ্চারণ করেন ভেমন এতদেশীয় কোন কথক সক্ষম নহেল।

শ্রমাধুন্য-বিষয়ে সর্বভ্রই সমান; বাক্চাতুর্য এক পাঠপ্রবালা দেশভেদে বিভিন্ন আছে। বন্ধভাষার কংকৃত-মিশ্রিত হওত বাক্চাত্র-র্যোব বিশেষ চাতুর্য্য বোধ হয়; পরস্ত শ্রো-ভাদিগের স্বং দেশায় স্বর্মাধুর্য্য বাক্চা-ভূর্যাদিভেই অতি সম্ভত্তি থাকে, কারণ উপা-খ্যান এক থাকিলেও ভাষার প্রভেদ হওয়ায় বোধসম্য হয় না। দক্ষিণদেশে প্রতি দিন ইমকালে বাদ যার্মহকারে দপ্তায়মান হট্যা গীত-বিভ্রাধ্যাদের গানপূর্ক পাঠকরণের প্রথা আছে, এবং কাশী, বৃদ্ধাবন, মধুরা প্রভৃতি জন্যা- না দেশেও প্রায়ঃ প্রতি দিন ব্যাখ্যা উপলক্ষে গুন্তপাঠ হুইয়া থাকে। ভাছার মধ্যে বক্ষামান দোষ পরিভ্যাগ করিয়া পাঠ করা শেয়ঃ; যথা,

> "শক্তিও ভাতমৃদ্যুকীমবাক্তমনুনালিকম। বিস্তর্গ বিরুদ্ধের বিলিগ্রণ বিষমাহ্তম্। কাকস্তরণ শির্দিত তেথাস্থানবিবলিত্ন। ব্যাকুলণ ভালহানক্ষ পাচদোষাশ্ভর্ণণ।। লঙ্গীতণ শির্দঃক্ষুম্মুক্তগ্রন্থক্যম্"।

हेशत व्यर् अहे य मकायुक हहेगा उकाति उ, छाठ हरेता उकाति उ, मुथराय निम्हित उकाति उ, मुथराय निम्हित उकाति उ, छ भवत, त्रार्टिशन, वियय शास्त्राकाति उ, काक नम्म मह, कान्मानिक व, यर्था कुछार व व्यक्ति वह उक्ति व्यव व्यक्ति वह उक्ति प्राप्त अव वाल होन अहे उक्ति प्राप्त व्यक्ति वह विवास वह उक्ति प्राप्त व्यक्ति वह विवास विवा

## मुतर्गत जात्रजनम् य थनी।

विशाहीनकान भविष जात्रवास मुविशाहीनकान भविष जात्रवास मुविष्ठ वर्णत প्रहाह लाइ, बवर तमामिहे हरा। शूर्वकारान भीनरण्णीय स्वारकता जातव्यर्थत कान र जर्णाक अनुवर्णणाय स्वारकता जातव्यर्थत कान र जर्णाक अनुवर्णणाय स्वारकता जातव्यर्थत कान र जर्णाक अनुवर्णणाय जार्मक विधान कतिक, बवर वह्नकानभर्य ज जे जान हहेर्ल्ड श्रीवर्णत नर्ब के मानाहत धाजू (श्रविक हहेक: किन्न बहे करण के श्रीवा जन/था हहेग्राहि। जामितिका-स्वार्ण स्व कानिकर्मिया-श्रीहरू बहेशा थारक, जाहारक श्रीवर प्रभाव नक्ष विश्व हहेग्रा थारक, जाहारक श्रीवर प्रभाव नक्ष विश्व हहेग्राह। बहे कर्ष क्रिक

थनीत প्रहात नाहे; अखका श्रायः मम अ नूवर्ग नही-তটে প্রাপ্ত হওয়া যায়। আনাম-প্রদেশে প্রায়ঃ৫০টি নদীর বালুকায় সূবর্ণ লব্ধ হইয়া থাকে, তল্মধ্যে দী-मा॰, काकुष्ठ, कम्म्, (माम्पिती, मुनद्रामीकू, टेख्द्रवी, উত্তম পরিশুদ্ধ ও প্রচুর স্বর্ণ প্রাপ্ত হওয়া যায় ৷ বে-शत-श्राम्य (मान मनी, विज्ञात-श्राम्य महा-या পাত्रञ् करनव अधिकाश्य निरक्षं कहिरनः জলের সহিত বালুকাদি লঘু পদার্থের কিয়দংশ নিক্ষিপ্ত হয়; অত্যন্ত গুৰুতাপ্ৰযুক্ত ৰণ পাৰের 🖯 ভলভাগে পড়িয়া থাকে। পুনঃ ২ এই প্রকারে বালুকা-মিশ্তি সুবৰ ধৌত করিলে অনায়াদে वालकाम्हिकामि श्रीनशमार्थहरेट मूदर्गत श्थक् कता याहरण शारत। शृर्वाक नरी ठछे इ मनूरव/ता এই নিয়ম জ্ঞাত থাকিয়া তদনুসারে মর্ণ সঞ্চিত क्रिया पारक।

व्यामाम-५८६५ म् वर्ग-न अक्का क्रिए एवं नाम "भागान". भो उंकारन महीत्र छन अप्श इहे-লেই ভাহারা স্থাপুঞাদির সহিত দলবদ হইয়া সুবণসন্তুহে প্রকৃত হয়। লোনালদিগের প্রত্যেত

অনেক স্থানে স্বৰ্ণ প্ৰস্তুত হয়। পরস্তু এতকেশে উত্তম । দলে এক জন পাটুই (প্রধান) এবং চারি জন शही (कर्मकातक) **थाटक।** खे मन नमी टीदाइ हा স্থান সোতোবেগে ভথ হইয়া পড়িয়াছে, তং সম্থে আলিয়া সোকালি নামক তীলাগু বংশ-দার) বাল্কা খনন করিয়া পরীক্ষা করিয়া দেখে: यमाणि वाल्यात महिक व्यक्ति अञ्जत व्यक्त থাকে, তাহা হইলে বালুকায় স্বৰ্গ আছে নিশ্চয় ক্লালিয়া এক থানা বাঁশের চেয়াড়িকে (বাঁশ मही, शक्षात्व विशामा नही, चार्याधाय शामर्छ। । हाला। वे वालूका वहेशा जागार कि शतिमार्व নদী প্রভৃতি ভটিনীদিগের ভটেও কিঞ্ছিৎ ২ কা স্থা আছে, তালা নিরূপন করে। যদ্যাসি এ क्षन मञ्जूकील इत्रेक्षा थारक। वे मकल काश्वरनत (एश) फ़ित है शत १२।১৪ টি সুবर्गकना प्रियरिक আকর পর্বত্ত খনা। নদার সোতোবেগে এ পাত, তাজা চইলে নিশ্চয় নোথ করে যে তথায় থানী ছইতে সুন্ধ বৌত ছইয়। বালুকাবৎ অব- যথেও স্থারেণু আছে, এবং তলিকটে পাণক্টীর য়বে দূরে নীত হুইয়া যায়, পরে সোতোবেণের নির্মাণ করিয়া তথায় আপনাদিণের আবাস-হাস হইলে নদী চটাত্তালুকার সহিত নিপতিত । সংস্থাপন করে। সতঃপর নদাগতে এমত করিয়া इन्हें विका अन-गुरुदकता के वालुका धीक वैधि वाद्य, याहाटक नमीत कल भूवर्विनिष्ठ করিলেই অর্ণ প্রাপ্ত হয়। সূত্র প্রাটিনা ভিন্ন, স্তান দিয়া বাহিত হইতে পারে। দুই তিন দি-সকল পদার্থইইতে গুরু, এই প্রযুক্ত সাম্য পদা- বন ঐ জল বহিলে উভ স্থানের উপরিভাগের থের সহিত মিশ্রিত সুবর্ণ-চুধ জলে বিলোড়ন করি- বিল্কা থোত হইরা যার, এবং নিমুস্থ স্বর্ণপূর্ণ न जूका वाक रहा। जाहा रहेत्वहे मामात्वता বাব ভাঙ্গিয়া দেয়, এবং নদীর জল ঐ ধৌত স্থান শরিক্যাণ করিয়া নদীয় গর্ভ দিয়া বাহিত হই-তে থাকে। এই অবকাশে সোনালেরা কান্তনি-আিত কোদালদারা বালুকা থনিত করিয়া ভটে উত্তোলিত করে, এবং তথায় সাল্তি নামফ নৌ-कांत्र नग्रंश २ इन्छ नीर्घ, बदः बंक इन्ड श्रन्ड, ও অর্দ্ধ হস্ত গভীর এক কান্ত পারোপরিস্থ এক ছাঁকুনির উপর নিক্ষেপ করে। উক্ত কান্তশাত্রের नाम पूर्वा—(पूर्वा?) बवः जाहात वक भार्य अक हिन् थाटक। यथालतियान तानूका हाँक्नित উপর স্থাপিত হইলে তদুপরি একঃ স্তদারা হল अश्रहेखपात्रा वानुका-विरमाङ्ग ঢালিতে

कतिए इस्। बहे श्रीक्यामात्रा श्रेष्ठत-भश्र-नकन हैं कि मित्र छे भारत थारक. बदः वर्ष ও वालूका ও कत प्रवित भरधः निशक्ति हरा; अश्र पृर्वित পাদে এক ছিদু থানাপ্রযুক্ত তদ্যারা অধিকাংশ वालुका ও প্রায়ঃ নমস্ত জল নির্গত হইয়া যায়; কেবল কিঞিৎ পরিষ্ঠ বালুকাও স্বৰ্ট্ৰ মাত্ৰ পাতের নিমু চার্গে অবশিষ্ট থাকে। এই প্রকারে 8--- কুড়ি বালুকা থৌত করিলে যে অবশিষ্ট বালুকা দুফ্ণি মধ্যে থাকে, তাহাকে সোনা-লের: "শিহা" শব্দে কছে। ঐ এক শিয়া বালু-কার এক রতি সূবর্ পাওয়া যায়, কথন ২ সুবর্ণের পরিমান তাহা হইতে অত্প হয়, কথন বা ভাছার দ্বিগুণ অধিক হইয়া থাকে। ঐ পরিমিত বর্ণ গুনিতে অপ্পা, কিন্তু বস্তুতঃ তাহা অনায়াদে ২০০০ শিয়া বালুকা প্রস্তুত করিতে পারে। তাহাতে। আনা বা ।/ আনা সুবর্ণ লভা হয়৷

খোত বাল্কা সোনালেরা কোপাত-বৃক্তের
পত্রে বালিয়া রাখে, এবং বাল্কা-খোত-করণ
কার্যের সমাধা হইলে তৎসমুদায় একরে দুকনি মধ্যে ঢালিয়া তাহাতে কিঞ্চিৎ পারা (পারদ) দিয়া সমস্ত বাল্কা জলদ্বারা পুনঃ খোত
করিতে থাকে। ঐ প্রক্রিয়া-সময়ে স্বর্ণচূর্ণ পারার সহিত মিশ্রি হয়, ও বাল্কাহইতে পৃথক্
হইয়া পারার সহিত দুক্দির তলভাগে থাকে,
এবং জল ও বাল্কা দুক্দির ছিদু দিয়া নির্গত
হইয়া যায়।

শতঃপর শোণালের। বন্মিশুত পারার হালটি একটি শস্থুকের মধ্যে পুরিয়া নাহার-কাষ্টের অমিতে তাহা দক্ষ করে, তাহাতে সমস্ত পারা ধুম হইয়া উভিয়া যার; শস্তুক চূর্ণ হইয়া याम, जनः जनाय। मूनर्न गृतिख्या कहेमा आहम।
जे मूनर्पत्र वर्ग जेक्जूम मा कहेल जाकारण
जेनूसमत्र माहि श्र जिल्लिश नन्। विम्ना जाका भूमः
मया सन्ना जानगानः जाका कहेलाहे काश्वरमत्र वर्णत्र पीछि क्या

সূবন প্রস্তুত করিবার যে প্রক্রিয়া বর্নিত ছইল দেশভেদে তাহার কিঞ্জিৎ ইতরবিলেষ আছে; সন্ত্রাদির নাম ও অবয়বেরও কিথিৎ যাতন্ত্র আছে; পরস্তু স্থল-প্রক্রিয়া নর্বত্রই তুল্য; আদৌ ধৌত করিয়া বালুকাহইতে যর্নের পৃথক করা, পরে পারদ্ধারা তাহার পরিশুদ্ধ করা।

পূর্বে উক্ত হইয়াছে; সুনবের আদিম স্থান পৃথিবীগর্ভ তথার ক্ষটিক-প্রস্তরের সাদ্ধ্য সূবর্ अकटब थारक; नमीत (वरंग जे जान रूप इंड्रेस वे अख्द वालूकाकाल बनः वर्ष्ण्वेकाल शदिवछ र्हेश अक्टब थेनीर्हेट चिन्दत প्रकिश हर, সুতরাং ইহা অনায়াদেই অনুভূত হইতে পাঙ্গে, य ननोत य भारनत वालुकाम वर्गपूर्व जाएस, তাহার কিয়দূরে সুবর্ণের আকর আছে। অনেকে এই অনুস্বানে অভিশয়-কাঞ্চনপূর্ব বৃহৎ গ্রী প্राश्च हरेबाट्ट्न। (वाथ इब्न, त्यान-नारोब डे॰-পত্তি স্থানে ঐ প্রকারে অনুসন্ধান করিলে বাহার-প্রদেশে সূবর্ণের আকর প্রাপ্ত হ'ওয়া याইতে পারে। আসামেও এই প্রকারে বর্ণ খনীর তত্ত্ব कर्ता कर्खवं। धनीय मूर्वर्ग हिनुवर नहर, शरू कश्रमा कि चन्यामा शरार्थंत्र नगाः छुन्नशिर्धं । প্রায়: পাওয়া যায় না। অজেলিয়া-ঘাপে বাথষ্ট-গ্ৰামে এক বৰ্ণপিও প্ৰাপ্ত হইয়াছিল, তাহা দেড় यान जरभक्ताम किकिर शक, शतु उक्त कृर्र পিও পাওয়া অভি কঠিন। ধনীত্ব বৰ্ণ অভি ক্ষুদ্ৰ ২ िए अध इन्हा बाब, बनः जाराद अखब-

হইতে পূথক-করণার্থে প্রথমতঃ বৃহৎ ২ লোহ উদ্থানে ঐ প্রস্তর চূর্ণ করিতে হয়, পারে জলে থোত করত অবশেষে পারা মিশ্রিত করিয়া অমিতে দথা করিতে হয়।

### पृष्ठी खिनिन् ।

ইনাশের মূলীভূত বৈরিকে কদাচা কুদু জ্ঞান করা উচিত নহে, অথি-ইম্প্রেল্ডি ফুলিফ পরিমিত হইলেও কি ক্ষণ-কাল মধ্যে তৃণরাশি ভস্মরাশি করিতে সমর্থ হয় না?

বীর হইয়া যদি পরাক্রম প্রকাশ না করে, ছাছা হইলে তাহাকে কেহই ভয় করে না, চিত্রা-পিত ব্যাঘু লইয়া কি বালকেরা ক্রীড়া করিতে বিরত থাকে?

রাজার প্রবল প্রতাপ থাকিতে রাজ্যমধ্যে কদাচ দৃষ্ট লোক বাস করিতে পারে না, সুর্য্যের তেজঃ বিদ্যমান থাকিলে অন্ধকার কি প্রকারে অবস্থিতি করিতে পারিবেক?

সময়ের হলাবল বিবেচনা করিয়া যাহার। কাষ্য করে তাহাদের কাষ্যই কলজনক হয়, দাঁব (লক্ষ্য) বৃবিষা খেলিতে পারিলে কি কখন হারি (পরাজয়) হইয়া থাকে?

ি বিধির লিপি খন/থ। করিবার ক্ষমতা কা-ছারও নাই: অগাধ দলিল সমুদু পিতা ছই-য়াও কলকযুক্ত নিজ ভনয় চন্দ্রের কলক কালনে সক্ষম হইল না।

শনুশীলন করিতে ২ জড়বুদিও ভাক্তা প্রাপ্ত হয়, খনবরত রজ্জ্ব যাতায়াত হইলে কি পাষানে বিশা পড়িতে খবশিষ্ট থাকে ? ভাল করা বড় কঠিন, দন্দ অনায়ালেই করা যাম্ম; গৃহ রচনা করিতে অনেক বিলম্ব লাগে, ভালিতে অকুশে ও অন্তিবিলমেই পালা যায়।

পণ্ডিতেরা বলেন আপেন দুব্য যদি আপেন সন্নিহিত থাকে তবে আপেন বলা যায়, পরহত গত আপেন পঞ্জিকায় দৈবজ্ঞের কি ফল দর্শে?

রদের কথাই কছক বা রোবের কথাই কছক কিছুতে শত্রুকে বিশাস করিবেক না, জল পড়ি-লেই অমি নির্বাণ হইবেক তাহা শীর্তল চ্ই-লেই কি এবং উফ হইলেই বা কি?

প্রক্তের কিঞ্চিৎ ভেদহইলেই অনেক হয়, দেশ, সত্য ও মিথা উভয়ের মধ্যে চারি খা-সুলী মাত্র অন্তর, অথচ দেখা বিষয় সকলোই সত্য বলিয়া মানে শুনা কথা কেহই বিশাস করে না।

(অর্থাৎ চক্ষুঃ কর্ণ পরস্পার চতুরস্কুল ব্যবহিত্য)

ভাল হইতে মন্দ ও মনদৃহতৈ ভাল বস্তুর
উৎপত্তিরূপ ব্যভিচারও কথন ২ দ্রিগোচর
হয়, দীপজ্যোতিঃহইতে কজ্জল ও কর্দ্মহইতে
কমল উৎপত্ত হওয়া অভিপ্রদিদ্ধই রহিয়াছে।

দাস একান্ত সাধু প্রভুপরায়ণ হইলে সাধু প্রভুর দুক্ষর কার্য্যও সাধিত হইয়া থাকে, অঙ্কদ ও হনুমানভারা জ্রামচন্দ্রে জানকার উদ্ধার তা-হার এক নিদর্শন স্থান।

गड्डन मिलानत मूथ पूर्डिन महा हिल्हे विलक्षण कांना यात्र, निचला हर्दण कतिल हेक्टूत मिडे काचारन मूहास्कालहे व/क हत्र।

योशत गरिक भिल्म इहेत मुर्थापत इत, काशत विरक्षप पूर्थना इहेता यात्र मा; मूर्यात मूथावरलाकरन कमरनत विकास ও कताकितक काशत मर्रकाक प्रशिक्त कात्र श्रमान काहिए। इत्र मा। তাহা সময়ান্তরে উপকারে আইনে, শন্যক্ষেত্রে প্র- ় রোধ করিয়া থাকে? प्रमाहात भाराय प्रकल विनिमुक्त इंडेलंडे सू-े कहिल कि ठाड़ा खद्ध मलिन कहिए जुटि करते?

প্রিডে কেবল ফলেরি হানি করে।

ाधकरेटच पृथ्यत डेब्शिक श्रमिक्र चार्छ, কিব্ গুণ্টইটে দুল্খ প্রাপ্তিও দৃষ্ট হয়; শুরণ- । গুছ পূর্যককেই অভিফেণ থাইতে প্রবৃদ্ধ ছইত দা। মনে হর-মধুরভাষা শুক্রাক্ষির পিঞ্রবন্ধান ইহার पत्राष्ट्र यन

ভাল মন্দ সকলেই মহতের আশুয় পায়, দেখ छल्, मर्श. सन, व्यक्षि, इंश्ता (म्वर्षित महा-দেবের আংশিত হুট্যা রহিয়াছে।

নাধু ব্যক্তির ধর্ম, প্রত্যেক গৃহ বিভিমির করিয়া পুহুণে কে বধিংত হুইয়া থাকে?

অভি তুক্ত পদার্থ মতুপূর্বক রক্ষিত হইলেও | প্রক্রাশমান করিতে কি সূর্য্যদেবকে কেই অনু-

ভিশ্বাপিত জ্নায় পুঞ্জ দেখিয়া মৃগ মহিষাদি 📋 নীচের সহিত সম্ভাষণ কিছা সংবাস কোন-পলায়ন করিলে কি ক্ষকের ক্ষতি নিবৃদ্ধি হয় না? মিতেই কর্ত্তবা নছে, প্রস্তর্থণ্ড কর্মমে নিক্ষি

চ্ফে সম্পন্ন কাৰ্য্য বলা যায়, অভিবৃত্তি অনা- ামিউ২ সকলেই কহিয়া থাকে, কিন্তু মিউচো িবস্তু মছে, বলিতে গেলে প্রবৃত্তিকেই মিষ্ট বলিতে হয়, মহিলে মিছরি প্রভৃতি পরিত্যাগ করিয়া আ-

> বিনা ভোগে সঞ্চয় করিলে সে ধন চৌয়েতেই পর্যাপ্ত হয়, তাহাতে সাঞ্চায়েকের কর মদন করিব: মঙুমক্ষিকার ন্যায় কেবল অনুভাপ করিতে 更新!

उँ कुछ निम्म भीष्ठता इधेताल सोहः इहेरल বিনা অনুরোধে অন্যের আশা পূর্ব করা তাহা গুছ্ব ফরিকেড়, অপবিত্র স্থানস্থিত কাঞ্চন

# প্রাকৃত-ভূগোল

### ज्यश्यलात रेनमर्गिकातजा वर्गन विषयक गृहा।

है। তথুরে এতৎপত্তে প্রাকৃত-ভূগোল-বিষয়ে যে সকল প্রস্তাব প্রকটিত হট্মাছিল, অধুনা তাহ একরিত করিয়া কুদু পুত্তকাকারে মৃদুত হইয়াছে, এবং তাহার বিশেষ পরিজ্ঞানার্থে এক থানি দুর্গোলের মান্চিত্রও প্রস্তুত হুইতেছে। উক্ত মান্চিত্রে ভূমণ্ডলের অবগ্র, ও পর্বত, দেশ, নগর, म्युप्, नमा প्रापृष्ठि नकल প্रधान शमारथंत नाम चिक्कि धानिरवक, यशत श्रीधवीत किल् साम কি কি বৃক্ষ ও পাও আছে, কোন্ দেশেই উফডা কি প্রকার, কোথায় কি পারিমাণে বৃষ্টি হয়, কোন্ প্র-দেলে কি বলের নন্ব্য আছে, কোথায় কোন সময়ে জোয়ার হয় সমুদের দ্যোভঃ কোথায় কোন দিগে व के उन्हार का कि विविध विवर्षत विवेद कि विविध वर्गामित विन्यारम श्रीकामीक करेंदि । वक्रामाल এতংদুশ মাত্র চিত্র কদাপি প্রস্তুত হয় নাই। বিদ্যার্থিগন এই উভয়ের সাহায়ে। ভূগোনের প্রাক্টা-ৰতার বিবরণ মনায়াদে বিজ্ঞাত হইতে পারিবেন। অদ্যাপি মূল্য নিরুপিত হয় শাই; বোধ করি केटरपुत मुला **इत्र गिकात व्यक्षिक क्वेर**न ना रे

# विविधार्थ-मञ्जूर,

ত্যথাৎ

পুরারজেতিহাস-প্রাণিবিদ্যা-শিণ্দ-সাহিত্যাদি-দ্যোতক মাসিক পত্র।

मकाक ३११७, जगुर्शिय।

### वुँ पिलापिरगत विवत्र।

<u> १९९५ (१८८८)</u> र्यावः भावजः भ **चर्**याधाः विष-🗡 🚖 তি-জ্ঞারামচন্দ্-তনয় কুশের বংশ-🤶 ক্ষাত কচবহদিগের বিষয়ে বিবি-প্রি)))))))) ধার্থে কয়েক প্রস্তাব প্রকটিত হইয়াছে; পরস্তু তাহাতে কুশবংশের অপর শাখা বুঁদেলাদিগের কোন উল্লেখ হয় নাই; অধুনা ভৃদ্ধি-यदा किश्विर निशिवक करा यहिएछ।

কুশের পুঞা হরিবুকা; তিনি উত্তরকালে পিতৃদত্ত অযোধ্যার আধিপত্য প্রাপ্ত হইয়া মহীপাল-নামে খ্যাত হইয়াছিলেন। তৎপরে তৎপুঞ্জ উদিম, ও তদনস্তর ভত্তনয় হুলমান রাজ্যাধিকার করেন। তাঁহার উত্তরাধিকারী বিমলচ্দু। তিনি যুদ্ধবিদ্যা, সাহন, মহিমাদিতে অদ্বিতীয় ছিলেন। তাঁহার মরণানন্তর তাহার পুত্র ছত্তপাল বিংহাসনে আ-রোহণ করেন। তৎপুঞ্জের নাম যোধপাল। তিনি বিহস্করাজ বা বিহস্তশের জনক ছিলেন।

महीलानावधि विहम्रताक लग्रासः गांउ कन রাজা অনুক্রমে অযোধ্যায় আধিপত্য করিয়া উত্তরাধিকারী रहेगा

and the state of t े शूर्वक वातानशेटक हास्यामी आपन তাঁহার রাজ্য-শাসন-বিষয়িণী ন্যায়-পর্তা ও व्यवशाना सम् ७ १ गरवत वनम इहेका श्रकाका এমত সম্ভুষ্ট ও সুখী ফ্ইয়াছিল, যে রাফার প্রতি ধন্যবাদ ও সন্তোগ-প্রকাশ ব্যতীত ভা-হাদের মুখে আর কিছুই শ্রুত হইত না। সেই नमयाविधि यिनि २ कानी एक ब्राक्त इहेबा किएमन, সকলেই কাশীশ্বর উপাণি প্রাপ্ত হন। কাশী-প্রদেশের এক প্রধান রাজা গুছিরদেব। তৎ-পুঞ মহাবল-পরাক্রান্ত বিমলচন্দু। তাঁহার ভনয়ের नाम शिशोहन्मु: जिनि यूकविष्ठाश चाँछ मिशून ছিলেন। তদনন্তর তৎপুত্র তিহিনপাল সিংহা-সনে অধিকাঢ় হন। তাঁহাছইতে ক্ষেত্রধর্মের বিশিষ্ট উন্নতি হয়। তৎপুঞ বিন্ধারাজ। তিনি বিজ্ঞানশাস্ত্ৰ ও শিশ্পশাস্ত্ৰে বিশিষ্ট পাৰদৰ্শী হই-য়াছিলেন। তথপুত্র নুনিকদেব। তাহাদ্র পুত্র বে-দিনদেব। তদাশ্বজ অজ্জুনবুকা। বীরভূধর ভাঁ**হা**র পুঞা এ বীরভূখরের দুই জী। ভাহার একের গত্তে চারি পুঞ্জন্মে। ভাছাদের নাম জ্ঞাতনার মৃছে। व्यभरतम् अकृषि भूषा वाहात्र नाम भक्षमा छेउन-यान। उपमस्त कामीताल रेपक्क अत्याधात कारल जे कमिन्ठ ताल-निःशामान आरक्ष তদ্ধিকার-পরিত/াগ- করেন। পরে তাঁহার ভাত্তত্প্র চক্রান্ত করিছা

করিয়া তাহার: এক ২ ভাগ লইয়া শাসন করে। কথিত আছে, পঞ্চম ভ্রাত্দিগের অত্যাচারে জহিক-সুখে দিমুখ ক্ষয় বিস্বাচলে আরোহণ कत्र हरामात अविचया नियुक्त हम। जे আরারনায় কিয়ৎকাল গত হইলে পর তিনি একপাদে দভায়নান থাকিয়া অনাখারে দি-वाहाज विकादारियोह प्राप्त निमभ हहेश नह দিবৰ যাপন করিলেন, তথাপি কোন ফল দৰ্শিল ' না; ভতএব দেবীর গ্রাত্থে আত্মহতায়ে ক্ত-তেছেন, এমত সমধে দেবা লাক্ষাৎকার হইয়া তাঁহাকে সদাশীঃপূর্ক কহিলেন, "আর তো-मात एश नाहे : अहे करन टामात नकल मकल হুলবিঃ তুমি এই খাদুগ **খান**ি স্যতে রা**থিও**: ইহা ধ্ইভেই ভোমার সর্ব্র জয় হুইবে "। অপর তাঁহার গলদেশহইতে যে একবিন্দু শোণিত নিগত হইরাছিল, তদুপরি অমৃত নিঞ্চন করত তা-ছাকে এক শিশুরূপে ভাবিত করিয়া বাৎ-সল/ভাবে স্তনপান করাইলেন। ঐ শোণিচ-বিন্দুজাত ভালকের নাম বীর্নি-ছ্ এবং শোণিত-বিন্তৃষ্টতে ভাষার জন্ম ছইয়াছিল বলিয়া তাঁ-काह बहुन "'विन्तू अशाबा" अ कम्मणकुर**म** अ बूं-দেল: শ্ৰামে বিখ্যাত হয়:

এই গলের নিগুড় তাৎপর্যা কি, তাছা নিকা-পিত কর দুলন: বোধ হয়, পঞ্চম পার্বক: काम हम्भएक दिवास कहिए। अक्रि शुख উৎপাদন किंद्रिलनः ठाकारक नहेशा जिनि वि-ক্ষাপ্রতের নিকটে এক রাজ্য ভাপন করেন, এবং ज्ञाहाहे देसन्यथ नारम धानिक ह्या।

 নৃত্য-স্থাণিত রাজ্য অতি অংশ দিনসংখ্যই | পিচাপ্তের শৌর্যগুবে ও সৎসাদনে উন্নত

ভাঁহাকে রাজ্যচুত্ত করত রাজ্য চারি ভাগ হইয়া উঠিল, বিশেষতঃ পুঞ্জীর রণ্পাঞ্জিত্য আহি সূপ্রসংশনীয় ছিল। তিনি পূর্ব অঞ্চল পরা-জ इ कतिया निक तारकात वृक्ति करतम; अम-ন্তর উত্তর দক্ষিণ পশ্চিম রাজ্য-সকলও অধি-কার করেন। পরে তিনি আবগন্জাতীয় সন্তর-নাথকে আক্রমণ করিয়া**ছিলেন।** কালিঞ্জরের দুগও তৎকর্ত্ত আক্রমিত হয়। তদ-নস্তর তিনি মোহিনীতে গমন করিয়া তথায় নিজ ताक्यांनी उपायन करतन।

তাঁখার পরলোক-যাত্রার পর তাঁখার পুঞা কুরণ প্রতিভঃ হুইয়া আপন গলদেশে অভ্যাঘাত করি- : রাজ্যাধিকারী হন। কুরণের অপর নাম বলবস্ত। তাঁহার প্র অজ্রনপাল ও পৌএ দিহিনপাল। ঐ সিহ্নিপাল হরসভের ধূণ্য করিয়া কৈত্রে বহু-কাল রাজত্ব করিয়াছিলেন। তাহার নন্দন সহ-জেন্দু, তয়ন্দন নুনিকদেব, তাহার আত্মজ পৃথিবী-हाक। हैनि ভূম**ওলে প্**थु त|कात नगर नगराभत ख যশলা হইয়াছিলেন। ইহার পুঞ্জের নাম রামচন্দু। তিনি তত্তভানে জনকরাজের সমান, স্থ্যা-ভিতে যথাতি তুল্য, ও মহদগুণে গ্রিয়ম্বদরাজার সদৃশ ছিলেন। তাঁছার পূতা মেদিনামল: জত্তনয় মিলকুহান। তৎপুঞ্জ কদুপ্রতাপ। তিনি উচ্চা-নগর তাপন করেন। তাঁছার দাদশ পুঞ্জমে। ৰুদুপ্ৰতাপ অৰ্থি কুলনন্দন প্ৰয়ন্ত কয়েক পুৰুষ व्यविवादम वैदम्बर्थरक्ष तांका करतम, किन्न जी-হাদিগের রাজ্যকালে কোন বিশেষ ঘটনা হয় নাই; অপর কেছ বিশেষ খ্যান্ত্রাপন্নও হন নাই! কুলনন্দনের চারি পুঞ্জ, ঋড্গরায়, চন্দু, শোভন-রায় ও চম্পতরায়। ভাহার। সকলেই মহাবল-পরাক্রান্ত; বিশেষতঃ চম্পতরায়ের অনৌকিকী কীৰ্ত্তি ও অলোকনামান্যগুণ্গাম বৰ্ণনার আরুং इहेवांत यागा नरहा

প্রবলবলদর্গিত রাজা চল্পতরায় শার্কান

বাদশাচের সমকালে বর্ত্তমান ছিলেন, এবং দশনৈ প্রধানহ বীরদিপেরও ক্ৎকম্পা কই ড : কাজি-ব্রিত্যে যশোলাভ করিয়াও ঐ ভ্রাতারা কেছ্ট চম্পাররাযের গৃছে অবতার্ণ হই রাছিলেন।" হতশালের তুলা হইতে পারেন নাই। ঐ ছত্রশাল

ভাছাকে রাজস্ব দিতে অসম্মত হন; এই প্রযুক্ত কন্ত ভ্রাত্দিগের অসাধারণ গুণ ও প্রয়ত্ত্ব সহজাকে উক্ত যবনরাজ অসত্থ্য বলদল সমভিব্যাহারে তাঁহার মহীয়দা মর্য্যাদা ও কীর্ত্তি উল্লিডিশা लहेश फिलीहरें यां कितशा मरेनरना जीहात हरेश छिलाहिल। कल्छ नमीमकल संख्या छ রাজধানী আক্রমণ করিলেন। আদৌ উছার সময়ে ২ পাবিত হইয়া ভূমিকে উর্বরা করত দুর্গ অবরুদ্ধ হইল। তদনন্তর নগরন্থ প্রজা- লোকের কুশলবৃদ্ধি করিলেও ভাগীরথার বৃদ্ধিত বর্গের ভবন সকল উৎসন্ধ ও তাহাদের সম্পত্তি 'মিলিভাবস্থায় যেমন ভাহাদের মহ নাম ও 🎨 मकन न्थिर इंडेट नाशिन; किन्न हम्भाग्ताप्त नृष्यायः इरेया यदारमत नाम ७ ७८० थ/। उ তাহাতে ভীত না হইয়া বহুসঙ্থাক দৈন্দ হটয়া উঠে, তেননি ঐ ভ্ৰাতারা সোদর হন-সামস্তে পরিবৃত হইয়া তুমুলসম্ভামের উদেশাগ শালের অনুযায়ি হইয়। কন্ডাবাপার হইয়াছিলেন : করত সমর কৌশলে ঘবন্দিগকে পরাস্ত করত তাছাদের পরস্পার কিছ্মাত্র বিভিন্নতা ছিল জলপ্রকালমধ্যেই শভূহইতে মুক্ত হইয়া পর্ম- না। ব্দেলথণ্ডের ইতিহাদলেথকেরা ভা**হাদে**র সুথে রাজা করিতে লাগিলেন। তাঁহার পুঞ একাভাব দৃষ্ঠান্তদারা এই দপে নিষ্ণান্ধ করিয়া मातवाहन, कञ्चमहाय, इक्नाइ, इब्नाव, अवः शियाहिन, य "रयमन विश्वपामिनी शक्नात वि-গোপাল। ইহার: সকলেই পিতৃবৎসল। ধর্মা- ''ধারা হুগ মত্তি পাতাল গতা হইয়াও পরক্ষার ন্ধান, সাহস, মহত্ত প্রভৃতি প্রধান ২ ওণ- শিক্ষভেদরপে প্রভীয়মানা হয়, তেখনি ছত্তশালের গণে ভাঁছার। সুশোভিত ছিলেন: ভাঁছাদের শভুাত্চতুওয়। প্রতাপ-বিষয়ে তিনি সুটাদেবের মধ্যে রত্নুশাহের প্রতাপে শত্ত্বকল পর্বতীয়- সমান হুইয়া পিত্রাজ্যের ত্রমাবিলাশ করত স্থানের আশুয় জইয়াছিল। তিনি উক্ত পর্বতীর- । প্রজাবর্গকে সং ধর্মে নিযুক্ত করিয়াছিলেন। দুর্গের অধিকার প্রাপ্ত হইয়া পরাজিত রাজ্য- বুদ্ধিমন্তায় তিনি নকলের উপরি গুরুত্ব প্রকাশ নম্দায়ে নিজাধিপাত্য স্থাপন করিয়াছিলেন। জ- ফরিয়া গিয়াছেন। যেমন ভূতভাবন ভগযান বিষ্ণুর পর তিনি অঙ্গরায়ের সহিত একবাকা ছইয়া অব্চার আদিতা ও রামচন্দু, কলাপ ও দলরথের মুছব:-মগরের নিকটে এক তুমুলসঙ্গুনে যবন- গৃছে জন্ম পরিগুছ করিয়া ভাহাদিগবে পিতা দিগকে পরাজিত করিয়াছিলেন। পরস্ত রণপা- বলিয়াছিলেন তেমনি ভগবান বিষ্ণু ছব্রশালকণে

मस्थानाकमारज्ञहर जन्मविषयः जातोकिक শিম্প এবং যুদ্দ বিদ্যায় তৎকালে অদি চীয় গশ্প প্রচারিত ত্ইয়া থাকে, তথা ছত্রশালের বলিয়া গণ্য হইয়াছিলেন, দীতিভিদ্যায় ও বিজ্ঞান- । জন্মবিষয়ে তাহার অভাব নাই। তদ্বিষয়ে গণ্প শাজেও অতাব নিপুণ ছিলেন। তাঁহার প্রধানত। আছে, যে যে সময়ে চম্পাতরায় শাহলহানের ও বিজ্ঞতা দেখিয়া ভ্রাতারা তাঁছাকে যৎপরোনান্তি প্রতি ক্ষবজ্ঞা প্রকাশ করিয়া যোরতর সমুদেম नव्यान করিতেন। সন্থামকালীন তাঁহার অলোক- প্রবৃত্ত ছিলেন তৎসময়ে ভাহার বর্জে/। आজ-সাধারণ সাহস বিথি পরাক্রম প্রভৃতি গুণগুমন কুমার সার্বাহন চতুর্দ্পবর্ষবয়ংক্রমের বাঞ্ক

**रुहेशा**र्च यदशासास्त्रि शत्राक्रम, वीत्रच, द्रग-চাত্রী প্রভৃতি মছদ্ধণ প্রকারিত করিয়াছি-লেন। রণভগাতে তিনি বিহারাথ থেলতহারে যাত্রা করত তথায় ব্যন্তগ্ন-স্মতিব্যাহারে অন্ত-শস্ত্র-পরিভ্যাগ-পর্বক নারি-বিহার-করণে প্র-বর্মান ভইয়াছেন, এমত সময়ে তাঁহার প্রভাক इक्टें (व उठ्यानगुरम यवनरेमना निविद्वमः छापन कविशा अकिशाएए। ७९ नमस्य छारावा धानाम-हरें । महदाहरनंत श्रेष्ठारनंत विस्मय मःवाह शाहेक विका कालवारक **প**र्वछोत्र **পথ** मिया ফ্ররাজের শিবিরের সল্লিহিত হইয়া ভাঁহাকে व्यक्तिम् क्रियात जन्। च्युनत हहेल। गात-বাহন তাহাদের উপস্থিতিমাত্র জলহুইতে উঠিয়া ভারভিত কজ-শজাদি গৃহণপূর্বক আত্মরক্ষণার্থ প্রস্তেত হুইলেন। অতিশয় প্রলম্বাকার বিকট-मृद्धि रेनश्रम এवः श्वांकशास्त्रश निक्रोशिष इहेन দেখিয়া সারবাহনের সন্ধিরা ভয়ে কাচর হইয়। পলায়ন করিল, কিন্তু সার্ঘাছন ক্ষত্রধর্মের অনু-গাথা হইয়া শলুসমুগ্রুইতে প্রায়ন করি-লেন না; বরং জলবিচারাদির ব্যাঘাত হও-য়াতে যৎপরোমান্তি জ্যোবপরবশ হইয়া শত্র-দিগের উপরি উপর্যুপরি বাণবর্ষ। করিয়া তা- <sup>1</sup> হাদের অধিকাংশ নিপাত করিয়া ফেলিলেন, বিভ অনুশেষে দুবিপাকে এই যুদ্ধেতেই তিনি এর্ত্তর্গলাল সম্বরণ করিতে বাখ্য হইলেন।

সারবাহনের মরণসংবাদ শুরণনাত্র চলপতরায় থচান্ত শোকাকল হুইলেন; চাঁহার ছীও এল-বালে শোকসাগরে নিম্মা হুইলেন, এমত সময়ে একদা সেই শোকসম্বপ্তহাদয়া রম্পী রাত্রিযোগে নিদ্রভাবস্থায় মুপো দেখিলেন, যেন সারবাহন ভাষার নিকট কহিতেছে; শনা মা! জার ক্রম্থক শোক করিও না, আমি পুনর্বার ভো- मात शर्दा व्यवजोर्ग इहेग अदः शक समार्थाकाय समास्त (जामात मर्थन मास्ति क मृथ श्रमान कित्रा शिक्रेयत्रनिर्याज्ञत अमूण्डि च मृथ श्रमान कित्रा शिक्रेयत्रनिर्याज्ञत अमूण्डि चज् कित्र ।" श्रीमाणी त्राक्षमहियोत्र निमुश्चिष्ट इहेल जिनि मण्नाय चलुन्तास व्यवस्था वार्याणास वर्गना कित्र लान, अदः फक्ट्रवर्ध मकरलहे विकाराणास इहेल। व्यवस्था शिक्षी यथाकारम अक भूक्ष श्रमव कित्र लान। यह भूष्ट्रात नाम इन्नामाल ।

আপন বৈন্যনামন্তের পরাজয় সংবাদে শাহ জাহান পাদশাহা অভ্যস্ত ক্রেছ হট্টা চল্পাত-রায়ের দমনার্থে পার•পর দুই তিন ক্ষাত্যদার टेमना-প্রেরণ ও স্বয়ং ঘূদ্ধ-যাত্রা করিয়াছিলেন, কিন্তু করিয়-ধর্ম-প্রতিপালনে খণ্ডপর চম্পত-রায় কিছুটেই পরাভূত হইলেন না; বরং দিন ২ **উग्नं इ**हेर्ड नाशित्नन: वित्मिश्कः हैर्मन्थश्व-প্রদেশের ও তন্মিকটস্থ সমস্ত ছিন্দু রাজার: করম্বৰণে আপন্থ রাজেন্র উপসভু হইতে **एजूर्थाल्य भूष जाहारक** प्रमानपूर्वक जाहात श्वर्थीनका स्रोक्षात्र कद्वारक, क्षेत्रित वन ६ क्षेत्र ्रयोत প্রচুরবৃদ্ধি । इरेल । अक्वल পাছাড়সিংহ নাম' তাঁহার এঞ জন জুতি তাহার নে) চা-गा-मर्माम मञ्जूष इस गाइ, बगर अकारमा বন্ধুতার ভাষ দ্র্ণাইয়া শান্তরে ভাছার বিনা-শের চেষ্টায় নিখ্ড ছিব)। একদা সে রাজা চম্পতরায়কে নিমন্ত্র করিয়া তাখুলনথে বিষ-প্রয়োগ করিয়াছিল, বিজ ভাষাতে কৃতকাৰ रुश नार्हे; लाद अक्ष एक्षणामा क्रीनोट्याटन की-হার গৃহমধ্যে প্রবৈশ্পুর্যক তাঁহার বিনাশের চেষ্টা করে, ভাছাঙ্ বার্থ হয়; পরস্ত রাজ মাতা এই জাতিশ্লিতায় ভীতা হইয়া চলাত-

ক্তিয়শাল (কংশিং ক্তিয় প্রধান) শবের অপভ্রেশ তথ্যসাল শব উৎপদ্ম হউন্যাতে।

রায়ের অনুরোধ করিলেন, যে "এইক্ষণে শীঞ্ জহান পাদলাহের সহিত স্ক্রিকরা ভোষায় কর্ত্তব্য, নতুবা জ্ঞাতিবিরোধ ও রাজবিরোধে ত্ত্রায় তোমার অম্জল ঘটিবে।" রাজাক ঐ পরামর্শ গুছি করিয়া দিলীরাজ্বানীতে দুত-প্রেরণ করত বুদ্ধিকৌশলে অনায়ানে দিল্লাখি-পতिর প্রযাদভাজন হইলেন, এবং তদবস্থায় কিয়ৎকাল সুথে যাপন করেন।

) १२) **८ म**्वरमात मार जनाम भाष्मारहत মৃত্যু হয়, এবং তাঁহার পুএচতু ইয় পিত্রাজ্য লইয়া তুমুল বিবাদ উপস্থিত করে। সেই বিবাদে চম্পতরায় রাজকুমার আওরস্কজেবের व्या अतुक्र रक्तरवत महिल अनुत्र कृतिया व्यविमायह চম্পতিরায়ের বিচ্ছেদ হয়; তদৰ্ধি দুই তিন বৎসর তিনি দিল্লাধিপতির সৈন্য সহিত যুদ্ধে शूनः २ अशे इहेश हित्नन, किं**ड आ अत्रह्म त्या**रवत অন্যান্য অনেক বুঁদেলারা চম্পতরায়ের বিরোধী হইয়া তাঁহাকে এ প্রাকার ক্ষীণ বল করিলেক যে তাঁহাকে পলায়ন করিয়া নৈন/রক্ষা করিতে ছই-ল; পরন্ত পলায়নাবস্থায় কত কাল যাপন হইতে शादत ? यवनद्रारकद्र देनना - नामरखद्र अकार हिन না; তিনি পুনঃ ২ নুত্ৰ-বৈদ্য প্ৰের্ণপূর্ক অংপ-कालमार्था विकास कामा काला है क তাঁহাকে ও ভৎপুঞ্জন্নকৈ বীৰভাগ্য পূহণ কনাই लम। बामीब जनवद्यान्त्वै छीत्व बार्की बत्का-वा अञ्चावाञ कत्रिया मानवनीना चवत्रन करत्रमा

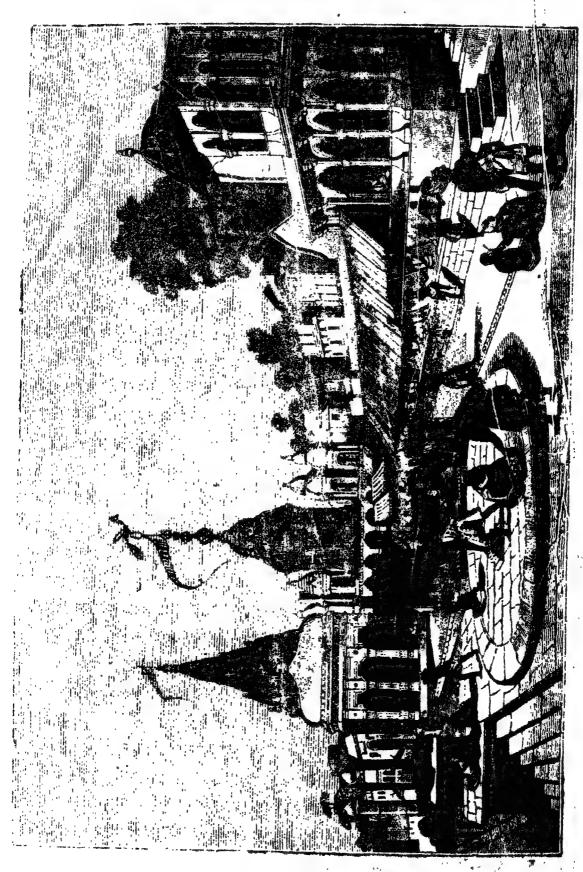
ঐ সময়ে চম্পত্রায়ের অপর পুএ অভদ-হার, হ্রশাল ও বল্লভ মাতুলগ্ছে অব্ভিড क्टिनम। उथायरे जांशामिटगंत शिकृतिरयाभ সংবাদ সমাগত হয়। তৎশ্বণমাত্র সকলেরই মন शिक्-माक्रात्क ना अधि । महावाक्न १३३ा-ছিল; বিশেষভঃ চল্পতের প্রাশ্বিদ্ধোগে সকল শত্রাজারা দর্বত হইতে মস্তক তুলিতে লাগিল, তদ্ধে তাঁহার বংশের সকলেই এককালে হতাশ क्रेश्वा পिছिলেन; शब्रुष्ठ निक्याय, वि क्रिन; সুতরাং সংসারের খনিত্যতা দর্শন করিয়া ক্রমে ২ म्राम किष्मि देशर्गावनयम कतिए नागिरनम ।

**छ** ज्ञान ८ ए ह्या छ। - निर्वार हत छे शास विहीन লপক হট্য়া আপন রাজ্যের সম্যক্ দৃঢ়তা-ভা- ছইয়া পরের দাদ্যবৃত্তি করত কিঞিৎ অর্থ**নজু**হ পন করেন। কিন্তু রাজপ্রনাদ অতি অংপক্ষণ করিবার বাসনায় দক্ষিণপ্রদেশে রাজা জয়-काको हैना श्रामिक व्याष्ट्रः जाहा क्रम्भाजद्वात्र निश्रहत छेभागना करतन, ও ज्यात्र এक नन গৈন্যের অধ্যক্ষতা প্রাপ্ত হন। পরে তাঁহার জ্ঞাত হইয়াছিলেন। শাহ সুজার সহিত আ- অপর ভ্রাতারাও পিতৃসম্পত্তিচুত হইয়া হিন্ ওরক্ষকেরের বিবাদসময়ে আওরক্ষেতেরে সহিত্তিয় হওত সকলেই কমলার প্রসাদাভাবে বিদে-শগত হইলেন; চম্পত্রায়ের নামরফার্থে কে-क्हे यूँएम्लथ्रा छिशक्षिक तक्ति ना। शत्र अ ः व्यवशा वङ्कालङाग्नि रशनाहः, व्यव्यक्तिमार अस्ट প্রসাদলালসায় সুজনরায়নামা এক জন প্রধান ও ছত্রশাল বিশিষ্টকাপে পিতৃবৈরনিখ্যাতনপুরঃসর পৈতৃকরাজ্যের উদ্ধার করিয়াছিলেন। ঐ বিবর্ব স্থানাভাবপ্রযুক্ত এতৎপত্রের অন্য কোন থণ্ডে প্রকাশিত করিবার মান্স রছিল।

## বারাণসীর ঘাটবিবরণ।

क्षिक्षेत्रके वर्षम्या वाजावमोज वर्जमाममञ्ज-जित्र माथा वाष्टे मन्मित এव॰ वृष्टे अस्मितः मगदीत वर्षमानावचा वर्गम क्षिणगणकः कतिए व्हेटन अथमण्डः वे विकासत जिह सरका बाहे मिलाइ अव॰ व्यहे वर्गनरे नस्टव, बवर कवाटनो घार, अञ्चल बह





প্रস্তাবে ঐ অবিমৃক্ত-নগরীর মনোছর ঘট নক-লের কিঞ্চিৎ বর্ণন করিব।

কাশী-নগরীর আয়তন অতি অন্প; ঐ অন্প-श्रात वल्नक्थाक मित्रां अ च छोलिकामि আছে; অপর তত্ত্র পথসকল অতি নকীর্ণ ও বাটীসকল অভ্যস্ত উচ্চ, সূতরাং নগরী-মধ্যে পরি শুদ্ধ-সমারণ-সঞ্চলনের কোন উপায়ই নাই। অধিকন্তু পথ ও পয়ঃপ্রণালী পরিষ্ঠ রাথিবার मुख्या ना बाका ध्रयुक ममछ नगरी पूर्णस्व श्रिकृषं थारक: अनः छथात्र वान कता अग्रञ्ज কেশকর। সমস্ত নগরী-মধ্যে কেবল একমাত্র তান খাছে, তথায় ঐ কেশহইতে নিজ্তি প্লাপ্ত হওয়া যায়; নেই স্থান ভাগীর্থির তট। তথায় বায়ু নদীর বারিহিলোলে সুনিপু ছইয়া তপন-তাপিত নগরবাসিদিগের দেহ শীতল করিতেছে; धर्मार्थी नकत मिक्यनामिनी काइनीत शांच्य সলিলে অহরহঃ সান করিতেছেন: ধনাভিলাযিরা প্রশন্ত-প্রস্তর-সোপানোপরি উপবেশন-পূর্বক বা-विका-गोभारतंत्र करपाभकपन कतिराज्ञः, धन-महा नम् कर्णेन जाक्या-लाखा-नम्मात का-লক্ষেপ করিতেছে; সন্ধাপুঞ্-নামা ভণ্ডতথ-স্থীরা শুড়ভাপূর্বক স্থাবেধ-ধর্মভীফদিগের অর্থা-পহরণ করিতেছে; ফলতঃ তৎস্থানে জ্ঞা, পুরুষ, বৃদ্ধ, বালক, সৎ, অসৎ, ধার্মিক, লম্পট, কর্মঠ, च्यलम, धनी, ও দরিদু, नकलाই দিবসের অধি-**≭াংশ যাপন করিয়া থাকে; সুতরংং তাহা সম**ত্ত নগরীর বৈঠকথানা- বর্বপ হইয়াছে। এই প্রযুক্ত ধার্ফিক মনুষ্টেরা বারাণদীতে ঘাটনির্মাণে যা-मृत्य व्यञ्चन कतिहा थारकन, अधिनिकामिन-माद्व छाम्म राश करतम ना; छथा कामोत नमूर्थ यानुन क्रमाहरीक वृह्द २ वाष्ट्र शहुज इहेबार्छ, হ বিষয়ে কুতাপি আর তাদ্শ নাই।

ফলিকাতার যা**জী কাশার সম্মুথে উপনাত হ**ইলে व्यादनो 'दाक्याहे' मामक এकि वृङ्श घाटित प्रभन करंद्रमः। अर्व्यविषदः छाहात कान विटमय माहा बा নাই, পরস্তু তাহা কাশীহইতে চপ্তানগড়ে যাতায়াত করিবার প্রনিদ্ধ পথ, এবং দেখিতে সূপ্রশন্ত ও मरनाइस वरहे। वस्त्वा महीहहेट हेहा व्यक्ति पृत नरह। এই घाटित অভাতরে "প্রহ্লাদ ঘটে", ভদনস্তর " ফটকেশ্বর ঘাট", তদনস্তর " তেলিয়া " नारम প্রসিদ্ধ এক কুদু নালা; তৎপার্ম্থে কতকগুলি ধানের দোকান আছে, তদ্ধেতুক তৎসন্মুথন্ত নৰ্গাডট "গোলাঘাট" নামে বিখ্যাত আছে। ঐ গোলাঘাটের পার্শে ক্রমশঃ দক্ষিণে "ত্রিলোচন-ঘাট " "মছ্থাবাট " "বালাবাইঘাট " "শীত-बाधाष्ट्रेण प्राकृति करत्रकरे। धारपेत शह अतालमान-লপোস্তা" নানে বিখ্যাত এক সুচাৰুৰূপে নিৰ্মিত প্রস্তর পোস্তা আছে: তাছার দক্ষিনে কয়েক অতি প্রসিদ্ধ ষাট দৃষ্ট হয়। তত্তাদো বুকাবাট, তাহা দেখিতে সুন্দর নহে, পরস্ত তাহা অতি প্রাচীন বলিয়া বিখ্যাত। কাশাগণ্ডে উক্ত আছে, যে काल नगरम् हिटवानान नामा कान गराहाटजात প্ৰাপ্ৰতাপে শিব-পাৰ্বতী-প্ৰভৃতি দমস্ত দেৰ্গণ কাশা-পরিভ্যাগ করিয়া পলায়ন করিতে বাধ্য रुरेश'हितन: ७९कात वृक्ता इनारवरम मगनी-मस्या अत्वन कत्रज अखाविज-चाउ-नम्बूर्थ अ-কটি শিবমন্দির স্থাপন করিতে রাজাক্তা প্রা-র্থনা করেন। ধার্ম্মিকবর দিবোদাস তৎক্ষণাৎ তা-शास्त्र गया व्हेरल युक्ता समाम-পविज-कद्रशास्त्र-नारव ज्यास "वृद्धभारत" नारम अविधि निर्वालक সংস্থাপিত করেন: ভা**হাহ্টতেই** উক্ত **স্থানের** माहाजा इहेशार्छ। पूरे माह बदनत इहेन कान महाताष्ट्रीय थनी প্रजाविक मार्टित कोर्ट्नाकात कड़ान, ও তৎপরে কয়েক বৎসর হইল, পেশ্বা

বাজিরাও ভাছার পুন স-কার করান; তদবধি ঐ ঘাট মহারাষ্ট্রজাতীয় জ্ঞাদিগের সানার্থে পৃথক্ আছে; প্রায়ঃ জন্য কেছ তথায় গমন কারেনা।

व्यवार्षेत्र मिक्निशार्यं " कात्रधनिश्लोबारे", खर भारक " मूर्वायार ", जननखत " भक्ष गक्ष विष्टि"। ঐ ঘাটের উপরে এক বৃহৎ দার (ফটক) আছে, তদার' ঐ যাটে অবতরণ করিছে হয়। শা**ডে** ইচার অনেক মাহাক্স বণিত আছে, বিশেষভঃ कार्तिक मारम के घाटी प्राज्ञान कहा विस्मय-शुव्यक्तक-रवाटव वान्धोवामी-नक**टन≷** ख्याग्न चागमन कहिया थाएकनः अवः अ याजिकनिरश्त লুখদেবনাথে তৎসময়ে তথায় অনেক পানুশালা ন্তাপিত কইয়া থাকে। ইহার নামেত্পন্তি-বিষয়ে কাশাখণ্ডে এক রম। গণ্প আছে; ভাছাতে বৰ্ণন करित या शूर्वकारन शुक्रभाशा मामी अक श्रद्धमा-मुम्पती त्रभनी ছिल्न ; তिनि निक्रमामी ध्रत्यंत नहि-ত কলহ করিয়া তাহাকে অভিশাপ করত ন্দ্রূপে পরিণত করেন; ভাছাতে তৎসামী ও কোপা-নিত হটয়া আপন জীকে অভিশাপ-প্রদান-পূরক প্রস্তরকাপ ধারণ করান। গুভগাপার পিতা ঐ ঘট-নায় দুঃখিত হইয়। কোন কৌশলে এ প্রস্তরীভূতা দুহিতার ৰাণান্তর করত চন্দুকান্তমণি প্রস্তুত करडम; के मनि छन्पारनारक पूर्व इहेशा नदीकरण পরিণত খ্য়; পরে ঐনদীরূপা ধূতপাপার সহিত बनदान दार्णत विवाह निका हहेग्रा छे छात्रहें बे छात्न 'ङालि' इया अलड कान कात्व मझना-গৌরালামুন মহামায়ার প্রাত্তে সুর্য্য**দেন ঘোরত**র তপঃ বাধন করিতে ২ যথিতে হন, তথা ঐ যয় नमीकारण शहिनक इकेंग्रा 'किशना नमी?' मारम <sup>भारतिक आ</sup>रन मगांग**ठ रुप्त; वहे नरीवय गङ्गा** ও সর্বভার ৰহিত স্মিলিতা হইয়া পঞ্সন্ধার डेब्स्डि क्इग्राह्म।

जे बारिक्केंटल दामवारेलर्घाख नमछ जान शूटर्व विमामाध्यवरमध्यत अमिमादत वराश्व हिल: चा बत्र इरक्षय भाषमा ह जै मन्दित्तं छेर मापन करण जाहीं अखग्रामिषाता उरकारन मन्सिम अभिम कर्यम। जे मन्सिम् छाम्म সুদৃশ্য নছে; কিন্তু ভাহার চতুর্দিগে যে কএ-কটি ব্রম্ভ আছে ভাষা মতাব সুন্দর। ভাষাদের প্রত্যেকর মূলের ব্যাস ।।। হস্ত এবং দীর্ঘতা ৯৮ हरा; कना कार्य कनिका बाद बक्ट लोनो मन-मिन्द्रीनामक अनिक उष्ण्ड्रेट्ड अधिक उष्ण् । ঐহিকসুথে হতাল হইয়া চথন২ ঐ স্তম্ভের অগুহইতে দুভাগা মনুষোৱা লক্ষ্য দিয়া ভূ-মিতে নিপতনপূর্ব প্রাণত্যাগ করিয়া থাকে: बकरा এक कम ककोत उथाइहै। उ अक शहरा, মরের উপর দৈববশতঃ নির্বিঘ্যে পড়িয়াছিল; **जम्**टि मामान/लाहक विकाशलक्ष भऐशा छा-हाटक नेश्वदंतंत्र अनुगृहशाज्यदार्थं मानाशिश हिन-कात-श्रमान कतिरलक ; अवः रन वाकि, रवाध एय, আপন দৈবশক্তি দশাইবার নিমিত্ত তৎপাঞ্জ অন্তর্হিত হয়, এবং তৎসক্ষে যাহার বাটিং গে বাদ করিত হোর কিঞ্ছিৎ তৈজসাদিও 'মস্ত ছিড হইয়াছিল।

माधात्राय-(भाखात व्यावहित भारते । एकते। द्यां द्यां द्यां । उद्भाद वक्षे । द्यां द्यां । व्याद । व्या

দান্তিক পণ্ডিত বাস করিতেন।

ক্ৰিকা ঘাট "।

ণানস্তর শিবপার্বতী তথায় প্রজা-সংস্থাপ- এক চিত্র মূদ্রিত হইল। নের বাসনা করেন। তদনুসারে ভগবান পুৰু-বিষয়ে প্রতিনার এই বর দেল যে "যে কেহ তেন, তাঁহারই ব্যয়ে মন্দির গুথিত হয়; পরে

অট্টালিকা নির্মাণ করিয়াছেন, অপর তথায় পূর্বে কাশীতে প্রাণত্যাগ করিবেক সে তৎক্ষণং প্রম সদানন্দ ব্যাস নামা ভুবনবিখ্যাত কথক ও বৈ- খাম প্রাপ্ত হইবেক্ত। যে ভানে বিক্ষু প্রথম चवलीन इहेशाहित्सन, जाहांत्र नामहे ठहनेशा অতঃপর কয়েকটি অপ্রনিদ্ধ-ষাট-ব্যবধানা-। দ্কা; ফলতঃ তাহা বিষ্ণুর চরণ চিহ্ন। অপর নস্তর "ঘোসলাঘাট"। ধর্মসম্বন্ধে তাহার কোন এ চিহ্নের নিকট যে একটি পৃক্ষরিণী আছে. বিশেষ মাহাত্ম্য নাই, কিন্তু সূচাঞ্-রচনা-বি- ভাহাই ভগবান্ বিষ্ণুদ্ধারা খোদিত "চক্ত-ভীর্থ"। ষয়ে তাছাকে কাশার ঘটমধ্যে অদিতীয় স্বীকার এই সকল কথা শাস্ত্রসম্বত, ইহার কোন প্রমাণ করিতে হইবেক। নাগপুরাধিপতির ব্যয়ে তাহার দুর্শাইবার আবশ্যক রাখে না, পরস্তু পাঠক-मर्वज প্রস্তরদারা অত্যন্ত-মনোহরকপে রচিত মণ্ডলী শুবণে আশ্চর্যাশ্বিত হইতে পারেন, যে হুইয়াছে। তাহার উপরিভাগে এক অপূর্ব দার প্রাবৃত্তবিভ পশ্তিতেরা চরণপাদ্কাকে বৌদ্ধতিহন অ,ছে, তদ্বারা লক্ষ্মীনারায়ণদেবের মন্দিরে প্র-্বোধ করেন। তাঁহার। কৃছেন, ষংসময়ে तिम कता यात्र। वर्षाकात्न नमोज्ञत्वत्र वृष्ति वृष्तित्व निदान शास हन, १०० कात्न जाहात्र হইলে, ঐ দারমধ্যে অনায়াসে সান করা যা- উপাদকেরা স্তানে ২ তাঁহার পদচিষ্ঠ স্থাপন ইতে পারে। এই ঘাটের কিয়দূর অন্তরে "মণি- করিয়া তাহারই উপাসনা করিও; কাশীত সেই भम्हिक क्षकत् · हर्नभाम्क। " नात्म विश्वां ঐ ঘাটের অনতিদূরে প্রস্তরনির্মিত এক চা- হইয়াছে। বোদগুত্তে একথার অনেক প্রমাণ ভালের মধ্যদেশে একথানি গোলাকার শ্বেতবর্ণ শাছে, এবং ইছাও প্রত্যক্ষ ছইচেছে, যে কা-প্রস্তুর ফলকোপরি দুইটি চর্ণ চিহ্ন আছে; শী, গয়া, বুন্ধদেশ, লঙ্কা প্রভৃতি যে সকল काहात नाम "हत्रवशापूका"। नमछ कानीत : खात्न दोषागटकत प्राप्त्वाव हरेताहिन, वा अहे মধ্যে ঐ স্থান মহাপবিত্র বলিয়া বিখ্যাত। ফবে প্রাদুভাব আছে, তথাগুই চরণচিচ্ছ পূজার পুরাবে কথিত আছে যে বারাণসীর সৃষ্টিকর- প্রবল-প্রচার। ১৯৮ পৃষ্টে কাশীস্থ চারপাদুকার

यशिकविकात प्रक्रित क्यमः "क्लानाहेषात्र", याख्य कामार्ट व्यवजीन इहेश बीय हळ- "ताबतारकयतीयारे", " जिल्दरेखद्रवीयारे", %-ছারা এক পুষ্ণরণী থনন করত কঠোর তপস্যায় ভূতি কএকটি ঘাট আছে, কিন্তু রচনা বা পুণ্ নিযুক্ত হন। ভগবান মহাদেব নেই ভয়া- বিষয়ে তাহাদের কোন বিশেষ মাহাম্য নাই। নকতপদ্যা দৃষ্টে বিষয়াপন্ন হছয়া এপ্রকারে কেবল রাজরাজেশ্বরী-ঘাটের উপরিশ্ব শব্দির-মস্তক সঞ্চালন করেন, যে ভাঁছার কর্ণ্ছতৈ সম্বন্ধে এক অন্তুত গণ্প-প্রচার আছে, তৎশু-কুণ্ডল সুলিত হইয়া বিফুর নিকট নদীতটে পড়ি- ববে পাঠকবৃন্দ কৈ) তুকান্বিত হইতে পারেন। য়া যায়ঃ শালানুসারে ইহাতেই তৎস্থানের নাম কথিত আছে যে এ মন্দির-নির্মাণ-তালে তল্পি-" মানক্ষিক।" ভ্ইয়াছে। অপর ভিনি অর্থ কটে এক কুদু-গুছা-মধ্যে এক সিদ্ধ বাস করি-

शाम-निवान-ममास बकते वृह कि कि उरिष्ठाभित्र ज्ञांभिक कि विसा मिल्लावा मिश्रितक य बे
कांत्र श्रीसाक्षणीय शिव्यान हरेट व्यक्त इस मूनि, ख
लाम्म श्रीसाक्षणीय मीन कांत्र ज्यास भावसा यास
ना : बिडमार्छ जाहाता निक्षणीय मिलको महाकांत्र कांगारेना : ज्यानाम्यत्न निक्षणी महाकांत्र कहारों ने कार्त्राणीय मधायाज्ञश्रीमक निहित्तन,
निवान कांच्यां क्ष्यां कांच्यां कर्णा कर्णा

ত্রিপ্রভেরবাঘাটের দক্ষিণে একটি প্রাচান বাটা
দুই হয়, তাহা রাজা মানসি হ-কর্ত্ব নিমিত ছইয়াছিল বলিয়া "মানমন্দিল" (মানমন্দির) নামে
প্রানিদ্ধ কাছে। দুইশাত বৎসর হুইল রাজা জ্ববিংহ চন্দুস্যা-নক্ষত্রাদির স্তান ও গতি নিক্রপ্রথি তথায় কত্বগুলি জ্যোভিঃশান্ত্রন আলোক্যানিহে ঘ্থাঘোগ্য জ্যোভিঃশান্তের আলোচনা-নিমিত্রে ঘ্থাঘোগ্য জ্যোভিঃশাত্রের আলোচনা-নিমিত্রে ঘ্থাঘোগ্য জ্যোভিঃশাত্রের আলোচনা-নিমিত্রে ঘ্থাঘোগ্য জ্যোভিঃশাত্রের আলোচনা-নিমিত্রে ঘ্রাঘোগ্য জ্যোভিঃশাত্রের আলোচনা-নিমিত্রে ঘ্রাঘোগ্য জ্যোভিঃশাত্রের আলোত্বা-নিমিত্রে ঘ্রাঘোগ্য জ্যোভিঃলিগ্রে
নিমুক্ত করিয়া ছিলেন। ঐ মহৎ্যার্ম সাধলাথে
ভ্রমা তথায় আর কেইই নাই: কিন্তু ও যন্ত্রসকল ভাইসিংহের কান্তিধুজাম্বর্ণ অদ্যাপি
বর্ত্তমান শাছে।

নান্যনিল্লাইটে কনিসক্ষপয়ান্ত প্রহাগঘটি প্রিলাইটি দ্শাখনেওবাটি, ৫ রাণামহল গৌরিব্র প্রেন্তি নানা তাল আছে, কিন্তু
তৎসহছে কিন্তুই আশ্চয়া বা মনোহর সংবাদ
নাই কেবল হনুমান্যাটের কিঞ্ছিৎ অন্তরে কতকগুলি বৃদ্ধ আছে, তাহাতে অসহ্থা বাদ্ভ বাস
করিয়া থাকে; এক স্থানে এত বাদ্ভ, বোধ হয়,
লার সুরাণি দৃত্তিগোচর হয় নাই।

ा १८१ मनाव्यत ५५ थुएड जर्म सामित जन त्या भृतुष्ट क्याम

## রাজপুএ-ইতিহাস।

**शक्ष मह्या।** 

দ্বিতীয়পর্বের ১৮৩ পৃষ্ঠ হইতে ক্রমাগত।
্বারাণনীয় বর্ষটতে সমাগত)

তঃপর ১৪৭৫ লংবৎসরে কুন্তরাণা অবিবাদে পিত্রাসনে উপবেশন করেন। তিনি মাড়োয়ার-বংশের দৌছিত্র
ভূপতি তাঁহার পিতৃহত্যার প্রতিহিংসার-বিষয়ে
যথেই সহায়তা করিয়াছিলেন: নিশেষতঃ এতংসময়ে মিবার-রাজ্যে যে প্রকার মহাবলপয়াত্রান্ত
নৃপতিরা ক্রমান্তরে রাজত্ব করিয়াছিলেন, সে প্রকার-সর্থা দৃষ্ঠিগোচর হয় না। অভএব তদবভায়
হিল্প ধ্র্মদেষি য্রন্ট্রেরিদিগকে মিবার-রাজ্যের
পরাভূত করা অনায়াসসাধ্য হইয়াছিল।

আলাউদিন্কতৃক চিভোররাজ্যের আক্রমণা-ব্ধি কুন্তরাণার কালপর্যান্ত প্রায়ঃ শতাধিক বৎসর অতীত হইয়াছিল; এ লময়ে উক্ত নগরী এ দু-দান্ত্ৰবৰ-সম্পাদিত ভথদশা হইতে উদ্ভা চইয়া পুনরার বারমণ্ডলাতে পরিশোভিত। হটয়াছিল। কৃত্যরাণা উত্তরপশ্চিমরাজ্যে যে যবনাধিপতিরা জ্ঞান ২ উন্নতি প্ৰাপ্ত হুইতেছিল, তাহাহইতে ৰ-দেশ-রক্ষতের নানা উপায় করত সর্বত জয়য়য়ুক্ত इटेडा नगतनिः रहत भनाकश-इन काशात नमी शेरत নিবারত্ব রক্তবর্ জয়পতাকা ডড্ডায়মানা করি-য়াছিলেন। ভারতবর্ধ জয়কারী সহাবৃদ্দিন্গোরি.ও তৎসম্কালত সমর্সিংহ রাজার সময়াব্ধি কৃষ্ণ-রাণার রাজস্ব-কাল-পর্যান্ত দিল্লী-নগরীতে চতু-রিংশতি যবন নৃপতি ও এক রাজ্ঞী রাজত্ব করি-য়াছিল, কিন্তু আশ্চর্য্য এই যে উক্ত কাল মাবৎ শিবার-রাজ্যে একাদশ মাত্র ভূপতি বিংশাদ্দা-कए इट्याहितन। भिनक्षि वरणोत्र यवन क्राक्राहि-

भित्र पूर्णभावस्थात्र निल्लीश्वरतत त्राजशूक्यवत्र। जन्म २ ৰ ২ প্রভুর অবমানকরত বয়ং রাজ্যস্থাপনে প্র-বৃত্ত হইয়াছিল, তথা বিজয়পুর, গোলকগুা, মালব, শুর্জের, জউনপুর, এবং কাম্পোতে পৃথক্ষ নূপতি হুইয়া উঠিল। মালব এবং গুডর্জর প্রদেশের ভূপতিরা অসম্ভব ক্ষমতাপন্ন হইয়া কুম্বের রাজ্যকালে ১৪৯৬ সংবৎসরে বৃহতী-দেনানী-সভকারে মিবারাক্রমণ করিয়াছিল। কুন্তরাণা এক লক্ষ অপাত্তার ও পদা-তিক যোদ্ধা ও চতুদাশ-শত হত্তি সংহতি লট্যা **স্বদেশের প্রান্তভাগে মান্**য রাজ্যের রণভূমিতে শত্রদিগকে এককালীন পরাভূত করত মালবা-ধিপতি মহম্মদ থিল্জিকে ঘৃত করিয়া চিতোরে আনিয়ন করেন। ভদনস্তর ঐ যবন রাজাকে বিনান্লে। বরং প্রকারপূর্কি মুক্ত করেন। তাহি-यस भातमा-वेषिकागरवा चावून्यजन अवद সন্ত্ৰাম-বৰ্ণন করত কুছেব্ৰুমছবতার বিস্তার ব্যাখ্যা করিয়াছেন, কলতঃ হিন্দুচরিত্র এতাদৃশ মহতই বটে: অধ্বঃপতিত বৈত্তীকে রক্ষা করা রাজ-পুঞা বাঁরের শুেষ্ঠ ধর্ম, এবং তদ্ধর্ম দর্ধা অভ্যন্ত সাব্যানে প্রতিপালিত চ্ইয়া থাকে। রাজপুঞ ইতিহাদবেতারা লেখেন, যে মহমদ **इस माम** यादः চিতোরে কারাকদ্ধ থাকেন, এবং মূক্ত হইবার সময় আপন মুকুট তথায় রাথিয়া আনিয়াছিলেন: বাবর নামক মোগল বাদশাহ কুয়ের উত্তরাধিকারি সন্ধার নিকট-इटेंट जाहात डेकांत करतन।

উক্ত যুদ্ধের পর একাদশ বর্ষ অভীত হইলে কুন্ত-রাণা ঐ মহাজয় চিরস্মরণায়-করণার্থে এক প্রকাণ্ড স্তম্জ নির্মিত করাইয়া মদেশ সুশোভিত করেন। ঐ স্তম্ভের নির্মাণ করিতে ক্রমাগত দশ বৎসর কাল লাগিয়াছিল, পরস্ত তাহার আয়তন দর্শন করিলে ঐ ব্যাপক কালও থর্ব বোধ হয়। অতঃপর কুন্ত যবনদিগের সতিত নানা নাছে জয়ী হইয়াছিলেন; একদা ঝুনুঝুনু নামত তাত্ত্ব দিল্লীস্থ নৈন্য পরাজুত করিয়া হিসায়-দুগো নিন্দ্র জয়পতাকা স্থাপিত করেন। ই মুদ্দে মান্ত নৈত্য তাত্ত্ব করিয়া ছিল; পরস্তা তদানাত নিল্লীখরের ক্ষমতা অত্যন্ত ঝর্ছ ফুনিয়াছিল; আত্তব এ জয় বিশেষ যশাসর নতে; তৎকালে মাল্লাখিপতি মত্যাদও বোরীয় বংশীয় শেষ বাদ্দিশত মহাত একত মন্ত্রাহত করিয়াছিলেন।

सिवातबाका-इक्तवादर्थ (b) वानि पूर्व आणिव মাছে, ভন্নবের কুন্তরাণাকড়ক দাত্তিং**শত** দুর্গ প্রয়ত হয়; ঐ সকল দুগের মধ্যে তাঁছার নামে दिशाह "कृष्ठामक" नामक पूर्व नार्वादक्षी। আবুশিখর শৃত্তেও তিনি এক দুর্গ ছাপন করিয়া ভণার অবহিতি করিতেন। উক্ত দুশস্থ ভোপ-গৃহ ও নৌডভখানা অদ্যাপি ভাঁহার নামে বি-খ্যাত, আছে ৷ রাজপু এমাত্রেই কুন্তকে যৎপবো-নান্তি সমাদর করিত, এবং অদ্যাপি আবুপ্রদে-শে এক মন্দির-মধ্যে কুন্ত ও তৎপিতার ধাতু-ময় মুদ্রি দেবতার ম**া**য় ক্ষতিত হট্যা **থাকে।** তিনি আরাবল্লি-পর্তনিবানি অসভ্যজাতীয়দের অক্তিমণ্ডইতে বদেশরকাথে মার্চনি দুগের নি-মাণ করাইয়াছিলেন, তথা জায়োর এবং পেনো-রাস্থ ভূমাবিকারি ভিন্নদিগকে ভয়প্রদশনার্থে স্থা-নে২ ফুদু২ দুগন্থাপন ও মাড়োয়ার এ মিবারের পরস্পর সাম। বিলফণ নিদিষ্ট করাইয়াছিলেন। এতদতিরিক্ত ধর্মনঙ্ঘটিত তাঁছার অপর কীর্ত্তিয় यमाणि वडमान चार्छ, उमाणा;--वावृशिध-রোপরি কুন্তশ্যান এবং মিবারের পশ্চিম্দিক্ত সদুঘাটোপরি থাযভদেরের বৌদ্ধ মঠ। শেষোক্ত-কীৰ্ত্তিনিৰ্মাণে কোটি মুদ্ৰ ব্যয় হয়, ভন্মধ্যে ব্লাণা षष्ठे वक मूनु। सञ्चः श्रमान कद्मन। निष्ठ द्यान। খিতিপ্রযুক্ত ঐ মঠ ধর্মদেবিদিপের হত্তে পতিত না হইয়া এক্ষণে পশাদির আশুরস্থল হইয়া-ছে। জয়দেবক্ত গীতগোবিশের টীকা প্রস্তুত্ত করিয়া কুলুরানা কবিত্ব মর্যাদাও গুইন করিয়া-ছিলেন: কিন্তু ইদানীং ঐ টীকার অপ্রাণ্ডি-হেতুক তাছার দোষ্ডণ নিক্ষপিত করা দুকর।

মাড়োঘার বংশলেষ্ট মেয়তা-রাঠোরের দ্বিকা
ভাদীমবর্গগুণে এবং লৌন্দর্যে বিভুষিতা মীরাবাই
নামী রম্পা কুন্তের ধর্মপাড়া ছিলেন। তিনি ধর্মবিষয়ে তংপরা, দেবদেবার পূজা করিয়া দৈবশক্তি তথা ক্ষিত্রশাক্ত-বিশিষ্টা ক্ইয়াছিলেন।
তালার কবিতা ঘটনার কিয়দংশ অদ্যাপি প্রতিষ্ঠিত আছে। কথিত আছে, যে অন্যান্য সুন্দরী
নমভিন্যাহারে তা দেববৎসলা রম্পা প্রক্রির
গোপাল্যুক্তি-অচ্চনার্থে যমুনাতীরাব্ধি দারকাপর্যান্ত মর্ক্র ইচ্ছাবিহারিণা হইয়া গমন করিতেন:
লামান্য লোকে তাহা অনুভূত না করিতে পারিয়া
তাহার অনেক অপ্রাদ করিত: পরস্ত ভক্তমালগুপ্তে তিনি ভক্তশেক্তা বলিয়া ব্রিত আছেন।

কুজরাণা ঝালবার-রাজার তন্যা মন্তর রাজকুমারের নির্দ্ধীভূচা পত্নী হরণ করিয়াছিলেন।
ঐ রাজতন্য থিরহানলে প্রজেলিত হইয়া অপহৃতা রাঠোর সুন্দরীর সহিত সন্দর্শনের নানা
, উপায় করত কোন সুযোগে রাত্রিকালে বন্মধ্যদিয়া গমন করত রাজভবনের প্রাচার উল্ভ্যনপূর্বিক রাণার গাহে প্রেনেশ করিয়াও অবন্যোয়ে
অভান্তিসিদ্ধ করিছে পারেন নাই, ইহাতেই কোন
স্চত্র কাব শ্লেষোক্তিতে কহিয়াছিলেন 'মন্তর
বাল নব্যদিয়া পত্তা পাইয়াও অবশেষে ঝালানী \*
প্রাপ ছইতে পারেন নাই'।

এই বাপে অসন্তত-এশর্য-সন্তোগপূর্বক পঞ্চাশত বৎসর অকাতরে রাজত্ব করি।
য়া কুন্তরাণ ১৫২৫ সংবৎসরে আপন তনম
উধা (উদ্ধব) কর্তৃক হত হইলেন। এ দুরাআ রাজ্যলোভে পিতৃহত্যা-পাতকে নিমাম
হইয়া বদেশে ঘৃণাদ্পদ হওচ পঞ্চ-বৎস্যাযাবৎ রাজত্ব করিয়াছিল। দিল্লীশ্বরের সাহায্য
পাইবার নিমিত্র সে তাহাংক কন্যাদানে স্থাত্ত হইয়াছিল, কিন্তু তদ্বিষয়ের ক্থোপক্থনামন্তর দেওয়ানখানাহইতে সে বহিগত হইখামাত্র তাহার মন্তকে এক বন্ধায়াত হয়, এবং
সেই দৈবঘটনায় বাপণারাপ্তলের বংশ ধ্বনাভিগমন্ত্রপ দ্নিবার কলঞ্চইতে নিক্ষাত্ত

রাজপুত্র-ইতিহাসলেথকের। ঐ নরাধমকে বি বারবংশের রাজশ্বেণীমধ্যে গণ্য করেন না। লোকে ভাহাকে অদ্যাশি ''হত্যারো" অর্থাৎ পিতৃহা বলিয়া সম্বোধন করে।

বুদ্ধের পুঞ রায়মল ১৫০০ সংগ্রহণরে আ
পন পিতৃহা ভুতোকে পরাজয় করিয়া রাজ্যাভিযিক্ত হন; তথা ঐ পাপালা দিলীতে পলায়নপূরক তথায় পঞ্চর প্রাপ্ত হয়। ঐ ঘটনার কিছুকাল পরে দিলীশর উধ্বেরে পুঞ সহেসমল্ ও সূরজমলের সুট্রমলের) সমভিব্যাহারে মিবার রাজ্য
আক্রমণ করেন; কিন্তু তাহাতে তাহার কোন
ইপ্ত সিদ্ধ হয় নাই। রায়মল আবু এনং গির্মারাধিপতিদিগের নাহায্যে পঞ্চাশত অই সহসু আখাকাত এবং একাদল নহসু পদাতিক যোদ্ধা সমভিব্যাহারে লইয়া ঘালা নামক স্থানে ঘারতর সন্ধাদেলীশ্রকে সম্যক্ পরাভৃত করিয়া মিবারহইতে
দুরাভূত করিয়াছিলেন।

<sup>ा</sup>काली मान्य रक्त, अवर **आजाना मारक सामवात है प्रश्री** १८ १५ करता

রায়মল যদুবংশোন্তব স্থা নাম। গিনারাধি-পতিকে এক দুহিতা এবং সিরোহি নিবাসি দেও-রার ভূপতি জয়মলকে অপর দুহিতা অর্পন করিয়া উক্ত জয়মলকে আবু-নামক-প্রদেশ যৌতুক্যরূপ প্রদান করেন। অপর তিনি মালব প্রদেশের রাজা গয়াসুদ্দিনের সহিত পুনঃ২ সঙ্গুাম করত অব-শেষে তাহাকে দীনতা স্বীকার করাইয়া তাহার সহিত সন্ধি করিয়াছিলেন।

রায়মল্ল-রাণার তিন পুঞ্জ; জ্যেষ্ঠ সন্ধা, মধ্যম পৃথীরাজ, এব॰ কনিষ্ঠ জয়মল। প্রথম পুঞ্জয় बानिनो-बाद्धीत गर्डकाञ; ভाराता छे उराहे जुला-পরাক্রম ও সাহদবিশিষ্ট ছিল, এবং রাজ্যলোভে উন্মত্ত থাকিয়া দৰ্বথা কলছে কালযাপন করিত। একদা ঐ ভ্রাত্ত্রয় আপন পিত্ব। সুরজমন্নের महिक बाका शाखिब वानान्वारन शवर्ख इहेगा-(छ्न, अभड. म्भरः मङ्गा भगर्स कहिरलम, · या एठ ত্মানি যথার্থতঃ মিবার রাজ্যের উত্তরাধিকারী वर्ष, ज्यां नार्वता गुमिन्ति नात्रीरम्यात পৌরছিত্যকারিণী দৈবশক্তি-সাহায্যে যাহা অ"-দেশ করিবেন, তাহাতে নির্ভর করিয়া আপন স্বত্ত-পরিত্যাগ করিতে স্বীকৃত আছি"৷ এই বাক্যে সক লেই সমত হুইয়া তথায় গমন করত পৃথীরাজ ও জয়মল প্রথমে মন্দিরমধ্যে প্রবেশপূর্বক এক সা-मान/ामतन उलार्यमन कतिलन, उथा मझा उर्ल-শ্চাতে প্রবেশ করত পৌরহিত্য ব্যা**ঘুচর্মাননে** উপবেসন করিলেন, এবং সূরজমল তাছার একদে-শে পাদার্পণ করিলেন। অতঃপর পৃথীরাজ প্রমৃ-থাৎ বিবাদ-বাৰ্ত্তী বঁ/ক্ত হই বামাত্ৰ উক্ত দৈৰজ্ঞা ঐ সিংহাসনস্থ \* রাজকুমারকে মিবার-সিংহাসনাধি-काती, ও उप्तक प्रभाषिक मूत्रक्रमहारक द्वारकार्य किश्वमः न जात्र गुर्छ विविद्या वर्राश्वरा किश्वस्ता । लू

থীরাজ ঐ বাক্য শুনিবামাত্র থড়গ-নিফোবন প্রক্রিক সন্থাকে বিনষ্ট করিয়া দৈবাদেশ ব্যথ করিছে উদ্যেত হইলেম, কিন্তু সূরজ্মল তৎক্ষণাত রাজকুমারের প্রতি নিজিপ্ত অন্ত্র আপন শরীরে গুহুণ করিলেন। অভঃপর বার-চতুষ্টয় পরস্পার অন্ত্রান্থাতে জন্তর্রীভূত হইলেম, বিশেষতঃ সন্থা অন্ত্রান্থাতে ও নেত্রে সরাঘাতে আকরে বিদ্যান্যা এক জন রাঠোরের নিক্ট আশুয় গুহুণ করিলেন। তন্থায় অশ্বহত অবভীন হইতেহেন প্রমত্ত সময়ে জয়মল সবেগে হয়সঞ্চালন করিয়া ভাঁহার নিকটে উপনীত হইল। উক্ত রাঠোর বংশীয় মধাবার অতিথি রক্ষায় তৎপর হইয়া জয়মলের সহিত্ব যুদ্ধে প্রাণ সমর্পন করিলেন। এবং ঐ অবকাশে বলাও তথাহইতে প্রস্থান করিলেন।

ইতোব্ধি নঞ্জ পৃথীরাজের বৈরভার আশকায় কিয়ৎকাল নানা উপায়ে অজ্ঞাতবানে কাল্যাপন कतिशाहितन, कन छः अ युवताङ यिनि পরিণামে লক্ষাধিক যোদ্ধা-সহিত তৈমুর বংশীয় বাবর বাদ-শাহের বিৰুদ্ধে সম্ভামে বিরুত হয়েন নাই, তিনি किय़ काल (भार्शीमरभंत नक्वारम भवामि छात्रन করিয়া কালযাপন করিয়াছিলেন; ও তৎকর্মে অপট্ডাপ্রযুক্ত গোপদলমব্যেইতে বহিষ্কত হই-য়াছিলেন, তথা কভিপয় গোধুম পিষ্টক প্রস্তুত করিয়া তাহার তত্ত্বাবধারানে অযতু করত স্বয়ং ভক্ষণ করাতে তিরক্ত হইয়াছিলেন। এতদ-বস্থার পর কতিপয় প্রভুজক রাজপুঞ তাঁহাকে অশ্ব শত্র প্রদান করত নকলে গ্রনগরের ভপতি প্রমর-বংশীয় রায় করিষ্টাদ মৃপতির দাসত বী-কার করিয়া ইভন্তত দেশপর্যটন ও পরদ্ব্যা-প্রবন্ধারা দিন্যাপন করিতে লাগিলেন। একদা नका शबनाङ रहेग्रा बक रहेर्क्करहे छेडोर्न इउड

<sup>\*</sup> সিৎছ আদন অর্থাৎ দিৎছ-ব্যালু-মূগাদির চক্ষ নির্মিত আদর্ন।

তির মন্তকোপরি ধারণ করিলেক, এবং কবি- গিয়া স্বয়ং নকোপনে নগরছারে পরে তাহার হামী শ্রীনগরাধিপতির কর্ণগোচর ভাহাকে তৎক্ষণাৎ বিনষ্ট করেন, এবং মিনা-করে. যে তিনি ছত্রধারি রাজকর্তৃক পরিদেবিত দিগের গ্রামে অমিদংগোগ করিয়া অনেককে চইতেছেন। উক্ত নৃপতি সে কথা সক্ষোপন দথা করেন। এই কপে দমত গড়ওয়ার রাজ্য করিয়া সম্পাকে আপান কন্যাদান ও ভাঁছার রাজ্য হত্তগত করিয়া ওঝা নামক বণিক এবং সোধ প্রাপ্তির সময়াব্ধি রক্ষণাবেক্ষণ করিয়াছিলেন।

স্তুর করিয়া দেন। ইহাতে পৃথিবিক্ত পথ জন উপস্থিত ছিল না; সঙ্গা সঙ্গোপনে ছিলেন, অশ্বারোহি সমভিব্যাহারে গড়োয়ার রাজ্যান্তগত বেলিয়ো-নগরের অভিমুথে যাত্রা করেন; পরে হার পিতা তাঁছাকে তৎক্ষণাৎ ক্ষমা করিলেন। পাথমধ্যে কিঞ্ছিৎ দ্বা ক্রয় করিবার আবশাক জয়মল্লের মৃত্যুবিবরণে রাজপুঞ্জিণির দেশ থান-ছ ওয়াতে তিনি জনৈক বণিকের নিকট আপন অঙ্গু- । হার ব্যক্ত হয়, অতএব তাহা এস্থানে বক্তব্য। কণ্ডিড রীয়ক বিক্রয় করিতে যান: দৈবষ্টনা এমনি হুইল আছে যে তিনি পাঠানজাভিকত্ক দেশবহিছেত যে ঐ বনিকট পূর্বে রাজ সল্লিধানে সেই অঙ্গুরীয়ক- । সুরতান নামা এক রাজপুঞ্জের কন্যা ভারা বাই টি বিজয় ক্রিয়াছিল, অতএব সে তদ্ষ্টে তাঁহাকে ' নামুীরমণীর পাণিপুছ্ণাভিলাবি হইয়াছিলেন, ও রাজকুমার বলিয়া জানিতে পারিলেক, **এবং** তাঁ-कात इम् दिन्म-धारत्वत कार्यावगं कहेशा काँकात शा किया अहे कम्यात शाविगुर्व कतिर्वन, किस मलक इक्ट वानना कदिल। ए० ममरम खटेनक मी-গাপন কুদুর্থিকারের রাজধানী স্থাপন করিয়া- কোপেত পিতৃকর্ক বিনষ্ট হন; ইহাতেই কবিক-ভাষার নাগত বীকার করিলেন। ঐ মিনাদি- গ্র-ভারা হয়েন নাই "।

सीय अफ्रांशित मञ्ज-ङाशमशूर्वक मयन कति- । शित्र मर्था " आर्क्तिया" गामक अव विर्ण्य • या चार्ट्स, ९ जीशांत चनुष्ठतस्य **ভाका चारया-** विशिक्त शर्व चार्ट्स, जरुगमस्य ताक्क्जावण नक-क्यन क्रिटिंग्ड्, अभेज जमार्य निविष् वृक्त श्वास्त्र विहे व्याशन २ शृहह याहेवात व्यवनत शहिया हहेट अक ब्रीमा बाबः जीहाब वहरन शिविष्ठ हहें- थारक। य रूप्पन शृथीवास ख्याम हिलान, छंद য়াছিল, ও এক বৃহৎ নথ তথায় সমাগত চ্ইয়া ধের পর্বদিনে অন্যান্ত্ত্তবর্ষের ন্যায় তিনিও স্যোর উভাপে আপন কণ বিস্তৃত করিয়া নূপ- অবসর পাইশ্লাছিলেন, কিন্তু ভেঁছ গৃহে না कनाय जाका अक कपू विश्वम धूनि कहिए कि कि नश्याणि बाक्य वामारक লাগিল: তদ্তে জনৈক গোপ সন্ধার সন্ধাধ বধ করিতে প্রেরণ করিলেন, ও তদনন্তর এ कशुनत इन्द्रा ताङ्गमर्यानी-श्रमातम्बूक इत्र. ७ वामी व्यथाताहरा शलावन कतिरहर एपिया গড়ের অবিপতি নোদা নোলাঞ্চিকে ভদ্রাজ্য পুঞ্জিদেরে পরস্পার-বিরোধের সংবাদ রাণার সমর্পিয়া তিনি পিত্রালয়ে পুনঃ প্রত্যাগমন করে-कर्राधित इहेटन जिनि भृथीताक्रक मिना- न। उৎकारन छोड़ात शिकात निकटि कान भूध এবং জয়মলের মৃত্যু হইয়াছিল, স্তরাং তাঁ-ৰ্যাকার করিয়াছিলেন উক্ত রাওর রাজ্য উদ্ধার করি-রাজে/। স্বারের অপেকা না করিয়া একদা বল-নাজাতি প্রধান এতদঞ্লের নাড়োল নামক গ্রামে পূর্বক যুবতির অন্তঃপুরে প্রবেশ করেন, ও ভদ্মে তু ছিল। পূর্বারাজ নবাসহযোগী ববিকের পরামর্শে দিপত প্রবে**ল লিখিত হয়, "ভারা তাঁহার সৌভা**-

জয়মলের মৃত্যুর পর কোন ২ রাজপুএপ্রধান পুএহত্যার প্রতিহিংসা করিতে রাণা রায়মলকে উত্তেজনা করিয়াছিল, কিন্তু ঐ ধার্মিকবর এইমাত্র প্রত্যুত্তর দিয়াছিলেন, "যৎকর্ত্ক পিতৃমর্য্যাদা অবজ্ঞীকৃত হইয়াছে, এবং ভৎপিতার দুরবন্থা জল-ক্ষিত হইয়াছে, সে ব্যক্তি অবশ্যই এমত অদৃষ্টের ভাজন।" পরে আপন বাক্যের প্রতিযোগিতার ঐ অপমানিত পিতাকে বেদ্নোর রাজ্য প্রদান করেন।

জয়ময়ের বিনাশহেতু এবং সন্ধার অজ্ঞাত-বাস-প্রযুক্ত পৃথীরাজ স্বদেশে পুনরাছ্যানিত হইয়া আপন ভ্রাতৃকর্তৃক অবমানিতা রমণীর পানিগুহণ করিয়াছিলেন।

এই ঘটনার কিয়ৎকাল পরে তাঁহার পিতৃব্য সুরজ্মল্ রাজ্য-প্রাপনের আশা করিয়া লাক্ষারা-ণার বংশাবভংশ সারস্বদেবকে সপক্ষ করিয়া মা-লবদেশের সূলতান্ মোজফকরের সহায়তায় মারবাড়-রাজ্যের দক্ষিণ থণ্ড আক্রমণ করত কতি-পয় নগর হস্তগত করেন। রাণা তদমনার্থে যৎ-किथि॰ रेनन। नरेश गछोड़ी नमोजीत याजा कत्त्रन, ও তথায় শতুদিগের সহিত সামান্য-ব্যক্তির ন্যায় যুদ্ধ করিয়া ভাবিংশতি অস্তাঘাতে আছত হওত ভূমিতে পতিত হইতেছিলেন, এমত নময়ে পৃথীরাজ এক সভ্সু অখারোহি যোদাসহ সমাগত ছইয়া যু-দানল পুনঃ প্রজ্ঞালিত করিলেন। তাহাতে শত্রুদল-চমকিত হইল, অপর্যাপ্ত বীরমণ্ডলী धुः म হইতে লাগিল; এবং সুরজমল ময়ং অজ্ঞানতে আক্র रुरेलन; अञ्चवस्था ब्रह्मनीव नमागरम पूरे मरल বিশাস্ত হইয়া পরস্পার স্মিকটে অবস্থান ক্রিল।

এই অবস্থায় পৃথীরাজ সুরজমলের সহিত সাকাৎ করিয়াছিলেন, তদিবরণ অতিবিষয়জনক।
টড্ সাহেব পিতৃবেরে ভ্রাতৃপুঞ্জনই সক্ষর্শনের
বার্ত্তা এক অপ্রকাশিত রাজপুঞ্জ গুরুইতে সঞ্ক-

লিত করিয়াছেন, তাছাতে ঐ সভ্য-জাতায়দিগের অপূর্ব সাহস ও অনির্বচনীয় মহর্তা ব্যক্ত হয়। অথিত আছে, পৃথীরাক্স বিপক্ষ-দলের মধ্যে ঘয়ণ্সাগাত হইয়া দেখেন সুরজমল্ল এক কুদু শি-বির-মধ্যে দেহের অক্সাঘাতসমন্ত নাপিত-কৃতৃক নাবিত করাইয়া অর্জ শামিত হইয়া রহিয়াছেন: তাঁতাকে দেখিবামাত্র গাত্রোখান পূর্বক যথা-যোগ্য সম্ভাগ্রনে অভ্যথনা করিলেন, তাছাতেই তাঁহার দেহস্ত কতিপয় ক্ষত স্থানহইতে শোনিত করণ হইতে লাগিল।

পৃথীরাজ জিঙাসিলেন, "খুড়া মহাশয়, আপ-নার আঘাত সমস্ত কি ৰূপ আছে?"

সুরজনজ। "পুএ, তব দশনৌলানে তৎসমস্ত আরোগ্য হুট্য়াছে"।

পৃথীরাজ ' ' কিন্তু খুড়া আমি এখন পর্যান্ত দেওয়ানজিকে \* দেখি নাট, সর্বাণ্ডে 'তোমার এখানে আসিয়াছি। আমি অভ্যন্ত ক্ষতি, ফে-থায় কিঞ্চিৎ খাদ্যোপন্তিত আছে কি না?"

অতঃপর তরায় খাদ্য দূব্য আয়োজন হইল,
এবং উভয় বীরে একত্র বিদয়া এক পাত্রে ভোজন করিতে লাগিলেন। পরে গমন সময়ে পৃথীরাজ নিঃসন্দেহে খুল্যতাত-প্রদন্ত তামূল লইয়া
ভক্ষণ করিলেন, এবং কহিলেন, "খুড়া আয়য়া
উভয়ে প্রাতেই যুদ্ধ-সমাপন করিষ শ। খুড়া
প্রত্যুত্তর দিলেন; "ভাল, পুঞ্, তবে কিঞিৎ
প্রত্যুত্তর ভানিও"।

পরদিন প্রাতে উভয়দলে যোরতর নমর উপ-স্থিত হইল; সারস্থদেব সর্বাণ্ডের করিছে ২ পঞ্জিংশং আঘাত প্রাপ্ত হইলেন; চতুদ্ধিন অবিরত অস্ত্র বর্ষণ হইতে লাগিল; চারিদপ্ত-কাল-

<sup>\*</sup> রামপুশ্রনিগের ব)বছালানুসারে দেওয়ানফি শক্ষে রাণারিকৈ জাল্ম করে

मर्था जनस्था । शंक्षभू अपार वमुक्त । जा- । । जमानमूर्थ अङ्ग्रकत कतित्वम, "हैं। जा-বৃতা হঠল: ভবদেৰে রাজবিদ্যেহিরা পরা- মার ভাত্পুঞ্-ছন্তাপিত মৃষ্টি হইলে তাহাই किंछ इहेड्डा अपनरमा शलायम कतिल; अवः वर्षेण। अभिश्लित मुक्ता युक्त निवातंन कतिया शृथी-পূর্থারাজ জয়গুজ হইয়া কতদেহে চিতোরে রাজকে কহিলেন, "বাপু হে! যদি আমি হত প্রভাবত্তন করিলেন। পরস্ত তাহাতেও পরা- হই, তাহাতে দুংখ নাই: আমার রাজপুঞ্জ তন-ভূত দল আপন অভীওনাধনে নিতান্ত পরাধ্যাথ য়েরা অনামানে বুদাব্যবসায়ে কোন স্থানে না क्हेन का, शिक्दा ও ज़ाव्यूध फेस्टाई शत- कान कात्न आफिशानिस क्हेटन; किन्न coluin স্পার বিনাশে ব্যগু ছিলেন। পৃথীরাজ প্রতিজ্ঞা বিয়োগ ছইলে চিতোরের দশা কি ছইবেক? क्रियाहित्नन, थूला ठाउटक मिनात मत्या अक । अधिकञ्ज भागात केन्स रेशकान भारकारना त्यामि ठ সূচ/গুনাত্র ভূমি দিবেন না। তথা সুরজমল রহিবেক''। ইহাডেই অজ্ঞান্তরণ করিয়া উভয়ে প্রতিশ্রত হইয়াছিলেন, তিনি ভ্রাতৃপুথকে প্রেমালিক্সপ্রঃসর একত্তে উপবেসন করিলেন। চিতার উপযোগী-স্থান-মাত্র প্রদান করিবেন। পরে ভ্রাতৃপুঞ **জিজ্ঞানিলেন, "খু**ড়া আমার এই প্রতিজ্ঞানুবারে উভয়দলে বর্ষা মুদ্ধ আগমনকালীন কি করিংখছিলেন "? इन्टेंड लागिन। अकरा वर्षेद्रा-अस्ति भरून- छेंड्र। " क्लाइमार्ड माकूल्य नगाम जाका-বনে সুরজমল বৃক্ষ-পরিবেডিত এক নিভ্তস্থান- ব্যয় করিতেছিলাম । প্রস্তুত্ত্বিক তরাধ্যে দৈন্য রক্ষিত করিয়া সকলে 📗 ভূতিপুঞা "আমার ন্যায় শত্র্ মস্তকোপরি রাতিযোগে স্কীয় অবস্থার আন্দোলন করি- থাকিতে আপনি কিবাপে ণিশ্চিত ছিলেন "? তেছেন. এমত নময়ে অশ্ব নমাগমের গাঢ় ধুনি । খড়া। "বাপু, তুমি উপায় বহিত করিয়াছ, कर्वाहरू करेता जरमूरवयाज मूतकमल उठेए अरे कर्व कि कवि? कान सान वा कान प्राप्त हर्या किल्लिन, " व कामाव जाञ्जूल जिन्न मछक तका कति छ्रै रहेर्दक ") আর কেচ ন্ছে 🗥 অপর ঐ বাক্য কহিতে না 🐖 পরদিশ্য প্রাতে বিবাদ ভঞ্জন করিয়; নিজ-नाराया क्षित्रा क्रका क्षित्वन, ও जिब्रकात्र-शूर्वक त्रश्वाम श्रीनेवामाळ त्रम्। श्रीपरम ल्याद्रिम क्षित्रा কহিলেন, "পূর্বের বিংশতি অন্তাঘাত হই-তেও এক্ষণকার এক মুপ্তি অধিক । সুজো শেষ শধ্যে সঙ্কল সুরজনল, ওংসঙ্কো সুলো, এ

किंदिक शृथाहाल गरेनरना के छारन छेशनीक छिए महाकारवात मिनरत विवादानार्थ शृथीता क হইলেন। ভংগ্ৰাৎ সৰ্বত্ৰ কোলাহল ধুনি উঠিল, পুড়াকে আহ্বান করিলেন, কিন্তু তিনি অগ্রায়ত প্রাধিট্কালের ব্যার ন্যায় সর্বা**র অন্তবৃত্তি হইতে। অশক্তপ্রযুক্ত সারজদেব তৎপ্রতিনিধি** ট্**ইলে**ন। লাগিল, কি শজু, কি মিত্র, কে কাছাকে বিনাশ । যথানিয়মে পূজা নমাপনানস্তর মহিষ বলিপ্রদন্ত करत कार्यात किन्नु है देखवा हिन्स मा। युवताक व्हेन; ए० शहत अकरे। हाग विवाध मानकार्माम समारत्राव-सरक्षा आश्रम शिक्षारक लक्षा कतिया शृथीत्राक विवासित थफ्श वहेंसा मानकरमस्यक्ष এমত আধাত করিলেন, যে তাহাতেই তাহার মন্তক্তেদ করত ঐ অবিশ্বস্ত কুটুছের হিন্ন-মন্তক िमादमा मछायमा हिन, किल माइक्रांप्य ममाद्य महाकाल मधीरण मधर्म कत्रितना। भूदक्रमझ के

তথায় আপন পণ আরণ করত আপন স্বত্তু সমস্ত সতজ-নদীতটে বাস করিত। ১৮১৯ সংবৎসরে সূরজমলের উত্তরাধিকারি শাসিত করিতেছেন।

করিয়া মানবলীলা সংবরণ করেন। তৎপরে তাঁছার পুত্র রাও রৈনমল্ কিয়ৎকাল রাজ্য করিয়াছি-লেন। তিনি তাঁহার পিতৃপুরুষদিগের তুল্য ছি-क्ति ना, उजाणि चर्डास्ट विवादिनद्वारम् नगर्य ताकमर्यामा व्यनाशात्म तका कतिया यत्थन्ते त्रीत-। বের সহিত সামাজ্য করিয়াছিলেন।

#### পতিয়ালার ইতিহাস।

४४४४४४४४ দ৴ কএক দিবসাবধি পতিয়ালার ু মহারাজ কলিতায় অধিষ্ঠান করাতে  $_{ imes}$ ্র অনেকেই তাঁহার আদ $_{ imes}$ বিবর্ণ-শূ $_{ imes}$ রূপে উৎসুক হইয়াছেন; সেই অভিলাষ সিদ্ধ কর-🏂।ভিপ্রায়ে এই সর্জ্বন্থ বিবরণ প্রকটিত হইল। যাঁহারা বিবিধার্থের পূর্ব২ থণ্ডে শিথদি-🎎 শর ইতিহাস পাঠ করিয়াছেন, তাঁহাদিগের অরণ শাকিতে পারে য়ে মুঞ্জা নামে প্রদিক্ষ এক বিলোষ निधनम्भाषात्र चारक, वे नम्भाषात्र विज्ञ कृति-য়ান্ বংশজাত আলাসিংহ নামা এক জন শিশু

ভুমাদি ব্ৰাফাণদিগকে বিভারণ করিয়া এককা- কাবুলাধিপতি অহমদ শাহ অবদালি ভারতবর্গ লে মিবার পরিত্যাগ করেন। পরে বিদেশ-যাত্রা- । জয় করিবার অভিপ্রায়ে পঞ্জাব-প্রদেশে আজ্মন কালে পথিমধ্যে এক নেকড়িয়া ব্যায়ের আজ- কিরেন তদ্তে আল্লানিংছ আদৌ সরহিন্দ প্রদেশের মণ হইতে এক ছাগ আপন শিশুকে রক্ষা করিতে- বিশ্বন্যান রাজপ্রতিনিধিকে প্রিরাস্ত করিয়া পরে ছে দেখিয়া তিনি তাহা শুভচিক্ত বিবেচনা করেন, ভার্মদ শাহের সহিত যুদ্ধ করিবেন মান্দে সর-ও তিনি রাজ্যের কিঞ্চিৎ অংশ পাইবেন চারণী হিন্দ-প্রদেশে যাত্রা করেন, কিন্তু তথায় উপনীত দেবীর এই আদেশ সারণপূর্বক তথায় আবাসস্থান- ছইকরে পূর্বেই অহমদ শাহ তাঁহার সম্বাত্ত উপ-নির্দারণ-করত তত্ত্রত। মিনারাজাকে পরাজয় করি—। স্থিত কট্য়া তুমুল সন্ত্রুমে প্রবৃত্ত হন। ঐ সন্ত্রু-য়া প্রতাপগঢ় দেওলা নামক প্রসিদ্ধ স্থানের প্র-িমর নাম 'ঘল্যারা": তাহাতে অগন্য শিথ্ থম পত্তন করেন; তদবধি ঐ স্থানের ক্রমশঃ উন্নতি । যোদ্ধার নিপাত হয়, এবং যে কেছ যবনদিগের হয়, এবং অদ্যাপি তাহা ব্রিট্সুদিগের অধীনতায় ভিয়ক্তর শস্ত্রইতে রক্ষা পাইয়াছিল তাহারা তদীয় हर उपने करण निर्णाठि हरू। श्राहानिः **ह चर्**र প্থীরাজ ভাঁহার ভগিনীপভিপ্রদত্ত বিষ পান জি বক্ষিদিগের মধ্যে ছিলেন, এবং যুদ্ধের পরিদি-वन बहमन् भाष्ट्रत मणीरल उलाबीक हन। यवन-রাজ তাঁছার কালিক দৌষ্টব এবং বৃদ্ধির প্রাথর্য্য দর্শন করণ্ড পর্ম সম্ভুষ্ট ছইয়া তৎক্ষণাৎ ভাঁছার वस्त्रनरमाहन-कर्त्रन-शूर्वक छाष्ट्रारक हाजा उनाबि ও পতিয়ালা-প্রদেশের রাজত্ব প্রদান করেন। তদবধি ঐ ব্লাজ্য তদংশের অধীন আছে।

> ee वर्मत इरेन त्रकोठ मिर्ह পতিয়ালা-রাজ্য আপন অধীনে আনিবার চেণ্ডা করিয়াছিলেন; কিন্তু ইণ্রাজেরা তদভিপ্রায়ের বিরোধি হইয়া শত-জ্ৰ-নদীর বামতটন্থ সমস্ত শিথ্-রা**জা**দিগকে আ শুয়-প্রদান করিতে ঘীকৃত হইয়া রণজাত সিংমের महिल मिक्क करतनः उपविध পलिशाला-तारकः। কোন বিপদ উপস্থিত হয় নাই; প্রত্যুত সকল-বিষয়ের বিশিষ্ট উন্নতি হইয়াছে। ২৪ বংগর र्रेन, रे॰तारकता मुराष्-्रवंटलत रातानि-रक्षाति जिमि गुमि श्रामण्डक शेविहाना-द्रारकत विकेष হইতে নিমলা পর্বত গ্রহণ করেন।

शिक्षानात वर्डमान बाक्यात नाम मरहेन्द्र मिरह ;

ইনি মৃত মহারাজ করম্পিংহের পুঞা; ইহার বিশেষ নাহায্য করিয়াছিলেন।

जम्त्रोतव-क्काशनार्थ यथारयात्रा जेशाधि जिन्न चथीरन २८०।।। थानि ग्राम चारक, अवः जाहान ভাছা উক্তারণ করা কর্ত্তা নছে; অভএব পাঠক- বার্ষিক আয় প্রান্তঃ ২৩,০০,০০০ লক টাকা। খ-দিগের জিল্লার ক্রেশসস্কাবনাসত্ত্বেও তাহা লি- জাতীয় শিথ্রাজ্য-ধুংস-করণে প্রান্তাবিত রাজা থিত হটতেছে: যথা, শকারাজাধিরাজ-রাজেশর বিশিষ্ট উদ্যোগি ছিলেন, এবং শেষ শিথমুদ্ধ महावाद्या-ब्राक्यानं भट्यम् मिश्र भट्डाम् वाराम्स्या। नगर्य देश्वाक्यिपारक १८ नक छाका कव्य मिश्रा



पहें डि

काकतिमिटगत व्यावान-श्राम। ১৫० वर्णत रहेस, अक्षेत्र तजनमूर्एत एकिर्न वाकतिका- त्नानद्राष्ट्र मामा बक कम श्रीमेच शानिक बुद्ध बे बी-के थरअत शार्य मामाभाकत नारम श्र- शहरेएक अकि कि का कर्या संख जानियाहितनः क्रिक्र अप्रक्रिक वक वृहर बील चाह्य; छाहा जाहात व्यवस्य छैलात मृष्ट्रिक इंडेन।

याक इहेंदि. य जाहात एहं काठिविजाएनत जूना, ७ मळक ७ कर्न वानू एज़ नामा कृतित्रत् नामा विधार शानिज्ञ क जाहारक काठिविजाएनत मध्या भितिन करतन, ज्ञाप जिनि एनथन, ''य हैहात मछरकत ज्ञाप विद्युष्टन। कितल हेहारक वासत्रमध्या भन्य कता कर्ज्या'। जिन्त् मारह्य हेहारक नीमत् भछत वश्ममध्या भन्य कित्राह्न ;
ज्ञाप क्रिक शानिज्ञ एक्ट्रत मर्ज हेहा वानू एज़ मध्या निर्वाचिज्या; भत्र हेहा कान् भछत स्था भाग हहेर्द, अहे विवाम ज्ञाप्त कर्मा विरम्भ जाभव्या अहे, य मानता मारहर्द्रत मम्य ज्ञाप्त अस्त मारह्य अक् मार्ज भ्राप्त वश्मत स्था ज्ञाप्त अस्त क्रिक मार्ज अस्थ क्रिक मारह्य अक् मार्ज भ्राप्त वश्मत स्था ज्ञाप्त व्याच स्था अस्त मारह्य अक् मार्ज भ्राप्त व्याच क्रिया क्रिक स्था ज्ञाप्त क्रिया क्रिक स्था ज्ञाप्त क्रिया क्रिया

যে পশুটি সোনরাট্ সাহেব আনিয়াছিলেন, তাহা দিবসে নিদ্যু যাইড, এবং রজনীযোগে পঞ্জরমধ্যে ইতস্ততঃ করিয়া কলমূলাদি ভক্ষণ করিড। তাহার রব "এইএই" শক্বং, এবং তৎপ্রযুক্ত তাহার নাম এইএই রাখা হইয়াছে।

#### পার্দ

দুব পারদ জলহন্তি ১৩। গুণ গুণ; শীতদার।
থারা জনিয়া গেলে ঐ গুকতার আধিকা হইয়া
তাহা ১৫। গুণ গুক চইয়া থাকে। জল উত্তপ্ত
করিলে যে প্রকারে বাপ্প হইয়া থাকে, শুন্দুত্তাপে পারাও সেই প্রকারে ধূম হইয়া যায়,
শর্শিপ্ত িচুই থাকে না; পরস্ত জল অপেক্ষায়
পারাকে ধূমকপে পরিণত করিতে অধিক উত্তাপের প্রয়োজন। তাপনাল যন্ত্রদারা নিক্ষপিত হইয়াহে, যে জলকে বাপাকণে পরিণত করিতে ২১২
তাপাংল ও গারাকে ধূমকপে পরিণত করিতে
১৬২ তাপাংল পরিমিত উক্তার আবন্যক।

অপরাপর থাতুর ন্যায় পারাও থানজ দুব্য;
থানমধ্যে তাহা রজত লৌহ বা গল্পকের সহিত
মিশ্রিত হইয়া থাকে। কোন ২ থনিতে অমিশ্রেত পরিশুদ্ধ পারদ দৃষ্ট ফ্রয়াছে, কিন্তু তাহার
পরিমাণ অত্যাপা। প্রায়শঃ পারদ গল্পকের
দহিত মিশ্রিত থাকে। এ মিশ্রিত পদার্থের নাম
'হিন্তুলা'। বাজারে যে সকল পারদ বিক্রয়ার্থে
আসিয়া থাকে, তৎসমন্ত হিন্তুল্ইতে প্রস্তিটি-

কৃত। মৃত্রিকান্ত্র বৃহৎ বৃক্ষের শিকেড় যে শিত করিয়া এক তুল্বারর এক পাথে স্থাপন শুর নালক তাতি প্রাচীন প্রশুর মধ্যে ঐ হিন্ধুল ভজাপে বিশ্ব চুইট্টা থাকে। ভারতবর্ষে ঐ ছিন্তু-নের খাল কাংক নাই. কেবল নেপাল-প্রদেশে क्ता प्रदे क्या प्रकाश-माग्यिका, क्तान्त, रक्ता, ७१ मध्यम प्रदेशस्थ हिस्सुलाह थीन व्याह्यः কিন্ত ভাগ্তইতে অধিক হিন্তু উদ্ভ হয় না; বিভালারে যে সমাও পারদ স্কুলিত হয়, তাহার श्रीक्षः यसक्ष्णे ग्रेस अदः ए**ण्यान् (मणहरेएक व्यक्तिश्रा** থাতে। ,শহোক্ত দেশের অপরাপর ছিম্বল থবি-सर्दर "चाल्याम्न्" नगरतः थनि नर्दे अधिन। शिष्टे करकर ५०० यनमा शृह्यं भीक काछीय मन् যে/রা প্রথমতঃ তথাক্টতে পারদ নন্তুহিত করে: তদ্বধি ক্রমাণত ২৫০০ বৎসর কাল পর্যান্ত তথা-হটতে প্রচের ভিফুল উড়োলিত করা হইতেছে, কিন্তু তথাপি তাহার সম্পতির শেষ হয় নাই। এই कर्ष ७ ज्याङ्हेर । प्रित्रार्य ১--> । नश्नु स्मान विकल डेंटलालिक इस; अव उपर्थ उनार्था প্রত্যহঃ ৩০০ মনুষ্য শুম করিয়া থাকে। পূরকালে 🤅 नं शक्त लाए धनियामा शादन्य कहिएतई धक কল রাজপ্রতিনিধি আনিয়; খনির দার য়দ্ধ ্রিড। পরে ঐ কর্মকারকেয়। ক্রমাগত পাঁচ তঃ নাম ভ্ৰাব্য ক্ৰম থাকিয়া প্ৰচুৱ পৰিমাৰে হিস্থ-সভুত্ করিলে পর ও আর বিমুক্ত হছত, একং তথ্য তাহারা অ ২ গৃছে যাইবার অব-কাশ পাইত। এইকানে ও দৃশ নিষ্কুর ভাচরণ আর নাৰ্, পারস্থ ভিচ্চা-খনন-অর্ম অভ্যান ্ B. M. 1221

पृशिक्ष विकृतनंत निश्च किञ्चनः भा लोव्**पृत्त मि- ेयदाहे नाहे।** 

প্রকারে বিস্তৃত দেখা যায়, প্রথম ও দিতীয় করত উত্তপ্ত করিলেই, হিচ্চুলের গলকভাগ লৌহের সহিত মিশ্রিত হইয়া পড়িয়া থাকে; এবং পা-রদ পরিশুদ্ধরে পৃথক্ চ্ট্য়া তুন্দুরের সর্বত **ছ**िशा পড়ে।

> পূর্বে লিখিত হইয়াছে, যে এক আল্মাদনের খনিহইতে প্রতিবংসর ১০—১৫ শহসু মোন পারদ নিগত ছট্যা থাকে। তৎশুবৰে অনেকে বিষয়া-পল্ল হটরা প্রশ্ব করিতে পারেন, যে প্রতিবৎসর এত পারদের ব্যবহার কিট দর্পাণপ্রস্তুত ও গি-ভিটকরিবার নিমিন্ত তথা ঔষধিপ্রস্তুত-করণাথে भारतम्ब कमाणि अठ गाय व्हेट भारत ना? अहे প্রশোভরে পাঠকদিগকে পূর্বগণ্ডের সূবর্-সং-त्माध्यत प्रसाव व्यवस् कहाक्ट इस। उपर তাঁছারা জানিতে পারিখেন, যে পারা বাতাত थनिक-वर्ग कनावादम পরিশুদ্ধ इहेटच পারে नाः রজত সংশোধিত করিতেও মনেক পারদের আ-বশ্যক; প্রতিব**ৎসর** যে থকল পারদ বন্ধুছিত ভ্য়, ভাষার অধিকাংশ ঐ থাতুষয়-ল-শোধ-নের নিমিত্রই ব্যবহাত হয়; অবশিষ্ট এক कुमुश्य याज देवधि, मर्गन, उ शिविषेश निभिन्ड প্রয়োজিত হইয়া থাকে।

### শিল্পশাস্ত্রের উপক্রমণিকা।

ुक्क के के हुए। इस जिल्ल मुधनम्बि-वृषि इस्तान বার যে সকল উপায় আছে, তম্মধ্যে এবল, এবং ভাষাত্তে অনেধার অকাল-মৃত্যু १३- । শিল্পেশান্ত এক প্রধান উপায়। অতএব ঐ শান্তের আলোচনা গৃহত্যাত্রেরই সর্বাক্তব্য। তদ্বারা হি স্পট্ত পরে। পৃথক্ করা দ্কর কর্ম নছে। ্যে পর্যন্ত মহল সন্তাবনা এমত আর কোন বি-

य खान नाडकतिए भातित भागता चर्डान खाठ वखत विकाद मताडिम ज पुन् श्रेष्ठ किन्छान एड भाति, मामान । उद्य खान दिन निष्म खान वृद्धा । किन्न वखाद निष्म विकास माना विभ, ज्याद जुन ७ मृक्य बहें पूरे श्रीन माना । जिनकार्य , मृत्राकार्य , जाकतकार्य , मृत्रीकर्य हें जाि मृक्य किल्ला, बन्द गृहाि प्रश्नेन यखाि निर्माण, मृत्राकार्य , मृत्राकार , मृत्राकार

गः नात्रमद्भा अरु श्रकातं मिन्न विका चाहि, य তাহার সংখ্যা করা দুকর; ফলতঃ মনুষ্য-কৌশ-লের নামই শিল্পবিদ্যা। মনুষ্য যে কোন কৌশলে যত প্রকার দুবা প্রস্তুত করে, নে সকলি শিপে-বিদ্যা সম্পন্ন বলা যাইতে পারে, সুতরাং ৰভাব-জাত বস্তুর বিকারে কোন দুব্য প্রস্তুত করিবার মানব জাতির যত প্রকার কৌশল আছে, শিশ্প-বিদ্যারও তত প্রকার শাখা আছে। এই শিণ্প-विकार मन्त्रात बेहिक-मूर्थत प्रवल कात्रन, বিনা শিপ্সজ্ঞানে মনুষ্যের জীবনযাত্রা-নির্বাহ হওয়৷ কঠিন, এই নিমিত্তে পরমদয়ালু পরমেশ্বর মনুষ্যমাত্রকেই শিল্পবিদ্যা লাভ করিবার শক্তি **पियारहर्ने, नकल मन्यारे (ठ8) कहिला (काम** না কোন ৰূপ শিম্পবিদ্যা শিক্ষা করিতে পারে। শুমোপাজ্জিত কল অধিক মিষ্ট বোধ হয়, এই হেতু জানাকর পরমেশ্বর প্রকৃতিজাত বস্তুতে সংসার-নির্বাহের সম্পূর্ণ উপযোগিতা প্রদান ক-दान नारे, कियमः म मिन्धिरिमा अधीन व्राधि-शास्त्र। मन्या यदिकिष्ट यञ्च कतिशा बाजावस বস্তুর সহিত সেই শিণপ্রিদ্যা প্রয়োগ করিলেই আর সাংসারিক কোন সুথের অভাব থাকে না, नकिन श्रं रहा !

नःनात्रमध्य बचावकः य नमख मुका छेदः भन्न

হইতেছে, তাহার সহিত আমাদিগের শিশ্পবিদ্যা সাহায্য না হইলে কথমই সে সমস্ত দুব্য
আমাদিগের সুখদায়ক বাব্যবহারোপযোগী হইল
তে পারে না। সভাবত এক কপা ধান্য উৎপর হইতে পারে বটে, নিজ যদি আমরা শিশ্প
শক্তিঘার। দেই বান্যের নিজার না করি, তবে
কথনই তথাহাত্রতে তথ্য তপুল প্রাপ্ত হইতে পারি না। এইকাপ সংস্রেমধ্যে আনেকানেক দুবা উৎপন্ন হয়, যাখার সহিত শিশ্পবিদ্যা সংযুক্ত না হইলে কথনই তাহা মনুযোর
ব্যবহারোপযোগা হইতে পারে না। অত্রব
বিলক্ষণ প্রতিপন্ন হইতেতে, গা বিনিধ্ব উপায়ঘারা শিশ্পজ্ঞান উপাত্তন ব্যা জগদীবারের
শপতাভিপ্যায় এবং ভদ্যারা নিশ্চম্যই মনুযাজাতির
মহোন্নতি সম্ভবননীয়া।

শিশ্পজ্ঞানভাবে হাছাদিগের গ্রপুরুষ আম মাণ্দ ভক্ষণ বা কলমাত্র আহার করিয়া দিন। যাপন করিত, উক্ত জ্ঞানপ্রভাবে তাহংরাই একনে চৰ্য চোৰ্য লেহু পেয় চতুৰিৰ উণাদেয় দুৰ্য चक्क कतिया मुथी क्हेटल्ट्ह :-- निन्ध क्रानाचादव যাছাদিগের পূর্ণ্ক্য দিসমর হট্যা বা বৃক্তের বলকল পরিধান করিয়া জীবন-ক্ষেণ্য করিত, শিশ্পদ্ধান-প্রভাবে তাহার ই একণে প্রপূর্ব রম-ণীয় পরিক্ষদ পরিধানপ্রিক বা চিত্তিত-মণি-মুক্তা-হারক-রত্যদি খচিত ভ্রবে বিভূষিত হই-য়া অভিন্যিত নানাবিলাদের উপভোগ করি-তেছে: याशिभिश्तित श्र्वेणुक्य नामाना भया প্রস্তুত করিতে না পারিয়া ধরাশাদ্মী হইয়া নি-मारयारण निमा रहन कतिष्ठ, जाराहारे अकरन অপূর্ব পর্যাঞ্চাপরি দুগ্ধকেন সদৃশ শ্রায় শন্ধ क्रिया श्रममूर्थ यामिनीयाशम क्रिएडए ;— याहामिरशद পूर्वशृक्य अर्वकृतित वा उक्छलवानी

হইয়া বা ক্রমাণে পর্যত কামন ভুমন করিয়া। নির্মাণ করিয়া দিঃশক্ষে দুন্তর সমৃদু পার চ যাবজ্জীবন প্রজেরাত বৃধি ও উত্তাপ সহ্যকরি- মা নানাদেশের সহিত বাণিজ্য কার্য্যবারা স য়াছে, তাছাদিণ্ডেই একণে অপূর্ব অতালিকা সারের এবৃদ্ধি করিতেছে: অন্য দেশের রী মগ্রী সংশাহিত্য পর্যামবের নিকাস হইতেছে। নীতি অবগত হইয়া বিবিধ-বিষয়ে প্রবাণ চ শিল্পজান বিহানতা-প্রযুক্ত যাহারা পদচারণ তেছে; ভিন্ন দেশের বিদ্যা সকল সঞ্জ ক্র मः कतित्व अकजानक्ष्टेटक जानाजानं आश्व विरम्भ अगात्र कतिरुट्ह, व्ययखनीय ६ वा গুলিতে পারিত না, নচেত্র-জাবের অ**ঞ্পরি- তেনীয় কার্য্যনকল সম্পন্ন করিয়া দেশ**বিশে চালন ভিন্ন গলিলাকির শন্য উপায় জানিত চেবভাবং মান্য হইতেছে।—ফলতঃ শিল্পা না, সন্মের উদয়ান্ত ভিন্ন ক্ষনপ্রেকারে দিগ্নিক- দ্যা সংসারের নিতান্ত শুভকরী, এব মন্ প্র করিছে পারিত না, দিবা রাত্রি ভিন্ন অপর মাত্রেরই আদর্শীয়া। মনুষ্য এই বিদ্যায় ক কোন প্রকার কা**লের বিভাগ বা কালের প**রি- : ভিজা **থাকিলে তাহার নকল** বুদ্ধিবৃথিকে কালে মাণ করিতে জানিত না, কায়িক বল ভিন্ন অন্য তে পরিণত করিতে শক্ত হয় না, মনোগত কা কোন উপায়ে কোন শুম্বাধ্য কর্ম বিষ্ণাল্ল করিছে। ভাব মনোমধ্যেই থাকে, তদ্যারা সংবারের ে कम इहें ना, अवः मामाना ब्रावीत व्यक्तात विस्मा देशकात व्यक्ति शास्त्र ना। स्वानित 'মতিফুদু পরিৎকেও উত্তাণ হইতে পারিত না, দিগের শিশপদ্ধানের সভাব থাকিলে কাষ্যার কেবল ৰভাবজাত বস্তুর প্রতি নির্ভর করিয়া এক তাছামেও অজ্ঞানীর সজে তুলনীয় চইতে হ প্রকার নরাকার ছিপদ পশু হইয়া কাল্যাপন শিল্পানিদ্যালার। দুলভকে সুলভ কর: দাছ । করিত, শিল্পজ্ঞান-প্রভাবে তাহাদিগের সন্তা- ল্যকে স্মূল্য করা যায়, অন্প্র্র দুল त्नत्र। विना अप्विदक्तरभ-विना काम कीरवत वर्षमूना कत्र। यास्र। निष्पविद्यानाता अर विमक्तित मारुप्या-वशूर्व नाष्ट्रीय-यामाद्राष्ट्रव वार्थान इहेटल शाद्र ; प्रतिषु धनी इहेटल १ অভ্যাপ্তালের মধ্যে বহুদূর সমন করিতেছে; এবং দেশের দুংখ দূরে গমন করে : াত নিমিখের মধ্যে কভ কভ দূর দেশের বার্ত্তা জ্ঞাত শিশ্পবিদ্যানের যে কভ কল, এবং চন্ত্র ভইতে পারিতে**ছে, দিগ্নিদশ্**ক য**ন্ত্র-নাহাযে** অ- মনুয়ের ক'চ ইষ্ট সিজ হইতে পারে ১০০ ব कल-मान्त-भरथा तक्रमीरयारभे पिश्रमिन्ध कति- त्नद्र बाठीक । য়া বাঞ্চিত-লাখে-গমন করিতেছে; অন্তুত ঘটিকা যান্ত্র প্রতিক্রিয়া অভি সুক্ষানুসুক্ষারপে কালকে: বিভাগ করিতেছে, কভ কভ বাস্পীয় যন্ত্র স্থাপন করিয়া বিনা দৈহিকবলে অতিশার শুমসাধ্য क्रांशत-मकन व्यवनिक्तिकत्म मन्यम कतिरुद्धः এব॰ ক্র প্রকার কত ব্য**ন্নের কত শুনের লাঘব**- . क्ति विक्रित निक्षित निक्ष निक्ष निक्ष निक्षित निक्षित निक्षित निक्षित निक्षित निक्षित निक्षित निक्षित

A. F. 4

#### कम्लाबनक नाइन भः गः।

मार्थिवम्।-वावनात्री शिष्ट्यतः 🌂 🕏 উপায়দারা নিৰাপিত করিয়ায় ※無寒寒寒 (य नामार्थ व्याकारम विम्र्राय-व नाना प्रकात पूरा प्रश्नां कतिरहाए; श्रकां लाक उन्हें वर्डमाम चारह, बबर चरनक मन कर



বে ভাছাছ্টভেই নজাব বস্তর গাড়িশা 📲 উ৯৮ পাছে 🕩 ারলাচাত্র হট বিদ্যুত-পদাথ সর্ভ পম হইয়া থাকে। ইভিপূর্বে তাড়িত ভিত্তিক উন্পান হয়। থাকে: প্রথান-সময়ে বালাপুর্ব যতের বর্ণন-সময়ে (১ ৫ পৃষ্টে) ঐ ভাড়িত বড়েব সাহত গছা চাগত হয় বলিয়া **তাহা** প্রার্থের কিছ বিশেষ ধর্ম আছে, ভাছ ক্ষিত প্র চাল হায় লাচ এরস্ত লাভ-প্রধান-দেশে इट्रेगाए। वे श्रास्तार श्रमक्ति कहिए। वाक्षा विद्या कारण स्वीतिक क्षेत्र स्वीतिक क्षेत्र सन्वारम्ह्**लाक হইবে, যে তাড়িত পদার্থ অভ্যন্ত ভারতির্গনীঃ** ভার্থকে **ধ্**াকরা কলিব নতে। তৎসময়ে অবে– ৰাল, ৰালাপুৰ বায়ু ও মতে দুৰা প্ৰাপ্ত কলাৰ ্লে দেক্ত্ই ও বিদ্যালিয় নিৰ্মাত ত্ইতে দেখা अनोशास्त्र अक निर्मिष्माद्ध नथ्यू २ दकाम काम विश्वाल। सर्वत्रम अ गत्रक्षा अस्मात्र मोज-्यन कतिए शास : भक्ष एक मान्, भामा, धून । कहन वन व ज ज ज हिंदी मगर्न करनक सीरना-कार, इसम, क्स श्रामित मुर्वात डेला किया किया किया । । । । । । । । । विस्तार विस्तार क्या निर्मात क्रिया চাহা কিঞ্ছিৎ মাত্র চলিতে পারে না; সূতরাং আছে। ক্ষান্তায় ও অনাত্রে শীতকালে বি जे रूटवा काकृष कविया ताथिएत छाछित अमा- छाटनः अटन हाठ तूनावेटन जे श्रकात विमू/मध्य ष्क आष्ठ कर वाकेटक भारत। विकान वाकिता निग्र उहेटा (स्था शियारका अभारताभात कीर-व्यक्तिक अरे अर्थ कारक पाकिया कान् २ भगार्थ (मर्द्ध नाम ःकारत विमू १-माक रम्था याद्रीक ांह वर्त्वमान चाट्य, करममूकाय निकाणिक कति-। शाद्धाः शतः ४ करमयस्य हे छेद्धाश-रम्भक्ष अक

প্रकात महा मध्या वरः भाकिन्-प्रमञ्ज वक श्र-় কার বাইন মৎস্য ভাতীব আশ্চহাদানক। যোক মংসের প্রতিমূর্ত্তি পূর্ব পূচে মৃদ্রিত হইয়া-(छ ; उप्राष्ट्रे राक्त भरेदर, य जाहात अरहार अज-দ্দেশীয় বাইন মৎস্য হটতে বিশেষ বিভিন্ন মছে। प्रक्रिक अविदिकार निर्माण के वाहैन मधन कानक আচে, এবং তথায় ড হারা অপরাপর বাট্ন ১৫-ात नार शक्रमध अविदि करते, अवः धम् মান্য কটিাদি ভক্ষণ করিয়া **দেহ্যারা-নিষ্ক**্ ারে; ফলতঃ জনা বাইন মৎসাহইতে ইহার 🦠 ভাষ কো**ন মতে পৃথক্ নছে; গরম্ভ ইচাতে এ**া | অভাত্তি শক্তি আছে, তৎপ্রযুক্ত যে কোন জান এ মহন্যকে স্পাদা করে, ভহক্ষণাৎ ভাষার কে-াহর সমস্ত গুলিতে থিল ধরিয়া যায়; ভঞাসে স্পান্দ রহিত হইয়া নিপতিত হয়। এ থিছখরা এতাদু শভয়ানক যে মন্য্য এককালে দুই ভিন্ট। মঙ্গ্যকে স্পর্শ করিলে মরিয়া আইবার সঙ্চা-কা! ইচাকে স্পার্শ করিলে অধ্ব নিপতিত চইয়া থাকে, সুতরাং অন্য ফুদু পশু যে তঃ স্পার্শে ান্যুদাণ ক্ইবে আশ্চয় নকে: বিলাতে এক প্রকার শঙ্কর মৎস্য আছে, ও হাতেও এই অন্তত শক্তি প্রভাক হয়, কিন্তু ঐ শ क তাদৃশ প্রথর নছে। ঐ শঙ্কর মথস্য স্পার্ম্ম করিলে হস্তে খিলখারয়া থাকে; কিন্ত তদ্ধেত্ক পড়িরা যাইবার সন্তাবনা নাই। · এই শক্তিত প্রত্যানিত যৎস্যাদিসের কি বিশেষ উপকার হয়, ভাগা নিবাপিত করা দুক্ষর: বোধ , इह. जार्थापरगढ नाजुमभन स थापा मुदा मर्का इह निमित्र क्रांश्रिशाचा ठाश्रुमिश्राक हे महिन्दि। हो করিয়াছেন; পরস্ত ইয়া স্পার্ট প্রমানাকত হট্যানাক क, त्य विष्यु अभाध महत्त्र वर्षमाम् आह्म, छ।-ांद्रहे आधित्व। बहे महिन छैन शह हहें। बारक।

नीजिमुकाश्यी।

क्रिक्र क्षेत्रक क्षेत्राहाधना कहिल जनगा है हो हो। উत्तर काल मिक हरेरत।

हिका श्रामान कतिता क्रिक मित्र क्रिक क्रि

উবন হ'নের কুলজীতে কি আবেশ/ক। যশ প্রেমধ জন্মে, তথন তাহার কল ভাবা

कर्त्वा

र्का थर कमन करिएल এक वलवान् अञ्चरक ममन्दिक्ष थ्या

আনবিদায় মনুষ্য মাস্তিক হয়, কিন্তু যিনি গুলাকাপে বিদ্যায় পাছদশী হইয়াছেন, তিনি অব্যাই আন্তিক হইবেন:

क्षांड मः वत्तव कत्न, उत्तर अभगंभानी इर्वः । क्षांमध्य मृद्रारभका भनः कात्तव हेहा धारः अवः । भांक উভয়কেই মত্ত करः

ষ্টোর অবিবেচনাপূর্বক কলে করা হইছাছে. ভাষা বৈষ/তা-পুরঃসর বহন করাই ভাল।

যাইর ছলে নাই, ভাহার ভাইপো অনেক। যিনি পর্থনার অগ্রেদান করেন, ভিনিট দি গুণ দেন

माना ठाइ जगहीयरतत नकत चाड्यार ठा॰ वर्षा

যে পুঞ্ পিতামাতার নিকট কোন উক্ম শিক্ষা পায় নাই, শে পুঞ্জ ক্থন তাছাদিগের বশীভূত ক্ইবেক না।

यिन मरसाय बाक कतिबात पश्चिक वानना करतन, किनिहे मर्बना व्यमस्ट ।

## বিবিধার্থ সমূহ,

পুরারভেতিছাস-প্রানিবিদ্যা-শিশ্প-স । কুল্যাদি-দ্যোতক বাসিক পতা।

० भई ]

नकाक १५७, दलेग्र

### নুরজহানের বৃত্ত ।

বাপন্ন জান দীন ব্যক্তির তনয়ার প্রেমে আসক্ত कान छेशात्र ना मिश्री अवर दिनर जाशमात তে এই कथा जवशांतिक क्रिटनम, य "जामापि-भित्र (क्टमंत्र य क्क्इनिधनो ও नित्रम क्ष्न, (महे राक्तिहे हिम्मूशान अभन कतिका व्यविवास चानभात पूर्यमा मृत कत्र मृथमण्याखित चाक्रम ररेटल्हः अल्बन आमारिक सन्जितिलक्ष हिम्रू-इाटन भेमन कहा कर्डा है। शोका मरनामरथा बहे भड़ामनं **चित्र कतित्रा**ं अक रिम चाजिरमाशत्म

লাপন গৰু বান্ধব আগ্নীং সূত্ৰং প্ৰভৃতি সক-বেট খণ্ডাতে এখিট সানান্ অব ও ভাগন जात-तारकात प्रकाश प्रकाश महाना निका महा महा महा यह विकाश विकाश महा इति विकास किन्द्राणीन कर्तरामा- सहस्य कार्कित्यश्वनत्य वाष्ण्यप्नत्वाहोन वाष्णव **ृ उन, थाका कार्याम् नामः अक**ार्जीः सम्जिनाहास हिन्दू आनाजिम्**त्रे** श्रहाने के विकास का का का का का का का का का भ कि विश्व व नीमकावाशम हहे: हिन । का मन्युक चारतारण कहाहेश काशनि विश्वास शत लियामा के जांशांक योहन कान कहिनात शास्त्र शिंहक वा जिल्ला। के कारल कि वारमत निका ध्रमान कतिसाहित, जान्क धन निर्णाद हो। शर्वन हो आकारण यह प्रतिपरिति जाहात किष्ठ विरुष्ठ शास्त्र नाहै। जिनि कांक-ममब्खा- गांक को उक्केशास्त्र हरेसा विशेष। याकाह नरक মে কিছু বৰ্গ ছিল, অংশ্যানিনর লখেই তাহার इन्ड यथाकारन विधिशूर्वक जाहात भाषिगुह्व तर्वत हत् , बक्तर जाहात विकास द्वार छन-कतिशाष्ट्रिकाः किन्न छारात छत्रनरभाषन कतितात । किन् रहेगार शूनिहे के लिका छ छारान किश्री कोरनबाह्य वृद्धिक क्वेता 🕍 विस्त मीमणात वृक्षि प्रिथिश कोन नमर्य चारान मरम- रेडब्रवाममारकत नक्षिणात निवासकृषि हि-मू आरम्ब कोमा, अकि जाजात-बारकात मीमा, के केंग्र भीमात । यावर्जी त्य काकि मिति-**फाइशास्त्र कान क्रि. थाका जिका क्रिट**े २ करम । वे इाम का बा छेशविक इहेटनन। तन अगठ अद्भ छहार है होन, त्य उचारा मनू राह याकाता क कतिवाड केटबर्क विक्तमांक उ पृष्टिताहर रम ना। अञ्चल नामानिटान कूर जिल्लामान



নিবারণের নিধিত প্রের গ্রেম্কে ক্রাজুরা দর विमामज्ञ भारतात न्किकारा किम समा छेर्दा नाहे। आहेशारमः विस्म मक्के डेशाइंछ, शूब-दश काइन कहिया किहिएक नारहम मा, अर्थ নশ্বং নিশ্চিত মৃত্যু অবলোকন করিয়া শ্বাস্থঃ **रु**हेराह ७ एहरा हा नाः

এই কণে কথান ভাছাল ভিন দিন অনশ্ন কালছরণ করিল, ইলোমধ্যে আইয়াদের প্রার धनव जिम्मा डेशिङ्ड: उथन (मई अवदानिकी) আপনাকে ভক্র দুঃখনাগরে নিপতিতা বিষয়া ষীয় পর্তিকে ভর্ননা করিতে আরম্ভ করিল। ত্রি क्तन अमन अञ्चलकर्ग पार्यन पत, षाद्व, वर्ष, रा-জব সমন্ত পরিভাগে ১রিয়া আইলে? স্বেধান यमित्र मरुम् धकाह 🐠 🏗 न ज्यांनि ध्रष्ट्र 🖯 টে। জীবিত ছিলাম, তেরখোর কবে 🗫 স্থ ১ইবে কি না, ইছা নাৰ ক**িয়া কেন তুৰি** আ-পনার পূর্ব ফান পরিক্ত গ করিলে? এখন জ্ঞার শোকি হইবে"। এই জুলিনা করিবার ক্ষণকার िनय बाहेश्रारमत बालित्रममुल्यतो द्वितिमान লাক্তিকার ন্যায় একটি কন্যা ভ্ৰিষ্ঠা হইণা কি জানি যদি কোন ।থিকের সমাগম হইয়া विम करम जारानितक महिक माका रहा. वा अल्यानीय जाराया के न्या किर्याम ज थ में चरशक कतिया बहिन; कि ह कारोबिद्रनक

ভিপান্ধ নার। এই বিষম বিপত্তির সময়ে গাং वाहेश्राम् कमा रेक्टन उलाह ना लाहेशा तमनी व्यथाक्ष्म क्राक्ति स्वत्रहेट अञ्चल क्रिटननः कि इंश्रम टिलि अम उ पूर्वल करे छा छिएन द ठाँकात नमविएक्षात मिक्रियांवर गहे. बदः छी-হাত পাত্নীও কুলিপিলায় কাতরা প্রযুক্ত অখেতি भागित थापिक धार्मका मूख्या तम नदम्मा का र कर्मारक य छाड़ादों कि जरश कानसम करई, তাহান্ধ কোল উপায় বা দেখিল ভাতারা যোর शक्टि शांकि बहुन: अन्तिकिक वानिकुड कारत मा, धारण किताउठ लाउत नार अकर বার বাৎাসভাবে মুধ্ব হ্ট্য়া আদিবার অ-फिलाय केंद्रराष्ट्र अकर तात निजास निक-পার দেখিয়া পরিভগগের মন্ত্রণা করিতেছে। অনস্থার ক্যাল জালাই স্থিত করিয়া সেই কন্যাকে কংকগুলি এতেতে আবৃত করত এক ভক্তলে तो थता व्यारकाता अरुश्वास्य मञ्जनग्रस्य श्रहांम क दिला ।

আইয়ানের শ্রী ধাউতে ২ এক ২ বার পশ্চা-ভাগে নিরীক্ষণ করে: ক্রনে ক্রোশার্জ পথ অতীত হইলে ৰথন সেই অভাগিনী দুঃখিনী রম্ণী কন্য বা সেই বৃক্ষতল বা ভাছার কোন বিদর্শন আর দেখিতে পাইল না. তথন সে শো-क्टि चोव्हत **र्**हेश : हा कटनः हा कटना, ! এই বাকা উচ্চারণ ক্রুড় খনা প্রাহইতে ধরা-त्त श्रेषामा वार्थ हरेन। तम भूमन साम नटह उटन शिविष हरेश मृण्यालस हरेश। अहे खबड़ा य मिथात कान मनूरम् व नमार्म स्या। कार्म नमार्म थाना चलाख स्था स्था স্থা यত অভাচলাবলয়। इहेट निशित्मन, एउहे समस्य পতीत निक्छेर्राई इहेटा आहादक गासुना णांशांपिरशत छत्र वाफिरक साशित ला निविष कितिए कितिए नाशिस्त्रन, "किता नाहे, कृमि वित कर, वनः (त इता कतम्बानिवादा भूवात निवृत्ति देशन्तवनयन कत् चानि श्रविका कतिरक्षि, कवि-एरेटा वर्रायु-छङ्ग्कारि माना शक्ति स्वामक स्टार्श (**छात्रात क्यारिक (छानात निस्**रे सानित्रा हिल्यु क्छिपिरिशत निक्षे हरेए जान शाहरात स्वि । এই वाका खनिया मिरे क्छिपिसी श्रीध-

সাবতার নিকট আনিয়া দিলেন। খানা আ-্ছাকে একান্দোল উপাৰ্থ দিয়া আপনার श्न खीत निक्र किल्मरण्यः भागव्हेश्च कनाइ दिश्वान तामरागयायायारकत नमञ्जान कतिरन्ता व्यान्वर्धाकरण दक्का लाहेर इ व्यानुष्टिक से कि अन्वर्धा कारत स्थ कि इश्व छाह। स्क ত্তাস্ত কহিতেছেন, এমত সময় তথায় কতক্ষান বিশাত পারে। ঘটনানতে যে কি কথন ঘটিয়া পথিক আসিয়া উপস্থিত হট্ল; এষ্ণউহাদিগের : উট্টে তাহা কথনই নিওয় করা বায় না। অরব্য-पूर्णभारभटिन पूर्विक इहेश कहाराकृषि अहार করত তাহাদিগের দুংথ হয়ণ করিখে অনস্তর थाका बोद পजीत महिन लाग्रे हैन क्लै 🖘 काम जारकात नगरत चामिया डेन्नीड क्ल्रेसन

यक्कारम आहेबान क्रांटिशत-मध्रत छेशिक्छ इडेटलन उৎकारल छेखा नगरः। ममुद्दि चाक्रब-भार ब्राक्त करतम. १वः छ शत अधान मञ्जी भागकर्य। नामक बढ़ उर्ज्ञ त्राध्यविधान छेल-স্থিত থাকিয়া দৰ্শন রাজ্যকার্য্য **নির্বাহ** করি-তেন। ঐ আদক থার লভিত আইয়াদের েগন দ্র সম্পার্ক ছিল। তিনি আইয়াসের আগন্ন-বার্ত্ত ভাত হইয়া বন্ধুতার উপযুক্ত মর্তাদা-পূৰ্ক ভাৰাতে স্থাপন হাটাতে আৰম্ম করি-लिन; अर<sup>्</sup> ठा**र्हारक धांशन व्यक्षीरन नव**छ कारयंत मन्त्रामकबार्थ मियुक वृतिया त्राथि-क्ति। शहियान् ध्विनस्य **मर्वविशय मान्यक** 

र कातीन वाको नी नायक शु ४ और वाकि नवामध्यक नाय t'as with

টেছতন্যা হওতে উঠিয়া বসিলা এদিংগ খাজা মনোনীত ন্ইয়া উদিলেন। কিয়ৎকাল এই প্র-ार्ड कमारिक कानिएक शिया है। स्थि विश्वप वि- काएस बांशम कतिही श्रेष्ठ काम घटेनाक्रस्य পদ্ উপড়িত; এক কালসৰ সেই কথাকে তাঁটার ভার্য-করবে মসাধারণ বৈপুণ্য ও পার-বের্জন করত অংপন ফল। বিহুত করিয়া তা- পর্বার বিষয় রাখ্যকণগোচর ক্রয়াতে রাজা हारक भूग कड़िल छेमा क हरेगरह । किन्न कीव- । जु हैश र्नक । छोड़ारक नहमू-व्यथाश्राक्य शरम মান। পরিভাগেপুর্বক থাজাও খাকেমেনে বর্প । দিবুঞ্জ করেন। পরে কিছু দিনের মধ্যেই থাজ। ভয় পাটয়া এক বৃক্ষজোটন্ধ দ্বা প্রবেশ কচি- আহ্বারের সকল গৃহকায়ের পর্ত্ত পদ প্রাপ্ত ल। हेडावकारमा भाषा कर एक काएए था- १३४मन। भाषा ठीकाइ कर्यामणेश ७ विश्वस्ता ৰা করত অভিবেশে সমশগুর্বক ছাছাৰ প্র-িদিন। অধিক প্রকাশিত ছভয়াতে রাজা তাঁ-मक्षा अक्षाप्टारन या आग्यारमञ्जू शानजान कहे-टब्रेड्स. कः वक्टम ८० हे शहेशाम देवतीमहेमात्राह क्षांकरवंद्र मध्या । यक्ष अक अवान वः वि स्ता कितिन।

> र्वतामास् कार्डशास्त्र स कना अस्य नारकोः ्बर्क वहा **कार्य सम समीकन्तमा \*** वाधिः ं कनाव भरू व नाम चिंह नुमक्ते ত্রী (ছিল, কারণ ভারত ভূমিতে চরুল। রুলই। व्याः (कहरे हिन मा। व्यारेशान व्यक्तिक प्रमूरक कारक मानाविष्य मिका-अम्म किहा मुठा भोकनाया अवः हिजाबि विकाह बमीय सिना **अवि**कोद्या रहेद्रा **উठित। त** हैक्कि एकत यञावा किंद्र ध्यमक वृष्टिमची विदेशायिनी \* সুরসিক। জেমনি মহামনা ছিল।

अक फिल द्वाराणुक्य जलीम चाहेमारवद गरिङ ৰাক্ষাং **পুরিতে তাহার ভবনে গমন ক**রিডা-हिस्सान। ७वाम जनगाना जानित उनती जान

<sup>\*</sup> ओक्शबित क्ष**धा**नः .

কেরও আগনন ছইয়াছিল। পরে যথন কএক ব্যক্তি প্রধান লোক ভিন্ন অপরাপর সকল নি-মন্ত্ৰিত ব্যক্তি সভাহইতে উঠিয়া ৰূহ স্থানে প্রস্থান করিল; এবং সুগল্পি মধুর মদিরা পা-নের সহিত পরস্পার মিষ্টালাপ হইতে আরিড হইল, তথন দেশ-ব্যবহারানুসারে অবগুঠন-वजी महिलामधनी जरमाजा मगाजा सहैरान। ताक भूख वे मधनीमर्था चमीक न्निभारक एन-থিয়া ও তাহার আশ্চর্য নৃত্য ও মধ্র নন্ধীত শুবণ করিয়া অধৈষ্য হইলেন; ক্লিন্ত তথন কোন মতে অন্তর্ভাব সংবরণ করিবার নিমিত্ত সাব-ধানে রহিলেন; পরস্ত তাহার উৎকৃল্ল-কমল-जूना महीहनावना, मूहाक मूम्मा जक प्रजान ও শরকন্তুসদৃশ মুখন্ত্রী সন্দর্শনে রাজপুত্রের মনে তাহার সৌন্দয্য অদিভীয়ক্তপে বিরাজ করিতে লাগিল। যেমত রাজপুত্রের নয়নচকোর ভাহার सोम्पर्गम्था**णात्न व्यानक रहेशा (महे फि**र्म थाविक इहेरव. अगनि अभीकन्निमा इनकरम বদনহইতে লভ্জাবস্ত্র নিক্ষেপ করত আপেন অ-পান্ধ-ভঞ্চিদ্বারা রাজকুমারের মনকে এককালে বিদ্ধা করিল। ও তৎপর ক্ষণেই সলজ্জ ও ব্যস্ত নমত হওয়াতে ভাহার ৰাপ আরও বর্দ্ধিত হই-श उठिन। ताककूमात मडा-डक्रभर्यास व्यट-जनপ্रायः उस हरेया कालयाशन कवित्व नाति-লেন৷ অমীকন্নিসা নিশ্চয়ক্পে রাজকুমারের মন বুঝিবার জন্য নানাপ্রকার কথার কৌশল করিতে লাগিলেন, কিন্তু কোন ফল দশিল स।। অনন্তর সে দিন সভা ভল্ল হইল।

নলাম প্রেমেতে অন্তিরচিত্ত হইয়া কি করি-বেন, ইহাই চিন্তন করিতেছেন। এদিগে অমী-কন্নিসার পিতা-টকোমেনিয়া-নিবাসি আলি-কুলি শেরসাফ্গান্ নামা এক ব্যক্তির সহিত ভাষার বিবাহের সম্বন্ধ স্থির করিলেন । বলীম
এই বার্ডাশ্রবানন্তর অন্য কোন উপাদ না
পাইয়া উক্ত কন্যাকে বিবাহ-করিবার ইন্ডা
প্রকাশ্যর্শপে আপন পিডার নিকটে ব্যক্ত করিলেন: কিন্তু তাঁহার পিতা এক জনের নির্ব্ধীভূত জ্রীকে অন্যে প্রদান করা অত্যন্ত অবিচার বোধে অতিক্রোধপূর্বক তাহা করিকে অম্বীকার করিলেন: সুভরাং রাজকুমারকে সলা
ভল্ল ও হতাশ হইয়া প্রস্তান করিতে হইল:
ও যথাদালে শেরআফ্গানের সহিতই ম্মাকন্
নিনার উদ্বাহ সম্পন্ন হইল।

রাজকুমারের অভিলয়িত বস্তু পরিত/ক না করিয়া অমীকন্নিসাকে বিবাহ করাতে শেরআফ্-গানের নৌভাগ্যের ভির পক্ষে অনায়াদে ব্যাঘাত मछावा, किन्नु यावद अन्वत वामभाव वर्जमाम ছিলেন, তাবৎ দলীম প্রকাশ্যরূপে ঐ আক্রাদের প্রতি কোন অভ্যাচার করিতে পারেন **নাই।** পরস্তু রাজসভার অপরাপর কর্মকারি সকলে (मिथितिक, य शिविशिष ज्ञामह बारकाश्वत इह-বেন, এবং তাহাদিগের নকলকেও তাঁহার অধীন হটতে হইবে, অভএব নলীমের পরিভোষার্থে সক্**ৰেই** ঐক্য **হই**য়া দৰ্বদা রাজসন্নিধানে শে#-ু আক্গানের অলীক দোষ দশাইয়া তাহার বি-পক্তা করিতে আরম্ভ করিল। ইহাতে আঁফ্গান্ অত্যন্ত বিরক্ত হইয়া আগরা-রা**জধানী পরি**-ত্যাগ করিয়া বঙ্গদেশে প্রস্থান করিলেন। তথা-কার সুবাদার ভাঁহাকে বর্দ্ধনান চাকলার কর্ত্ত্ব-পদে অভিষ্ক্ত করেন।

অক্রর পাদশাহের মৃত্যুর পর যথন সলীম স্বরং নিংহাসনাবাঢ় ছইলেন, তথন তাহার মন্ পুনর্বার অমীকন্নিসার অনুরাগানল প্রজালিত হইয়া উঠিল। অমীকন্নিসার ভাব তাহার মনে

জাগৃতই ছিল, ফেবল পিত্রাজ্ঞায় গোপন করিয়া অক্বর বাদশাহ বীরদিগকে অত্যক্ত আদর রাখিয়াছিলেন; অতএব উভয়ের মিলনের শের আক্গান্ মাত্র প্রতিবন্ধক ছিল। তাহাকে দুর করণাভিপ্রায়ে সলীম শের আফ্গান্ফে বর্জ-मानरहेट अध्यानीए बाज्यान कतिरत्न, किन्नु कन्दराध कति ? "

এমত লঙ্জাকর ও কুৎ সিত ক্র্ম স্বীকার করিবেন, নতে বুঝিতে পারিলেন না, যে রাজা তীহাকে অংছে, যে আপন প্রাণস্থত্বৈ অংপনার পাত্রাকে মুগম্মা-যাত্রার নিমিত্তে কোন এক দিন নির্জা-শারস-দেশে এবং সকাবিবংশায় তৃষ্যা রংক্র পার্শুবর্ত্তি **জনপদের অভ্যন্ত অনিষ্ঠ করিতে**-শাং ইদ্যাত্তের নিকট অত্যন্ত খ্যাতিপ্রতি-্ছে, ও সর্বদা প্রজাদিশের ছাগ, মেষ, গে, পাত্তির বাছিত বিষয় কথা করিয়াছিলেন। ত: সকল নষ্ট করিয়া থাকে। রাজা আপন দলবল লার প্রবিষ্ণ লাস্তাজিলো; পরে এক ওলোরণ: বৈদ্য সামস্ত ও শের আক্গান্কে সভে লইয়া शक्तिन। ठिनि योद्र वाधवान मिखिहा-एमाः গুৰুণ করিয়া খাল-খা**লান** উপাধি প্রাপ্ত **হয়েল।** 

कतिराजन, मुख्दाः छाँशात्र निकष्ठ हैनि व्यक्तास व्यामृष्ठ इहेरवम हेरा नकरलहे व्यमुमान कतिर्छ भारतन । 🍋

জাহাজীর \* যথন শের আক্গানকে আপন ভাঁছার খনে মনে এই এক আশক। রহিল, যে সমিধানে আহ্বাদ করেন, তৎকালে দিলীতে তাঁ-প্রজ্ব। কি প্রকারে এমত লোক ও ধর্ম বিক্ষা হার রাজধানী ছিল। শের রাজদ্মিকটে উপ-কং প্রবৃত্ত হই? কি ৰূপে এমত প্রধান এক ডিড হইলে রাজা তাঁহাকে অত্যন্তমর্যাদাপূর্বক ব্যক্তি আমীরকে স্বন্ধী পরিভাগে করিছে অভার্থনা করিলেন; নানাপ্রকারে সন্মান করিছে লাগিলেন। শের সহজেই সরলস্থভাব; রাজার শের অতুল ব্লবায়ের নিমিত্ত লোকসমাজে এতাদৃশ অসকত আদর দেখিয়াও তাহার মনে অত/স্ত বিখ্যাত হইয়াছিলেন। সকল লোকই কোন সংশয় জন্মিল না। তিনি মনে করিলেন, ভাৰার প্রতি সন্তুষ্ট ছিল। অধিকস্ত শের ছভা াযে কালক্রমে রাজপুত্রের মনহইতে অমীকন্নি-ৰতই ভাত্যন্ত দুপশোল, ও বার্য্যশালী, তিনি যে নার অনুরাগ অন্তর্হিত হইয়া থাকিবেক। কোন এমত ক্**থন্ট কেছ মনে** ক্রিতে পারে না; নষ্ট ক্রা নিশ্চয় ক্রিয়া অভ্যস্ত নিধুর ও নি-ফলভঃ হিন্দুখানে এমত ভদু লোকই বা কে দিতে উপায়-দকল কণ্ণনা করিতেছেন। রাজা পরিভাগে করিছে পারে? শের অভি প্রধান রিত করত অনুমতি দিলেন, যে "কোন্ বনে ভদ্বংশায় এবং প্রাবাধ মহামান। তিনি ব্যাঘাদি হিংলু জন্ত আছেম। কর"। টকোমেনিহা-দেশে অতিভদুকুলে জন্মগুহণ করি । অবিলয়ে সংবাদ আইল, যে নিদারবারি-বনে া যাবৎ বৌৰলাবস্থা কেপণ করিয়াছিলেন: এক অতি প্রকাপ্ত ব্যাঘু আছে; ভাচা ডৎ-অর্থাৎ ব্যাদ্রার বছাতে বহা করাতে শের আক্গান্ নেই বনাভিমুখে যাত্র! করিলেন। কিছু দুর থা-नाम धार हरका जिल्हार नकरनत निकछ जिल किए मुनशार्थिमरनत तीकान्नारत हरू नाम हरेड এ নামেই পরিচিত ছিলেন। অক্বরের যুদ্ধ- সেই বন বেষ্টন করিয়া সকলে একতে নিলিতে কাজান তিনি অভ্যন্ত অন্তুত ক্ষমতা প্রকাশ করিন। আরম্ভ করিল। পরে ব্যায় বোরনাদ করিয়া

मश्रीत्यत खेशाधिक नाम।

জুদ্ধ হইয়া উচিবে, রাজা সেই শব্দ শুনিয়া অভি-বেগে সেই দিগে চলিলেন।

যখন নকল প্রধান বারগণ আসিয়া একত্রিত হইলেন, তথন রাজা জাহান্সার উল্লেখ্যের জি-क्वांत्रित्वन, "जामाहिरगद्ग मरधा बकांकि क অপুসর হইয়া এই ব্যাঘুকে আক্রমণ করিতে পারে "? সকলেই অবাক হইয়া পরস্পার অবলো-कन कतिरं वाशिन। भरत नकरन स्नित व्याक्-গানের প্রতি দৃষ্টিপাত করিলেক, কিন্তু বোধ হইল, যে তিনি তাহাদিগের অভিপ্রায় বুঝিতে भारतन नाहै। चदरभारय भिहे वोत्रठक इहेर जिन হাদ উমরা ও অগুসর হইয়া শঙ্কা-পরিত্যাগ-পু-र्वक প्रार्थन। कतिन, य "महाताक जामानि-গকে अनुমতি कद्यन, আমরা যে কেছ এক वाक्ति এই পশুকে महे कतित्र"। ইহাতে শেরের আন্তরিক পৌৰুষ উচ্চুদিত ইইয়া উঠিল। তিনি মনে করিয়াছিলেন যে "এ দুংসাহসী কর্মে আর কেছ সাহন করিতে পারিবে না; আর নকলে যখন অধাকার করিবে. তথন সহজেই আমি এবিষয়ের যশোলাভ করিব", কিন্তু দেখিলেন, যে তিন জন অগুসর হইয়াছে, এবং তাহারা श्रथरम अपूर्वि रुक्ताटक अवियदा युकी रहेन, এক্ষণে ব্যাঘুের বহিত যুদ্ধে তাহাদিগের অধিকার জন্মিয়াছে, ভাঁহার যে পূর্বখ্যাতি ছিল, বুঝি তাছা এতদিনের পর দুর হইল। এই বিবেচনা করিয়া শের সর্বনমুখে কহিলেন, '' অন্তদারা কোন পশুকে বধ করা অতি অবোগ্য, এবং কা-পুরুষতা; পরমেশ্বর পশুকেও যেমত হস্তপদ म्डामि श्रमाम कतिशास्त्रम, मनुबारक अन् মত সকল দিয়াছেন; অধিকন্ত মনুব্যকে অনা-धातन-क्रमण-मानिनी वृषि चनित्रक धारान

অযোগ্য"। শেরের এই কথা শুনিয়া অপরোর ইমরাওরা তারিকদে এই প্রত্যুক্তর করিলেক, বে "মনুষ্যমাত্রই ব্যাঘুগছতে দুর্বল, অতএব তাহাকে কেবল শক্তবারাই পরাল্লয় করা যাইতে পারে"। শের উত্তর করিলেন, "আমি তোনাদিগের এ ভুম দূর করিতেছি"। এই কথা কহিয়া আপনার অসিচর্মা-পরিভ্যাগপূর্বক নিরম্ভ হইয়া যুগ্রে যাত্রা করিতে উদ্যুক্ত হইলেন।

যদিও রাজা ইহাতে শেরের নিশ্চিত মৃত্যু মনে করিয়া মনেহ অত্যন্ত আহুদিত ছইলেন, কিন্তু বাহে৷ সে ভাবকে গোপন রাশিয়া এমত অসম-নাহনিক কার্য্যে প্রবৃত্ত হইতে শেরকে নিবারণ করিবেন। শের একান্ত দৃচপ্রতিক্ত ছিল, ষ্মত-এব রাজা লোকতঃ আগন ইচ্ছার **অভিশয়** ইচ্ছাস্বৰূপ খনিড়া প্ৰকাশ করিয়া সমত হই-लिन। मकलिरे चान्ध्यायिक इरेल, कथन শেরকে মহাবীর বোথে মনে২ প্রশংসা করি-**ट्या**ह. कथन वा नईट्याडाटन पृथ्माइनिक काट्या প্রবৃত্ত দেখিয়া আক্ষেপও করিতেছে; কিন্তু উপায় ना (पश्चिम्न) नकरल निखन्न इहेम्रा बहिल। व्यारचुन সহিত শের আফ্গানের যে প্রকার যুদ্ধ হয়, দে বিষয়ে অনেকে অনেক কথার বি**ন্যাস ক**রি-য়া লিখিয়াছে, কিন্তু মে সকল বিশ্বাসযোগ্য নহে। কথিত আছে, যে ব্যাপক্ষাল যুদ্ধ করি-য়া অবশেষে শের জয়ী হয়েন। এ অসাধারণ কার্ফোর সম্পাদনদারা শেরের প্রতিষ্ঠা অভাস্ত বন্ধিত হইয়া উঠিল, এবং রাজার মন্ত্রণা বিকল **रुरेल। शत्रस्र द्रा**जात रेराटा मात्र चाक्शान्तक নও করিবার ইচ্ছা নিবৃত্ত হয় নাই; তিনি উপা-য়ান্তরের চিন্ত। করিতে আরম্ভ করিলেন।

ধারণ-ক্ষমতা-শালিনী বৃদ্ধি অভিরিক্ত প্রদান শের আক্গানের শরীরে ব্যাত্যুর নথদস্তা-করিয়াছেন। তাহাতেও পুনঃ অত্তধরা অভীব ঘাতে যে সকল ক্ষত হইয়াছিল, তাহা সুন্দর-

" जुनै अक वनरान् इंडिएक मम्। भानहात्रा विमास इट्टनन। উন্তু করাইয়া এক নজার্ন পথের নথে দন্তায়- এই ঘটনার পর রাজা ছয় মান পর্যান্ত শের-धारकः; अञ्जाव देशारा आमात প्राचि किह वड़ रहेलन, जाहात किहुहे निगंत हहेल ना। गत्मार कतिय ना"।

মাহত রাজার আজানুদারে দেই প্রকারে ছস্তিকে দণ্ডায়মান করিয়াছে: এদিগে শের শ্বীয় যানালোছনে স্থানে প্রত্যাগমন করিতে-ছেন, এমত কালে তিনি পথিমধ্যে মত হতি দেখিয়া বাহকদিগকে পর ওমুখ হইতে কহিলেন, একাবিপত্য থাকে, মেখানে রাজাদিগের তো-ইভোনধ্যে হস্তি ভাঁহার প্রতি ধাবিত হইতে ল্গিল। তদ্ধে বাচকেরা পথ মধ্যে যান নি-किथ कहिया थान छात्र नकरन शनायन कहिना শের দেখিলেন, ঘোর বিপদ্ উপস্থিত: অত-এব ভংকাণাৎ মানগুইতে বহিগত হইয়া কটি-দেশত কৰি নিকোষ করত সেই হতির শুণ্ডে আঘাত করিলেন; ভালতে হত্তির শুও এক কালে ছিল হইয়া গেল; ও হত্তি বৃংহিত ধুনি করত ধ্রাতলে পতিত হইল। রাজা গোপনে এক গ্রাক্ষ্ইতে এই সকল ব্যাপার দেখিতে-ছিলেন; শেরের অনামান্য পরাজন দেখিয়া কারের কার্য্য নির্বাহ করিতে মানিবেন। তাঁহার

ৰাপে আরোগ/হট্তে না হইতে তিনি রাজার । লভ্জিত ও চনৎকৃত হইয়া প্রহান কুরিলেন। বহিত সাক্ষ্যত্ত্বাভিলাকে তথ্সমীপে আ- পরে শের রাজপুরে গ্**মন করিয়া নিঃসংশ**য়ে গমন করিখাতিখন; তাছাতে রাজা তাঁছাকে সকল বৃত্তান্ত রাজার নিকট নিবেদন করি-অতিসমাদ্য করিলেন, সূতরাং ভাষাতে শেরের লেন। রাজা আপনার মনোগত ভাব গো-মনে কোন ভিন্নভাব বোধ হইল লা। রাজা পন করিয়া বাহ্যতঃ শেরের বলবীর্ঘ্য-বিষয়ে শেরকে ব্যু করিবার নিমিত্ত দ্বিতীয়-কুমস্ত্রণায় আনেক প্রশংসা করিলেন; তাহাতেই শের व्यक्तिशालान अंक माल्किक कश्चित्राहित्वन, या श्रमहित्व मञ्जूष्ट हरेया द्वाषाद निक्षे हरेट

মান কর; শের আফ্গান্ যেমত সেই পথ কে বধ করিবার আর কোন চেষ্টা করেন নাই। দিয়া গমন করিবেক. তুই অমনি ভাহার গ্রভি ইহার কারণ কিছুই স্থির হয় নাই। কি রাজা অমা-হাতিকে প্রেরণ করিয়া দিশ্, তাহা হইলেই কৃত - কন্নিসার অনুরাগ ছায় মনহইতে দুর করিতে कार्य इन्ड्रा याहेरक "। दाशांत मत्म हिन त्य क्षेत्र कहित्क हित्सन, कि बीय प्रदिश्वत श्रे कि मृष्टि-ণ এ প্রকার ঘটনা প্রায়ঃ এদেশের মধ্যে ঘটিয়া। পাত করিয়া এমত কুকার্য্যে প্রবৃত্ত হইতে বিরত

> শের আফ্গান্ ইত্যবদরে, বজদেশে পুনরা-গমন করিলেন। রাজা শের আফ্গান্কে নষ্ট করি-वात (ग नकल मञ्जन। क्रियाष्ट्रिलन, ठाए। नक-त्वित्र क्वाउमात क्वेशा**हिन: मर्त्रा मकन** लाएक अ कथा बहेश चार्त्मानन क्रिका य बारका बाकाव यात्मात्मत व्यक्तत कि? त्राकात यथन याश रेक्श হয় ভথনি ভাহাতেই সকলে পোষকভা করে। वक्रमानात मुवामात कृष्ठतृषीन अरु अकात अक জন তোষামোদকারী ছিলেন। তিনি রাজার প্রিয় হইবার নিমিত্ত তাহার বিনানুমতিতেই শে-इत्क वंध क्रिवांत উप्पाणी एहेलान, ७ ज्डाना 84 जन मन्। नियुक्त कतिका ताथितन। मानन, যে যথন অবকাশ পাইবেন, তথনি শেরকে নত করিবেশ্ব শের কুতবুদ্দীনের অভিপ্রায় অব-গ্ৰ ছিলেন। ए ख्यांशि निः तर शास भारत व्यदि-

মধ্যে প্রবেশ করিল।

लन। प्रमूर्णाप्ता साथा कवक वाकि म्हारक माराब श्रहात कविरव"। নিদুত মনে করিয়া অপে ২ দিঃশব্দে তাঁহার ্শেরের এই আদুত বারত্বের কথা সহত্য প্র-" वीद्रित मात्र कथा किसाइ म, अहे वाका बिनिया **७० जनार ज्याहरूट शाद्याचान कतितन, ७** ভাঁহার পার্শহ শাঞ্তি অবি শুহ্ণ করত গৃহের वक कारन मधात्रमान क्वेंटनन। मख्त्रा नक्टन

ৰীয় বাহুবলে এত বিশ্বাস ছিল, যে তিনি চতুদিগৈ বেষ্টন করিয়া ভাহাকে আক্রমণ করি-রজনীতে কোন ভূত্যকে ভাহার ভবনে থাকিতে ল: কিন্তু স্বত্পকালের মধ্যে তিনি ক্সাহাত্ত বলিভেন না। তাহারা নিদিষ্ট-নিয়মানুসায়ে য় ২ দৃশুদিগকে কভবিক্ষত ও শোণিতাক্ত-কলেবর গৃহে আসিয়া শয়ন করিয়া থাকিত, কেবল এক করিয়া ফেলিলেন। শরাজিত ইইয়া প্রাণ্ডয়ে জন প্রাচীন দ্বারপাল শেরের শয়ন-মন্দিরের নিক- অনেকে তাঁহার পদ ধারণ করিয়া রহিল; টে অবস্থিতি করিত। ममु/রা দেশের বার্ত্তা বিল- 'মবিশিষ্ট 'অনেকে পলায়ন করিল। শের **য**ীয় ফণ্ট অবগত আছে; এদেশের লোকে কথন যে মহতু প্রযুক্ত কাছারে। প্রাণ বধ করিবেন কে কি করে, তাঁহা তাহারা ভালই জানে। শের না; কিন্তু অন্তেরের অধিক দস্য তাঁহার আফ্গানের ভবনের বহিদারের দক্ষিণ-পার্শে অজে আচ্ত হইয়াছিল। যে বৃদ্ধ তাঁহাকে জা-তাঁহার লিখিবার পড়িবার একটি গৃহ আছে, গৃত করে, দে আর পলায়ন করিল না। শের তাহা দিয়া তাঁহার শায়নমন্দিরে প্রবেশ করা ভাহার হত ধারণ করত তাহার নচ্চরিত্র জন্য याय। यथन विवक्षण अञ्चकात इरेंग्रा आहेल, जथन जाहारक माधुवान कतित्वन, अवः कान् वाकि-प्रमाता वृक्ष तक्क करक व्यनुशिष्ट्र पिथा याणीत कर्ज़ अहे कूरिशंख वालात कर्ज़िक इहेशाएए, ইহার দবিশেষ ভাছার নিকটহইতে জ্ঞাত হই-নিয়মিত-সময়ে প্রধান ভার কজ হইলে পর য়া ভাছাকে যথেষ্ট পুরস্কার করত বিদায় করি-শের আপন প্রমদার সহিত পর্য্যক্ষে শয়ন করি- তেন কবং কটিয়া দিলেন, "তুমি সর্বত্তি এ বি-

শরন-গৃহে প্রবেশ করিল। তাছারা সম্পূর্ণ প্রস্তুত চারিত হইরা উঠিল। এই কথা শুনিয়া ইহার হুইরা শেরের শরীরে অক্তাযাত করে, এমত সময়ে স্বিশেষ জ্ঞাত ছুইবার মানসে শেরের নিকট ভাহাদিগের মধ্যে এক ব্যক্তি অভি প্রাচান সর্ব্য শত মতুষ্য আনিতে আরম্ভ করিল। मश्राय आमु इरेशा উटेंकश्यत विलन; " अतः मित वित्वहना कतिलन, "त्य आह आमात দুরাত্মারা স্থির হও, রাজা কি আমাদিগকে একানে এখানে \* থাকা কর্ত্তর নছে; আমি এইরপ অনুমুতি করিয়াছেন? পুরুষের কার্য্য আমার পূরাবাদ বর্জমানে যাত্রা করি। সেধানে कर्; 80 **ए हिम राक्ति अकवारन अक जन मैनू** शिया बक्त्या शालनहारव क्रमोकन्निमारक नहें या বের প্রতি-বিশেষতঃ এক জন নিদুত মন্ থাকিতে পারিব"৷ শের জ্ঞাত ছিলেন না, বৈ यात्र প্राज-व्याक्तमन कता कि **डे**िक "? अहे किवन डीइ।दिक नहे कतिवाद उत्पर्दमहे कृ उत्पर्दान खर्ममाग्न (मात्रत निम्न एक इरेन, अरः जिनि वक्षापामात्र मुवामात्री शम श्रान्त इरेग्नाएं, अवर म कि कथन जालन श्रजुत डेस्मना-नाधरन कि-**८ मार्किट कार्किट कार्म केशा**त्रवाही भारतक वह

<sup>\*</sup> ब्राजयक्र से।

कहासास, कुछत्कीन हेश मरन ६ जानक विरयहमा। अधहरेर जात बहाजरम निश्विक इहेरकन।

করিয়া অবশেষে সৈন্সামন্তের সহিত বয়ং শের এতাদ্শ অযোগ্য কর্মা দেখিয়া অভ্যস্ত সুসজ্জিত হইলেন। প্রধান রাজধানী রাজমহল- ক্রোধান্তিক হইলেন; বুঝিলেন যে "ইহার প্র নগরে সময় কার্য্যকর্মের ব্যবস্থা নির্দারিত ভুর অনুমতি না থাকিলে কথালি এমত অন-করত ক্রিক্তিপয় প্রধান ২ কর্মকারিগণের স্তব ব্যাপারে ইহার সাহস হইত না: অভএষ ममिडियादा अधीनम् जनगन्। कूमू २ हाक- न्नाष्ट्र मृष्टे इहेटहर्छ, य आमात आत्नित्र श्रुडि লার বাষ্ট্রার ত্দন্ত-করণের ছল্নায় যাত্রা করি- আঘাত হয়, ইহার মধ্যে এমত কোন কুমন্ত্রণা লেন, এবং ঐ যাত্রার তিনি একেবারে বর্দ্ধান আছে ''। এই বিবেচনা করিয়া তিনি সেই চাকলায় আসিয়া উপস্থিত হইলেন। বাদশাহ শুল্পারিব প্রতি কোপদৃষ্টি করিয়া কহিলেন, জানীজার তাঁহার প্রতি শেরকে বধ করিবার ভা- "ওরে তোর কি প্রাণের ভয় নাই"? সে রাপন করিয়াছেন, তিনি একথা স্বীয় অমাজ্য- এই বাল্য-উচ্চার্<del>ধ-সময়ের</del> বিকৃতভাব দেখিয়া গণের নিকট গোপন রাথেন নাই। রাজভক্ত সভারে ধরাতলে পতিত হওত কৃতাঞ্জলিপূর্বক আমীর শের আফ্গান্ শুনিল, যে সুবাদার কৃত- পেরের নিকট ক্ষমা প্রাথনা করিল। এদিগে শের বৃদ্ধান বন্ধমাননগরে আগমন করিতেছেন। এই তথন দেখেন যে চতুদিগ্রুইতে শাণিত ফরবাল কথা শুনিয়া সুবাদারের মভার্থনার্থে তিনি কে- কোষমুক্ত হইতেছে। তিনি অমনি তৎক্ষণাৎ यत पूर्वेषि ख्रा मह्म बहेश क्याताहरन का- कूल्या निक्षे याहेश कामाति ख्य केत्र अक পনি অগুবর্তী হইয়া তাঁহার সহিত সাক্ষাৎ অসির আঘাতে কুত্তকে মন্তক ছিল্ল করিলেন। করিতে গমন করিলেন। কুতর্দান শেরকে দে- কুপ্রবৃতির এই কল! কুতর্পাপাচরণছারা রাজার থিয়া অতিবিনীতভাবে স্বাগত-প্রশে মহ্যাদা- সম্ভোষ করিতে গিয়া অবশেষে আপনার প্রাণ পূর্ক সন্থাষণ করিলেণ; এবং ভাঁচারা কিয়ৎ- ছারাইলেন। কেবল সুবাদারকেই বধ করিয়া কাল অশারোহণে উভয়ে উভয়পাখবর্তী হইয়া শের নিবৃত্ত হইলেন না। তিনি অপর প্রধান ২ मानाविष्यक्षेत्र कर्याणकथन कहिए ३ ए विएक देननाथाक मिरान छे अब विकास करें লাগিলেন। কিয়দূর এইকাপে গমন করিয়া কুত্র ভারাদিগের সংখারে প্রবৃত্ত হইলেন। এই যুগে অক্ষাৰ তির হুইলেন: এবং নগর-দশন করি- e মহনু অথের অধিপতি কাম্মীরনিবাসি অ-বার উপলক্ষ করিয়া সুসজ্জিত প্রধান হতি মার আবা খাঁ প্রথমতঃ প্রাণভাগে করেন; শংলিতে অনুমতি দিলেন। হস্তি আইলে সুবা- অনস্তর অপর চারি জন অমীরও নিহত মাণ তদপরি কারোহণ করিলেন। যথকালে কুতব্ ত্ইলেন। শেরের হতে স্থার কাহারো নিভার 'कण्ट नमादाए श्रद्यम, जथम स्मत शूर्ववर नाहे, याशात श्राचि चाक्सन, फाशाति चमनि भ्यारहाकी व्वेदा जाँकात नम्राथ प्रशासमान का- नःकात। क्विनिष्ठे सामाहा (सादात विक्रम ্ডন ইতিমধ্যে এক, ব্যক্তি শ্র**থারী, শের দেখিয়া চন্ত্রত ও মনেছ পড়ান্ত** ভীত १८% मरथा प्रकाशमान चार्**ड, क्षे इन कतिया रहेन। शरत नक्रम किश्चित्र** अन्तर्क इन्डिड ভাঃ ে অংকে এভাদৃশ আয়াভ করিল, যে শেরকে চফুর্দিরে চক্রবৎ বেইন করিয়া একঃ

ভর্ননা করিতে আরম্ভ করিলেন, "ধিক্ কাপুরুব! यमि তোদের পৌৰুষ থাকে, তবে আয়, একেং আমার সহিত যুদ্ধ কর্"। কিন্তু তথন শেরের কথা কে গুৰুত করে? শের ক্রমে আছত হইতে लाशित्वन; এবং দেখিলেন, যে তাঁহার আদর কাল উপস্থিত। অনস্তর তাঁহাদিগের তার্থস্থান মক্কার দিগে মুখ ফিরাইয়া সানাভাবে কিঞ্ছি খুলিগুহ্ণ করত মন্তকোপরি নিকেপ করিলেন; এবং সমস্ত অন্ত্র শঙ্ক পরিত্যাগপূর্বক যুদ্ধেতে বি-রত হইয়া ত্রিভাবে দপ্তায়মান রহিলেন। পরে তাঁহার শরীরের স্থানে২ ছয় গোলা প্রবিষ্ট হও-য়াতে তিনি ধরাতলে নিপতিত হইলেন, কিন্তু यावर जाहात परहरा श्रीनवाय हिल, जावर कान याचा गाइन कतिया जाइत निकटे याहेत्ड পারে নাই। তাহারা ঈশ্বরের সলিখানে শেরের বারবের অনেক প্রতিষ্ঠা করিল, এবং তাঁহার যশো-বর্ণন-বিষয়ে জ্ঞাপনহ ইচ্ছাননারে জ্ঞানক वाका-ब्रह्मा कतिशाहिल। कू उत्कीर मृठ इहेरल य रेमन/। ध/क रमनात कर्ज्बलम श्राप्त इह, रम শোক্ষাগরৈ পতিত ইইয়া পাছে প্রাণপরিত্যাগ करतः किंत गृहर भिद्या (मर्थन, स्य व्यक्तीकन्तिमा

কালে নকলেই ভাহার ৯তি নালা অন্ত্রনিক্ষেপ । ধৈর্যগ্রবল্যনপূর্বক শোকসম্মণ করত অবস্থিত করিতে লাগিল। কৈহ পুংখানুপুংখ বাদ-স- আছেন। অমীকন্নিসা এমত প্রগাঢ্জোকের-कान किंति उटहः (कह भान भून निर्माण किंत- विशालात जोहात सरम्भीत खीमिर्गत निर्मात कि তেছে; कहर व। वर्षाकारमञ्जिद्यातात नामा (भाष कान विमाल करतन नाहे; अवर के कित সহসু ২ গোলাগুলি-বর্ষণ করিতেছে; ইতিমধ্যে আত্মদোষ খ্যালন করিবার নিমিস্ত তিনি প্র-তাঁচার অশ্বের ললাটে এক বন্দুকের গুলি প্রবিষ্ট কাশ্যরূপে এই ছলনা করেন, 'বে আমার পতি হওয়াতে অশ্ব পতিত হইল, সুতরাং শের অন্য , আমার প্রতি যে আজ্ঞা করিয়া গিয়াছেন, আমি কোন উপায় না দেখিয়া যোদাদিগকে এইৰূপে তাহাই পালন করিব"। তিনি ব্যক্ত করেন, যে "শের পূর্বইতে জহান্তারকর্ক আপনার বি-নাশ জানিতে পারিয়া আমার প্রতি এই অনুনীতি করেন, যে আনার মৃত্যুর পর তুমি বিনা আপ-ख्टिक कहाकोस्तर मठानुवर्खिमी **इहेरव** । **विनि** এই कथाव (य नकन প्रमान ও यूक्ति मर्भारेतनन, তাহা িত্ত অপুহে ও অমূলক। তাঁহার কথা এই যে শের আপন অভুত কান্তির লোপ হইবার আশকায় আশন বনিতাকে হিন্দুত্বনের রাণী করিয়া ভাষার কীর্ত্তিকে চিরস্বায়িনী করিষার ष्याच्चियं क्रियाहित्वन।

দিল্লাতে রাজা খায় বিশ্বস্ত ও প্রভুতক্ত ক্ত-বুদ্দীনের মৃত্যুশংবাদ জ্ঞাত হইয়া অভিনয় শো-काछ इ**हेरलन। कथिङ** आह्ह, यि जिनि अभोकन्-নিবাকে পরমবিখানপাত্র কৃতবের মৃত্যুর কারণ . জানিয়া প্রতিজ্ঞা করিয়াছিলেন, যে আর তাহার मूथावरलाकन कतिरवन ना; किंख अमोकन्तिनात সৌন্দর্যা ও সম্প্রনে তাহার মন শী**ঘুই পরিবর্ত্তিত** হইল৷ তিনি বছকাল অমীকন্নিসাকে প্রধান রাজনহিধী করিয়া হিন্দুস্তানের আধিপতা করি-चित्रिक्ष अनामक (चारते छवरने याजा कतिन। पाहित्तम। वापनाक सकाकोत चन्नोतन्तिनारक उँशिव मान अहे राष्ट्र वानिका छेशांडि रहेशा- नृदेखहान \* नाम प्राप्त कार्य । उथा अहासहास हिन, दि कि क्वांनि योरि व्यक्तिमा वालात जाहात नाम वित्रमत्रनीत-कत्रवास्त्रिशास्त्र छ ...

<sup>\*</sup> কগতের আলোক। ।

কালের প্রছলিত ফান্দুতে নিমুলিখিত বাক্র মুদ্রিত করাইয়াছিলেন। তদ্যথা,

> مجتم شاه حراناً به مافت صدر بهور بقام فور جهان ماناشاه میشر رو

ণ জহাজীরের আজ্ঞায় মহারাণী নূরজহানের মামপ্রভাবে নূবণ শতালঙ্কারে বিভূবিত হইল"।

১३৬১ माल, **६ काल्य**न ।

मूर्ग ७ लोए्ड विवाम।

করণ-বিষয়ক-প্রস্তাব-রচনান স্তর প্র উভয় প্রাত্র যশোবর্ণন করিতে আ-মাদিণের মানস হইয়াছিল; ইতো-

মবে। তিষিষয়ক নিমুত্ব প্রাচীন প্রবন্ধ কোন কুলাচার্য্যের নিকটছইতে প্রাপ্ত প্রসাতে তাহা সমাদরে
প্রকৃতিত করিলান। অধিকস্ত এবিষয়ে এক জন
হিন্দুখানী কবির চাতুর্য্য-প্রদেশগার্থে টিপপর্নাষক্রপে তাহার প্রবন্ধইতে কএকটি পদও উদ্ভ্ করা গেল। পাঠকবৃদ্দ অনায়াসেই জ্ঞাত ছইবেন, যে সূত্রুর কুলাচার্য্য হিন্দীর তনৎকার শোযাত্রন আপন রচনায় কোনমতে প্রকাশ করিতে পারেন নাই, নির্থক বছশক্ষ অনেকস্থানে
প্রয়োগদারা রনের জনেক ব্যতিক্রন করিয়াছেন।

ন্ধার উদ্ভায় শুন দৈবের ঘটন।
লৌহ-গণে বিবাদ হইল যে কারণ।।
কৈলাশনিখন মধ্যে অপ্তথাতু ছিল।
তার মধ্যে লৌহ আসি অর্গকে নিন্দিল।।
"নির্গুণ হইয়া কর কাপের গৌরব।
নির্গুণ হইয়া যেবা বাচে পৃথিবীতে।
উচিত না হয় তার মুখ দেখাইতে"।।

चनरा छाणित वाका नरा नीहि एत। जन्म मुख वन एक अहब मा वर्ग रतन " लोह जूमि होनवर्ग हल। আমার সঙ্গেতে যুব সমতুল্য নও।। উত্তমে অথমে যদি হয় বাক্য ব্যন্ত। व्यथरम ছाড़िस्स मीय উভमकে एस।। উত্তমকে বাক্যজ্ঞালা মৃত্যু তুল্য হয়। णासम्बारक अनावारक, (केंद्रम कथा करा।। ত্রিভূবন মধ্যে আমি উত্তম ভূবণ। উত্তম বলিয়ে नत्व करत्र चाकिश्वन।। উত্ম স্থানেতে বলি উত্তম চরিত্র। আমার ধারণে হয় শরীর পবিত্র।। উত্তম আমার মূল্য, উত্তম সে জানে। ९ উত্তৰ নহিলে কেবা অধ্যে বাখানে :। তোষাতে আমাতে চল সভামধ্যে যাই। কাছারে আদর করে বুঝিব বড়াই।। যাহ যাহ এথাছতে উঠরে একণে। পতঙ্গ, যুঝিতে চাহ গৰুড়ের সনে '' 🔢 क्रिया खिमशा लोह, क्रांस्थ चक्क काल। আগন গৌরব করি **বর্গে কিছু বলে**।। " আমি যেই করে দেই ভোমার নির্মাণ। **उँहे मि नकरन करत कामात मधान**।। रम् डेन खाकान चारि मीच महारह। আমি নে খনন করি পর্বত শিখর।। অর্ণ্য কাটিয়ে **আমি নগর বসাই**। म्थ प्रिथ कि अकारत जन्मी बाखाई।। ष्पामाहरू मध निस्तृ हरस्रह छे० नम्। পুরাণেতে গুন না রে, পাপিষ্ঠ জঘন্য।। व्यामात्र'श्रकारव वीना बर्बक्रीरव थाता। ्यामाद्यः नई लाक छटा जान भारत। भर्छक्रक निक यत्व समिदिक हम। कामहित्य सहेदम् कदम् ना ज़ित्क स्ट्रम्य ॥

मृতिका-मन्दिद ब्राह्थ जामादक मुद्रादत । मुष्टे প्रावी नष्टे कारत कहिए ना शास्त्र ॥ म्डाटमोह देहरल (मथ काम्द्रक व्यागद्र)। षाकिकन कति जात्क धत्रस्त्र महोत्त्र।। खीरनारकत हाएं जो ह नधना बक्न। क्या-मृजु/-काट्म क्रीह পতিতপাবन।। कार्ष्ठत (लथनो (यह कति न्मिणि । বেদশান্তপুরাণাদি হয়ত লিখিত ॥ 🚓 আমা ছাড়া কোন্ কর্ম আছে পৃথিবীতে? বিবেচনা করে বুঝ কহি রে ভোমাতে।। म्हामाद्या (याः वन काषा यात् वन। সহজে দুৰ্বল ভূমি লোছাগাতে গল।। কিঞিৎ ক্ষমতা যদি থাকিত তোমার। না জানি কি নথে ক্ষিতি করিতে বিদার।। স্ব্বিণিক্ মুর্ণকার বিক্পরায়ণ। তোমার সংসগে ভুষ্ট হ'ল দুই জন"॥ একথা শুনিয়া ধর্ণ আরক্ত-লোচন। नक्षाकारक मृर्य) यम लाहि छ- दहन ॥ सर्व दरन, " यूगथर्म्य जब देश्व इन्छ। नोह देश्व डेक्टबाबी डेक्ट देश्व नड ।। चारान इहेन द्वान कृत्रकर कन। পাপিষ্ঠের মুখে গর্ব গুনিতে গরল।। যাহারে দেখেছি পূর্বে অখ-পদতলে। त्महे वाक्ति कर्षे छेक्ति भागात य वदन? **ভোমাতে ভামাতে দূর লক্তৈক যোজন। দেবতা-मस्टरक कामि मूक्**षे-्कृष्व।। मन्य-महीरह आमि माना अलकात। যতনে রাখিছে মোরে গলে করি হার।। मनि-मुका-श्वाचारि यठ इञ् चाहि। चार्वाटक व्यक्तिक देश्दश केव्यन स्टब्स्ट ।। बद्ध केलगा सिद्ध कामि (न अधान। बबर बब्दी निकटस्टर द्यादव मिन ज्ञान।।

সূর্যোক্ত কিরণ কৈতে अधिक नत्र। কেবা না দেশ্বয়ে নোজে কিরায়া নয়ন আমি যার ষরে থাকি হইয়া সদয়। আনার প্রবাদে তার দারিদু পরয়।।। সুখোর বাঞ্চায় यদি মোরে দাশ করে। च्यमङ्था त्रव्यत् चर्ग जूदक्ष स्पर्वे नहाः।। कीवटन बद्रदेश वर्ग नट्द हैस् काम्याः মুখাগ্নি কালেতে বলে 'ৰৰ্ণ কোথা ক্ষান'।। যার ঘরে সূপ্রচুরে **আলা**র বসতি 🖂 ঐ**হিক সম্পদ অস্তে মোক্ষ** তার গ**তি**।। ভোমাতে আনাতে আছে গুড-শিষ্য-ভাব। ব্থা বাক্য ব্যয় ইথে নাহি কিছু লাভ।। मानगारम चर्रतथा नक्तीनातायन। 🧦 ক্ৰকে**র হাতে হৈল ভাহার ম**রণ।। ্লাহ ছাড়া কোন কৰ্ম মাহি পৃথিবীতে। রখনি কৰিলি ভূই আমার সাক্ষাতে।। भक्त वर्षे भिन्न काष्ट्रे एक्टरतत करतः। গোহত্যার হেতু আছ কনায়ের মরে।। চন্দারগৃহে আছু নানা তন্ত্র হৈয়ে। ভাব-হিং**না-হে**তু আছ পৃ**থবা ব্যাপিয়ে** ॥ हिः नदक्त मृत्रवन्धा शरम शरम इय। বেহায়া হিংসক তবু হিংসা না ছাড়য়।। হিংসা পাণ ছতি মন্দ কভু নহে ভাল। हिश्मात्र,कातर्ग कात वर्ग देश्व काल।। হিংসার কারণে তোর অণ্পমূল্য **হৈল**। অষ্টধাতুমধ্যে তোরে জঘন্য করিল।। ছিছি রে বেহায়া লৌং বেহারার চূড়া। মরা ভালে ডাক যেন কাক মাথামুড়া "।। लोट्ड ब्लाट्ड क्या डिलमा कि पिय? कन्दर्श-निध्दन यथा इत्यक्टिन् भिर्व ॥ "त्रिक साना यदन यादन टकोटन अक बाम। तिरे व*िक रूपक* काम आमात समान।।

व्याणन अञ्चल (भई वृद्ध यमि एला। **उदम** दिनशा ठरव नकरनट वरन ॥ चर्न ना थाकित्व शृथी अनाशांत्र दश। (लोक ना थाकि**टल मही त्रनाजटन योग**।। প**ে যেতে তুমি স্বৰ্গকে থাক যার।** ঃ জা কি করিবে ভারে প্রাণে বাঁচা ভার।। তামারে ল্ইয়ে যাউক্, লিথে দিতে পারি। यिन जात विघु रह तृथा माम सति।। यर्नात्म यर्गएडांग व्याणीन वाथान। কিন্তু ৰিলে হত মান তাহা কি না জান? ৰণ নিলে কুলক্ষয় পতিত-ঘোষণা। কতকাল ভোগে নেই পাপের যন্ত্রণা अरक कत सर्गवानि चाद्र च**रधानामी**। তোমার কি দশা হবে তাই ভাব্চি আমি '' !! লৌই বলে, ''ফ্লোমার ক্ষমতা যত আহে। क्ति अन्तर्भाष्य का विकित्र-इत्स्ट्रहा **ত্রেতায়** জানকা হরে ছিল দশানন। আমাছতে ভর্লক্ষা-রাবণ-শিধম।। कृकवः मं ध्रम देश्व व्यासात (क्रशात) क्छी नुष बका शाहेन विशम-बंधेत !! षामि त्म करत्रिष् यञ मञ्जारम विक्रमः। जात्र शत **करत्रहिनाम् यपूरः भ-कन्न** ।। দুঞ্জের দমন করি মহতের হিত। সর্বকাল আছে মোর কুলে এই রীভ।। नष्य-यूष्पाट्य यात्र माथा काष्ट्री मात्र। चनायारम चर्त्रवाम श्रुवारनटक शास्त्र।। অম্লা আমার মূলা তুলা হইবে কে? (मत्राव (मर्थ (माद्र माथात्र द्वार्थ्यहर्गाः व्यामाहर्क स्वदाक हम वक्क्षत । ভাষাহণতে শ্লপাণি হ'লেন শক্ষা আমাৰ্তত চক্ৰপাৰি হন মান্তাৰৰৰ কৰে। क जिम्छे वर्षा काटक श्राह्म नामान्य 🗀 🗀 🖂

माना निकास का माना के का करता।
मूक दिन निकास का मूक कर्या नहा।
स्वामिन स्व कान का का कि कि निकास का यात ??
स्वामिन स्व कान का का कि कि निकास का यात ??
स्वामिन स्व कि का कि का का का का का कि का का ति का वा ति ?
स्वामिन के का कि का कि का ति का ति वा ति ?
स्वामिन के का निकास के का निकास का ति का ति ?
स्वामिन के का निकास के का निकास का ति का ति ।
स्वामिन के का ति का ति का ति का ति ।
स्वामिन के का ति का ति का ति ।
स्वामिन के का का ति का ति ।
स्वामिन के का का ति का ति ।
स्वामिन के का ति ।
स्वामिन के का ति ।

#### \* श्री वाममुक्तवः घष्टकः

**ি সুম্বন্**করো **গণেশকো ধরে। ভ**তানীধ্যান। कारक सन्न सिंध् लाक्टिन कविटका बाटक खन्न ब यर् क्हा रहिर्भणी छनिया हरूत भूकान। क)। ८५। ८मारा कर बंदा करा करत है। ८मान ह यगपः। लाह मान्यमें वेत्रवी तकी हसाव। नाकीरनाका स्मारमाहम वह स्कान् रहन दक्षाव लान करी तांड, " लाह हाक्य त्यदा। ष्यका शहिबाद कृष्टि तनके शहनदान मध्यम सही मान भूना अस्ति दरमाम । হমরা সন্মান্ মান করৎ জরৎযে । कांक खेन भाग गण काल काल बमानी। म्भीरने सगदकत् है। एक अही। হেরে লোহা তেরি ভাগদ্ কেন্তী" 🛊 লোহ কহী বাভ " শুনরে সোনা। 🦠 क्टम **राष्ट्री** कृटक किन्न कावक दकानात. जूष रम माहकीन तस्रक्षक (सन्।। चालन् कर् त्याङ् तकन् छैदर देवना । ट्याट्स अवस् जात् कांक बत्र प्रशासकाः च्या होश मुद्र बीड़ इस्ट्र व्यक्तस जुरा वैभंदा है काष्ट्रिकीत रहती : 🗥 医囊腺性 第二次医囊类 化二级压力器 医皮肤 न्यान् कृषी स्वाप स्वती कीवन स्थानी। षक्षी कि अक मूक्ते सार्थ रक्षी ।। र्युरा व सी विश्वन में कालक सुकी । 🗆 💯 🕬 \* \* \* \* एमनी केंद्रवान जीन क्षत्र बनार्ट्स मार्थे मुक्तिर ब्रिजनाड समार्थ ह 🔆 🖓



ট্রোট মংস্য।

ত ও পক্ষির এক বিশেষ ধর্ম আছে

থ তাহার। বয়ঃপ্রাপ্ত হইলেই তাহাদের শরীর যথোচিত দার্ঘ হইয়া

উঠে: ভৎপত্নে নানাকারণ-বশতঃ ভাহাদের শরীর

পালেঁ হল সৃষ্টি বিধি নহে তুমারী।
হৈবে পোহা জোর হলসে জারী "।
লোহ কহা বাত, "জনরে সোনা।

ক ক ক ক
মারী হল জন্ম ছার ২ হোগেই।
রাবনাকো মারকে বিভীযনে দই ॥
কোপে লো দান ভেগ বাঁহে ফ্রারী।
ফ্রারে উড্জার কেতেক ধনুক্ষারী।।
ফ্রা যো ফুট পীট চল লগাবেঁ।
প্রনা সৃষ্ণার উর ছাত বনাবেঁ।

\* ক ক

ট জনা স্থান হোত বর্ষী বীতা।
গোনা ল'হানে পর লোহা কা কাকী।।

\*\*

ভুল বা কৃশ হইতে পারে, নিজে কদাপি দীর্ঘে বিশিত হয় না; কলতঃ যে জাতীয় পশু বা পশির যে পরিমাণ নির্দিপ্ত আছে, তাহার জন্যথা হয় না। জপর, দেশের প্রাকৃত-নেট্রন-ভেদে ও থাদ্য-দুবেরর ইতরবিশেষে ভূলতার ও দৈর্ঘ্যের কিঞ্চিৎ প্রভেদ হয়; ঐ প্রভেদ ছাভাবিক দৈর্ঘ্যের ভূলনায় জত্যনপ যোগ্র হয়, তাহা ছাভাবিক শরীরের দিশুণ বা দর্মেক হওয়া কদাপি সম্ভাব্য নহে। কেছ বিলাতের বৃহৎকার জন্মক কুলাদেশে গিয়া থর্বহুইভে দেখে নাই; তথা লুলাদেশের টাটুও বিলাতে গিয়া বিলাতি-অন্মের ন্যায় বৃহৎ হুবৈ, ইহা সম্ভবপর লহে। পারম্ভ ইহা জতি আন্চর্যের বিষয় যে জ্বেক মৎন্যে উক্ত নিন্যুন্থ দৃষ্টিগোচর হয় না। রোহিত মহন্য এক দের-পরিশিত হুইকেই অঞ্জ প্রাক্ত ফ্রেন্স করিতে

আরস্ত করে, সূতরাং দেই ভাচার বরঃপ্রাপ্তা-রস্থাঃ অথচ সে ভংগরে ক্রমশঃ ২০১৩০ বা ৪০ अव बृह्द इहेश थारक। शूर्वभ्रष्ट य मदना मृद्धि इहेश्राह, लाहां अ अहे घटनात अक चा-म्हर्या मृशेष्टकनः अधिकष् **जनामत्र-(ऊरम**� ইছার পরিমানের ভেদ হয়। কুদু পুকরিণীতে हेक्टि वाध्यदन हेश पूरे जिन (मदतद अधिक ह्य नाः वृह्द-कनामास जे शतिमात्वत्र देवधना र्यः नकीर्व कृष् मनीट उष्मुखन वा विश्व হওয়া বভাবনীয়: তথা গলার ন্যায় বৃহৎ मनोट रा चार्जिवछोनं कुरम के मध्या धाकिएन bib व्यमरद्रद्र यहदा ७**० (मह वो अक स्मान** शर्तिमञ हरेशा উঠে। **এ**ই প্রকারে **भारा**म-कान-(ভেদে व्यन्। का जीरदेश माीत se वा २० छन वृहर हहेर ए पा यात्र नाहे; अवः পণ্ডিভেরা এপর্যান্ত ইহার কারণও স্থির করিতে भारतन गाई।

প্রতাবিত মৎদের নাম "ট্রেট"। ইছা
অতিদ ঘলাবা। কটলগু-দেশে "ভগাটন কাউল"-নামক এক প্রদিন্ধ দুর্গে কোন ব্যক্তি একটা অর্থনের-পরিমিত ট্রেট মংস্যকে কোন কুণ্ডের
মধ্যে রাগিয়াছিল, ও ভালাকে প্রভাহ প্রচুর
থাদ্যদূর্য প্রদান করিত। ঐ খাদ্য-লোভে নেই
মংস্য এমত বশীভূত হইয়াছিল, যে সে প্রতাহ
প্রতিপালকের হত্তে আনিয়া ভক্ষণ করিত। কিস্ত
২৮ বংশরপর্যন্ত এই প্রকারে ভক্ষণ করিয়াও
ভাষার শরীরের কিছুমাত্র বৃদ্ধি হয় নাই।

এই মৎস্য অত্যন্ত সুৰাদু বলিয়া প্রানিদ্ধ আছে; বিশেষতঃ বৈশাথ-মাসে ইহার তুল্য মুখ-গ্রিয় অন্য মৎস্য বিলাতে প্রাপ্ত হওয়া যার না। ইহার অপ্তপ্রস্ব-করণের সমন্ন কার্ত্তিক মাস; এই মৎস্য অন্যের ন্যায় বর্ষার প্রারত্তে অপ্ত- প্রসব করে না। ইহার ক্রিয় কুনু মংস্থ,
মণ্ড্র, কটি-প্রভৃতি কুনুনি ক্রিছেলে রোহিত মংস্থ ধরিতে মনুবেলা ক্রিছেপ্রকার ব্যগ্র
হয়, বিলাতে ট্রেট মংস্থ ক্রিছেপ্রকার ব্যগ্র
বাপ উৎসুক হইয়া থাকে।

শিথজাতিদিপের সাধীনজাত র ব্তান্ত।

विशेष भटकेत oe शृष्टकेट अधागत।

১৭৩৮ খুষ্টান্দে যৎকালে নাদেরশাহ আসিয়া হিলুতান রাজ্য আক্রমণ করেন, এবং যে সময় দিলাতে মহামারী উপন্তিত হয়, তৎকালে শি-থেরা পুনং দলবদ্ধ হইতে আরম্ভ করিল, এবং অবকাশমতে ঐ রাজনৈদ্যের পথতান্ত ব্যক্তি-দিগের দুব্যাদি লুটিতে লাগিল: অধিকন্ত এত-দেশহ যাহারা বাদশাহের দৌরান্মো-কাতর হুইয়া প্রাণভরে পর্বতাভিমুখে পলায়ন করে. তাহাদিগের প্রতিও আক্রমণ করিছে লাগিল। এই প্রকার দৌরান্ম্য করিয়া ক্রেন্স লাহস-বৃদ্ধি হয়, এবং তাহাদিগের প্রান্ধি প্রান্ধি ধর্ম-মহোৎসব অমৃতদরের মেলায় তাহারা আর পূর্বৎ অপ্রন্ধি বাল্যবাধে যাতায়াক লা করিয়া প্রকাশ্যকপেই একত্র হুইতে আরম্ভ করে।

তথায় গমন করিবার সময় যদিও তাহাদিগের মধ্যে কেছ হাজুত ইইয়া কারণােরে কজ বা অবিধারা হত হুইড, তথাপি তাহাদিনের এক প্রাণীও আপন গৃহীক ধর্মের মাজন করিতে এবং জসাসিংহ কলাল-নামক এক ব্যক্তি ভাগদি-পরাধ্যুথ হয় নাই ঃ প্রত্যেত কভকগুলি লোক গের সর্বপ্রধান দলপতি হয়। ঐ জনাসিংহ শিথ-একত্রিত হইয়া ইরাবতী-নদীর উপরে দলিওয়াল-্ দিগকে "থালদা দল "" নাম দিয়া মহাবল প্রকাশ मामक ভাবে এক সুর্গ নির্মিত কারল। ভাছাদি-। করে। ভদ্টে লাছোরের রাজপ্রতিনিধি মীর ময়ু পের সে কর্ম সকলে জামিতেও পারে মাই, এবং তাছাদিগের ঐ দুর্গ ভথা, এবং দল ছিমভিয় मकत्व गुड्रिं के कि भारें; পরে যথন ভাছার। विदेश সুনিহমে রাজ্য রক্ষা করিবার চেষ্টা করিব। বহুসঙ্গ্ৰাক লোক অক্তিত হইয়া লাছোৱের ভাছাতে শিখগৰ কিঞিৎকাল পাকত মতভাবেই উত্তরাংশে আমিনাবাদে গিয়া করগুহণ ও সেনা-मञ्जू कतियात उपाक्तम कतिल, उथन चानिकह ভাহা জানিতে পারিল। অনন্তর উহারা বহু-लाककर्क बाळान्च इंटेन: উरापिर द मनवन उां ज़ि ठ इहेल, अवर मन्तर्गि इंड इहेन। अधिकञ्ज মোগলদিগের সৈন্য অবশিষ্ট শিশ্বদিগের পশ্চা-দ্বর্ত্তী হইয়া তাহাদিগকে পরাজয়-করণ-পূর্বক थ्ठ कहु नाटकारत नकेमा आहेन, वावर ज्याम তাহাদিগের অনেকেরি প্রাণনাশ করিল। যে ছলে बे नकन त्नाकरक वध करत, (न उरनंत नाम '' न हीम शक्ष " दिवासा व्यक्तांशि প्रतिका व्याह्य। खे ঘটনার সময় যবন সেনা নায়ক ভাইতাক সিংহ গ্যের মূল।

**७३ यहे महामा १५ व्याप्त १५ व्या** শিথের। রামরাওমী-নামে এক মুর্গ নির্মিত করে; 👚 🛊 বালসাদলপক্ষের কর সক্ষার পরি বা প্রভুক্তঃ

কালক্ষেপ করে। অনস্তর যথন মীর মন্ত্র আপন ষীকৃত ও নিদিও রাজকর অহনদ্শাহ বাদশা-टरक ना फिराध छेक हाका फिराशनांत नारकांत আক্রমণ করিয়া ভাছার সন্থিত যুদ্ধ আরম্ভ करतन, रमने উপनक्ष भिरयता श्रमहात प्रचन হুইয়া উঠিল: এবং রাজ্যের প্রতি নানা উপদূব করিতে আরম্ভ করিল।

मीत ममुत लाकाखरत गमन क्रेटन शत नारका-রে পুনর্বার অভ্মদ্শাহের অধিকার হয়: ডিনি তথায় কীয় পুঞ তৈম্রকে সুবাদারি-পদে মি-যুক্ত করিয়া আপনি দিল্লা, মথুরা প্রভৃতি স্থাম জয় করিতে যাত্র। করেন। মীর মন্ত্র কর্ম কারী ক্যা-নামা এক ব্যক্তি শিথকে কেশমুগুন-পূৰ্বক ৰধৰ্ম- দিনাবেগছার: রাজবিদ্যেখী শিথদিগকে শাসন ভাগে করিতে অনুমতি করিয়াছিল, কিন্তু কথিত কিয়াই রাজপুঞ্জ তৈমুরের প্রধান অভিশক্ষি ছিল: আছে, যে তিনি তাহা অধীকার করিয়া এই মাত্র অতএব তিনি আদে নৃত্তধর জনানিংহ-কর্তৃক উত্তর করেন, যে শমস্তক-মুণ্ডন-করা আর মস্তক- নির্মিত অম্তদরের রামরাওনী দুর্গ আক্রমণ ছেদন-করায় বিশেষ কি? অভএব এপ্রকার শি-। করত ভাছা ভথ করিয়া কেলিলেন; অট্টালিকা রোমুণ্ডন-করণাপেক্ষা আমি আছাদপূর্বক প্রাণ- সমত্ত ধরাদাৎ করিয়া দিলেন এবং কভক্ গুলি ত্যাগ করিতে প্রস্তুত আছি"। শিশজাভিরা কি ইপ্টক প্রস্তরের স্থামাত্র সেই শোভনশীল পুণ্ আশ্চর্যা দৃত্প্রতিজ্ঞ। তাহাদিগের ধর্মেতে কি স্থানের কেবল চিহ্নমাত্র রাখিলেন। অদিনাবেগ ঐকাস্ত্রিক বিশ্বাস! কি আশ্চর্য নিষ্ঠা। এই রাজকুমারকে কিছুমাত্র বিশ্বাস করিতেন না, নিষ্ঠাই ভাহাদিগের স্বাধীনতা ও সকল সৌভা- অতএব আদৌ শিথদিগের কিঞিৎ অনিষ্ট করত াপরে গোপনভাবে পর্বতে প্রস্থান-পূর্বক শিথ-

দিলের সহিত মিলিলেন, এবং রাজপুথ তৈ-মুরের প্রতিহিংসা করিবার নিনিত্ত ভাছাদিগকে উৎসাহ দিতে জারন্ত করিলেন। তাহার। গুৰু-भारित्मत राका स्वतं क्रिया शुनर्वात मक्रत মিলিতে আইম করিল; একবারে নহসু ২ শিখ नायाकार भ्रदेश लास्मित (राष्ट्रेन कहिल। तास्त्राज्ञ ভাহানিবকে ফোনমতে নিরস্ত করিতে না পারিয়া कावरमार्य कांशनात रेमनामास समर हिनो-श्राप्ता थ्रहान कहा (<u>न</u>्क निट्कान कहितन। नार्शह কিয়ৎকালের মত এজণে জয়যুক্ত শিথজাতিক তৃক অধিকৃত চইল, এবং থালসা-দলভুক সেই জনা-য়াছিল, একাণে মহাপ্রবল হইয়া উঠিল। অপর নে মোগলদিগের মৃদ্যুবন্ত্র অধিকার করিয়া তদ্যা- রা নুভন টাকা মৃদ্রিত করিব, তাহাতে এই বাকা অঞ্চিত ছিল "জনাকল্লালকত্ক অহমদ-ভাবে মুদ্রিত হইল''।

ক্রমশঃ এই প্রকারে শিথদিগের প্রীবৃদ্ধি হইতে लाणितः; य नमछ कृमू २ शुग देशा शूर्व र्ष्याधकात कतिशाहिन. क्रिंग जागाउ विवक्त প্রবল চইয়া বনিল; এবং ভিন্নদেশীয় শত্ৰ-দিগের দমনের নিমিত্তে তানে২ দুর্গ প্রস্তুত করিতে আরম্ভ করিল। ইছার মধ্যে রাজা রণ-জাতের পিতামহ চরৎসি-হ লাহোরের উত্রাংশে আপদার শশুরালয় গুজরানওয়ালা-গুমে এক অতি প্ৰকাপ দুৰ্গ নিৰ্মিত কভিলেন: অহমদ-শাহের প্রতিনিধি খাজাওবেদ এই সংবাদ জা-নিতে পার্রা ১৯৬২ খুলিকের প্রারম্ভে উক্ত मूर्ग ভश्न कतिरु गाजा करतन; कि**ञ्चणश्रमर**णत দলবল দেখিয়া থাজা আপনার সমস্ত দুব্যাদি-পরিত্যাস-পূর্বক প্রাণ্ডয়ে লাক্েরে প্রায়ন

कतिरमन। अहे धकारत करेंगर मिरभूता महा-প্রবল হইয়া উঠিল; তাহাদিগের প্রদিশ্ব তীর্থ অমৃতসরে গিয়া সকলে একতিত ছইয়া মহা উৎসৰ করিতে লাগিল, এবং থালসা-দলভুক্ত मिनाता उपमार्थवर्डी गारंस महारमोत्राचा कति-তে আরম্ভ করিল। পঞ্জাবের মানাস্থানে উ-ছারা ব্যাপ্ত ছইতে লাগিল, এবং যবনরাজা-দিগের অধিকারের উৎসেদ-করণের উপক্রম করিয়া তুলিল।

১৭৬২ খুীষ্টান্দের শেষে যথন অহমদ্শাহ পুনর্বার रेमना नाम छ लहेश। शक्षाव-मामत्मत निमिख जा-গমন করেন, তথন আল্লাসিংহ দিথদিগের মধ্যে এক প্রধান দলপতি ছিলেন। তিনি কি প্রকারে অহমদের সহিত ঘলুখোরা-যুদ্ধে পরাস্ত হইয়া রাজপদবী প্রাপ্ত হন, তাহা পতিয়ালার বিবরণে ব্যক্ত ইইয়াছে \*। দুর্দান্ত যবনরাক্ত অন্তদরের শাহ হইতে অপহৃত দেশে থালসাদলের প্র- ব্যাসমন্ত মন্দির ভগ্ন করিয়া কেলেন: শিথদিগের পবিত্র জলাশয় গোরক্তে প্রাবিত করেন; নিথদি-ণের ছিন্ন-মন্তক-সমন্ত ব্রভাকার করিয়া তদার তাহাদিগের দেবমন্দির মপ্তিত করেন, এবং ভাছাদিগের কণ্ঠনিংসৃত শোণিভদ্বারা মন্দিরের ভিত্তিদকল থেতি করেন। দৌরাজ্যের আর সামা রহিল না। রাজার জয়পতাকা সর্বত্ত উড্ডীয়মান हरेन, बदः मिर्थता बक्कारन मुख्यासः हरेन। কিন্তা শিথেরাই ধন্য! তাছাদিগের কি আশ্চর্য্য তিতিকা, কি অভুত শক্তি! ভাহারা এতাদ্শ जनामान। पूर्यमेनार७७ किष्ट्रमाज विघ्विछ इहेन नाः क्रिकारलं जनाउ जानमामिरणं श्रीख्या-হইতে বুলিভ হইবার ভাব প্রকাশিভ করিল না; कानगरकरे खरभार नार ७ यजुन्त हरेन नाः अक्याल धर्म**बद्धार वस पाकिया ग**तन्त्रत नकटनहे

\* २०३ मृद्धं दश्य।

नठा-महात्रजु तका कतिएठ छेश्नाही इहेशा. ভাহারা পুনঃ ২ ঘোরসম্থান করিতে আরম্ভ ক-রিল; ও ক্রমে ২ রোছিলথণ্ড, সরহিন্দ প্রভৃতি यम्नात उपेशयां उपनक द्यान मूनल्यान् उ মহারাষ্ট্র দেনানায়কদিগকে পরাজ্ঞিত করিয়া আ-পনাদিগের বিলক্ষণ প্রাকৃদ্ধি করিতে লাগিল।

'দুর্দ্দশা অবগত **হ**ট্য়া পুনর্বার স্বয়ং সিজানদ পার হইয়া আগমন করিলেন; কিন্তু দিল্লীর দুর-তিনি পভিয়ালার আল্লাসিংহকে তৎপ্রদেশের শাসন-কর্ত্রপদে নিযুক্ত করিয়া অবিলয়েই খ-জ্ঞাত ছওয়া যায়, যে তিনি অমৃতদরে গিয়া শিথদিগের সহিত যুদ্ধ করত পরাস্ত হ্ইয়া সৈ-ন্যবহ প্লায়ন করেন।

ভদনন্তর শিথেরা অব্রেশেই অহমদের নি-युक्कका कावू विशवका का द्यादा अवापादी शप-**ভ্ইণ্ডে দুরাকৃত করিল; এবং শতক্রেইতে বি-**্ তন্তা-নদী-পর্যান্ত সমস্ত দেশ আপনারা সকলে विভाগ করিয়া লইল; মুনল্মান্দিগের সকল মুস্কিদ চূণ করিয়া কেলিল, এবং শতশত য্বনকে লৌহশৃত্থলে বদ্ধ করিয়া न करत्त् রক্তমারা সেই সকল মস্কিদের ভিত্তি খৌত করিতে দিল। তদনন্তর শিথদিগের সুমস্ত প্রধান দলপতি অমৃত্যরে এক্তিত ছইয়া আ-পনাদিগের প্রভূত্ব-প্রকাশ ও ধর্মের প্রচার করিতে আরম্ভ করিল। তাহারা আপনাদি-

একমন ও একবাক্য হইয়া দিন ২ আপনাদিণের গের জয়সূচক মুদ্র প্রচলিত করিল: তাহাতে **बहेकाश** व्यथा छिन, " एक नानरकत निक्छे-দেশের অনুরাগে অনুরাগা হইয়া, এবং স্বাধী- হইতে গুরুগোবিন 'দেহ তেগ কতে' লাভ করি-श्राट्टन " # 1

অতঃপর দুই বৎসরকাল শিথেরা আর কোন যুদ্ধ করে নাই। তাহারা এতাকৎকাল আপ-নাদিগের মধ্যে জয়নন্ধ রাজ্য সকলের অধি-कात निर्पिष्ठे कतिए हिन, जेग्र शतन्त्रातत कर्त्व। निषाद्य । कार्याद म्ड्यना निवक क्रिट অহমদশাহ সরহিন্দের ও দিল্লীর এই সকল নিযুক্ত ছিল। তৎকালে শিখেরা পরস্পার সক-লেই ৰতন্ত্ৰ, কেহ কাহারো অধীন নহে, প্রতি ব্যক্তিরই নাধারণ রাজ্যের প্রতি নমানরাপ অধি-বস্থা দিন ২ বাড়িতে লাগিলঃ তিনি আসিয়া ঐ কার ও অধ্যক্ষতার ভার ছিল; কিন্তু তাহাদিগৈর নগর রক্ষা করিতে পারিলেন না। কেছ্ছ্ কছে যে প্রত্যেকের বুদ্ধিশক্তি ও সম্পত্তির ইতর্বিশেষ থাকাতে তাহাদিগের মধ্যে যে সমভাব বিস্তর িদিন স্থায়ী হইল নাঃ শাঘুই ভাবান্তর হইয়া রাজ্যে প্রস্থান করেন। কিন্তু শিথদিগের বর্ণনে গেল। কার্য্যকারণক্রমে এক জনকে এক জনের ्माम इर्हेट इरेलः चरुख जाशामिरगत ताखा का-যোর শৃঙ্থলা এই প্রকার নিয়মে পরিণত হইল, य अजागादबर नकरन नगान, क्वन नेश्रहरू गर्ने प्रधान: धर्मावियात अक विश्वानरे छाहाहि-গের প্রধান ঐক্যন্তল। সেই ঐক্যতানুদারেই ভাহারা কি যুদ্ধ কি অপর কোন কার্য্য সকল कर्षा निवाह करिंछ। जागारा मकत्व श्रक्तिर-পর শারদীয় পূজার লময়ে অ**মৃতসরে একবার** মিলিত হট্যা আপানানিগের অধিকারের ইউ-সাধনের উপায় চিন্তন করিত; এবং অধি-কাংশ ব্যক্তির মতানুসারে কার্য্য নিষ্পন্ন করি-ত। ভাহার। যে সকলেই স্বার্থপরতাশূন্য হইয়া माधांद्रश्व हिल्माध्य अवृत इहेल, हेहाद अलि

<sup>\*</sup> অথাৎ প্রসাদ, শক্তি ও জন।

অপর কোন কারণ নিদিউ করা যায় না. কেবল चम्छन्दात्र छीएथं चात्रमन, जवर छथात्र नकत्न क्षकत्व वकथर्य धक्तन कता है हेशात अवन का-হণ বলিয়া গণ্য হইতে পারে। প্রবান দলপতি-দিগের সভার নাম তাহারা "গুরুমন্তা" রাখি-য়াছিল। ইহার তাৎপর্য্য এই যে গুরুপোবি-म्बत উপদেশানুশ¦রেই তাহারা **मक**লে এক্য-मर्ज मकन विषयः विषयः कहिशा थारक। अहे अर्थ-स्मलाय य नमछ अधान वाकि मिरात नमा-शम इङ्क, काहात मादा कह काहारता व्यक्षीन हिल ना ; मक्ति सम्प्रधान ; ब्राक्तार्कार्या-वि-যয়ে যে কোন প্রস্তাবে সভাস্থ সভাদিগের অধি-লেরি মত নিয়মক্রপে পরিগণিত হইত। ভাহা-দিগের মধ্যে যে কোন দলে যে কোন দেশ ও যে | কোন স্থান জায় করিত, তাহা সকল দলপতিই বিধিমত তুল্যৰূপে বিভাগ করিয়া লইত। পরে जाशामिरभेत मर्था याशात व्यथीरन यक मन था-কিড, সে পুনর্গর সেই প্রাপ্তসম্পত্তি তত অংশে বিভাগ করিড; পরে এক ২ দলভুক্ত সকল যোদা আবার বেই দলের বিভাগহইতে আপন্থ অংশ গুৰুণ করিত। এইৰূপে তাহার। জিত ও नक् मन्नि नकन जाननाम्रितं ग्रास् जः म कतिया केका-स्रापन कतियाहिन। टेमनानृत्ति বলিয়া যে দকল প্রজা জয়লক-ভূমির উপস্বস্থ ভোগ করিত, ভাহারাই যুদ্ধকালে যোদ্ধার কর্ম নিশাম করিড; এবং অপরাপর রাজকর্ম পূর্বোক্ত প্রকারে দলপতিদিপের সভাহইতে সম্পন্ন হইত। শিখদিশের এনিয়মকে প্রকৃত সাধারণ-তক্ত বলা याहेटड भारतः भक्षत्र जानामिरगत अलिश्रदंशत चरनक शालरयां किल, अवः ओ निश्म पूनः २

পরিবর্ত্তিত হইত। সমস্ত শিশ্বদক্ষের মধ্যে যোদ্ধা-इ। श्रेक्छ क्षा टेनम। वृजिट्डाशी मटक डेक इहेटड পারে না; কেছ ২ কেবল আপনাদিগের পৈত্রিক ভূমিরই অধিকারী হইয়াছিল, সুতরাং এই উভয় मन्युपारवत मध्य व्यक्तितत्व किथिए हेउतः विष्मय हिन। कनकः कुनिम्त्रतास्त्रा कि वेश्नश्व-प्रत्म (य প्रकात नाधातन-एख इहें साहिल, हे हापि-গের সাধারণ তন্ত্র সে প্রকার নহে। তবে জর্মন্-पिटमा अकरन य श्रकांत्र पिटमात्र कांन निवस স্থাপন করিতে হইলে তথাকার ইতরভদু সাধার-ণের মতগুৰণের জন্য সর্বসাধারণের সভা হইয়া থাকে, রাজকার্য্যের নিয়মের জন্য অমৃতসরে ইহা-কাংশের মত হইত, ভাহাই গাহা হইত; কিন্তু দিগেরও সেই প্রকার সভা হইত। কিন্তু জর্মন্-সমর-সম্পর্কীয়-বিষয়ে আপামর-সাধারণ সক- দেশে ভায়ট-নামক সভায় যে প্রকার দলপতি ভদুলোক ষয়ং ও ইতর প্রজারা প্রতিনিধিঘারা সভার কার্য্য সম্পন্ন করিয়া থাকে, ই**ছারা** যে নে প্রকার করিত, ভাছার কোন নিদর্শন পা-अया यात्र ना। তবে ইहात मध्या अहे चाम्हर्या বলিচে হইবেক, যে শিখেরা কেবল একধর্মে বি-শ্বাস ও এক ধর্মবন্ধন ভিন্ন অপর কোন প্রকার छानिविद्यात माहाया चडारवे बक्चवकात बग्र সুশিক্ষিত ও বিচক্ষণ বিদ্যাবান জাতির ন্যায় किय्दकान-भर्यास जाभनामित्रत मर्था केका-ভাব রাথিয়াছিল, এবং সাধারণ-তন্ত্র-স্থাপনা-षाता नकल श्रकात कार्य। मूण्युवन करण नि-র্বাহ করিয়াছিল। কোথায় ইংলগু-দেশের এক্ষণ-কার উন্নতি, নানাশান্তের আলোচনা, নানা-জানবিজ্ঞানের প্রবন্ধ, সভ্যতা, ভব্যতা প্রভৃতি नामः वियस्त्रत चारन्यानमः चात्र काथाय म শিথদিশের পূর্বকালের অন্ধকারাবৃত্যবস্থা, যথন कान विषयात चम्लीलम हिन ना, कान खात्नत नाम हिल मा, कान गड/डात हिड्ड हिंह ना! अ

**रुश, उर्भार्य (य ७ উ**न्द्रकारलंड यन्त्य ह যেমন এক্ষণে রাজার ঐকাধিপত্য থাকে বিসেচ-मानिक रवाब करत मा, जाहांबा ७ तरकार अन्तर्थ-পার। তেমান কন্যায় বোধ করিত। কিন্তু মনবেরে মন্ধা ষ্ভাৰতট স্বাৰ্থপৰ ও প্ৰভুত্তিয়া কিনে আপনার প্রাধান্য হইবেক, কি উপাছ্যার আপ-नात यन (क्षियत वृक्षि इहेरवक, हेशहते (इहेर প্রতিমনুষ্যের মন সহদ। বিচরণ করে: সূতরাং मःभातमस्या सामक्षमा अक्ठा नर्दमा ताक्ष्म करा। निভान्न कठिन। कतानीरमज्ञा अञान दनवान् शियं मानी ও दूषिमान् इहेवां आश्रमानिर्गत मर्थः नम्हात ও नाधात्र उन्न ज्ञान क्रिए আক্ষন হইল; যতবার যতু করিতেছে; ততবার ্নিরা "কুল হয়।" নানে প্রনিদ্ধ হয়। নিরাশ হইতেছে; অতএব অসভা শিথজাতির मरदा रहाकान या रत चार द्रका भाइरव इंशा (क्यानमर छ ने अस्त हरेर भारत मा। कन उ কিছু দিনের মধ্যেই ভাহাদিগের নাধারণ তম্র **जुन्ने क्**रेशाहिल।

শিশদিণের সাধারণ-তজ্ঞের সময়ে তাহার৷ >२ म्रा विভक्त क्रेग्नाष्ट्रित; जोकांत श्राटाक मरत वकर सन मनगां हिन; किन्न नकनम लाव भक्ति नमान हिल मा, এবং नकत প্रधान २ व/कि-রাও সর্বদা একদলে থাকিত না; আপন ইচ্ছামত ভিন্নদলের সঙ্গে যোগ অথবা পৃথক্দল স্থাপন করিত। দলের আদিপুরুষের নামানুসারে ব বাসভানের নামানুরাপে কদাপি তাছাদের বিশেষ কোন লক্ষণানুসারে উক্ত দলের পৃথক্ ২ নাম **रहेशांहिल। यथा, ()) अक मटलंश अधान क**िक

উভয় অবস্থার তুলনা করিলে যে ভিন্নতা ২০ক সর্দ ভাঙ্গ সিদ্ধি পান করিত এই প্রযাদ তা-हाह पटनत नाम "उकी" रिनम्न असिक छत्। মনে এক প্রকার ভাবের উদয় হইয়াছিল, ইতার (১) এক দলের অধিপতি কোন সময়ে পতাকা পর অংশ্চয়ের বিষয় আর কি আছে । ইছার বিজি ছিলেন বলিয় টাছার দলের নাম নিশ্বে হয়: (৩) কোন দলপতি বন্ধুতানুরাগী ছিলেন ध्यक उद्यापन " मूश्र" विद्या भाउ इस् (१) कश्रमद्भ तामच छ - मूर्श-छा लेक मलाधिरलत अस्य कि क्षत्रक कक्क कदिया द्राधित्व शास्त्र । भटनव न म असमहास्त्री "। (e) नूकिया-नामक शानदानी परवाद साम १६ गुनिया ११ (७) त्यानु **अग्रा**-निशा कारण परने नाम प्यान उशानिशाए। (१) এক দংলের নংল " মনিয়া " অথবা " ক্নিয়া "। (৮) কিজুল বু-দি বি দলের নাম ও কিজ্লাপুরিয়া ও व्यथव " विष्य १४ । (३) मृक्द्र (६) व् निवाभि हव • मृतः । शिक्सा ( .o ) (मना इन-छाम-स्वितिम मन "দলি এয়াল ". (১১) জোর-নামজ-স্থান-নিবা-দিরা শাক্রার 🗀 (১২১) এবং ফুলকিয়া-স্থান-দিবা-

> अहे खामन-मण्यात्वत मत्या कृतकिया-मण्याः দায় ভিন্ন আৰু সভালই সভাজ নদীর উত্তরাংকো পঞ্জাব-প্রদেশে বাস করিত, এবং তাতাদিগের **छेशा**वि '' मक्षा निःइ"। প्रयम् कः इन्नोत्वर् नर्द-প্রধান হইয়াছিল, পরে কনিয়া দল বিশেষ বল-यान् इश्व: व्यवस्थाय जुक्तको क्या-मन्द्रक वन-ীত দিংহট সর্বপ্রধান হয়েন। পরস্ত ফুলকিয়া। দ**লের পতিয়ালা**র রাজ-গেলায়দিগ**ে**কট সকলে প্রাধান বলিয়া মান্য করিত। নঞ্জা দল কথনই चेल्ल**काल भा**ना इनेटच शास्त्र लाहे।

এই প্রত্যেক দলেরই অধিগরে ভূমির সীমা উত্তমক্রণে দিন্দিই হইয়ালে, কিন্তু এস্থলে काहात याङ्का दर्गमत कान प्राप्ताकन पृष्टे ह्य ना। अहे नाथाइन-उद्ध-नमस्त्र निर्थाप्रताद्व पूरे जिन वक अभारताशे याका हिन, किन्न

কোন্দলে ক্ষত যোদ্ধা ছিল, তাহার কোৰ। निम्म्भ भारता यात्र ना। ज्ञोपता गर्वारभका व्यक्षिक. ও न्किश म्हल व्यन्त यात्रा हिल, वह মাত্র নিক্রপিত হইয়াছে। ভদ্মীদলে প্রায় ২০,০০ ছালার যোদা ছিল, এবং ন্কিয়া-দলের যোদা ইছার দশাংশের একাংশ হইবেক। শিথমাত্তেই **অখা**ক্ত হইয়া যুদ্ধ করিত; এবং ত'হাদিগের লে আন্ত্রিক অধারে হিদিপের যুক্ত আছি ভয়ানক ছিল। কেবল কোন দুর্গ আক্রমণ করি-বার সময়ই ভাহারা পদাতিক নিযুক্ত করিত, অগর যাবৎ কোন শিখ অখ্যকুছ করিতে না शाहिक, उक्ष कार्यके (म शाह्य अपन स्वाप्त कहिक; নতুবা অশ্ব থাকিতে কথনই শিশ্বযোদারা অন্য উপায় অবলম্বন করিত ন। শিথযোদার। অশ্ব-শ্ৰহি নিগুণ হইয়াছিল, তৎকা ল ভাহাদিলে: মধ্যে কামানের ব্যবহার ছিল না।

ভাষাদিগের এই সমস্ত দল ও দলপতি ভিন্ন অধিপতি
ভাষাদিগের মধ্যইইতে কতকগুলি লোক একত্রিত ইইয়া এক
ছইয়া ''মাকালি'' নামে এক শৃতন্ত্র দলপ্রস্তুত
করিমাছিল। তাহাদিগের তাহপয্য ও মত এই
যে চাহাদিগের সহিত ভৌফিল কোন বিষয়ের
কাহারও বিরক্ষণ থে
যে চাহাদিগের সহিত ভৌফিল কোন বিষয়ের
কাহারও বিরক্ষণ থে
যে চাহাদিগের সহিত ভৌফিল কোন বিষয়ের
কাহারও বিরক্ষণ থা
বিরক্তির লাই; তাহার। পৃথিবার কত্র প্রভুত কিছুই
ভারিন। করে মা, তাহার। ইশরের চিহ্নিত যোদ্ধা,
এবং দেবতাবহ অমর। তাহারা হত্তেতে লোহথলয় ও অজে নালবর্গ-বজ্রের পরিক্ষণ থারণ
পারে নাই
করিত, এবং হাপমাদিগকে গুরুগোবিন্দের সাক্ষণ প্রতিনাধিশলিয়া প্রকাশ করিত। তাহাদিগের
মতে সংলারআশ্রুম সমস্ত পরিত্যাস করিয়া অজ্ববিরদ্ধা জাবিকা লাভ করা মনুষ্যের কর্ত্তব্যা
এই মত-প্রভাবে অকালিদিগকত্বক অবিলম্বে শিন্ধ্যা ভ্রানক হইয়াছিল। সংলার-পরিজ্যাগন্ধ-

र्वक मधानधर्म-गुरुष-कडा, व्यक्त युष्ककृतिहरू छेन्द्र পোষণ করা, উভয়ই তুল্য, এইমত তাহারা লো-किमगरक विरम्भ किन्ना त्याहरू एक्टो किन्न। वे चकालिमिरणत मरथ याहाता किष्टु मूर्वल, जाहाता रिष्यम्बिरतित कार्यमि कतिया छेपत्र-त्थायव उ-রিতে কাগিল, আর যাহারা সবল সতেজ আহারা मिन्सुकेन कतिया चालनामिर्गत कोबिका काछ করিতে আরম্ভ করিল। কিঞ্ছিৎকাল পাকালী-नामक एल बहैतरल बाकामरवा चरलक छैर-পাৎ ফরিয়াছিল; অবশেষে রাজারণজীত দিংছ কৌশলক্রমে অপার দলপতিদিগকে তথা অকা-লী-প্রভৃতি সকলকে শাসন করিয়া সমস্ত পঞ্জাব-ताका जालनात कतरमङ करतन। ये वृहर दत-পার সম্পন্ন করিছে তাঁহার ক্ষিক্কাল গভ হইয়াছিল; কিন্তু ভিনি পঞ্জাবরাজ্য গুহুৰ করিয়া আজ্মাই ভাষার আবিপত্য ভোগা করিয়াছি-লেন। তাঁহার জীবদশায় আর কেছ পঞ্চাবের অধিপতি হইতে পারে নাই। তিনি সিংহাসন্ত इट्डा अक फिरमत समाउ शक्तुक इरहम माहे, विकक्ष लोग बीट्यं श्रीहरणाञ्चि इहेश हास्य क्रिशाहित्तन। किन्तु कारलं क्रांत-शामहरूठ কাহারও নিস্তার নাই; "বীরভোগ্যা অসুকারা" এই প্রাচীন বাক্যই অতি যথার্থ! ব্লবজীত সিং-হের অত্যন্ত শুমলর পঞ্জাবর জা তাঁহার মৃত্যুর পর ৰুপ্সকালও তৎসম্ভানেরা রক্ষা করিকে পারে নাই, হায় কি অন্পকাল মধ্যেই তাহার

> যদুপতেঃ কুগাতা মগুরাপুরী, রখুপতেঃ কুগতোত্তরকোশবাং। ইতি বিচিত্তা কুরুস্থ মনঃ দ্বিরুৎ ন সদিধুৎ জ্গদিতাব্ধার্ত্তর

### নীতিমুক্তাবলি।

সিম্ম তিশয় দন্তকারীরাই অভিশয় ভাক হয়।
 স্তি
 মৃত্যু মন্ব্যের সকল সন্ত্র্য ভূল্য
 মু
 মু

সম্ভপ্ত মনের সহিত থদের তুলনা হয় না। প্রতারকের সকল বস্তুই বৈরী হয়।

পরের উপর নিরস্তর নিভর করা অতি কুদু ব্যবসায়।

তোমার আপম দীপ নির্বাণ করিলেই তুমি ঈশ্বরের দীপ্তি দেখিতে পাইবে।

বানরও দৈবাধীন চিকিৎসক হয়।

উফ্চদুব্যে দ**থা যে মা**জ্জার সে শীতল করি স্পাশ ক্রিতেও শ**ক্ষিত হয়**।

মত্ত বন্ধুর নিকট কোন উপকার অথবা আশুর আশা করা উচিত নহে।

(यमन कलाइ लोहरूत करा हय, (महे नाण हिल्-माम हिल्ला व/कित्र करा हत।

প্রতিবানির সুথে কেবল হিংসক ব্যক্তিই শার্ণ হয়। যে ব্যক্তি অনেক অন্ধীকার করে, তাহার নি-কট কিছই আশা করিও না।

নকল খ্যাতিই বিপদজনক, সুখ্যাতিতে অন্যের থেষ জ্ঞা, এবং অখ্যাতিতে মনুষ্য লজ্জিত হয়। যে ব্যক্তির মরণে ভয় নাই, তাহার কি ক্পে অন্যের ভয় হইবে?

যে জন ডোষামদ-মভরণে ভূষিত নহে, সে রাজসভায় কোন কার্যে/রই হয় ন।।

নির্বোধ জনের যত ধনের বৃদ্ধি হয় ওতই অজ্ঞানতা বৃদ্ধি পায়।

वसूरक निक्कारन छर्मना कत, बदः समम्मारस प्रामःना कत्र । ইবর্য জিলু, কিন্তু ভাগার কল মন্ত্রার । রোগীর অর্থ থাকিলেই ভাগার আরোগের বি লক্ষ্যা

देवमा कमांठ छेयथि त्ययम करता।

শিয়মিতকালে আহার, নিয়মিতকালে শয়ন, এবং নত্ত মন; এই তিন জন পৃথিবীতে সুচি-কিৎসক।

বিদ্বাক্তি এক্লা থাকিলেও কথন নিজ্জন হয়েন না।

्य वाकि वामााति नक्षय क्रांत्र, विनि शाहीन इहेत वाहा वाम क्रिट नक्षम इहेरवन। .

य प्रतिश्व निवस्त यालन विश्व यदीत थात्क, जाहाता है सन्द पान । "

তোমার রিপুকে শাবন কর, নতুবা তাহারা তোমাকে শাবন করিবে।

মিখ্য মত মনের কৃষ্টরোগ স্বরূপ।

ধে বিষয় লেখা যায়, তাহা কথন মেধা দে-বীর মণিদরের বহিল্ত হয় না।

যে জন ধর্মদেবার নন্দিরে ভূমণ করিয়াছে, ভাহাকে সম্ভূমের মন্দিরে আনিতে না দেওয়া কোন মতে উচিত হয় না।

দার্যায়ু ইচ্ছা অংশকা যত কাল জীবিত থাকা যায় তত দিন সাবধানে থাকা বিধেয়।

যাহারা কেবল নিষ্ট খাকে। মুগ্ধ করে, তাহার। কথন সেহ করে না।

নীচ লোককে যত প্রশংসা করা যায়, তত্ই তাহারা অসহ্য হয়।

যিনি পরিনিত ধনে তুও নছেন, তিনি কথন যথেট প্রাপ্ত হইবেন না।

মনুষ্যের মেখা জালের নায়ে অনেক বৃহৎ বস্তু-কে ধরে, কিন্তু কেবল কুদুকেই নির্গত হইতে দেয়। কেবল স্থানকে আমাদিনের ভাগারি না করির যাহা মনে দ্বাথিতে ইল্ছা হয়, তাহা লিখিয়া রাথা উচিত।

কোন ২ সময়ে ধনের প্রতি অবহেল। করিলেও অনেক লাভ জক্ষে।

ধন সারের নায় বিস্তারিত না করিলে কোন কল দলে না।

লবেকেই স্বীয় ২ স্বন্ধারা কেবল দুং**থ এ**বং খেদ ক্রয় করে।

দিনকে দিন এবং রাত্রকে রাত্র করিলেই নির্বিদ্ধে কাল্যাপন হইতে পারে।

্যে র্যক্তি আপনি অন্ন পায় না, তাহার কুকুর-পালা বিধেয় নহে।

মন্দের সহ অপেকা বনে গমন করা ভাল। লোকে কেবল প্রশংবিত হুট্টবার নিমিত্ত অন্-কে প্রশংসা করে।

যে মনুষ্য অহকার শূন্য তালাকেই যযার্থ খা-যিক কহা যায়।

থনতা বসন্ত রোগ অপেক মু**খকে অধি**ক নপ্ত করে।

সকল বিষয় কিছু ২ জ্ঞাত প্রাক্ষা অপেকা এক বিষয়ে বিলক্ষণৰূপে পারদর্শী হওয়া বুজিমানের কর্ত্তব্য।

দরিদু জনের ঔষধি ক্রন্ধ করিবার ক্ষমতা না থাকাতে কেবল আশাই ভাহাকে রক্ষা করে। বিদ্যার গর্ম করাই মুর্থের চিহ্ন। चांमानिरगत पृथ्यंत गीमा क्रानिए गातित्वहे चांमता এक श्रकात मुशी हहै।

সুখাতি সম্পদ-অপেকা গ্রিয়তর্। লোভির সর্বদাই অভাব।

অনেক বিষয়ে মনুষ্যের সময় বাস্ত্র করা অপে-কা ধন বায় করা উচিত।

মনুষ্য আমাদের বন্ধু, এবং সভ্যপ্ত আমাদের বন্ধ, কিন্তু অগ্রে সভ্যকে সন্মান করা বিধেয়।

জ্ঃশির আশায় কাল্যাপন করা ভাল, এবং সুশির সাবধানে থাড়া শুেয়ন্তর।

যে জনের নাবধনতা নাই, তাছার ধর্ম কোথায়? খন বেধে করে খনতা ভিন্ন কোন কার্য্য নমাধা করা যায় না।

বিদ্যা দুঃথির রজভ, ধনির ছেম, এবং নৃপতিদের রভুবৰূপ হয়।

জীবন শোুতের ন্যায়, নিরস্তর ধান্মান হই-তেছে, কথন প্রত্যাগমন করে না।

বীরগণ আমাদিগের শুদ্ধার পাত্র, জ্ঞানিগণ আমাদিগের সম্ভূমের পাত্র, কিন্তু দাতারাই কেবল আমাদিগের প্রীতির পাত্র হয়েন।

मूजनक। (काम द्राक्षाकात मध्या नाहे, कथानि काहारक नकरन (कम मृष्कारण भागम करते?-----

> আ. ন. ঠা. পাথুরিয়াঘাটা।

# বিবিধার্থ-সঙ্গুহ,

তার্থাৎ

পুরারন্তেতিহাস-প্রাণিবিদ্যা-শিশ্প-শাহিত্যাদি-দ্যোতক মাসিক পত্র:

० भई ]

मकाक >११७, माघ।

िकद श्रेष्ठ ।

ভূল্কর-রাজ্যের বৃত্তান্ত।

পূর্বক তাহাদিগের পথ-রেখে করিতে উদ্যত
ভইলেন। পেশওয়া তাহার অসম্বত লাহ্স ও **হ্টলেন। পেশওয়া তাহার অসঙ্গত লাহস**ংও SQUCCOOP न्कत-वः त्मत्र आिम शूक्य मनः वीद्या नम्म भटिन महाजुष्टे हरेश जाहारक कि-হররাও তল্কর এক ব্যক্তি লেন; 'বে তুমি হতভাগ্য কদমের অধীনত্ব পিনালকের পুল ছিলেন। পরিত্যাগ করিয়া একণে আমার অধীনত্ব স্থান্ত পরিত্যাগ করিয়া একণে আমার অধীনত্ব স্থান্ত কার করণ। এই পরামর্শে মলহররাও, সমত অনুবারে মেষপালন করিত; এবং মেষলোম- হইয়া অনুমান ১৭২৪ খুীন্তাকে পেলওয়ার দ্বারা কমল প্রস্তুত করিত। সে নীরানদী- সৈন্য মধ্যে ভুক্ত হইয়া একশত অম্বের অধ্য-তীরস্ত হল-নামক গ্রামে বাস করিত বলি- ক্ষতা পদে নিযুক্ত হন। তৎপরে শাঘুই তাঁ-য়া লোকে তাহাকে হল্কর কহিত। মল্হর হার পদের উন্নতি হইয়াছিল, কারণ ১৭৩২ খ্রী-রাও পৈতৃক-বারসায়ে অত্যস্ত বিরক্ত হ**े- छोकে যে সময় মালওয়া-রাজ্যের সুবাদার** या युक्तवृद्धि व्यवनश्चन कविद्यान, ও काण्डाकी- मिया-बहामूत श्वमश्चात महिल युक्क श्वासः कम्म-मामक बक राक्ति (नमानायुक्त व्यथीति हम। बदः উक्त त्रारका (भणवयात्र व्यथिकात কর্ম প্রাপ্ত হইয়া তাহার লক্ষে গুরুত্র-দেশ হয়, সে সময় মল্হররাও পেশওয়ার দেনা-জয় করিতে যাত্রা করেন। ঐ যুদ্ধে তাঁহার পতিত-পদে অভিবিক্ত ছিলেন। ঐ ব্যাপারের वित्मय यूक-रेनिश्वा ध्रकाम शास्त्राटक जिनि किছु मिन शद्य मन्द्रत्रा तिनात राय-निर्दा-২৫ অথের অধ্যক্ষতা পদে অতিবিক্ত হয়েন। ছাথে পেশওয়ার নিকট হইতে ইন্দোর রাজ্য मन्द्रता वरकारन जाखि-नमी-जीत कम्रायत श्राध इन, अवः ১१०० मारन नर्यमा-नमीत छेख-वाणित्र कार्या निवाह कतिए नियुक्त हित्तन, त्राःभाष्ट्र ममूनीय महाताष्ट्र-एत्मत कर्ज्य-शरम তৎকালে পেশওয়া ঐ কদমেরहাজাদিয়া মাল- नियुक्त হন। ১৭০৮ খ্রীষ্টাকে যথন ভূপাল-রা-य-(मर्ग रेमम्) (अत्र कतिवात जिलकम कतारक स्कात निकरणे निकामून्यूरन्कत अधीनक त्राक्-मम्द्रता अविषयण-टेमटना महिल माहन टेमना-मकन आका हरा; 'उथन मस्द्रता अ

যুদ্ধে অত্যন্ত সাহস ও পারদর্শিতা প্রকাশিত करत्रम, अवः लाद जीशाहर बार्यन-अजार नर्मान-नमीक्ट्रेट एथन-नमी-शर्याख नमूनाय शान महाताह्नीय-तारकात अञ्चर्णा इहेशाहिन।

এই ঘটনার পর-বৎসরে মল্ছররাও পোটু-গিন্দিগের সভিত যোরতর সন্ত্রাম করিয়া তাহা-

নাথে তুল্কর ৪০,০০০ হাজার মহারাষ্ট্রায় যোজা ও ব্যুল্থ-রাওকে সমভিবনহারে লইয়া তা-হার মঞ্জে গমন করেন; কিন্তু গাজিউদান আ-ওরজাবাদ পৌছিয়া কোন ছলনাক্রমে বিব-পানভারা হত হইলে হ'ল্কর হিন্দুখানে প্রত্যা-গমন করিলেন

ন্চাবৈরভাব উপস্থিত হয়, এবং ঐ বৈরভা-উপ- ১৭৮০ শালে টুকাজী বিভিয়ার সহিত নি-

লক্ষে পেশওয়া-ভ্রাত্তারা ৮ বৎসরের পর প্র নিপতে মহাসর্বনাশ উপস্থিত হয়৷ পানিপতের যুদ্ধে বছসভ্থাক নহারাষ্ট্রীয় যোগারা নিহত হয়; হল্কর স্বায় যুক্তি উপদেশবারা এ বিষ-য়ের কোন প্রতীকার করিতে পারেন নাই।

মল্হররাও ৪০ বৎসর-কাল-পর্য্যন্ত নানাপ্রকার দিগের অধিকৃত বাহিন-নামক স্থান আক্রমণ যুদ্ধ বিগুত্ত করিয়া এবং মহারাষ্ট্রীয় যোদ্ধা-করেন : তদনস্তর তিনি নাদির্শাহের আক্রমণ- দিগের মধ্যে বিশেষ খ্যাতি লাভ করিয়া ইংরাজি रुहेट (शम् ब्यात करिकात तका कतिवात निमिख ) ১१७४ **चर्क शत्रतारक शमन** करतन। जिनि श्रायः হিন্দুস্থানে আদিয়া পেশ্ওয়ার অনেক সহা । ৭৫,০০,০০০ পঁচত্র লক্ষ টাকা রাখিয়া যান। তাঁ-য়তা করেন; কিন্তু নাদিরশাহ মহারাষ্ট্রদেশ- হার মৃত্যুর পূর্বেই তাঁহার পুঞ খুন্দিরাও কা-পর্যান্ত গমন করেন নাই; তিনি দিল্লানগর লুঠ লের গাুদে পতিত হইয়াছিলেন, কিন্তু তাহার করিয়াই পারস-দেশে প্রক্রাগমন করেন। । একটি পুল ছিল, তাছার নাম মালিরাও। পে-১৭৫১ খ্রীষ্টাব্দে যে সময় রোছিলাদিগের সহিত শুওয়া তাছাকেই ছলকরের উত্তরাধিকারী করি-व्यायाधात्र नवाद्यत यूच इह, उरकात्न छल- हाहितन, किन्नु पूछ्यत दिवस अहे या मिल्यन-वाद को नवारवत व्यानक माहाया करतन। नात छान वयः आध हरेए ना हरेए हे आवजात करता কৌশলক্রমে উহাদিগের উভয়পক্ষের মধ্যে সঞ্জি তদ্পস্তর থুনিরোও-ছল্করের উপজ্ঞা অহল্যা-করিয়া দেন। মহারাষ্ট্রীয়দিগের যুদ্ধকালে গা-াবাই অভি-আন্চর্যাক্তে শমন্ত বিষয়কার্য্য ক্লিউদ্দীন তাহাদিগকে রাজকর প্রদান করিবার নিষ্পন্ন করিতে লাগিল। তাহার ন্যায়-পরতা निभिन्न दर्भएथाक मृतु अवस्क्र धामान करत- । ও कर्यनक्र जो नमर्भन कहिया मानव-द्वारकात ন; ও তাছার পরিবর্ত্তে মহারাষ্ট্রীয়দিগের নি- 'সকল লোকেই তাহাকে প্রশংসা করিতে লা-কটছইতে ছাইদরাবাদের কর্ত্ব করিতে এক গিল। ফলতঃ তাছার অসাধারণ দয়া ও অসা-ফর্যান প্রাপ্ত হন। তাহাকে নিজপদে স্থাপন মান্য বদান্যতার জন্য ভাহাকে অবশাই প্রশং-করণার্থে এবং তাহাদিগের ভ্রাতৃবিরোধ-ভঞ্জ- সা করিতে হয়। তিনি টুকাজী-ছল্কর-নামক এক ব্যক্তিকে আপমার সেনাধিপত্য-পদে নি-युक्क करतन। किन्नु व व/क्नित्र निहरू पहल्। वाहेत्र कान विस्नय मन्नक हिन ना। अनेशाय-क्रिटब ७ राज्ञाननोटज करना राहे निन्नापिक चानक मध्कीर्ख चम्राणि वर्खमान चारह।

টুকাজী সমস্ত সেমার কর্ত্তা হওয়াতে সুভরাং এই সময় ए ल्कादत । (शम खग्नात जा जात महिक त्राष्ट्रात जिलात कर्म कर्म करिन।

লিত হইয়া গুজ্জর-প্রদেশীর ইংরাজ-দেনাপতি কর্নেল্ গডাডের প্রতি বিপক্তাচরণ করেন, এবং ১१৮ ७ শोलে यथन সেবানুর-প্রদেশের नवाव টিপুসূল্তানের উপর আক্রমণ করে; তৎকালেও ভিনি বিশেষকণে ঐ নবাবের সহায়তা করি-इाहित्वन। के हेरतान-एम्टम य श्रकात टेमरनात्र শৃঙ্থলা ও রাহি নীতি আছে, ১৭৯২ শালে টুকা-को जालन देवन।-मकन्तक (महे काल मृध्यना-বন্ধ করিতে আরম্ভ করিলেন। তিনি মুশি ও ডুড-त्रक नामक पूरे जन कहा तीमारक आपनात छात्रि দল বিধনের উপর অধ্যক্ষ পদে নিযুক্ত করেন।

নে বৎসর ভিনি একপ সৈনা প্রস্তুত করেন, প্নটার । প্রকার বেনা প্রস্তুত করিতে আরম্ভ তাহার প্রাণদণ্ড করিতে অনুমতি দেন। করিজান চিরাভাগেন-বশত মহারাষ্ট্রায় যোদা- অনতর যশোমতরাও নাগপুরে রাজার শর-লৈশ্ৰ জিল। ভাহারা অস্পৃষ্ঠইতে অস্ত্রহারা শনাং বে বহা শতু কর করিয়া জয় লাভ করিকে শবিক কিন্তু তালাদিগের মধ্যে **গুলি** গোলা काः म रम्पूरकर शक्तां श्रुठां श्रुठां इस्थारिक क्षत्रि सामापिरणत अनुस्रिक आवस इहेल।

াক্ষা শালে দ্বিকারী লোকান্তর গমন করেন; ও তাঁহার মৃত্যুর মৃত্তি বৎসর পূর্বে অহল্যা বাই প্রাণত্যাগ করেন: টুকাজীর চারি সন্তা-लंब मरका, थानिवास अवः मल्ब्रवास ठाः । বিবাহিতা জ্রীর গর্মজাত, এবং বিভোচী ও যশোষস্তরাও নামক অপর দুই সন্তান ভাহার উপজাৰ গল্প নজুত। তথ্যখো খানিরাওকে দুর্বল। विक्वाक च पूर्भोग क्षिड़ श्रधान डाक्क्य

কারিরা দেশব্যবহারানুসারে তাছাকে লৈত্ক मम्मेखिए धनिधकां के विद्युष्टनानिक বোধ করিয়াছিল। কিন্তু সিক্ষিয়ার রাজা তা-হার সপক্তা করিলেন: ठाहांत्र अक महा योका बक्रनीरयारण मन्द्रबारयंत्र श्रीक चाळ-মণ করিয়া ভাহাকে বধ করে, এবং ভাহার একটি শিশু সন্তান নিবিয়ার সেশাপতির হস্তে অপ্ন করে। সেনাপতি তাছাকে ধৃত করত नद्भ लहेश शबन करतन।

বিছোলী এবং যশোমস্তরাও উভয়েই তালা-দিগের হস্তহটত নিজ্তি প্রাপ্ত হন। অপর বিভোজি দন্যবৃত্তি অবলম্বন করিয়া কিন্তৎকাল সই বৎসারই সিধ্যিয়াদিগের সহিত তাঁহার দক্ষিণ-প্রদেশে মত্যন্ত দৌরাত্ম করিয়াছিলেন; মহানত উপস্থিত হওয়াতে তাহার ঐ সুশি- পরে লোকে তাহাকে ধ্ত করিয়া পূনা-রাজ্যানীতে ক্ষিত্র বৈন্য-সকল প্রায়ঃ অনেক হত হয়, কিন্তু লইয়া আইদে, এবং পেশওয়া তাহাকে হস্তির \* काल जिल्ला का अवाक दा निकल्माकी ना क्रेया अप जिल्ला विकास-शृद्धक दात र श्रीमिक क्रवारेया

মিশের সমারোহণ ও অক্সযুদ্ধ-বিষয়ে বিলক্ষণ পাপন হইলেন, কিন্তু রাজা শঠতাপূর্বক তাহা-কে বন্দি করিয়া রাথেন। তিনি ছয় মান কাল जे कारण काजाबाम कविद्या अवस्थिय शना-য়ন-পূৰ্বক কিছু দিন গোপনভাবে অজ্ঞাত-वात्न काल इत्रव कतिए लाणित्वन। जीहात चोत्र उरमाइ ७ उरम्जानकाता अवः भूवं भूकरमञ्ज অসাধারণ সম্ভুম হেতু অবিলয়েই তিনি পুন-र्वात्र (लाकमञ्जूर कतिए नक्षम इरेलन, अवः উপযুঁতারি কএক বার বিপক্ষের প্রতি আক্র-মণ করিয়া সভ্রেই বিলক্ষণ খ্যাতি ও প্রতি-পত্তি লাভ করিলেন। করাসিস যোগা ভুজর-न्दकत मूर्निकिक टेनमा ७ शाठीन टेनमा ४ क कामित्रथात कश्रीमङ (मना-नमूर, ७ डी-शां जांका धानिवां ब्राह्म (य नक्न देवन) नामञ्ज

हिन, (म नमछहे এक व इहें इं छीशांत वनी छूछ र्हेन।

তিনি আপন : জাত লাভার পুঞ থুনিরোও-রের নামে আপনাদিগের ইপত্ক রাজ্য রাখিয়া আপনি প্রতিনিধির পদ গুহুণ করেন; কিন্তু शृह्यां क मध्य देमानात প्राचिशांवातत व्यना कान উপায় লা পাইয়া তিনি কিছু দিন দসুত্ৰিভ व्यवलप्टन-शृईक काल इत्र किंद्रिक अवृत्व इड्या ছিলেন। শত্ত্ব মিত্র সকলেরি সর্বস্ক হরণ করিয়া দৈন্য প্রতিপালন ও আপনার অণরাপর ব্যয় নিবাহ করিতে লাগিলেন। তাঁহার দৌরাস্মে। সিলিয়া, পেশ্ওয়া প্রভৃতি হিন্দু ছানের অনে-কানেক ব্রাহ্য লোকশূল্য অর্ণা সমান ছইতে লাগিল। পরিশেনে উড্জন্ধনী-দেশে ভ্লকর-নৈ-ন্যের শহিত দিলিয়া-দেনার এক যোরতর সম্বুখ যুদ্ধ উপস্থিত হয়। তাহাতে দিকিয়াদিগের আ (नक (योक्ता नर्छ इस: **अव॰ उद्शरकात्रहे श**तः-क्षत्र इत्रु। अकामम कन इंडेरहालीय याकात मर्धः १ छन शंक इय, ७द॰ किन जन नाष्ट्राकिक करण আহত ও বান হয়:

অতঃপ: ইন্দোর রাজ্যে এক মহাযুদ্ধ উপস্থিত क्हेश निकिशांत निक्टे यत्नाम उत्रा अशांख रून, এক ভদুপনকে বিপক্ষের ভাছার রাজধানী শ্রু করে। বশোষস্তরাও অবশেষে অপর কোন উপায় না দেখিয়া আপন বৈন্যদিগকে রভ-লম্নগর লুঠ করিতে অনুমতি দেন: ইহার পর কিয়ংক ক তিনি নিয়মিতৰূপে আর কোন যুদ্ধ विश्व कटन नाइ, ममू/वृद्धि अवस्थान-शूईक निः । कामा विष्य नाइ विष्य भ-প্রক্রিট বেন। সমন্তিব্যাহারে করিয়া রাজপু-। পরাক্ত হব। পরে করক্রাবাদের এক যুগে

কিয়ৎকাল গত হইলে পর আক্টোবর মানের ২৫ দিবলে পূনা-নগরে তাঁহার সহিত সিক্ষিয়া त्रासात्र अक महाननुष्म रुद्र; अरे यूटक यटना-मस्त्रां क्याधार्य वीत्रव ध्रकाम करत्न, स मन्पूर्वस्थ जभी हन; उथा मिसियात्राका शना-য়ন করেন। আতঃপর ১৮০২ শালের ৩১ ডি-रमञ्ज-रिवरम वे ज्ञाकषात्रज्ञ मस्या अक मिक् স্থাপিত হয়।

্তদনস্তর শিতারার রাজার নিকটহুইতে যশো-মস্তরাও পেশ ওয়ার রাজ্যে নৃতন অধিপতি নি-যুক্ত করিবার অনুমতি প্রাপ্ত ইইলেন, এা॰ তৎ-পদে रिमायकरा अरक विভिधिक कराहे मनः कति-लिनः अगठ गमश वा**जि**ता ७८क अक मल वी हिंग বেনা সমভিব্যাহারে পুনা রাজ্যে আগম‡ করি-তে দেখিয়া তাঁহাকে অবরোধ-করণাথে তথা-কার শত্রু-মিত্র-সকল পক্ষই এক যোগ ছইল: এই উপলক্ষে বিক্ষিয়ার রাজা যশোষতের সহিত মিলন করণাভিলাখে তাঁয়ার ভাুত্গুঞ গুনি রাওকে তাহার হয়ে সমর্গণ করেন। যাশা-मखडा व यमिक विकित स्त्रतात विशयक कव वा-वन क्रिएं **क को कांत्र कांद्रिशा दिलन ;** किन्तु कल क मीघु छाहा अनुष्ठान करत्रम नाहै। अवस्मरः ভ্লতরের সহিত ব্রিটিশ-রাঞ্জে বিবাদ জিল-ष्टिञ् इत्र, अव॰ कर्तनम् मन्त्रम् गार्ह्रदत्र प्रर्थे-**म**%्षक एन गामाना रेनरमात नहिल युध क्रिया यानाम खता । अध अध हरेया महाना-ह्मी हरेशा উठिल्लन, बद॰ कवित्र चाहि বর্ত্ত অন্তিতে আরম্ভ করিলেন। তিনি জের দিল্লীনগর আক্রমণ করেন, কিন্তু তাহাত্ত তানা অবধি পূন-পর্যান্ত সমস্ত দেশের প্রতি পরাত্ত হইয়া বলোমন্তরাও ভরতপুরের রা नान। कोताका कतिर्छ लागिस्मन। **এই প্রকারে । कात भारताभग्न इन, এবং ভারার নহায়তা**॥

প্রস্থান করেন; কিন্তু তাহাতে কোন ইষ্ট সিদ্ধ ব্রিটিশদিগের নিকট পরাস্ত হন; এবং আপনার व्यत्नक-त्राज्ञापि-क्यांच-श्रांकात्र-शूर्वक जाशापिरशत সহিত সন্ধি করিয়া স্থীয় দৈন/সামস্ত লইয়া মালব-রাজ্যে প্রস্থান করেন। এই ঘটনার এক বৎসরের পরে ব্রিটিশ-কর্মাধ্যকেরা তাঁহার সদ্ব্যবহার দেখিয়া ভাহার সমস্ত রাজ্য কিরিয়া দেন।

মানবে তাহার কায়াবদ্ধ ভ্রাতা থাসিরাও এবং তাঁহার গার্রবটা পত্নীকে বধ করেন। ঐ ব**ৎসরে** ভাষার ভাতৃপুত্র একাদশ-বংশরের বালক থানি রাও বিষ পানদার। প্রাণত্যাগ করে।

যশোমন্ত রাজ্য-সম্পদ্ বৃদ্ধি করিতে অসম্ভ অনুরাগাহও য়াতে, ক্রমে ভীহার বুদ্ধির হুবে

जूननी वार्व नमस्य ब्राह्मकार्या निष्णापन कविएवन।

माग्रक, मिखमाग्रक, अवः वष्ट्रनाग्रक हेशा कि-

উপর্যুপরি কএক বার ইংরাজদিগের অনেক সকল দোষ ঘটিল। প্রজারা বিহিত বিবানে অনিষ্ট করেন। অনন্তর ভরতপুরের রাজার সহিত বিচার প্রাপ্ত হয় না; সেনাগণ বিশ্বখনাগুত ব্রিটিশদিগের সন্ধি হইলে তথায় আর কোন হইয়া বেতনের জন্য সর্বদা উৎপাত করে: এই উপায় मा পাইয়া-রাজা রণজীত নি-ছের সাহা- । সকল অবস্থা সন্দর্শন করিয়া তুলসী বাই জি-যা পাইরার প্রত্যাশায় যশোমন্ত শিথ-রাজ্যে, হার এব- সেই শিশুসন্তানের রক্ষণাবেক্ষণের জন আপনাহইতে ব্রিটিশ-গবর্ণশৈষ্টের নিকট সাহায্য না হইলে অবশেষে লার্ড লেক সাহের কর্তৃক প্রার্থনায় আবেদন করিলেন। এই প্রকার প্রস্তাব भां इहेन, किन्नु वन्तु किन वावन्त्राहे हहेन না; অধিকম্ভ পেশওয়ার সহিত পুনঃ শতুত্ব আরক হইল। পেশওয়ার পঠোন-কর্মাধ্যকেরা छ्ल्करवद रागमिश्रं मकन त्व छन शतिरमाध করিরা ভাষাদিগকে বশীভূত করিল, এবং যুদ্দে প্রবৃত্ত হইল। প্রথমতঃ তাহারী ত্রদা বাইকে ইং১৮০৬ অব্দে যশোমস্তরাও নিক্ষণ্টক হইবার বিধ-করণ নিমিত্ত ভাঁছাকে সিপরা-নদার ভীরে প্রেরণ-করিবার মন্ত্রণা করিল, এবং ভাছার প্রধান ২ মন্ত্রিদিগকে কারাগারে রুদ্ধ করিল। পরে মহাদ-পুরে এক ঘার সম্ভামে ছল্কর দৈন্য এতেবারে পরাস্ত হয়, এবং মুভরাং ভলকর-রাজ্যের কলেক-ক্ষতি-দীকার-পূর্বক পাঠানদিগের সহিত তাহাদি-ণের মনোমত-নিয়মে দল্ধি তাপন হইবার প্রস্তাব হুইতে লাগিল: এবং পরে তিনি বিক্ষিপ্তপ্রায়ঃ হয়। ঐ স্থার প্রধান নিয়ম এই যে ন্বাব অম্র হওয়াতে ভাঁছার ক্লাভাগণ ভাঁহাকে যাব-়ুখাঁ এবং ভাঁহার শালক গফুন খাঁর জায়গাঁর যাহা ভটাবন কারাকদ্ধ করিয়া রাখিলা ঐ কারাগারে ত্ল্করের অথান ছিল তাহ: এককালে ভ্যাগ করি-ই॰ ১৮১১ শালে তাঁহার লোকান্তর-প্রাপ্তি হয়। 🔻 তে হইবেক; কোটা প্রদেশের কর্মকর্তাকে চারি-यानामाख्ड উचामावणात्र जीहात शूल मनश्त- थानि চाकना निका मान कतिए ठहेरवक, अवः वि-রাও তৎপদাভিষিক্ত হয়; কিন্তু তাঁহার প্রিয়পত্নী টিশ অধিকারের মধ্যে সৎপুরা-পাহাড়ের দক্ষিণাঃ-শে হল্করের যে সমস্ত ভূমি আছে, ভাছা বিটি-যশোমন্তের মৃত্যুর পর অবধি ছল্কর-রা- শদিগেরই থাকিবেক। এই নিয়মে সঞ্জি তাপিত জ্যের অভি শীঘু ২ হার হইতে লাগিল। ফলতঃ ইইলে পর ব্রিটিশ-কর্মাধ্যক্ষের ছঙ্গান্তের অবশিষ্ঠ রাজ বিপুবের সকল কারণ ঘটিয়া উঠিল, জ্রী- সকল রাজ্যের রক্ষণাবেক্ষণের ভার পূত্ণ করিলেন। **बरे व्यवसाय स्व्याय प्राक्राय (य व्यक्षिय) है**ल

छूत्रहे यात्र वारमका त्रित ना; द्वारकात्र উপत उमातावार्यिक अनक होका उभस्य उर्के हे

উন্নত হট্য়া ভাছাহট্টে ২০ লক্ষ টাকা বাৎস্ত্রিক উপস্তু जित्र इहेशाहिल: वे हेरिकात सथ इहेरड কেবল তিন সহসু অস্বারোহী সেনার ব্যয় নির্বাহ कदिए इडेंड।

কালাব্যি পরম্যুথে রাজ্য করিয়াছিলেন। তাঁছার পদুবে রাজ্যপালন করিতে লাগিলেন।

किन्नु के व्यक्षिकात्र इ कृषि मकरत्र व्यवका क्रमणः शिषात क्रमामावद्यात शत्र वकाम् वश्यत कात य यज প्रकाता मामा कहे शाहेशाहिक, तारकात প্রতি নানা উৎপাত ও উপদূব ঘটিয়াছিল, তাহার नभएम (छमनि अञ्चादा नकरन मूर्थ कानकदव क्षिरं काशिल, फिनफिन बारकात्र म्स्थना वृद्धि ইহার পর যশোষভার পুঞা মল্হররাও বছ- ছইতে লাগিল এবং মলহররাও নিক্তিকে নিক্ত



कख्ती-मृग।

थिया लाटक कहिएक लाशिल, " मध, कि निर्देश পুৰুষ; আপন সন্তানকৈ হাঁটাইয়া আপনি গা-্ৰিটাৰিক বিত আছে যে একদা গৰ্মজ-পৃষ্টে। ধায় চড়িয়া যাইতেছে।" বৃদ্ধ ঐ কথায় লজ্জিত এক ব্ৰ ভাছার সন্তা- হট্য়া পুএকে গদভাৰত করাইয়া ৰয়ং পদ-नत्त नाम नरेश राजे बारेरा बुद्ध हिन्तः किन्न छारार का मर्निन ार्की हिन। পथिमत्था डाहानिशतक एन- ना। शथितकता वे मूखाक अत्रभक्ष (सथित। হাঁটাইয়া আপনি গৰ্মভ-পৃষ্ঠে ষাইতেছে "৷ পুঞ ঐ তিরক্ষারে থরপৃষ্ঠ হুইতে অবতরন করিয়া अम्युक्षी रहेन, किन्न हेराटा किन्नाहरेट के পিতাপুঞ্জের নিজ্তি হইল না; করেণ ভাহা-দিগকে তদবস্থায় দেখিয়। অপর কতকগুলি**্** लाक कहिए नाशिन, "प्रथ, इंशां कि म्थ! श्रुष्टै अवही अर्फेड नक्ष्म थाक्टिक्ड जाल-नाता हाँ हिंशा मतिरुष्ट्"। विविधार्थ आनि-বিদার আলোচনায় আমাদিগের এই বৃদ্ধের मना छेशश्चित्र।

আমাদিগের আত্মীয় বন্ধু অনেকেই জীবসংস্থার বর্ণনে সভ্প হইয়াথাকেন; তাঁহাদিগের বোধে विदिधारथे य करमक श्रष्ठ পশুপক্ষ। দির বিব-রণ থাকে তৎসমুদয় ব্যথপ্রযুক্ত হয়; তাহাতে यनः (कान প্রয়োজনীয় প্রসম্ব থাকিলে অনে-কের উপকার দর্শিতে পারে। এতৎপত্রের ভিন চারি পৃষ্ঠের অধিক কদাপি প্রাণিবিদ্যার ষালোচনায় নিযুক্ত হয় না; ত্রাপি তাহার অনুরোধে তাঁহারা সমস্ত পত্রকে প্রাণিবিদ্যোৎ-শাহি পত্র বলিয়া উল্লেখ করেন। অপর কৃতি-পয় বিদ্যোৎসাহি মহাশয়েরা কভ্নে যে এত-দেশীয় ব্যক্তিবর্গ প্রাণিবর্গের অবস্থা-বিষয়ে অত্যস্ত অজ্ঞ, এবং তৎপ্রযুক্ত প্রচুর-পণ্ডপক্ষি-পরিবৃত-দেশে বাদ করিয়া ঐ সকল জাবহইতে আপনাদিগের ঐহিক মঙ্গল সাধন করিতে পারে ना; चल्जव लिबर्य मानास्वानी हरेश याहा 🖟 তে चर्मान-स्मान की वम्धि-इइंटि व्यर्थमाधन याकिट भारत मा। मकिका कि मामाना अहार्थ! করিতে পারেন ইছা আমাদিগের অবশ্য কর্ত্ত ; । আশু বোধ হয় না যে তাহার দৈহিক বিষয়ন তাহাতে কোন মতে নিৰুদাম হওয়া উচিত শুলুতবা হইতে পারে, অথচ ঐ মঞ্চিকা হুই-সৃष्टित वित्रत् नमाग्राक्राण कांच रहेरच भारतन जाहारहेरच कच नर्मु मन मध ও माम छैर-

কহিলেক, "এব্যক্তি কি পামর, বৃদ্ধ পিতাকে। ইহা সর্বদা চেপ্তিতব্য। মুত্রাং পশুপজিব বর্ণন করা না করা উভয়ই কোন না কোন আস্থেগণের चार्जाश्वत कात्र विराहित । अहे के इस मक्रा উক্ত বৃদ্ধের ন্যায় পুনং ২ অবস্থার পরিবর্তন না করিয়া কোন পক্ষ যথার্থ ইপ্ট ভাহারই নিৰূপন করা সম্পূতি আমাদিণের কর্ত্তর। ইহা অনা-য়ালেই অন্ভূত হইভেছে, পশুপক্ষির বিবরণ সু রম মুপাঠ্য নংখ: অতি আলা ব্যক্তি তৎপাঠে পরিতৃপ্ত হইয়া থাকেন। জি উংরাজি, কি পারনি, कि नःष्ठु, कि वाञ्चानि, कि कत्रानिन्, कि हिन्दूः যে কোন ভাষায় শামরা জীন-বিনরণ পাঠ করি-য়াছি তৎসমুদয় কৰ্কণ বোধ ছইয়াছে; কোন বণনাই কৌতুকাবহ গণ্পের ন্যায় মণোরম অনু-कृष्ठ इध नाई; शहु क्रोवमः कात वर्गनास कृ<u>ण</u>ा-ব্যতা ভিন্ন অন্য কোন দোষ কেহ আরোপিত করেন নাই: বোধ করি ইছার উপকারিতা विषयः काहात नत्मह नाहे। हेहा खोक हंव। य "একটা সাদা পোকা আছে, তাহার লেজের কাছে अक्टो कान हिन्स् थारकः वे कीं नाजिसन তুত কি অন্য গাছের পাতা খায়, আট বা দশ मिरनत रिन छि वैराधि " अञान्त-वर्गनाम ज्यापन-লোকের তৃথি জন্মিতে পারে; পরস্তু যথন মনে कता यात्र (य नर्सिष्कृष्ठे उक्त थे की वेष्ट्रेट उष्-भन्न रम् जाहात প্रতিপালনে ভারতবর্ষে বিং-শनकाधिक मनुष्य প্রতিপালিত হইতেছে, अ প্রতি ববে দুই কোটি মূদ্র লভ্য হইয়া থাকে— তখন ঐ কাটের প্রতি সে হেয়জ্ঞান আর কদাপি मरहः (य काम প्रकाद्ध अछएमभीय बाक कीव- एक कड बाक श्रष्ट्य-मन्माख-भानी इनेप्रारहः।

खे**० शञ्च इहेश: वर्रक ; मृन्मत्रवर्रम (महे म० मा व्याह**ः किञ्ज जाहा हरें एक एक प्राचा ७ आ इस ना; একথা জন-সমাজে জাতে করা ও ঐ মৎস্যের বিবরণ প্রচার করা আন্ত শ্রুতি-কর্মশ হইলেও ক্ষন্তিত বেধি কইতেছে না, তালচড়া পাক্ষার ন্যায় ম'লাকা-দেশে এক প্রকার পক্ষী আছে, কিন্তু তা-হার নীড় সামান্য তালচড়ার বাসার তুলা নহে; ভাষ্য 🖟 প্রিদিগের মুখামৃতে নির্মিত হয়। 🗟 ভালচড়ার বাস। বিক্রয় করিয়া তত্ত্ত মন্-েটলা প্রতি বয়ে পাঁচ লক্ষ টাকা প্রাপ্ত হুইয়া पारक। कविमनना शास्त्र अक श्रकांत की है জন্মায়, ভাষা ছারপোকা ধ্ইতেও ক্দু, পর্ম্ভ তাহার বাণিজ্যে দক্ষিণামরিকার লোক পঞ্চা-म लक्ष টोक। वास करहा अञ्चलभोग्न वाकाः कीवें अ विषयां प्रभागा मुद्धां अरह। जाहा अञापना कुमू ७ अवश्वीं की वे बब्द थारक य (राध इम्र उर्ध्युक लाएक नक भएकत जन-ट्रिंग ज्ञाहात नाम नाका हाथिशाए। शहसु के। कण्य । अपूर् की है इंटि कर्र अर लक सन शाला हिश्मा इंडेस पारक, जे कोट्डेंस विवत्न कानाम ब्हारकः डेलकात **डिम्न कर्नाल श्रमकात मस्ट**व না ে পশুর লোমে শাল প্রস্তুত হয়, যাহার বিষ-হান? কোন্ দেশে কোন্ কটি-পতছ্হইতে পালুক। ইবার সন্থাবন। নাই, যাহার মাণ্সে কি২ পশু লইরা পেলে লোকের সুথসমূদ্রি েত আহার আশুল ভিন্ন দুর্গম প্রান্তরে যা- শাই হলতের মহলোমতি হইতে পারে, আর कानमण्ड कनुष्कु किट्ड शांति ना। जन्नित्र जान नमान्द्रनीय, हेश चामद्रा मूककार्छ चीकाद्र

পত্র হইয়া আমাদিগের সুথ সংবৃদ্ধি করিতেছে! মেদ বিক্রয় করিয়া কবিয়া-দেশের মলুষ্য ২০ মালাকা-দেশে শেলেলামক একপ্রকার মৎ- লক্ষ টাকা প্রাপ্ত হয়; তৈমি-জীবের বাণিজ্ঞে স্থের পোঁটা বিক্রীত হটয়া বধে দলবিক টাকা বিলাভি ৫০০০ জাহাজ নিযুক্ত আছে, ভাহাতে অম্পত ৮০,০০০ মনুষ্য উপজাবিকা পাইতেছে। मृगारनंत्र लाम, मकृरनंत्र लाम ७ वीवत-शक्षत লোম সঙ্ক করিয়া কত সহসু ২ মনুষ্য ধনাচা **इहेट्टिष्ट् छेख्डाम्ब्रिकास लाग मन्**र क्रिया এক দল বণিক্ প্রতিবর্ষে ১০ লক্ষ দীকা প্রাপ্ত হয়। नमुद्भ विमुक ध्रतिशः जन्भ उः ১०,००० व/ खि। क्रीवि-कः छेलाङ्झंन क्रिट्डिष्ट् ; म्राह्म वाह्ने महुरू করিয়া কত সহসু ব্যক্তি প্রতিপালিত ইইছেছে? কত শত্ জাবের দন্ত, নথ, পক্ষ, কেশ, বঢ়া-**फिट्ड मनूरपात न्थनम्भि वर्षि इट्टाइट्ड**? মন্ব্যের ভক্ষণোপযোগি মৎস্য মাংস প্রতি-মাদে কত লক্ষ মোন সম্ভাত হট্যা থাকে, अवः ठाशाट मनूर्यात कि लग्रा छेलकात, একবারমাত্র তাহার চিন্তন করিলে অনেকেই चीकाह कहिरवन, त्य कीवन्ष्टित क्वान आमानि-भारत प्राक्ति शास्त्र व्याप्ति । कान् मेर्भ নুথাদ্য ও কি বা অস্বাস্কর? কোন্পশু কি উপকারজনক ও কোন্পশুই বা আনিষ্টকর? কোন্ **मिट्न कि পশুতে লোকের উপকার মন্তবে? ও** কি উপায়ে হিংসু ও অহিতকর পশুর উৎসেদ **इहेरक शारत? कान् गर्श वियाक्त, ७ कान् मश** শ্ৰেছ চামঃ উৎপর হয় যাহার চর্ম ভিন্ন উত্তম। লোকে কিং কল প্রাপ্ত চইয়া থাকে? কোন্ সানে প্তिलोह कथिलाहम मन्या कीवन थाउन कहि- कृषि इहेएड शादि । बहे मकल कन्यबारन कर-कार एक काल माछ छेलाए नाई. तम्हे नकन (य चात्नावनाम बेहिक-कूमन-मछावना, जाहा कीए ह विवहन-भारते य कवा छात्र हैश आमता आख मून्ति मां क्रेटल य आमानिर्गत्र नि- **নকলে**র হাদয়ক্ষ হয়, তাহা আমাদের চেষ্টি-**उत्तर, हेहा । नियुष्ठ चल्लीकात कतिएक हहे ति ।** 

যে পশুর প্রসঙ্গে আমরা এ পর্য্যন্ত লিখি-লাম, তাছাকে অত্প লোকে চিনিতে পারিবেন, পরস্তু সে আমাদিগের কথিত বাক্যের পো-यक वर्षे : जनमविष्णां कछुतो चे शश्रहहेरड উৎপদ্ম হয়। হিমালয়ের উত্তর-পার্শে ইহার বাসস্থান; তথায় নীহারমণ্ডিত পর্বতশৃক্ষে কটে উৎপন্ন যথাকথঞ্চিৎ তৃণ অবলম্বন করিয়া এই পশু দেহযাত্র। নির্বাহ করে। ইহার পদচত্ব-ঔয় অত্যন্ত নৃকা; দূরহইতে তাহাতে জঙ্বাদির বিভিন্নতা বোধ হয় না, এই প্রযুক্ত সামান্য গণ্প আছে, যে ক্সুরিকা পশুর হাঁটু নাই!

এই পর্ত্তর অবয়ব হরিণ-তুল্য, এই কারণবশভঃ উহা মৃগ বলিয়া প্রসিদ্ধ আছে. পরস্তু মৃগহইতে <sup>ভি</sup>হার অনেক অংশে প্রভেদ দৃষ্ট হয়। ইহার **শৃক্ত** উৎপন্ন হয় না, হরিণের ন্যায় ইহার চক্ষুলে শক্ষিছিদু নাই; অপর ইছার উপর মাড়িতে জাত मूरे गढान छ ग्थरहेट पूरे जिन च खून विश्तिंग ठ হইয়া থাকে। ইহার লোম স্পার্শ করিলে ইংরাজী কলমের পালথের ন্যায় ককশ বোৰ হয়। কন্ত্রা **इंडाम्टि**गत गांखिएए**म ज**्या, गरुष्ठ এই পণ্ড श्रीष्ठवयुक्त ना इहेंदल जे भराष डेंटशन इस ना; অপর ভাহার গন্ধও সর্বদা নমান থাকে না। डाशास्त्र अपूकारनहे के शक्षमुवा अठा छ भूवा-সিত হয়।

ভারতবর্ষে কন্ত্রী ভিন দেশহইতে আবিয়া थारक, उपाया यात्राम, तिशाल. बदः कायोदः चमार्थ। चानाम-स्मरमङ कलृती উत्तम, ও काची-দ্লাগত কন্ত্রী অধম।

क्यूबी-म्राब मध्या व्यक्ति व्यक्ति, अव र छा- विश्व भूतहरू वाध इदेरहरू।

कतिबः, ज्ञा याहत्त्व ले वाका आजीव वसू । शतक वध-कताब मुकठिन, मुख्दाः कर्वती अखा-**स्व व्यक्षिकमृत्व। विकास एस, अवः** व्यक्तिक मध्य কিঞ্চিৎ কন্তুরীতে মাংস্থণ্ড ও শোৰিত মিঞ্জি ক্রিয়া কৃত্রিম চর্মলোমে মণ্ডিভ করত বিক্রয় করিয়া থাকে; পরস্তু তাহার কৃত্তিমতের পরীক্ষা করা কঠিন নহে। কৃত্রিম কস্তুরী অমিতে নি-ক্ষিপ্ত করিলে যে প্রকার দুর্গজ্ব নির্গত হয়, প্রকৃত কভুরীতে তাহা मছবে न। কোন ২ সময়ে बककारन >•••—>व••• नांचा अ**उप्सरम चानीउ इ**हेशा थाटक।

> ক্ষুরিকা-মূগের লদুশ ভারতসমৃদ্রীয়-ছাপে কতকগুলি কুনু পশু আছে, কিন্তু তাহাদিগের নাদিতেক জুৱা উৎপন্ন হয় না। ২৪**৯ পৃষ্টে ৰে** চিত্র মুদুত হইয়াছে, তাহা কভুরিকান্গ-বংশ জাত। তাহাদের জন্মস্থান জাবা-দ্বাপ; তথায় তাহারা অতি মনোহর বলিয়া প্রনিদ্ধ আছে; কলতঃ অর্জহস্ত পরিমিত কুদু হরিণ লোকের श्रिम्न इहेर्द, हेहा चाम्ठर्य मरहा सावाबीला बहे नध "मिद्राहिन्" नाम विथान। क्ल-কাতায় ইহা কথন২ আনীত হইয়া থাকে।

#### व्योश।

\*\*\*\*\* 🏰 শুপাতার অনুকল্পার পৃথিবীত্ত যে 🛊 দুবে/র যে পরিমানে প্রয়োজন তাহা 🖁 🛠 🛪 🍇 🐐 বেই পরিমাণেই প্রস্তুত হইয়া থাকে; काम पुरा প্रয়োজনীয় পরিমানের অধিক বা অন্প দেখা যায় না। কি স্থাবর, কি অস্থাবর, मकन-अमार्थ-नश्रक्षहे अहे नियम मूश्रिक कारक,

<sup>\* &</sup>quot;कोश्यार्वत विवाम" मामक श्रीकात्त्र शृक्षिते और श्रीकाद মুদ্রিত করিবার উচ্ছা ভিল; কিন্তা টনসাম ভাষা না হওয়াতে

कूबाणि ইहात व्यमाथा मछावनीय नरह। शाराकीव बर्शकांत्र थापककोरवंद्र मह्थत बण्ला, रेश ब-নেকেই জ্ঞাত আছেন। প্রয়োজনীয় সো অপে-काम्र अश्रहाङनीध वराघू कछ अः म अन्य? त्य शतिभारः थानगामि मनग्र करका, जाहात नहिज স্বাদু অথচ অপৌষ্টিক দাড়িষের তুলনা কে-इहे कहित्वन ना। भूवर्व नर्वाटिशकांत्र भूमत ধাতু বটে, কিন্তু লৌহ-তামুদি-ধাতুতে আ-यामिटशह रंग नकन डेलकात म्टर्न, मूर्दर्न ভাগার কিঞ্জিতাত সন্তাবনীয় নহে। মনুষে/র कें हिक-मूथ-मः वर्षनार्थ लोह याम्य উপकाती অপর কোন ধাতু তাদৃশ নহে। রজত, কা-ঞন, দীসক, তামুাদি ধাতু পৃথিবীতে না থা-কিলে আমাদিগের কোন বিশেষ অনিষ্ট সন্মবে ना; किन्तु व्यक्तान्त्रकाल लोहितिशीन हहेल व्या-मामिनाक পश्चरहेराज्य व्यथम रहेरा रश्च-र्ग्र. বন্ধ, অলক্ষার শস্পাদি কিছুই আমরা বিনা লিহে প্রস্তুত করিতে পারি না। কুধার্ত-কুরুই-পকে शंतक यामृत्र, । लोर्ष्ट्रत जलाद मूदर्व जामानिरगत পজে তাদৃশ হইয়া উঠে। বর্ণ-বলর অপেকায় मः, कुष्तुन, ছूत्रो, य कि शर्यान्त अरक्षाकनीय जा-श्रंद वर्गना कहा यहिए शास्त्र ना। अहे अयुक्तहे জগৎপাতা কাঞ্চনাপেকায় লৌহ-তামাদির পরি-মাণ অপরিমেয় **অধিক** করিয়া**ছে**ন।

প্রায়ঃ পৃথিবীর সর্বত্রই লৌহ পাঙ্রেয়া যায়—কি नाहारावृत्र विममस्त, कि छेउस शुमानस्त, नर्वे बहे लोह वखगान चाहि। ভाরতবর্ষের প্রায়: नकन ञ्चात्नरे लोह अनावात्म आखवा, बहे अयुक्त बक জন পণ্ডিত কহিয়াছেন, যে "ভারভবর্ষের কোন্ ভানে লৌহ পাওয়া যায়, এতদপেকার কোণার লৌহ পাওয়া যায় না, ইহা নিদ্দিষ্ট করা কঠিন"।

ৰাই; ৰাতৃকলেও ইছা ধনিকে সুপ্ৰাপ্য নহে। ৰভাবনিম ধাতুৰূপ ৰে লৌং পাওয়া গিরাছে, ভাছাতে নিকেল্ দাসক এক বিশেষ খাতু মিশ্রিক আছে; খনিজলোহে এ নিকেন্ ধাতুর সম্পর্ক দেখা যায় না; অপর নিকেলের সহিত মিশ্রিত লৌছ-পিণ্ড আকাশহুইতে পড়িতে দেখা গিয়াছে; এই প্রযুক্ত পঞ্চিতরা স্থির করিয়াছেন, যে নিকেল্-मिण्डि यक लोह शाख्या शियाहि, छ समूना-য়ই আকাশহইতে আগত। জিলা বাদ্ধুড়ার শাল্-का-गुरम है: ३৮०३ षरमत ७०८म नरवयत त्राबि पूरे প্রহর একটার সময়ে কএক ব্যক্তি আকাশ-হুইতৈ এই প্রকার লৌহপিও পড়িতে দেখিয়া-क्ति; ७ भद्रिम প্রাতে গ্রামত আনেকেই এ লোহপিও ভথকরত তাহার এক ২ খণ্ড গৃহে লই-য়া যায়। তাহার এক খণ্ড এইক্সণে কলিকাভার चानिशाष्टिक (नानाइंगे) नाम्नी नजात नजुरालएत বর্তমান আছে। রাজনহলের নিক্টর পড়্গপ্রের পাহাড়ে এই প্রকার ১॥০ মোন পরিমিত একথণ্ড लोह পिष्याहिन। शिक्रात्म कम् कविन् किरन निम् नामा এक व्यक्ति এই প্रकार এक लोहथस দেখিয়াছিল, তাহার পরিমাণ. ৪০৫ মোন।

थनिमस्था य नकन लोह পांख्या याय. डाहा অক্সিজিন বায়ু, কয়লা,গল্পক,সৃত্তিকা,বা সেঁথুয়ার महिल मिल्रिक शारक; वे मकत शरार्थक्रेटक श्वक कद्राहे ब्लोइटनाधन-कार्याद्र अधान कल्ला।

य बाबूट श्थिबी नमाबृक चाह्न, जारा पूरे অংশে পৃথক্ হইতে পারে, ভারার একের নাম चक्तिकिन, ७ चलाद्वद्व माम माहेट्योकिन्; उचार्या चक्निकिन् चामापिशित दिल्य श्रद्धाक्नीतः তाहारे चामारिशंत कीवनाववधनः उच्छित्र चीन-কর্ম নিষ্ণন্ন হইতে পারে না, ও তৰিয়হে প্রায়ঃ चलावित्रक गतिष्ठक लोह कुवाणि भाषश्च यात्र टिकान भहावह व्यक्तित्वारम ख्योक्ष हरेट गाँद

ना। जोटरत गहिन्छ से वार्त्रत अनाशांत्र मिनन रहेशा थारक: এই প্রযুক্ত লৌर बভাবত: পরি-গুদ্ধ থাকে না, অবিলয়ে তাহার সহিত মিশ্রিত **हरेश याय: कनडः कारात मिनारनरे लोटर** मितिहा शएए। व्यामता य नकम लोह वाव-हात्र कति, जाहात व्यथिकाः म अ मतिष्ठाहरेट প্রস্তুত হয়। ঐ মরিচাপ্রযুক্ত গেরিমাটি রক্ত-वर्ग इरेग्ना थारक। जे मजिहात महिक कग्ननात मः यात्र इहेरन जाहात वर्ग छकू, शोज, तक वा পিঞ্চল হইয়া থাকে। কয়লামাত্র-মিশ্রিত লোহ मोनरकत नगर कामल, এবং "পুষেগো" नात्म अभिकः कार्ष्टेव लिस्मिन् निर्मान कविएक जे পুরেগো পদার্থ ব্যবস্থাত হয়। গন্ধক-মিশ্রিত লৌহ শুকু, পাত, কৃষ্ণাদি, নানাবর্ণের হইয়া থাকে।

**ब**र्च नकल नानाश्चकांत्र लोह-नहार्थ शांत्रः স্ত্রাপণ্ডকপে প্রাপ্ত হওয়া যায়। তাহাহইতে लोह श्रञ्ज कतिएव इहें एवं चारिने के लिख वड़ খোয়ার ন্যায় চূর্ব করিতে হয়; পরে আহা এক দিন বা ততোধিক কাল অ্যিতে পোড়াইলে তাহাহইতে বাষ্পা, গন্ধক, সেঁথুয়। প্রভৃতি পদার্থ নিগত হইয়া যায়। অতঃপর কাঁপা-থামের नाम अक ह्झीमर्था वे लोक्टक ह्रानंत्र भाषत् চূর্ ও কয়লার সহিত একত্রে নিশ্রিচ করিয়া দিয়া **ৰাদশ ঘণ্টাকাল ক্ৰমাগত বৃহৎ** জাঁভাৰারা বা অন্য কোন যন্ত্রধারা অগ্নিকে অভ্যন্ত প্রথর করিয়া রাখিলে লৌক গলিয়া চুল্লীর নিমুভাগে পভে। পরে চুল্লীর নিকটে কতক বালুকা ছড়াইয়া ভাষাতে পরঃপ্রণালিবৎ ছিদু করত, চুল্লীর নিমৃ-ভাগে এক ছিদু করিলে দুবীভূত লৌহ নির্গত হইয়। ঐ পয়:প্রনালীবং ছিদ্রে নিপতিত হয়। ঐ দুবী-ভূত লৌহের নাম; "পিগ্লায়ারণ" বা "চা-

অনেক ব্যবহৃত চ্ইয়া বাকে, পরস্ত ডিভিডাপ-कबु जास्वय अस्ति लोट्ड अधान अन्तरका ইহাতে থাকে না; সূতরাং ঐ দৌহে অজ ব। যদ্রাদি নির্মাণ ও তার বা পাত প্রস্তুত হইতে भारत्र ना। जे नकल मृत्वात श्रासाखन स्रेटन बारिन के छानाई-लोग्टक मूहेमधीकान व्यञ्ज প্রশ্বর উত্তাপে দূব করিয়া রা**থিতে হ**য়। **তাহা रुरेत थे लाइर्**रेट कश्ना अक्निजिन-वाश् প্রভৃতি পদার্থ নিগত হইয়া লৌহ গুল হর। **बह स्नाधन-कार्यात शत जे लोहरक करन मीडन** করিতে হয়; ও তদনন্তর অপর এক চূলীতে ঐ লৌহ দুব করিয়া দুবাবস্থায় ক্রমাগত বি-लाएन कतिएक इब्र; उद्माता लोह इहेटक অনেক বায়ু নিগত হয়, ও লোহ ক্রমশঃ কঠিন পিও হইয়া যায়। ঐ কঠিন পিও পরিওছ तोहः **जाहाट** कोह्ह नमस ४१ वर्डमान थारक। ভाशरक शिष्टिया চाम्ब कवा यारेटड भारतः गिलिगाइ-दे । लोह्यस्य हाभिया भद्रा-**मिया वानान यात्र; ও ডाই नामक यद्य होनिया** ভার বানান যাইতে পারে; অধিকস্তু কয়লার সহিত বিশেষ প্রক্রিয়াদারা ঐ লৌহকে পুনঃ দু<del>র</del> कतित्व हेम्लाज প্रञ्ज हहेश थात्क।

लोर-प्रस्क - कद्र (१६ अ.स.) विनाद्य প্রচলিত আছে; এতদেশে ইহার প্রচার নাই। ভারতবর্ধের যে২ স্থানে লৌহ প্রস্তুত হুইয়া থাকে. তথাকার লোকেরা ক্ষুদু চুল্লাতে অস্পাপরিমিত লোছ-মৃত্তিকা উতপ্ত করিয়া পুনঃ ২ পিটিয়া লৌছ প্রস্তুত করে; পরস্তু তাহাতে ব্যস্ত্র পরিশুম অধিক, এবং এককালে অধিক লৌহ প্রস্তুত হইবার স্ঞা-वना नाहै। अधूना लोइ-११थ लोइ-८गाउ श्राकृति वृ-रू कार्यात निविष्ठ প्रवृत-পतिभार्य कोरहत श्र-बाई-त्वाहा "। छानाई-कर्यात्र निभिन्न अहे लोह श्रायम ; बे श्रारायनीय लोह अव्यासनीय श्रायम

প্রস্তুত করিলে প্রচুররূপে উৎপর হইবার নভাবনা করিলাম, তুমি বল আমার পুঞ্জে কিছুই করিতে পুরুত্ত ইয়া হদেশের ও আপন ২ উন্নতি । माधन कडिएक जुटि कडिएकन ना। विवाकीय प्रयाप २৮० वृह्माटक ट्राइट्स श्रायः पूरे कावि मन लोह প্রস্তুত হুইয়া থাকে; ভাহার মূল্য প্রায়ঃ দশ কোটি होका इहेटवका अङ्फ्रांस लोश-धनित कान बाहार नाहे; উৎ**नाहासिक र/कि ও অর্থের** উৎপন্ন করিতে পারেন। অধুনা উত্তম পাথ-করিতে জুটি করিবেন না।

### মোলাজীর পাঠশালা।

্ৰু 📢 💸 গুলি বালকদিগকে পাঠ শিক্ষা 麗文家與漢聲 क्टाईश कालयालन कदिछ। बक দিন এক বালকের পিতা আদিয়া মোলাকে ক-हिल " भिका मारहर, यामात भूथरक याभनि কিছমাত্র শিক্ষা দেন নাই। সে কেবল দিবা-ব্যাত্তি খেলা করিয়া বেড়ায়, পড়িবার নামও करत ना, कात कामात कथायमुक्-भाउ व करत ना"। ি জাজী একথায় অভ্যস্ত **ক্রোধ করিয়া বলিলেন,** " 🗱 सार्व, थान् (मर्गात कान् विषात উक्ते-का-हे । बाल ; जामि बक-वर्य-भर्य छ कर लडिम्म র্মারত্ব লেখা পড়া শিখাইয়া গাখাহইতে মানুষ স্থাৰ ভিনি আপদার পূর্ব বৃত্তান্ত প্রকৃতিত

'नाइ ; चड्य उत्र कति वहेकरा बार्फणीय मिथा माई "। मोकामीत वक्षांत र राक्ति धनियाजिता विलाशत-अथानुमात कोर अखा किकिर चश्रक रहेशा चारकर असान कतिया। পরস্ত থনাছ্য এক জন খোবা ও তাহায় জী बे क्रथाशंक्थन छनिया माझाकोव निक्षे चशु-मद्र इहेशा ख्वाफ्ह्एख विनश्भृद्रश्मद्र कहिन. ্"মীঞাজী সাহেব, যত টাকা চান ততই দিব, িকিন্ত আমার গাধাটিকেও মানুষ করিয়া দিতে **इहेरव"। भाक्षा मरन२ वृक्षिरणन, अ पूहे** मालाया इन्टेल्ट जातन्वर्यीय कन्त्रन वीत्रज्म करन्द शक्षमूर्थ; दूव नीर्घ किछूत्रहे कान नाहे, ও পাচেত্রের থনি হইতে অনেক কোটী টাকা অথচ ধনে পরিপূর্ণ, তাহাদিগের কাছে কিছু श्वात्रभातारे (भूषः। अरे मनन कतिया किन-রিয়া কয়লার ও লৌহের থনি সূবর্থনি-ছইতে- ্লেন, "একটা ছাজার টাকা দক্ষিণা দিয়া ल लाफकनक; व्यक्तव धनार्थि धनि वर्शकिनिरणंत्र शाधारक व्यापात अथारन शाथिया भाष. अक এবিষয়ে মনোযোগ করা অভ্যস্ত আবশ্যক; বৎসরমধ্যে ভোমাদের অভ্যস্ত সিদা চ্ট্ৰেশ। ভরুষা করি ছদেশীয়গণ অবিষয়ে মনোনিবেশ ব্রক্তক তৎক্ষণাৎ এক হাজার-টাকা-প্রদানপূর্বক আপন গাধাটিকে সেথানে রাথিয়া গেল।

একবৎসর অনস্তর রক্তক রক্তকিনী মোলা-कीत निक्रे चाहेटन, जिनि कहिरमन, "चाहा! তোমরা দুই দিন পূর্বে আসিতে তেঃভোমাদের क्षेत्र अपेक के बादन अक क्षत्र (माल्ला कडक- जाधारित महिल माकार इटेरेंड भारित। अथन त्म क्लोन्न्यूत-भूरिम काकीत नम आध क्हेंगाल्"। (थावा जिळानिन, "मिकाकी गारहर, वश्म चा-মরা ভাহাকে কেমন করে পাইব"। ভিনি উত্তর फिलन, " ভाषता ভाशाक वाधिवात क्षी, माना, जात शामना नरक नहेशा तारे शास काकीत नचू-थ्य निश्च अगड सात्म माँ ए। हेटन, य छिनि चा-পদার দড়ী দড়া দেখিয়া ভোষাদিগকে তিনিতে शास्त्रन; शस्त्र यथन कामामिशस्य किमि निकरि ডাকিবেন, তথন তোমরা ডাঁহার নজে নিরা-नाम वित्रमा अरे नव वृत्ताल कामारेखः वराणि-

করাতে তোমাদিগকে ভয় দেখান্. তথাপি তোম-त्रा **फ**तिल ना, दत्र॰ विलादं या चार्शन यि क कथा-य विश्वाम या सान, তবে हेसून, प्याणनात यिक्क মোলাজীর কাছে জিজ্ঞাদা করিবেন: তামরা কি কোন দলীল না পাইয়া এত বড় মান্য-লোকের নিকটে অমনি কড়াদড়ি গামলা লইয়া আদিয়াছি "।

মোল্লাজীর এই কথানুসারে ভাহারা জোন-পরে গিয়া উক্ত-নিয়ম-পূর্বক কাজীর সম্বে म्खायमान क्रेन। "हेशात्री पुरे जातन तमान-গুদ্ধ লইয়া আমার কাছে শুভিযোগ করিতে স্থানিয়াছে, ইছারা যথার্থ বাদা হইবে", এই ভাবিয়া ভাহাদিগের পুঞ্জ স্থানার করিলেন। (वारथ काओं जाशांनिशतक निकरणे जाकितन) ভাছারা মনে করিল, যে বুঝি আপনার বাঁধিবার म् ए। ও शाइदात गामना (मिश्रा जाहामिश्रक **क्रिक्स निकर्षे जिल्लाहरून, अ अ त्वाद्य इर्य-**পূর্বক তাঁহার সমীপে উপস্থিত হইন।

काकी हेहामिशरक जिड्डामा कतितनन, " जामहा म् इार्ड़ा शामला लहेश कि कतिशाम कतिए था-নিয়াছ "? তাহারা কহিল, " সে কথা আমরা নি-রালায় বলিব"। পরে কাজী একান্তে গিয়া বনি-লে, ভাহারা ভাঁহাকে আনুপুর্বিক পূর্বোক্ত বৃত্তান্ত ন্থনাইল। তাহা শুনিবামাত্র কাজীনাহেব অপ্রস্তুত হুইয়া মনে২ ভাবিতে লাগিলেন, ''যে কোন সূচতুর ব্যক্তি ইহাদিগকে কাণ্ডজ্ঞান রহিত জানিয়া প্রতা-রণা করিয়াছে, আমি যদি এবিষয়ে অস্বীকার করি, তবে এই মূর্থ বেচারা রাষ্ট্র করিয়া বেড়াইবে, এবং আমাকেও ছাড়িবে না; অপর যদ্যপি স্বীকার করি, তথাপি লজ্জার বিষয়; যাহা হউক, অন্বীকার করিয়া রাষ্ট্র করা অপেকা আপনাআপনি স্থী-কার করা ভাষা । কাজী এপ্রকার বিবেচনা করিয়া বলিলেন, ''তোমরা ঘাহা বলিয়াছ, তাহা

সত্য বটে, এখন ভোমরা কি চাহ "? ভাছারা কহিল, " আমাদের সস্তানাদি কেছনাই; অতএব কালবশতঃ আমাদের পরলোক হইলে তুমি আ-মাদের প্রবৎ গোর দিবে, আর যত বিষয়াশয় আছে তাহা ভোগ করিবে, আমরা এই চাহি"। काकीमारक्त ভानित्तन, " अकथा कान छम्रलाक শুনিতে পাইলে অত্যন্ত লজ্জাদায়ক হইবে; এবং এখন যাহার৷ আমাকে কাঞাসাহেব বলিয়া মা-ন্যমান করিতেছে, নে নকলে পাজা বলিয়া আ-स्तान क्रिंद्रिक, क्रज्ञ व शालान क्रें लागनिम्श्रिक শাস্ত করাই শেয়;" অপর এপ্রকার সাত পাচ

# কুলান-কুলসরস্-নাটকের সমালোচন।

সুষ্টি ভাবতঃ মন্ধ্যমাত্রেই অনুকরণে রত।
কান্ত্র অবস্থা, অন্যের ভাব, বা 🎚 🦮 🗮 🛒 শন্মের রাগদেয়াদি ধর্ম উজ্জলকাপে मान विक्रिण इहेटनहें तिहें दा कि व व्यक्त छि छ ষরের অনুকরণ করিতে প্রায়ঃ নকলেরই প্রবৃত্তি र्यः। कराणि रेक्ः ना थाकित्व वे প্রবৃত্তি सञ्चर উৎপন্ন হইয়া থাকে। এই অনুদরণ-ক্রিয়া মনুষ্য-माख्बिहरे व्यानम्हानक। वाल्यकदा हेश्राटंड नर्दमा তৎপরঃ পিতৃমাত্ বয়স্য পরিজন প্রভৃতিরা, জী-বন্যাত্রায় যে দকল ক্রিয়ার সম্পাদন করে, বাল-কের। তালার অনুকরণ করিতে নিয়ত অনুরত থাকে; তাহাদিগের অত্যন্ত প্রমোদজনক জ্রাড়ার मस्या व वानुकतन-कार्याहे गर्दश्रभाम। कुम्-शृह्द স্থাপন করা, তাহাতে মৃত্তিকাদি পদার্থদার। কা-পোনিক অম ব্যঞ্জন প্রস্তুত করা, পরিবেশন করা, काष्ठ পুञ्जिकारक भूधकनात्र नाय नानन भागन করা, তাহার বেশভূষা ও কম্পিত বিবাহাদি-সং-

ন্ধার সমাধা করা, অপেক্ষায় বালিকার পক্ষে প্রিয়-. छत क्लोड़ा कि इहे ८५ थ। याय ना; ও बाल कित परक গুরুমহাশায় ছওয়, রাজা হওয়া, চোর হওয়া, কণ্পিত অব্যান্ত্রাহণ করা প্রভৃতি কার্যাই অত্যন্ত श्रामक्रमक । वालाकालाविध अरे क्रा क्रमुक्डम-স্পৃত্য বলমানা হইতে২ অধিক বয়ন্দকে অভি-गर्भत नृष्ठि कहारा: कन्छः वेश्रालारक या नकन घटेका अर्जना घटिया थात्क अत्यान-क्रमनात्यं जा-হার অনুকরণের নাম "অভিনয়"। \*

এই প্রকারে অনুকরণকে অভিনয়ের মূল বলিয়া স্থাকার করিলে স্পাইন্তরেণ প্রক্রীত হইতে পারে, া যে, যে ঘটনাদি যে২ ব্যক্তি দারা সম্ভিত ছয়, ्नर्युक्त वर्धकिमिरशत होव **काव को कि अवर**ेहार ठ किहहे का विमान हहेर जारतन नाहे। বাক্ফুর্ত্তির ও অনুকরণ কর। আবেশ্যক। তদ্ধ্য- বিষদুতের ছন্দঃ প্রবেজাদি সকল লক্ষণের অনুকরণে ভীত ভাষ্টাদিগের পরিজ্ঞান, পাদচিষ্ঠা, বয়ংক্রম এবং দেশাচারও অবিকল অনুকরণীয়; ভাছা নহিলে কে রাজা, কে মন্ত্রী, কে সভা, কে প্র-ভাহারী, তাহার নির্থান হওয়া কঠিন হয়; সুত-রা সভিনয়েরও বৈকল্য। এবম্পুকারে অভি-म: निष्कापनगर्थ बारशत चारताश कतिए इस रिकाः नाष्ट्रिक जुद्ध साप्रेक (क-" क्षेत्रक " + माद्क रिधान करता

অনেক কবিতা আছে, যাহাতে ভাব ও ছন্দো-

লকারের কিছুমাত্র জুটি নাই, অথচ তাহা রক্ত-ভূমিতে পাঠ করিলে কাহার মনোরঞ্জন হয় না; অপর কতগ্ণুলি কবিতায় ছন্দোলস্কারের অনেক ব্যত্যয় আছে, তথাপি রক্তুমিতে মনোরঞ্জন কারিতা গুণ অতি স্পাষ্ট দেখা যায়। এই প্রযক্ত माहिका-कारतता कावारक "मुना" ও "मुना" \* এই দুই অংশে বিভাগ করিয়া**ছেন;** তন্মধ্যে मृन्ग कोवा "काशक" वा "काञ्चनश्र" नारम বিখ্যাত। ঐ অভিনয়ৰূপ-কবিতার দে যশুণ বিচার করিতে হইলে ভাহার কবিত্ব ও অভি-নয়ত্ব উভয়গুণের আলোচনা করিতে হয়।

त्रात्मक यान कडिएड शास्त्रन, या नाविस्कृत অভিনয়েও তত্তাবং ব্যক্তির উপস্থিতি থাক: অধিকাংশ গদ্যে রচিত, তাহাতে কি কবিত্ব থা-ঐ সকল ব্যক্তির প্রকৃতি অব- । কিতে পারে? অতএব বক্তব। যে কবিত্ব শদে ছন্দ युव, गठन, भोर्चका, थर्बका, व्याद्धकम, त्मोन्पया । ও अनकात आमामिरगत উप्पन्धा नरह। कानि-প্রভৃতি যে প্রকার হয় অভিনয়েতে দেই দক- । দাস ও বরকচি যে ছলে কাব্যরচনা করিয়াছেন, লের অবিকল অনুকরণ না হইলে শাতিশয় ও যে অলঙ্কার ব্যবহারের করিতেন, এই ক্লন্কার রদের হানি হয়। অপর প্রকরণবশতঃ অভি- অনেক কবি তজ্ঞপ করিয়া থাকেন, অথচ তা-কোন নব্য কবি "পদাঙ্কদৃত" রচিত করিয়া-**ছেন, তথাপি উভয়ে ৰগ-মন্ত্র্যাব** ভেদ রহিয়াছে; মেঘদতের রমণীয় সুন্দর রস পদাক্ষদূতের কুতাপি प्राथवा नरह; ष्यञ्चव कहिएज हहरव इनहें ∤ কবিতার প্রাণ; ভড়িন্ন কদাপি উত্তম কবিত। इहेर**७ शादि ना। क्वल हर्मालकादि क**विका ও মৃত্তিকা-নির্মিত মনুষ্যমূর্ত্তি, উভয়ই সমান, প্রকৃতির অনুরূপ বটে, কিন্তু প্রকৃতপদার্থ নছে। ৰূপকে এই ভাৰ রক্ষার নিমিত্ত আদে৷ যে

क स्टब्स्स[सन्दर्भाष्ट्र कानुकानकः। व्यवस्थाः **अवसात् भानुकृत्वह** क्षांक्रम्यः मार्किन्त्रमभूति च व्यक्तिस्मान २५८ काहिका।

<sup>া</sup> জপারোপান্ রূপক্ষ। নাহিত্যদর্শবে মন্তপরিক্রেদে ২৭০ W. 18. C.

গ দৃশ্যভাৱ। তবভেদেন পুনঃ কাধ্যৎ বিধানমত্। সাহিত্যদ্পণে वर्षः भविष्णाम २१२ काविका।

<sup>🕆</sup> राकार व्याञ्चल कावार। नाहिजानभीत ६ कावित।।

আথ্যায়িকা-ঘটিত নাটক রচনা করিতে মানস হয়, ভাহাতে কেবল ঐ সকল প্রসন্ধ একত্রিত করা व्यावनारक, याहारक हाना, ककना, बीत, होमू, ভয়ানকাদি রবের উদ্বাপন হইতে পারে—সা-मान-कथाय मूगाकरंग्शत वार्याच ना रयः कन कः कविमितित अथान চाजूर्य। এই य गा-মান্য কথার পরিহার-পূর্বক কেবল মুখ্য কথা-नकन बद्धकाद्ध बक्ब क्द्रन, भागाए जागायि-কার কোন অংশ অসমত ও অসম্ভব বোধ না হয়৷ আখ্যায়িক৷ মিখ্যা হউক, বা সত্য হউক, তাহাতে কোন হানি হয় না; কিন্তু মনুষ্ঠের যে স্মরস্বায় যে ভার উলয় হল, লাক্সদারা ভাছার আবিদার ও অনিজলক্ষে তত্তদাকারের উৎপা-দন করাই ক্রিদিগের মুখ্য কংপ: তাহার কিঞ্চি-মাত্রে ব্যক্তার কটানেই রদের কানি কয়।

অবাধারণ ক্ষমতা-ভিন্ন দর্জ এই দক্ল নির্মা রক্ষা করিয়া নাটক রচিত ভ্টতে পারে না; সুভরাং গুদ্ধভাবাধিত ৰাণক মতান্ত দুষ্পুপেট অনেক কবি অপরিনেয় পরিশ্বন করিয়াও শকুন্তলার সদৃশ ৰূপক উৎপাদন করিতে পারেন 🏻 माहै। त्रिन्दिन लाल् छि दिशा नागा अक **छन** कवि ১২4° थानि नाष्ट्रेक विश्विधाहितन. কিন্তু ভাহার একথানিও সহদয় মহাশয়েরা পাঠ করিতে উৎসুক নছেন।

नमछ-वारमाम् जनक शमार्थकार् महथा अवन्ता-কার ৰূপকের দশন সর্বতোভাবে উৎকৃষ্ঠ: ইহা-তে মন ও বুদ্ধির সহিত সমস্ত ইন্দ্রির সন্তুগু হইয়া থাকে; গাঁতনৃত্যাদি অন্য কোন আ-स्मारि जाम्म मूर्थक मञ्जावना नाहै। এই अयुक्त है প্রাচীন সভ্যক্ষাভিব্ন মধ্যে গ্রীকজাভি, রোমীয়

সমূৎসূক ছিলেন, এলং সং ममार्ग खडास দেশে যে কোন উৎসব হইলেই ঐ ব্যাচনৰ 🕾 চরে করিতেন। প্রাচীন হিল্পুদিশের ও এবিযায়ে শত্যে অন্রাগ ছিল। তাঁছার। ইহাতে যথ-शासास्त्रि मगापत्र कित्रिटन, क्वर क्वालिमान ভবত্তি প্রভৃতি অগুগণা মহাক্রিয়া উৎকৃষ্ট काशक तहनास यनुकाल हिल्लन। ভाराट वे মহানুভাবদিগের যায়ুভ ব্যর্থ হয় মাই ; ভত্তৎক-ভূক শকুন্তলা বীরচরিতাদি নাটক ৰূপকরচনার चामर्भ सक्तभ इहेद: १ हिश्र (हा। अ गकन चाम्धर्य)। রচনায় ক্রিদিগের আনতকৌশলে বাক্যমারা लोकिक घरेगानकन असीन आविक्छ इहेशाटह. যে তৎসারণে বুজির ব্যক্তি হওয়া ভাচাতে সভ্যের ভাণ হইয়া থাকে; ভূতকালের ব্যাপার বর্ত্তমান হুইয়া উঠে, মিখ্যা সভা হয়, এবং চিত্রিত পদা-থের অনুক্লে মন কামকোবাদি রসে আদু হয়। কবিদিগের কি আশ্চর্যা ঐন্দুজালিক ক্ষমতা! তদ্যার: তাঁহারা প্রত্যক্ষ পরিদৃশ্যমান অলীক ক-হইখাছে। প্রায়ঃ দুট গ্রুপু বংশরাবাধি এতদেশে। পিগ্র সংখ্যনারা দর্শকমাজের বৃদ্ধিকে জড়ীভূত করিয়া আপন ইচ্ছানুসারে অনায়ানে ভাহাদিনের मनरक क्थन शाना, कथन मधुह, कथन वा करणा রনে মুপা করিতেছেন, ও খানেককে ক্রন্দন করা-हैश व्यानन श्रमान कहिए छहन!

এই মনোহর বিনোদ দুদ্দান্ত ঘবদদিগের রাজ্যকালে এতদেশে একেবারে বিলুপ্ত হয়। কবি ও পণ্ডিতেরা দুই এক থানি উৎকৃষ্ট ৰূপক রক্ষা করিয়াছিলেন; কিন্তু সাধারণ জনগণের মনে তাহার নাম পর্যান্ত বিস্ফুত হইয়াছিল। हेश व्यक्त व्यक्तित्व विषय (य बहेकार) जे प्रवसात (नाण व्हेटक्ष्ट्) बदः महामय व्यक्ति-গণ রমভূমিতে কবিতাসুধাকরের উদয় কর্-बार्जि, চीन-बार्जि बनः हिन्तुकाजीयात्री कनक- वार्ष्य यज्ञान् इहेग्राह्न। य भूरम् अपन এই প্রস্তাব আরক্ষ চইয়াছে তাহা এই নিশ্ল । চন্দ্রোদয়ের আদিকিরণ বলিলে বলাযায়।

পূর্বে বহুভাষায় কয়েক খানি নাটক প্রকটিও ছইয়াছে, কিন্তু ভাষা যথার্থ নাটক নহে।
ভাষাতে অনেক পদ্যাদি আছে, এবং তাছার নর্বাক্ত স্মিচান ও নুসম্পন্ন এবং সুপাঠ্য
বটে: কিন্তু আহিত/কার্রেরা যাদৃশ গুণগ্রযুক্ত নাটককে "দৃশ্য কান্য" বলিয়া বণন বরেন, তাছার অভাশ্যমাত্র ভাষাতে বর্তনান দেখা যায়।

প্রস্তাবিত নাটক থানিতে ৰূপকের অনেক ধর্ম রক্ষিত হইয়াছে; তাহার আখ্যায়িকা একানুগা-मिनी वाहे. हेहात शिष्ट्राय छेत्रम, ও ভাবও পরিশুদ্ধ। গুস্তুকার এযুক্ত রামনারায়ণ তর্কনিদ্ধান্ত সাহিত্যালস্কার-শাক্তে সুপণ্ডিত, এবং কাব্য-রচনায় তৎপর। তিনি সমিচান-যতে এই নাট-কথানি রচনা করিয়াছেন; এবং সহৃদয় পা-ঠকগণ যে কেছ ইছা পাঠ করিয়াছেন, তিনি करमाइ बीकांत्र कतिरवन, या जाहात श्रयजु वार्थ इयु नाहै। भागता ययः উপঢৌकनयवारा ঐ গুড় প্রাথ হইয়াছি, এবং ডৎপাঠে অত্যন্ত পরিত্ত ছইয়া পশ্চিতবর গুস্তকারের নিকটে প্র-বাশ্যকপে কৃতভ্রত। মীকার করিতেছি। উক্ত পুরের পাঠাবধি ভাহার গুণ-বর্নেও আমা-দিণের বিশেষ আকাত্ত্বা হইয়াছিল; কিন্তু মঢ়োদ্য ব্যক্তির', উপকৃত ব। ক্তিকৃত উপকারের প্রতি প্রশংস্বাদ অপেকায়, পক্ষপাত্রিহান ব্যক্তির মনোগত অভিপ্রায় শুলণে অধিক পরি-ভূত হন, এই করেণ এবং লজ্ময় আত্মীয়গণের বিলেয় অন্রোৱবশতঃ, কেবল ৰাভিমত তদ্পুণ वर्गन का क्रिया "क्लीन कुलन**र्वच" भाठेमगर**य ভদ্ওণ বিষয়ে আমাদিণের মনে যে২ স্থানে যে২ भार केपिक क्रेग्ना**हिल, काराब्रहे यद्याकिक कि** 

পিবন্ধ করিতেছি। ইহাতে আমাদিণের অভীপ্ত निक रहेवांद्र चामा नाहे वर्षे, भन्नल वाध कति, আত্মীয়বর্গ, গুস্কুকার ও পাঠিকবর্গ সুভূপ্ত ছইবেন। " वझानरमनीय कोनीमा अषा अष्ठां वाकाय कूलीन-कामिनीशरवत अक्रर्ण य क्रश मूर्फणा ষ্টিতেছে? অভিনয়দ্বারা ব্যদেশীয় মহোদয়গণের মনে তাহা সমুদিত করিয়া দেওয়াই প্রস্তাবিত নাটকের মুখ্যকল্প। দেলীয় কোন নিন্দিত প্র-থার উৎসেদের নিমিত্ত প্রাচীন পণ্ডিতেরা এই थ्रकादा **कणक-**त्रक्रमा मर्बमाष्ट्रे क्रिटिन। "धर्तु-নৰ্ত্তক "কৌতুকনৰ্বৰ" প্ৰানৃতি ৰূপক নকল **बर्ग विशास्त्र श्रस्त हरेशा इन। स्मानिम** नामा अक जन कवि, त्राका, व्याक्तन, टेरमा अ टेम्बर्क्किंग्रित वाश्वरमीष्ट्रमहार्थ । होन्।। १४ १ নামে একটি ৰূপক প্রস্তুত করেন। যদিচ ভালা-তে অনেক অশ্বীল কথা আছে; তথাপি ভাহা क्लीन-क्लमईरसंत्र चाममं संस्थ विलिय वला যায়। তাহাতে অন্যায়নিক্সু-রাজা আপন নগর ভুষণ করিতে ২ স্বাধী জ্ঞী, গেহিনানুরভাষামি, ধর্মের সমাদর, অধর্মের অবহেলা দেখিয়া অভ্যস্ত क् अमरन याशांट नाकर। পामुका श्रेष्ठ करत, ও অন্যান্য সৎপ্রথা স্থাপিত হয়, তদর্থে এক বারাঙ্কনার গৃহে উপস্থিত হন। পরে তথায় বিশ্বভাগু নামা এক শৈব যোগী ও ভাহার শিষ্য কল্ছাঙ্কুর আসিয়া এক বেশ্যার নিমিত্ত কলহ উত্থাপন করে। অপর রাজার প্রিয় চি-কিৎসক ব্যাধিনিজ্ব, ক্লিনি জিন্তায় তপ্তশলাকা বিন্ধ করিয়া শূলরোগের প্রতিকার করেন, ও তাঁ-হার সাধুহিংসক কোডোয়াল, যিনি সমস্ত নগর চোরদিগকে সমর্পিড করিয়া পরম হর্বাহ্যিত হল, ও তাহার রণজমূক বেনাপতি প্রভৃতি পারিবদ্গণ উপস্থিত হুইয়া নাটে।র কার্য্য সমাধা করে।

নাহিত্যকারদিপের মতান্সারে এবল্পুকার রচ-নার নাম " প্রহসন"; এবং তাহাতে দুই অঞ্মাত্র থাকা উপযুক্ত । বিজ্ঞবর তর্কসিদান্ত মহাশয় তদন/থায় প্রহসনকে কি কারণে যড়ক্ক সম্পন্ন चनु कृष्ठ इहेर उर्ह ना; (वाध इश, वक्ष का वाश क्र-কের প্রভেদ রক্ষা কর। অনাবশ্যক বিবেচনায় ত-क्षण कतिश्व थाकिरवन ; शतुष्ठ (न नरमह शाठेक-দিগের মনে বহুকাল স্থান পাইবার নছে: নটীর সুললিত গানে মোহিত হইয়া অবিলম্বেই তাহা বিফাত হইতে হয়। এতদেশীয় কবিরা প্রায়ঃ বৃত্-क्रम्बे कविडा-त्रामा क्रिया थार्कम, अवः मर्था २ नागविलान, वन्त्रकलका প्रकृति सङ्ख्य विविध ছন্দের সৃষ্টিও করিয়া থাকেন; কিন্তু আভ্যাপ লোকে পূর প্রনিদ্ধ মাত্রাছন্দে কবিতা রচনা করি-या क्वकार्या इरेग्नाएन। उक्नमान अविवस्य मम्पूर्व करण निष्क्रकाम इहेश्राइन। जाहात "मू-कर्श-निर्मालक मुनद्भी छि" भारत्मा बहे सन्दर्भ दित ভূবনবিখ্যাত গাতগোবিনের অরণ হয়। আমা-দিগের এ অভিপ্রায়ের নাক্ষিম্বরূপে উক্ত গীতটি এখলে উদ্ধৃত করা গেল।

"চ্তমুকুলকুল, দঞ্লদলিকুল,
গুণ হ রঞ্জন গানে।
মদকল কোকিল, কলরব দকুল,
রঞ্জিত বাদন তানে॥
বিতিপতিনর্ত্তন, বিরুস্বিকর্ত্তন,
গুড-ঋতুরাজ-দমাজে।
নবং কুদ্দিত, বিলিন দুবাসিত,
গারস্মীর বিরাজে"।

প্रস্তাবিত নাটকের আখ্যাত্মিকার কোন বি-শেষ সৌন্দর্য্য নাই; কৌলীন্য-মর্য্যাদাভিমানী

\* ভাৰতৎ সন্ধিনক্ষ্যক্ষাস্যাস্থাকোর্বনিমিতি ছাত্রৎ প্রছ্মনৎ বৃত্তৎ নিক্ষানাৎ কবিকশ্বিতৎ ।। সাহিত্যদুর্গণে যভাজে ৫০০ কারিকা।

कान वाक्रवकर्ष शूर्व रिन निवाद्धः नश्च স্থির করিয়া পর দি**ন এক অ**তি বৃদ্ধ কুলান-পাত্তে আপন কন্যাচতুষ্টয়কে সম্পুদান করাই ইহার ভূল তাৎপর্য্য; পরস্ত সুকবি তর্কনি-দান্ত মহাশয় প্রমচাত্র্গের সহিত সামান্য विवाद्यत উদ্যোগে অদেকগুলি প্রসঞ্জ ত্রিত করিয়া অনেক ব্যক্তির চরিত অতি পরি-পাটিকপে বিনাস্ত করিয়াছেন। তন্মধ্যে কন্যা-করা কুলপালকই প্রদক্ষবিধায়ে সর্বপ্রধান; জাঁ-হার বর্ণনা-পাঠে কন্যাদিগের দুথে দুঃখিত অথচ এলাভিমান-রক্ষার্থে দৃচপ্রতিক্ত কন্যভারগুত্ত ক্-লানের মুর্ত্তি মনোমধ্যে অবিকল উদিত হয়; কোন অংশে কিছুমাত্র তুটি বোধ হয় না। পরস্ত नार्टेरकत क्रियाकलाल-मयरक प्रधान नायक जिनि नर्मन, তिविषद्य अन्जाहार्य हुज़ामनिहे नदीशुन्ध বলিতে হইবে। ঘটকের জার্ভায় ধর্ম-রক্ষার্থে তিনি मकन घर्টेरे वर्डमान; तीव रुग्न, ठर्दमिसान्त মহাশন অনেক প্রীয়তে উহার চরিত্রের বিদ্যাস করিয়া থাকিবেন: পরস্তু তৎপাঠানস্তর আমা-দিগের অপ্পবৃদ্ধিতে স্বভাবতঃ ধূর্ত্ত ঘটকের অবি-কল প্রতিমূর্ত্তি অনুভূত হুইল না; কোনে পরিচিত পদার্থের চিত্রপটের স্থানে ২ অসংলগ্ন বন বিন্যস্ত থাকিলে যজাপ নয়নের অত্তি জল্মে, ঘটক-রাজের চরিত্রে ভজ্রপ বর্গাঘাত ঘটিয়াছে। নাটক-কার তর্কসিক্ষান্ত নহাশয় ঘটকচ্ডামণির চরিত্র কি প্রকারে বর্ণিবেন, ভাছার সঙ্কপে এই বাক্যে করিয়াচ্ছেন;

ভদ্যথা,

" আর্নিল পরের জাতি কুল নাশ ছেতু। বিবাহ নির্মাহ বিধি জলধির নেতু॥ অনর্থ অর্থের লাগি ত্যক্তধর্মকর্মা। চূড়ামণি মিধ্যাবাদী অন্তাগ্য শর্মা"॥

সভাচালা। আপনকার পিড় চাকুরের নাম স্থনিতে ইক্ষ্য করি।

अनुकाहारा । को कि तत्नारह ? कालि हार**क निम्नु इ**स नाई, वर्ष शुोग्र ।

প্ত। মহাশ্রের পিতার নাম কি?

অন্বড়মশা)

মভা (উচ্চিঃসরে) বলি আপনি করে পুত্র:

অন্। অগিক দিন হটল আমার পিতৃ ঠাকুরের পর-লোক হটয়াছে:

শুড়। (সহাস্ত মুখে) আমি প্রলোক ও ইহলোকের কথা জিজালা করি নাই, পিডার নাম জিজালা করিয়াছি, ইহাতে প্রলোক ইহলোকের কথা কেন।

অন্। বিশ্ব কর, অধিক দিন তাঁচার কাল হই-যাছে, নাম গ্রায় এক প্রকার বিশ্বত হওয়া বিয়াছে, শারণ করি তবেতো বলিব, ভাড়াভাড়ি করিলে ফি হইবে।

প্রভা কে ছাছে হে—স্তানিলে? ইনি এমনি ঘটক নিজ পিতৃ নামও লক্ষ্ত হন। কিন্তু আনেচে পিতৃপিতামহের নাম ইছার মৃশাগ্রবন্ধি, সে সময়ে একটাও চেকেনা।

অনু। পরের পিঙার নাম কহিছে বিবেচনা কি ? যাহা আইনে একটা বলিলেই হয়। ভাল দে কথা থা-কুক—ভুম বেনন্ব্যবসায়ী ?

बङ करथालकथरनत किथि श्राप्त श्राप्ता विकास कर्म ।

অনু। হাঁ, বাপু হে পথে আইন, আমার নিকটে খনিতে খন।

প্রবঞ্জনা পরারণ, মুথে প্রিয় আলাপন.
ধর্মাধর্মে নাই বিচারণ।
না পাইলে বলে কটু, বোদর পুরণে পটু,
দৃষ্টিমাত্র করে সম্ভাষণ॥
বাচাল আচার ভুষ্ট, জাতি কুল করে নষ্ট,
দৃষ্টমতি মূর্থের প্রবর।
বিবাদে নারদসম, মুর্জিমান্ যেন ভ্যা,
হয় নয় বল সুধীবর॥

বেল্লিক পুরাণে মাতৃলামি থত্তে ঘটকের এই লক্ষণ লিখিত আছে, তা বাপুতে, এসকল জান্তে হয়, এসকল िएक इस, स्पटि ध्याक পड़ियाने घरेक इहेरन इस না। আমি এ সকল শিথিয়া ও এ সকল প্রণে ভ্ষিত হট-হাট "অটক চ্ছামণি" নামে আতি আছি। আমার গণের কথা কতে৷ কহিব—আমি সাবৰ্ণগৃহে কত শত কৈবর্তকন্যা চালাএছি ; তন্ধ শ্রোতিয় বরে ক্ষতির কন্যা, বিষ্ণ চাকুরের বংশে বৈষ্ণৰ কন্যা, শিবচ্ফ্রবাদ্ধর সন্তা-নে পদ্মরাজ দুহিতঃ ঘটাএছি; আর কানা, শোঃ অন্ধ্ মাহুর, এসমস্ত তো আমার শরীরের আভরণ। এই ১৪ ই মাঘে থাড়ীবার্টীর কচিরাম চক্রবর্ত্তির কন্যাকে এক উचाम मिशञ्चत तद अलाम कविया मिळिन इटसूत किश्विम-কিণা পাইয়া মাদ্যবধি শ্যাগত ছিলাম, কিন্তু আগার এরণ অপরপ চাত্যা দে এতাদৃশ ব্যবহারেও আমি কথ্য কোথায় অপমানিত হটু নাট, ভূমি আমাকে দি ঘটকালি দেখাও। ভাল আর একটা কথা জিল্লাদ। করি, ভূমিও মন্দ নও, বল দেখি কুলান কাছাকে বলে >

এ উক্তির প্রথম ভাগ অন্তের মুখে লভাব-নিদ্ধ বোধ হয় না, সুধীরের মুখে অতি পরি-পাটা হইভ। কেছ ২ মনে করেন, শেয ভাগও অন্য কোন নটের মুখে থাকিলে ভাল হইত; কিন্তু, আমাদের বোধে, সাক্ষাৎ দম্ভাবভার ঘট-কের পক্ষে একথা নিভাস্ত অনুপযুক্ত জ্ঞান হয় না।

**७७। हार्ये। अन्दर्ध शदशास्त्र करहन ।**े

তত। (জনাতিকে) ওছে তাই সুধীর, একি উঃ, বেটা কি লাতিক! বোধ হয় দন্তই শরীরী হটুয়া উপস্থিত হর্মাছে, কিন্তু ইহার উদরে ক অক্ষর গ্রামাণ্স, তজ অভ্যুক্তাই অনুগ্ল কহিতেছে! • • •

কিন্ত একথা-রক্ষার নিমিত্ত গুস্থকার চূড়া- "বাসা দিছিন্ কোথায় মা? চুলি ২ দেকতে কেছ তাহ। অবলম্বন করিতে পারে না।

ভিলাবে বিলম্প অনুরক্তা, কোন মতে আত্রা नुमारद्व. जीकात वाद्यि कन्ता, उत्पर्दर " वक् कन्त्रात अम्राविध नकन मन्त्र शांकिक इस नाहै; मश्रम- | किटनावी। (कायमुका) "টার মকল কেশও পাকু হয় নাই; তৃতীয় কন্যাৎ " প্রায় মধ্যেটার মত; আর আনার যে কনিষ্ঠা "কন্য সে অতি শিশু, বোগ হর গারে সুতিকা - प्रसुष्ठ थाकित्व थाकित्व शास्त्र, वाहा अहे भव "পৌষ মাসে দবে পঢ়িশ বৎদরে পড়িয়াছে"। এই কন্যা চতুষ্ঠয়ের মধ্যে জেন্টা ও বিভায়া জংকানী ও শান্তবী আপন ২ বয়ংক্রমানুনারে সম্প্রে মাত্রহিত বিবাহের খালাপ করে; কিন্ত কামিনাটী ভাদুশ শান্ত নছে। ভাছার বয়স প্রায়ঃ মধ্যমটার মতন, "সকল চুল পাকে নাই" व्यथिक व्यावनादा शतिशूर्व; अहे नारमञ्ज कथाम বিশাস হয় না, আবার বরের বয়েস শুল্কে:চায়, অথচ "যা হোক বিবাহ হইলেই হয়" (৩২ পৃষ্টে) **षावात्र वरम, "७म।, मिंडा वत्र कि अरमाइ?** 

মৰির মুখে কিঞ্চিৎ অভন্ধ কথা দিতে বিস্মৃত "গেলে হয় না, ক্ষেতি কি মাণ্য এদিগে গেল-হইয়াছেন, তাহা থাকিলে উত্তম হইত। অনৃতা-। নে গিয়া বর দেখিয়া (১০৮ পৃষ্ঠে) "বড় দিদির চার্য্য সভ্যের বিপর্যায়ে তৎপর বটেন, কিন্তু কপাল ভাল, যেমন দেবা তেমনি দেবী' দেখে. ব্যাকরণেয় সহিত তাঁহার বিশেষ বিবাদ বোধ তথাপি যে বরং পদে আছে, তাহার কনিছা हर ना। व्यापत कुनानात्कत मणूर्थ जिनि य किस्माती जाही इहेटज्ञ अक काठि व्यविक। "वाहा কৌশলে গৃহাচার্য্যকে দুরীকৃত করেন, প্রকৃত- পৌষ মানে পাঁচিশ বংগরে পড়িয়াছে", এবং লোকষাত্রায় কোন বিজ্ঞ কন্যাকর্ত্তার প্রত্যক্ষে কবিতায় বনস্ত ও বিরহ কর্তনেও খণ্টু নছে: ज्याणि बाद विराह् स्थायत देखा । वाक्ष जात्व कूलशानरकद भिरिनी " गुक्तिनी य तांकृतनारश | वांच रूप्त. कृलशानक व्यालन एविकारियां बद्धः-रवाध रुष, जिनि शूर्ववययः। (शुोहा: "जामाहरविषे। क्रम निर्विट जूनिয়ाह्नः: প্রথমা তে বর্ৎনর, কত কথা জানে" তাহা শুনিতে, "ছিটে ফোটা। দ্বিতীয়া ২৫, তৃতীয়া ১৪ এবং কামিনী ৮ বংসর তত্র মত্রে" তাহালে তেও। করিয়া রাখিতে, ও ইইলে সকলের কথা সংল্প হট্ত। এবিষয়ে পা-মালাতে - বুডের কামাইশ বা হয়, ইত্যাদি নানা- তিকদিগের সন্দেহ ভঞ্জনাথে ভাষ্টা মাজু-দহিত নৃদার ন্যায় নহেন; পরস্তু কুলপালকের বাক্যা- বিবেচনা করিয়া দেখিবেন, শেষোজি বলিয়া हेवात अञ्चाठा कांग्रेस थाइँहरू नाइत कि ना।

> প্রসূত্র রকুল কূল, গল্পে অন্ধ অলিকুল, बागु त्वा श्वार अत्र । প্রবোধ मा মানে মন, गम। फाउ আংকিঞ্ন, বল্লালিক দিকে বিষয়ক। कुरम बर्शन मिर्ध लामो यस अन वान लाहि शनिकाली कि कतिरव कार्य । ভৌতৰ অম্লা ধন, কারত গো বিকরণ, নাহি ছব থাকিবে কাহার।

(क (१ जामांत्र जाक्रां)

কামিন। মা ডাভ্চে।

কিশোরী। কেন মা আমায় ভাক্লি ।

बुाधनी। जूरे कालि अविधि क्लाबार हो। , सक्रुड शाहिता (कन ?

কিশোরী। ও মা, ও মা, আমি ও পাড়াতে স্বোষে-দের বাড়ী লুকোচুরি থেল্ভে গিছিলাম।

द्राक्रगी। ना वाष्टा, चात्र अमन् (वात्रामा, जात्रात रजा-शांत्र (मरत्र, (बढ़ बाव्ह? लाटक रा नित्म कर्द, हि!

किर्मादी। ७ मा त्कम मिल्म कार्व मार करवेना, हर मा, चांगार व्याम गाउँ।

मुक्किमी (भारताला, जात रगरमाना, जाकि अक कर्मजार)। किल्माती । कि कम्म भार

ব্ৰাজনা হোচা, আংজি আমালের সংডিতে এক প্রভক্ম হিবে। কিংশ্সী ভূচা, কি প্রভ ক্মা, বল্না মান হোমা বল, কি প্রজ্পমন বল্দনে ১০

্রংক্লা; কেন গো, সল্বোলা কেন ং**আজি** ভোদের তেওঁ ৬০৪ চ

কিশোষা। (স্বিশ্য ও মা, 'বে' কাকে বলে মা।
নালনা। 'বে' আবে বলে তাও জানিস নে বাছা।
প্রিমান শক্ষার ।

किंद्र रो। १ म, डार्कि आमि भाव?

বাঞ্জনার কাছা 'বে' কি থেতে হয় ? রাজাবর আস্-ে, কেন্দের 'বে' করে, কতো ঘটাঘাট হবে, সেকি বাছা বিজুই জানিস্নে।

িশ্যালের চার্টি হা সেই বিশ্ব **তা আমি জানি, ত**া কারে হবে মানু

দ্রাঙ্গনী। ভোমার হরে, ভোহার আর তিন বেংনের হরে। কিশোরী। ও মা, তবে ভোর হরে না ?

পুলোটা (ছানা করিবা) বাছা ভুই অবোদ, ভোর নাম হয় সেই, ভাকি নলতে আছে। আমি মা ছই।

কিংশারী। হী হী, ছী, বুলিচি ভোর হয়ে গেছে, ও মানির সংক্রায়েছে, বল্ন, ফা

বুল্পনী। (ক্রেন্সে) দূর হা, আমায় বাস্তু করিকনে, এমিচি নানান জালা, জোৱা বকলে এখন বাড়িতে যা।

তৃতীয়াকের প্রথান প্রক্রিয়া কামিনাগণের জলনহয়া; ভাষার কোন অংশে কিছুমাত্র জুটি হয়
নাই: মোহিনার প্রবেশ অবধি নকল কর্ম সুপরিপাটারাপে নির্নাই ছইয়াছে। মহিলাগণের আপান আমি-সম্বন্ধে বিলাপ-পাঠে অনেকের মনে
লারভচন্দু-কৃত বিদ্যাসুন্দর-গুম্বস্থ সুন্দর-দর্শনে
কামিনাগণের উক্তি মনে পাইতে পারে, কেই বা
এই অক্টের কবিভার বাছল্য-বিষয়ে সাহিত্যকারিদিগের নিষেধ স্থান করিতে পারেন, পরস্ত
নিম্যোদ্ধত গভাকের পর্মনৌন্ধর্য্যর ও অবিক্রম

### विषय नाम्रमा श्रमःना विषय क्रित्न, हेराट काम नरमाह माहे।

মোহিনী। এই তো বে বাড়ি, কৈ কে কোখা গো? কা-কেন্ত যে দেক্তে পাইনে। ও মা দে এ কি গো? ঐ যে কথায় বলে "যার বে তার মনে নাই, কাটনা কামাই পাড়া পড়নীর"।

ভামিনী। মরণ, ও কি হলো । মিলো কৈ লো । মোহিনী। আর ভাই, মেণে কৈ?

ভামিনী। গুল থাণ্লেই মেলে, "মার বে তার মনে নাই, পাড়াপড়্দীর হুম নাই"। দেকদেকি মিলো কি নাঃ

भादिनी। ভাল ভাই, তাই যেন মিল্লো, এখন বে বং ড়ির কাকেও যে মেলে না, তার কি বলনা;

যমুনা। বলে মন্দ নহ, বে বাড়ি, অচ্চ কিছুই দেক্টে পাইনে। বাদ্দি নেই, বাদ্দনা নেই, কিছুই নেই; দে কি,জাঁ,ওমা আমি কোথাযাব, ওমা আমি কোথায় যাব!

(हम्में । वहें सि डांडे बक्षे कनाताह तरवटा।

যনুনা। অমন কত গাচ কত দিকে আচে, আদল কৈ লো? বাড়িলোক কৈ ?

ব্রাক্ষণী। (প্রকুল মুখে) এই যে মা সকল, দিদি সকল, নছে। বহল, এনেচো এস ২, আস্বে বৈ কি; ভোমাদের কমা, করে। কমাদের, গাবে পার্থাবে, নেনে পোরে, ভোমানা না কলো কে করোঁ। জ্ঞাতি বলা, গোড বলা, সকলি আমার ভোমরা।

হেমলতা। ওলো চান্দিদি বলি একি লো। সেয়েছের বে দিতে বদেছিল, ভা সব ফাকিছুকি, ঘটাছাটি কৈ, । ত-ছুই যে দেখিনে?

ব্রাহ্মণী। আর ভাই 'ষটা,' কুদীনের মেয়ের 'রে, ঘটাই ভার, আনার 'ঘটা' পাবো কোথা বোন । ভবে ভোরা এদেছিদ্ এই ঘটাই 'ঘটা'।

কামিনী। এলো হেমলতা, জানিস্নে বড় গিন্তির সম ফাকি, নিথরচায় জামাই পাবে, ছাড়বে কেন?

ব্রাহ্মণী। দূর ছুঁড়ি, ওকথা কি বলতে আছে । জা-মাই আর ছেলে ভিন্ন কি: হা, ভোরা সকলে মিলে-ছুলে জলসৈতে যা দেখি ।

চপলা। যে তোর মেস্কেদের বর এলেচে, । (বাটামধ্যে ব্যক্তনীর প্রস্থান।)

তার জনো জলগৈতে হবে না, তাকে 'লল গৈ'
কলিই ভাল হয়——বলে গোলিনে মাণি?

बहे का जिनस्त कि कि श्रि शत (१२ श्रि) यत्ना ना अ कृ कर् मात्री करणा श्रि श्रि श्रि हो ने स्वार कि क्रि हो ने स्वार कि कि स्वार कि कि स्वार कि निम्द्र के ना है, य अरक रात्र महा शा शिवा कि निम्द्र श्रि के स्वार के स्वार

পাঠকবৃদ্ধ অনায়াদেই মনে করিতে পারেন, যে স্কবি তর্কসিদ্ধান্ত-কর্তৃক অধ্যাপক-ভট্টাচার্য্যের বর্ণন অবশ্যই উত্তম হইবে, কিন্তু যদবধি তাঁহারা প্রস্তাবিত গুত্তুত্ব ধর্মশাল ও তর্কবাগীদের বর্ণনা না পড়েন, তদবধি বর্ণনাদ্ধারা কি পর্য্যন্ত প্রকৃতের প্রতিমা মনে উদিত হয়, তাহার অনুভব করিতে পারিবেন না। ধর্মশালকে লৌকিক-ব্যাপারে অনভিজ্ঞ, শাল্তে একাগুচিত্ত, অথচ অর্থাভিলামা অধ্যাপকবর্ণের আদর্শকরপ বলিলে বলা যায়।

কুলীন-কামিনীদিগের দুংখবর্ণন-করণানন্তর তাছাদের দুঃখদাত। কুলান-কলিপুঞ্চিগের মূর্ত্তি চিক্রিন্তে জনায়াসেই স্পাহা হইতে পারে; তর্কবিজ্ঞান্ত বিবাহবণিক, অধর্মবর্তি, ও উন্তমমুখোপাধ্যায়ের চরিত্রেই অভিপরিপার্টার্শপে সে স্পৃহা
নিবৃত্ত করিয়াছেন। কুলান-কুল-সর্ব্য-ঘেষী কুলীন
কলির চেলা " এমত কেহই নাই, যে সে চরিত্রের
কোন জংশে তিলার্দ্ধ দোষারোপ করিতে পারে।
বিবাহবণিক্ (৭২ পৃষ্টে) "১২৫২ শালের তরা মাঘ
বিমলাপুরের কমল ন্যায়ালক্ষারের কন্যাকে" বিবাহ করিয়া কি প্রকারে ১২৬১ শালে " এক কালে
কুড়ি বংসরের হেলে" প্রাপ্ত হইলেন, তাহা সন্দেহলেক মনে হইতে পারে; পরস্ক বনিক্লার "কদেশি বিশাস কি? তাহার "লেখাপড়া" কুলখনের
কন্যার ঠিকুলির \* ন্যায় অস্পান্ত হইয়া থাকিবে,বা

विभिन्दत । १८१ (क ) १९१ शिष्टा था किरवन। অভঃপর কন্যাপ্রসূ গর্ভবতীর দুংথ, কন্য-বিক্ত-(श्रत (काटवाक्ट्यायन, कनारतत नक्नन, वितिष् পश्रा-ননের যাতনা, ও অভব/চন্দের পরিচয় প্রভৃতি नाना ध्रमाक ठक्मिकाल अञ्चलमीय व्यनक वर्ग-পারের সুবর্ণ করিয়াছেন, কিন্তু এ অপ্পায়তন পত্রে তাহার আলোচনা করায় নিরস্ত হইতে হইল: পরস্তু এই প্রস্তাবের উপসংহার করিবার পূর্বে ইহা **অবশ্য খীকতব**়েয়ে বঙ্গভাষায় যে সকল ৰূপক প্রকটিত হইয়াছে, তথ্যধ্যে কুলান-কুলনর্ঘই রস্ক্ ভূ**মিতে অ**ভিনীত **হওয়ার উ**পযুক্ত; তাহার অভি-नम्न यापृष्य मत्नाङ्त-वित्नारम् । मत्थः शतिशिवि इ इहेरव, जामून नम्बिरनाम अधुना वक्ष छ।यात्र आरह, **এমত কিছুই আমাদিগের মনে উদিত হইকেছে** না। প্রস্তাবিত নাটক-পাঠেও প্রায়ঃ সকলেই গরি-जूष्ठे इहेरवन; अञ्जव आमता मुक्करणे कनुरताव कतिराष्ट्रि, या भाठेकशव मकरल है "कुनीन कुन नर्बच " व्यात्माठनाय व्यानमः वाज कर्ना

### द्राष्ट्रगय्राय , भग्नत्व कृत्रा

<sup>\* &</sup>quot;বয়েদ বড় অধিক নয়, সে লন য়িঞ্জি খ্লিয়া দেখিলায়, বলি দেখি দেখি মেয়েটায় বয়েদ্ কত, ভা ভাই ব্যিতে পারিলায়

না, ঠিকুঁজি খান জীব হঅছে, আঁকর বোকা যায় না,ভা নাই পেলো, দে এই বড় পিদীর ঘইদী কুলীনকুলসর্ক্তয়ে ৯ পৃষ্টে।



हेब्राकीय आपटम् भाषणाद्यत् सकोती जावसाः

চইল। এই ঘটনার কিয়ৎকাল পর পাদ্শাহ যথানিয়দে সেই শ্যাতে শয়ন করিলেন। ইহার প্রায়ঃ
দ্রু দণ্ডের পর এ দাসী পার্দ্ধ পরিবর্জন করিলে পাদশাহ ভঃ ত্রি হইয়া নসবাতে গাজোখান করত
বলিলেন, "দেখা, আমার শ্যাতে নাপই হউক,
কি বেজই হউক, একটা কি আছে।" পাদ্শাহের
আজ্ঞায় ভ্রেরা বাস্ত সমস্ত হওত তরিকটে
আমিয়া সেইশ্যায় অব্বেষণ করিয়া দেখে, যে তথায় পাদ্শাহের কর্মকারিনী দাসী রহিয়াছে। পাদশাহ তাহাকে দেখিয়া জোবপূর্ব আজ্ঞা করিলেন, "ইহাকে আমার সমক্ষে কাত বেজাঘাতে
ভাড়ন করহা"। ভূতেনা প্রতেমনি দুর্দান্ত, বলিবামাত্রই বেজাঘাত করিতে লাগিল। তাহাতে জী
দাসা প্রথম ৫০ ঘার সময়ে কাঁদিল। এই এক আ-

### भिल्लिविष्णार गाहिनी नस्ता चनुकृत्व प्रभाहिरेखि महाभविष्णात्र मिल्लिक् नमीरल चारवष्टन ।

-----

দেশভিতিষি মহাশায়ের। আনেকেই থেদ করিয়া পাচেন, যে অধুনা উপভীতিকাথে ধনদীন ভালসন্তানেরা কানত আদিক ক্লেশ পাইতেছেন। পূর্বে বাঁচারা প্রতি মাদে আনায়াসে শত্র টাকা উপার্জন করিতেন, ইদানীং ক্রাদের তাহার অপাংশও অর্জন করা অভান্ত ভুদ্ধর হইলাছে: ফলতঃ তাঁহাদের প্রেক কেরানীগিরী ভিন্ন আনা বান উপায় না থাকাপ্রযুক্ত এ আপেদের জনসঃ বৃদ্ধি হইলারই সন্থাননা। এক নগরের সকল ওল্ল নান বাজি কেরানী হইলে কদাপি তাহাদের সমুন্তি হয় না, বিবিধ ধারসায় থাকিসেই নগরন্ত সকলের উপতি হইতে পারে; এতদর্থে কলক বিশিক্ত বাজি শিপাবিদ্যাৎসাহিনী নামী এক সভা সংস্থাপনপ্রকার গত বেসর আবণ মান বিপাদিকার নিমান একটি বিদ্যালয় সংস্থাপিত করিলাছেন; ভাহাতে চিক্রিদ্যা, তঞ্চন-বিদ্যা ও মহপাক-পুতিলকানির গঠনোপ্রে বিনারে উপদেশ প্রদক্ত কইতেছে।

্রত বিদ্যালয়-স্থাপনের অধ্যান অভিআয় এই যে শিশ্প-সাধ্য-ব্যবস্থায়ের উৎস্থান ও ট্রান্তি হয়, এতাদেশে চিন্তকর ও তক্ষকের আতার নিশারিত হয়, এবং হিন্দু, নোসল্মান ও ইংরাজ-সন্তান, যালারা কিংশিং বিদ্যান তিন্তক করিয়া পরে উপজানিক-আধারেও ক্লেশ পাইতেছে, তাহাদিধের নিমিত্ত ব্যবসায় অস্তুত হয়।

এই তিন উদ্দেশ্যই যে উপকর্তি তাল কেছত অস্বীকার করিবেন না। চিত্রকার্য্য, ভক্ষণকার্য্য, ভাকতকার্য্য, স্থাকিকা আছতি স্কা শিপাৰত। এদেশে একেবারে লুপ্ত ছইয়াছে বলিলে বলা যায়। হিন্দ্রধাে এমত চিত্রকর কেওই ন।ই, যে বিলাতের বংসামানা চিত্তকরেরও তুলা ছাইতে পারে, অবচ ঐ চিতাদিদ। যে লিংখন অথকরী ইচাতে কোন সন্দেহ ন।ই। উত্তন চিত্রকরেরা অপ্যাপ্তি ধন উপার্জন করিয়া থাকেন। ষ্টি নংসর হুইল, নিলাতে বেল-জ্পু নামা এক জন আস্থা চিত্রকর ছিলেন, তিনি শেষ।বস্তায় এক ২ খানি প্রতিমূর্তি চিত্র করিছে ৫০,০০০ টাক। কান্যা মূলা লইতেন, তথাপি তীকার এত কলা উপস্থিত ছইত, যে কণকালের নিমিতেও তাঁছার অবকশে ধাকিত। রেনল্ডসেব তুল্য চিত্রকর শাভ্র কইবার নছে; পার্স্ত ছলিকাভায় সামনো ঢুিত্রকরের ধেতন কেরনীর বেতনহইতে ৯/১৯ অধিক। ৬।৭ দিনে সাধ্য একত্ থানি চিত্র কলিকভায়ে ২।০,শত ট্রের কমে এপ্রত ক্য় না। অপর ধাতু ক 🔩 । তক্ষণ করিয়। চিত্র প্রস্তুত করা ও প্রস্তারের মূত্তি নিন্দাণ করাও নির্থ কন্দা নতে: ত, হাতে শত ২ বাজিচ বিভাবেত প্রচুর অর্থ উপার্জন করিতেছে। এত**জেশে ঐ সকল কা**র্যোর প্রচার ছইলে অবশ্য অনেকে উত্তম উপ-ক্ল" কৰা প্ৰাপ্ত ছইবেক। কলতঃ প্ৰস্তাবিত বিদ্যালয় কিছুকাল উত্তমক্লপে নিৰ্ব্বাহিত ছইবেল, ধনিগণ চিজাদি উত্তম গুল্মকা অপেমুলো প্রাপ্ত ইইবেন, ব্যবসায়ি লোক শিপির অভাবে বিবৃত ইইবেন না, ও ভক্তসন্তানকে ৮।১০ টাকরে কেরানীগিরির নিমিত্ত লালাইত হইতে ছইবে না! এই সদ্যটনা অতি অপ্পবায়ে সুস্পাল হইতে পারে; मात्रिक आ॰ हेकि। राग्न करिया २। ३ तथ्मत ध्वन्तारिङ दिन्हाभटम भिका करितल, खनःग्राटम है लटकता ४८ छिल-क्वींटक। উপार्क्टन नमर्थ इंडेटन। अधिकम् धर्टे विमालिए। धम्छ नियम निर्मातिक क्रेन्साइक, वाहारक रेथ नकल বিলেক ১ বৎসর কাল শিম্পবিদ্যা শিকা করিছে অঞ্চীকার করিয়া প্রভাল ৬ ঘনী কলে শিকা করিবে, ভালার ছাত্রীয় অবস্থায় প্রস্তুতীকৃত চিত্রাদি বিক্রত হাইয়া যে লভা হাইবে, তাহার কিয়দংশ বিদ্যালয় পরিত্যাগ-ফরণ সময়ে তাহাকে দেওয়া বাইবেক; তাহাতে ছাত্রীয় বুরিতে তাহারা যে বায় করিবে, তাহা প্রতি প্রাপ্ত হইবেক, অধিকল্প ব্যাহ বাবস।য় আরম্ভ কালে ঐঅর্থে যন্ত্রাদি ক্রয়ের উপায় হইবেক।

প্রস্তাবিত বিদ্যাশিক্ষায় দেশীয় বালকাদগের সম্পূর্ণ উৎসাহ আছে; শত ২ বালক ইছার উপার্জনার্থে ছাত্রত্ব দীকার করিতে উদাত ছইয়াছে: কিন্তু অর্থাভাবপ্রযুক্ত শিপাবিদ্যোৎসাহিনী সভা সকলকে শিক্ষাদান করি-তে অশক্ত হইয়াছেন। এইক্ষণে যে থাকারে বিদ্যালয় চলিতৈছে, তাছাতে মাসিক ৭২০ টাকাঁ বায় ছইয়া শাকে। তথাধ্যে মাসিক দাতবো ২৫০ টাকা, এবং ছাত্রীয়বৃত্তিতে ১২০ টাকা, সকলে ২৭০ টাকার সম্বতি আছে; আৰ্দিন্ট টাকা সভার মূলধনহইতে দিতে ছইতেছে। এই অনুপাপত্তির প্রভাপকারার্থে সভা গব মেন্টের সাহায়া প্রার্থনা করিয়ালের; কিন্তু এভদেশীয় বিদ্যালয়ের সাহায়াণ্রে গ্রন্থনিট হৈ নিয়ম সংস্থ পিত করিয়াছেন, ভদনুসারে কোন বিদ্যালয়ে সাধারণকর্তৃক যে অর্থ প্রদন্ত হয়, গবর্মেন্ট ভাহাহইতে অধি টাকা বৃদ্ধি দিবেন না, সূত্রাং এ নিয়মবশতঃ শিশোবিদ্যোৎসাহিনী সভা ২৫০ টাকা মাত্র পাইতে প্রারেশকা করিছে কাল্যন পূর্ণ হইতে পারে না। অভএব উক্ত সভা বিনয়পুরঃসর সাধারণ-জন গণের সাহায়া-গ্রাহা করিতেছেন, এবং ভরসা করেন, যে সহাদয় মহাশার্যালগের নিকট ভাহাদের যাজ্রা বিদ্ধান্ত ভালা গ্রাহার পূর্বের প্রস্তালিত সভা সাধারণস্থাপে যত অধিক টাকা প্রান্ত হয় করিয়া কিছিলা। আভএব একণে যে কেছ অনুগ্রহ করিয়া কিছিলা। আলিস স্নান্ত করিবেন ভাহা সভার পক্ষে ছিন্তুণ হইবেক। যে কেছ সভায় মাসিক ও টাকা অথবা এককাল হল টাকা লান করিবেন, তিনি সভার সভায়েয়ে গণা হইবেন।

সভাকত্ক সংস্থাপিত বিদ্যালয়ে এতদেশের সমাক্ উপকার সম্ভাবনা, ইছাতে কোন সংলহ নাই। মাজাঙ্গ নগরে ডাজর্ হাট্র সাহেব এই প্রকার কএকটি বিদ্যালয় সংস্থাপিত করিয়াদেন, তালতে যে যে জবা প্রস্তুত্ব তাহা জায় করিতে, ও যে সকল ছাত্র সুশিক্ষিত হয় তাহাদিগকৈ কর্মো নিযুক্ত করিতে, লোকে এতাদ্ধান্ত করিয়াছে যে ডাজর সাহেব সকল প্রার্থিদিগের মানস সকল করিতে পারেন নাই। এতদেশীয় ব্যক্তিক শিক্ষেবিদ্যানস্থান্ত যে ডাজর সাহেব সকল প্রার্থিদিগের মানস সকল করিতে পারেন নাই। এতদেশীয় ব্যক্তিক শিক্ষেবিদ্যানস্থান বাজাতি মনুষাহইতে কোনমতে অক্ষম নহে। অতএব এখানকার মনুষোরাও ব্রেপ্রিত কর প্রাপ্ত হইবেন, ইলাত্সবশাই স্থাকার করিতে হইবে। প্রথমতঃ কিয়ৎকাল বিদ্যালয় রক্ষা করাই প্রধান কল্প দেশাইতিষী ধনিদিগের সাহায়ে তাহা নিল্পন্ন হইবেন, অভীক সিদ্ধা হইবার অন্য কোন বাধা নাই।

### বিজ্ঞাপন।

### প্রাকৃত-ভূগোন

खर्थाद

### **ভূমগুলের নৈদর্গিকাবস্থা-বর্গন-বিষয়ক গ্রন্থ।**

ইতিপূর্বে এতৎপত্রে-প্রাকৃত-ভূগোল বিষয়ে যে সকল প্রস্তাব প্রকটিত হইয়াছিল, অধুনা তাহা পরিশোধিত হইয়া ক্লুদু পুস্তকাকারে মুদুত হইয়াছে। তাহাতে জল, হল, পর্বত, ভূমিকম্পা, আথেয়গিরি, সমুদুদ্বোতঃ, উৎন, নদী, বায়ু, বৃষ্টি, হিম, উডিজ্জ, পখাদি পৃথিবীয় বিবিধ পদার্থের প্রকৃত অবস্থার বিবরণ বিন্যস্ত আছে; তৎপাঠে কি বিষয়ি লোক কি ছাত্র, সকলেই উপকৃত হইবেন। উক্ত গুল্পে যাহাদিগের প্রয়োজন হয়, এই পত্রের সম্পাদকের নিকট অথবা লালবাজারত্ব রোজাক কোম্পানির নিকট তত্ত্ব করিলে প্রাপ্ত হইবেন। মূল্য ৮০ আনা।

# বিবিধার্থ-সঞ্জুহ,

নাৰ্থ†

পুরারন্তেতিহাস-প্রাণিবিদ্যা-শিশ্প-সাহিত্যাদি-দ্যোতক মাসিক পত্র।

৩ পর্ব ]

भकाक ३११७, कान्यन।

ত হাও।



শতু কনিয়া-দলভুক্ত জয়সিংহের বিধবা পুঞ্বধুর জলজারহইতে দুরীক্ত হয়েন। कमात्र महिल बनकोल्जिनश्ट्य विवाद देव।

थमण्ड फिनि वीर्याहीम "छङ्की" मलপणिमिरशंत

তথায় তাঁহার প্রধান রাজধানী স্থাপন করেন। মহারাজা রণজীতসিংহের জীবন-বৃতান্ত। কিঞ্ছিৎকাল পরে ১৮৫২ সংবৎসলে তিনি কনিয়। परवाद मार्कारमः ममञ्ज ''छक्रो' मम्भूनाञ्चरक ► २० म॰ वर्षात महाहाका त्र- व्यालन वर्षा व्यानग्रन करतन। উक्त मण्णुपारग्रत জীতসিংছ ভূমিষ্ঠ হয়েন। তৎ- সহকারী কম্পুর-প্রদেশ-নিবাসী নিজাম্দীন খাঁ কালে তাহার পিতা মহা- দেখিলেন, যে ভৎকালে রণজীতের বিপক্ষতা সিংহ পঞ্চাবত শিথদিগের করা তাঁহার পক্ষে কোন সংশেই শুেয় নছে. षामम-मरलत मर्थ। এक मरलत अधिशिकि मुख्ताः किनि त्रश्कीरव्य कांग्रशीयमात्र इहेशा ছিলেন। বাল্যাবস্থায় রণজীতসিংহ কি প্রকারে রহিলেন। এই কয়-লাভের পর রণজীত তারণ-कालयालन कतिराजन, अवर जयकारन जाहात नामक लविज नरतावरत जीर्थ-त्रान कतिराज भमन ণিতা তাঁহাকে কি প্রকার জ্ঞান ও বিদ্যার করেন, এবং তথায় তাঁহার যহিত কতেদিং-শিকা প্রদান করিয়াছিলেন, আমরা তাহার হের সাকাৎ হওয়ায় তিনি তাহার সহিত উ-সবিশেষ কিছুই বলিতে পারি না। কথিত আছে, ফীষ বিনিময় করিয়া স্থ্যতা করেন। ১৮৬০ যে মহাসিংহের সম্পাদের সময়ে তাঁহার পূর্- সালে এনগরের অধিপতি সংবারচন্দু তাঁহাদার।

এই ঘটনার কিয়ৎকাল পরে রাজ্যলোভে মুথা যৎকালে আফ্গান্রাজ্যাধিপতি শাহ জমান্ হইয়া আফ্গান্-সানের অধিপতি শাহজমানকে পঞ্জাবরাজ্য অধিকৃত-করণে ইচ্ছুক হইয়া দিঠায় তাহার ভ্রাতা মহমূদ অধা করে, এবং পরে ধরং বার লাহোর আক্রমণ করেন, তদবধিই রণজীত- তাহার তৃতীয় সহোদর শাহসুজা কর্ত্করাজ্য হইতে সিংহের প্রভাবের বৃদ্ধি হইতে আরম্ভ হয়। প্র- দুরীকৃত হয়। ঐ অবকাশে রণজীত তাহাদিগের অধিকারের উপর আক্রমণ করিতে আরম্ভ করি **रुखर्हेट जारहारत्रत्र** অধিকার গুছৰ করিয়া লেন, এবং ১৮৬১—৬২ সালে ক্রমাগত সন্থাম করত

बृट्डि खक्र अवः माहिस्हान प्राप्तमण यवत्नहा তাঁছাকে যথেষ্ট উপঢ়োকন প্রদান করিল, এবং मुलकार निदानी मुकक्कद था श्रेष्ट्र धन श्रेमा ला हाका इनको र निः ए এই প্रकारत निष् অৱিয়াছিলেন।

১৮৬২ সংবৎসরে যশোমস্ত-রাও হুল্কর ইং- তাছাদিগের সকলকেও সহায় হইতে হুইবে। ভাঁহার মন্ত্র হইবেনা; অতএব ইংরাজদিগের যে যদিও রাজা মৌথিক বিলক্ষণ সভাব দেখা-সহিত সন্ধির কম্পানা করেন। ইংরাজদিগের পক্ষে ইতেছেন; কিন্তু অন্তরে ২ তিনি অবশাই শত্রুত। মেট্কাফ্ লাহের রণজীতনিংছের সহিত সন্ধিক- বাধনের চেষ্টা পাইতেছেন, এবং ভ্ল্কর ও রিতে গমন করিয়াছিলেন। প্রথমতঃ সন্ধির সুযোগ। সরহিন্দবাসী শিশদিগের সহিত ঐক। হুটতেছেন। হয় নাই, এ প্রযুক্ত রাজা তাহাতে নিভঁর না করিয়া। রাজা রণজীতনিংহও ইংরাজদিগের প্রতি ঐ রূপ অধালা-প্রভৃতি নানা-দেশ আক্রমণ করিতে লা- নানা সন্দেহ উত্থাপন করিতে লাগিলেন, কিন্তু গিলেন। ইংরাছাদিগের কর্মকর্ত্তা লার্ড কর্ণভয়া-। লিদ্ দাহেব এই ব্যাপার অবগত হইয়া মেট্-কাফ্ সাহেতের সহায়তা-করণার্থে এবং রাজা রণ-कार्टक भूक कर्शार्थ वृह्द कर एन र्या को ८% तब करतन, এयः जाकारज्ञे बास्ना ब्रवसीरज्ज गर्किक ইংরাজদিগের বিপক্ষতার সূত্র হয়। ইংরাজ-যো-षात्र। त्रश्जीरञ्ज निक्षेवर्डि इरेटन जिनि जाहारज বিশেষ কোন উগুভাব প্রকাশ না করিয়া কৌ-मनकरमरे चालनात कार्या छेकात करमन, अवः एक्वर्षि शत्रकात मध्य मिक इंशिक इस। ये নন্ধির নিয়মানুসারে শতক্ত নদার দক্ষিণ পার্যস্ত शुष्टिमक्षिकाददत्र जीमा निर्फिष्ठे इत्र, अवः काहात्र

পশ্চিমাভিমুখে অগুসর হইতে লাগিলেন। এত- উত্তর-তীরহইতে সমুদায় পঞ্জাবরাজ্য পূর্ববং রাজা রণজীতের অধীন থাকে। এই উপলক্ষে लूचियानाटक वीषिन-टेनन। शिराव शांकिन इहेन; এবং শতত্ত-নদীর পূর্বপারস্থ সমস্ত প্রধান শি-कहिंहा जिल्हा क्वांना करें कि निकृष्ठि शाहे- थिता है बाकि मिटिशत विश्वा है बारकता আপনাদিগের অধীন সকল প্রধান শিথদিগের महम्ब शृह्में शांत्र मान्य यदन ताका अप्त कित्रियों निकटि अहे कथात यांचना कित्रिया मिलन, य ফ্ট্রেড লাহোরে প্রত্যাগমন করত, আড়ম্বর রাজা রণজীতকৈ আর কেহ কর দিবেক না; পূৰ্বক আপন রাজ্যে হোলীপূৰ্বে মহোৎসব এবং কেছ তাহার অধীন থাকিবে না, বুটিশ-े रेमर्ना नकलरक ब्रक्ता कविरव, किन्नु कार्याकारन

রাক্ষদিগের নিকট পরাস্ত হইয়া রণজীতের আশুয় । এই সন্ধিতে শি**থ ও ই**ংরাজ উভয়ের কা-যাচ্ঞা করেন, কিন্তু দুরদর্শী রণজীত দেখি- হারো প্রতি কাহারো সম্পূর্ণকাপে বিশ্বাস জন্মে लाम, (य इंश्वाक्षपिरभव महिक विवाप कविता नारे। इंश्वारकता विवयमा कवित्य नाभितन, কালেতে তাহাদিগের উভয়পক্ষেরই আশকা मृत इहेए जाशिन।

> ১৮৬৮ मःवर्गदा द्राकाद महिक हेन्द्राक्षित्रव গবর্ণরের পরস্পার উপটোকন আদান প্রদান कदा रुम, अवः ভारात शत्रव्यत देश्ताकिपिरशन तिनागि चिक्षेत्रलामी नार्श्व बङ्ग त्राक्षण्य. প্রভূপসিণ্ডের বিবাহের নিমন্ত্রণে গমন করেন। करविध ब्रथ्मीरंक्त मृजू।काल-शर्याञ्च छेखन्नश-क्या मध्या चात्र काम विवासक चामका छेश-স্থিত হয় নাই।

काङ्गा-भर्वरञ्ज अधिकात भारेवात निमिख वनकी छनि । न नाव छत्नुव अनुकून एरेब्रा अक्वाब

গোর্থাজাতির নহিত সন্থাম করিয়াছিলেন। এই উপলক্ষে তাঁহার সহিত নেপালরাজ্যের সেনা-পতির সহিতও বিবাদ উপস্থিত হয়।

১৮৬৭ সংবৎসরে রণজীতসিংহ মহাআড়ম্বর-পূর্বক মুল্ভান্-রাজ্যের উপর আক্রমণ করেন; কিন্তু তাহাতে কৃতকার্য্য হইতে পারেন নাই। এই ব্যাপারে কেবল তাঁহার ১,৮০,০০০ টাকা মাত্র নষ্ট হয়। তিনি মুল্তান্-অধিকার-করণার্থে ইংরাজ্যদি-গের সহিত যোগ করিতে প্রার্থনা করিয়াছিলেন; কিন্তু তাঁহার সে প্রার্থনাও পূর্ব হয় নাই।

১৮৬৮ সংবৎসরে আফ্লান্স্নার অব্ধ রাজা শাহজমান্ সিক্ষুনদ পার হইয়া পঞ্জাব-দেশে আগমন করত রাজা রণজীতসিংহের সহিত সা-কাৎ করেন। তাহার পরবৎসর শাহজমানের ও তাহার ভ্রাতা শাহসুজার পরিবারের। আ-সিয়া লাহোরে বাস করে।

১৮১৯ সালে রাজা রণজাত আফ্গান্রাজ্যের পাদশাহ শাহ মহমদের উজীর কতেথার বহিত একত্র হইয়া কাশ্মারাবিপতির সভিত সঙ্গুামে नक्जी ভূত रुरवन, अवः ১৮१० नात्वत माघ मात्न উক্ত ব্লাজ্য হ্লম্ম করেন। কিন্তু কতেখা ছন করিয়া রাজাকে ভাহার অংশ দিতে স্বীকার করিল না। রাজা আর কোন উপায় না পাইয়া नाह्मुकारक लारहारत वहेशा शिशा जालनात व्यथोल दाथिलन। शृर्वकाल हिल्लायहिए ग्र রাজভাণ্ডারে "কোহেনুর" নামক এক প্রসিদ্ধ হীরক ছিল, ভাগ্যক্রমে তাহা কাবুলাধিপতি-**पिरिगत एखगण एय।** कातृ वर्षे ए शवायन-नमस्य শাহসূজা তাহ। আপন সঙ্গে আনিয়াছিলেন। त्राका त्रविष वे त्रज्ञ-प्राधार्य भारम्कात নিকট ঐ ব্ৰত্ন প্ৰাৰ্থনা করিলে শাহ তাহা দিতে चबीकांत्र करतमः; शरत दांका जारात शनवकश

প্রচুর অর্থ দিতে চাহিলেও শাহসুজা সমত হয়ে।
নাই। অবশেষে রাজা শ্বরং সাক্ষাৎ করত তাহার
নহিত সংগ্রভাব সম্পাদনার্থ উপ্টান বদল করিয়া
দেশ-বিখ্যাত কোহেনুর রত্ন হস্তপ্তত করেন। এই
রত্নের পরিবর্ত্তে তিনি শাহসুজাকে তাহার দারণ-পোষণের নিমিত্ত লাহোরের মধ্যে কিঞ্চিৎ ভূমি
বৃত্তি প্রদান করেন, এবং শুত্রহুতে কাবুল উদ্ধার
করিয়া তাহাকে দিবার শাস্ত্রীকার করিয়াছিলেন।
পরস্ত শাহসুজা কাল কানে রাজার হস্তহুতে
মৃক্তি পাইয়া স্থানান্তর শানন করেন, সুতরাং সে
অস্কীকার ব্যর্থ হয়।

১৮১৪ नात्वत वर्षाकाल काणीत-(नत्म युक्त व्यात्रस्थ ह्या तास्त्रा त्रवाणिनः (ह्त केलयुक्त मुक्ती व्याक्रम् वृक्षकात्म श्रीक्रिक हित्त्म, এই প্রযুক্ত বিশেষকালে যুক্ষর উদ্যোগ করিতে পারেন নাই। অপর, কালে মহমদ আজীমথা রাম্বার প্রধান সেনার উপর কিয়দংশে জয় প্রাপ্ত হয়, ও বর্ষার প্রাদুভাবে রাজনৈন্য সমস্ত ছিল্লভিন্ন হইয়া যায়; অধিকস্ত রাজার এক জন প্রধান সেনাপতি হত হয়, এই প্রযুক্তহাশ হইয়া ঐ যুদ্ধক্ষেত্রহইতে রাজা একাকা রাজধানীতে প্রভাগমন করেন।

১৮१६ नात् महाद्राका द्रविका बोस पूळा थएननिःहरक मूल्ठान छय किति एद्रदेश करतन। के
बाकक्यात अरनक मञ्जामकत्रशानखत उपमान छयी
हरतन। के नात्न छलीत कर्ठ्यात मृज्यकेनाम
व्याक्शान्ताख्य शोनयांश छेपछिछ इत्याद्ध,
ताङ्गा द्रविका विकाल अनमत शाह्या शालाखत छेपहिछ इहेरनन; किस किकिए कान विकास मन्
थातन आशानत विश्वस महिथाक द्रविका आन्
भातन आशानत विश्वस महिथाक द्रविका आन्
भातन कार्यात छत्र कर्तवार्थ याका करतन, ७ जूमूनन
मञ्जामानस्त छेड्स सानह अधिकृठ करतन।

১৮৮০ সালে রণজাতসিংহ দক্ষিণাভিমুথে গমন করিয়া সিদিয়া-প্রভতি ভানের সমন্ত যবন-বৃত্তি-ভোগা অমীলুদিগকে আপনার অধান করেন; এই প্রকারে পঞাবরাক্ষ্যে আর তাঁহার প্রতি-टामी (कहरे तहिल मा। नार्शत, काणीत, পে-শারর প্রভৃতি নমন্ত দেশ তাঁচার অধীন হই-ल, ७ भीत जनामाना वाष्ट्रक ও जनाधात्र যুক্তি মন্ত্ৰণছাৱা ক্ৰমে পঞ্জাবের একাধীশন ছ্ট্রা ডাইলেন। কেবল কোটকাঞ্ডা-রাজ্যের व्यक्तिकारी मश्मावहरामुद शूर्वा अंकि मंद्रा कति-ছা ভাতার পিতৃবিয়ো<mark>গের পর তাতাকে ভাতার</mark> পিতার সিংধাননে সমারত করান, এবং খায় পুঞা থড়সালতহের সহিত উঞ্চীয় বছল করা-ইয়া ডাৰার বহিত স্থাতা **করিয়া দেন।** 

রাজা রণজাত যাদৃশ বিস্তীর্ণ রাজ্যের রাজা क्ष्रेंशकित्व, वालाकात्व जाहात नियम-मः जानन ख म्हानारक कदरनाभरयांनी जानूम किछ् डेभ-দেশ প্রাপ্ত হন নাই; পরস্তু তাঁহার ঘাভাবিক বুজির এতাদৃশ পক্তি ছিল্ল, যে তিনি অনায়ানে বিবেচনা করিয়া তদনুসারে রাজকার্য সমাধা করিতেন। তিনি প্রজাদিগের উ**প্রয়ত অনুসারে** তाशामित्रित निक्रेक्ट्रेट कर शृह्भ कतिराजन, अवः ব্রিগ্দিপের বাণিজ্য-লাভানুদারে ভাহাদিগের विक्रिक्ट्रेट नगया छन् **नहरून: छाहात निक्**रे কুখন কোন বিষয়ে অবিচার হুইত না; যথার্থ-कारण मूरहेंद्र ममन ও निष्टित शामम रहेंच; टाहांत लोखना धनः वहानाठां धनामाना हिन। जाहांत्र वीर्यात कथा वनाहे बाह्ना; िन बकाको नमुनाय पूर्णास निश्व**मार्किक** বাবজ্জীবন আপন বলে রাখিয়া**ছিলেন। তাঁছার** तारकः धरणंत मर्यापा दिलकन हिन। त्रभक्षी छ

সিংহ আপনি নিতান্ত ৰার্থণর ছিলেন না, गर्दमा রাজে। রই হিত অংশ্যণ করিতেন; তাঁ-হার কার্য্যভারা কথন দার্থপরতা প্রকাশ পায় দাই। তিনি যখন যাহা কিছু করিতেন, ভাষা केश्वरत्रत नाम नहेशा अकरगावित्सत्र डेल्मरम कति-তেন; এবং আপনাকে সামান্য লোকের ন্যায় ঐ গুৰুর অধীন ছাকার করিতেন।

া ১৮৭৯ সংবৎসরে পারস্য-দেশ দিয়া বে-গুরা, এবং এলাড নামক দুই জন করাশিস্ देनन 🏿 अक्ता नारहात-मगरत उपिञ्च हम । 🛮 🔻 🖹 রাজা রণজীত আপন দৈন্যদিগকৈ শিক্ষা দিবার দিশিত্ত তাহাদিগকে নিযুক্ত করিয়া রাখেন। के पूरे जन याना लारकत शक्तिभूमबाता निथ-নেনারা যুক্ত-বিদ্যায় অভ্যন্ত উৎকর্মতা প্রাপ্ত হয়। রাজা রণজ্ঞাত বহু**কোশলে আপন দে**নার মধ্যে ইউরোপীয় শৃঙ্থলা স্থাপন করেন। পূর্বপ্রচলিত একাগু চিত্ত শিখদিগকে বেশ ও পূৰ্বপ্রচলিত অস্ত্র পরিভাগ করাইয়া নূতন অজ ও নূতন যুদ্ধ-বেশ ধারণ করাইটুচ, এবং তাহাদিগকে নূতন-নিয়মের দেশের ভার ও আপন অধীনত লোকদিগের অবস্থা। অনুগত করিতে তাঁহার পরিপুন ও ব্যয় অত্যন্ত হইয়াছিল। ভিলি তাহাদিণের উৎসাহের জন্য আপনি স্বয়ং তাহাদিগের সঙ্গে নমান নমর-বেশ ধারণ এবং সমস্ত অভিমব মিয়ম অবলম্বন করি-য়াছিলেন। পরস্ত তাঁহার এত যতেতেও নুতন নিয়মের প্রতি পূর্বতন সরদারেরা এক ২ বার বিরক্ত হইয়া উঠিত, কিন্তু ভাহাতে দেশের কোন অনিষ্ঠ ঘটে নাই। জাঁহার গৈনের: তলবার বন্দুক ও কামান লইয়া যুদ্ধ করিত, ও कामात्मन युष्क विज्ञक्य मुनिशूय रहेन्नाहिन। **डाँहात्र रेनन/मन हेर्डेद्वाशोत्र**ेन्न् निक्कि. योकी-मिर्गित व्यर्शका (काम व्यन्तम मूम हिन मा; वहर काम र जराम उदक्ष किना एस भूती,

बनार्छ कृत প्रज्ि कबक सम देजेद्वानीय वा-काशिकिरिशत नाहादया त्राक्षा शिश्वविद्यात बरधा-উৎকৃষ্ট অশারোহি ও পদাতিক শেলা প্রস্তুত **बहे निमिन्न काम्म** शुङ्ठि করিয়াছিলেন: ञ्रात्न वे नारश्विपरंश्व विवक्त भारि विद्युष्ठ रुरेशाहिल।

রাজা রণজীতের শব্দ গুরুবক্সসিংহের জী সদাক্ষর বাল্যাবস্থায় তাঁহার উন্নতির মিমিত্ত অনেক নহায়তা করিয়াছিল, এবং তাঁহার সহিত আপন ্া মহতাব্কুখরের বিবাহ দিয়া মনে क्रिशाहिन, य जारात पोर्किन प्रतिभाष्म पक्षां-বের অধীশর ছইবেক, এবং ভাছার কন্যা রাজ-भा**ञा हहे**या तारकात कर्ज्य कतिरव । **এই আশ**য়ে म तनकीर उत्र वालागवञ्चार के काहा विश्व वा मा-তার হত্তহতৈ রাজ্যের কর্ত্ব গুহণ করিতে উপ-रम्भ रम्भ, এर शांका ७ ठाहां व छे अरम्भानु गांद मधममा वर्ष वसम् अविधिष्ठ ताककार्य। कतिएक আরম্ভ করেন, এবং, প্রবাদ আছে, ব্যভিচা-রের দোষ সংশয় করিয়া আপন মাতার প্রাণ বধ करतनः किन्न পরিণামে সদাকুঁ করের আঁশাও পূর্ণ : हम्र नाहै, এবং তাहाর মন্ত্রণাও সফল হয় নাहे, কা-त्रविष्य क्रिकालके त्मद्रिमः क्रिक मूळथरत्र ७ त्मियी, ७व॰ चरनक विवस्य श्रमः मनीय।

তারাসিংহকে ভদ্রবায়ের পুঞা বলিয়া জানি-**उन। नमाक्ष्यत वर् मिन प्रेंडि॰** नजानरक या-পন দৌহিত্রবৎ পালন করিয়াছিল, কিন্তু তাহা-**क्रिंग्टक** बाक्क भूख विनया मान्य क्रिंग्ड का পারিয়া নিতান্ত বিরক্তা হইয়া অংশেষে জামা-তার নামে ইংরাজদিণের নিকট অভিযোগ করে। **छाहार७ है**॰রाटकता सथाइ इहेशा समाकुँ यत्र ভাহার স্বামীর সমস্ত সম্পত্তি দেওয়ান।

১৮৭৭ সালে মহারাজা আপন শ্রুকে শাসন করিবার অভিপ্রায়ে শেরনিংছকে দত্তকপুত্র বৰূপ গৃহ্ণ করিয়া ভাহার মাতামহের সমস্ত বিবয়-বৈ-ভব চাহিলেন; ভাহাতে সদাকুমর সমতা না ছও-য়ায় তিনি তাছার সকল বিষয় বৈভব অপছ্ত করত তাহাকে বন্দি করিয়া রাথেন।

রাজার দিতীয় জা সুজানসিংহ-নানক এক कन निष्यक्षरात्व कन्। हिल्लन। छोहांत गर्ड রাজপুল খড়গদি॰ছ জন্মগুহণ করেন, এবং এ রাজপুঞ্ছ রাজ্যের অধিকারী হয়েন। তাঁছার পুঞ নৌনিহালনি হ পঞ্জাবের সূচত্র বোদ্ধা चित्रा विश्वाक इहेशाहित्तन। त्रवकोटकत ताला-কালে তাঁছার দৈন্যাধ্যক্ষ ও কর্মকরা মন্ত্রির রণ তাহার কন্যা নিঃসন্তান হইল। একপ প্রবাদ মধ্যে খুসিয়ালসি॰হ, সরদার লেহনা সিংহ, পি-আছে, যে ১৮৬৪ সংবৎসরে মহাভাবকুলারের ভা দেহশাসিংহ, সরদার গুলাবসিংহ, ধ্যানসিংহ, গর্ভবতী হওনের কথা প্রচার হয়, এবং যথাকালে হিরিসিংহ, প্রভৃতি কএক জন সর্বপ্রধান ছিলেন; ভাষার একটি কন্যা জামে, কিন্তু রণজাত তৎ- ইছার মধ্যে খুদিয়ালসিংছ সর্বপ্রিয় হইয়াছি-कारन बाक्यानीरक উপস্থিত ছিলেন না, তাঁহার लिন। প্রথমাবস্থায় রাজা রণজীতের পান দোব প্রত্যাগমন হইলে র জমহিষা তাঁহার যমক- প্রভৃতি কিছ্ ২ দোষ ছিল, এবং তাঁহার ঐ পুঞ मसान कविद्यारक विवा जीकात निकरे (ए।य एथिया जिल्लामा लाउक मसर पक्षावक मूरेंकि वानक नरेश उनशिष्ठ करतम, किन्न बाका निश्चमित्रक उन्न प्राप्त मार्ग कतिक, ल वारका श्राकाम करतन माहे। वे यमरकाम वारका शत्य त्राकात पारव ममक काकि पानी एहेरक माम (मद्रमिःक् अवः जाशद्वद्व नाम जातामिःक्। । शाद्व नाः जाशद्व व खजः जाहाता जात्मदक्रे नि-



# (क्शत्क्वी शकी।

रेशांक भनात्रम कतिएक इरेशांक्ति ; करे कर्ष ७-তৎ পर्दित ७) পৃष्टि এक পक्षि- थारा ने भक्षी क्यांत अकिए लाख्या याद्य ना। अधूना ই বিশেষের বর্ণনা প্রকটিত হইয়াছে। ইহার প্রিয় আবাদভান সুমেক-সমুদ্ধে নিকটস্থ क्रिके अपित अनुकाश अश्रत अक शकी नीहां ब्रान्ड भीउन (एग: उथाय खाहां द्रा शाहन-शृहकारन विकेरहरण श्रीमण हिन, णहांद्र नाम वृत्कत मधीन श्रम् एक कतिशा रहन-याजा "কেপর্কেলী"। দেখিতে তাহা প্রায়ঃ পেরুপক্ষির নির্বাহ করে; পরস্ত তথায়ও ইহারা নিক্ষণটকে नाम वृह्द। व्यक्षु इहेटफ, शुक्रामु, शर्या ख हैकात वाग कतिए शादत मा। जूबामू माध्यक्त ज्ञानमा अ ইদর্ঘ্য দুই হস্ত এবং প্রকৃতার পরিমাণ ৫।৬ বের। দুর্গম-দেশেও ভাছাদের প্রভিকৃষা ক্ইয়া অবি-ৰভাৰতঃ এই পক্ষী মনুষ্য দেখিলে অভ্যস্ত ভীত রত ভাষ্যুদের বংশ নাশ ক্ষায়িতেছে। লাশ্লাপ্ত ध्रेश शनायन करत, जनः रेरात राश्म विरमम नत्रवानिका शक्कि मुख्यक-नमूम्-निक्षेष मुयापू, मुख्याः म्ध्यानुद्रक देः बाकिरिशंब (मर्ग (मर्ग लक्षाकित ध्रापूर्व) साहे, कक्कारकरे मध्या हेरात व्यवस्थित कान मर्डहे शेर्मकान-नाति माःस्त्रत केलह क्रिके कतिए व्यवस्थान रहेटच शास्त्र माहे ; जन्भकान-मध्या उपार्ट्डच उपाकान नकान मनूना माहनरे जाईका नाहन

 अधिन। উছ्न नामा तिह प्रमुख बक दाखि । ইতিপূর্বে **ঘণ্টায়** চাব্লি কোশ নাড়ে ়চাবি ब्लाम পথ চলিতে বিলক্ষণ পটু ছিল, बे हिन त्म अक २ श्रीया रक्ताम याय, चात बरम; अमनि করিয়া চলার বিষয়ে বড় বিলম্ব করিতে লাগিল -তাহার তাদৃশ নিকৎ বাহজনক ব্যাপারেতে-তদি-वरम अक जन्म किशा याइवात मन्यास महत्त-দিগের সাতিশয় কট বোধ হইয়াছিল। যৎকালে ভাহার। বন পার হইল তথন ঠিক মধ্যাহ্ল কাল। প্রচণ্ড সূর্য্যকিরণে তাহাদের কণ্ঠ, ওষ্ঠ, তালু, একেবারে শুক হইয়া উঠিয়াছে; আর জল না পাওয়া গেলে ভাছারা কোনমভেই চলিতে পারে না। তাহাদের তেমন দশা হওয়াতেও, কাপ্তেন গ্রে সাহেব তাহাদিগকে আরো আড়াই ক্রোশ চলি-তে অনুমতি করিলেন। কিন্তু তাহাদিগকে তথা-হইতে তুলিবার বিষয় কি? পরে অনেক বার বুঝাইয়া বলিতে কহিতে তাহারা নিৰুপায় হইয়া ঢলিতে লাগিল, কিন্তু পোয়। দুই ভিন পথ যা-ইতে না যাইতে তাহারা এককালে নিতাম্ভ কুাম্ভ হইয়া এক স্থানে ব্সিয়া পড়িল। তথ্য ভাহা-দের আর এক পাও চলিবার নামর্থ্য ছিল মা। তথনও ভাহারা সে সকল বোঝা ছাড়ে নাই। অনন্তর গ্রে সাহেব দলের মধ্যে যাহারা ভাল-क्राल চলিতে পারিত, তাছাদিগকে কছিলেন, य "जामता आमात नटक छन, जामि कन অবেৰণ করিয়া আনিভেছি"। এইৰূপে ভাহারা छांहात मझी हरूल श्रेत कारधन त्यु शारहत उथा-**हरेटा सनामश्रमार्थ अञ्चान कतिरानन, अवः घू**तिशा কিরিয়া সাড়ে তিন ক্রোশ পথ চলিয়া জল अधि इहेरनम्।

ः > अधिम। जे रिन याहाता सन स्नानित्व ता-वित्र क्षेत्राक्ति, काकाता शूनवीत सिवित्रा सा-

বিয়া অবশিষ্ট অবস্থিত পিপাসাত ব্যক্তিদিণের महिक मिलिक इहेन, अवश नमिक्त गिहार कि कि য়া যে জল আনিয়াছিল, তদ্যারা ভাছাদিগকে প্রকৃতিত্ব করিল। অনন্তর ভাহার। সর্বারত্তে তথা-इहेट**७ श्र**क्षांन **क**ित्रि डेम्/ड इहेट्न ७. এक छन উদ্যমে বিলম্ব করিতে লাগিল। কলভঃ তথন जाहात यथायह शीका हहेग्राहिल। हेहा प्रिश्चा. কাণ্ডেন গ্রে সাহেব ভাহার নিকটহইতে এই বলিয়া तिहे (वाह्कांकि नहेत्नन; य " भामि প्रक्रिका করিয়া কহিতেছি, আমি পথে পঁত্ছিবামাত্র ভোমার ও नकन चानी छ पुरामामगुरे यथार्थ मृत्रा প্রদান করিব, তুমি ইহা পরিভাগে করিয়া চল"। এই বলিয়া তিনি তথনই তাহার এ বোচ্কা খুলিয়া দেখিতে লাগিলেন। সে যথোচিত তির-कांत्र वाक्ष्मा कतिएक वाणिन, उथाणि जिमि जाहा করিতে বিরত হইলেন না। একে তাহার মুমূর্ चवचा, ভাহাতে चावांत यथा नईव चामात्र হস্তগত হয়, ইহা দেখিয়া লে যাহার পর নাই রোদন ও বিলাপাদি করিতে লাগিল। কাপ্তেন গুে বাহেব তাহার বে কান্নায় কান না দিয়া ঐ পোটলাটি খুলিয়া দেখিলেন, যে তাহার ভিতর অপ্রথ্ন করা গজ দুই তিন মোটা ভারী কা-चिन, अक जाल त्नलाई कतियात मूठा, चात अक তাল অন্য প্রকার সূতা, আর সে একটা পুরা-তम (कारकि চाहिয়ाছिল, তাহা তিনি ভাষাকে নৌকাতেই দিয়া আসিয়াছিলেন, সেইটা, এবং অন্য কথক প্রকার পুরাতন কাবিসের টুকরা, ও ছেঁড়া খোড়া খানক। নেকড়া। আৰু জা-हात विनानुमिक्टिक गृहीक (महे तिकान वक मणी शाक्षात थानिकणे। बाज तक्तात्क। अह গোটাকত কুৎসিত यৎসামান্য मुस्टाङ सम् क्वन (नरे परनारभने र जिल्ला परिनाहिन,

এমত শহে, কিন্তু ঘাহাদিগকে তাহার অনু-রোধে থাকিয়া ২ চলিতে হইয়াছিল, তাহাদের শুদ্ধ প্ৰাৰ বাইয়। টাৰটোৰি হইল। এথস जाहारमंत्र करार्थ मधीह हना हहेन वरहे, কিন্তু এপর্যান্ত ৩৫ পঁইত্রিশ ক্রোশ পথের অধিক চলা হইয়া উঠে নাই। ওথাৰহইতে পর্থে যা-ইতে ঠিক সোজা এক শত পোনেরো কোশ এখন প্রায়ন্ত চলিতে রহিয়াছে। দলত কঞ্চ करनद व्याहात पुत्र शास किष्ट्रे हिल ना। जन क ठरकत निक्षे छिल दर्छ, किस जिन रमत मार्फ তিন সের আটার অধিক নছে। কাণ্ডেন গ্রের নি-ফট কেবল তিন পোয়া আটা ও এক পোয়া এরা-কট মাত্র রহিয়াছিল। তক্ষণে। কেবর নামা তক্ষে-শায় বাজি যে ভাষার নিকট ছিল, সে আবার দেই আহারের ভাগী। তৎকালে দল**তদ সকলেই** এমনি ক্লীণ হট্য়া পড়িয়াছিল, যে সহসা ফত গমনে যে নিচ্ছি হামে পঁত্ছিতে পারে, এমন কিছু মাত্র সম্ভাবনা ছিল লা। থানিক ২ বিশ্বাম ভ একটু ২ চলিতে অনেকেই আরম্ভ করিল। কা-থেদ গ্রে নাছেব তাছাদের এভাদৃশ দূরবস্থার সময়ে জন কত ভাল ২ পর্যটক ও বলবান্ ्नाक नम्खिन/श्रहादत वहेशा **পर्धित व्यक्तिमृत्य** অগুসর হইটের মনস্থ করিলেন। বাইবার সময়ে खर्या कि काकरम्ब निक्षे पृष्ठ विका-महकात अहे कहिता शिलम, "(जामता क्रांस २ चानिएड থাক, আমরা আগে পিয়া তোমাদের নিমিত্ত খাদ/সামগ্রী সজ্হ করিয়া পর্যের পঁচিশ জোশ এদিকে এক স্থানে পাঠাইয়া দিব। ভোমরা ज्याय याहेवामाळ जाहा लाहेट्ड लाजिट्न, हेहाटड मत्मक नाहे"। अथन भूदर्वत एक क्य र कदन विভक्त इरेग्रा पूरेरन इरेन। श्रु नाएएन बन्नः क्वत वरः जात ठाति सन मिलिया वक मस

অগুনর হইন। অপর হয় কনের এক নল পাচাৎ পজিয়া রহিল। থারে ২ পথা চলিবার পরা-মর্শের পরামর্শী সেই নব কটিই ছিল। তাহা-দের বেই কর্মের কি কল তাহা পরে বক্তব্য, অধুনা কাণ্ডেন গ্রের দলের কিঞ্ছিৎ বিষরণ লিখিতেছি।

১১। এপ্রিল তাহারা ত তথাহইতে প্রস্থান করি-য়া অনেক কণ্টে কতকগুলি গণ্ডশৈলের উপরি ভাগে আরোহণ করিল। সে স্থান কাঁটাবনময়। অনেক कर्छ (नथानहरूरिक উद्धीर्व हहेबा काहांबा अयमि এক দুর্গম গহনবনমধ্যে প্রবিষ্ট হইল, যে বহু-ভর যতু ওকৌশল করিয়া কেবল মনুষ/জাতিই সেথান দিয়া যাইতে সমর্থহয়, অন্য জন্তুর তথার প্রবেশ করা নিতান্ত দুর্ঘট। ঐ বন উর্ত্তার্ণ হইয়া ভাষারা এমনি পরিশাস্ত ও পিপাদার্ক ইইয়াছে, य कनकाल चात्र जल शान ना कतिया थाकिएड পারিতেছে না। পরে তাহারা সাতিশয় ব্যাকু-লভার সহিত ইভন্ততঃ জল অক্ষেণ করিতে ২ এক গুক্ষ বালুকাময় নদী দেখিতে পাইল। ভাছা অন্ধিক ছয়, শত হাত প্রশস্ত, এবং চল্লিশ পঞ্চাশ পাদিক গভার। ব্যাকালে অভিশয় ব্দা হইয়া ভাৰার নিকটস্থ দেশ সকলকে এককালে পুাবিভ করিয়া কেলে, কিন্তু তৎকালে কেবল খেতদি-কতাময় খালমাত্র পতিত ছিল বই নয়। খানিক-ক্ষণ দ্বির দৃষ্টিতে দেখিতে গেলে চকুতে লাভি-मग्न अमूथ वाध इश्व, किंदु तारे वालुकाजूनि बक्के ठाँकिया गर्ड किल्लिहे छाहात ठातिहिक् रिया काहा २ अन मिः। इ स्टेट थाटक : का-रखन रनु अथम के करन जानमात्र निकटि स আধ সের শেষ শকু ছিল, তাহা ডিফাইয়া गर्रानन, अवः अक गामितिया अवानक्रमात (क्रान उसम् रकावम क्रियामा ने कीका बाकू कान

महेत्रा ज्यान करत बरः मुथामा शक्त शक्ती शा-हेरम विमष्टे कतिएक खूर्णि करत मा।

পূর্বেই উক্ত হইয়াছে কেপর্কেনী অভাবতঃ
অতিবিভয়াতুর, মনুষে/র নিকট হইতে অতি দৃরে
পলায়ন করে, পরস্ত বনস্তে এই রীতির অন্যথা হয়; তৎকালে ঋতুর প্রভাবে জ্ঞানজোলানে,
প্রকুল হদয়ে এ পক্ষিরা ক্যাতপক্ষে বিভূত
পুক্তে পক্ষিনীর আহ্যান-সূচক ধুনি করিতে ২
এমনি মত্ত হয় যে চল্লু কর্নের চৈতন্য লুপ্ত
হইয়া যায়: তথান মনুষে/র সমাগমে আর কিছু
মাত্র ভয় থাকে না। এই অবকালে ইহাদিগের
ভেষিরা অনায়ালে প্রত্যহ বহুসঙ্থ্যক পল্লা
বল্প করিয়া থাকে, এবং তাহাতেই ক্রমণঃ ইহাদের
ক্রমক কুলে হইয়াছে।

# কাপেন্ গ্রে সাহেবের ভূমণ-ব্রান্ত

পর্যবেক্ষণ-পূর্বক মান ব্যবস্থাপন করিবেন।
তিত্রতা অভুত পদাথের বিবরণ অতিলার কলজনক। একাল-পর্যস্ত
কিন্তা তাহার মধ্যস্থলের সমগু বিবরণ
কেহই সূচাকরণে পরিজ্ঞাত হয় নাই। তত্রতা
সিজ্নী-নগরের পশ্চান্তর্গী নীলাগিরিমালা পর্যতহইতে কলকটি পশ্চিমবাহিনী নদা নিগত
নাগরের সহিত বন্ধত হইয়া থাকে, এ সকল
নদা ভেমত নহে; এ মহাহাপের মধ্যবর্ত্তী
ক্ষি প্রকাশ বুদই তত্তাবতের সহমাস্পদ। এ
ক্ষু সম্মুদ্ধিম্থ নহে, তথাপি তাহার গভীরতা
ক্ষু সম্মুদ্ধিম্থ নহে, তথাপি তাহার গভীরতা
ক্ষু ব্যানারালেক্ষার কোন কংশে মূদ বলা
হইবাতে তত্তা ব্যুক্ত ক্ষুদ্ধির হান এক্ষানে প্রাক্তি

यात्र मा। अकान পर्याञ्च अहे ज्ञान विकि यात्रा ह কিছ্ জানিতে, এবং সমুদুসম্বায় যে কোন অন্তুত পদার্থের প্রচার করিতে অবশিপ্ত আছে. **जाहा नि**जान्त पूकत विलाक **हरे**(दक। देशत मर्था (य नमस्र नक्क छेन्दीर्न क्ट्रेंट क्य़, जाहा **चळाळ जग्नानक। वज्र विक्रममानी वा**क्तिताड তাহা যৎসামান্য বোধ করিতে পারেন না; बवः नाहिनम् विथान नाहनी ও উদ্যোগी इरेल ७ कान वास्त्रित जाहा यथमामाना ताथ হয় না। আধুনিক ভূতভূবেতা পণ্ডিতদিপের মধেট যিনি অজেলিয়ার তত্বানুস্থান-বিষয়ে नक्रमामा इरेशाह्न, छीरांत्र नम्म अर्छ (गु.। পূর্বে তিনি একজন সেমানায়ক ছিলেনঃ পরে দক্ষিণ অজেলিয়ার শাসন-কর্তৃত্ব পদে অভি-विक रन। ये महामहिम वाक्ति ১৮৪० थीडी-বের ১৭ ই কেব্রুয়ারিতে পশ্চিম অক্সেলিয়ার শোণনদী উত্তীর্ণ হন। তাঁহার তথায় গমনের অভিপ্ৰায় এই ছিল যে তিনি ২৬ অবধি ২০ অক্ষাংশের মধ্যে উক্ত দ্বাপের প্রশ্নেক্ত্য অংনের **शर्यादकान-शूर्वक मान वावञ्चाशन कदिएन।** कार्ष्टिम् (भू नारहद किन्नम नहत्रभगरक नम-ভিব্যাহারে লইয়া "আমেরিকান হোএলার" नामक खाहारक चारताहनपूर्वक " नाकें मामक উপদাগরে উপস্থিত হন। তথায় তাঁছারা গাঁচ मारमत डेशयुक थाना मुदा जिन भाना कृषु मोकास त्वाबारे कतिया शमन करतन; जाराज मध्य बक्थाना लोका ख्यात्र वानिकालि क्रेग्रा यात्र । এই উপলক্ষে তাঁহার। बाहात शत्र बाह कून शाहेना २० मार्च थारापुरा नमूर कि वात मामत्य वर्मत छेलबीटल अख्यानम् कराने। কিন্ত তৎকালীন প্রচণ্ড বাটিকার বনুদের জল উৰেনা শ্ৰইরাছিল; ভাহাতে তথায় যে কিছু খাদ্য দুব্য हिन छाहा अकनारल वानुकाम (आर्थिक हरेग्रा याश। अइक्ल प्यापेना पर्मन करिया जाँशास्त्र ভারে ভয়ের ইয়তা রহিল না। এ দিকে দলের नकत्तरे बकारत्र कृष्टि रहेशा शिष्ट्रशास्त्र, अनित्क নৌকাতে জল উচিতেছৈ, তথাপি গ্রে সাহেবের " স্বান্ " নদীতে যাওয়ার মত নিবৃত্ত হুইল না । সু-ভরাঃ সকলকে অগুসর इইতে হইল। शद्र এই-ৰূপে যাইতে ২ যথন তাঁছারা গেছ**্য-অথাতে** উপন্থিত হ্ইলেন, তথ্ন তাঁহাদের অবশিষ্ঠ আর मृहेशानि सोवाड वानिहाल स्हेत। त श्रानिष्ठि প্থিবীর ২৮৮০ সাজে আটাইশ অকাংশে হই-(तरा: क्रिक्टिन् म्हार्टिन न्हार्डिन क्रिक्टन क्र য়া ঐ ভানহইতে পর্থ-নগরে যাত্রা করেন। আ-यत। अहे याञा-नगरशत पूर्विमात विवस अकारन বণুনা করিয়া পাঠকবর্গের গোচর করিতে মন্ত করিছাছি।

গ্রে লাহেবের নৌকা-সকল ১লা এপ্রিলে বা- নিয়ম আদ্যোপান্ত ক্রমাগতই করিয়াছিলেন। লিচালি হয়। তথ্য তি**নি মনে ২ বিবেচনা করি**-। এত্রিহুটটে পর্থ নগর বড় কম পথ নতে, অনু-থিক ডেড় শান্ত **জ্ঞোশ ঠীক** সোৱা হ**ইবেক**; স্থা-हात जरम्मह नाहे; किल शिथरर्थ। यम शर्ब्छ मर नहीं প্রভৃতি অনেক ২ ব্যাঘাত থাফাতে আনেক ঘুরিয়া কিরিয়া না গেলে তথায় উত্তীর্ণ ক্রন্তা অক্ত-छ पूफर "। यांचा रुष्डेक, अहे बाल क्टिवकबालूईक

विशीक्ष क्रेन मरभू जारकरवन महिन्द्र आरखनिया स्न-শায় কেবর শাসক একা তাজিকো সইয়া সর্ভদ্মা मन जन बाजी हिन। याजाकारन लाहाता नकरन अक-मण इरेश (वं नकत चानः) नामश्री नम्छ-ব্যাহারে আনিয়াছিল, তাহা ভাগ করিয়া লই-ল৷ প্রভ্যেকের ভাগে দশ ২ বের গুমো আটা ও আধি হ' সের লবণ মাত্র হইল। দুঃলময় না করিতে পাল্লে এমন কর্মাই নাই। তাদৃশ কুৎসিত দুৰ্য থাইতেও তাহারা তথন লালায়িত।

🔻 ২ এপ্রিল। এ দিন যাত্রা করিবার উপক্রম **रुरेएटर्ड अग**ज-कारन मिक्कारनत প्रक्रि अहे নিয়ম স্থির হইল, যে ক্রমাগত অবিশাস্ত ১ এক ষণ্টা চলিলে পর পাঁচ ২ মিনিট করিয়া বিশামের नमञ्च (मध्या याङ्स्वक। खे व्यवकारण कार्र्धम् ा नार्ट्य पर्या**डेनका**नीन य थारन य विषश्ची व्यान्ध्यं म्बार्ण मर्नान कहित्रा यान, छोड्। मात-ধানতার সহিত টুকিয়া রাখিতেন। তিনি 🖦 🤄

ं ইতিপূর্বে नक्षीप्तत्र व्यन्तिक स्व तानिजानि टि लागितन, रय "अथानक्टेरिक खनभथ पिया हिन्या मोकाक्टेरिक मानाश्चकात पुरामामश्ची न-পদ্রুজে পর্য-নপরে না যাইতে পারিলে আর ইয়া বোঝা বাঁথিয়া রাখিয়াছিল। ভাছাদের আমাদের কান প্রকারে নিভারের পথ নাই, মনের অভিপ্রায় এই যে সে সকল দুষ্য পর্থ-কিন্তু সমভিব্যাহারীর। ইতিপূর্বে যে সকল কেুশ । **নগরে বিক্রয় করিয়। কিঞ্চিৎ অর্থ সন্তুষ্ করি**-সহ্য করিয়াছে, ভাহাতে ভাহারা যে এত পথ । বেকা এখন ভাহারা সে নকল দুব্যসামপু আ-চলিতে সমর্থ হয়, এমত বোধ হইতেছে না। পন ২ মন্তকে করিয়া চুলিতে লাগিল। কিন্তু (म প্रकात (वांचा) सहेशा **अमन** शथ अक मिन हसाल प्रमाधा। शाहा इडेक, काहाजा कमूह कटडे প্রথম দিনত বন জলন ভালিয়া নেই লব কোনা **गरेत्र। जेमन कितिम।** १८ १ ८७६ ८ ४१५ ५७६

ण्डा अधिव । हार्च विकास स्वाहता । हाराज्यकारव किह १ क्रमद्यान क्रिया प्रमाद क्रम्यान नय-তথাহইতে পর্ত্ত-লগরের অতিমুখ্যে চলিয়া যাওয়াই 😹 বিলের সভাজানিতে লায়ছ করিল। অভিনে পথিমধ্যে তাহাদের এমন এক নিবিড় বন প্রাপ্তি
হয়. যে তাহাতে প্রবেশ করা অভীব দুকর।
তাহা উত্তীর্ণ হইতে আড়াই ষণ্টা সময় লাগে।
সেই স্থানও বন পার হইতে২ এ লোকেরা
এক কালে একান্ত ক্লান্ত হইয়া পড়িল; তথাপি
তাহারা সেই ভারী বোঝা ছাড়িতে চাহিল না।

৪টা এপ্রিল তাহাদের ভূমণ-ক্রেশের আর मीया পরিশেষ ছিল না। প্রাতঃকালাবধি मस्।-পর্য্যস্ত সে দিন ছয় ক্রোশ বই আর চলা হয় नाहै। तम पिम প्रियास्य क्रम मिनियाष्ट्रिन वर्छ, কিন্তু কেশের বিষয় বর্ণনাতীত। সেই দিন সঙ্গী লোকেরা কাঞ্ডেন গ্রে সাহেবের নিকট সাতি-শয়-বাগুভাসহকারে কহিতে লাগিল, " আমরা আর এক পাও চলিতে পারি না"। ইহাতে তিনি যাহার পর নাই বিরক্ত হইলেন; তথাপি যা-हाटि डाहामिशक वहेशा याहेट शासन, अमन कोशन (मिश्टिक अपि कतितन ना। अठ य क्ना, उथानि (महे लारकता जाम्म निष्णुरता-জন ভার বোঝার মমতা ত্যাগ করিতে সমর্থ रुहेन ना। वे जकन मुरवाटाउ या जा**हारएत गर**ना-ভীষ্ট দিদ্ধি হইবে, দিনা রাত্রি ভাহাদের সেই বি-যয়েরই কথাবার্ত্ত। শুনিতে পাওয়া যাইত। যাহা হউক, ঐ সকল লোকেরা এখন তথায় দিনৈক मूरे निन विश्वाम क्रिया यारेवात क्रना कारधन ণ্রের নিকট প্রার্থনা করিলে পর তিনি মনে ২ विरवण्या कतिरानन, स्य यपि हेशपिशतक किश्विष् শক্তি থাকিতে ২ এখান থেকে না লইয়া যাওয়া यात्र, जाहा रुहेटल हेरामिशदक अटकवादबर हा-ब्राहेटक **इहेटक**; बदः ब शर्याष्ट्रस्त्र शद्र य नमक रकुम मध्यमेन इट्टिक, याहाता पूरे बक দিন বিশাস করিয়া অপে ২ পথ চলিতে **চার, ভাছার অধিকাংশই, ভাহাদিগকে ভোগ আকিতে পারিল না।** 

कतिरं व्हेरवक। याहा व्हेक, छेख्त कारनत दून यमेनात मका व्हेरक छाहारमत व्यापाठकः बाह्य ७ विमामनारख्त मुच्चमरस्रागवे श्रवन-छत्न त्वाध व्हेन। हेहारक कारखन श्रु नारव्य बजापून উৎक्रिकाणि-नस्रावनात्र व्यक्षिकाःरमत मच्चित नस्त्रा वर्राव व्यात व्यम्य द्वान प्रेपाञ्च रप्रथिर् पाइरिनन ना।

६३ विश्रव। वथन याजीता (मटणत वक चक्क ग দিয়া চলিতে লাগিল, অট্রেলিয়ার অধিকাংশ-হইতে তাহা এত বিভিন্ন যে দেখিলে তাহা একটা न्जन घील विवास त्याध रहा। वे अकटनंत जूनि नकत প्रकाराखन, नम्द्रमुद्र छेलकृत्रवर्खी य नमस পর্বত আছে, ভাছা সাতিশয় উচ্চ ; ভূমির উর্বরাস্থ শক্তি কিছুমাত নাই, এবং প্রকা সকল প্রায় অস্থি-চর্মাবশেষ মাত্র। তত্ত্রত্য কতিপয় প্রজার সহিত ঐ যাত্রীদিগের সহিত প্রথম-সাক্ষাৎকার সময়ে তা-হাদের রীতি নীতি অবস্থা দকল অতি অসভ্য জা-जोन्नदम्ब मञ বোধ इहेन। हेहारङ कारश्चन (भू সাহেব তাহাদের মাথার উপব্লি দিয়া মিছামিছি বন্দুক ছুড়িয়া ভাহাদিগকে ভয় দেখাইবার জন্য স্থাপদার বন্দূকের কল টিপিলেন। তাহাতে দৈবাৎ त्म वाबि । जाहा विकल इहेश (शत्। जाहारक তাহারা তুড়ি এবং করতালি দিয়া পরিহাস করিতে লাগিল। তথন কাথেন গ্রে আর একবার তাহাদের নাথার উপতি দিয়া বন্দুক ছুড়িলেন, তথাপি তাহার। বিক্ষিত হইল मा।

তথন গ্রে সাহেব নিকটন্থ এক বোপ লক্ষ্য করিয়া ভাহার প্রতি পিন্তল ছুড়িলেন। ভাহাতে ভাহার গুক্ষ পত্রাদি যাহা ছিল, নকল ছিল ভিন্ন হইয়া চতুর্দিকে পড়িতে লাগিল। ইহা দেখিয়া ঐ প্রজারা পলায়ন না করিয়া কোনমভেই। পাকিতে পারিল না।

कारी हिल मा। जाहा क कारात मुधाम/ कार मरह, उद्यावर श्राम केरियाहिक। कारखन ११ मारहर সেই লোকদের প্রায় তিন ঘণ্ট। কাল চলাই। हाরাইরাছে, স্থির করিয়া ইক্সক্তঞ<sup>্</sup>বছেৰণ করিতে क्हेल ना। এত य कहे, उथाणि जाराद्रा (नरे लागिया। नकत्त याराद्र शद मारे, नथना हिल, লকল আনাত দুবা সামগুলি বোঝা ছাড়িয়া যা- ভথাপি সেই সজীল জনে। বাজুল হইয়া অৱেষণ हें जिल्ला मा। जाराता अहें बारण व्याप्त र किता कि किता मा। व्याप्त कान के एक मह চলিতে ও অধিক কণ বিশাম করিতে যে প্রকার পাওয়া গেল না। এদিকে রাজিও অধিক চইল প্রতিক্তা করিয়াছিল, তজ্জনিত কেবল উভরোভর দেখিয়া তাহারা পুনর্বার নকলে একত হইল। ত্যাগ করিতে লাগিলেন।

শুনার উপরি উঠিতে লাগিল। নর্বাপ্তে কাপ্তেন পাওয়া গেল। অনন্তর কাণ্ডেন গু পুনঃ সর্বাস্তম (भू मार्ट्ट जाहात म्राह्म चारताइन कतिराम। ज्याइहेर्ड श्रहान कतिराज हेराज इहेरान। नकी লোকের। जिन्हे निवर्षक বোঝা माथाच कविमा छेमाछ क्रेटनम वटने, किन्तु बयात चारिक क्ष्य मञ्चलकि विवादक वाणित्वन, "य वा कि । नारक्तवत भीच २ अकान क्याकेवात नियस हेशाह, व्यामि जाशास्य मिलास हित्रकाम कति?। ७० डे०क्कोकृष्ठिक्छार्य अक्तिहे प्रहिता, स्म তাহ। অট্টেলিয়ার সর্বপ্রধান ভান জানিতে পাঞ্জি- হাতে কাণ্ডেন গ্রেকে একান্ড নিক্লায় ইইয়া नाम वाथित्वन । भूर्वरिदक क्ष्मा जान द्वाराम चाउदा क्रिके क्रिके क्रिके क्रिके

😗 ७ विश्वता । तम पिन परमङ्ग व्यक्षिकाश्याद मिन । शर्या**न्छ**ंकिन्द्राद्विष एवं शर्वकरम्भी विन्नाः छारारक क्रके नार्फ किन त्मत वाजि त्मरत्त्र व्यक्षिक व्याज 'विक्टोजिजार वृती । नारम व्यक्षिक क्रितिसा। লেখালে রাত্রিকাক যাথুন করিবার সময়ে তা-शांदरत (वाथ स्वेत, राम काशांत्रा काम श्रियर् পুনর্বার প্রভানের উদ্যম দেখিতে লাগিলেন; কৌতুক গৃহের ভিতত্তে ব্রহিয়াছে। ভাহার চতু-किन्न उरकातीन याजात रफ़ काल मुरमाश किंग्वर्की नोमा मकल शईकर्भुनी ও मानवरूटि হুইয়া উচিল না। কারণ এক ব্যক্তি ঐ দলকে পরিবেষ্টিত। তত্ত্তা উপত্যকাহ্ইতে প্রকাপ্ত অনুরোধ করিয়া কহিল, "ভোমরা আমার জন্য ভারতীয় সাগর ভাহাদের নয়নগোচর হইতে লা-আর অধিক পাঁচ ২ মিনিট অপেকা করিয়া গিল। সময়ে ইাইন্স্নানক সেই দলের এক জন চল, তোমাদের সঙ্গে মহিলে আমি চলিয়া লোক কোন কারণে পেছিয়া **আনিতেছিল, ইহা** উঠতে পারি না । এই কপে ছণিত হইতে ২ তাহাদের আত্যার মাই। ইহাছে তাহারা সে

য়ন কলই দেখিয়া কাপ্তেন গ্ৰে সাহেব ভদিনা- ৮ এপ্ৰিল। ঐ দিশেও সে হারান ব্যক্তির ব্যি নিদিষ্ট তানে পঁত্ছিবার আশা জ্মশঃ অনুসন্ধান হইতে লাগিল। এতক্ষণ উহাকে ' ৰা পাওয়াতে সকলের মন সাতিশয় ব্যাকৃল १ अधिला काहाता मकरन अक डेफ श्रांष्ठ- इन्हेंरडिहन। याना क्डेक, व्यवस्थात डानाक তাহার পশ্চাৎ ২ উঠিতে লাগিল। তথ্য গ্রেমা- চলা হইল না। দলের ক্তকগুলি লোক গ্রে क्तामानिशतक अ द्याया वरेशा याहेरच वाध्या- विकास खनस्क है। स्वेशिक्षम किल्यानी অবশেষে তাঁহারা যে স্থানে উপাস্থত হইলেন, জিল আরু এক পাও চলিতে চাহিল লা তা-आ श्रु नाद्य विक्रितिया बाक्य विवया जायात व्यवस्थात व्यवस्थात जार्यस्थ व्यवस्थात विवय

একট। কংশ্বিদের থৈলীর মধ্যে রাখিয়াছিলেন, কেবল লবণ মহে। খার হইতে যত লোলা ধরিয়া রাত্রিকালে একটা ইন্দুর তাহার মধ্যে প্রবেশ করিয়া আবার ভাহার অদ্ধেক শেষ করিয়া কে-লিল। এখন ভাহার সেই ছাতুর তালের অবশিষ্ট অর্জেক এবং ভিন চামচে এরাকট-মাত্র কেবল সম্বল রহিল। অবশিষ্ট পরে প্রকাশ্য।

# শোরা-পুস্তুত-করণের পুথা।

धान: इंड्राइ এक २ शमार्थंत व्यवमारम लक লক্ষ টাকা এতদেশে উপাজ্জিত হইয়া থাকে। অতএব ঐ সকল দুব্য কোন কোন স্থানে কি প্রকারে প্রস্তুত হয়? তদুৎপাদনের সদুপায় কি? তাহার ব্যবহার কি? কোন্কোন্দেশে কোন সময়ে তাহা প্রেরণ করিলে বিশেষ লাভ হুইতে পারে? ইত্যাদি বিষয়ের বিবরণ ভারত-হ্ইয়া থাকে তদিবয়ে যৎকিঞ্ছিৎ লিখিতব্য। শোরার আকর বলিয়া প্রসিদ্ধ হ্ইয়াছে। সকলেই দেখিয়াছেন, কিন্তু তাহা কিপ্সকারে "লুনিয়া" নামে প্রসিদ্ধা অগুহায়ণ মাসে তাহারা ষটে তাহার অনুসন্ধান অতি অংশ লোকে আপন ব্যবসায়ে প্রবৃত্ত হইয়া প্রাচী<del>ন মাটির</del> করিয়া থাকিবেন। অনেকে বিশ্বাস করেন যে চিপি, ভগ্ন-প্রাচীর, পড়া ভুঁই প্রভৃতি যে টো **ভাছার আ**দিকারণ লবণ—লবণ- বিশিষ্ট জল স্থানে লোন। মৃত্তিকা পাওয়া বাইতে পারে, পৃথিবী হইতে ভিত্তিতে উঠিয়া প্রাচারের ইউ- সেই ২ স্থান চাঁচিয়া শোরার মৃত্তিকা সন্তুহ করে। कापि कोर्व कतिया करत, बदर वे घटनात नाम वे मृखिका-ममूह-कत्त-किया नदर्वत मृखिका-" লোলাখর।"। किन्न लाना धतियात्र कात्रव मनुष्-कि्यात्र मन्म, अवेश व्यासाटक नवावत्र हरकारत्र ह

थारक नवन इंहरज जज लाना कमाणि धरत ना । अक्निक्न ७ नाहे द्वाकन् नामक पूरे विटमय বায়ু মিশ্রিত হইয়া এক সামান/ বায়ু উৎপন্ন হয়; ঐ বায়ুদ্বয় বিশেষ পরিমাণে মিশ্রিত হইলে এক প্রকার অমু দ্যুবক জন্মে; খারের সহিত ঐ দাবক মিশিত হইয়া শোরা উৎপন্ন করে; তাহা চূর্ণের সহিত একত্র হইলে নাইট্রেট্ অফ্ লাইম্ नामक नवन-विरागय करमा; अवः नवराव महिष्ठ **बरे नकल थात्रक हुर्नक श्रमार्थ एमथिएक नवर्नत** जूना, अवः जाहाहहै एउ श्री हो रत लाना धतिश्रा थाकः। नमज्ञित मृक्तिकाय थात व। हूर्व था-किल उथायु लाना धरत, मूजताः य मकन छा-নের মৃত্তিকায় লোনা ধরিয়া থাকে তদ্যারা অনা-রাদে শোরা প্রস্তুত হইতে পারে। তিরত্-প্র-দেশে লোকে মৃত্তিকার সহিত মেষ ও ছাগের মল বর্ষীয় ভদুলোক-মাত্রেরই জ্ঞাত থাকা কর্ত্তর। ও গো-ময় মিশ্রিত করিয়া অনেক শোরা প্রস্তুত এবিধায় বিবিধার্থের পূর্ব ২ খণ্ডে এতদেশীয় করিয়া থাকে। ত্রিছট-প্রদেশের শৃত্তিকায় এই কএক প্রধান ২ দুব্যের সঙ্কেপ বিবরণ প্রকটিত। প্রকারে শোরা প্রভৃতি পদার্থ প্রচুর পরিমাণে করা গিয়াছে, অধুনা শোরা কিপ্রকারে প্রস্তুত জিমিয়া থাকে, এবং তৎপ্রযুক্ত ঐ প্রদেশ

পাঠকবর্গ প্রাচীন অক্টালিকায় লোনা ধরিতে 🐪 শেষোক্ত স্থানে শোরার মৃত্তিকা-সন্তুহ-কারিরা

জুলা ক্ষেত্র করিয়া রাথে; ভাছাতেই প্রয়ো-। ফলীয় পরিমাণে শোরার মৃত্তিকা জক্মে । এই मृज्यिका मञ्जूशेष इहेशा माहात कुठिए चानीष इड्रेटन প्रथम ३: छाड़ा (थे) व कतिएव इस्। उप-থে কু'ঠতে ৪।৫ হস্ত পার্মির এক ২ টা মৃৎকৃত্ত থাকে। ভাষার তলায় বাথারি ও শুক্ষ তৃণ দিয়া এক প্রকার ছাঁকনী প্রস্তুত করিতে হয়। এ ছাঁ-কনার উপর এক প্রস্থ নীলবৃচ্চের ভক্ষা ও তদু-পরি ২০ মেনি লোন। মৃত্তিকা স্থাপন-পূর্বক ঐ মৃত্তিক। পা দিয়া দাবন করিতে হয়। উপ-যুক্ত-মতে মৃত্তিকা দাবিত হইলে তদুপরি এমত পরিনাদে জনশঃ জল দেওয়া আবশ্যক যা-করত তাশার নিমে পড়িয়া যায়। বৃহৎ ২ পাত্রে নিকপিত না করিতে পারিলে শোরার বাণিজ্ঞে নিমল হয়, কিন্তু তাহার দহিত লৌহ ও বনজ **অনেকে শোর। ক্রম করিবার পূর্বে অর্থ-ব**্যয় পদার্থ অনেক মিশ্রিত থাকে। তাহা পৃথক্ করত ক্রেতব্য শোরার কিয়দ শ রসায়নবিজ্ঞ-কাধিবাৰ নিমিত ও জল পাক করা আৰশ্যক। जनत्यं न्मिद्वादा शरहदानानीव पीर्च ठूली নিখিত করত তদ্পরি শোরার জলপুণ এক नाति है। जि दाथिश हुलीत अक भार्य चामू-পরের ভাল দিকে থাকে। তাহাতে সকল भारतः जन जमनः एक क्रेश यात्र। पूरे वन्छ। कानगरश. भारतित ।। अ भारत खन एक इरेल অবশিষ্ঠাংশ অগভীর সৃৎপাত্তে শীতল করা कालवा। के भी स्था-कालव-ममर्ग कालश्हेरक ममछ त्यातः माना वाश्विता भारतत निरम् समिता

थाटकः अहे 'भारात माम " (श्रामा भारा)"। रेशां जातक नवन मुखिकामि मना वर्जमान थारक। जाहा श्यक् कतिराज हरेरा धारा শোরাকে পুনরায় জলে গুলিয়া পাক করত भाम काणिया माना वालिए इस: जाहा इहेरलई "কলমী" শোরা প্রস্তুত হয়।

শোরার মৃত্তিকা ধৌত করিলে পর ছাঁকনীর উপর যে পদার্থ অবশিষ্ট থাকে ও শোরা দানা বান্ধিলে পর যে জল অবশিষ্ট থাকে ভাছা শোরা-প্রস্তুত করিতে বিশেষ প্রয়োজনীয়; শোরার ফেত্রে ভাহ। নিকেপ করিলে পরবৎসর ঐ কেত্রে প্রচুরপরিমাণে শোরা উৎপন্ন হয়।

हाटक के छन मृद्धिकात छेलत ७ चक्नुनी भूक विन्मीरभाता शतिस्थ भगार्थ नर्द्ध, लाहारक इड्डा थाका २६ वन्छ। कालमस्या कुख्त कल बालका कल, लवन, भावत् भावत् भावत् अपार्थ ममञ्चलवन-अमार्थिक मुक करिया शिकनी एक मिल्लिक थारक। बनिरक्त के अमार्थित अदिमान ই লল কিন্তু কাল স্থির থাকিলে ভাছা অনেক লাভ করিতে পারে না; অভএব ভাছারা ব্যক্তিছারা পর্যক্ষিত করিয়া লয়। ঔ স্কল ব্যক্তির উপকারার্থে আমরা এপ্রলে শোরা-পরী-ক্ষার নিয়ম লিখিতেছি, বোধ করি, ভাছাতে व्यत्नत्कत डेशकात हरूरड शाहित्।

> পরীক্ষণীয় শোরার কিয়ুদংশ কোন পরিষ্ঠ কাচ পাত্তে চূর্ণ করঙ এক শত গুেন্ পরিমিত वे हुन नहेंया बक छेउड काह शास्त्र \* चक भणीकान त्राधिएक इश्वः, काहा इहेरन जे हूर्व य কিছু জলীয় ভাগ থাকে, ভালা নিগত চ্ইয়া যায়, क्वित उक्त (मात्र) व्यवनिष्ठ थार्ट । मे एक श्रमाथ ভূলে পরিমিত করিজে যে অংশ ক্ষিয়া যায়,

क लिखबारवर ३६ मारबर ३२ मृश्व बदन सम्बद्ध क्यार समा প্রকটিত কর্মজন প্রাক্তা পাঠ গারকো পাঠগারকা এইসাকের বিশেষ্ট

<sup>্</sup>শ উত্তথ্য বালির কোলার উপর এল ক্রি। টানের সামকি हाभिद्रम क्यों क्रिक्श हरिष्ठ शाद्र 🔻 🦠 🤭 🖖 🔻

তাহাইজ লের পরিমাণ। এক শত গুেন্ শো- গুেন্ বৃদ্ধি হইয়া থাকে, তবে তাহাতে ৪ গ্রেন্ রার ৯৫ গ্রেন্ অবশিষ্ট থাকিলে পরীক্ষণীয় শোরায় माउकत्रो क भाग कता जाएक, हैका निर्मिष्ठ क्हेर्र ।

অতঃপর শুক্ শোরাকে চোলাইকর৷ পরিশুদ্ধ : काल श्रुविशा शिलारमत कॅमिल अजन कता दुष्टि॰ काशक निशा जाहा इं।किट्ड इक्ट्रेंट । हाँका सामी, .... २ श्नि, मिय हहेता हैं। किनी कागरखब डेशद्र १—> বার শুদ্ধ জল দিবেক; পরে উত্তপ্ত কাচ- শভকরা মলা, ..... ১১ গ্রেম, করিতে হইবো ভাহাতে কাগজের যত পরি- পরীক্ষণীয় শোরায় যদ্পি গাবর্ সাটে থা-পর ১২ পেল হয়, ডাহা হইলে শোরায় শতকর। বর সালেটর পরিমাণ অনুভূত হইবে। २ गर मृद्धिकामि थाएक।

ইহার পর শোরার ছাঁকা জল ও ছাঁকনী-কাগ-क्तित छेशत य एक कन जाना इरेग्नाहिन, उरमम्-দায় একতা করিতে হয়, ও কিঞ্চিং কাষ্ট্রকি শুদ্দ জলে ভালমা শোরার জলের ওপর তাহার এক বিন্দু নিক্ষেপ করিবে; ভাছাতে যদ্যপি শোরার জল বিবৰ্ণ না হয়, ভবে আর ভাহা নিকেপ করিবার আবল্যক রাথে না; কিন্তু তৎস্পার্শে লোরার জল मूर्यात नगात्र भारत इहेला य शर्याञ्च माना इत, छम्यसि काष्ट्रेकित छल अक २ विन्मु कतिया छम्पति দিতে হইবে। তৎপরে ওঞ্জন করা বুটিং কাগজে শোরার জল ছাঁকিয়া পূর্ববং ৭-৮ বার ছাঁকনীর উ-शत कालाई कहा कल गालिया, अवरमाय हाँकनोत्र কাগজ শুক্ত করত ওজন করিবে। ইহাতে কাগজের পরিমাণে যত বৃদ্ধি হইবে, তাহার ১০ অংশের ৪ অংশ পরিমিত লবে পরীক্ষণীয়-শোরায় বর্ত্তমান আছে,

नवन निक्रिण इश्च। यह अहीकात नमष्टि नित्नु विथित हरेन; उपाया,

কলীন শোরা, , . . . . . . . . ১ ০০ গূেন, क्षव, .... . १ शून, नवन, ..... 8 (शून्,

পাত্রে ঐ কাগজ শুক্ষ করিয়া পুনরায় ওজন খাটি শোরা, ...... ৮-৯ গেন্-

মাণ বৃদ্ধি হইবে, শোরায় তত মৃত্তিকা বালু- কিবার সন্দেহ হয়, তবে কাষ্ট্রকির পরিবর্ত্তে काफि शमार्थ चारक, हेका दित इस। वृष्टिः, नाक्ट्युंट् चक् दितास्त्रेण नामक मृत्र करन छ-কাগজ ফীদলের উপর রাখিবার পূর্বে যদ্য**পি লিয়া তাহা শোরার জলে মিশ্রিত ক**রত পূর্বব ১০ গুলু থাকে, এবং শোরা ছাকিয়া শুক্ষ করিলে। ছাঁকিয়া ছাঁকনীর শুক্ষ কাগজ ওজন করিলে গুল-

## আফরিকা-দেশের টাকা।

খতন্ত্ৰ ব্যবসায়ি পলীগুমন্থ লোকেরা বে-ক্লোট দেখিলেই অত্যস্ত ব্ৰুদ্ধ হইয়া কহিয়া থাকেন, "টাকার পরিবত্তে কনোট দেখিলেই অত্যন্ত জুদ্দ হইয়া কহিয়া থাকেন, "টাকার পরিবর্তে নোট কেবল ঠকাইবার কন্দি"। কলভঃ তুলধাতু ভিন্ন তাঁহারা সকল পদার্থই व्यश्रीक्र करतनः (वाध कथ्, डीक्टिम्स श्राटक व्यायक-রিকা-দেশের টাকাই শ্রেয়ঃ জ্ঞান হইবেক, জ্ঞান হাতে খুল ধাতুর কোন অভাব নাই। তদে-मीय "गानिनी" नाम क अक्षि हाका श्रस्तक করিতে হইলে একটা পিতলের কলসা গলাইতে হয়; কারণ দুইসের পরিমিত পিডল-থিয়ার নাম মানিলী: এতাদুশ বিশ গাঁচশটি টাকা न एक करेया देख्यकः बारंट इन्हेल्ला विज्ञाहे; रेरा जाना कर्त्तवा। कागरक्षद्व अदिमान यमार्थि ३० । जन्म रेर्से मूना 'नक पान्सेदे प्रस्क महरू।

रेशांत निकीत नाम " वाशालाएँ" जम्दर्थ अक वान्ना-बीटन रेश ७०। ७६ इन्छ मोर्च इश्, किन्न काँछा, जामाक, वाक्टरत काँछा, वाजन, वन्तूक, এবং পিতলের কেতলীও প্রস্তাবিত দেশে চলিত এই যে ইছার কতকগুলিতে জ্ঞীপুত্প, ও অপর টাকরে মধ্যে গণ্য হইয়া থাকে। তথায় একটা কতকগুলিতে পুংপুষ্প জন্মিয়া থাকে; লপর मूबभीव भ्ला पूर्णे मथ्मा-धविवाद काँगे।, जबः अकटे। वानरतत मूला अकटे। वीत-अरमात वा- किन्न वाम्म वृत्क श्रवूत कल उरमा इस मा। ভলা পিতলের কেতলি, বন্দুক প্রভৃতি পদার্থ শোহরের প্রতিনিধি বলিলে বল। যায়; মৃগ, ভূমিতে १० টা বৃক্ষ জন্মিতে পারে, ভাছার এক২ लिहे ठाहांत्र প্রয়োজন হয়।

# কৈত্ৰী ও জায়ফল।

💯 🕾 🖂 🔆 সমৃদ্যুদ্ধ-দাপব্যহ্ " নামে প্রসিদ্ধ। ঐ। নার্থে অনেক সহিষ্ণুতা গুণ থাকা হৃত্যন্ত প্রয়ো-দ্বীপর্যাহ যে সকল পদার্থ উৎপন্ন হয়, তন্মধে। জনীয়, তাহা না থাকিলে জায়কল চাবের সমস্ত এলা, লবজ, জায়কল, জৈত্রী, কপরাদি মসা- পরিশূম ব্যর্থ হয়। পঞ্চদশ বংগর কাল জমা-লাই প্রধান: ফলতঃ ঐ সকল দ্বীপ মসলার গত অপর্য্যাপ্ত পরিশুমে এই বৃক্ষের পালন করি-আকর, এবং ভংপ্রযুক্ত অনেকে তাহাদিগের তি হয়; ঐ কাল মধ্যে ঝড়, বৃষ্টি, উই, সূয়া প্রভৃতি कछकछनित साम "ममानाषील" ताथिशाष्ट्र। व्यासक जालम् इटेट अहे वृद्धकत दक्षा सा कतितन স্বায়কল ও জৈত্রা এই দ্বীপ ভিন্ন অন্যত্র জন্মে প্রাপ্তক্ত লাভ ভোগ হইবার নহে। উই পোক। না এ নকল ঘাপের প্রাকৃত-ধর্ম যে প্র- নিবারণের নিমিত্ত প্রতাবিত ছীপবাসিরা শূক कात, जरनूकण धाक् क-धर्माविभिष्ठ व्यवा घोरण (तत विष्ठा करण शिवा वृक्षमृत्व (महन करत, अवः चारनरक अर्थे शरार्थंत छाय कतियरिक, किन्न करक रव छात्राच नकल छेट्रेराका अस्कराद्ध वि-किहरे क् उकाया रस नारे। लक्काबीर्ण अरे शवा- नहे रस। अउएम्भीस रेक्न्- हार्यत शत्म माजू छेरे থের দুই একটা গাছ আছে, কিন্তু ভাষা উত্তম পোকা; তৎকত্ক অনেক কৃষির সর্ব্য নত চ্ইয়া তেজावल नरहा

আয়কলের গাছ দেখিতে মৌরাগাছের তুল্য; হয় তবে অৰুণ্য পরীকা করা কর্ত্ব্য।

থানি বড়জুল-পরিনিত লেকড়ার প্রয়োজন: সিলাপুর-প্রদেশে ইহা ১৫া২০ ছস্তচ্ইতে অধিক সিকা প্রস্তুত হয়। এতডির মুশ্বস্য ধরিবার ও অধিক ঝড় বৃষ্টি না লাগে, তথায়ই এই বৃক্ষ উত্তমকপে জমে। এই বৃক্ষের এক প্রধান লক্ষ্ কথন ২ উভয় প্রকার পুষ্পাই এক বৃক্ষে জন্মে;

জায়কলের চাব অতি লাভজনক। এক বীঘা क्षिरखारि वर्षमुना पूरा क्या कतिए इहे- वृष्क वर्ष ১०१२ होका मृत्नात कायकन देवजी উৎপন্ন হয়, সুতরাং প্রতি বীঘায় ৭০০৮০০ টাকা প্রাপ্ত হইয়া থাকে; অন্য কোন চাষ ইহার তুল্য **লভিদায়ক বোধ হয় না। নারিকেলের ভ**াষ্থ ' জায়কল-বৃক্তে বার মাস ফুল কল হইয়া থাকে; ্রতিস্পূর্ব সমৃদ্রে পূর্ব-পাখে আনেকগুলি অতএব কথন এককালে নমস্ত ফসল নষ্ট হই 🏿 😏 💢 দাল একত্রে মাছে; ভাছা "ভারত- বার সম্ভাবনাও নাই। পরস্তু এই লাভ ভোগকর-थारक; मृक्त-विश्वाय यमाणि ভारात अजीकात

কথিত হইয়াছে প্রস্তাবিত বৃক্ষের কল বারমাস জন্মিয়া থাকে; তাহা দেখিতে গাব-কলের
সদৃশ; এবং তাহা কাটিলে তথাধ্যে যে বীজ পাওয়া যায় তাহাই জায়কল \* নামে প্রসিদ্ধ, এবং
ঐ বাজও তদাবরণকারি শসের মধ্যে যে পদার্থ
থাকে তাহার নাম জৈত্রী। এই উভয় পদার্থকে
শুক্ষ করিলেই বাণিজ্যের উপযুক্ত হয়।

# তিরত্দেশীয় মনুষ্যদিগের আচার ব্যবহার ৷

বৈ বিবিধার্থে তিম্বতদেশ-নিবাসিনী জীদিগের মুথবিন্যাদের প্রথা †
বর্ণ করা গিয়াছে, অধুনা উক্ত দেশীয় পুৰুষদিগের সাচার-ব্যবহারবিষয়ক কিঞ্জিৎ প্রকাশিতব্য।

हिमानसित উত্তর-পার্শন্ত এক অধিত্যকার
নাম তিরত্দেশ। ঐ দেশ সর্বদা অত্যন্ত শীতল থাকে; এই প্রযুক্ত তদেশীয় ধনী দরিদ্
সকলকেই আপাদ মন্তক সর্বান্ধ লোমজ্ঞ
অনেক বন্ধবারা আবৃত করিয়া রাখিতে হয়।
ধনী ব্যক্তিদিগের পক্ষে পসম দেওয়া সাটান
বন্ধই শীত-নিবারণের প্রধান উপায়, ভদ্তিরব্যক্তির উণা বন্ধ ও লোমবিশিষ্ট মেষ্চর্ম ব্যক্তিরেক আর গতি নাই, এবং গৃহহুইতে বহিদেশে
যাইতে হুইলেই অন্য উপান্দ্ ব্যবহার না করিয়া "বুট্" অবলম্বন করিকে হয়।

मोहिंज्य नगरम जाहारम्य मरथा श्राप्तः कहहे

গাত্ত-মুথাদি-প্রকালন করে না; ইছাতে তাহার।
এই কারণ দর্শায়, যে ন কালে দৈবাৎ মুথকপোলাদির কোন হানে জল স্পৃষ্ট হইলে
তৎক্ষণাৎ ক্ষত হইবার সম্ভাবনা।

य परम वर्षत इत्र मान मूथ श्रकालम करितात त्रीक नाइ, अवः नताम मियवर्ष श्र-धान भित्रियत, उथात्र मावान वस्मृत्वा विक्विक हरेट, हेश व्यान्वर्ध नरहः भत्रस उप्पान य मकल विकास ताक वनिक करत, जाहाबिश्रत वावशातार्थ काश्रीत अ तनभानहरेट ना-वान् छेल परम श्रिति हत् । मिकिमरम्भहरेट याहा यात्र जाहा व्यव्याभा श्रिता कर वर्षा मिकिमरम्भहरेट याहा यात्र जाहा व्यव्याभा श्रिता कर वर्षा मिकिमरम्भहरेट वर्षा मितिमतार्थ नात्र वर्ष व्यवस्था तार्थ नाः ज्यान अत्र अक द्वम यान स्वित्र वेष वर्षा नार्थ नाः ज्यात्र अक द्वम यान स्वित्र वेष वर्षा निष्णह इत्र ।

जिवज्रामभाष्मित्र वार्म ग्रामशी त्राई श्र-निका कि जो कि शूक्य मकरल अधारताहरूव मगाम ज्यूलित आरङ्ग्य करत, अवर ज्यूकारम

<sup>\*</sup> সংস্কৃত ভাষার এই পদার্থের অনেক নাম আছে ভরিখা; জাতীফল, জাডিফল, জাতীপুষ্পসার, রাজভোগ্য, জাতীফোশ, জাতীফোষ।

<sup>, †</sup> विविध्यस्ति > श्रासंत >८८ शृत्के त्रचा

ভাছাদের বেশভূষা ও চড়িবার রীজি দেখিয়া কেছই জ্রীপুক্ষের কিঞ্চিন্সাত্র ভেদ অনুমাণ করি। তে পারে না।

উক্ত হইয়াছে, যে ভিত্তত্দেশের মনুষ্যেরা অত্যন্ত অপরিক্ত, কিন্তু তথাকীর স্থান তেমত नरह, ভত্ৰত্য कि नहत्र, कि भन्नीशुंग, नकन স্থান অভিসাবধানে পরিষ্ঠ রাথা হয়, কুত্রা-পি किथ्विष्य मोद्य मना थाकियांत्र मञ्चावमा नाहै। नगतक मण मण्य किया द्राधिकात निमित्त ध-ত্যেক লোকের বাটীতে এক ২ পার্থানা আছে. এবং লোকে তথাকার মল অতিপ্রযতে রাথিয়া थारक। तक् र्वक्ता कोरयात च्या श्रक्तिषाता ভাৰা রক্ষা করিয়া থাকে। তদেশে শীতের প্রা-খান্যভাপুষ্ক্ত অতি অত্প বৃক্ষাদি জয়ে, সুতরাং वेखात्वत मिमिछ मकलात्कवे घूँ विद्याद व्यवलयन করিতে হয়; দেশের সমস্ত পশুর মল জালাইবার নিষিত্ই ব্যবস্ত হয়; সার প্রস্তুত করিতে কিছুই পাওয়া যায় না; ভদর্থে মনুষ্ঠের মল একমাত্র फेलाया जनद कान २ **छात्न जे मत्न** स्नाहाड প্রস্তুত ছইয়া থাকে। এই প্রয়োজনানুরোপে उत्पन्धीय लाटक मनटक श्रीयः मनकान कात्र ना । মলপরিকারখেরা কুদালাদি অক্তের অবলম্বন না कविश रुख्याताई উक्त मन উर्खानन क्रा, क्रा পার্থানা পরিষ্ণার ক্রিচে২ অনায়াসে সেই ष्यक्षीण इरख हा माश्मामि लाम खक्क करता অপন, চাল ভাল প্রভৃতি বাণিজ্য দুব্যের ন্যায় ভৰতা नकलाई जे मन विजी कि कविशा अर्था-**পार्ड्डन क**रिया **पारक ; म्हिल्ड होव्हा ७ नमस्त्र २** मल विकासपाता धन मक्षत्र कालम। अधिक्ष ष्यनामा वानिका मुर्दात्र अन्तक्षरम रथ अकात মূল্যের তারতম্য হয়, নল-বিক্তরেও তজ্ঞপ নিয়ম भारतः। जनमूनादा हेज्त मीतवाकित सनारशकाम धनकान् मान्य प्रक्तित यस व्यक्ति मृद्धाः तिक्की व क्षेत्रा थारक । मन्द्रात मृद्धक छेखम-नारतत्र मरधा मन्द्रात प्रकार जिसक रहरण काक्षेत्रक गुरुक्क व्यक्ति व्यक्ति।

जिद्द एमीर मनूरयाता तो वश्यावनदी, बदः **(महे धर्मित ध्रधान कर्डव) व्यामिय-छा। १ व्यक्त** তিৰতীয়েরা অত্যন্ত মাংসাশী। লামা নামক ধর্মযাজক ভিন্ন সকলেই মেবাদির মাংস ভক্ষণ कतिया थाटक, अवः चारनाटक चाममाः न हिए শুক করিয়া ভক্ষণ করে। দরিদু-লোক-মাত্রেই কিয়ৎ-পরিমিত শুক্ষ আমমাংস আপম ২ বক্লো-দেশে রাথিয়া থাকে, এবং আবশ্যক মতে ঐ নাধারণ ভাগুারহুইতে বাছির ক্রিয়া লবণাদির নিরবলম্বনে ভক্ষণ করে। অরের পরিবত্তে শক্তুই उथाकात अधान थामा; जाहा "माल्यां" नात्न প্রাসিদ্ধ, এবং দেশের অর্জেক লোক ঐ সাম্পার অবলম্বনে দেহ-রক্ষা করে। কথন কেহ তথুল পাইলে তাহার পিষ্টক বানাইয়া খায়; অল্ল भाक कतिहा थारेवात कूळाभि प्रथा नाहै। भागीय पुरदावे मर्या हो। अवः व्यावालवृद्धवनिका সকলেই প্রত্যন্থ ৪—৫ বার করিয়া তাহা পান করিয়া থাকে।

উক্ত দেশে শবসংকারের প্রথা অতি আশ্চর্য। তথায় সমাধি বা দাহ করিবার রাতি
নাই; তৎপরিবর্ত্তে কোণন ব/ক্তি মৃত হইলে তাহাকে পর্বতাদি সদৃশ উক্ত জানে রাথিয়া দেয়,
যাহাতে নির্হিত্ব শকুণি প্রভৃতি পার্কাণণ ভাহার
মাণস ভক্ষণ করিতে পারে, এই রীতি পার্রদিদিপের শব সংকারের নিয়মের সহিত তুলা
হয়। তাহারা প্রাচীর বেন্ডিত নমাধি-ভানে
শব কেলিয়া রাথে, এবং কালকালৈ মাংলাদি
পশু পক্ষিদারা ভুক্ত ও গলিত হইলে কহি

💯 वि षक् कूर्ण मृरधा निरक्षण करत 📲 (य वं) कित्रा **जिद्य** छ । स्वाप्त कि । स्वाप्त कि । स्वाप्त कि । स्वाप्त कि । त्रात्थ, जाशांक्रिशंत्र (क्रम-श्रिमिक नाम "त्राधा তংদেন্ "; তাহারা ৰডজ দলে বিভক্ত। অপ্রিয় ব্যক্তিদিগের শবকে ভক্ষণ করাইবার নিমিছে ঐ শ্বশানবাগিরা কতকগুলি কুকুর প্রতিপালন করি-য়া থাকে। ভিক্লাই ভাহাদিপের প্রধান উপজী-विका। यथन छाहाज्ञा कान धनी वाक्तित निकछे যাচিত বস্তু প্রাপ্ত না হয়, তথন ক্রোধপূর্বক কছে, "আচ্ছা এখন আমাদিগকৈ কিছু না দেও; कथन ना कथन व्यामात्मत्र हात्छ शिए छ हरेत ; তথন ছোমার পায়ে দড়ি বালিয়া পথে ২ টানিয়া বেড়াইব, এবং তোমার শরীর কুকুরদিগকে থা-ওয়াইয়া দিব"। বস্তুতঃ দীন ব্যক্তির মৃতদে-(एंत्र गर्दमा के काल भिष्ठ रुहेग्रा थाटक। धनदान् ব্যক্তি মৃত হইলে ভাহার দেহকে উক্ত শব-বাহকেরা পরতের উপরে লইয়া গিয়া ভাহার क्षष्टि ଓ মাংन পृथक् कतिया क्षष्टि-नकन हुन এবং মাংস খণ্ড ২ করিয়া সমস্ত একত্র করত ভার-कटि किश्वि शब कानाहेश (रस्न, काहात धूम দৃষ্টে বহু বঙ্থ/ক শকুণী-জাতীয় পক্ষিরা আ-নিয়া চুৰ্ণ অছি ও মাংস সমস্ত ভক্ষণ করে।

# আয়ুর্লণ্ড-দেশীয় ভণ্ড ভিচ্চুক।



सिन्नाहे वह मालत प्रधान। जाहाता क्रिकेत निन्नमानूनात क्रांतिक सुम्माता आश्रम क्रांति हात छे० शासन ना कतिया प्रदेशमा-शृदेक शासन प्रजू अशहत। क्रिति छ० शासन क्रियाता व अन् हारेनाथान विवृत्त थाएक। आर्कार्यात विवृत्त वहे य वहे वावनात्त आर्नात यो शित्रमात्त सुम्म ७ स्तू-म नहा करत, जाहात आर्क्षक क्रिकारन सना सुम क्रिया क्रांन जेनु वावनाय क्रिका क्रांति साना-यात्न न० छैनक्रीतिका क्रांतिन क्रिकेत शासिन।

क्षित्रमान प्रितित हाना कात्न विवस्तुकांत उथ विक्रता कठा छ अवन हरेग्नाहिन, वरः नर्नुः वाकि वक्षत रहेग्ना गुर्मार ज्ञान कत्र अस्तरकत अमिष्ठ कत्रिक। अमान आर्ह, (य काम गुर्मा मस्मानोक जिक्का मा शाहरन वहे शामस्त्रता ठ०-कनार्थ नमस्त्र स्त्रम नृष्ठ कित्रक। विचार्ण किंगा-हास्त्र सात्र ज्ञान नृष्ठ कित्रक। विचार्ण किंगा-हास्त्र सात्र ज्ञान स्थान भूगम ध्रम हरेग्नाह।

हाई, श्रीरम्मा, यान्, ठेश প্রভৃতি লোকের।
প্রায়ঃ আনেকেই ভি চণ্কর বেশ ধারণ করিয়া
থাকে। ভিকৃর মধ্যে বাংবারা চৌর্যা বা অন্য
কোন ব্যবদার লা করিয়া কেবল যাচ্ঞা করিয়া
দিন্থাত করে, ভাষার মধ্যেও অনেকে অত্যন্ত
আনিয়া অবিরত চীৎকার, কটুভি, দেখে অস্তান্
যাত, বিশ্ব ভক্ষর, অন্সকাদি বাতনা নহ্য করভ
ভিক্তা করে, ভাষা পাঠকবন্দ নকলেই দেখিয়াহেন, এবং অনেকে ভক্ষণ পানরবিশ্বকে দাপও
দিয়া থালি নি নিয়, নাম্ব আরি, ভজ্জপ
ভিক্তার বি কর্ম অন্যাপি ফারার অনুভৃত করিতে
লারেন বাই। আন্বানিক্ষেত্র বিশ্বক্রণর ক্ষেণ্ডার

" विवारिक अहे शरकता जाशन २ स्मर्क कमर्या वा করিয়া সাধারণকে ভাছাই দেখাইয়া অর্থ উপা জ্ঞান ক্লব্লিড; অনেকে কশ্পিত অকা হইয়া শ্ৰবা বিকলাক হইয়া প্রভারণা করিত, কেহ ২ বা লোকের দয়া বৃদ্ধি করিবার নিনিত শোকার্ত্র वा किछ इहेड। किय़ श्रक्त भूटर्व वहे नक्त च-ত্যাচারের এতাদৃশ বৃদ্ধি হয়, যে ভরিবারণারে वह नियम दितीकृष्ठ रुग्न, एवं, या न/फि ताल-**भारत क्रिकार्थि कालम क्रष्ठ कक्र** (मथाईरव, ठा-হাকে কারাপার ভোগ করিতে ছইবে। এই নিয়মপ্রযুক্ত অধুনা বিলাতে প্রতিপারির সুকুর্ন সঙ্খ্যা অভি অংশ হইয়াছে: কিন্তু ইহাতে শঠের वकास निवृद्धि एत नाहे : बरमद्य वश्रम नगरन **उत्रम्भाका क्रिया मग्रामित्र महै क्रम् ७ गर्थ** जुमन कांत्रज्ञ। बारक। डेशांत य किंब मुङ्गित रहेगांत. ভাষাতে এবস্পানার ইন্ছাজাত অব্যের প্রতিমূর্ত্তি मृष्ठे क्रेट्वक। व्याध-संश्व-त्राम अञ्चलक छिक्क चालक चार्षः छाराहा >--> व काल अकाल अक मृत्के वाम करते । विवासारम मृतक् र रहेश बनायक समी-पूर्वन प्रकृतक आर्थ वृत्ति रक्षेत्र अवस्था अवसीरकारण निकरनत वर्ष अवद क्षिया अम्। भारत नरकार करते।